जायसी-ग्रंथावली

पदमावत, अखरावट, आखिरी कलाम, और महरी बाईसी

संपादक

माताप्रसाद गुप्त

एम० ए०, डी० लिट्०

रीडर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

१९५२

हिंदुस्तानी एकेडेमी

उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण :: १९५१ : २००० प्रतियां

मूल्य १२)

मुद्रक—महादेव प्रसाद, आज़ाद प्रेस, प्रयाग

चिरसंगिनी

रानी देवी

को

सस्नेह

प्रकाशकीय

हिंदुस्तानी एकेडेमी की बहुत समय से एक योजना रही है कि प्रमुख हिंदी कवियों की समस्त रचनाओं के ऐसे संस्करण प्रकाशित किये जायँ जिनके पाठ यथासंभव पूर्णतया प्रामाणिक तथा अधिकारी विद्वानों द्वारा सुसंपादित हों। मुझे प्रसन्नता है कि इस योजना का पहला ग्रंथ, 'जायसी-ग्रंथावली' के रूप में, पाठकों के समक्ष है।

इस ग्रंथ के संपादक डा० माताप्रसाद गुप्त का हिंदी पाठकों से परिचय कराना अनावश्यक है। डा० गुप्त इधर अनेक वर्षों से अपनी भाषा की पुरानी कृतियों के पाठ-निर्णय के कार्य में लगे रहे हैं; और उन्होंने इस दिशा में अच्छा परिश्रम ही नहीं किया है, किंतु अन्य संशोधकों के लिये मार्ग प्रशस्त किया है। अभी हमारे साहित्य में पाठ-संबंधी अनुसंधान-कार्य प्रारंभिक अवस्था में ही है, और चाहे जिस बड़े कवि को ले लें, हमें उसकी रचनाओं के पाठ-निर्णय में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को हम शास्त्रीय ढंग से कैसे सुलझा सकते हैं, इस विषय में डा० गुप्त के कार्य से इस प्रकार की शोध में लगे हुए लोगों को प्रेरणा मिलेगी, इसकी मुझे पूर्ण आशा है। निश्चय ही यह संस्करण हिंदी के एक बड़े अभाव की पूर्ति करेगा।

इस संबंध में मुझे हिंदुस्तानी एकेडेमी की ओर से अवध के ब्रिटिश इंडियन असोसिएशन के प्रति कृतज्ञता-प्रकाश करना है। एकेडेमी को अपने साहित्यिक कार्यों के लिये असोसिएशन से ४०००) की सहायता प्राप्त हुई थी। इसी रक़म से एकेडेमी ने २०००) योग्य संपादक को पारिश्रमिक के रूप में भेंट किया है।

हिंदुस्तानी एकेडेमी
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद
नवंबर, १९५१ ई०

धीरेन्द्र वर्मा
मंत्री तथा कोषाध्यक्ष

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ-संख्या

वक्तव्य १-४

भूमिका

१—'पदमावत' की प्रतियाँ १-७
२—प्रतियों की पाठ-विकृति ७-१४
३—प्रतियों का आदर्श-बाहुल्य १४-१६
४—आदि प्रति की लिपि १६-३४
५—आदि प्रति की भाषा २६-४०
६—आदि प्रति की छंद-योजना ४१-४४
७—प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध ४४-६१
८—प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध ६१-८७
९—प्रतियों का पाठांतर-संबंध ८७-१०३
१०—ग्रंथावली के अन्य ग्रंथ १०३-१०४
११—ग्रंथावली के अन्य संस्करण १०४-११८

पदमावत

पाठ ११९-५५६
परिशिष्ट ५५७-६५१

अखरावट

पाठ ६५१-६७६
परिशिष्ट ६७७-६८४

आखिरी कलाम

पाठ ६८५-७०८

महरी बाईसी

पाठ ७०९-७२१

चित्र-सूची

१—मलिक मुहम्मद जायसी
(एक प्राचीन चित्र)
२—जायसी का घर
३—जायसी की समाधि
४—'पदमावत' की प्रति प्र० १ में छंद ११७ का पृष्ठ
५—'पदमावत' की प्रति प्र० २ में वही
६—'पदमावत' की प्रति द्वि० १ में वही (१)
७—'पदमावत' की प्रति द्वि० १ में वही (२)
८—'पदमावत' की प्रति द्वि० २ में वही
९—'पदमावत' की प्रति द्वि० ३ में वही
१०—'पदमावत' की प्रति द्वि० ४ में वही
११—'पदमावत' की प्रति द्वि० ५ में वही
१२—'पदमावत' की प्रति द्वि० ६ में वही
१३—'पदमावत' की प्रति द्वि० ७ में वही
१४—'पदमावत' की प्रति तृ० १ में वही (१)
१५—'पदमावत' की प्रति तृ० १ में वही (२)
१६—'पदमावत' की प्रति तृ० २ में वही
१७—'पदमावत' की प्रति तृ० ३ में वही
१८—'पदमावत' की प्रति च० १ में वही
१९—'पदमावत' की प्रति पं० १ में वही
२०—'अखरावट' की हस्तलिखित प्रति का एक पृष्ठ
२१—'आख़िरी कलाम' की लीथो की प्रति का एक पृष्ठ
२२—'पदमावत' की प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध
२३—'पदमावत' की प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध

वक्तव्य

जायसी के 'पदमावत' की विभिन्न प्रतियों में कितना पाठभेद है, यह उसके किसी भी छंद को लेकर देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए आगे एक औसत पाठभेद के छंद के स्लेट्स विभिन्न प्रतियों से लेकर दिए गए हैं। इस पाठभेद के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

(१) प्रतियों में पाठ-संशोधन की प्रवृत्ति बहुत-कुछ व्यापक रूप में पाई जाती है—पहले का पाठ किसी प्रति के अनुसार था, किंतु पीछे उसके स्वामी को किसी अन्य प्रति का पाठ अधिक प्रामाणिक लगा, और उसने अपनी पूरी प्रति का पाठ उस अन्य प्रति के अनुसार संशोधित कर डाला, यहाँ तक कि पूर्ववर्ती पाठ यत्न करने पर भी कठिनाई से पढ़ा जा सकता है।

(२) प्रतियाँ कभी-कभी एक से अधिक आदर्शों से तैयार की हुई हैं, यह बात उनके हाशियों में स्वतः उनके प्रतिलिपिकारों के हाथों द्वारा दिए हुए पाठांतरों से ज्ञात होती है।

(३) पाठ-परम्परा प्रायः उर्दू (फ़ारसी-अरबी) लिपि में चली है; प्रतियाँ अधिकतर इसी लिपि में हैं, और अच्छी प्रतियाँ तो प्रायः इसी लिपि में हैं। जो प्रतियाँ नागरी लिपि में प्राप्त हुई हैं, उनके भी पूर्वज उर्दू (फ़ारसी-अरबी) लिपि के प्रमाणित हुए हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि उर्दू लिपि मुख्यतः अपने शिकस्त की प्रवृत्तियों के कारण मूल पाठ की विकृति में बहुत सहायक हुई है। किंतु आदि प्रति की लिपि नागरी थी, जिसका पर्याप्त ज्ञान उस के उर्दू के प्रतिलिपिकार—या प्रतिलिपिकारों—को नहीं था, इस कारण भी मूल पाठ की कुछ विकृति हुई है।

(४) 'पदमावत' की भाषा से भी उसके प्रतिलिपिकार यथेष्ट रूप से परिचित नहीं थे—विशेष रूप से उसकी भाषा के ग्रामीण, प्राकृतोद्भूत, हिंदी रूप से। इसलिए उन्होंने भद्दी भूलें की हैं, और ऐसा ज्ञात होता है कि जहाँ-कहीं उन्हें आदर्श का पाठ अर्थहीन ज्ञात हुआ है, पाठ-परिवर्तन में उन्होंने संकोच नहीं किया है।

(५) 'पदमावत' की छंद-योजना से—विशेष रूप से उसके दोहों के रूप से—भी उसके प्रतिलिपिकार यथेष्ट रूप से परिचित नहीं थे, और इसलिए उन्होंने 'पदमावत' के छंदों को—मुख्यतः दोहों को—अपने जाने हुए ढाँचे में ही घटा-बढ़ा कर बैठाने की चेष्टा की है।

(६) 'पदमावत' की प्रतियों में पाठ की पंक्तियाँ प्रायः छंदों की पंक्तियों के अनुसार रक्खी गई थीं, सात अर्द्धालियाँ और उनके अनंतर दोहे की दो पक्तियाँ एक दूसरे से अलग-अलग लिखी गई थीं, इन पूरी पंक्तियों के पाठांतर जो प्रतिलिपिकारों अथवा प्रतियों के संशोधकों ने हाशियों में लिखे, वे कभी एक पंक्ति के संशोधित पाठ माने गए, कभी दूसरी पंक्ति के, और कभी अतिरिक्त पंक्ति के रूप में मूल पाठ में सम्मिलित कर लिए गए।

(७) सात अर्द्धालियाँ और उसके अनंतर एक दोहे का क्रम ग्रंथ भर में होने के कारण सभी प्रक्षेप उपर्युक्त अर्द्धाली-दोहा क्रम के अनुसार हैं। जहाँ-कहीं दो अर्द्धालियों के बीच में भी विभिन्न प्रतियों में प्रक्षेपवृद्धि की गई है, इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि उपर्युक्त अर्द्धाली-दोहा क्रम भंग न हो। अतः छंद-योजना के आधार पर प्रक्षेप-निर्णय असंभव हो गया है। कुल छंद-संख्या किन्हीं भी दो प्रतियों की एक नहीं है—विभिन्न प्रतियों में यह ७५० से लेकर ६५१ तक है। पुनः विभिन्न प्रतियों में पाए जाने वाले समस्त छंदों की संख्या ८८५ है, और केवल ६३१ छंद ऐसे हैं जो सामान्य रूप से समस्त प्रतियों में पाए जाते हैं। इन २५४ छंदों में से अवश्य ही कितने ही प्रामाणिक और कितने ही प्रक्षिप्त होंगे : न सभी प्रामाणिक हो सकते हैं, और न सभी प्रक्षिप्त।

(८) अनेक स्थलों पर ग्रंथ में ऐसे पाठभेद भी मिलते हैं, जिनका समाधान उर्दू या नागरी लिपि के लेखन-प्रमाद या पाठ-प्रमाद की प्रवृत्तियों के द्वारा नहीं हो सकता, न भाषा अथवा छंद-योजना सम्बन्धी पर्याप्त ज्ञान के अभाव-द्वारा ही हो सकता है; और इनमें से अनेक स्थलों पर ऐसे भी भिन्न-भिन्न पाठ विभिन्न प्रतियों में हैं कि वे किसी प्रकार भी एक दूसरे से सम्बद्ध नहीं ज्ञात होते हैं।

'पदमावत' के संपादक को इन एक से एक विकट गुत्थियों को सुलझाते हुए यथासंभव उसकी आदि प्रति के पाठ को पुनर्प्राप्त करना है। किंतु पाठानुसंधान में यही गुत्थियाँ—यथेष्ट ढंग से विश्लेषण के अनंतर—प्रामाणिक पाठ पर पहुँचने में किस प्रकार सहायक भी होती हैं, यह क्रमशः प्रतियों के सामान्य परिचय के अनंतर आने वाले भूमिका के आठ शीर्षकों में आगे

मिलेगा। बाद के दो शीर्षकों में ग्रंथावली के अन्य ग्रंथों के पाठ और ग्रंथावली के अन्य संस्करणों के पाठ के विषय में कहा गया है।

इस ग्रंथावली में सम्मिलित 'अखरावट' का पाठ अन्य प्रतियों के अभाव में पहिले पं० रामचंद्र शुक्ल के संस्करण के अनुसार रक्खा गया था, किंतु संयोग से 'अखरावट' की छपाई प्रारंभ हो जाने के बाद उसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति प्रांतीय सेक्रेटेरियट के अनुवाद-विभाग के विशेष कार्याधिकारी श्री गोपालचंद्र सिंह जी से मिल गई। इस प्रति का पाठ शुक्ल जी द्वारा दिए गए पाठ की अपेक्षा अधिक संतोषजनक प्रतीत हुआ। किंतु छपाई आरंभ हो जाने के कारण उसका इससे अधिक उपयोग नहीं किया जा सका कि ग्रंथ के अंत में परिशिष्ट जोड़ कर इस प्रति का पाठांतर मात्र दे दिया जाय।

और इसी प्रकार इस ग्रंथावली में सम्मिलित 'आख़िरी कलाम' का भी पाठ शुक्ल जी के संस्करण के अनुसार रखा गया था, किंतु उसकी एक लीथो की प्रति लखनऊ के श्री कल्बे मुस्तफ़ा जायसी से मिल गई। श्री कल्बे मुस्तफ़ा साहब का कथन था कि इसी प्रति से शुक्ल जी ने भी उसका पाठ अपने संस्करण में दिया था। शुक्ल जी के पाठ को इस प्रति के पाठ से मिलाने पर यह बात ठीक ज्ञात हुई। किंतु इस प्रति में प्रायः प्रत्येक पंक्ति में एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा किए गए संशोधन भी हैं, जिनका आधार संशोधकों की कल्पना के अतिरिक्त कदाचित् और कुछ नहीं है। शुक्ल जी ने अधिकतर संशोधनों को स्वीकार करते हुए और अपनी ओर से भी कुछ संशोधन करते हुए रचना का पाठ अपने संस्करण में दिया है। मैंने उक्त लीथो की प्रति का ही पाठ दिया है। इसलिए दोनों पाठों में अंतर यथेष्ट मिलेगा।

पाद-टिप्पणियों का आकार अनावश्यक रूप से बहुत न बढ़ जावे, इसलिए केवल लेखन-प्रमाद के कारण हुई बहुत-सी भूलें तथा पाठ-परंपरा में सब से नीचे आने वाली प्रतियों के अनावश्यक पाठांतर नहीं दिए जा सके हैं।

जायसी हिंदी साहित्य के सबसे महान् कलाकारों में से हैं। किंतु उनके 'पदमावत' से मैं जितना ही अधिक प्रभावित था, उतना ही उसके प्रकाशित पाठों से असंतुष्ट भी था। हिंदुस्तानी एकैडेमी ने मेरे इस कार्य को प्रकाशित करने का निश्चय कर मुझे अपने पाठानुसंधान-संबंधी कार्य में प्रोत्साहित किया है, उसके लिए मैं उसका आभारी हूँ।

पाठानुसंधान के कार्य में सब से अधिक आवश्यकता हस्तलिखित प्रतियों की होती है; उनके कुछ समय तक सतत उपयोग के बिना इस प्रकार का कार्य

नहीं हो सकता जैसा इस ग्रंथावली में हुआ है। किंतु प्रतियों का मिलना न केवल व्यक्तियों से दुस्साध्य है, हमारे देश की संस्थाओं से भी वह प्रायः उतना ही दुस्साध्य है। 'रामचरितमानस' और पुनः 'पदमावत' के पाठानुसंधान के प्रसंग में मुझे इसका विशेष अनुभव हुआ है। ऐसी दशा में जिनसे भी मुझे इस कार्य के लिए प्रतियाँ मिलीं, उनका मैं हृदय से आभारी हूँ। विशेष रूप से कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस लंदन का, जिससे मुझे सात सब से अधिक महत्त्व की 'पदमावत' की प्रतियाँ, और 'महरी बाईसी' की प्रति प्राप्त हुई, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल का, काशीनरेश महाराज विभूति नारायण सिंह का, उत्तर प्रदेश के सेक्रेटैरियट के अनुवाद विभाग के विशेष कार्याधिकारी श्री गोपाल चंद्र सिंह का, हिंदू विश्वविद्यालय काशी का, लखनऊ के श्री कल्बे मुस्तफ़ा जायसी का, हरगाँव के महंत गुरुप्रसाद का और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी का आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रंथावली के ग्रंथों की अपनी अलभ्य हस्तलिखित प्रतियाँ और प्राचीन संस्करण इस कार्य के लिए मुझे दिए। इनके अतिरिक्त कैम्ब्रिज और एडिनबरा विश्वविद्यालयों के अधिकारियों का भी मैं उपकृत हूँ, जिन्होंने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी को अपने यहाँ की 'पदमावत' की प्रतियों की माइक्रोफ़िल्म कॉपियाँ प्रदान कीं।

इन प्रतियों और माइक्रोफ़िल्म कॉपियों को विभिन्न स्थानों से प्राप्त करने में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर श्री डा० दक्षिणारंजन भट्टाचार्य, उसके हिंदी विभाग के अध्यक्ष और प्रोफ़ेसर श्री डा० धीरेन्द्र वर्मा, तथा उसके सहायक पुस्तकाध्यक्ष श्री भक्तिप्रसाद त्रिवेदी ने मेरी बड़ा भारी सहायता की है; प्रतियों की पाठ-परंपरा के रेखाचित्र यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग के अपने सहयोगी श्री जगदीशप्रसाद गुप्त ने खींचे हैं; और 'पदमावत' की अधिकतर प्रतियों के चित्र इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के फ़ोटोग्राफ़ी विभाग के सहयोग से प्रस्तुत हुए हैं। इसलिए मैं इन का भी आभारी हूँ।

उपर्युक्त सहायता के अतिरिक्त श्रद्धेय डा० धीरेन्द्र वर्मा ने प्रारंभ से ही इस कार्य में, मेरे पिछले समस्त अन्वेषण-कार्यों की भाँति, मेरा प्रोत्साहन भी किया है। ऐसे लंबे और उलझन के कार्यों में अन्य साधनों की अपेक्षा गुरुजनों का प्रोत्साहन कहीं अधिक सहायक हुआ करता है। इसलिए मैं उनके प्रति पुनः आभार-प्रदर्शित करना चाहता हूँ।

हिंदी विभाग,
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी,
कृष्ण जन्माष्टमी, २००८ वि०

माताप्रसाद गुप्त

भूमिका

१. 'पदमावत' की प्रतियाँ

मलिक मुहम्मद जायसी के 'पदमावत' की जो प्राचीन प्रतियाँ इस कार्य में प्रयुक्त हुई हैं, उनका परिचय नीचे दिया जा रहा है। प्रत्येक प्रति के प्रारंभ में उस संकेत का निर्देश कर दिया गया है जिसके द्वारा उसका उल्लेख ग्रंथ भर में किया गया है।

प्र० १ : यह प्रति १०"×६½" आकार के २१८ पत्रों में है, और पूर्ण है। यह फ़ारसी अक्षरों में है, और अत्यंत सुलिखित है। कुछ स्थलों पर यह चित्रित भी है। यह (इबादुल्लाह अलहम्द) खानमुहम्मद, साकिन मुअज़्ज़माबाद उर्फ़ गोरखपुर द्वारा किन्हीं दीनानाथ के लिए शव्वाल, ११०७ हिजरी की लिखी हुई है। यह इस समय कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन में है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

पुष्पिका में लिपिकार, उसके स्थान तथा प्रति के स्वामी के नामों पर गाढ़ी स्याही पोती हुई है, किंतु प्रयास करने पर पूर्व की लिखावट पढ़ी जा सकती है। ऐसा ज्ञात होता है कि इसके स्वामी के यहाँ से किसी समय किसी अनधिकारी व्यक्ति ने इसे हटाया, और इसीलिए उसे यह करने की आवश्यकता पड़ी।

प्र० २ : यह प्रति ६"×६" आकार के २१६ पत्रों में लिखी हुई है, और पूर्ण है। यह नागराक्षरों में है, और साफ़ लिखी हुई है। यह फाल्गुन, सं० १८१८ की लिखी हुई है। लिपिकार ने अपना नाम, पता, तथा अन्य कोई सूचना पुष्पिका में नहीं दी है। यह प्रति श्री काशिराज के पुस्तकालय में है, और उन्हीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

द्वि० १ : यह प्रति ६½"×६¼" आकार के ३३८ पत्रों में लिखी हुई है, और पूर्ण है। प्रतिलिपि-काल सन् ४२ (११४२ हिजरी) है, जो पुष्पिका में दिया हुआ है। यह एडिनबरा यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय में सुरक्षित है, और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय ने इसकी एक माइक्रोफ़िल्म कापी प्राप्त की है। इसी कापी का उपयोग प्रस्तुत कार्य में किया गया है। पाठ की

दृष्टि से यह प्रति अत्यंत त्रुटिपूर्ण है। अनेक छंदों में सात के स्थान पर छः ही अर्द्धालियाँ हैं, किसी छंद का दोहा किसी में, और किसी दूसरे का उसमें लगा हुआ है। अर्द्धालियाँ कभी-कभी अधूरी लिख कर छोड़ दी गई हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि कुछ तो इसका प्रतिलिपिकार असावधान था, और कुछ इसकी मूल प्रति ऐसी लिखी हुई थी कि स्थान-स्थान पर पढ़ी नहीं जाती थी।

द्वि० २ : यह प्रति ९$\frac{1}{8}$"×६$\frac{1}{2}$" आकार के १८० पत्रों में समाप्त हुई है। प्रति पूर्ण है, और फ़ारसी अक्षरों में अत्यंत सुलिखित है। लिपिकार ने अपना नाम, स्थान आदि कुछ भी नहीं दिया है, केवल प्रतिलिपि-तिथि दी है, जो १११४ हिजरी है। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन में है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

द्वि० ३ : यह प्रति ९$\frac{1}{2}$"×६" आकार के १८४ पत्रों में समाप्त हुई है, और पूर्ण है। अक्षर फ़ारसी हैं, और लेख अत्यंत सुंदर है। लिपिकार ने अपना नाम रहीमदाद खाँ, स्थान शाहजहाँपुर, तिथि ११०९ हिजरी दिया है। यह प्रति कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन में है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी। इस प्रति में अनेक स्थलों पर पाठ में हस्तक्षेप हुआ है, और पूर्व के पाठ की विकृति हुई है।

द्वि० ४ : यह प्रति लीथो प्रेस द्वारा छापी हुई है, और ९$\frac{1}{2}$"×६" आकार के ६३६ पृष्ठों में समाप्त हुई है। इसमें मूल पाठ के अतिरिक्त मुंशी अहमद अली द्वारा किया हुआ उर्दू अनुवाद भी है। यह प्रति भी फ़ारसी अक्षरों में है। इसका प्रकाशन कानपुर से शेख मुहम्मद अज़ीमुल्लाह, पुस्तक-विक्रेता द्वारा १३२३ हिजरी में हुआ था। इसकी एक प्रति मुझे काशी हिंदू विश्वविद्यालय तथा दूसरी श्री कल्बे मुस्तफ़ा जायसी से प्राप्त हुई थी। विश्वविद्यालय की प्रति में पृ० ७३—१०४ के पूरे चार छपे फ़ार्म नहीं हैं। श्री कल्बे मुस्तफ़ा की प्रति पूर्ण है। यह प्रति यद्यपि मुद्रित है, किंतु ऐसा ज्ञात होता है कि मूल पाठ किसी एक प्रति से लिया गया है, इसलिए इस प्रति का भी उपयोग इस संस्करण में किया गया है।

द्वि० ५ : यह प्रति भी लीथो की छपी है, और १०"×६$\frac{1}{2}$" के ३५३ पृष्ठों में समाप्त हुई है। इसकी लिपि फ़ारसी है, और मूल के अतिरिक्त हाशिए में उर्दू में भावार्थ भी दिया गया है। टीकाकार 'अलीहसन हैं। पुस्तक के

प्रकाशक मुंशी नवलकिशोर हैं, और प्रकाशन-तिथि १८७० ई० है। प्रथम संस्करण की तिथि १८६५ दी हुई है। द्वि० ४ की भाँति यद्यपि यह प्रति भी मुद्रित है, किंतु ऐसा ज्ञात होता है कि इसका पाठ भी मूलतः किसी एक हस्तलिखित प्रति के अनुसार है, इसलिए प्रस्तुत कार्य में इसका उपयोग भी किया गया है।

द्वि० ६ : यह प्रति ८″ × ५½″ के आकार के पत्रों में समाप्त हुई है। प्रति पूर्ण है। यह प्रति भी फ़ारसी अक्षरों में लिखी हुई है, और सावधानी के साथ लिखी गई है। केवल एकाध स्थलों पर पंक्तियाँ छूटी हुई हैं—यथा छंद ६४६ का दोहा छूटा हुआ है। प्रति के अंत में लिपिकार द्वारा लिखी हुई कोई पुष्पिका नहीं है, किंतु किसी अन्य व्यक्ति की कुछ लिखावट में कुछ लिखा हुआ था, जिसका अधिकांश मिटा दिया गया है, केवल सन् ५३ (११५३ हिजरी ?) पढ़ा जाता है। यह प्रति किंग्स कालेज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में है, और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ने इसकी भी एक माइक्रोफ़िल्म कॉपी प्राप्त की है, जिसका उपयोग प्रस्तुत कार्य में हुआ है।

द्वि० ७ : यह प्रति ६½″ × ६½″ आकार के १६७ पत्रों में समाप्त हुई है। प्रति प्रथम पत्रे को छोड़ कर पूर्ण है। यह कैथी अक्षरों में लिखी हुई है। लिपिकार ने तिथि सन् ११६८, सं० १८४२ जेठ बदी २, मंगलवार, अपना नाम झब्बुलाल कायस्थ, निवास-स्थान मौजा शहरी तारा सलेमपुर···आसपुर सरकार, सूबा बिहार, मुकाम अज़ीमाबाद, महलै सुलतानगंज लिखा है। यह प्रति रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल के पुस्तकालय में है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

तृ० १ तथा (तृ० १) : यह प्रति ८½″ × ६″ के आकार के २१३ पत्रों में समाप्त हुई है, और फ़ारसी अक्षरों में सुलिखित है। यह प्रति यद्यपि पूर्ण है, किंतु प्रारंभ के तीन, अंत के बाइस, और बीच के कई पत्रे (जिसमें प्रस्तुत संपादित पाठ के छंद १—६, १८,२१, २५—३१, ५८०—५८३, ६२४ से अंत तक के आते हैं) बाद के और अन्य हाथ के लिखे हैं। प्राचीन अंश का संकेत तृ० १ तथा अर्वाचीन का (तृ० १) के द्वारा किया गया है। अंतिम पत्रा बाद का है, और उसमें समाप्ति पर कुछ भी नहीं लिखा गया है। किंतु प्राचीन अंश लगभग २०० वर्ष प्राचीन ज्ञात होता है, और बाद का अंश भी कम से कम १०० वर्ष प्राचीन होगा। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन की है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी। इस प्रति में

भी पाठ-संशोधन बहुत किया गया है, जिससे पूर्व का पाठ बहुत विकृत हुआ है। फिर भी पूर्व का अधिकतर पाठ जाना जा सकता है और इसलिए उसका उपयोग किया जा सकता है।

तृ० २ : यह प्रति ६१/२"×५ १/२" आकार के २११ पत्रों में हैं। इस प्रति में अंत का दोहा प्रतिलिपि करने से रह गया है, और पुष्पिका नहीं है। प्रति सत्रहवीं या अठारवीं शताब्दी की ज्ञात होती है। लिपि फ़ारसी है। यह बहुत सावधानी से लिखी नहीं गई है—कहीं-कहीं पर दोहे छूट गए हैं। एक स्थान पर प्रति खंडित भी है, जिसके कारण इस का कुछ अंश नहीं है। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन में है, और वहीं से प्रस्तुत कार्य के लिए मुझे मिली थी।

तृ० ३ : यह प्रति १२"×८" आकार के ३४० पत्रों में समाप्त हुई है, और पूर्ण है। यह नागराक्षरों में है, और अत्यंत सुलिखित है। केवल एक स्थान पर कुछ पक्तियाँ अधूरी और कुछ पूरी छोड़ दी गई हैं, कारण कदाचित् यह था कि आदर्श का पाठ वहाँ अपाठ्य था। जिल्द-बँधाई की त्रुटियों के कारण अवश्य कई पत्रे अपने स्थानों से हट कर अन्यत्र लग गए हैं। एक स्थान (४४० छंद) पर इस में अंतिम पाँच पक्तियाँ अन्य स्थान (छंद ४४५) की दुहरा दी गई हैं। इस प्रति में ३४० चित्रों के पृष्ठ हैं, और ३४० लिखाई के, और समस्त चित्र कौशलपूर्वक बनाए गए हैं। पुष्पिका में तिथि नहीं दी हुई है, केवल लिपिकार का नाम थान कायथ तथा स्थान मिर्ज़ापुर दिया हुआ है। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन की है, और वहीं से मुझे प्राप्त हुई थी।

च० १ : यह प्रति ८"×४" आकार के पत्रों में लिखी गई है। पत्र-संख्या नहीं दी गई है। किन्तु बीच में कुछ पत्रे (जिनमें संपादित पाठ के छंद २६०-२८८, ४२८-४५६, ४०६-४२४ आते हैं) नहीं हैं। यह फ़ारसी अक्षरों में अत्यंत सुलिखित है। इसके लिपिकार ने अपना नाम ईश्वरप्रसाद निवासस्थान गंगा गोरौनी, लिपिकाल ११६५ हिजरी तथा लिपिस्थान करतारपुर, बिजनौर, दिया है। यह प्रति श्री गोपालचंद्रसिंह, ऑफ़िसर ऑन स्पेशल ड्यूटी, सेक्रेटेरियट, लखनऊ की है, और उन्हीं से मुझे प्राप्त हुई है। इस प्रति के पाठ में कहीं-कहीं हस्तक्षेप हुआ है—पूर्व के पाठ को किंचित् बदलने का यत्न किया गया है, किंतु यह अधिक नहीं है, और पूर्व का पाठ प्रायः पढ़ा जा सकता है।

पं० १ : यह प्रति ८३/४" × ४३/४" आकार के पत्रों में है और पूर्ण है। यह भी फ़ारसी अक्षरों में है। प्रति के अंत में पुष्पिका है, यद्यपि उसका एक अंश पहले का और दूसरा बाद का, और किंचित् भिन्न स्याही और क़लम का है। तिथि इसमें सन् '३६ (११३६ हिजरी ?) दी हुई है। लिपिकार का पता इस दूसरे अंश में मुहम्मद नगर, परगना सिधौर, सरकार लखनऊ दिया हुआ है। यह प्रति सुलिखित है। किंतु इसके पाठ में भी आदि से अंत तक हस्तक्षेप किया गया है, और पाठ बदलने का यत्न किया गया है। कुशल इतना ही है कि पूर्व का पाठ प्रायः पढ़ा जा सकता है। यह प्रति भी कॉमनवेल्थ रिलेशन्स ऑफ़िस, लंदन में है, और वहीं से मुझे इस कार्य के लिए प्राप्त हुई थी।

इन प्रतियों का उपयोग संपादन में पूर्ण रूप से किया गया है। साथ ही मुझे नीचे लिखी दो प्रतियाँ ऐसी भी प्राप्त हुई थीं जिनका पूर्ण रूप से उपयोग नहीं किया गया है, केवल दस छंदों (२६७ से २७६ तक) में उनके जो पाठांतर मिलते हैं, उन्हें पादटिप्पणी में दे दिया गया है।

गः हरगाँव, डा० जगेसरगंज, ज़िला सुल्तानपुर के महन्त गुरुप्रसाद की प्रति है, जो सं० १८५८ की है, हिंदी लिपि में है, और पूर्ण है।

खः लखनऊ के वकील श्री कल्बे मुस्तफ़ा जायसी की उर्दू लिपि में अज्ञात तिथि की और अत्यंत खंडित प्रति है। कल्बे मुस्तफ़ा साहब ने खंडित अंशों को किसी अन्य प्रति से उतार कर पुस्तक पूरी कर ली है।

इन दोनों प्रतियों का—विशेष रूप से हरगाँव की प्रति का—पाठ इतना भ्रष्ट है कि ग्रंथ के पाठ के पुनर्निर्माण में इनसे किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल सकी, इसलिए केवल उक्त अंश में इनके पाठांतर लिख कर इन्हें छोड़ देना पड़ा। शेष समस्त प्रतियों से इनका पाठभेद कितना है, और किस अंश तक उससे पाठानुसंधान में सहायता ली जा सकती थी, यह उक्त अंश में दिए हुए पाठभेदों से ही स्पष्ट हो जावेगा।

२. प्रतियों की पाठ-विकृति

'पद्मावत' की प्रतियों की एक विशेषता, जो अन्य हिंदी रचनाओं की प्रतियों में कम पाई जाती है, यह है कि उनमें प्रतिलिपिकार से भिन्न व्यक्तियों द्वारा किए हुए पाठ-परिवर्तन बहुत मिलते हैं। पुनः, यह परिवर्तन पूर्व के पाठ पर हरताल आदि का लेप कर के नहीं किए गए हैं, वरन् पूर्व की लिखावट

में ही यथासंभव कुछ परिवर्तन करके किए गए हैं, जिससे पूर्व का पाठ प्रायः पढ़ा जा सकता है, यद्यपि कठिनता के साथ। कहीं-कहीं पर काग़ज़ खुरच कर भी यह परिवर्तन किए गए हैं। ऐसे स्थलों पर पूर्व का पाठ जानने में अत्यधिक कठिनता होती है, और कभी-कभी नहीं भी जाना जा सकता है।

पाठ-विकृति की दृष्टि से द्वि० ३, तृ० १, २ तथा ं० १ सबसे प्रमुख हैं। प्रस्तुत संपादन में सर्वत्र प्रतियों का पूर्व का पाठ ही लिया गया है, विकृत पाठ नहीं, इसलिए नीचे उदाहरणार्थ ग्रंथ के पूर्वार्द्ध से ही विकृति के स्थल दिए जा रहे हैं। परिवर्तित पाठ किन अन्य प्रतियों में पूर्व के पाठ के रूप में मिलते हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं है, क्यों कि संपादन में इस परिवर्तित पाठ का उपयोग नहीं किया गया है। फिर भी यदि कोई जानना चाहे, तो नीचे के स्थलों पर संपादित पाठ और पादटिप्पणी में दिए हुए पाठांतरों को देख कर जान सकता है।

द्वि० ३ की पाठ-विकृति :

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
१२.६	और भूले और तेइँ	और जो भूले और तेइँ
६६.६	अरकाने	अरकाँवहँ
११२.६	बेह भे	बेह भे हिरदै
१२०.३	चरचहिं चेष्टा	चरचहिं चिंता
१२४.४	चोर कि चढ़ कि चढ़ा मंसूरू।	चोर चढ़ा कि चढ़ा मंसूरू।
१५५.८	किलकिला	गिलगिला
१४८.१	सखीं	सघी
२५५.३	कहनै कहा	गहनै गहा

तृ० १ की पाठ-विकृति :

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
४०.७	जरा कौ सीसा	जराव कै सीसा
५३.४	दैयँ	दई
५४.१	सुवासू	निवासू
८२.१	चीन्हा	लीना
८५.५	ताको	ताकहँ

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
६६.१	फेरि	बहुरि
२३.६	नैन	नैनन्ह

तृ० २ की पाठ-विकृति :

१४.३	रबिहि	रहहीं
१७.२	तिश्रागी	ते श्रागे
१७.६	न भूखा नाँगा	न कबहूँ खाँगा
१७.८	दानि	दानी
१६.५	दुहुँ	दुइ
२२.३	कलाँ	कादन
२२.३	मति	महँ
२३.६	छाया	घाया
२६.४	साँवकरन	साँवक करन
२७.१	निश्ररावा	निश्रर भा
२६.४	खीहा	कीहा
३०.४	कोई	कोइ सो
३०.६	सरसुती	सो संत
३०.८	परस्ती	बान परस्ती
३२.६	ये	वे
३४.३	तस	श्रति
३४.६	धरी	धरी जो
३६.४	श्री केवरा	केवरा
३७.७	हाट	लीन्ह
३८.१	सब	तहँ
४१.१	बाजि होइ	होइ बाजि
४१.४	हस्ति	राए
४२.२	वह	तब
४६.४	बाइ	जाइ
४६.५	दिएँ	लिएँ
६४.६	मोंती	मोति
६५.३	तन	जो

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
६८.४	फरहर तस	फरत हियें
६६.३	अनभला	नहिं भला
७०.१	धरि मेलेसि	मेलेसि दुख
७०.६	हा	अहा
७१.५	होइ	हम
७१.७	छाहाँ	पाहाँ
७५.५	वहि	नहि
७७.२	मँजूसा	मँजूसै
७७.३	चहौं बिकाइ	चाह बिकान
८०.२	नहिं	नहीं
८०.३	भएउ	महा
८१.६	मधुमालति	पदुमावति
८२.६	मारि	काढ़ि
८२.७	कै	कि
८३.७	सो और जो प्यारी	सुआ सत प्यारी
८४.८	सो	जो
८४.८	सो	ते
८५.४	दामिनी	धामिनी
८७.३	तुम्ह	तूँ
८६.१	रही	अही
१००.७	मकु	माँग
१०८.५	जजु	जुग
१०८.५	अथरबन	अथरपन
१११.१	कंजनार	कंचन तार
११३.४	चाहइ	चाहहिं
११५.३	कंचुकी	केंचुली
११५.६	मैं	मुख
११७.२	पाव अस	पाव को
११६.६,७	खिनहि	खिनही
११६.८	लीन्हा	लीन्हा जिउ
१२०.२	गारुरी	गारुरू

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
१२०.६	जेते	चेतौ
१२७.६	मरै	मिरतक
१३३.३	बलया	चूरी
१३४.३	देखेन्हि	देखा
१३५.७	कुराई	कोइलि
१३७.५	इहाँ	तहाँ
१३८.५	पूँछहु	छाड़हु
१४३.२	अति	जो
१४४.३	भावा	धावा
१४४.६	काठै	काठहु
१४५.१	औ	जग
१४६.६	हहिं	औ
१४७.१	रँगि	रैनि
१४७.४	आए	छाए
१४६.१	जहँ सो पेम कहँ कूसल	जहाँ सो ताहि कुसल और
१५०.३	सतै	सत्त
१५०.४	ताक सब	ताकइ
१५०.६	खिन तर गहि खिन होइ उपराहीं।	खिनतर खिन होइ ऊपर जाहीं
१५१.४	मन हिरदैं	जो मन महँ
१५१.७	रूसै, मूसै	रूठै, लूटै
१५२.१	पै	हमि
१५२.६	अबिरथाँ	अँबिरथा
१५३.३	हुत	पुनि
१५४.६	चुवा	चुऔ
१५५.४	कँहँ	लहि
१५६.६	सहस्र	सहस
१५६,अ.३	सिर लहि देइ उघारि	तौ लहि देइ कहाँर
१५६अ.७	काठहि	काठइँ
१५८.७	अस आव साधि	ऐसे साधहु
१६०.२	जोगाँ, बियोगाँ	जोगू,बियोगू
१६०.७	अहहिं	कहसि

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
१६२.२	जोगू, भोगू	जोगी, भोगी
१६२.६	जब	जो
१६४.७	धन	नित
१६६.६	आइ	जाइ
१६७.४	धँधार	धँधोर
१६७.६	मिस	सँग
१६८.२	आवा, लावा	आवै, लावै
१६८.५	गहै	गहँ
१७०.१	रही	अही
१७२.७	मसि	जस
१७७.५	रहा	अहा
१७८.३	मालति	मालती
१८२.८	बन	तब
१८७.६	कसौंदा	कोइ कसौंदा
१९२.१	तब	पुनि
१९७.२	सब	औ
१९७.४	पछिउँ	पछिम
२००.२	अजहुँ	बुझहिं
२०१.६	महुवा बसंत	बसंत महुवा
२०२.१	कीन्हि तोरि यह	आइ कीन्हि तोरि
२१६.३	गिरहिं	मिलहिं
२१६.६	पुनि	तब
२१७.३	गई उठि	उठि गईं
२२४.२	सँवराइ	सुनि और
२२४.३	कब लगि	कैसें
२२६.२	लहि	लौं
२२८.८	होइ	हिय
२६१.३-६	ना जनहुँ	न जनहुँ
२३३.६	कँदावत जोगी	मनोहर जोगू
२३३.६	बियोगी	बियोगू
२३४.७	होइ	जस

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
२३६.१	जोगि	जोगी
२४०.१	राँध	राज
२४५.३	तन पाहीं	उपराहीं
२४६.८	कैसेहुँ	जानहुँ
२५१.५	बास	बचन
२५५.३	चाँद	कवँल
२६१.४	कस न सो	सो कस नहि
२६५.१	अग्याँ	अग्या
२६६.३	जेहि तप तपै	जेहि कर करै
२६६.४	दहुँ जोगी कै तहँ क नरेसू	आवा ना जोगी के भेसू
२७३.७	तुरग	तुरा
२७४.६	पछिउँ	पछिम

पं० १ की पाठ-विकृति :

६.७	भवन	बखुसन (?)
१२.४	पुरान	कुरान
१३.६	जियन	जीव
१७.२	कहे	अहे
१७.२	तियागी	सते कहँ (?)
१७.७	सरि सेउ न दीन्हे	सबही सें बढ़े
१७.६	न होई	न होइ न कोई
२३.६	सुना	सुनि कबि
२३.५	निसि क बिछोव औ	[अपाठ्य है]
३८.५	कटाख	कटाछ
३६.७	कतहुँ कान्ह ठग बिद्या लाई।	कंठ काठ थल बैद बोलाई।
४५.१	घूँबहि	घूमै
१६१अ.१,५	पंथ, पथ	पंठ, पठ
१६४.२	जोगी	जोगि
२००.५	आँकत	अंगद
२०७.८	निसरि	रे
२०६.५	तोकाँ	मोकाँ
२१०.२	अपनावा	लाहा

स्थल	पूर्व का पाठ	परिवर्तित पाठ
२१०.३	देइ कि आसा	देइ न पावा
२१६.६	धरमौ	धरम
२२६.६	पपिहा जेउँ	पपिहा
२३३.५	कीन्ह बियोगू	जोगी भएऊ
२५०.५	अस	सत
२५५.५	घट	कठ
२६६.१	आइ	अहा
२६२.८	हानि	खानि
२६५.५	दोसरहिं	दोसर
२६६.६	कत	गति
३६६.६	चढ़ै	छुरै

इस शुद्धीकरण में वास्तविक संशोधन के स्थान पर पाठ-विकृति ही प्रायः हुई है, यह ऊपर के उदाहरणों से स्वतः ज्ञात होगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि इसलिए और भी आदि प्रति के पाठ की प्राप्ति के लिए हमें इस पाठ-विकृति के परे प्रत्येक प्रति के पूर्ववर्ती पाठ को यत्नपूर्वक पुनर्प्राप्त कर के ही पाठानुसंधान में आगे बढ़ना होगा।

३. प्रतियों का आदर्श-बाहुल्य

'पद्मावत' की प्रतियों की एक अन्य विशेषता, जो अन्य हिंदी ग्रथों की प्रतियों में और भी कम मिलती है, यह है कि प्रतियों में मूल पाठ के साथ-साथ हाशिए में पाठांतर भी पाए जाते हैं। यह पाठभेद दो प्रकार के हैं : अन्य हाथों के दिए हुए, और स्वतः प्रतिलिपिकार के हाथ के दिए हुए। इनमें से महत्त्व के पाठांतर स्वतः प्रतिलिपिकार के हाथों के दिए हुए पाठांतर हैं, क्योंकि ऐसे पाठांतरों के मिलने पर हम यह परिणाम निकालने पर बाध्य होते हैं कि या तो प्रतिलिपिकार के सम्मुख एक से अधिक आदर्श थे, और या तो उसके आदर्श में ही पाठांतर भी दिए हुए थे। इन दोनों ही दशाओं में प्रति का मूल पाठ प्रतिलिपिकार ने किसी एक ही आदर्श के अनुसार रक्खा है, अथवा उसके उक्त अन्य आदर्श की सहायता से उसमें कोई परिवर्तन भी किया है, यह कहना कठिन हो जाता है।

प्रयुक्त प्रतियों में से प्र० १, २, द्वि०७ तथा तृ०३ में कोई पाठांतर नहीं

दिए हुए हैं। द्वि०२ में ऐसे पाठांतर अत्यंत कम हैं, और वह भी प्रतिलिपिकार के हाथों के नहीं हैं। तृ०१ में-उसके प्राचीन अंश में-पाठांतर बहुतायत से पाए जाते हैं, किंतु उनमें से कोई भी प्रति लिपिकार के हाथों के नहीं हैं। प्रतिलिपिकार के हाथों के पाठ भेद केवल द्वि० ४, ५ और द्वि० ३ में पाए जाते हैं। इनमें से द्वि० ४ तथा द्वि० ५ लीथो के छपे संस्करण हैं, और इनके पाठांतरों के संबंध में यह संभावना हो सकती है कि यह मूल प्रतिलिपिकार के सामने न रहे हों, केवल संपादक को किसी प्रति से मिले हों, और उसने उन्हें दे दिया हो।

इस संपादन में उक्त पाठांतरों की इसी संदिग्ध स्थिति के कारण केवल प्रतियों के मूलपाठ का उपयोग किया गया है। फिर भी इन पाठांतरों से विभिन्न प्रतियों के प्रतिलिपिकारों के सामने आए हुए मुख्येतर आदर्श या आदर्शों पर भी प्रकाश पड़ सकता है, इसलिए इन्हें देखना आवश्यक होगा। नीचे केवल ऐसे पाठांतरों का उल्लेख किया जा रहा है, जो प्रतिलिपिकार के हाथों के हैं, और साथ ही उनके सामने कोष्टकों में उन प्रतियों का भी उल्लेख किया जा रहा है, जिनमें वे मूलपाठ के रूप में पाए जाते हैं। पूर्ववत् यहाँ भी ग्रंथ के पूर्वार्द्ध के ही स्थल दिए जा रहे हैं। आशा है कि यह यथेष्ट होंगे।

द्वि० ३ में दिए हुए पाठांतर :

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
१.५	सत लोक	सत दीप	(प्र० १, द्वि० ३,५, तृ० १, च० १)
३०.८	सेवरा खेवरानानक पंथी	जपा तपा औ सेवरा	(!)
३०.८	सिख साधक अवधूत	सिख साधक आधूत	(!)
३३.६	जिवन हमार मुवहिं एक पासा।	जिएँ मुएँ आछहिं एक पासा।	(!)
४२.५	तुम जेहि चाक चढ़े होइ काँचे।	जौ लहि देव अस्त नहि होई।	(!)
४२.५	आपहु फिरै न थिर होइ बाँचे।	तौ लहि चेत करहु नर लोई।	(!)
५५.१	अवस्थ	उतपति	(तृ० १,३)
५६.१	पूनौं	कौनौं	(प्र० १,२, द्वि० २,४,५, तृ०३, च० १)
१४०.७	यहै बहुत	तुमतें मही	(!)
१५०.३	सत गुर सत भारा	सत खेव सँभारा	(च०१)
१६५.७	होउँ मारग जोवउँ हर स्वाँसा।	तू देनिहार निरासहि आसा।	(द्वि०७)
१६६.४	उकठीं सब बारी	आगे पतझारी	(द्वि० २,४,५, तृ० १, च० १)

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
२११.८	माथें तेहि क अपराध	महा दुक्ख अपराध।	(!)
२२१.६	पेम पंथ जो पानि है	जोग तंत जो पानि है	(द्वि० २,४,च० १)
२२३.३	न जनौं सरग बात दहुँ काहा।	पाँख न पाया पौन न पाया।	(सभी में है)
२२३.३	काहू न आइ कहै फिरि चाहा।	केहि बिधि मिलौं होउँ केहि छाया।	(!)
२३०.६	देख कंठ जर लाग सो गेरा।	कठिन परे सो कंठ लगेरा।	(!)
२३६.३	सबद बोलि कै स्रवन उघेला।	गुरू सबद दुइ सरवन मेला।	(प्र० १,२, द्वि० २,४, च० १)
२३६.३	गुरू बोलाव बेगि चलु चेला।	कीन्ह सुदिष्टि बेगि चलु चेला।	
२३६.४	पौन स्वाँस तोसों मन लाए।	तोहि अलि कीन्ह आपु भइ केवा।	(प्र० १,२, द्वि०४, तृ० १, च० १)
२३६.४	जोवै मारग दिष्टि बिछाए।	औ पठवा है बीच परेवा।	(,,)
२४०.६	छेंक कीन्ह चाहिअ जौ राजा।	जंबू कहँ चलिअ जौ राजा।	(द्वि० ५)
२५५.१	पदमावति उठि टेकै पाया।	तुम्ह सो मोर खेवक गुर देवा।	(द्वि० २, ४, ५, तृ० ३)
२५५.१	तुम हुत होइ प्रीतम कै छाया।	उतरौ पार तेही बिधि खेवा।	(,,)

ऊपर की तालिका को देखने पर द्वि० ३ के पाठांतरों के संबंध में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जिस प्रति से ये पाठांतर दिए गए हैं, वह सम्भवतः एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा दिए हुए एक से अधिक आदर्शों के पाठ देती थी। प्रतिलिपिकार के सामने दो से अधिक आदर्श थे, यह कम संभव ज्ञात होता है।

द्वि०४ में दिए हुए पाठांतर :

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
१.६	ताकर	तेहिका	(द्वि० ३)
२.१	बहम (पुहुमि !) समुंद	सात समुंद्र	(प्र० १, द्वि० ३)
३.६	कोड़	कोटि	(द्वि० ५, तृ० १)
३.७	पुनि	सँग	(द्वि० २, तृ०३)
६.१	सोइ	एक	(द्वि० ५)
६.१	बड़	सो	(द्वि० ५)

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
६.५	सो पै मरम जान जेहि नाहीं।	सो जानै जेहि दीन्हेसि नाहीं।	(द्वि० २, ३, ४, ५)
६.७	मरम	सुख	(द्वि० ४, ५)
१५.४	नाथ	पंथ	(?)
१७.५	कुलि	जग	(सभी में है)
२६.४	बाँका	जस बाँक	(द्वि० २, ५)
२८.८	गुवा	लौंग	(द्वि० २, ५, च० १)
३०.४	रामजन	रामजनी	(प्र० २, द्वि० २)
३०.६	जारि	पाँच	(द्वि० ३, ५, तृ० १)
३१.२	वान	पानि	(द्वि० ३)
३४.२	सुरँग	तुरुँज	(प्र० १, द्वि० ५, तृ० ३)
३६.७	अइ निसि बैठि	अलख पंथ	(प्र० २)
३७.४	पंचहि	पोतहिं	(प्र० २, द्वि० ५)
४१.४	लाइ	राय	(प्र० १, २, द्वि० ३, ५, तृ० १, ३, च० १)
४८.६	जनहुँ दिया दिन आछत बरे।	निसि दिन रहे दीप जनु बरे।	(द्वि० ५)
४६.७	सुनी जो	जेतनी	(द्वि० ५, च० १)
५०.१	चंपावति जो रूप अति माहाँ।	चंपावति जो रूप सँवारी।	(द्वि० २, तृ० १, ३)
५०.१	पदुमावति की जोति मन छाहाँ।	पदुमावति चाहै अवतारी।	(द्वि० २, तृ० १, ३)
५५.६	जोगि जती सन्यासी	जोगी जती तपा सन्यासी	(द्वि० ३)
६२.१	चुनि कै	कंचुकि	(प्र० १, २, द्वि० ५)
६८.४	बहुरि तेहि	फुरहरी	(द्वि० ५)
१२२.५	सुमेरू	सरीरू	(द्वि० ५)
१२५.१	टकटका	पेम चित	(प्र० २, द्वि० २, तृ० १, ३, च० १)
२३३.४	मुगुधावति	खँडरावति	(द्वि० ५)
२३६.२	सिर नाया	है ठाढ़ा	(द्वि० ३, ५, तृ० ३)

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
२३६.३	कीन्ह सुदिष्टि	गुरू बोलाव	(द्वि० ३, ५, तृ० १, ३)
२३७.४	पाती	पत्र	(द्वि० ३, ५, तृ० ३)
२४०.६	कहँ जो	जूझ	(द्वि० ५)
२४३.२	उभर	जूझ	(द्वि० ५, तृ० ३)
२४५.५	गुरु	कर	(प्र० १,२, तृ० १,३, च० १)
२५१.५	कोटिन्ह	घूमहिं	(द्वि० २, ५)

ऊपर की तालिका को देखने पर ज्ञात होगा ३५ में से २५ स्थलों पर के पाठांतर द्वि० ५ के मूल पाठ में मिलते हैं। शेष किसी एक अन्य प्रति में नहीं मिलते। हो सकता है कि अन्यों के अतिरिक्त द्वि० ५ से—अथवा उसके मूल आदर्श से—द्वि० ४ में ये पाठांतर लिए गए हों।

द्वि० ५ में दिए हुए पाठांतर :

स्थल	मूल पाठ	पाठांतर	अन्य प्रतियाँ
१५.७	चलै	करै	(?)
१५.७	बरी	बरियार	(?)
१७.१	जग दान	बड़ दान	(?)
३२.४	गवन सोहाइ सो	बरन बरन सो	(?)
३६.५	नाच	काठ	(प्र० १, द्वि० २,३,४, तृ० १,३, च० १)
४३.३	वहिक पानि राजा पै पिया।	अस वह कुंड पानि जौ पिया।	(?)
८१.६	ज्ञान सो चाहा	कहा पै चाहा	(सभी में है)
१०१.७	जुरा	रचा	(?)
१३६.१	जाइ	रात	(प्र० १)
१८३.५	भरा सब	परासन्ह	(सभी में है)
२४७.६	कुम्हिलाई	मुरझाई	(द्वि० २)
२५४.७	सरबरि	सँचरै	(प्र० १, २ द्वि० २, च० १)
२५५.२	पीऊ	सोऊ	(प्र० १,२, द्वि० ३,४,५, तृ० ३, च० १)
२५६.६	तरौं	नवौं	(द्वि० २)
२६६.४	कि नरेसू	के भेसू	(प्र० १, द्वि० २,३,४,७, तृ० ३, च० १)
२६६.५	रहै नहिं	अैस नहिं	(?)

इस तालिका को देखने पर ज्ञात होगा कि द्वि० ५ में दिए हुए पाठांतर या तो किसी एक प्रति के नहीं हैं, और या तो जिस प्रति के हैं, वह एक से अधिक प्रतियों का पाठ देती थी ।

फलतः आदर्श-बाहुल्य के इस अनुसंधान के द्वारा हम केवल द्वि० ४ के संबंध में यह जानने में समर्थ हुए हैं कि उसका प्रतिलिपिकार द्वि० ५—अथवा उसके किसी पूर्वज—के पाठ से परिचित था, और असंभव नहीं कि उसने उसका किसी अंश में उपयोग भी किया हो। शेष प्रतियों के संबंध में इस प्रकार के किसी निश्चयात्मक परिणाम पर हम नहीं पहुँच सके हैं ।

४. आदि प्रति की लिपि

'पदमावत' की प्राप्त प्रतियों में से प्र०२, द्वि० ७, तृ० ३ नागरी लिपि में हैं, शेष फ़ारसी या अरबी लिपि में हैं। किंतु इन तीन नागरी लिपि की प्रतियों के भी आदर्श फ़ारसी या अरबी लिपि में थे, यह नीचे दिए हुए उनके पाठों से प्रकट होगा। यह पाठ विस्तार-भय से केवल उदहारण स्वरूप दिए जा रहे हैं :—

प्र० २ का पाठ :

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
२३७.६	कौन	गौन
२४७.७	गई	गए
२५१.५	कोटिन्ह	खूटहिं
२५२.४	गाढ़ी	काढ़ी
२५२.६	कै	गी
२६६.८	जोग	चौक
३१५.६	आपु हौं	आफौं
३३२.८	बीन बंसि	बेन बंस
३५७.१	असाढ़ी	असारही
३६०.६	बीदरी	बेदरी
४२५.८	परथमै	पिरथिमी
४२८.३	पोढ़	पोरह
४३३.५	तहँ	तिन्ह
४३५.४	बाढ़ै, ऊभै	बाढ़ी, ऊभी
४५४.३	ससि सूरहि	ससि सोरह

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
४५८.८	पहुँची	पहुँचै
४६७.२	तिरि	तर
४७४.१	चतुर	चित्र
४८०.६	जुगुति	जो गत
५०४.४,५१५.६	गढ़	गर्ह
५१३.४	सार	सारि
५१३.८,५३१.८	घेवरे	खेवरे
५२६.८	दिन कोई	दंगवै

द्वि० ७ का पाठ :

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
२०१.४	करीलहि	करै कह
३४४.२	धाए	धाई
३४४.२	दिखाए	दिखाई
३५८.८	अढ़वौं	वोर होई
४३५.४	बाढ़े, ऊभै	बाढ़ी, ऊभी
४५८.८	पहुँची	पहुँचे
५०१.१	कुंभलनेरै, सुमेरै	कुंभलनेरी, सुमेरी
५२६.८	दिन कोई	दंगवै

तृ० ३ का पाठ :

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
६४.२	बेकरारा	किरारा
१४१.८	किलकिला	कलकला
१४८.१	गवेजा	कवेजा
२०७.४	पहुँची	पहुँचे
२०८.५	मढ़	मर्ह
२१६.६	दिढ़	दिर्ह
२२४.८	गै	कै
२२५.५	जरै, मरै	जरई, मरई
२२७.६	मढ़	मर्ह
२३२.७	चढ़ी	चर्ही
२३४.८	राती	राते
२३८.४	धँसि	धपस

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
२४१.४	पब्बै	पुवै
२४६.१	कर	गै
२६४.७	तन एँगुर	तेनेगुर
३०१.४	अनचिन्ह	आँचन्ह
३१२.७	चौपर	जोबर
३१५.५	गहे पै	गहउ पिय
३१५.६	गै	कै
३२०.३	थोरइ	थोरी
३२०.६	पी	लै
३२०.६	जेंवन	जीवन
३२३.५	गही, रही	गहे, रहे
३२२.७	हुत	हित
३२६.६	बीदरी	पींडरी
३२६.७	चितेरे, हेरे	चितेरे, हेरी
३२६.७	फिरिगै	भरिकै
३३६.१	कै	गै
३४४.३	फेरी, घेरी	फेरे, घेरे
३५७.४	साँझ	साँच
३६१.७	गुरूइ	करोइ
३६१.८	भए	भई
३६६.८	लागी दुनहु रहाहिं	लागे दिनहि रहाहिं
३६६.१	चितउर	चितुर
४०२.३	पुरोई, रोई	पुरोए, रोए
४१०.२	सिंघली, बली	सिंघले, बले
४२४.२	हुलसै	हुलसी
४२८.३	पोढ़	पोरह
४२८.८	फरे	भरी
४३५.४	बाढ़ै, ऊभै	बाढ़ी, ऊभी
४५३.८	ठग लाडू	ठक लादू
४५८.८	पहुँची	पहुँचै
४७२.४	चूनी	चूने

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
४६८.८,४६६.६	क्रांति	करानित
४७४.१	चतुर	चित्र
४७७.२	चमतकार	चमटिकार
४६१.५	सरिस	सुरस
४६२.७	छिताई	छुटाई
४६८.५	पाटि ओडैसा	पाटौ डेसा
५०१.१	कुंभलनेरै,सुमेरै	कुंभलनेरी,सुमेरी
५०८.३	गौंड	गेंद
५१०.२	चरत,चरै	जरत,जरै
५१३.८	घेवरें	खेवरें
५१४.२,५४३.४	पीत	पेत
५१४.७	सिंघली,कलमली	सिंघले,कलमले
५१६.८	तनु गा	तिनुका
५२०.८	चकमक	जगमग
५२१.२	बड़ाइ	बड़ऐ
५२२.२	देखें,लेखें	देखीं,लेखीं
५२३.६	बिस्टि	पस्ट
५२४.४	फाटहिं	भाँतिन्ह
५२६.८	दिन कोई	दंगवै
५२६.६	जुरै	जुरे
५२७.५	नागसुर	नागसर
५३१.८	घेवरें	खेवरें
५३५.७	निपुंसक	नवंसिक
५३६.३	अन्न	आनि
५४३.७	करी	क़रे
५४५.२	बटुवा	पटवा
५४७.२	मेंथी	मीठे
५४६.२	पीठे,मीठे	पीठी, मीठी
५५०.६	कही	कहै
५५८.३	बाचा परखि	बाजा इ़रुक
५६०.५	ढंग	धनुक

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
५६५.८	स्यामि तहँ	स्याम तेहि
५६७.६	जेहि	चइ
५७१.६	बिसरिगा	निसरिका
५७७.४	बिधि	बंधि
५८६.७	तन	बिनु
५८७.१	चितउर	चितुर
५६०.६	राती	राते
५६६.३	कुटनी	लुटनी
५६६.७	बहु रिसि	बिहि अखि
६०१.३	तप	तँत
६०१.३	काढ़हुँ	काढ़ेन्हि
६०२.६	लेहुँ	लीन्ह
६०४.५	लिएँ भई	लेन भए
६०४.५,६१०.६	का	गा
६११.३	मुष्टिक	मस्तिक
६११.५	सुपुरुस	सोपरस
६११.५	टारन	तारन
६११.६	काढ़हुँ	काढ़ेन्हि
६१४.६	टारा	तारा
६१४.७	सरिस	सुरस
६१६.८	कहौं	गहौं
६१७.३	कहा	गहा
६१७.७	भरा हिय	फिराही
६२०.३	चोली,खोली	चोले,खोले
६२०.४	भीजी,चुई	भीजे,चुए
६३१.१	पुरवाई	परौं आन
६३१.४	कनक	लिंग
६३३.२	मुरे	बरै
६३३.५	टूटहिं	लोटहिं
६३४.२	ठायँ न	ठाएन्ह
६३५.३	अयूब	आइऊभ

स्थल	सामान्य पाठ	प्रति का पाठ
६३६.४	सिर बाजत	सरजा जित
६४८.३	गिरहिं	करहिं
६५०.८	गइँ	कै

किंतु इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि 'पदमावत' की जितनी भी प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं—चाहे नागरी की हों चाहे फ़ारसी-अरबी लिपि की—सब का मूल आदर्श कवि की प्रति नागरी लिपि में थी। नीचे के उदाहरणों से यह बात भली भाँति प्रमाणित होगी। सुविधा के लिए प्रमाणित पाठ की पूरी पंक्ति भी नीचे दी गई है :—

१४.६ जो गढ़ नए न काऊ चलत होहिं 'सब' चूर।
'जबहि' चढ़ै पुहुमीपति सेर साहि जग सूर॥
'सब' के स्थान पर तृ० १ में पाठ 'सो' है, और 'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४,५,६, पं० १ में 'जौहि' है।

२७.१ 'जबहि' दीप निअरावा जाई। जनु कबिलास निअर भा आई।
'जबहि' के स्थान पर प्र० १, द्वि० ४,५,६, तृ० २, च० १ में 'जौहि' है।

३१.२ पानि मोति अस निरमर तासू। अंब्रित 'बानि' कपूर सुबासू।
'बानि' के स्थान पर द्वि० ४,६ में 'वानि' है।

३७.४ रतन पदारथ मानिक मोती। हीर पँवार सो 'अनबन' जोती।
'अनबन' के स्थान पर द्वि० १,३,४,५,६, च० १ में 'अनवन' है।

४०.२ तरहिं 'कुरुँम' बासुकि कै पीठी। ऊपर इंद्रलोक पर डीठी।
'कुरुँम' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'कुरुँभ' है।

४२.३ 'जबही' घरी पूजि वह मारा। घरी घरी घरिआर पुकारा।
'जबही' के स्थान पर द्वि० १,४,५,६, च० १ में 'जौहि' तथा तृ० २ में 'जौही' है।

४५.१ पुनि चलि देखा राज दुआरू। महि 'घूँबिअ' पाइअ नहिं बारू।
'घूँविअ' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'घूँबिअ' है।

४५.६ गिरि पहार 'पब्बै' गहि पेलहिं। बिरिख उपारि फारि मुख मेलहिं।
'पब्बै' के स्थान पर द्वि० १ में 'परवै' (पब्बै > पव्वै > परवै) है।

४५.९ 'कुरुँम' टूट फन फाटे तिन्ह हस्तिन्ह की चालि।
'कुरुँम' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'कुरुँभ' है, केवल द्वि० ४ में 'गिरहिं' है।

४६.४ तीख तुखार चाँड औ बाँके । तरपहिं 'तबहि' तायन बिनु हाँके ।
'तबहिं' के स्थान पर द्वि० १,४, ५, तृ० २, च० १ में 'तौहि' है ।

४८.५ भा कटाव सब 'अनबन' भाँती । चित्र होत गा पाँतिहि पाँती ।
'अनबन' के स्थान पर द्वि० १, ४, ५, च० १ में 'अनवन' है ।

५६.४ 'तब' लगि रानी सुवा छपावा । 'जब' लगि आइ मँजारिन्ह पावा ।
'तब', 'जब' के स्थान पर द्वि० १, तृ० ३ में 'तौ', 'जौ' है ।

५८.६ सुआ न रहै खुरुक जिअ अबहि काल सो आउ ।
सतुरु अहै जो करिआ 'कबहु' सो बोरै नाउ ॥
'कबहु' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, पं०१ में 'कौहु' है ।

६८.४ ओइँ उड़ानफर तहिऔ खाए । 'जब' भा पंखि पाँख तन पाए ।
'जब' के स्थान पर द्वि० १,४,५,६, च० १ में पाठ 'जौ' है ।

७१.३ सुख कुरिआर फरहरी खाना । बिख भा 'जबहि' बिआध तुलाना ।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, च० १ में 'जौहि' है ।

७६.१ 'तबहि' बिआध सुआ लै आवा । कंचन बरन अनूप सोहावा ।
'तबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, च० १ में पाठ 'तौहि' है ।

७६.१ 'तब' लगि चित्रसेन सिव साजा । रतनसेनि चितउर भा राजा ।
'तब' के स्थान पर द्वि० १ में पाठ 'तौ' है ।

८५.१ जौं यह सुआ मँदिर महँ रहई । 'कबहु' कि होइ राजा सौं कहई ।
'कबहु' के स्थान पर द्वि० ६ में पाठ 'कौहु' है ।

८७.७ रुहिर चुवै 'जब जब' कह बाता । भोजन बिनु भोजन मुख राता ।
'जब जब' के स्थान पर द्वि० २, ३, ४, ५, ६, च० १, पं० १ में 'जो जो' है ।

६८.७ 'तब' लगि दुख प्रीतम नहिं भेंटा । जौं भेंटा जरमन्ह दुख मेंटा ।
'तब' के स्थान पर द्वि० १ में 'जौ' और तृ० ३ में 'तौ' है ।

१०३.६ 'जबहि' फिराव गगन गहि बोरा । अस ओइ भँवर चक्र के जोरा ।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६ में 'जौहि' है ।

१०५.५ पुहुप सुगंध करहिं सब आसा । मकु 'हिरगाइ' लेर हम पासा ।
'हिरगाइ' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'हिरकाइ' या 'हिरिकाइ' है ।

१०६.२ फूल दुपहरी जानहुँ राता । फूल झरहिं 'जब जब' कह बाता ।
'जब जब' के स्थान पर द्वि० १, २, ३, ५, ६, ७, तृ० १, च० १ में 'जौ जौ' है ।

१२२.४ पहिलेहिं सुक्ख नेहु 'जब' जोरा। पुनि होइ कठिन निबाहत ओरा।
'जब' के स्थान पर द्वि० ६, च० १ में 'जो' है।

१२४.८-९ अबहूँ जागु अजाने होत आव निसु भोर।
पुनि किछु हाथ न लागिहि मूसि जाहिं 'जब' चोर॥
'जब' के स्थान पर द्वि० १ में 'ज्यौं' तथा द्वि० २ में 'जौ' है।

१३६.३ ओहि मेलान 'जब' पहुँचिहि कोई। 'तब' हम कहब पुरुष भल सोई।
'जब', 'तब' के स्थान पर द्वि० १,४,५,६, तृ० ३ में 'जौ', 'तब' तथा च० १ में 'जौ', 'तौ' है।

१५५.७ भा परलौ नियराएन्हि 'जबही'। मरै सो ताकर परलौ 'तबही'।
'जबही', 'तबही' के स्थान पर द्वि० १, ४, ५, ६, च० १ में 'जौही', 'तौही' है।

१५६.३ 'कबहु' न औस जुड़ान सरीरू। परा अगिनि महँ मलै समीरू।
'कबहु' के स्थान पर द्वि० १, ४, ५ में 'कौहु' है।

१६८.५ गहै बीन मकु रैनि बिहाई। ससि बाहन 'तब' रहै ओनाई।
'तब' के स्थान पर द्वि० ७ में 'तौ' है।

१७४.१ 'जब' लगि अवधि चाह सो पाई। दिन जुग बर बिरहिनि कहँ जाई।
'जब' के स्थान पर द्वि० १ में 'जौ' है।

१७५.४ रही रोइ 'जब' पदुमिनि रानी। हँसि पूँछहिं सब सखी सयानी।
'जब' के स्थान पर द्वि० ३, ६, च० १ में 'जौ' है।

१७६.५ कंचन करी न काँचहि लोभा। जौं नग होइ पाव 'तब' सोभा।
'तब' के स्थान पर द्वि० ६, तृ० ३ में 'तौ' है।

१६७.३ देव पूजि 'जब' आइउँ काली। सपन एक निसि देखिउँ आली।
'जब' के स्थान पर द्वि० ६ में 'जौ' है।

२१२.७ कै जियँ तंतमंत सो हेरा। गएउ हेराइ 'जबहि' भा नेरा।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, च० १ में 'ज़ो वहि' तथा प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, तृ० ३, पं० १ में 'जोहि' है।

२१८.४ इहाँ इंद्र अस राजा तपा। 'जबहि' रिसाइ सूर डरि छपा।
'जबहि के स्थान पर द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १, २, च० १ में 'जोहि' और द्वि० १ में 'जो वहि' है।

२४१.४ बाइस सहस सिंघली चाले। गिरि पहार 'पब्बै' सब हाले।
'पब्बै' के स्थान पर तृ० ३ में 'पुवै' है।

२४१.७ जनु भुइँचाल जगत महिं परा। 'कुरुँम' पीठि टूटिहि हियँ डरा।
समस्त प्रतियों में 'कुरुँम' के स्थान पर 'कुरुँभ' है।

२४५.८ परगट गुपुत सकल महि मंडल पूरी रहा 'सब' ठाउँ।
जहँ देखौं ओहि देखौं दोसर नहिं कहँ जाउँ॥
'सब' के स्थान पर द्वि० १, ३, ६, तृ० २, ३ में पाठ 'सो' है।

२४७.३ 'जबहि' सुरुज कहँ लागेहु राहु। 'तबहिं' कवँल मन भएउ अगाहू।
'जबहि', 'तबहि' के स्थान पर द्वि० १,३,४,५,६, तृ० २, च० १, 'पं०' १ 'जोहि', 'तोहि' और द्वि० २ में 'चोहि', 'तोहि' है।

२६५.५ मेघ डरहिं बिजुरी जहँ डीठी। 'कुरुँम' डरै धरती जेहि पीठी।
प्र० २ में 'कमठ' है, शेष समस्त प्रतियों में 'कुरुँभ' है।

२६४.६ अब तेहि बाजु राँग भा डोलौं। होइ सार 'तब' बर कै बोलौं।
'तब' के स्थान पर तृ० २ के अतिरिक्त समस्त प्रतियों में 'तौ' है।

३००.४ अनचिन्ह पिउ काँपै मन माहाँ। का मैं कहब गहब 'जब' बाहाँ।
'जब' के स्थान पर द्वि० ४, ६, च० १ में 'जौ' है।

३०६.६ भँवरहि मीँचु निअर 'जब' आवा। चंपा बास लेइ कहँ धावा।
'जब' के स्थान पर प्र० १ के अतिरिक्त समस्त प्रतियों में 'जौ' है।

३०७.६ पान सुपारी खैर दुहुँ मेरै करै चकचून।
'तब' लगि रंग न राचै 'जब' लगि होइ न चून॥
'तब', 'जब' के स्थान पर प्र० १, द्वि० १, ४, ५, तृ० १ में 'तौ', 'जौ' है।

३११.३ जेहि उपना सो औटि मरि गएऊ। जरम निनार न 'कबहू' भएऊ।
'कबहू' के स्थान पर द्वि० ४, ५ में 'कौहू' है।

३२६.८ पुनि अभरन बहु काढ़ा 'अनबन' भाँति जराउ।
फेरि फेरि निति पहिरहि जैस जैस मन भाव॥
'अनबन' के स्थान पर प्र० १, द्वि० १,२,३,४,५,६, तृ० १, २, पं० १ में 'अनवन' है।

३३६.६ भएउ इंद्र कर आएसु प्रस्थावा येह सोइ।
'कबहु' काहु कर प्रभुता 'कबहु' काहु कर होइ॥
'कबहु' के स्थान पर दोनों स्थानों पर द्वि० ४, ५, च० १ में 'कौहु' है।

३५२.२ पहल पहल तन 'रूइ' जो भाँपै। हहलि हहलि अधिकौ हिय काँपै।
'रूइ' के स्थान पर प्र० २ में 'रूद' है।

३५२.७ रातिहु देवस इहै मन मोरें। लागौं कंत 'छार' जेउँ तोरें।
'छार' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'थार' या 'ठार' है।
'छ' का 'थ', और उर्दू 'थ' का पुनः 'ठ' हुआ ज्ञात होता है।

३६४.४ हिया फाट वह 'जबहि' कुहूकी। परे आँसु होइ होइ सब लूकी।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० २, ६, च० १ में 'जौहि' है।

३६६.७ जस तूँ पंखि होहुँ दिन भरऊँ। चाहौं 'कबहु' जाइ उड़ि परऊँ।
'कबहु' के स्थान पर द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, च० १ पं० १ में 'कौहु' है।

३६०.४ धुवाँ उठै मुख स्वाँस सँघाता। निकसै आगि कहै 'जब' बाता।
'जब' के स्थान पर द्वि० २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १, पं० १ में 'जौ' और द्वि० ३ में 'जौं' है।

४१२.५ कहँ अब रहस भोग 'अब' करना। असे जिअन चाहि भल मरना।
'अब' के स्थान पर तृ० ३ में 'औ' है।

४७०.८ होइ अँधियार बीजु खन लौकै 'जबहि' चीर गहि भाँपु।
केस काल ओइ कत मैं देखै सँवरि सँवरि जिय काँपु॥
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, च० १ में पाठ 'जौहि' है।

४८६.२ जनु मूरति वह परगट भई। दरस देखाइ 'तबहि' छपि गई।
'तबहि' के स्थान पर द्वि० २, ४, ५, ६, च० १ में 'तौहि' है।

५१०.७ गिरि पहार 'पब्बै' भे माँटी। हस्ति हेरान तहाँ को चाँटी।
'पब्बै' के स्थान पर तृ० ३ में 'पुवै' है।

५१०.६ जिन्ह जिन्ह के घर खेह हेराने हेरत फिरहिं ते खेह।
अब तौ दृष्टि 'तबहि' पै आवहिं उपजहिं नए उरेह॥
'तबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, च० १ में पाठ 'तौहि' है।

५२५.५ अष्ट धातु के गोला छूटहिं। गिरि पहार 'पब्बै' सब फूटहिं।
'पब्बै' के स्थान पर तृ० ३ में 'पवै' है।

५३४.५ 'जब' लगि जीभ अहै मुख तोरे। पँवरि उघेलु बिनौ कर जोरे।
'जब' के स्थान पर प्र० २, तृ० ३ में 'जौ' है।

५३६.६ सहस बार जौं धोवहु 'तबहु' गयंदहि पंक।
'तबहु' के स्थान पर द्वि० ४, ५, च० १ में 'तौहु' है।

५४५.२ कटवाँ बटवाँ मिला सुबासू । सीका 'अनबन' भाँति गरासू ।
'अनबन' के स्थान पर द्वि० १, ५,६ में 'अनवन' है ।

५५२.६ लख लख बैठ पँवरिश्रा जहँ सो नवहिं करोरि ।
तिन्ह 'सब' पँवरि उआरी ठाढ़ भए कर जोरि ॥
'सब' के स्थान पर तृ० ३ में 'सो' है।

५५३.८ साहि 'जबहि' गढ़ देखा कहा देखि कै साजु ।
कहिश्र राज फुर ताकर सरग करै जो राजु ॥
'जबहि' के स्थान पर द्वि० २, ३, ४, ५, ६ में 'जौहि' है ।

५६७.३ दरपन साहि पैत तहँ लावा । देखौं 'जबहि' झरोखें आवा ।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, च० १ में 'जौहि' है ।

६१३.५ 'जबहि' आइ जुरिहै वह ठटा । देखत जैस गगन मँह छटा ।
'जबहि' के स्थान पर द्वि० ४, ५, ६, च० १ में 'जौहि' है ।

६३१.४ कनक 'बानि' गजबेलि सो नाँगी । जानहुँ काल करहिं जिउ माँगी ।
'बानि' के स्थान पर समस्त प्रतियों में 'वानि' है ।

ऊपर जो उदाहरण दिए गए हैं, उनका विश्लेषण करने पर ज्ञात होगा कि प्रयुक्त प्रतियों में से कोई भी ऐसी नहीं है जिसमें के कुछ-न-कुछ स्थल ऊपर के न आ गए हों । इससे यह प्रकट है कि आदि प्रति नागरी में थी ।

५. आदि प्रति की भाषा

'पदमावत' की शब्दावली से पर्याप्त रूप से परिचित न होने के प्रमाण उसके प्रतिलिपिकारों में ही नहीं, संपादकों में भी मिलते हैं । नीचे ग्रंथ से इसलिए ऐसे स्थल मात्र लिए जा रहे हैं, जहाँ न केवल प्रतिलिपिकारों ने वरन् संपादकों ने भी इसी कारण पाठ अशुद्ध दिए हैं। विस्तार-भय से उदाहरण ग्रंथ के पूर्वार्द्ध से ही दिए जा रहे हैं :—

२.१ कीन्हेसि 'हेम'[1] समुंद्र अपारा । कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा ।
'हेम' ∠ 'हिंम'

१०.२ सात सरग जो 'कागर'[2] करई । धरती सात समुँद मसि भरई ।
'कागर' ∠ 'काग़ज़' (?)

---

[1]. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ । [2]. द्वि० ३, तृ० २, ३, च० १, पं० १ ।

१५.३ अदल कीन्ह उम्मर की नाईं । भइ 'अहान'[3] सगरी दुनियाईं ।
'अहान' ∠ 'आख्यान' (?) = कहावत

१६.५ भा अस सूर पुरुष निरमरा । सूर चाहि 'दह'[4] आगरि करा ।
'दह' ∠ 'दश'

१७.८ औस दानि जग 'उपना'[5] सेर साहि सुरतान ।
'उपना'='उत्पन्न हुआ'

२४.५ आदि अंत जसि 'कथ्था'[6] अहै । लिखि भाषा चौपाई कहै ।
'कथ्था' ∠ 'कथा' (तुलना० ८२.७)

२६.३ छप्पन कोटि कटक दर साजा । सबै छत्रपति 'ओरगन्ह'[7] राजा ।
'ओरगन्ह' ∠ 'अरकान' [-ए-दौलत] (तुलना० ६६.६)

२६.५ सोरह सहस घोर घोर सारा । साँव करन 'बालका'[8] तोखारा ।
'बालका'='बलख का' (?)

२६.३ सारौ सुवा सो रहचह करहीं । 'गिरहिं' (?)[9] परेवा औ करबरहीं ।
'गिरना' = ऊपर से टूट पड़ना (यथा : टूटि परेवा परत गगन ते गिरत न आपु सँभारै—सूरदास)

३३.१ ताल 'तलावरि'[10] बरनि न जाहीं । सूझै वार पार तेन्ह नाहीं ।
'तलावरि'=छोटे ताल

३७.४ रतन पदारथ मानिक मोती । हीर पवाँर सो 'अनबन'[11] जोती ।
'अनबन'=न बनने योग्य, अपूर्व

४१.५ बहु 'बनान'[12] वै नाहर गढ़े । जनु गाजहिं चाहहिं सिर चढ़े ।
'बनान'='बनावट'

४५.६ गिरि पहार 'पब्बै'[13] गहि पेलहिं । बिरिख उपारि झारि मुख मेलहिं ।
'पब्बै' ∠ 'पर्वत' (तुलना० २४१.४, ५२५.५)

---

3. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, तृ० ३, पं० १ । 4. तृ० १, २, ३, पं० १ । 5. द्वि० ४, ७ के अतिरिक्त समस्त में । 6. प्र० १, तृ० २ के अतिरिक्त समस्त में । 7. द्वि० ४, ५ के अतिरिक्त समस्त में । 8. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ । 9. द्वि० २, तृ० २, च० १, पं० १ में 'किरहिं' । 10. प्र० १, २, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ । 11. द्वि० २, ५, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में 'अनवन' । 12. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, तृ० १, २, पं० १ में 'बनान' द्वि० ७, तृ० ३ में 'बिनान' । 13. प्र० २, द्वि० २, ४, ७, तृ० ३, पं० १ ।

४६.४ तीख तोखार चाँड औ बाँके। तरपहिं तबहिं 'तायन'[१४] बिनु हाँके।
'तायन'=कोड़ा

५२.५ सूर परस सों भएउ 'किरीरा'[१५]। किरिन जामि उपना नग हीरा।
'किरीरा'='क्रीड़ा' (तुलना० ३१७.२,४)

६२.१ धरीं तीर सब 'छीपक'[१६] सारी। सरवर महँ पैठीं सब बारी।
'छीपक'=छपी हुई, छापादार

६६.१ पदुमावति तहँ खेल 'धमारी'[१७]। सुआ मँदिर महँ देखि मँजारी।
'धमारी'='धमार' [की भाँति]

६७.३ रानी सुना 'सुक्ख'[१८] सब गएऊ। जनु निसि परी अस्त दिन गएऊ।
'सुक्ख' ∠ 'सुख'

६८.३ जौ लहिं पिंजर अहा परेवा। अहा 'बाँदि'[१९] कीन्हेसि निति सेवा।
'बाँदि='बंदी'

६८.४ तेहि बँदि हुतें जो छूटै पावा। पुनि फिरि 'बाँदि'[२०] होइ कित आवा।
'बाँदि'='बंदी'

७०.३ बिखदाना कत दइअ 'अँकूरा'[२१]। जेहि भा मरन डहन धरि चूरा।
'अँकूरा'='अंकुरित किया', उत्पन्न किया

७१.४ काहेक भोग बिरिखि अस फरा। 'अड़ा'[२२] लाइ पंखिन्ह कहँ धरा।
'अड़ा'=चुभने वाली वस्तु (यथा बर्र का 'आँड़ा')

७१.५ होइ निचिंत बैठे तिहि 'अड़ा'[२३]। तब जाना खोंचा हिय गड़ा।
'अड़ा' यथा ऊपर

७८.३ कहेसि पंखि खाधुक 'मानवा'[२४]। निठुर ते कहिअ जे पर 'मँसुखवा'।
'मानवा' ∠ 'मानव'; 'मँसुखवा'=माँस खाने वाले

---

१४. प्र० २, द्वि० ३, च० १, पं० १ में 'तायन', द्वि० २ में 'ताय'। १५. द्वि० ४, ५ के अतिरिक्त समस्त में। १६. द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३, च० १ में 'छीपक', तृ० २, पं० १ में 'चंपक'। १७. प्र० २, द्वि० १, ४, ६, ७, तृ० १, २, च० १। १८. प्र० २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १। १९. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ७, तृ० २, पं० १। २०. तृ० ३, द्वि० ४ के अतिरिक्त समस्त में। २१. द्वि० ४, ५ के अतिरिक्त समस्त में। २२. प्र० २, च० १ के अतिरिक्त समस्त में। २३. प्र० २, द्वि० ३ के अतिरिक्त समस्त में। २४. द्वि० २, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १।

८३.४ 'भलेहिं सु और पियारी नाहाँ।'[२५] मोरें रूप कि कोइ जग माहाँ।
'भलेहिं सु और पियारी नाहाँ'=सो भले ही पति की और भी (मेरे अतिरिक्त) प्रिय पत्नियाँ हैं

८६.४ जौ 'तिवाइँ'[२६] के काज न जाना। परैं धोख पाछें पछिताना।
'तिवाइँ'=स्त्री

८७.८ माथें नहिं बैसारिअ 'सठहि'[२७] सुवा जौ लोन।
'सठहि'='शठ को'

८६.६ तेहि रिसि हौं परहेलिउँ 'निगड़ रोस किय'[२८] नाहँ।
'निगड़ रोस किय'=कठिन रोष किया

६१.६ मान 'मते'[२९] हौं गरब जो कीन्हा। कंत तुम्हार मरम मैं लीन्हा।
'मते'='मत से', विचार से

६६.६ अष्टौ कुरी नाग 'ओरगाने'[३०] भै केसन्हि के बाँद।
'ओरगाने' ∠ 'अरकान' [-ए-दौलत] (तुलना० २६.३)

१०३.७ समुँद हिलोर फिरहिं जनु झूले। खंजन 'लुरहिं'[३१] मिरिग जनु भूले।
'लुरना'='लोटना' (तुलना० २६७.२)

१०५.५ पुहुप सुगंध करहिं सब आसा। मकु 'हिरगाइ'[३२] लेइ हम बासा।
'हिरगाइ'='हिलगा कर', निकट लाकर (यथा 'हिलगि' १३७.६)

१०७.३ वह सो जोति हीरा उपराहीं। हीरा 'दिपहि'[३३] सो तेहि परिछाहीं।
'दिपना'=प्रदीप्त होना

१०८.७ अमर भारत पिंगल औ गीता। 'अरथ जूझ'[३४] पंडित नहिं जीता।
'अरथ जूझ' ∠ 'अर्थयुद्ध' (शास्त्रार्थ)

---

२५. द्वि० १, २, ४, ७, पं० १; (द्वि० ३, तृ० १ में—सुआ और—)। २६. द्वि० ५ में 'तिरिआ', द्वि० १, पं० १ में 'तिवानि', शेष समस्त में 'तिवाइँ'। २७. तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। २८. द्वि० १, ३, ६, तृ० १, २ च० १, पं० १। २९. प्र० २, द्वि० १, २, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० २,। ३०. प्र० १, २, तृ० ३ के अतिरिक्त सभी में 'मानमते' द्वि० ७, में 'मानमती'। ३१. प्र० २, द्वि०, २, ३, तृ० २ में 'ओरगाने'। तृ० ३ में 'सब ओरँगे'। ३२. द्वि० १, ६, तृ० २, च० १ में 'हिरगाइ'। ३३. द्वि० २, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। ३४. प्र० १, द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १, में 'जूझ', द्वि० ३ में 'जो चढ़'।

१११.१ बरनौं गीवँ कूँज कै रीसी। 'कंजनार'[३५] जनु लागेउ सीसी।
'कंजनार' ∠ 'कंजनाल'

११२.६ ठावँहि ठावँ 'बेह'[३६] भे हिरदै ऊभि साँस लेइ निंत्त।
'बेह' ∠ बेध, (छिद्र)

११३.६ काहूँ छुअइ न 'पारे'[३७] गए मरोरत हाथ।
'पारना'=सकना (तुलना २१६.६)

११५.३ लहरैं देत पीठि जनु चढ़ा। चीर ओढ़ावा 'कंचुकि'[३८] मढ़ा।
'कंचुकी' 7 'केंचुली'

११६.७ मानहुँ बीन गहे कामिनी। 'रागहिं'[३९] सबै राग रागिनी।
'रागना'=गाना

११७.६ तेहि अरघानि भवँर सब लुबुधे तजहिं न 'नीवी'[४०] बंध।
'नीवी'=फुँदना (तुलना २६८.६)

१२२.२ तासौं जूझि जात जौं जीता। जात न 'किरसुन'[४१] तजि गोपीता।
'किरसुन' ∠ 'कृष्ण'

१२४.५ तूँ राजा का पहिरसि कंथा। तोरे 'घटहि'[४२] माँझ दस पंथा।
'घटहि'='घट (अंतःकरण) ही'

१२४.८ अबहूँ जागु अयाने होत आव 'निसु'[४३] भोर।
'निसु'=बिलकुल

१२७.१ गनक कहहिं करु गवन न आजू। दिन लै चलहु 'फरै'[४४] सिधि काजू।
'फरै'=फल दे

१२८.१ चहुँ दिसि आन 'सोंटिअन्हि'[४५] फेरी। भै कटकाई राजा केरी।
'सोंटिअन्हि'=सोंटा-बरदारों ने

---

[३५]. द्वि० २, ३, ६, ७, तृ० २ में 'कंजनार', पं० १ में 'कंजतार'। [३६]. द्वि० १, २, ७, तृ० २. च० १। [३७]. द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १,२ च० १, पं० १, में 'पारे', तृ० ३ में 'पारेउ'। [३८]. द्वि० १, २, ७, तृ० २, ३। [३९]. प्र० २, द्वि० १, ३, ६, ७, तृ० ३ में 'रागहिं' प्र० १, द्वि० २, ४, ५, तृ० १, पं० १ में लागहिं। [४०]. द्वि० २, ३, ६, तृ० २ में 'तीवी', पं० १ में 'तिनवै', तृ० १ में 'पीवी'। [४१]. द्वि० १, ६, ७, तृ० १, २, पं० १। [४२]. द्वि० १, २ के अतिरिक्त समस्त में। [४३]. प्र० २, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। [४४]. प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ७, तृ० २ में 'फरै' तृ० १ में 'भरै'। [४५]. प्र० १, द्वि० १, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में।

१३२.७ जूड़ कुरकुटा पै भखु चाहा । जोगिहि तात भात 'दहुँ'[४६] काहा ।
'दहुँ'='धौं'

१३३.२ बार मोर 'रजियाउर'[४७] रता । सो लै चला सुआ परबता ।
'रजियाउर'=राजकाज

१३६.३ कया 'मलै'[४८] तेहि भसम मलीजा । चलि दस कोस ओस निति भीजा ।
'मलै'='मलय', चंदन

१३६.६ किंगरी हाथ गहें बैरागी । पाँच तंतु धुनि 'उठै'[४९] लागी ।
'उठै'=उठने

१४१.१ गजपति कहा सीस 'बरु'[५०] माँगा । एतने बोल न होइहि खाँगा ।
'बरु'=भले ही (तुलना १४२.५)

१४१.७ तुम्ह सुखिआ अपने घर राजा । एत जो 'दुक्ख'[५१] सहहु केहि काजा ।
'दुक्ख' ∠ दुःख

१४२.५ औ जेइँ समुँद पेम कर देखा । तेइँ यह समुँद बुंद 'बरु'[५२] लेखा ।
'बरु'=भले ही (तुलना १४१.१)

१४६.४ बोहित दीन्ह दीन्ह 'नै'[५३] साजू ।
'नै'=नए

१५०.३ सत साथी सत कर 'सहिवाँरू'[५४] । सत्त खेइ लै लावै पारू ।
'सहिवाँरू' ∠ 'सम्हारू' ∠ 'संभार'

१५५.५ नीर होइ तर ऊपर सोई । 'महनारंभ'[५५] समुँद जस होई ।
'महनारंभ' ∠ मंथनारंभ (तुलना ४६३.३)

१५७.५ कोई खाहिं पवन कर झोला । कोई करहिं पात जेउँ 'दोला'[५६] ।
'दोला' ∠ 'दोल' (झूला)

---

४६. प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, ७, तृ० १, २, पं० १ । ४७. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २ में 'रजियाउर', तृ० ३ में 'राजाबाउर', च० १, पं० १ में 'रजबाउर' । ४८. प्र० २, द्वि० ३, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में । ४९. द्वि० १, २, तृ० १, २ । ५०. द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० १, २, पं० १, । ५१. प्र० १, द्वि० १, ४, ५, तृ० ३, पं० १, । ५२. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, ७, तृ० २, पं० १, । ५३. द्वि० २, ४, तृ० २, ३, च० १, पं० १ । ५४. प्र० २, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, ३ ५५. प्र० २, द्वि० ७ में 'महनारंभ' प्र० १ में 'मंथनअरंभ' द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १ में 'महाअरंभ' तृ० २ 'तहाँ अरंभ' में । ५६. द्वि० ३, पं० १ के अतिरिक्त समस्त में ।

१६६.७ केसरि बरन हिश्रा भा तोरा । मानहुँ मनहिं भएउ किछु 'फोरा'[५७] ।
'फोरा' ∠ 'फोड़ा'

१७१.१ पदुमावति तूँ 'सुबुधि'[५८] सयानी । तोहि सरि समुँद न पूजै रानी ।
'सुबुधि'=सुबुद्धिवाली

१७१.५ जोबन जो रे 'मतँग'[५९] गज अहै । गहु गिश्रान आँकुस जिमि गहै ।
'मतँग'=उन्मत्त

१७२.६ कनक 'बानि'[६०] जोबन कत कीन्हा । औ तन कठिन बिरह दुख दीन्हा ।
'बानि'=के वर्ण का

१७७.८ कहाँ रतन 'रतनाकर'[६१] कंचन कहाँ सुमेरु ।
'रतनाकर' ∠ 'रत्नाकर' (समुद्र)

१७६.६ नग कर मरम सो जरिश्रा जाना । जरै सो अस नग हीर 'पखाना'[६२] ।
'पखाना' ∠ 'पाषाण' (बहुमूल्य पत्थर)

१८१.८ बसै मीन जल धरती अंबा 'बिरिख[६३] अकास' ।
'बिरिख' ∠ 'वृक्ष' ।

१८३.५ नवल सिंगार 'बनाफति'[६४] कीन्हा । सीस परासन्ह सेंदुर दीन्हा ।
'बनाफति' ∠ 'वनस्पति'

१८५.१ भै 'अहान'[६५] पदुमावति चली । छतिस कुरी भै गोहने चली ।
'अहान' ∠ 'आह्वान'

१८६.१ फर फूलन्ह सब डारि 'ओनाई'[६६] । झुंड बाँधि के पंचमि गाई ।
'ओनाना'=झुकाना

१६४.१ सुनि सो बात रानी 'सिउँ'[६७] चढ़ी । कहाँ सो जोगी देखौं मढ़ी ।
'सिउँ'=संग

१६६.४ फूल झरे सूखी फुलवारी । दिस्टि परीं उकठी सब 'झारीं'[६८] ।
'झारीं'=झाड़ियाँ

---

५७. प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० ३, च० १ । ५८. प्र० २, द्वि० १, ३, ६, तृ० २, पं० १ । ५९. द्वि० २, ३, ५, ७ के अतिरिक्त समस्त में । ६०. प्र० २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, पं० १ । ६१. प्र० १, द्वि० १, २, ३, ६, तृ० १, पं० १ । ६२. द्वि० १, ३, ६, तृ० २, पं० १ । ६३. द्वि० १, २, ३, ४, ७, तृ० २, ३, च० १, पं० १ । ६४. प्र० १, २, द्वि० १ के अतिरिक्त समस्त में । ६५. द्वि० १, २, ५, ६, तृ० १, च० १, पं० १ में 'अहान', द्वि० ३, ४, तृ० २ में 'आहाँ' । ६६. प्र० १, २, द्वि० २, ७, तृ० २, च० १, पं० १ । ६७. द्वि० २, ४, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ । ६८. द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ ।

१९९.८ हिया देखि सो चंदन 'घेवरा'[६९] मिलि कै लिखा बिछोव ।
'घेवरना'=पोतना

२००.३ जनहुँ 'सरागिनि'[७०] होइ होइ लागे । सब बन दागि सिंघबन दागे ।
'सरागिनि' ∠ 'शराग्नि' (सरकंडे में लगी हुई आग)

२०५.८ महमद चिनगी 'अनँग'[७१] की सुनि महि गगन डेराइ ।
'अनँग' ∠ 'अनंग'

२०६.९ 'कनै'[७२] पहार होत है रावट को राखै गहि पाइँ ।
'कनै' ∠ कनक (तुलना .१६०.५)

२२८.१ रोवँहि रोवँ बान वै फूटे । सोतहि सोत रुहिर 'मकु;'[७३] छूटे ।
'मकु'=मानो

२२९.७ अब धँसि लीन्ह चहै तोहि आसा । पावै साँस कि मरै 'निसाँसा'[७४] ।
'निसाँसा'=बिना साँस के (तुलना ११९.५;२०३.८)

२३४.७ होहु चकोर दिस्टि ससि पाहाँ । औ रबि होहु कवँल 'दधि'[७५] माहाँ ।
'दधि'=उदधि, सरोवर

२४१.४ बाइस सहस सिंघली चाले । गिरि पहार 'पब्बै'[७६] सब हाले ।
'पब्बै' ∠ पर्वत (तुलना ४५.६; ५२५.२)

२४५.८ गुरू मोर मोरें 'हित'[७७] दीन्हें तुरगहि ठाठ ।
'हित'=भलाई के लिए

२५१.५ उदधि समुँद जस तरँग देखावा । चषु कोटिन्ह'[७८] मुख एक न आवा ।
'कोटिन्ह'=करोड़ों

२५४.७ प्रीति अकेलि बेलि चढ़ि छावा । दोसर बेलि न 'पसरै'[७९] पावा ।
'पसरना'=फैलना

२६६.२ तेहि रावन अस को बरिवंडा । जेहि दस सीस बीस 'भुअडंडा'[८०] ।
'भुअडंडा' ∠ 'भुजदंड' (तुलना ४६७.८)

---

६९. प्र० २, द्वि० १, २, ३,६, ७, तृ० २, ३, पं० १ में 'घेवरा' द्वि० ४ 'घौरा' । ७०. द्वि० ७, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में । ७१. प्र० २, द्वि० ६, च० १, पं० १ । ७२. द्वि० १, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ । ७३. प्र० १, २ के अतिरिक्त समस्त में । ७४. द्वि० २, ६, ७, तृ० २, ३, च० १, पं० १ । ७५. प्र० १, द्वि० १, ४, ७, तृ० १, च० १ पं० १ । ७६. द्वि० ६, ७, तृ० १, पं० १ में 'पब्बै', द्वि० ४, ५ में 'पर्वै' तृ० ३ में 'पुवै', च० १ में 'पत्तै' । ७७. द्वि० १, ७, तृ० १, २, ३ । ७८. द्वि० १, ४, ६, ७ पं० १ में 'कोटिन्ह' द्वि० ३ में 'कोटि', प्र० १,२, तृ० १, च० १ में 'खोटिन्ह', । ७९. द्वि० १, ३, ४, ६, ७, तृ० १, २ । ८०. प्र० २, द्वि० ४ के अतिरिक्त समस्त में ।

२६६.१ सोइ बिनती 'सिउँ'[८१] करै बसीठी। पहिले करूर अंत होइ मीठी।
'सिउँ'=सँग (तुलना २८६.३)

२८६.३ सूरज लीन्ह चाँद पहिराई। हार नखत तरइन्ह 'सिउँ' पाई[८२]।
'सिउँ' यथा ऊपर

२९९.१ का बरनौं अभरन 'उर'[८३] हारा। ससि पहिरे नखतन्ह कै मारा।
'उर'=हृदय

२९९.६ 'नीवी'[८४] कवँल करी जनु बाँधी। बिसा लंक जानहुँ दुइ आधी।
'नीवी'=फुँदना (तुलना ११७.६)

३०१.७ मान न करु 'थोरा'[८५] करु लाड़ू। मान करत रिस मानै चाड़ू।
'थोरा' ∠ 'थोड़ा'

३०६.८ रैनि जो देखिअ चंद मुख 'मकु'[८६] तन होइ 'अनूप'[८७]।
'मकु'=मानो, इसलिए कि; 'अनूप'=अनुपम

३१७.२ 'किरिरा[८८] काम केलि अनुहारी। 'किरिरा'[८८] जेहिं नहिं सो न सुनारी।
३१७.३ 'किरिरा[८८]' होइ कंतकर तोखू। 'किरिरा'[८८] किहें पाव धनि मोखू।
३१७.४ जेहि 'किरिरा'[८८] सो सोहाग सोहागी। चंदन जैस स्यामि कँठ लागी।
'किरिरा' ∠ 'क्रीड़ा' (कामकेलि) (तुलना ५२.५)

३१८.४ लूटे अंग रंग सब भेसा। छूटी 'मंग'[८९] भंग भे केसा।
'मंग' ∠ माँग

३२९.६ पेमचा डोरिआ औ 'बीदरी'[९०]। स्याम सेत पिअरी औ हरी।
'बीदरी'=बीदर की बनी (साड़ी)

३३०.३ राजा कर भल मानहिं भाई। जेइँ हम कहँ यह 'भुम्मि'[९१] देखाई।
'भुम्मि' ∠ 'भूमि'

३३२.३ चंदन अगर 'चतुरसम'[९२] भरीं। नए चार जानहुँ अवतरीं।
'चतुरसम'=चंदन, केशर, कस्तूरी और कपूर से बना हुआ एक द्रव

---

८१. प्र० १, द्वि० ६,७, तृ० २, च० १, पं० १। ८२. तृ० १, पं० १ में 'सिउँ', शेष में 'सों'। ८३. द्वि० १, २, ५, ६, तृ० २, ३। ८४. प्र० २, द्वि० ६ में 'नीवी', द्वि० २, तृ० २ में 'बिनवै'। ८५. द्वि० २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २। ८६. द्वि० १, ६ के अतिरिक्त समस्त में 'मकु'। ८७. द्वि० १ के अतिरिक्त समस्त में 'अनूप'। ८८. प्र० १, द्वि० ७, में 'क्रीड़ा', शेष में 'किरिला'। ८९. तृ० २, च० १ के अतिरिक्त समस्त में। ९०. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, च० १, पं० १ में 'बीदरी', प्र० २ में 'बेदरी'। ९१. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० १, च० १, पं० १। ९२. द्वि० २, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में।

३३४.३ उहाँ त कोपि 'बैरि'[९३] दर मंडौं। इहाँ त अधर अमिअ रस खंडौं।
'बैरि' ∠ वैरी

३३४.६ उहाँ त 'लूसौं'[९४] कटक खँधारू। इहाँ त जितौं तुम्हार सिंगारू।
'लूसना'=तहस नहस करना ? (तुलना १९७.८)

३३७.१ रितु पावस 'बिरसै'[९५] पिउ पावा। सावन भादौं अधिक सोहावा।
'बिरसना' ∠ 'बिलसना'

३३७.५ सीतल बूँद ऊँच 'चौबारा'[९६]। हरिअर सब देखिअ संसारा।
'चौबारा'=चारो ओर दरवाज़े वाला खंड

३४१.८ सारस जोरी किमि हरी मारि गएउ 'किन खग्गि' [९७]।
मारि गएउ 'किन खग्गि'='क्यौं न खगी को' मार गया

३४२.४ सखि हिय हेरि हार 'मैन'[९८] मारी। 'हहरि'[९९] परान तजै अब नारी।
'मैन' ∠ 'मदन' ; 'हहरि'=हाय छोड़कर

३४७.१ लाग कुआर नीर जग घटा। अबहुँ आउ पिउ 'परभुमिलटा'[१००]।
'परभुमिलटा'=परदेश पर अनुरक्त

३५२.२ तरिवर झरे झरे बन ढाँखा। भइ 'अनपत्त'[१०१] फूल फर साखा।
'अनपत्त'=पत्रहीन

३५६.४ बुंद बुंद महँ जानहुँ जीऊ। 'कुंजा'[१०२] गुंजि करहिं पिउ पीऊ।
'कुंजा' ∠ क्रौञ्च (तुलना १११.१)

३६२.२ आँधरि बूढ़ि 'सुतहि'[१०३] दुख रोवा। जोबन रतन कहाँ भुइँ टोवा।
'सुतहिं=सुत (पुत्र) के ही

३६६.४ ब्रह्म रुद्र हरि बाचा तोही। सो निजु 'अंत'[१०४] बात कहु मोही।
'अंत'=अंतःकरण की

---

९३. द्वि० ४, ६ के अतिरिक्त समस्त में। ९४. द्वि० १, ३, ४, ६, ७, तृ० ३, च० १, पं० १ में 'लूसौं', द्वि० २ में 'लुहसौं'। ९५. द्वि० १, ३, ६, तृ० ३, च० १ के अतिरिक्त समस्त में। ९६. द्वि० ५, तृ० १ के अतिरिक्त समस्त में। ९७. प्र० २, द्वि० १, २, ४, ५, ६, च० १, पं० १ में 'किन खग्गि' तृ० १ में 'नहिं खग्गि'। ९८. द्वि० १, पं० १। ९९. द्वि० १, ५, ७, के अतिरिक्त समस्त में। १००. द्वि० ३, ४, ५, के अतिरिक्त समस्त में। १०१. प्र० १, द्वि० २, ४, ६, ७, तृ० १ में 'अनपत्त' द्वि० १, तृ० ३, च० १ में 'उनंत' प्र० २, पं० १ में 'अनंत', तृ० २ में 'उतपत्ति', द्वि० ५ में 'उतंत'। १०२. प्र० १, द्वि० १, ६, तृ० २, पं० १ में 'कुंजा', प्र० २, द्वि० ३, ४, तृ० ३, च० १ में 'गुंजा', तृ० १ में 'कँचा'। १०३. द्वि० २, ६, तृ० १, ३ में 'सुतहि', द्वि० ४, ५, च० १ में 'सुठि', तृ० २ में 'सो तोहि'। १०४. द्वि० १, २, ४, ५, ६, तृ० २ में 'अंत', द्वि० ३, च० १, पं० १ में 'अति'।

इस शब्दावली पर यदि ध्यान दिया जावे तो ज्ञात होगा कि कुछ तो इसमें ऐसी शब्दावली है जो प्राकृत की है, कुछ ऐसी है जो ग्रामीण है, और कुछ ऐसी है जो सामान्य हिंदी की है। भूलें प्रतिलिपिकारों एवं सम्पादकों ने तीनों के सम्बन्ध में की हैं, किंतु प्राकृत की शब्दावली के सम्बन्ध में सब से अधिक, उससे कम ग्रामीण शब्दावली के सम्बन्ध में, और सब से कम सामान्य हिंदी की शब्दावली के सम्बन्ध में।

जायसी के व्याकरण से भी—यद्यपि उनकी शब्दावली से कम—उनके प्रतिलिपकारों और संपादकों ने यथेष्ट परिचय नहीं प्रदर्शित किया है। इसलिए नीचे यहाँ भी ऐसे ही स्थल दिए जा रहे हैं जहाँ संपादित प्रतियों में भी पाठ अशुद्ध है, और ये स्थल भी ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध से हैं:—

८.६ ना कोई है ओहि के रूपा। न ओहि काहु अस 'तइस'[१०५] अनूपा।
'तइस'='ऐसा' (तुलना ३४२.१)

१०.६ 'एत'[१०६] कीन्ह सब गुन परगटा। अबहूँ समुँद बूँद नहिं घटा।
'एत'=इतना

२६.७ नरपती क 'कहाव'[१०७] नरिंदू। भुअपती क जग दोसर इंदू।
'कहाव'=कहलाता है

५२.५ कन्या रासि उदौ जग किया। पदुमावती नाउँ 'जिसु'[१०८] दिया।
'जिसु'=जिसका

५७.४ ठाकुर अंत चहै जौं मारा। 'तहँ'[१०९] सेवक कहँ कहाँ उबारा।
'तहँ'=तब, ऐसी परिस्थिति में

५६.१ एक देवस 'कौनिउँ'[११०] तिथि आई। मानुस रोदक चली अन्हाई।
'कौनिउँ'=कोई, 'तिथि'=त्योहार, पर्व

६६.६ ऐ गोसाईं तूँ औस बिधाता। जावँत जीव 'सबक'[१११] भखदाता।
'सब क'=सब को

८६.६ जो न कंत कै आयसु माहाँ। कौनु भरोस नारि कै 'नाहाँ'[११२]।
'नाहाँ'=नाह (नाथ) को

---

१०५. प्र० १, द्वि० ५, ६, ७ के अतिरिक्त समस्त में। १०६. प्र० १, २, द्वि० ३ तृ० के अतिरिक्त समस्त में। १०७. प्र० २, द्वि० १, ६, ७, तृ० ३, पं० १। १०८. प्र० १, २, द्वि० ३ के अतिरिक्त समस्त में। १०९. द्वि० २ के अतिरिक्त समस्त में। ११०. द्वि० ३, तृ० १ के अतिरिक्त समस्त में। १११. द्वि० १, ६, ७, तृ० १, २, पं० १। ११२. द्वि० ४, ६, तृ० २, ३, पं० १।

८०.७ कै कै फेर 'अंत'[११३] बहु दोखी। बारहिं बार फिरइन सँतोषी।
'अंत'=अंत में, नितांत

१२३.२ तुम अबहीं जेइँ घर पोई। कँवल न बैठि बैठ 'हहु'[११४] कोई।
'हहु'='हो'

१२७.४ पंडित 'भुलान'[११५] न जानै चालू। जीउ लेत दिन पूँछ न कालू।
'भुलान'=भूला हुआ

१६८.४ कलप समान रैनि 'हठि'[११६] बाढ़ी। तिल तिल भरि जुग जुग बर गाढ़ी।
'हठि'=हठपूर्वक

२१२.१ सुनि कै महादेव कै 'भषा'[११७]। सिद्ध पुरुष राजे मन लखा।
'भषा'=कहा हुआ

३२०.२ जहँ मद तहाँ कहाँ संभारा। कै सो 'खुमरिहा'[११८] कै मतवारा।
३२०.७ भोर होत तब पलुह सरीरू। पाव 'खुमरिहा' [११८] सीतल नीरू।
'खुमरिहा'=खुमारी वाला

३४२.१ पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा 'तस'[११९] बोलै पिउ पीऊ।
'तस'=ऐसा (तुलना ८.६)

३६२.५ नैनन्ह दिस्टि 'त'[१२०] दिया बराहीं। घर अँधियार पूत जौं नाहीं।
'त'='तो'

३६३.४ जहँ जहँ पुहुमी जरी भा रेहू। बिरह के दगध होइ जनि 'केहू'[१२१]।
'केहू'=कोई भी

जायसी के प्रतिलिपिकार और संपादक उत्तरोत्तर जायसी के समय की भाषा से दूर हटते आ रहे थे, और इनमें से अनेक अवधी-प्रदेश के भी नहीं थे, ऐसी दशा में जायसी की भाषा के विषय में इनसे भूलें होना स्वाभाविक था। इनमें व्याकरण के विषय में उतनी भूलें नहीं मिलतीं जितनी शब्दावली के विषय में मिलती हैं। 'पदमावत' के मूल पाठ के अनुसंधान में जायसी के प्रतिलिपिकारों की भाषा—शब्दावली और व्याकरण-संबंधी ऊपर बताई गई कमज़ोरियाँ इसलिए महत्त्व की हैं।

---

११३. द्वि० ४ के अतिरिक्त समस्त में। ११४. द्वि० ७, तृ० २, च० १। ११५. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। ११६. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ६, ७ तृ० २, ३, च० १। ११७. प्र० २, तृ० २, ३, के अतिरिक्त समस्त में। ११८. प्र० १, द्वि० १, ४ के अतिरिक्त समस्त में। ११९. द्वि० १, ५, ६, तृ० २, पं० १। १२०. द्वि० १, ६, में 'त', द्वि० २, ४, ५, तृ० १, २, च० १ में 'त' तृ० ३ में 'तो'। १२१. प्र. १, २, द्वि० ३, ४ के अतिरिक्त समस्त में।

६. आदि प्रति की छंद-योजना

जायसी के छंद चौपाई और दोहा हैं, किंतु इनके विषय में उन्होंने बड़ी स्वतंत्रता दिखाई है। नीचे के स्थलों से, जो केवल उदाहरण-स्वरूप ग्रंथ के पूर्वार्द्ध से लिए गए हैं, यह बात भली-भांति स्पष्ट हो जावेगी, क्योंकि इन स्थलों पर शब्दों के निकाले अथवा रक्खे जाने पर अर्थ पूरा-पूरा नहीं लगता है। फिर भी प्रतिलिपिकारों और संपादकों ने इन समस्त स्थलों पर उक्त दोनों छंदों के अपने साँचों में ही जायसी के छंदों को भी बैठाने का यत्न किया है :—

मुहमद तहाँ निचिंत पथ जेहि सँग मुरसिद पीर।
जेहिं रे नाव 'करिआ औ खेवक'[1] बेगि पाव सो तीर ॥ १६ ॥

तीसरे चरण में मात्राओं और शब्दों का आधिक्य है।

सेवरा खेवरा 'बानपरस्ती'[2] सिध साधक अवधूत।
आसन मारि बैठ सब जारि आतमा भूत ॥ ३० ॥

प्रथम चरण में मात्राधिक्य है, और तृतीय में मात्राएँ कम हैं।

चरपट चोर धूत गँठिछोरा मिलेरहहिं तेहि नाँच।
जो तेहि हाट 'सजग भा अगुमन'[3] गथ ताकर पै बाँच ॥ ३६ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राधिक्य है।

हिय न समाइ दिस्टि नहिं पहुँचै जानहु ठाढ़ सुमेरु।
कहँ लगि कहौं उँचाई 'ताकरि'[4] कहँ लगि बरनौं फेरु ॥ ४० ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राधिक्य है।

कुंवरि बतीसौ लकवनी असि सब माहँ अनूप।
जावँत 'सिंघलदीपइ'[5] सबै बखानैं रूप ॥ ४६ ॥

तृतीय चरण में मात्राएँ कम हैं।

आनि धरी आगे बहु साखा। भुगुति 'न मिटै जौलहि बिधि'[6] राखा। ६६.४

दूसरे चरण के 'मिटै' के 'टै' को ह्रस्व के रूप में पढ़ना पड़ता है।

होइ निचिंत बैठे तेहिं 'अड़ा'[7]। तब जाना खोंचा हिय गड़ा। ७१.५

दोनों पंक्तियों के दोनों चरणों में एक एक मात्रा कम है।

---

१. द्वि० १, ५ तृ० २, पं० १ के अतिरिक्त समस्त में। २. द्वि० २, ३, ४ तृ० २, ३ के अतिरिक्त समस्त में। ३. प्र० १, द्वि० १, ७ के अतिरिक्त समस्त में। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ७, तृ० १, ३, पं० १। ५. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १, पं० १। ६. द्वि० १, ३, ७, तृ० १। ७. प्र० २ द्वि० ३ के अतिरिक्त समस्त में।

कहेसि पंखिखाधुक 'मानवा'[८] । निठुर तेक हिश्र जे पर 'मँसुखवा'[८] । ७८.३

दोनों चरणों में एक-एक मात्रा कम है ।

जो जो सुनै 'धुनै सिर राजा'[९] प्रीति क होइ अगाहु ।
अस गुनवंत 'नाहि भल सुअटा'[१०] बाउर करिहै काहु ॥ ८२ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं ।

जौ लहि जिऔं 'रातिदिन सुमिरौं'[११] मरौं तो ओहि लै नाउँ ।
मुख राता तन 'हरिअर कीन्हे'[१२] ओहू जगत लै नाऊँ ॥ ६३ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं ।

तीनि लोक 'चौदह खँड'[१३] सबै परै मोहिं सूझि ।
पेम छाड़ि किछु और न लोना जौं देखौं मन बूझि ॥ ६६ ॥

प्रथम चरण में मात्राएँ कम किंतु तृतीय चरण में अधिक हैं ।

तीतिर गीवँ जो फाँद हैं नितहि पुकारै दोख ।
सकति हँकारि 'फाँद गियँ मेले'[१४] कब मारै होइ मोख ॥ ६७ ॥

केवल तृतीय चरण में मात्राएँ अधिक हैं ।

अस फँदवारे केस वै राजा परा सीस गियँ फाँद ।
अष्टौ कुरी नाग 'ओरगाने'[१५] भै केसन्हि के बाँद ॥ ६६ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं ।

कंठसिरी 'मुकुताहल माला'[१६] सोहै अभरन गीवँ ।
को होइ हार कंठ ओहि लागै केइँ तपु साधा जीवँ ॥ १११ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं ।

सिर करवत तन 'करसी लै लै'[१७] बहुत सीझे तेहि आस ।
बहुत घूम 'घूँटत मैं देखें'[१८] उतरु न देइ निरास ॥ ११४ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक है ।

किरन कै करा[१९] चढ़ा ओहि माथे । तब सो छूट अब छूट न नाथे । ११५.५

प्रथम चरण का 'कै' ह्रस्व की भाँति पढ़ा जाता है ।

---

८. द्वि० २ ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ । ९. द्वि० ३ के अतिरिक्त समस्त में । १०. प्र० १, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में । ११. द्वि० १, ४, ७, तृ० ३, पं० १ । १२. द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २, पं १ । १३. प्र० १, २ के अतिरिक्त समस्त में । १४. प्र० १ के अतिरिक्त समस्त में । १५. प्र० १, द्वि० १ के अतिरिक्त समस्त में । १६. प्र० १ के अतिरिक्त समस्त में । १७. द्वि० २, ३, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ । १८. द्वि० १, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ । १९. द्वि० १, ६, तृ० १, २ ।

बेधि रहा जग बासना परिमल मेद सुगंधि।
तेहि अरघानि भवँर 'सब लुबुधे'[20] तजहिं न नीवी बंध ॥ ११७ ॥

तृतीय चरण में मात्राएँ अधिक हैं।

पंथ 'सूरिन्ह कर'[21] उठा अँकूरू। चोर चढ़ै कि चढ़ै मंसूरू। १२४.४

'पंथ' को 'पँथ' की भाँति पढ़ना पड़ता है।

देखु अंत अस होइहि गुरू दीन्ह उपदेस।
सिंघल दीप 'जाब मैं'[22] माता मोर अदेस ॥ १३० ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ कम हैं।

खार खीर दधि उदधि 'सुरा जल'[23] पुनि किलकिला अकूत।
को चढ़ि नाँघहि समुद 'ये सातौ'[24] है काकर अस 'बूत' ॥ १४१ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राधिक्य है।

रावन चहा सौहँ 'होइ हेरा'[25] उतरि गए दस माँथ।
संकर धरा लिलाट भुइँ और को जोगी नाँथ ॥ १६१ ॥

प्रथम चरण में मात्राएँ अधिक हैं।

चारिहुँ चक्र फिरै मन खोजत डंड न रहै थिर मार।
होइ के भसम पवन 'संग धावौं'[26] जहाँ सो प्रान अधार ॥ १६७ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

जस मरजिया समुँद धँसि मारै हाथ आव तब सीप।
ढूँढ़ि लेहि ओहि 'सरग दुआरी'[27] औ चढ़ु सिंघलदीप ॥ २१५ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

रूप तुम्हार 'जीव कै आपन'[28] पिंड कमावा फेरि।
आपु हेराइ रहा 'तेहि खँड होइ'[29] काल न पावै हेरि ॥ २५६ ॥

प्रथम और तृतीय चरणों में मात्राएँ अधिक हैं।

गए जो बाजन बाजते 'जिन्हहि'[30] मारन रन माहँ।
फिरि बाजन तेइ बाजे मंगलचार ओनाहँ ॥ २७४ ॥

---

[20] द्वि० ७ के अतिरिक्त समस्त में मात्राएँ अधिक हैं, यद्यपि भिन्न-भिन्न ढंग से। [21]. प्र० १, द्वि० ३, ६, च० १ के अतिरिक्त समस्त में। [22]. तृ० २ के अतिरिक्त समस्त में। [23]. प्र० १, द्वि० ६, तृ० ३ के अतिरिक्त समस्त में। [24]. प्र० १, २, द्वि० ७ के अतिरिक्त समस्त में। [25]. प्र० १, २, द्वि० ७ के अतिरिक्त समस्त में। [26]. प्र० १, २, द्वि० ४ के अतिरिक्त समस्त में। [27]. प्र० १ के अतिरिक्त समस्त में। [28]. तृ० १, पं० १ के अतिरिक्त समस्त में। [29]. तृ० १, पं० १ के अतिरिक्त समस्त में। [30]. प्र० १, द्वि० १, ४ के अतिरिक्त समस्त में।

द्वितीय चरण में मात्राधिक्य तथा है, तृतीय चरण में मात्राएँ कम हैं

सखि हिय हेरि हार 'मैन'[31] मारी। हहरि परान तजे अब नारी। ३४२.

प्रथम चरण के 'मैन' का 'मै' मात्राधिक्य के कारण ह्रस्व की भाँति पढ़ जाता है।

ऊपर के स्थलों पर मात्राओं की जो अधिकता और कमी बताई गई है, व दोहे की चौबीस और चौपाई की सोलह मात्राएँ मान कर बताई गई है, जिसके अनुसार प्रतिलिपिकारों और संपादकों ने पाठों को शुद्ध करने का यत्न किय है। किंतु इन समस्त स्थलों पर यदि उनके पाठांतरों को देखा जावे तो ज्ञा होगा कि उनका पाठ किसी प्रकार भी मान्य नहीं हो सकता। फलतः य भली-भाँति प्रमाणित है कि जायसी दोनों छंदों की मात्राओं के संबंध पर्याप्त स्वतंत्रता रखते थे। उनके पूरे ग्रंथ के संपादन और उसके पाठ निर्धारण में उनकी इस प्रवृत्ति का यथेष्ट ध्यान रखना पड़ेगा।

७. प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध

किसी भी ग्रंथ की विभिन्न प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध ऐसे पाठांतरों निर्धारित होता है जिन्हें निर्विवाद रूप से भूलें माना जा सके। 'पदमावत की प्रतियों में ऊपर हमने जो आदर्श-बाहुल्य और पाठ-विकृति की प्रवृत्तिय देखी हैं, उसके अनंतर यह कल्पना करना हमारे लिए स्वाभाविक होग कि प्रतियों में ऐसी भूलें बहुत कम रह गई होंगी जिन्हें प्रतिलिपिका अज्ञात भाव से कर बैठते हैं, और जिन्हें उनके उत्तराधिकारी प्रतिलिपिका भी बराबर उसी प्रकार 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' न्याय से करते जाते हैं फिर भी इस प्रकार की जो भूलें समान रूप से एक से अधिक प्रतियों पाई जाती हैं, उनके संबंध में ज्ञातव्य विवरण और विवेचन नीचे प्रस्तु किया जा रहा है।

(१) ८१.६ सामान्य पाठ है : 'गुनी न कोई आपु सराहा। जौं बिकाइ कहा पै चाहा।' प्र० १,२ में इसके स्थान पर है, 'सुवैं आपन गुन दरसावा। हीरामनि तब नाउँ कहावा।' पाठांतर का दूसरा चर ग्रंथ में अन्यत्र इस प्रकार आया है :—

---

[31]. दि० १, पं० १।

दमनहि नल जसहंस मेरावा । तुम्ह हीरामनि नाउँ कहावा । (२५५.७) और इन प्रतियों में भी वहाँ पर दूसरा चरण यही है । विवेचनीय स्थल पर पाठांतर प्रसंग-विरुद्ध भी है—वह घटना के उल्लेख के रूप में है, किंतु पूरे छंद में प्रथम पंक्ति से लेकर अंतिम पंक्ति तक हीरामनि का कथन चलता है, इसलिए प्रसंग में सामान्य पाठ ही लग सकता है, पाठांतर नहीं ।

(२) ८७.२,७ द्वितीय पंक्ति का सामान्य पाठ है : 'रानी उतर मान सों दीन्हा । पंडित सुआ मँजारी लीन्हा ।' द्वि० २ में इसके स्थान पर है 'बेगि सुवा लै आवहु रानी । नींद परै कछु कहै कहानी ।' छंद की तीसरी पंक्ति है : 'मैं पूँछा सिंघल पदुमिनी । उतरु दीन्ह तूँ को नागिनी ।' सामान्य पाठ के साथ ही इस तीसरी पंक्ति की संगति लगती है, उसके अभाव में इसकी कोई संगति नहीं रहती है, इसलिए सामान्य पाठ की शुद्धता और पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है ।

सप्तम पंक्ति का सामान्य पाठ है : 'रुहिर चुऔ जब-जब कह बाता । भोजन बिनु भोजन मुख राता ।' तृ० २ में इसके स्थान पर है: 'औस भएउ तूँ नहिं उठि आनी । नींद परै कछु कहै कहानी ।' इस पंक्ति के पूर्व और पश्चात् की पंक्तियों में नागमती द्वारा राजा से की हुई हीरामनि की शिकायत है । उस शिकायत के बीच पाठांतर की पंक्ति स्पष्ट ही असंगत है ।

और भी ध्यान देने की बात यह है कि उपर्युक्त द्वितीय पंक्ति के पाठांतर का दूसरा चरण वही है जो इस सप्तम पंक्ति के पाठांतर का है । इससे ज्ञात होता है कि पाठांतर की पंक्ति द्वि० २ और तृ० २ के सामान्य पूर्वज में हाशिए में लिखी हुई थी जिसको कुछ हेर-फेर के साथ दोनों प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों के लिपिकारों ने इस प्रकार दो विभिन्न पंक्तियों के संशोधित पाठ के रूप में ग्रहण किया ।

(३) १५०-६ सामान्य पाठ है : 'डोलहिं बोहित लहरैं खाहीं । खिन तर खिनहि होहिं उपराहीं ।' द्वि० ४,५ में इस पंक्ति के दूसरे चरण का पाठ है : 'सहस कोस एक पल महँ जाहीं ।' किंतु यह चरण अन्यत्र भी आया है : 'धावहिं बोहित मन उपराहीं । सहस कोस एक पल महँ जाहीं ।' (१४७.२) और द्वि० ४,५ में भी वहाँ दूसरा चरण अभिन्न है । प्रसंग में पाठांतर का पाठ उक्त अन्य स्थल पर ही संगत है, जहाँ बोहितों की गति का उल्लेख किया गया है । विवेचनीय स्थल पर बोहितों के लहरों द्वारा झकोले खाने का वर्णन है, इसलिए सामान्य पाठ ही संगत होगा ।

(४) १५३.२-३ सामान्य पाठ है : 'आगि जो उपनी ओहि समुंदा। लंका जरी ओहि एक बुंदा। बिरह जो उपना ओह हुत गाढ़ा। खिन न बुझाइ जगत तस बाढ़ा।' प्र० १, २, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १ में उद्धृत प्रथम अर्द्धाली के 'आगि जो उपनी' के स्थान पर है 'बिरह जो उपना' और उद्धृत द्वितीय अर्द्धाली के बिरह जो उपना के स्थान पर है 'आगि जो उपनी', और इसके अतिरिक्त दूसरी अर्द्धाली के 'गाढ़ा' तथा 'बाढ़ा' के स्थान पर है 'गाढ़ी' तथा 'बाढ़ी'। लंका 'आग' से ही जली थी, 'बिरह' से नहीं, और 'बिरह' और 'आग' में 'बिरह' ही न बुझने वाला है, 'आगि' नहीं। ठीक यही भाव अन्यत्र भी इस प्रकार आए हैं :

लंका बुझी आगि जो लागी। यह न बुझै तस उपज बजागी। २५३-३

बिरह बजागि बीच का कोई। आगि जो छुअै जाइ जरि सोई।

आगि बुझाइ ढोइ जल काढ़हि। ओह न बुझाइ आगि अति बाढ़इ।

१८०.१-२

विवेचनीय के बाद की पंक्ति है : जेहि सो बिरह तेहि आगि न डीठी। सौहँ जरै फिरि देइ न पीठी।' यह पंक्ति भी सामान्य पाठ का ही समर्थन करती है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(५) १५६.२ सामान्य पाठ है : 'एहि ठाउँ कहँ गुरु सँग कीजै। गुरु सँग होइ पार तौ लीजै।' द्वि० २, ४, तृ० २, च० १, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'एही पंथ सब कहँ है जाना। होइ दुसरे बिसवास निदाना।'

द्वि० ६ में यही पाठांतर निम्नलिखित पंक्ति के स्थान पर है : 'खाँडै चाहि पैनि पैनाई। बार चाहि पातरि पतराई।' १५६.७

प्र० १, २, में यही पाठांतर निम्नलिखित पंक्ति के स्थान पर है : 'तीस सहस्र कोस कै पाटा। अस साँकर चलि सकै न चाँटा।' १५६.६

प्रसंग यहाँ पर अनेक पंथों में से किसी एक पंथ के चयन का नहीं है, वरन् पंथ की दुर्गमता का है, इसलिए सामान्य पाठ ही सर्वत्र संगत है, पाठांतर किसी भी स्थान पर संगत नहीं है। ऐसा ज्ञात होता है कि उपर्युक्त पाठांतर इन प्रतियों के सामान्य पूर्वज में हाशिए में लिखा हुआ था, जिसे इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से संशोधन समझ कर इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने ग्रहण किया।

तृ० १ में उपर्युक्त पाठांतर की पंक्ति अतिरिक्त पंक्ति के रूप में है।

द्वि० ७, में प्र० १, २ की भाँति १५६.६ के स्थान पर है :

'ओही पंथ जाना सब काहू। ओही पंथ महँ होइ निबाहू।'

अन्य पाठांतर और इस पाठांतर की शब्दावली प्रायः एक ही है, केवल द्वितीय चरण में वह किंचित् भिन्न है, इसलिए द्वि० ७ को भी उपर्युक्त प्रतियों के सामान्य पूर्वज की परंपरा में लेना चाहिए।

(६) २०३.२ सामान्य पाठ है : 'जौं' पहिले अपुने सिर परई। सो का काहु कै धरहरि करई।' प्र० २ में इसके स्थान पर है : 'जबहीं आगि अपुने सिर लागा। आनि बुझावै कहाँ को जागा।' और तृ० १ में सामान्य पाठ की भी पंक्ति है, और पाठांतर की भी—अर्थात् छंद में सात अर्द्धालियों के स्थान पर आठ अर्द्धालियाँ हैं। सामान्य पाठ की संगति प्रकट है—उसमें 'अपुने सिर परने' का कर्म 'गाज' है, जो पूर्ववर्त्ती पंक्ति में आया है; पाठांतर में 'अपुने सिर' में 'आग लगने' का कथन है। 'सिर पर गाज पड़ना' ही लोक-सम्मत है, 'सिर में आग लगना' नहीं। इसके अतिरिक्त 'आगि' स्त्रीलिंग कर्म के साथ 'लागा' पुलिंग क्रिया व्याकरण से असंमत है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि प्र० २ तथा तृ० १ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की पंक्ति हाशिए में लिखी थी, इसी से प्र० २ तथा तृ० १ अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने पाठांतर को इस प्रकार विभिन्न ढंग पर ग्रहण किया।

(७) ८ २१२.७-६ सामान्य पाठ है :

'कै जिय तंत मंत सों हेरा। गएउ हेराइ जबहिं भा मेरा।
बिनु गुरु पंथ न पाइअ भूलै सोइ जो मेंट।
जोगी सिद्ध होइ तब जब गोरख सों भेंट॥'

इन पंक्तियों के स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ में हैं :

'जौं' भलि होति लच्छिमी नारी। तजि महेस कित होत भिखारी।
जो जो सुनै सो रोवै ढुरहिं रकता के आँसु।
रोम रोम तन रोवै सोत सोत भर माँसु॥'

छंद २१२ की पंक्तियाँ उस अवसर की हैं, जब परीक्षा लेने के लिए आए हुए महेश और पार्वती को रत्नसेन उनके सिद्धों के लक्षण से भाँप लेता है। २१२.७ के पाठांतर में महेश और लक्ष्मी के विच्छेद की बात कही गई है। २१२.८-६ के पाठांतर में सुनने और सुन कर रोने का कथन है। यह दोनों ही कथन असंगत हैं। लक्ष्मी और महेश का कोई युग्म नहीं है; और लाक्षणिक

अर्थ में भी लक्ष्मी (धन-संपदा) महेश के पास कभी थी, इसकी कोई कथा ज्ञात नहीं है, न यहाँ लक्ष्मी के अच्छे-बुरे होने अथवा उसके संचय या त्याग का कोई प्रसंग है। यहाँ किसी के सुनने और सुन कर रोने का भी प्रसंग नहीं है। इसलिए छंद २१२ के पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(८) २१३.८-९ सामान्य पाठ है :

'तस रोवै जस जरै जिउ जरै रकत औ माँसु।
रोवँ रोवँ सब रोवहिं सोत सोत भरि आँसु॥'

इसके स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ में २१२.८-९ के सामान्य पाठ का ऊपर दिया हुआ दोहा है।

कुल छंद २१३ तथा छंद २१४.४ तक में रत्नसेन के रोने का प्रसंग है। प्रकट है कि इनके बीच सामान्य पाठ ही संगत है, बिना गुरु के पंथ की प्राप्ति अथवा साधना की सिद्धि के उल्लेख का पाठांतर नहीं। इस स्थलों पर भी पाठांतर की अशुद्धि अतः प्रकट है।

(९) २३१.४ सामान्य पाठ है : 'ना जनहुँ भएउ मलैगिरि बासा। ना जनहुँ रबि होइ चढ़ा अकासा।' तृ० २ में यह पंक्ति नहीं है, और इसकी पूर्ति शेष अर्द्धालियों के अंत में निम्नलिखित पंक्ति देकर की गई है :

'ना जेहिं अस्थिर भा रँग राता। ना जेहिं हम जिउ भा वह गाता।'

पाठांतर की यह पंक्ति द्वि० २ में किसी पंक्ति के स्थान पर नहीं वरन् एक अतिरिक्त आठवीं पंक्ति के रूप में दी हुई है।

विवेचनीय स्थल पर पद्मावती के वह कथन दिए गए हैं, जो उसने हीरामनि को संबोधित करके रत्नसेन की पत्रिका पाने पर रत्नसेन के संबंध में किए हैं, और पाठांतर के कथन छंद की निम्नलिखित पंक्तियों में भी आते हैं जो समान रूप से विवेचनीय प्रतियों में भी मिलती हैं :

हौं जानति हौं अबहूँ काँचा। ना जनहुँ प्रीति रंग थिर राँचा। २३१.२

ना जनहुँ करा भृगिं कै होई। ना जनहुँ अबहुँ जिऔ मरि सोई। २३१.६

इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि पाठांतर की पंक्ति तृ० २ तथा द्वि० २ के सामान्य पूर्वज में हाशिए में लिखी हुई थी, जिसके कारण उक्त दोनों प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार विभिन्न ढंग पर ग्रहण किया।

(१०) २३६.४ सामान्य पाठ है : 'तोहि अलि कीन्ह आपु भइ केवा। हौं पठवा कै बीच परेवा।' द्वि० १, ३, ५ तृ० ३ में यह पंक्ति नहीं है, और

इसके स्थान पर छंद की अंतिम अर्द्धाली के रूप में निम्नलिखित पंक्ति दी हुई है :

'औ अस कहै हौं नैन पसारे। दरसन चाहौं रूप तुम्हारे।'

द्वि० २ में पाठांतर की यही पंक्ति किसी अन्य पंक्ति के स्थान पर नहीं, वरन् एक अतिरिक्त, आठवीं पंक्ति के रूप में दी हुई है। किंतु प्रायः इसी उक्ति की पंक्ति छंद में एक अन्य भी आई हुई है, जो इन प्रतियों में भी शेष प्रतियों की भाँति मिलती है :

'पवन स्वाँस तो सों मन लाए। जोवै मारग दिष्टि बिछाए।' (२३६.५)

इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि एक ओर द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ तथा दूसरी ओर द्वि० २ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की उपर्युक्त पंक्ति हाशिए में लिखी हुई थी, जिसका उपयोग इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार विभिन्न ढंग से किया।

(११) २५५.६-७ सामान्य पाठ है : 'दसइँ अवस्था असि मोहि भारी। दसएँ लखन होहु उपकारी। दमनहिं नल जस हंस मेरावा। तुम्ह हीरामनि नाउँ कहावा।' द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ में छठी पंक्ति के स्थान पर, तथा द्वि० ६ में उद्धृत सातवी पंक्ति के स्थान पर पाठ है :

'तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देऊ। उतरौं पार तेहि बिधि खेऊ।'

इस पाठांतर का 'सो' निरर्थक है और केवल भरती के लिए लाया हुआ है; इसी प्रकार इसका 'खेऊ'='खेउ' 'गुरु देऊ'='गुरुदेव' के लिए अनादरात्मक है। पाठांतर की कुछ प्रतियों में 'गुरुदेवा' और 'खेवा' पाठ है। 'खेवा' क्रिया का भूतकालिक रूप है—यदि उसे क्रिया का रूप माना जाये तो—विधि का रूप नहीं है जो होना चाहिए था। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि एक ओर द्वि० २, ३, ४, ५ तथा दूसरी ओर द्वि० ६ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर हाशिए में लिखा था, जिसे इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से लिया।

(१२) २६६.१ सामान्य पाठ है : 'रावन गरब बिरोधा रामू। औ ओहि गरब भएउ संग्रामू।' इसके स्थान पर द्वि० ६, तृ० ३ में है : 'बोलै भाँट फुरहि हम झूठे। जौं एह गरब देखि तोहि रूठे।' द्वि० २ में यह पंक्ति अतिरिक्त पंक्ति के रूप में छंद के प्रारंभ में ही दी हुई है। पूर्व के दोहे की प्रथम पंक्ति है :

'बोला भाँट नरेस सुनु गरब न छाजा जीव।'

यहाँ पर 'बोला भाँट' कहने के अनंतर पुनः एक ही पंक्ति के अंतर पर 'बोलै भाँट' कहने में पुनरुक्ति प्रकट है। पुनः 'तोहि रूठे' अर्थहीन है, और 'गरब देखि' 'झूठे' होने में असंगति भी स्पष्ट है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रमाणित है। ऐसा ज्ञात होता है कि द्वि० ६, तृ० ३ एक ओर, और द्वि० २ दूसरी ओर, के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की पंक्ति हाशिए में लिखी हुई थी, जिससे उसका उपयोग इन प्रतियों ने अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार विभिन्न ढंग से किया।

(१३) २७०.५ सामान्य पाठ है : 'अस्तुति करत मिला बहु भाँती। राजैं सुना भई हिए साँती।' इसके स्थान पर प्र० १, द्वि० ७, तृ० १ में है : 'हीरामनि है पंडित परेवा। कीन्हेसि पदुमावति कै सेवा।' छंद की अगली पंक्ति है : 'जानहुँ जरत अगिनि जल परा। होइ फुलवारि रहस हिएँ भरा।' प्रकट है कि इस पंक्ति के साथ संगति सामान्य पाठ की ही है, पाठांतर की नहीं।

द्वि० ६ में ऊपर का पाठांतर छंद की निम्नलिखित पंक्ति के स्थान पर दिया हुआ है : 'राजैं मिलि पूँछी हँसि बाता। कस तन पीत भएउ मुख राता।' (२७०.७)। किंतु अगले छंद की सातवीं अर्द्धाली इस प्रकार है : 'जो ओहि सँवरै एकै तुँही। सोई पंखि जगत रतमुँही।' इसमें 'भएउ मुख राता' का उत्तर स्पष्ट है, इसलिए इस स्थल पर भी सामान्य पाठ ही प्रसंग-सम्मत है, पाठांतर नहीं।

इसके अतिरिक्त पाठांतर की उपर्युक्त पंक्ति अन्यत्र इस प्रकार आ चुकी है : 'हीरामनि जो तुम्हार परेवा। गा चितउर औ कीन्हेसि सेवा।' (२६६.३) और उपर्युक्त पाठांतर की समस्त प्रतियों में भी उक्त पंक्ति का पाठ अभिन्न है। इसलिए भी पाठांतर की अशुद्धि निर्विवाद रूप से प्रमाणित है।

ऐसा ज्ञात होता है कि प्र० १, द्वि० ७, तृ० १ एक ओर, और द्वि० ६ दूसरी ओर, के सामान्य पूर्वज में उक्त पाठांतर हाशिए में लिखा हुआ था, जिससे उक्त प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से लिया।

(१४) २७२.४ सामान्य पाठ है : 'तहँ चितउर गढ़ देखेउँ ऊँचा। ऊँच राज सरि तोहि पहूँचा।' प्र० १, द्वि० ७ में इस के स्थान पर है : 'तहँवाँ मैं चितउर गढ़ देखा। महाराज नहिं जाइ बिसेखा।' दोनों पाठ प्रसंग में खप सकते हैं। किंतु पाठांतर के दूसरे चरण की शब्दावली अन्यत्र भी आई हुई है:

'अति निरमल नहिं जाइ बिसेखा। जस दरपन महँ दरसन देखा।' (२८६.५) और विवेचनीय प्रतियों में भी उसका पाठ अभिन्न है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(१५) २७६.१ सामान्य पाठ है : 'रतनसेनि कहँ कापर आए। हीरा मोंति पदारथ लाए।' इस पंक्ति के दूसरे चरण के स्थान पर तृ० २ में पाठ है : 'लिहें जो आए आइ सिर नाए।' और द्वि० २ में सामान्य पाठ के दोनों चरणों के बीच निम्नलिखित दो चरण आते हैं : 'लिहें जो आए आइ सिर नाए। पाट पटंबर सुरँग सुहाए।' कपड़ों का उल्लेख करते समय उनकी बहुमूल्यता का वर्णन प्रसंग में आवश्यक है, क्योंकि वे एक राजा द्वारा दूसरे राजा के लिए, जो दूलह भी है, भेजे गए हैं—उन्हें लाने वालों के नमस्कार का उल्लेख करना उतना आवश्यक नहीं माना जा सकता। इसलिए तृ० २ के पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है। द्वि० २ के पाठांतर में लाने वालों के नमस्कारोल्लेख के अतिरिक्त कपड़ों के भेदों का भी उल्लेख हुआ है। किंतु उसका 'पटंबर' ग्रन्थ में अन्यत्र नहीं आया है, और 'पाट' तथा 'पटम्बर' में परस्पर पुनरुक्ति भी है। इसलिए द्वि० २ का पाठांतर भी अशुद्ध ज्ञात होता है। ऐसा ज्ञात होता है कि तृ० २ और द्वि० २ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर हाशिए में लिखा हुआ था, जिससे दोनों प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार विभिन्न ढंग से लिया।

(१६) २७७.५ सामान्य पाठ है : 'सब दिन तपा जैस हिय माहाँ। तैसि रात पाई सुख छाहाँ।' प्र० १, द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है। किंतु इस पंक्ति के अभाव की पूर्ति छंद के प्रारम्भ में ही निम्नलिखित पंक्ति रख कर की गई है : 'भोग चढ़ाउ उतारहु जोगू। जो तप करै सो मानै भोगू।' इस पाठांतर में पूर्ववर्ती छंद की निम्नलिखित पंक्ति का भाव दुहराया गया है : 'जेहि लगि तुम्ह साधा तप जोगू। लेहु राज मानहु सुख भोगू।' (२७६.३) इसलिए पाठांतर में पुनरुक्ति स्पष्ट है।

२७६.३ के स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ में निम्नलिखित पंक्ति है : 'लीजै राज साज तुम्ह जोगू। अब सो सँवरि उतारहु जोगू।' इस पाठ के साथ विवेचनीय स्थल पर पाठांतर में पुनरुक्ति और भी स्पष्ट है।

इसके अतिरिक्त विवेचनीय स्थल के पाठांतर में रत्नसेन को संबोधन है, जो पिछले छंद में मौर बाँध कर दूलह के वेष में घोड़े पर सवार होने के लिए रत्नसेन से की गई प्रार्थना के साथ समाप्त हो चुका है। इसलिए और भी पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(१७) २८३. ८-९ सामान्य पाठ है : 'पाँति पाँति सब बैठे भाँति भाँति जेवनार। कनक पत्र तर धोती कनक पत्र पनवार।' प्र० १, २, द्वि० ७ में इसके स्थान पर है : 'मँड़ए केर सराहना (प्र० २ करहिं रहस रस मंडप) छत्तीस (प्र० २ एकतीस) कुरी सब जाति। धनि राजा सिंघल कर (प्र० २ धनि रानी सिंघल कै, द्वि० ७ धनि राज राजा कर) जाकर अैसि बरात।' मंडप वर्णन का प्रसंग आगे छंद २८५ में आया है, जब जेवनार के अनंतर विवाह के लिए दूलह मंडप में जाता है। जेवनार मंडप में होता भी नहीं है। और इसके अतिरिक्त पाठांतर की दूसरी पंक्ति में पूर्व के एक छंद की निम्न-लिखित पंक्ति, जो विवेचनीय प्रतियों में भी पाई जाती है, दुहराई गई है:

'धनि रानी पदुमावति जाकरि अैसि बरात।' (२७४.९)

इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(१८) २९१.१-२ सामान्य पाठ है : 'सात खंड ऊपर कबिलासू। तहँ सोवनार सेज सुख बासू। चारि खंभ चारिहुँ दिसि धरे। हीरा रतन पदारथ जरे'। प्र० १ में इसके स्थान पर है : 'पुनि तहँ रतनसेनि पगु धारा। जहँ नवरतन सेज सोवनारा। पुतरी गढ़ि गढ़ि खंभन्ह काढ़ीं। जनु सजीव सेवा सब ठाढ़ीं।' किंतु पाठांतर की यह पंक्तियाँ पूर्व के छंद की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के रूप में समस्त प्रतियों में—इस पाठांतर की प्रति में भी—आती हैं। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

द्वि० ७ में विवेचनीय पंक्तियों के स्थान पर है :

'चारि खंभ साजे चौबारा। का बरनौं उत्तिम सोवनारा।

खंभन्ह लागे पदारथ सोई। बरहिं दीप उजियारा होई।'

'चौबारा'='चार दरवाजों के कक्ष में' चार खंभों का सजना निरर्थक लगता है, और इसी प्रकार 'पदारथ' के साथ लगा हुआ 'सोई' भी निरा भरती का है। खंभों का उल्लेख पाठांतर में एक बार कर लेने के अनंतर पुनः उसका वर्णन करना भी कुछ असंगत सा लगता है। इसलिए इस पाठांतर की भी अशुद्धि प्रकट है।

ऐसा ज्ञात होता है कि प्र० १ तथा द्वि० ७ के सामान्य पूर्वज में छंद की प्रथम दो पंक्तियाँ अपाठ्य थीं, इसलिए उनके अभाव की पूर्ति दोनों प्रतियों अथवा उनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से की।

(१९) ३१६.१ सामान्य पाठ है : 'कहि सत भाउ भएउ कँठ लागू। जनु कंचन मों मिला सोहागू'। च० १ में इसके स्थान पर है : 'रतनसेनि

सो कंत सुजानू। षटरस बिंदक सो रति मानू।' द्वि० ४, ५, ६ में पाठांतर की यही पंक्ति एक अतिरिक्त छंद में आई है। विवेचनीय छंद में बाद की पंक्ति का एक चरण है : 'षटरस बिंदक चतुर सो भोगी।' इसलिए पाठांतर में पुनरुक्ति प्रकट है। ऐसा ज्ञात होता है कि एक ओर च० १ तथा दूसरी ओर द्वि० ४, ५, ६ के सामान्य पूर्वज में उक्त अतिरिक्त छंद हाशिए में दिया हुआ था, जिसके कारण इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने इस प्रकार का पाठ दिया।

कदाचित् पुनरुक्ति को बचाने के लिए ही द्वि० ५, च० १ में उक्त बाद की पंक्ति के उपर्युक्त चरण का पाठ इस प्रकार कर दिया गया है : 'षटरस रसिक चतुर रस (च० १ सो) भोगी।' किंतु फिर भी पुनरुक्ति बनी हुई है।

(२०) ३२३.२ सामान्य पाठ है : 'रानी तुम्ह ऐसी सुकुँआरा। फूल बास तन जीउ तुम्हारा।' द्वि० ३, तृ० २ में दूसरे चरण का पाठ है : 'पान फूल के रहहु अधारा।' किंतु समस्त प्रतियों में यही पाठ अन्यत्र भी आया है—और इन प्रतियों में भी यह वहाँ पर है—'खीर अहार न कर सुकुँआरा। पान फूल के रहै अधारा।' (१३४.२) 'खीर अहार' के प्रसंग में वहाँ पर 'पान फूल के आधार पर रहना' प्रासंगिक ही है, किंतु यहाँ पर आहार का प्रसंग नहीं है, विहार का प्रसंग है जैसा निम्मलिखित पंक्ति से ज्ञात होगा—'सहि न सकेउ हिरदै पर हारू। कैसे सहिहु कंत कर भारू।' अतः प्रकट है कि विवेचनीय स्थल पर पाठांतर अशुद्ध है, और स्मृति के कारण भूल से आ गया है।

(२१) ३३७.४ सामान्य पाठ है : 'रँगराती पिउ सँग निसि जागै। गरजै चमकि चौंकि कँठ लागै।' द्वि० ६ में यह पंक्ति नहीं है। इसके स्थान पर यथा ३३७.२ निम्नलिखित पंक्ति आई है : 'पदुमावति चाहत रितु पाई। गँगन सुहावन भुम्मि सुहाई।' द्वि० ४ में यह पंक्ति छंद में एक अतिरिक्त पंक्ति के रूप में है—सामान्य पाठ की शेष पंक्तियाँ तो उसमें हैं ही।

यह छंद पद्मावती-रत्नसेन के संयोग शृंगार-संबंधी षट ऋतु-वर्णन में से है। प्रकरण में इसके अतिरिक्त पाँच छंद आते हैं, और पाँचों में एक न एक ऋतु का वर्णन करते हुए किसी न किसी पंक्ति में नायक-नायिका पारस्परिक सन्निकर्ष से विशेष आनंद-लाभ करते हुए बताए जाते हैं। प्रस्तुत छंद में नायक और नायिका के पारस्परिक सन्निकर्ष का उल्लेख केवल विवेचनीय पंक्ति में हुआ है, और उसके पाठांतर में नहीं हुआ है।

इसलिए पाठांतर अप्रामाणिक ज्ञात होता है। ऐसा ज्ञात होता है कि द्वि० ६ और द्वि० ४ के सामान्य पूर्वज में पाठांतर की उपर्युक्त पंक्ति हाशिए में लिखी थी, जिससे दोनों ने अथवा दोनों के अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंग से लिया।

(२२) ४१४-३ सामान्य पाठ है: 'तेहि चढ़ि अलक भुअंगिनि डसा। सिर पर रहै हिएँ परगसा।' प्र० १,२, पं० १ में द्वितीय चरण है: 'सीस चढ़ी मानुस कहँ डसा।' पाठांतर में प्रथम चरण की पुनरुक्ति प्रकट है, और दोनों चरणों का तुक एक ही 'डसा' हो, यह भी चिंत्य है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि स्पष्ट है।

(२३) ४४१.३ सामान्य पाठ है: 'मंछ कच्छ दादुर तोहि पासा। बग पंखी निसि बासर बासा।' प्र० १, द्वि० २, पं० १ में द्वितीय चरण है: 'बग औ पंखि रहहिं (प्र०१ बग कर पाँति रहै) तुव पासा।' प्रथम चरण के तुक के रूप में 'तोहि पासा' आता है, इसलिए पुनः द्वितीय चरण के तुक के रूप में आए हुए 'तुव पासा' पाठ में अशुद्धि प्रकट है।

(२४) ४४३.१ सामान्य पाठ है: 'का तोहि गरब सिंगार पराएँ। अबहीं लेहिं लूसि सब ठाएँ।' इसके स्थान पर प्र० १,२, द्वि० ४ का पाठ है 'हौं तोहि चाहि ऊँचि नागेसरि। निसिदिन हिए चढ़ावौं केसरि।' पूर्ववर्त्ती छंदों की अंतिम पंक्ति है: 'तूँ नागिनि मोरि आसा लुबुधी मरसि कि हरकौं जाइ।' जिससे यह स्पष्ट है कि उक्त छंद में पद्मावती का कथन है। विवेचनीय के परवर्ती छंद की प्रथम पंक्ति है: 'पदमावति सुनि उतर न सही। नागमती नागिनि जिमि गही।' जिससे यह स्पष्ट है कि विवेचनीय बीच के छंद में नागमती द्वारा पद्मावती के पूर्वोक्त कथन का उत्तर होना चाहिए। और विवेचनीय छंद में ही बाद की पंक्ति है: 'हौं साँवरि सलोनि सुभ नैना।' यह भी उसी परिणाम की पुष्टि करती है - क्योंकि नागमती ही साँवली थी। किंतु पाठांतर की पंक्ति में नागेसरि=नागमती को संबोधन है, और वह पद्मावती के कथन के रूप में है। इसलिए पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

कुछ छंद पूर्व पाठांतर का कथन प्रायः उन्हीं शब्दों में इस प्रकार आया है: 'कँवल के हिय रोवाँ तौ केसरि। तेहि नहिं सरि पूजै नागेसरि।' इसलिए पाठांतर में पुनरुक्ति भी है, और वह निर्विवाद रूप से अप्रामाणिक है।

द्वि० २, पं० १ में ऊपर दिया हुआ पाठांतर छंद की निम्नलिखित पंक्ति

के स्थान पर आता है: 'साँवरि जहाँ लोनि सुठि नीकी। का गोरी सरबरि कर फीकी।' (४४३.७) ऊपर दिए हुए कारणों से यहाँ पर उक्त पाठांतर प्रसंग-विरुद्ध है और उसमें पुनरुक्ति प्रकट है।

ऐसा ज्ञात होता है कि प्र० १,२, द्वि० ४ एक ओर तथा द्वि. २, पं० १ दूसरी ओर, के सामान्य पूर्वज में यह पाठांतर हाशिए में लिखा हुआ था। जिससे भिन्न भिन्न पंक्तियों का संशोधित पाठ समझ कर इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसे इस प्रकार ग्रहण किया।

(२५) ४५३.१ सामान्य पाठ है : 'भएउ चेत चेतन तब जागा। बकत न आव टकटका लागा।' द्वि० १,२,३,४,५, तृ० १,२,३, पं० १ में इसके स्थान पर है: 'भएउ चेत चेतन चित चेता। नैन झरोखे जीव सकेता।' पाठांतर का पहला चरण इन प्रतियों में भी ४५७.१ का प्रथम चरण है, और पाठांतर के दूसरे चरण का 'नैन झरोखा' प्रस्तुत छंद की दूसरी ही पंक्ति के दूसरे चरण में आता है। ऐसी दशा में पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

(२६) ४८१.५ सामान्य पाठ है : 'पुनि तेहि ठाउँ परी तिरिरेखा। नैन ठाउँ जिउ होइ सो देखा।' प्र० १,२ में दूसरा चरण है : 'घूँटत पीक लीक अस देखा।' अन्यत्र आया है : 'पुनि तेहि ठाउँ परी तिरिरेखा। घूँटत पीक लीक सब देखा।' (१११.६) और प्र० १,२ में भी वहाँ पर पाठ अभिन्न है। ऐसी दशा में विवेचनीय स्थल पर प्र० १,२ के पाठ में पुनरुक्ति और इसलिए अशुद्धि प्रकट है।

(२७) ५१३.४ सामान्य पाठ है : 'बरन बरन पखरे अति लोने सार सँवारि लिखे सब सोने।' द्वि० ४, ५ में दूसरा चरण है : 'जानहुँ चित्र सँवारे सोने।' किंतु यही चरण द्वि० ५ और च० १ को छोड़कर समस्त प्रतियों में ३१.७ का दूसरा चरण है।

द्वि० ५, च० १ में वहाँ पाठांतर है : 'खनि पतार पानी तेहिं काढ़ा। खीर समुँद निकसा हुत बाढ़ा।' प्रसंग वहाँ सिंघल के सरोवर—मानसरोवर—के वर्णन का है। उसके जल के विषय में उक्त छंद की प्रथम दो पंक्तियों में कहा गया है :

> 'मान सरोवरु देखिअ काहा। भरा समुँद अस अति अवगाहा।
> पानि मोति अस निरमर तासू। अंम्रित बानि कपूर सुबासू।'

इसके बाद की पंक्तियों में उक्त छंद में सरोवर के घाटों, उनकी सीढ़ियों, उसमें खिले हुए कमलों, उसमें होने वाले मोतियों, और उनको चुगने

वाले हंसों का वर्णन किया गया है। यह सब करने के बाद सरोवर के जल के विषय में पुनरावर्तन, और बहुत कुछ पूर्व के ही शब्दों में, पुनरुक्तिपूर्ण है, और वहाँ पर द्वि० ५, च० १ की अशुद्धि प्रकट है। अतः विवेचनीय स्थल पर भी पाठांतर की अशुद्धि प्रमाणित है।

(२८) ५३०.४ सामान्य पाठ है : 'सेत फटिक सब लागे गढ़ा। बाँध उठाइ चहूँ गढ़ मढ़ा।' द्वि० १, तृ० १ में इसके स्थान पर है : 'खंड पर खंड होत उठाइ तस जाहीं। जानहुँ चढ़ा गगन उपराहीं।' छंद की अगली पंक्ति है : 'खंड ऊपर खंड होहिं पटाऊ। चित्र अनेग अनेग कटाऊ।' और समस्त प्रतियों में—पाठांतर की प्रतियों में भी—इस पंक्ति का पाठ अभिन्न है। अतः पाठांतर में पुनरुक्ति प्रकट है। इसके अतिरिक्त पाठांतर के द्वितीय चरण में 'चढ़ा' क्रिया का कोई 'कर्त्ता' भी नहीं है। इसलिए अशुद्धि प्रमाणित है।

(२६) ५३०.५ सामान्य पाठ है : 'खँड ऊपर खँड होहिं पटाऊं। चित्र अनेग अनेग कटाऊ।' तृ० १ में इसके स्थान पर है 'खंड पर खंड जो खंड सँवारे। कनक बान तेहि ऊपर धारे।' 'खँड पर खँड जो खंड' में 'जो खंड' की निरर्थकता और पुनरुक्ति अति प्रकट है, और युद्ध में, इसके अतिरिक्त, 'कनक बान' धारण करना भी असंगत ज्ञात होता है। द्वि० १ में पंक्ति छूटी हुई है। ऊपर ५३०.४ के संबंध में हम देख चुके हैं कि तृ० १ और द्वि० १ में अशुद्धि-साम्य है। ऐसा ज्ञात होता है कि यह अशुद्धि-साम्य भी दोनों के सामान्य पूर्वज के कारण है। हो सकता है कि सामान्य पूर्वज का पाठ अपाठ्य रहा हो, और इसलिए एक में वह उतारा ही न गया हो और दूसरे में उसके स्थान पर दूसरा पाठ रख दिया गया हो। और यह भी असंभव नहीं कि द्वि० १ के पूर्वज में भी तृ० १ का पाठांतर रहा हो किंतु उसमें पूर्व की पंक्ति तथा यह पंक्ति दोनों एक ही शब्दों 'खँड पर खँड' से प्रारंभ होती थी, इसलिए भूल से दोनों में से एक पंक्ति द्वि० १ में छूट गई हो।

(३०) ५३७.५ सामान्य पाठ है : 'पै बिनु सपत न अस मन माना। सपत के बोल बचा परवाना।' प्र० १, २, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'जो घरनी दै राखहि जीऊ। सो तौ आहि निपुंसिक पीऊ।' पूर्व की एक पंक्ति है : 'जौं येह बचन तौ माथें मोरें। सेवा करौं ठाढ़ कर जोरें।' और यह वाक्य रत्नसेन का है। सरजा ने इसके उत्तर में कहा है 'नाहत माँझ भँवर हति गीवाँ। सरजैं कहा मंद यहु जीवाँ। खंभ जो गरुव लेहिं जग

भारू। ताकर बोल न टरै पहारू।' और आगे सरजा ने छलपूर्वक शपथ भी ली है: 'सरजैं सपत कीन्ह छर...'। इसलिए प्रसंग में पाठांतर नहीं, सामान्य पाठ ही संगत है।

पाठांतर की पंक्ति अन्यत्र आ भी चुकी है (५३५.७), केवल प्र० १, २, पं० १ में वहाँ पर भी अन्य पाठ है: 'जौं येहि बीच डरै नहिं कोई। देखु कालि धौं काकर होई।' इस स्थल पर पूर्व की पंक्ति है: 'तेहि दिन चाँचरि चाहौं जोरी। समदौं फागु लाइ कै होरी।' और बाद की पंक्ति है:

'अब हौं जौहर साजि कै कीन्ह चहौं उजियार।
फागु गएँ होरी बुझैं कोउ समेटहु छार॥'

'जौहर' के इस प्रसंग में डर की आशंका अथवा विजय की कल्पना असंगत लगती है, और इसलिए पाठांतर अप्रामाणिक ज्ञात होता है।

(३१) ६१६.६-७ सामान्य पाठ है: 'मकु पिय दिष्टि समानेउ चालू। हुलसा पीठि कढ़ावै सालू। कुच तुंबी अब पीठि गड़ोवौं। कहेसि जो हूक कढ़ि रस ढोवौं।' प्र० १, २ में इनके स्थान पर है: 'तब मुख मोंछ जीउ पर खेलौं। स्यामि काज इन्द्रासन पेलौं। पुरुष बोलि कै टरै न पाछू। दसन गयंद गीवँ नहिं काछू।' किंतु पाठांतर की यह पंक्तियाँ अन्यत्र ६१८.६-७ होकर आई हुई हैं, और इन प्रतियों में भी वहाँ पर हैं। छंद ६१६ बादल की स्त्री की उस मानसिक ऊहापोह का वर्णन करता है जो बादल के उसकी ओर से मुँह फेर लेने पर हुई है, और छंद ६१८ बादल का अपनी स्त्री से उस राज-संकट के समय अपने स्वामिधर्म संबधी कथन प्रस्तुत करता है। अतः छंद ६१६ में सामान्य पाठ की पंक्तियाँ ही प्रासंगिक मानी जा सकती हैं, और छंद ६१८ में भी इसी प्रकार सामान्य पाठ की ही पंक्तियाँ प्रासंगिक मानी जा सकती हैं। अतः पाठांतर की अशुद्धि प्रकट है।

६१८.६ का पाठ प्र० १, २ में भी वही है जो अन्य प्रतियों में है, केवल ६१८.७ का पाठ बदला हुआ है: 'आजु करौं रन भारथ सोई। अस रन करौं करै नहिं कोई।' इस पाठांतर में 'आजु करौं रन' और 'अस रन करौं' में पुनरुक्ति तथा 'भारथ सोई'—विशेष रूप से 'सोई'—की निरर्थकता प्रकट है। और इसलिए यह पाठांतर भी ग्राह्य नहीं हो सकता।

(३२) ६२३.४ सामान्य पाठ है; 'बिनै करै आई हौं ढीली। चितउर की मो सिउँ है कीली।' द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ में इसके स्थान पर है: 'बिनती करै जहाँ पै पुंजी। तब भँडार की मो सिउँ कुंजी।' द्वि० ४, ५ में

यह पाठांतर छंद की निम्नलिखित पंक्ति के स्थान पर दिया हुआ है : 'तजा कोह भा छोह बुझावा। पातसाहि सों बिनवै धावा।' (६२३.७) प्रसंग के अनुसार पाठांतर ६२३.४ के स्थान पर ही आ सकता है, ६२३.७ के स्थान पर नहीं, यह प्रकट है। किंतु ६२३.४ के सामान्य पाठ का 'चितउर की मो सिउँ है कीली।' जहाँ नितांत प्रसंगोचित और सार्थक है, पाठांतर का 'जहाँ पै पुंजी' पूरा आशय नहीं देता है : उससे 'चितौर में जहाँ पर पूँजी है' अर्थ अनिवार्य रूप से नहीं लिया जा सकता। इसके अरितिक्त 'पूँजी' 'भँडार पर'—नहीं होती है 'भँडार में', होती है, इसलिए 'जहाँ पै पुंजी' पाठ भाषा की सामान्य आवश्यकताओं के ध्यान से भी त्रुटि पूर्ण है।

ऐसा ज्ञात होता है कि द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ एक ओर और द्वि० ४, ५ दूसरी ओर, के सामान्य पूर्वज में पाटांतर की पंक्ति हाशिए में लिखी हुई थी, जिससे इन प्रतियों अथवा इनके अपने-अपने पूर्वजों ने उसका पाठ इस प्रकार विभिन्न ढंग से ग्रहण किया।

तृ० ३ में ६२३.४ के स्थान पर है : 'बिनती करै कर जोरे खरी। लै सौंपहुँ राजहि एक घरी।' किंतु पाठांतर की यह पंक्ति समस्त प्रतियों में—और द्वि० ४ में भी—६२४.७ है। तृ० ३ का पाठांतर मान लेने से 'लै सौंपने' का कोई कर्म छंद में नहीं रह जाता—वह क्या सौंपेगी ? इसलिए तृ० ३ के पाठांतर की भी अशुद्धि प्रकट है।

इस पाठांतर के ध्यान से असंभव नहीं कि तृ० ३ किसी प्रकार द्वि० ३, ६,७, तृ० २ से संबंधित हो।

(३३) ऊपर जिस प्रकार के प्रतिलिपि-संबंध की चर्चा की गई है, उससे निकटतर प्रतिलिपि-संबंध के प्रमाण द्वि० ४ और द्वि० ५ में ही मिलते हैं। ऐसे समस्त स्थलों का उल्लेख अनावश्यक होगा, केवल ग्रंथ के अंतिम चतुर्थांश से स्थलों का उल्लेख नीचे किया जा रहा है। पुनः विस्तार-भय से केवल सामान्य पाठ की पंक्ति और पाठांतर मात्र का निर्देश किया जा रहा है:

(५२०.९) 'छुई होइ जौं लोहैं रुई माँझ उठ आगि।'
इन प्रतियों में 'रुई' नहीं है।

(५३२.३) 'हठि चूरौं तौ जौहर होई। पदुमिनि पाव हिएँ मति सोई।'
'चूरौं' के स्थान के स्थान पर दोनों प्रतियों में 'जूरै' ('जोरै' या 'चूरैं' ?) है।

(५३३.५) 'पाहन कर रिपु पाहन हीरा। बेधौं रतन पान दै बीरा।'
'रिपु' के स्थान पर दोनों में 'करब' है।

(५३५.६) 'तेहि दिन चाँचरि चाहौं जोरी। समदौं फागु लाइ कै होरी।'
'तेहि' के स्थान पर दोनों में 'नहिं' है।

(५३५.७) 'जो दै गिरिहिनि राखत जीऊ। सो कस आहि निपुंसिक पीऊ।'
'निपुंसिक' के स्थान दोनों में पर 'नभिउसिक' है।

(५३८.६) 'भोर होइ जौं लागै उठहिं रोर कै काग।
मसि छूटै सब रैनि कै कागा कायँ अभाग'॥
'कायँ' के स्थान पर दोनों में 'गायँ' है।

(५५४.३) 'कुवाँ बावरी भाँतिन्ह भाँती। मढ़ मंडप तहँ भे चहुँ पाँती।'
'चहुँ' के स्थान पर दोनों में 'चठ' है।

(५५५.७) 'जावँत कहिअै चित्र कटाऊ। तावँत पवँरिन्ह लाग जराऊ।'
'कहिअै' के स्थान पर दोनों में 'लीन्हे' है।

(५५७.४) 'नट नाटक पतुरिनि औ बाजा। आनि अखार सबै तहँ साजा।'
'तहँ' के स्थान पर दोनों में 'महँ' है।

(५६०.५) 'मारहिं धनुक फेरि सर ओहीं। पनघट घाट ढंग जित होहीं।'
'पनघट' के स्थान पर दोनों में 'वनघट' है।

(५६४.२) 'पानी देहिं कपूर क बासा। पिअै न पानी दास पिआसा।'
'न' के स्थान पर दोनों में 'तेहि' है।

(५७२.८) 'राघौ आघौ होत जौं कत आछत जियँ साध।
ओहि बिनु आघ बाघ बर सकै त लै अपराध॥'
'ओहि बिनु आघ' के स्थान पर दोनों में 'ओहि तन राधि' है।

(५८६.३) 'लै पूरी भरि दाल अछूती। चितउर चली पैज कै दूती।'
'पैज' के स्थान पर दोनों में 'बीच' है।

(५८६.२) 'कुमुदिनि कंठ लाइ सुठि रोई। पुनि लै रोग वारि मुख धोई।'
'वारि' के स्थान पर दोनों में 'डारि' है।

(५९९.३) 'दोख भरा तन चेतन कैसा। तेहि क सँदेस सुनावहि बेसा।'
'कैसा', 'बेसा' के स्थान पर दोनों में क्रमशः 'किया', 'पिया' है।

(६०६.७) 'मन माला फेरत तँत ओही। पाँचौ भूत भसम तन होहीं।'
'भसम' के स्थान पर दोनों में पाठ 'भम' है।

(६२६.६) 'सुपुरुस भागि न जानै भएँ भीर .भुइँ लेइ।
असि बर गहें दूहूँ कर स्यामि काज जिउ देइ॥'
'असिबर' के स्थान पर दोनों में 'सूर' है।

(६४४.६) 'बास फूल घिउ छीर जस निरमल नीर मँठाहँ।
तस कि घटै घट पूरुष ज्यौं रे अगिनि कठाहँ॥'

'तस कि घटै घट पूरुष' के स्थान पर दोनों में 'निघटे घट सब पौरुष' है।

द्वि० ४, और द्वि० ५ की यह सामान्य अशुद्धियाँ उनके सामान्य पूर्वज की ओर अत्यंत स्पष्ट रूप से निर्देश करती हैं, और निश्चित रूप से उस सामान्य पूर्वज में प्रायः लिपि प्रमाद से उपस्थित हुई हैं यह बात उर्दू लिपि की प्रवृत्तियों के साधारण ज्ञान से भी जानी जा जकती है। इस प्रकार का अशुद्धि—साम्य दो चार स्थलों पर बिना सामान्य पूर्वज के भी संभव है, किंतु इतने बाहुल्य के साथ अन्यथा असंभव है। फिर उदाहरण के लिए जान बूझ कर ऐसे स्थलों को ऊपर लिया गया है जहाँ बिना किसी तर्क-वितर्क के अशुद्धि देखी जा सके और निर्विवाद रूप से स्वीकार की जा सके। अन्यथा दोनों प्रतियों में पाठ-साम्य इतना है जितना ऊपर आई हुई किन्ही भी दो प्रतियों में नही है, और यह बात संपादित पाठ के साथ दिए हुए टिप्पणी के पाठांतरों से स्वतः देखी जा सकती हैं।

विभिन्न प्रतियों में उपर्युक्त स्थल इस प्रकार बँटे हुए हैं :—

च० १—१५३.२,३; १५६. २; ३१६.१

तृ० १—१५३.२, ३; १५६.२; २०३.२; २७०.५; ४५३.१; ५३०.४,५

तृ० २—८७.२,७; १५६.२; २३१.४; २७६.१; ३२३.२; ४५३.१; ६२३.४

पं० १—१५६.५; ४१४.३; ४४१.३; ४४३.१,७; ४५३.१; ५३७.५

द्वि० १—२३६.४; ४५३.१; ५३०.४,५

तृ० ३—२३६.४; २५५.६,७; २६६.१; ४५३.१

द्वि० ३—२३६.४; ३२३.२; ४५३.१; ६२३.४

द्वि० २—८७.२,७; १५६.२; २३१.४; २३६.४; २५५.६,७; २६६.१;
२७६.१; ४४१.३; ४४३.१,७; ४५३.१

द्वि० ५—१५०.६; २३६.४; २५५.६,७; ३१६.१; ४५३.१; ५१३.४; ६२३.४

द्वि० ४—१५३.२,३; १५६.२; २५५.६,७; ३१६.१; ३३३.७; ४४३.१,७;
४५३.१; ६२३.४

द्वि० ६—१५३.२,३; १५६.२; २२५.६,७; २६६.१; २७०.५; ३१६.१;
३३७.४

द्वि० ७—१५६.२; २१२.७,६; २१३.८,६; २७०.५; २७२.४; २७७.५; २८३.८,६; २६१.१,२; ६२३.४

प्र० १—१५३.२,३; १५६.२; २१२.७,६; २१३.८,६; २७०.५; २७२.४; २७७.५; २८३.८,६; २६१.१,२; ४४१.३, ४४३.१,७

प्र० २—१५३.२,३; १५६.२; २०३.२; २८३.८,६; ४४३.१,७

और इनके आधार पर विभिन्न प्रतियों का जो प्रतिलिपि-संबंध निर्धारित होता है, उसे अन्यत्र दिए हुए चित्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

इस प्रतिलिपि-संबंध के अनुसार विभिन्न प्रतियाँ निम्नलिखित पीढ़ियों में बाँटी जा सकती हैं :—

(१) पं० १, तृ० १ तृ० २, तृ० ३, च० १,

(२) द्वि० १, द्वि० २, द्वि० ३

(३) द्वि० ४, द्वि० ५, द्वि० ७

(४) द्वि० ६, प्र० १, प्र० २

प्रथम पीढ़ी की प्रतियाँ प्रायः स्वतंत्र प्रतिलिपियाँ, अथवा स्वतंत्र प्रतिलिपियों की परम्परा में हैं। दूसरी पीढ़ी की प्रतियाँ प्रथम पीढ़ी की उक्त प्रतियों की प्रतिलिपि-परम्परा में हैं। इसी प्रकार तीसरी दूसरी की, और चौथी तीसरी की प्रतिलिपि-परम्परा में हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि सबसे अधिक महत्त्व की प्रतियाँ प्रथम पीढ़ी की हैं। वे परस्पर प्रायः स्वतंत्र हैं, और मूल के निकटतम हैं, इसलिये पाठ-निर्धारण में प्रायः पर्याप्त होनीं चाहिएँ। आवश्यकता पड़ने पर दूसरी पीढ़ी की प्रतियों की भी, किंतु उनके संबंधों को समझ कर सहायता ली जा सकती है; तीसरी की सहायता पाठ-निर्धारण में यथासंभव न लेनी चाहिए, और चौथी पीढ़ी की तो अवश्य ही न लेनी चाहिए।

८. प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध

'पदमावत' की विभिन्न प्रतियों में कुल मिला कर ८८५ छंद पाए जाते हैं। प्रश्न यह है कि इनमें से कितने प्रामाणिक और कितने प्रक्षिप्त हैं। प्रयुक्त चौदह प्रतियों में उनकी स्थिति इस प्रकार है।

एक प्रति में न मिलने वाले छंद :

प्र०१—३८६, ४३७, ५८६

प्र०२—१२२, २२१.२-२८२.१, ३१३.८-३१४.७, ४८७.८-४८८.७, ५८६-५६२

द्वि०१—३७०, ४२१, ४२४

द्वि०२—२७४

द्वि०७—६६, ६७, २६०, ५०४, ५०३, ६१३-६१६, ६३७ ६३६

तृ०१—४८६, ४८७, ५०५, ५२८ उ

तृ०२—१३१, १८०.३-१८१.२, ५४२

च०१—३६६, ५६४-५६७

पं०१—१५.८-१६.७, ५४६.८-५४६.७

दो प्रतियों में न मिलने वाले छंद :

द्वि० ६, तृ० ३—२६३, २६७, २६८

द्वि०६, च०१—४१८ अ

तृ०२, तृ० ३—१८० अ

तीन प्रतियों में न मिलने वाले छंद :

प्र०२, द्वि० ७, च०१—१५६ अ

द्वि० २, च० १, पं० १—३६१ अ

पाँच प्रतियों में न मिलने वाले छंद :

द्वि० ३, तृ० १, २, च० १, पं०१—१८५ अ

छः प्रतियों में न मिलने वाले छंद :

प्र० २, द्वि० १, ७, तृ० २, च० १, पं०१—२६२ अ

शेष छंदों में ऐसे ही रह जाते हैं जो या तो सात या सात से अधिक प्रतियों में नहीं मिलते, या समस्त प्रतियों में मिलते हैं।

विभिन्न प्रतियों में न मिलने वाले छंद दो प्रकार के हो सकते हैं, वे जो प्रतिलिपिकार की भूल से छूट गए हों, और दूसरे वे जो प्रक्षिप्त हों। इन दोनों को एक-दूसरे से अलग करने का केवल एक मार्ग है—वह है अंतर्साक्ष्य की सहायता से—प्रसंग, कवि के प्रयोग, प्रबंध की आवश्यकताओं, व्याकरण आदि के समस्त दृष्टिकोणों से उनका निरीक्षण।

ऊपर एक प्रति में न मिलने वाले छंदों में से समस्त इसी प्रकार के हैं जो अंतर्साक्ष्य की दृष्टि से अनिवार्य अथवा आवश्यक हैं—केवल एक छंद ५२८३ ऐसा है जो न केवल इस प्रकार अनिवार्य या आवश्यक नहीं है वरन् प्रसंग, प्रयोग, प्रबंध, व्याकरण आदि की सभी दृष्टियों से प्रक्षिप्त ज्ञात होता है। इसका विस्तृत विवेचन नीचे किया गया है।

दो प्रतियों में न मिलने वाले छंदों में से केवल तीन २६३,२६७,२६८

इस प्रकार के हैं जो अंतर्साक्ष्य की दृष्टि से अनिवार्य हैं।

प्रसंग रत्नसेन को शूली देने का है—उसे बधस्थल पर ले जाया गया है। रत्नसेन सिर नीचा किए हुए है। उसका दसौंधी भाँट उसकी यह दशा देख कर उसे पुरुषार्थ करने के लिये प्रोत्साहित करता है, और इसके अनंतर गंधर्वसेन के सामने जा कर उसे बाएँ हाथ से नमस्कार करते हुए कहता है कि भाँट महेश की मूर्ति हुआ करता है, (उसका कथन मान्य होता है), योगी (रत्नसेन) और वह (गंधर्वसेन) पानी और आग के समान हैं, दोनों में युद्ध होना ठीक नहीं है, रत्नसेन उससे भिक्षा माँग रहा है, जिसे उसे देकर युद्ध का निवारण करना चाहिए। छंद २६३ में यही कहा गया है।

छंद २६५ में कहा गया है:

> भइ अग्या को भाँट अभाऊ। बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ।
> को जोगी अस नगरी मोरी। जो दै सेंध चढ़ै गढ़ चोरी।

प्रकट है कि २६३ में आए हुए विवरणों के अभाव में २६५ की ये पंक्तियाँ नितांत असंगत हैं। २६४, २६५, २६६ में उक्त भाँट और गंधर्वसेन का कथोपकथन है। वह २६३ की भूमिका के बिना सभी दृष्टियों से असंभव है। इसी प्रकार छंद २६६ में जो कुछ कहा गया है, वह २६७, २६८ की भूमिका के बिना असंभव है। इसलिये छंद २६३, २६७, २६८ की अनिवार्यता प्रकट है। तृ० ३ तथा द्वि० ६ के प्रक्षिप्त छंदों का मिलान करने पर ज्ञात होता है कि द्वि० ६, तृ० ३ की प्रक्षेप-परंपरा में है। असंभव नहीं कि तृ० ३ में न होने के कारण ये छंद द्वि० ६ में भी न आये हों।

दो प्रतियों में न मिलने वाले शेष छंदों की स्थिति इनसे भिन्न है। उनका विस्तृत विवेचन नीचे किया गया है। उससे ज्ञात होगा कि अन्तर्साक्ष्य की दृष्टि से उनमें से कोई भी प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।

तीन, पाँच, और छः प्रतियों में न मिलने वाले छंदों के विषय में यह कल्पना करना सामान्यतः उचित नहीं होगा कि वे भूल से इतनी—और जैसा आगे चल कर हम देखेंगे एक दूसरे से बहुत-कुछ भिन्न शाखाओं की—प्रतियों में एक साथ छूट गए हैं; और नीचे अन्य छंदों के साथ इनका जो विवेचन किया गया है, उससे भी यही ज्ञात होगा कि अन्तर्साक्ष्य की दृष्टि से इनमें से कोई भी न केवल अनिवार्य या आवश्यक नहीं है, वरन् प्रामाणिक भी स्वीकार नहीं किया जा सकता।

जो छंद चौदह में से सात या अधिक प्रतियों में नहीं मिलते, उनके संबंध

में वर्हिसाक्ष्य का ही विरोधी साक्ष्य उन्हें प्रक्षिप्त मानने के लिये पर्याप्त होना चाहिए, किंतु अंतर्साक्ष्य भी उसका समर्थन करता है। और जो छंद समस्त प्रतियों में मिलते हैं, उन्हें प्रक्षिप्त मानने अथवा प्रामाणिक न मानने का कोई कारण नहीं रह जाता है।

ग्रंथ में उपर्युक्त रीति से निर्धारित कुल प्राप्त प्रक्षेपों की संख्या २३० है। उन सब के संबंध का विस्तृत विवेचन न यहाँ संभव है, और न आवश्यक। इसलिए उदाहरण-स्वरूप केवल ऐसे प्रक्षिप्त छंदों का विवेचन किया जा सकता है, जो प्रक्षेप-संबंध निर्धारण के लिये सब से अधिक महत्त्व के हैं, क्योंकि वे निर्धारित पाठ-परम्परा में सभी दृष्टियों से आदि या मूल प्रति के निकटतम पड़ने वाली आठ प्रतियों में से किसी में और उसके अतिरिक्त किसी भी अन्य प्रति में आते हैं। इस प्रकार के प्रक्षिप्त छंद केवल ४६ हैं। और आधे दर्जन छंद ऐसे भी लिये जा सकते हैं जो यद्यपि उपर्युक्त आठ प्रतियों में से किसी एक ही में पाए जाते हैं, अन्य किसी प्रति में नहीं पाए जाते हैं। इन ५२ प्रक्षिप्त छंदों का विवेचन नीचे किया जा रहा है।

(१) ६० अ—यह छंद प्र० १, २, ४, ५, ६, ७, पं० १ में नहीं है। इसमें पूर्ववर्ती मूल के छंद के भाव दुहराए गए हैं, यथा :

जौ लहि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जौ खेलहु आजू। (६०.४)
भूलि लेहु नैहर जब ताईं। पुनि कत भूलन देइहि साईं। (६० अ.३)
कत आवन पुनि अपने हाथाँ। कत मिलिकै खेलब एक साथाँ। (६० .३)

कत नैहर पुनि आउन कत सासुर यह केलि। (६० अ.८)

सासु नँनद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न आवै देहीं। (६०.७)
सासु नँनद के भौंह सिकोरे। रहब सँकोचि दुऔ कर जोरे। (६० अ.६)

साथ ही पूर्ववर्ती मूल का छंद सभी प्रतियों में मिलता है, इसलिए इस अतिरिक्त छंद का प्रक्षिप्त होना प्रकट है।

(२) १५६ अ—यह छंद प्र० २, द्वि० ७, च० १ में नहीं है। प्रसंग में यह अनावश्यक है। इसके अतिरिक्त इसकी प्रथम पंक्ति में रत्नसेन अपने साथियों को 'सुपुरुष होने' और 'धीरा करने' के लिए 'बीड़ा' देता है। किंतु बीड़ा किसी असामान्य पुरुषार्थ का कार्य संपादित करने के लिए दिया और लिया जाता है, 'सुपुरुष होने' या 'धीरा करने' के लिए नहीं। पुनः इस छंद में दो बार राजा का कथन आता है : एक बार प्रथम पंक्ति में, और दूसरी बार चौथी पंक्ति में; किंतु दोनों में से एक भी स्थान पर यह नहीं कहा जाता है

कि वह कथन राजा का है, और यह दोष स्पष्ट खटकता है। इन कारणों से यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(३) १६३ अ—यह छंद द्वि० १, २, ४, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १, में नहीं हैं। मूल के पूर्ववर्ती छंद में रत्नसेन ने कहा है :

राजैं कहा दरस जौं पावौं। परबत काह गँगन कहँ धावौं।
जेहि परबत पर दरसन लहना। सिर सौं चढ़ौं पाय का कहना।
मोहिं भाउ ऊँचै सो ठाऊँ। ऊँचे लेउँ पिरीतम नाऊँ।

और इसी प्रसंग में वह ऊँचे के संग का भी समर्थन करता है। नीच के संग का यहाँ का प्रसंग नहीं है। किंतु प्रस्तुत पूरे छंद में ऊँचे संग की प्रशंसा की तुलना में 'नीच संग' की निंदा की गई है। साथ ही उक्त पूर्ववर्ती छंद की प्रायः शब्दावली तक ले ली गई है। इसलिए यह छंद प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४) १८० अ—तृ० २, ३ में यह छंद नहीं है। पश्चात् के छंद की पहली पंक्ति है: 'हीरामनि जो कही रस बाता।...' जिससे यह प्रकट है कि उसके पूर्व हीरामनि की बात आई है। किंतु प्रस्तुत अतिरिक्त छंद में पद्मावती की बात आती है, हीरामनि की बात इसके पूर्ववर्ती छंद में आती है। फिर प्रस्तुत अतिरिक्त छंद में पूर्ववर्ती और परवर्ती छंदों की शब्दावली ही नहीं, पंक्तियाँ तक आती है; यथा उसकी निम्नलिखित पंक्ति :

हीरामनि जौं कही रस बाता। सुनि कै रतन पदारथ राता।

जो समस्त प्रतियों में—और इन प्रतियों में भी—निरपवाद रूप से १७६.१ है। इसलिए यह छंद स्पष्ट ही प्रक्षिप्त है।

(५) १८५ अ—यह छंद द्वि० ३, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं है। प्रसग में यह अनावश्यक है। मूल के पूर्ववर्ती छंद में कवि ने पद्मावती के साथ विश्वनाथ पूजा के लिए जाती हुई कतिपय जातियों की कन्याओं का उल्लेख किया है। उसी सूची को प्रस्तुत अतिरिक्त छंद द्वारा बढ़ाया गया है। किंतु इस छंद की सूची में वेश्याओं तक को विश्वनाथ पूजा के लिए अग्रसर किया गया है, और उक्त पूजा के वातावरण को उन्हें 'मूँदी' और 'बिकसीं' 'कलीं' कह कर दूषित किया गया है :

कै सिंगार बहु 'बेसवा' चलीं। जहँ लगि 'मूँदी बिकसी कलीं'। (.४)

'बेसवा' शब्द भी चिंत्य है। जायसी ने 'बेसा' शब्द का प्रयोग किया है, 'बेसवा' का नहीं :

कै सिंगार जहँ बैठीं बेसा। (३८.१).
तेहि क सँदेस सुनावसि बेसा। (५६६.३)

इसलिए यह छंद स्पष्ट ही प्रक्षिप्त है।

(६.) २३१ अ—यह छंद प्र० १, २, द्वि० १, २, ४, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं है। इस छंद का सारा संदेश रत्नसेन का है, जिसे हीरामनि पदमावती को सुना रहा है। किंतु हीरामनि का समस्त कथन छंद २२७ से प्रारंभ हो कर २३० पर समाप्त हो जाता है। छंद २३१ में पद्मावती रत्नसेन के उक्त संदेश का उत्तर मौखिक रूप में, और २३२-३४ में वह उसके संदेश का उत्तर लिखित रूप में देती है। अतः २३१-२३२, २३२-२३३ अथवा २३३-२३४ के बीच में इस अतिरिक्त छंद की असंगति प्रकट है। पुनः इस अतिरिक्त छंद में कहीं यह भी नहीं कहा गया है कि कथन रत्नसेन का है, जैसा कि वह वास्तव में है, न किसी अन्य प्रकार से इस प्रबंध-त्रुटि का परिहार किया गया है। इसलिए यह अतिरिक्त छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(७-८) २६२ अ, आ—२६२ अ प० २, द्वि० १, ७, तृ० २, च० १, पं० १ में नहीं है, और २६२ आ, प्र० १, २, द्वि० १, ६, ७, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। इन दोनों छंदों में नायक के 'सत' की थाह लेने के लिए महादेव और पार्वती अग्रसर होते हैं :

आइ गुपुत होइ देखन लागे। दहुँ मूरति कस सती सभागे। (२६२अ.७)
पारबती सुनि सत्त सराहा। औ फिरि मुख महेस कर चाहा। (२६२आ.५)

किन्तु इसके पूर्व ही छंद २०६-२१० में पार्वती जी भर कर रत्नसेन के प्रेम और एकनिष्ठा की परीक्षा ले चुकी हैं, और उस परीक्षा में रत्नसेन को सफल पाकर महेश से उसके प्रेम और एकनिष्ठा की प्रशंसा भी कर चुकी हैं। पुनः उन्हें इन अतिरिक्त छंदों में उसी कार्य के लिए प्रस्तुत करना किसी अनधिकारी व्यक्ति की ही कल्पना लगती है, ग्रंथ के लेखक की नहीं।

(६) २६२ इ--यह छंद प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, ७, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। इस छंद में कहा गया है कि हीरामनि वध-स्थान पर गया है और उसने रत्नसेन से पदमावती की दशा कही है :

कहि सँदेस सब बिपति सुनाई। बिकल बहुत किछु कहा न जाई।
काढ़ि प्रान बैठी लेइ हाथा। जिऐ तौ जिऔं मरहिं एक साथा।
(२६२ इ. ५-६)

और इसके अनन्तर वह भाँट-वेशधारी महेश के साथ गंधर्वसेन के पास पहुँचा है :

हीरामनि औ भाँट दसौंधी भए जिउ पर एक ठाउँ ।
चलि मो जाइ अब देख तहँ जहाँ बैठ रह राव ॥

किंतु, आगे रत्नसेन की ओर से उसके भाँट ने हीरामनि को बुला कर उससे रत्नसेन के कुल आदि के बारे में पूँछने के लिए गंधर्वसेन से अनुरोध किया है (२६८. ४-५), जिस पर हीरामनि बुलाया भी गया है (२६६. २-३)। वहाँ हीरामनि मंजूषा में है, जिसमें से वह खोलकर निकाला जाता है, और गंधर्वसेन के सामने पहली बार आता है :

खोला आगे आनि मँजूसा । मिला निकसि बहु दिन कर रूसा । (२६६.४)

फलतः उपर्युक्त अतिरिक्त छंद का कथन स्पष्ट ही असंगत और प्रक्षिप्त है ।

(१०) २६४ आ—यह छंद प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं है । इसके पूर्ववर्त्ती मूल के छंदों में भाँट ने गंधर्वसेन से कहा है कि उसे रत्नसेन से युद्ध न करना चाहिए, और परवर्त्ती मूल के छंद में गंधर्वसेन ने भाँट की उस बात का उत्तर दिया है । बीच के इस अतिरिक्त छंद में कहा गया है :

राजा रिसहिं सुनी नहिं बाता । अति रिसि भरा कोह भा राता ।...

काहू कहा न मानै राजा राजहि अति रिसि कीन्ह ।
धरि मारहु सब जोगी राइ रजायसु दीन्ह ॥

अतिरिक्त छंद का यह समस्त कथन पूर्ववर्ती मूल छंदों में किए गए कथनों के विपरीत पड़ता है, और इस वैषम्य का कोई समाधान भी प्रस्तुत अतिरिक्त छंद में नहीं है, इसलिए वह भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है ।

(११) २६४ अ२—केवल द्वि० २ में यह छंद है, शेष किसी प्रति में नहीं है । इसमें कहा गया है कि भाँट-वेषधारी महेश ने जब गंधर्वसेन से रत्नसेन को अपनी कन्या देने के लिए कहा, तो हनुमान ने तत्क्षण गड़ी हुई शूली को उखाड़ कर मूली की भाँति अपने मुख में रख लिया (२६४ अ २. १-२), और अपनी लंगूर से ऐसा महायुद्ध किया कि रुधिर के पनारे बहने लगे (२६४अ. ३-४); साथ ही दोनों ओर के योद्धा भिड़े, सवार से सवार और पैदल से पैदल भिड़े, और खड्ग, धनुष-वाण, सेल, साँगी और गोला चले (२६४ अ२. ५-७) । मूल के छंदों में रत्नसेन की ओर से जो अहिंसात्मक सत्याग्रह प्रस्तुत किया गया है, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसके आत्म-बलिदान की जो कथा उपस्थित की गई है, उसका पूरा निराकरण इस छंद की पंक्तियों में होता है । अतः इसका भी प्रक्षिप्त होना प्रकट है ।

(१२-१७) २६८ अ, आ, इ, ई, उ तथा २७४ अ—ये समस्त छंद प्र० १, २, द्वि० १, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं हैं। इन छंदों में भी महादेव जी की भाँट वेश में अवतारणा की गई है, और दोनों ओर से महाभारत करा दिया गया है।

२६८ अ में प्रायः वही बातें दुहराई गई हैं जो अन्य छंदों में कही गई हैं, यथा :

आगि बुझाइ पानि सौं तूँ राजा मन बूझु।
तोरे बार खपर है लीन्हें भिच्छा देहि न जूझु॥ (२६३. ८-९
माँगै भीख खपर लेइ मुए न छाड़ै बार।
बूझहु कनक कचोरी भीखि देहु नहिं मार॥ (२६८अ. ८-९)

जंबू दीप चित्तउर देसा। चित्रसेन बड़ तहाँ नरेसा।
रतनसेनि यह ताकर बेटा। कुल चौहान जाइ नहिं मेंटा। (२६८. २-३
राज कुँवर यह होइ न जोगी। सुनि पदुमावति भएउ बियोगी।
जंबू दीप राज घर बेटा। जो है लिखा सो जाइ न मेंटा।
(२६८ अ. ४-५)

हीरामनि जो तुम्हार परेवा। गा चित उर औ कीन्हेसि सेवा।
तेहिं बोलाइ पूँछहु वह देसू। दहुँ जोगी की तहँक नरेसू।
(२६९. ३-४

तुम्हरहि सुआ जाइ ओहि आना। औ जेहि कर बर कै तेइ माना।
(२६८ अ. ६

उसमें निम्नलिखित पंक्ति भी, जो अन्य प्रतियों के साथ ही इन प्रतियों में भ २६३.६ है, और केवल तृ० ३ में नहीं है, अक्षरशः दुहराई गई है :

गंध्रपसेन तू राजा महा। हौं महेस मूरति सुनु कहा। (२६८ अ. २
फलतः यह प्रकट है कि यह छंद भी प्रक्षिप्त है।

२६८ आ में छंद २६५ की बातों का सारांश आया है। २६५ में गंधर्वसेन कहता है कि इंद्र, कृष्ण, ब्रह्मा, बलि, बासुकि, धरती, मंदर मेरु, चंद्र, सूर्य, गगन, कुबेर, मेघ, कूर्म आदि सभी उससे डरते हैं, औ यदि वह चाहे तो उन्हें उनके केश पकड़ कर 'भंग' कर सकता है, फिर उसके सामने कीट और पतंग जैसे राजा क्या हैं ? यहाँ वह कहता है :

जेहि अस साध होइ जिउ खोवा। सो पतंग दीपक तस रोवा।
सुर नर मुनि सब गंध्रप देवा। तेहि को गनै करहिं नित सेवा।
(२६८ अ. ६-७

अतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

२६८ इ में रणक्षेत्र में अंगद आते हैं, (रामकथा की भाँति) वे सभा में पैर रोपते हैं (१६८ इ. ५), और उनके आगे विपक्ष के जो पाँच हाथी आते हैं, उन्हें वे सूँड पकड़ कर ऐसा फेंकते हैं कि वे पृथ्वी पर गिरते तक नहीं। (२६८ इ. ६-७)

२६८ ई में हनुमान जी भी पधारते हैं, और उनके आगे जब हाथी बढ़ाए जाते हैं, तो वे सारी विपक्ष की सेना को अपनी पूँछ में लपेट कर बहुत कुछ समाप्त ही कर डालते हैं।

२६८ उ में हनुमान जी की पूँछ लोक, ब्रह्मांड, स्वर्ग, पाताल, आदि को लपेटे हुए दिखाई पड़ती है (२६८ उ. २-३), बलि, बासुकि, राहु, नक्षत्र, सूर्य, चंद्र, समस्त दानव, राक्षस, तथा आठौ (या 'अहुठौ ?) बज्र रणक्षेत्र में आ जुटते हैं (२६८ उ. ४-५)। इतना ही नहीं, महादेव जी भी रणक्षेत्र में खड़े दिखाई पड़ते हैं, और उनको देख कर राजा उनके चरणों में पड़ता है, और कहता है कि कन्या उन्हीं की है, वे उसे जिसे चाहें उसे दें। (२६८ उ. ८-६)

कहने की आवश्यकता नहीं कि जिन कारणों से २६४ अ २ प्रक्षिप्त है, उन्हीं कारणों से ये अतिरिक्त छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होते हैं।

जिन प्रतियों में ये अतिरिक्त छंद हैं, उनमें परवर्ती मूल के छंद २६६ के प्रथम चरण का पाठ भी इन्हीं छंदों के अनुसार है। सामान्य पाठ है:

'सोइ (भाँट) बिनती खिउँ करै बसीठी' (२६६.१)।

और इन प्रतियों में है: 'तब महेस उठि कीन्ह बसीठी'।

२७४ अ—महादेव जी की इस बसीठी के अनंतर भी गंधर्वसेन उनकी बातों की जाँच हीरामनि को बुलाकर करता है, और अंत में जब वह पूरा निश्चय कर लेता है कि रत्नसेन योगी नहीं राजकुमार है, वह महादेव जी को संबोधित करके कहता है:

बोल गोसाईं कर मैं माना। काह सो जुगुति उतर कह आना।

(२७४ अ. १)

जब वह एक बार महादेव जी से कह चुका था:

जेहि चाहिय तेहि दीजिय बारि गोसाईं केरि। (२६८ उ. ६)

तब न तो महादेव जी को उठ कर बसीठी करने की आवश्यकता थी, और न महादेव जी की बसीठी में किए गए कथनों की सचाई का उसे हीरामनि से पता लगाना था। महादेव जी की बिदाई की भी कोई बात इन छंदों में

नहीं आती, न मूल के छंदों में आती है। इसलिए यह स्पष्ट है कि बसीठी के रूप में महादेव जी की सारी कल्पना ही प्रक्षिप्त है।

पुनः २७४ अ में सभी प्रतियों में मूल में अन्यत्र आई हुई कुछ पंक्तियाँ तक भी दुहराई हुई मिलती हैं, यथा :

भा बरोक औ तिलक सँवारा। (२७४.२), (२७४ अ. २)

दो बार बरोक और तिलक होना तो किसी प्रकार संभव नहीं माना जा सकता। इसलिए २७४ अ का भी प्रक्षिप्त होना प्रमाणित है।

(१८) २६८ अ १—यह छंद केवल द्वि०२ में है, और किसी प्रति में नहीं है। इस छंद का भाव वही है जो अन्यत्र इसी प्रति के एक अन्य प्रक्षिप्त छंद २६४ आ में आ चुका है, जिसका विवेचन ऊपर हो चुका है। उन्हीं कारणों से, और पुनः एक ही भावों की पुनरावृत्ति होने के कारण, यह छंद भी प्रक्षिप्त है।

(१६-२१) २८४ अ, आ, इ—ये छंद प्र०२, द्वि० १, ३, ७, तृ० १, पं० १ में नहीं है। इनमें से प्रथम में कहा गया है कि जेवनार के समय बीन नहीं बजा, इसलिए दूलह रत्नसेन ने भोजन करना नहीं प्रारंभ किया; दूसरे में कारण पूछा जाने पर रत्नसेन ने नाद की महिमा निरूपित की है, और पूछा है कि इस अवसर पर नाद का निषेध क्यों किया गया; तीसरे में उसके इस प्रश्न का समाधान यह कह कर किया गया है कि नाद-श्रवण से उन्माद होता, जिस प्रकार मद-पान से होता है, इसलिए उसका निषेध किया गया।

विवाह के इस समस्त प्रसंग में बाजों के बजने का वर्णन हुआ है :

गए जो बाजन बाजते जिन्हहि मारन रन माहँ।
फिरि बाजन तेइ बाजे मंगल चार उनाहँ॥ (२७४)

बाजन बाजे कोटि पचासा। भा अनंद सगरौं कबिलासा। (२७५.२)
साजा राजा बाजन बाजे। मदन सहाय दुवौ दर गाजे। (२७६.१)
बाजत गाजत भा असवारा। सब सिंघल नै कीन्ह जोहारा। (२७७.३)
बाजत आवै राजा मंदिर कहँ होइ मंगलाचार। (२७७.६)
तुम्ह जानहु पिश्र आवै साजा। यह सब सिर पर धम धम बाजा। (२८१.४)
आइ बजावत पैठि बराता। पान फूल सेंदुर सब राता। (२८२.१)

यदि नाद से उन्माद की उत्पत्ति होती थी, तो जेवनार के समय ही उसका निषेध क्यों किया गया, अन्य अवसरों पर उसका निषेध क्यों नहीं किया गया?

फिर, 'पंडित और विद्वाना' ('विद्वान्' ग्रंथ में अन्यत्र कहीं नहीं आया है) जिन शब्दों में उस दूलह राजा से भोजन करने के लिए 'विनय' करते हैं, वह भी ध्यान देने योग्य है :

भूख तौ जनु अंब्रित है सूखा। धूप तौ सीअर नींदै रूखा।
नींद तौ भुइँ जनु सेज सपेती। छाँटहु का चतुराई एती।

उद्धृत पंक्तियों से ध्वनि यह निकलती है कि 'तुम्हें भूख ही नहीं है, नहीं तो इतने सुस्वादु भोजन की क्या बात, रूखा-सूखा भी तुम खाते।' 'छाँटहु का चतुराई एती' कहना तो इस 'विनय' और 'विद्वत्ता' की पराकाष्ठा है। यदि दूलह चुपचाप बैठा था, और भोजन नहीं कर रहा था, तो उसे ऐसा कहने के लिए कौन सा अवसर था ? इससे अधिक 'अविनय' और 'मूर्खता' की बात कदाचित् ही दूसरी हो सकती थी। इसलिए यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(२२-२३) २८८ अ, आ—ये दोनों छंद प्र० १, २, द्वि० १,४, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं है। इनमें धौराहर के सात खंडों का वर्णन किया गया है। किंतु छंद २८९.१ में कहा गया है : 'सात खंड सातौं कबिलासा। का बरनौं जग ऊपर बासा।' और इसके पश्चात् उनका वर्णन किया गया है। छंद २८९ की शब्दावली ही नहीं पंक्तियाँ भी इनमें दुहराई गई हैं :

हीरा ईंटि कपूर गिलावा। मलयागिरि चंदन सब लावा।
(२८९.२)

पाँचव हीरा ईंटि गढ़ावा। औ सब लाग कपूर गिलावा।
(२८८ आ. ३)

चूना कीन्ह औटि गज मोती। मोतिहु चाहि अधिक तेहि जोती।
(२८९.३)

छठएँ लाग रतन गज मोती। होइ उजियार जगत तेहि जोती।
(२८८ आ. ४)

अति निरमल नहिं जाइ बिसेखा। जस दरपन महँ दरसन देखा।
(२८९.५)

जस दरपन महँ देखै देहा। तैस साज सब कीन्ह उरेहा।
(२८८ अ. ४)

भुइँ गच जानहुँ समुँद हिलोरा। कनक खंभ जनु रचा हिंडोरा।
(२८९.६)

जगर मगर सब खंभै करहीं। निसि सब जनहुँ दिया अस बरहीं।
(२८८ आ. ५)

रतन पदारथ होइ उजियारा। भूले दीपक औ मसियारा।
(२८९.७)

तहाँ न दीपक औ मसियारा। सब नग जोति होइ उजियारा।
(२८८ आ. ७)

पुनः, कहा जाता है :

देखि बखानै राजा भीवँसेन का राज।
धनि चक्कवै राजा जेहँ रे मँदिर अस साज ॥

यह 'भीमसेन' कौन है ? यह ग्रंथ में अन्यत्र तो कहीं आया नहीं है। अतः यह प्रकट है कि ये दोनों छंद भी प्रक्षिप्त हैं।

(२४-२६) ३१५ अ, आ, इ—ये अतिरिक्त छंद प्र० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ में नहीं है, और द्वि० २ में इनमें से केवल दूसरे और तीसरे नहीं हैं। प्रथम में पद्मावती रत्नसेन से प्रश्न करती है कि उसने सिंघल और उसके विषय में कैसे जाना, और ऐसे दुर्गम (प्रेम के) मार्ग को महादेव जी ने उसे कहाँ दिखाया। दूसरे में पद्मावती के इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए रत्नसेन कहता है कि सिंघल के और उसके बारे में उसे सुवे ने बताया, किंतु प्रेममार्ग संबंधी उक्त प्रश्न का कोई उत्तर भी रत्नसेन के कथनों में नहीं है। तीसरे छंद में रत्नसेन के उत्तर से पद्मावती संतुष्ट होकर उसके प्रति अपने अनुराग का कथन करती है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि पद्मावती के प्रश्नों का जो उत्तर रत्नसेन ने यहाँ दिया है, वह हीरामनि ने पद्मावती को अपनी पहली ही भेंट में बहुत पूर्व दिया था (छंद १७७, १७८)। सारी कथा हो जाने के बाद रत्नसेन से पद्मावती का यह प्रश्न करना वैसा ही लगता है जैसे सारी 'रामायण' हो जाने के बाद भरत राम से प्रश्न कर रहे हों कि उनका वनवास क्यों हुआ था ?

पुनः, छंद ३१४, ३१५ की तथा इन छंदों की निम्नलिखित पंक्तियाँ भी तुलनीय हैं :

बिहँसी धनि सुनि कै सत बाता। निस्चै तूँ मोरे रँग राता।
(३१४.१)

बिहँसी धनि सुनि कै सत भाऊ। हौं रामा तूँ रावन राऊ।
(३१५ इ.१)

निस्चै भवँर कँवल रस रसा। जो जेहि मन सो तेहि मन बसा।
(३१४.१)

रहा जो भँवर कँवल की आसा। कस न भोग मानै रस बासा।
(३१५ इ. २)

जब हीरामनि भएउ सँदेसी। तुम्ह हुत मँडप गइउँ परदेसी।
(३१४.३)

जब हुँत कहि गा पंखि सँदेसी। सुनिउँ कि आवा है परदेसी।
(३१५ इ. ४)

बिनु जल मीन तपी तस जीऊ। चातकि भइउँ कहत पिउ पीऊ।
(३१५.२)

तब हुँत तुम्ह बिनु रहै न जीऊ। चातकि भइउँ कहत पिउ पीऊ।
(३१५ इ. ५)

जरिउँ बिरह जस दीपक बाती। पँथ जोवत भइउँ सीप सेवाती।
(३१५.३)

भइउँ चकोरि सो पंथ निहारी। समुँद सीप जस नैन पसारी।
(३१५ इ. ६)

डारि डारि जेउँ कोइलि भई। भइउँ चकोरि नींद निसि गई।
(३१५.३)

भइउँ बिरह दहि कोइलि कारी। डारि डारि जिमि कूकि पुकारी।
(३१५ इ. ६)

अतः इन अतिरिक्त छंदों भी का प्रक्षिप्त होना भली भाँति प्रमाणित है।

(२७) ३३२ अ—यह छंद द्वि० २, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। पद्मावती ने इसमें शिव को कलश चढ़ाया है। ऊपर छंद १९१ में पदमावती ने महादेव से कहा था :

'बर सँजोग मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि।
जेहि दिन इंछा पूजै बेगि चढ़ावहुँ आनि॥'

उसी मनौती का पूर्ति पद्मावती से प्रस्तुत अतिरिक्त छंद में कराई गई है। प्रश्न यह है कि क्या यह पूर्ति कवि द्वारा कराई गई हो सकती है?

इस संबंध में उपर्युक्त मनौती के प्रसंग की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखने योग्य हैं :

इंछि इंछि बिनई जसि जानी। पुनि कर जोरि ठाढ़ि भइ रानी।
उतर को देइ देव मरि गएऊ। सबद अकूट मँडप महँ भएऊ।

काटि पबारा जैस परेवा। मर भा ईस और को देवा।...
भल हम आइ मनावा देवा। गा जनु सोइ को मानै सेवा।
को इंछा पूरै दुख खोवा। जोहि मानै आए सोइ सोवा।
(१६२.१-७)

इन कथनों के बाद भी जायसी की पद्मावती ने अपनी मनौती पूरी की होगी, यह संदिग्ध है। इसके अतिरिक्त पूर्वोक्त स्थल पर तो देवता को पद्मावती के दर्शन से प्राण विसर्जन करते हुए दिखाया गया है, और यहाँ वह उसे देख कर हिलता-डुलता तक नहीं। अतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

इस अतिरिक्त छंद में निम्नलिखित प्रयोग भी चिंत्य हैः 'मँझ', 'दुंदुभि', और 'प्रनाम'। ये रूप ग्रन्थ में अन्यत्र नहीं आते हैं। 'माँझ', और 'दुंदु' रूप तो मिलते भी हैं, 'प्रनाम' का कोई अन्य रूप भी नहीं मिलता।

(२८) ३६१ अ—यह छंद द्वि० २, च० १, पं० १ में नहीं है। पक्षी के द्वारा नागमती ने इस छंद में पद्मावती के पास भी संदेश भेजा है, जिसमें उसने प्रार्थना की है :

अबहुँ मया करु कर जिउ फेरा। मोहि जियाउ कंत देइ मेरा।
(३६१ अ. ६)

किंतु यह प्रार्थना भी पद्मावती को 'बैरिनि' कहते हुए की गई है, यह देखने योग्य है :

सवति न होसि होसि तूँ 'बैरिनि' मोर कंत जेहि हाथ।
आनि मिलाउ एक बेर कैसेहुँ तोर पाय मोर माथ॥

असंगति स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त, न उस पक्षी ने सिंघल पहुँच कर पद्मावती को नागमती का कोई संदेश दिया है, न उससे मिला ही है, और न दोनों सौतों के मिलने पर कहीं इसकी चर्चा आई है। कुछ प्रयोग भी इस छंद में चिंत्य हैं, यथा : 'चैन' और 'मेरा'। ग्रंथ में ये दोनों प्रयोग अन्यत्र नहीं मिलते। अतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(२९-३१) ३८३ आ, इ, ई—ये छंद द्वि० १, ३, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं हैं। छंद ३८२, ३८३ में यात्रा-विचार सम्बन्धी कुछ बातों का उल्लेख किया गया है। इन अतिरिक्त छंदों में उन्हीं का और विस्तार किया गया है। किंतु छंद ३८३ के अंत में—दिशाशूल और योगिनी चक्रों का अलग-अलग विचार प्रस्तुत करके कहा गया है :

यह गति चक्र जोगिनी बाँचहु जौ चाहहु सिधि होन।

इस शब्दावली से ऐसा लगता है कि उस प्रकरण को समाप्त कर दिया गया है। किंतु इन अतिरिक्त छंदों में छंद ३८२ के विचार भी—किंचित् भेद के साथ—पुनः दुहराए गए हैं, यथा दिशाशूल के सम्बन्ध में :

आदित सूक पछिउँ दिसि राहू। बिहफै दखिन लंक दिसि डाहू।
(३८२.१-२)

सोम सनीचर पुरुब न चालू। मंगर बुध उतर दिषि कालू।
आदित होइ उतर कहँ कालू। सोमकाल बाइब नहिं चालू।
भौम काल पछिउँ बुध निरिता। गुरु दक्खिन औ सुक अगनौता।
पूरुब काल सनीचर बसै। पीठि काल देइ चलै त हँसै।
(३८३ आ. ५-७)

अतः यह स्पष्ट है कि ये छंद भी प्रक्षिप्त हैं।

(३२) ३८५ अ—यह छंद प्र० १, २, द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, ३, पं० १ में नहीं है। इसमें हीरामनि समस्त रानियों, चित्तौर के कुवँरों और सिंघल के भी कुवँरों का रत्नसेन के साथ चित्तौर के लिए प्रस्थान वर्णित है। हीरामनि कथा में पुनः कहीं नहीं आता, सिंघल की रानी के रूप में केवल पद्मावती मिलती है, और सिंघल के कुवँर भी पुनः कहीं नहीं मिलते। इस छंद की कुछ पंक्तियाँ भी इसके अतिरिक्त निरर्थक-सी लगती हैं :

औ जत गवन चार के आथी। (.१)
तहँ पहुँचाइ चले भलि सेवा। (.२)

पुनः चित्तौर के लिए 'देस' शब्द आया है, जो ग्रंथ में अन्यत्र नहीं मिलता है :

जे सब कुवँर 'देस' के अहे। (.५)

इन कारणों से यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(३३) ४१८ अ—यह छंद द्वि० ६, च० १ में नहीं है। इसमें पूर्ववर्ती मूल के छंद की ही बातों को कुछ संशोधन-परिवर्धन के साथ दुहराया गया है; और यहाँ भी पद्मावती रत्नसेन के पैरों में पड़ती है :

पाय परी धनि पिय के नैनन्हि सों रज मेटि। (४१८.८)

कै नेउछावरि जीउ उवारी। पायन्ह परी 'घालि गिय' नारी। (४१८अ.३)

किंतु इतना ही नहीं, इस अतिरिक्त छंद में रत्नसेन को भी पद्मावती के पैरों में गिराया गया है :

राजा रोव 'घालि गियँ पागा'। पदुमावति के पायन्ह लागा। (४१८ अ.५)
पद्मावती का रत्नसेन के पैरों में पुनः गिरना, और उससे भी अधिक रत्नसेन का पदमावती के पैरों में गिरना, प्रक्षिप्त ही ज्ञात होता है। 'घालि गियँ' भी इस छंद में एक विचित्र पहेली है—पद्मावती रत्नसेन के पैरों में 'गिय घालि' गिरती है, और रत्नसेन पद्मावती के पैरों में 'गियँ पाग घालि' गिरते हैं। यह प्रयोग ग्रंथ में अन्यत्र नहीं आए हैं, इसलिए चिंत्य हैं।

इस छंद के दोहे में 'मुहम्मद' नाम अवश्य आता है :

'मुहमद' मीत जो मन बसै तेहि मिलाव बिधि आनि।

किंतु अनेक प्रक्षिप्त दोहों में ऐसा हुआ है, यथा :

२२ अ—जो केवल द्वि० १ में है।)

५७६ अ—जो केवल प्र० १, २ में है।

६४८ अ—जो केवल प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) में है।

६५८ इ—जो केवल प्र० १, २, (तृ० १) में है।

६५३ इ—जो केवल प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) में है।

इसलिए यह बात छंद के प्रक्षिप्त प्रमाणित होने में बाधक नहीं होती है।

(३४,३५) ४१८ ई, उ—ये छंद प्र० १,२, द्वि० १,२,३,६,७, तृ० १, ३, च० १, पं० १ में नहीं हैं। इनमें पद्मावती लक्ष्मी से अपना सारा खोया हुआ धन लौटाने को कहती है, जिसे वह नवीन रत्नादि के साथ उसे लौटा देती है। यह विस्तार वर्णित कथा के विरुद्ध है, क्योंकि आगे के ही एक छंद में रत्नसेन कहता है :

राजैं पदुमावति सौं कहा। साठि नाँठि कछु गाँठि न रहा। (४२०.२)

और पद्मावती इसका समर्थन करते हुए कहती है :

अहा दरब तब लीन्ह न गाँठी। पुनि कित मिलै लच्छि जौं नाँठी।
(४२१.२)

अतः यह छंद प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(३६,३७) ४१६ अ, आ—दोनों छंद प्र० १, २ द्वि० ३, ७ में हैं, और द्वि० ४, ५ में इनमें से केवल दूसरा है। पहले छंद में जगन्नाथ जी के मंदिर की परिचर्या तथा प्रसाद के विस्तार हैं, और दूसरे में रत्नसेन के साथी कुवँरों का जगन्नाथपुरी में आ मिलने का वर्णन है।

पहले छंद में कहा जाता है कि एक ही दिन में करोड़ भोग लगते हैं, लाखों व्यंजन बनते हैं और इतना ही नहीं 'लाखन' के साथ 'बहुत अपारा' विशेषण भी प्रयुक्त होता है :

लाखन 'जेंवनं बहुत अपारा।' (.२)

छंद में व्याकरण और भाषा संबंधी और भी विचित्रताएँ हैं। कहा गया है :

जो जन गा सो भोजन 'पावहिं'। सो जेवहिं पड़ि सीस 'चढ़ावहिं'। (.३)

'जो' 'सो' एक वचन कर्त्ता के साथ बहुवचन क्रियाएँ 'पावहिं' 'चढ़ावहिं' हैं। पुनः, कहा गया है :

और बिकाइ जो हाँड़िन्ह ऊँच नीच सब लेइ।
भाँतिन केहु काहु के फोरे टूक टूक 'होइ' 'तेइ'॥

'तेइ'='ते ही' बहुवचन कर्त्ता के साथ 'होइ' एकवचन क्रिया रक्खी हुई है। और, 'जपी' 'तपी' के स्थान पर 'जप' 'तप' आया है :

पहिले भोग गोसाइँ चढ़ावहिं। तेहिं पाछें 'तप जप' सब पावहिं। (.३)

अतः यह नितांत स्पष्ट है कि उक्त छंद प्रक्षिप्त है।

दूसरे छंद में शाब्दिक पुनरुक्तियों की भरमार है : 'बेकारार' के साथ 'बिकल', 'अचेत' के साथ 'चेत नहिं नेकौ', और 'पदुमावति' के साथ 'पदुमिनी' में यह पुनरुक्ति अपनी भद्दगी की पराकाष्टा को पहुँच गई है :

कुँवरन्ह जो बहि घाटन्ह लागे। बहु 'बेकरार' मुए जनु जागे।
'बिकल' 'अचेत' 'चेतनहिं नेकौं'। संग सखा नहिं देखौ एकौ।

सोइ हीरामनि रतन रबि सोइ 'पदुमावति' लाल।
सोइ कुवँर सोइ 'पदुमिनी' सोइ प्रेम प्रतिपाल।

ग्रंथ में अन्यत्र कहीं ऐसी भद्दी पुनरुक्तियाँ नहीं मिलतीं। इसलिए यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(३८-४०) ४४५ अ, आ, इ—इन तीन छंदों में से प्रथम और तृतीय द्वि० १, २, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं हैं, और द्वितीय तो द्वि० ३ के अतिरिक्त किसी प्रति में नहीं है।

प्रथम छंद में नागमती और पद्मावती में जो कलह हुआ, उसको केवल शब्दों द्वारा शांत न करके भोजन-शयन आदि के द्वारा रत्नसेन ने शांत किया है। साथ ही इसमें कुछ प्रयोग भी चिंत्य हैं :

सीझी 'पाँच अंब्रित' जेवनारा। औ भोजन छप्पन परकारा। (.३)

'पंचामृत' का भोजन से कोई संबंध नहीं रहा है।

हुलसीं सरस खजहजा खाईं। भोग करत 'बिहसीं' 'रहसाईं'। (.४)

'रहसा कर' = 'आनंदित होकर' 'बिहँसना' की परस्पर असंगत लगते हैं।

सभा सो सबै सुभर मन कहा। सोई अस जो गुरु भल कहा। (.७)

इस पंक्ति का कोई अर्थ—कोई संगति—नहीं ज्ञात होता है। इस पंक्ति का एक पाठांतर यह भी है :

एकेक रैनि देइ रति दानू। दुहुँ क सँतोष रहस सनमानू।

पुरुषों के लिए 'रतिदान' देना भी प्रयोग-सम्मत नहीं ज्ञात होता है।

द्वितीय छंद में केवल पद्मावती और नागमती की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए उनके संग में रत्नसेन के एक वर्ष व्यतीत करने का उल्लेख किया गया है। इस छंद की प्रायः सभी पंक्तियों में निरर्थक शब्दों की पुनरावृत्ति और भरमार है :

पदम नाग पदम अंग सुहाए। चँदन मलैगिरि अंग लगाए। (.२)
पदम पदारथ पदिक नवेलीं। कारी सैन बनी अलबेली। (.३)
गोरी साँवरि नवल सलोनी। कोकिल चातक कंठ बिलोनी। (.४)
छह रितु बारह मास गँवाने। पदम नाग कर आरस माने। (.७)

पुहुप बास रस माहँ भरि जोवन सीस सुगंध। (.६)

तृतीय छंद में पद्मावती और नागमती के एक-एक पुत्र कवँलसेन और नगसेन के उत्पन्न होने और उनकी जन्मपत्री के फलादि सुनने का उल्लेख है। इन दोनों पुत्रों का यहाँ के अतिरिक्त संपूर्ण कथा में नाम तक नहीं आया है। इसके अतिरिक्त इसमें अनेक चिंत्य प्रयोग भी हैं :

कहेन्हि बड़े दोउ राजा होहीं। ऐसे पूत होहिं सब 'तोहीं'।

'तोहीं' किसके लिए है—पद्मावती के लिए या नागमती के लिए ? या रत्नसेन के लिए, जो छंद में कहीं नहीं आता है ?

नवौ खंड के राजन्ह 'जाहीं'। औ किछु दुंद होइ दल माहीं।

'जाहीं' के क्या अर्थ हैं, और 'दल' किसका है, यह भी ज्ञात नहीं होता है।

खोलि भँडारहि दान देवावा। 'दुखी' सुखी करि 'मान बढ़ावा'।

'दुखी' एकवचन से 'दुखियों' का अर्थ नहीं लिया जा सकता, फिर दुखियों के 'मान बढ़ाने' का क्या अर्थ है ?

फलतः ये तीनों छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होते हैं।

(४१) ४४७ अ—यह छंद द्वि० १, २, ४, ५, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। राघवचेतन ने अमावस्या को द्वितीया बता कर चंद्रदर्शन करा दिया है। उसी के संबंध में इस छंद में पंडितों का कथन है कि यह

चंद्रमा केवल सात कोस तक दिखाई पड़ता है, आगे नहीं, और इसकी जाँच सरलता से की जा सकती है, यदि चारों ओर घुड़सवार भेजे जावें जो सात कोस की सीमा के बाहर जाकर देख आवें। ऐसा ही किया जाता है, और पंडितों का कथन सत्य निकलता है। इस छंद में भी अनेक चिंत्य प्रयोग हैं :

पवन पाव जो तुरै पलानहु। चहूँ ओर असवार 'धवावहु'। (.३)
चहूँ ओर असवार 'धवाए'। एक निमिष महँ देखत आए। (.४)
दुइजि क चाँद छीन 'सब' चीन्हा। 'झूठा' झूठ 'फूर' फुर कीन्हा।

'धवाना' ग्रंथ भर में कहीं अन्यत्र नहीं आया है। 'सब ने' के अर्थ में 'सब' का प्रयोग शुद्ध नहीं ज्ञात होता है, अन्यत्र 'सबहिं' आया है, यथा :

सबहिं सराहा सिंघलपुरी। (२७२.७)

'झूठा' और 'फूर' भी कर्म के रूप नहीं हैं। 'फुर' का 'फूर' करना भी जायसी की भाषा-संबंधी प्रवृत्तियों के अनुरूप नहीं ज्ञात होता—उसमें कुछ भोजपुरी की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।

इन कारणों से यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४२,४३) ४४८ अ, आ—ये छंद द्वि० १, २, ४, ५, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं हैं। इन दोनों छंदों में राघवचेतन ने रत्नसेन को एक और चमत्कार दिखाया है। वह प्रलय का दृश्य प्रस्तुत करता है, जो क्षण भर रहता है, और पुनः उसका जल तक नहीं दिखाई पड़ता है :

राघौ अैस दिस्टिबँध खेला बहुरि न देखा नीर।

राघव का यह चमत्कार दिखाना—चंद्रदर्शन वाले चमत्कार-प्रदर्शन के अनंतर—अपने विरोधी पंडितों के कथन को स्वतः प्रमाणित करना और अपने लिए निर्वासन बुलाना था, क्योंकि पंडितों ने चंद्रदर्शन संबंधी विवाद के प्रसंग में असत्य पक्ष वाले को निर्वासन मिलने की बाज़ी ही लगाई थी :

तेहि बर भए पैज कै कहा। झूठ होइ सो देस न रहा। (४४७.७)

भाषा और प्रयोग संबंधी विचित्रताएँ इसमें भी प्रकट हैं; यथा :

'अति परलौ' आवा। (४४८ आ. २)
बूड़हिं हय 'फरकत' सिर काढ़े। (४४८ आ. २)
'गोतें' खाहीं। (४४८ आ. ३)
बूड़हिं कोट बुरुज 'घहराने'। (४४८ आ. ४)
बूड़ नगर सब 'जलहर' छावा। (४४८ आ. ५)

राघौ अैस 'भगल' देखरावा। (४४८ अा. ५)
चढ़ि पंडित लिहे 'वीर'। (४४८ अा. ६)

अतः ये दोनों छंद भी स्पष्ट रूप से प्रक्षिप्त ज्ञात होते हैं।

(४४) ४८४ अ—यह छंद द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। इसमें पद्मावती के शरीर का वर्णन है। उसकी उपमा कमल से दी गई है। शरीर के वर्ण का उल्लेख पद्मावती की समस्त रूप-चर्चा के प्रारंभ में ही है (छंद ४६८), और इन प्रतियों में भी वह स्थल निरपवाद रूप से मिलता है। फलतः इस अतिरिक्त छंद में पुनरुक्ति प्रकट है, और यह छंद प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४५) ५२८ उ—यह छंद केवल तृ० १ में नहीं है, शेष समस्त प्रतियों में है। किंतु इसमें मूल पाठ के पूर्ववर्ती छंद ५२८ की कतिपय पंक्तियों की पुनरावृत्ति मिलती है :

छइउ राग गाए भल गुनी। औ गाईं छत्तिस रागिनी। (५२८.५)
छइउ राग नाची पातुरिनी। पुनि तिन्हके लीन्हेसि रागिनी। (५२८उ.१)

रागों के गाए जाने के स्थान पर उनका नृत्य करना अवश्य इस छंद में विशेष ,है किंतु यह उसी प्रकार कदाचित् अज्ञतापूर्ण भी है। पुनः इसमें छत्तीस रागिनियों के भी नृत्य का विस्तार किया गया है, किंतु नाम उनमें से कुछ ही के दिए गए हैं। इस सबके अतिरिक्त इसमें भरती के शब्दों, और व्याकरण-असंमत प्रयोगों की भी भरमार है :

भा कल्यान कान्हरा 'कीन्हे'। केदारा बिहागरा 'लीन्हे'।
ललित बंगाला गावहिं 'सोई'। आसावरी भएउ 'सब कोई'।
धनासरी सूहौ सो 'कीन्हे'। भएउ बेलावल मारू 'लीन्हे'।
(५२८ उ. २, ३, ४)

अतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४६) ५३४ अ—यह छंद केवल द्वि० १ और तृ० २ में है, शेष प्रतियों में नहीं है। इसमें पूर्ववर्ती तथा परवर्ती छंदों की बातें दुहराई गई हैं, यथा :

जो दै गिरहिनि राखत जीऊ। सो कस आहि निपुंसक पीऊ। (५३४.७)
जो धरनी दैकै घर राखा। पुरुष न कहिअ निपुंसक भाषा। (५३४ अ.३)
भलेहिं साह पुहुमी पतिभारी। माँग न कोइ पुरुष कै नारी। (४८६.३)
दान मान सुमिरत संसारा। माँग न कोइ पुरुष कै दारा। (५३४ अ.२)

दरब लेइ तौ मानौं सेव करौं गहि पाउँ। (४६१.८)

औं यह बचन तौ माथें मोरें। सेवा करौं ठाढ़ कर जोरें। (५३६.४)

जाँवत कहिश्र सेव सेवकाई। ताँवत करौं माँथ भुइँ लाई।

अरथ दरब औ हस्ति तोखारा। रतन पदारथ देहुँ भँडारा।

देस कोस औ राज दोहाई। जो माँगै सो देउँ सबाई।

औ कर जोरे सेवा सारौं। पै एक घरनी देइ न पारौं।

जहँ लगि लच्छि परापति राज काज ब्योहार।

सब पाएन्ह तर वारौं जो रे अरथ भँडार॥ ५३४ अ॥

फलतः यह छंद स्पष्ट ही प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(४७-४६) ६११ अ, आ, इ—ये छंद केवल तृ० २ में हैं, और किसी प्रति में नहीं हैं। इनमें पद्मावती और गोरा-बादिल के संवाद का वह अंश कुछ और खींचा गया है, जिसमें पद्मावती की ओर से साधुवाद और गोरा-बादिल की ओर से उसके संबंध में स्वामिभक्ति के कथन हैं। इनमें कुछ पंक्तियाँ अन्य छंदों से प्रायः ज्यों की त्यों ले ली गई हैं :

हौं सेवक तुम्ह आदि गोसाईं। सेवा करौं जिऔं जब ताईं। (२७०.५)

हम सेवक तुम्ह दोइ गोसाईं। अस्तुति कौन करौं कहँ ताईं। (६११अ.१)

सत्त जहाँ साहस सिधि पावा। औ सतवादी पुरुष कहावा। (६२.४)

साहस सिउँ लच्छन सिधि होई। साहस करत न बहुरै कोई।

साहस करत अहो मोहि ताईं। सिधि अब तुमही देउ गोसाईं।

साहस जहाँ सिद्धि तहँ लच्छन देखहु बूझि। ६११ इ।

तुम्ह चिरजिवहु जौ लहि महि गगन औ जौ लहि हम आउ। (३७६.८)

तुम्ह जिअ जौ लहि सेस औ धुवहू अचल अडोल। (६११ अ. ८)

और निम्नलिखित पंक्ति जो समस्त प्रतियों में—और इन अतिरिक्त छंदों की प्रतियों में भी—६०७.७ है, ज्यों की त्यों इस अतिरिक्त छंद-समूह में आई है :

उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार आइ जो रानी।

प्रयोगों की दृष्टि से भी नीचे की पंक्तियों के चिह्नित पद चिंत्य हैं, पूरे ग्रंथ में ये अन्यत्र नहीं मिलते :

तुम्ह परसाद बिधि कीन्ह 'परारा'।

माथें छत्र सोहाग का बिहँसि चेरि 'कल्लोल'।

सेवा लागि जीव पर 'खेवा'।

यह जिउ नेवछावरि 'पहिं रानी'।

जुग जुग जगत 'राज राजधानी'।
जुग जुग नाथ आव तुम्ह राज साज सुख 'भेव'।
बिधि 'प्रसाद' आवै घर सोई।

अतः इन छंदों का भी प्रक्षिप्त होना प्रकट है।

(५०) ६२६ अ—यह छंद द्वि० १, २, ४, ५, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ में नहीं है। इसमें रत्नसेन का पीछा करती हुई अलाउद्दीन की सेना को रोकने के विषय में गोरा के पौरुषपूर्ण वाक्यों का विस्तार किया गया है। इसमें पूर्ववर्ती छंद के दोहे की प्रतिच्छाया दिखाई पड़ती है :

होइ नलनील आजु हौं देहुँ समुद्र महँ मेड़।
कटक साहि कर टेकौं होइ सुमेर रन बेंड़॥ ६२६॥

आजु सुमेर होइ रन कोपौं। आजु समुँद अगस्ति होइ रोपौं। (६२६अ.७)

इस अतिरिक्त छंद में भी ऐसे प्रयोगों की भरमार है जो ग्रंथ में अन्यत्र नहीं मिलते :

बंदि हौं ताहि 'छड़ेहै' ठाऊँ। (.१)
आजु 'दुसहस' बाहु बल बाढ़ा। (.२)
आजु हनुवँत होइ 'मारौं हाँका'। (.३)
रसना 'सेर' सहज जनु ताका। (.३)
मारि साहि कौ घालौं 'कीसा'। (.४)
जीतौं साहि अलावदि 'कीता'। (.५)
भारत माहँ 'करौं सिव माला'। (.६)
आनि बिआहौं दल दलौं सीस सामि के 'काम'। (.६)

फलतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(५१) ६३७ अ १—यह छंद द्वि० १,२,३,४,५,६,७, तृ० २,३, च० १, पं० १ में नहीं है, और तृ० १ में भी बाद को जोड़े गए अंश में है। इसमें गोरा के रणक्षेत्र में मारे जाने के बाद उसके भाँट दलपति और सरजा के खवास अख्तियार के परस्पर वीरता-पूर्वक लड़-मरने का वर्णन है। इसमें भी अनेक प्रयोग ऐसे हैं जो ग्रंथ में अन्यत्र नहीं आते हैं, यथा :

तुरुक कहै गोरा सिर काटा। मारौं ताहि 'सीस लहु फाटा'। (.४)
जेहि क सामि सरजा अस जूझै। तेहि कहँ जिअन कौन बिधि 'जूझै'। (.६)
अखतियार सरजा क खवासू। एकै तेग 'गनै रन तासू'। (.७)

'दबदबाइ' दलपति कहँ दौरे 'लटपटाइ' रहे खेत।
सामि काज जूझे दोउ 'कै राता मुख सेत' ॥ ६३७ अ१ ॥

अतः यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

(५२) ६४७ अ१—यह छंद केवल द्वि० १ तथा (तृ० १) में पाया जाता है, शेष किसी प्रति में नहीं है। यह अतिरिक्त छंद रत्नसेन की मृत्यु पर उसकी महानता-द्योतन के लिए रक्खा गया है। इसमें भी अनेक प्रयोग ऐसे हैं जो ग्रंथ में अन्यत्र नहीं पाए जाते हैं, यथा :

आजु सीस कै 'टरि गइ रती'। (.१)
आजु चतुर्भुज 'चकता करौं'। आजु चलाए 'सदना सरौ'। (.४)
आजु सुमेर डोल 'भा हाला'। आजु 'तयार होइ' धौं काला। (.५)
आजु पतन 'औ होइहि कटा'। (.७)
आजु महा परलौ भा आजु जगत जनु 'मेंट'। (.८)

इसलिए यह छंद भी प्रक्षिप्त ज्ञात होता है।

विभिन्न प्रतियों में प्राप्त प्रक्षिप्त छंदों की तालिका नीचे दी जाती है।

पं० १—१५६ अ, १८० अ, ५२८ उ

च० १—६० अ, १८० अ, ३२५ अ, ५२८ उ

तृ० १—६० अ, १५६ अ, १८० अ, २६२ अ, २६३ अ १, २६८ इ, ई, उ, ३६१ अ, ४१८ अ

तृ० २—६० अ, ६१ अ, आ, ८६ अ, ६० अ, १५६ अ, ३६१ अ, ३८५ अ, ४१८ अ, अ १, आ, इ, ई, उ, ५२८ उ, ५३४ अ, ५५४ अ, ६११ अ, आ, इ, ६२६ अ१, आ१, ६३७ अ, आ, इ

तृ० ३—६० अ, १५६ अ, १६८ अ, १८५ अ, २३१ अ, २६२ अ, २६८ अ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८४ अ, आ, इ, २८८ अ, आ, ३१५ अ, आ, इ, ३१८ अ, आ, ३६१ अ, ४१८ अ, ५२८ उ

द्वि० १—२२ अ, १५६ अ, १८० अ, १८५ अ१, २६४ अ३, आ, इ, ई, उ, ३६१ अ, ४१८ अ, ५२८ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ५२६ अ, आ, इ, ५३४ अ, ६४७ अ१

द्वि० २—१५६ अ, १८० अ, २६२ अ, आ, २६४ आ, अ २, २६८ अ, इ, ई, उ, अ१, २७४ अ, आ, २८४ अ, आ, इ, २८७ अ, २८८ आ, ३१५ अ, आ, इ, ३८३ आ, इ, ई, ४१८ अ, ५२८ उ

द्वि० ३—६० अ, १५६ अ, १५८ अ, १६३ अ, १८० अ, २३१ अ, २६२ अ, आ, इ, २६४ अ, आ, २६८ अ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८८ अ, आ, २८६ अ१, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८५ अ, ४१८ अ, ४१६ अ, आ, ४४५ अ, आ, इ, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४४६ अ१, ४७४ अ, ४८४ अ, ४६६ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ६२६ अ, ६३७ अ १

द्वि० ४—१२५ अ, १३३ अ, १४८ अ, आ, १५६ अ, १८० अ, १८५ अ, २६२ अ, आ, इ, २६८ अ, आ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८४ अ, आ, इ, २६३ अ, ३१५ अ, आ, इ, ३१६ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ अ, आ, इ, ई, ४१८ अ, ई, उ, ४१६ आ, ४२६ अ, ४४५ अ, इ, ४६८ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, आ, इ, ५६३ अ१, ६०३ अ, ६११ अ१

द्वि० ५—१२५ अ, १३३ अ, १४८ अ, आ, १५६ अ, १६३ अ, १८० अ, १८५ अ, २३१ अ, २३८ अ, आ, २६२ अ, आ, इ, २६८ अ, आ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८४ अ, आ, इ, ३१५ अ, आ, इ, ३१६ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ अ, आ, इ, ई, ४१८ अ, ई, उ, ४१६ आ, ४२६ अ, ४४५ अ, इ, ४६८ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, आ, इ, ५६३ अ१, ६०३ अ, ६११ अ१

द्वि० ६—१५६ अ, १८० अ, १८५ अ, २३१ अ, २६२ अ, २६८ अ, आ, इ, ई, उ, २७४ अ, २८४ अ, आ, इ, २८८ अ, आ, २६३ अ, ३१५ अ, आ, इ, ३१६ अ, ३६१ अ, ३८३ आ, इ, ई, ४२६ अ, ४४५ अ, इ, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४६१ अ, ४६८ अ, ४६६ अ, ५०० अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, आ, इ, ६०३ अ, ६११ अ१, ६२६ अ, आ, इ ई, उ, ऊ, ६२६ अ, ६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४४ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, अं, अः, ६४५ अ, आ, ६४६ अ, ६४८ अ

द्वि० ७—११८ अ, १६३ अ, १८० अ, १८५ अ, २७३ अ, आ, २७४ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ आ, इ, ई, ४१८अ, ४१६ अ, आ, ४२६ अ, ४४५ अ, इ, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४६१ अ, ४६८ अ, ४६६ अ, ५०० अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५७६ अ१, ५८३ अ, आ, इ, ६०३ अ, ६११ अ१, ६२६ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ६२६ अ,

६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४४ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ६४५ अ, आ, ६४८ अ, ६४६ अ, ६५० अ, ६५१ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ औ, अं

प्र० १—६० अ१, ६० अ२, ६४ अ, आ, ११८ अ, १३३ अ, १५६ अ, १६३ अ, १८० अ, १८५ अ, २३८ अ, आ, २६२ अ, २८४ अ, आ, इ, २८६ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ आ, इ, ई, ३८८ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ४०२ अ, ४१८ अ, ४१६ अ, आ, ४२५ अ, आ, ४२६ अ, आ, ४४५ अ, इ, ४४६ अ, आ, इ, ई, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४४६ अ, आ, इ, ई, उ, ४६१ अ, ४८४ अ, ४६४ अ, आ, ४६६ अ, ५०० अ, ५०२ अ, ५०३ अ, आ, इ, ई, ५२८ उ, ५३३ अ, आ, ५३७ अ, आ, इ, ई, ५५१ अ, ५७४ अ, ५७६ अ, आ, इ, ई, उ, ५८३ अ, आ, ई, ५६३ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ६०० अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ६०३ अ, ६०८ अ, आ, इ, ६११ अ१, ६१६ अ, ६२१ अ, ६२६ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ६२६ अ, ६३७ अ१, ६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४४ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ६४५ अ, आ, ६४६ अ, ६४७ आ, इ, ६४८ अ, ६५० अ, ६५१ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, ६५१ अ १, ६५२ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ

प्र० २—६० अ१, अ२, ६४ अ, आ, ११८ अ, १६३ अ, १८० अ, १८५ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ आ, इ, ई, ३८८ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ४०२ अ, ४०४ अ, ४१८ अ, ४१६ अ, आ, ४२५ अ, आ, ४२६ अ, आ, ४४५ अ, इ, ४४६ अ, आ, इ, ई, ४४७ अ, ४४८ अ, आ, ४४६ अ, आ, इ, ई, उ, ४६१ अ, ४६६ अ, ४८४ अ, ४६४ अ, आ, ४६६ अ, ५०० अ, ५०२ अ, ५०३ अ, आ, इ, ई, ५२८ उ, ५३३ अ, आ, ५३७ अ, आ, इ, ई, ५५१ अ, ५७४ अ, ५७६ अ, आ, इ, ई, उ, ५८३ अ, आ, इ, ५६३ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ६०० अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ६०३ अ, ६०८ अ, आ, इ, ६११ अ१, ६१६ अ, ६२१ अ, ६२६ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ६२६ अ, आ, ६३७ अ१, ६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४४ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ६४५ अ, आ, ६४६ अ, ६४७ अ, आ, इ,

६४८ अ, ६५० अ, ६५१ अ, अ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, ६५१ अ१, ६५२ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ

(तृ० १)—१३३ अ, ५८३ अ, आ, ई, ६२६ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ६३७ अ१, ६४० अ, आ, इ, ६४१ अ, ६४७ अ१, ६४८ अ, ६५० अ, ६५१ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, ६५१ अ१, ६५२ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ (यह ध्यान देने योग्य है कि ६४७ अ १ के अतिरिक्त ये सभी प्रक्षिप्त छंद प्र० १ में, और उसके तथा १३३ अ के अतिरिक्त सभी प्रक्षिप्त छंद प्र० २ में मिल जाते हैं।)

यदि सम्यक् रूप से व्यक्त करना चाहें, तो 'पदमावत' की उपर्युक्त विभिन्न प्रतियों के प्रक्षेप-सम्बन्ध को हम अन्यत्र प्रदर्शित चित्र द्वारा व्यक्त कर सकते हैं। यह देखने की आवश्यकता है कि विभिन्न प्रतियों का यह प्रक्षेप-सम्बन्ध कितना उलझा है। इतना उलझा हुआ प्रक्षेप सम्बन्ध बहुत कम ग्रंथों का मिलेगा। इस उलझन का कारण यह है कि 'पदमावत' की प्रतियों में आदान-प्रदान मुख्यतः प्रक्षेप के क्षेत्र में बहुत पहिले से और बहुत अधिक होता आया है।

सुगमता के लिए किंचित् स्थूल रूप से उपर्युक्त प्रक्षेप-संबंध को हम इस प्रकार भी प्रस्तुत कर सकते हैं :
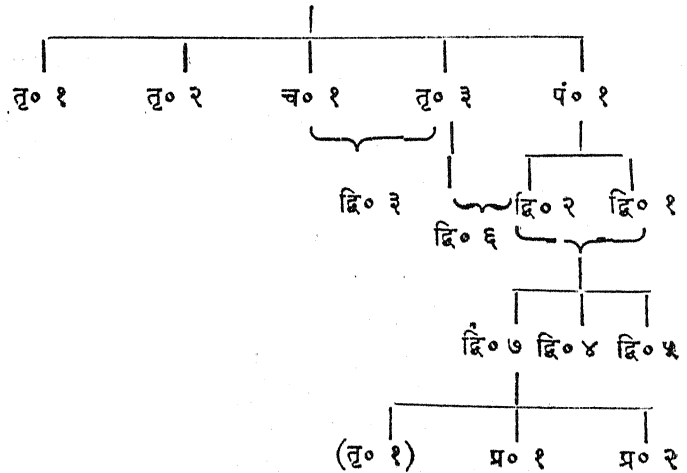
और इस चित्र के अनुसार विभिन्न प्रतियों को हम निम्नलिखित पीढ़ियों में बाँट सकते हैं :

(१) पं० १, च० १, तृ० १, तृ० २, तृ० ३
(२) द्वि० १, २, ३
(३) द्वि० ६, ७, ४, ५
(४) प्र० १, २

प्रथम पीढ़ी की प्रतियाँ प्रायः स्वतंत्र प्रक्षेप-परम्परा में हैं। दूसरी पीढ़ी की प्रतियाँ अमिश्रित अथवा मिश्रित किंतु प्रथम पीढ़ी की प्रतियों की प्रक्षेप-परम्परा में है। तीसरी पीढ़ी की प्रतियाँ दूसरी पीढ़ी की प्रतियों की अमिश्रित अथवा मिश्रित प्रक्षेप-परम्परा में हैं। चौथी पीढ़ी की प्रतियाँ, इसी प्रकार, तीसरी पीढ़ी की प्रतियों की प्रक्षेप-परम्परा में हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि सब से अधिक महत्त्व की प्रतियाँ यहाँ भी प्रथम पीढ़ी की हैं; वे प्रायः स्वतंत्र हैं, और मूल के निकटतम हैं। उनके अनंतर महत्त्व की प्रतियाँ दूसरी पीढ़ी की हैं। तीसरी पीढ़ी की प्रतियाँ अपेक्षाकृत बहुत कम महत्त्व की हैं, और इसी प्रकार चतुर्थ पीढ़ी की प्रतियाँ प्रायः महत्त्वहीन हैं।

यह ध्यान दिलाना आवश्यक होगा कि प्रक्षेप-संबंध पाठ-निर्धारण में उतना निर्णयात्मक नहीं होता जितना प्रतिलिपि-संबंध हुआ करता है, इसीलिए संपादन-शास्त्र में प्रतिलिपि-संबंध को 'मुख्य संबंध' और प्रक्षेप-संबंध को 'गौण संबंध' कहा गया है। किन्हीं दो प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध सिद्ध केवल इतना करता है कि प्रक्षेप के आदान-प्रदान के संबंध में दोनों परस्पर आबद्ध हैं, यद्यपि वह इस बात की संभावना अवश्य सामने रखता है कि उनमें ग्रंथ के सामान्य पाठ के संबंध में भी आदान-प्रदान हुआ होगा।

ऊपर प्रतिलिपि-संबंध के अनुसार जो पीढ़ियाँ हमने निर्धारित की हैं, उनसे तुलना करने पर ज्ञात होगा कि यहाँ प्रक्षेप-संबंध के अनुसार जो पीढ़ियाँ हमने निर्धारित की हैं, वे बहुत कम भिन्न हैं। मुख्य भेद यही है कि प्रक्षेप-परम्परा की तीसरी पीढ़ी की द्वि० ६ प्रतिलिपि परम्परा की चौथी पीढ़ी में है। ऐसे भेद की अवस्था में सामान्यतः नीचे वाली पीढ़ी ही अधिक मान्य होनी चाहिए।

६. प्रतियों का पाठांतर-संबंध

विभिन्न प्रतियों में ऐसे भी पाठांतर मिलते हैं, जिनकी प्रामाणिक होने की असंभावना उतनी स्वतःसिद्ध नहीं है जितनी प्रतिलिपि-संबंध स्थापित करने वाले पाठांतरों की हमने ऊपर देखी है। ऐसी दशा में उनके

आधार पर प्रतियों का पाठ-संबंध तभी माना जा सकता है जब अशुद्धि-साम्य के ये स्थल बहुतायत से हों, और अशुद्धियाँ यदि सर्वथा कवि द्वारा असंभव नहीं तो कम संभव अवश्य मानी जा सकें। नीचे इसी प्रकार के पाठांतरों का विवेचन किया जा रहा है।

(१) १३.७ निर्धारित पाठ है: 'औ अति गरू पुहुमिपति भारी। टेकि पुहुमि सब सिस्टि सँभारी।' प्र० १, द्वि० ७, तृ० २ में इसके स्थान पर है: 'ओही सकइ पुहुमिपति भारी। पुहुमिभार सब लीन्ह सँभारी।' इस पाठांतर का प्रथम चरण अर्थहीन ज्ञात होता है।

(२) ३१.७ निर्धारित पाठ है: 'कनक पंखि पैरहिं अति लोने। जानहुँ चित्र सँवारे सोने।' द्वि० ५, च० १ में इसके स्थान पर है: 'खनि पतार पानी तेहिं काढ़ा। खीर समुँद निकसा हुत बाढ़ा।' इस छंद में सिंघल के सरोवर—मानसरोवर का वर्णन किया गया है। उसके जल के विषय में छंद की प्रथम तथा द्वितीय पंक्तियों में इस प्रकार कहा गया है:

मानसरोदक देखिअ काहा। भरा समुँद अस अति औगाहा।
पानि मोति अस निरमर तासू। अंब्रित बानि कपूर सुबासू।

बाद की पंक्तियों में उक्त सरोवर के घाटों, उनकी सीढ़ियों, सरोवर में खिले हुए कमलों, सरोवर में होने वाले मोतियों, और उनको चुगने वाले हंसों का वर्णन है। इन सब वर्णन के अनंतर पुनः सरोवर के जल के वर्णन के लिए लौटना, और प्रायः उन्हीं शब्दों में जिन शब्दों में छंद के प्रारम्भ में उसका वर्णन किया गया है कवि-सम्मत नहीं ज्ञात होता है; उससे कहीं अधिक कवि-सम्मत हंसों के वर्णन के अनंतर अन्य सरोवर के पक्षियों का वर्णन ज्ञात होता है।

(३) ६३.५ निर्धारित पाठ है: 'सँवरिहि साँवरि गोरिहि गोरी। आपनि आपनि लीन्हि सो जोरी।' प्र० १, २, तृ० १ में इस पंक्ति के दूसरे चरण के स्थान पर है: 'जो जेहि जोग सो तेहि कर जोरी।' पुलिङ्ग संबंधवाचक चिह्न 'कर'='का' स्त्रीलिंग संज्ञा 'जोरी'='जोड़ी' के साथ नहीं लग सकता। इसके अतिरिक्त पाठांतर को स्वीकार करने पर वाक्य में क्रिया का सर्वथा अभाव हो जाता है। और='कर' का अर्थ यदि 'हाथ' लिया जावे, तो 'कर जोरी'='हाथ जोड़कर' प्रसंग में अर्थहीन होता है।

(४) ६४.५ निर्धारित पाठ है: 'नैन सीप आँसुन्ह तस भरे। जानहुँ मोति गिरहिं सब ढरे।' दूसरे चरण का पाठ द्वि० २, तृ० २ में है: 'सीपि फूटि जिमि मोती झरे।' 'नैन सीप' में आँसू 'तस'='इस प्रकार' 'भरे'=

'आए' के 'तस' का उत्तर निर्धारित पाठ में ही मिलता है, द्वि० २, तृ० २ के पाठ में नहीं। और, इसके अतिरिक्त 'सीप के फूटने' में आँखों के फूटने की भी व्यंजना हो सकती है, जो कवि-अभीष्ट नहीं हो सकती।

(५) १४३.५ निर्धारित पाठ है : 'अब एहि समुँद परौं होइ मरा। पेम मोर पानी कै करा।' द्वि० ४, ६ में दूसरे चरण का पाठ है 'मुए केर पानी का करा।' किंतु पाठांतर में 'करा' 'किया' के अर्थ में आया है, जो व्याकरण के अनुसार अशुद्ध है, और कवि के प्रयोगों के भी विरुद्ध है। 'करा' शब्द ग्रंथ के बहु-प्रयुक्त शब्दों में से है, किंतु सर्वत्र 'कला' के लिए वह प्रयुक्त हुआ है, 'किया' के लिए नहीं।

(६) १७४.२ निर्धारित पाठ है : 'नींद भूख अह निसि गे दोऊ। हिए माँझ जस कलपै कोऊ।' द्वि० १, ५, तृ० २, ३ में द्वितीय चरण का पाठ है : 'सेज केवाँछ लाव जनु सोऊ।' नींद के लिए तो प्रथम चरण में कहा ही जा चुका है, वह 'सोऊ' कौन है जो सेज में 'केवाँछ' लगाता है, यह स्पष्ट नहीं है।

(७) २२१.६ निर्धारित पाठ है : 'गढ़ कै गरब खेह मिलि गए। मंदिल उठहिं ढहहिं भै नए।' द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ में इसके स्थान पर हैं : 'जो गरुए गढ़ जाँवत भए। जो गढ़ गरब करहिं ते गए।' दोनों पाठों के द्वितीय चरण प्रायः समान हैं, किंतु पाठांतर के प्रथम चरण का पाठ भी द्वितीय चरण से ही लिया गया प्रतीत होता है, और वाक्य-विन्यास की दृष्टि से पाठांतर का पाठ अपूर्ण और निरर्थक है।

(८) २६४-१-२ निर्धारित पाठ है : 'जोगी न होहि आहि सो भोजू। जानै भेद करै सो खोजू। भारथ होइ जूझ जौं ओधा। होहिं सहाय आइ सब जोधा।' द्वि० ३, ६, तृ० १, ३ में पाठ है: 'भाँट मेस ईसुर जब भाषा। हनुवँत बीर रहै नहिं राखा। लीन्हि चूरि ओइ ततखन सूरी। धरि मुख मेलेसि जानहुँ मूरी।' 'लीन्हि' और 'मेलेसि' क्रियाओं के रूपों में वैषम्य प्रकट है। 'मेलेसि' के साथ सुगमता से 'लीन्हेसि' अथवा 'लीन्हि' के साथ उसी प्रकार 'मेली' पाठ रक्खा जा सकता था। इसके अतिरिक्त जब शूली को हनुमान जी ने इस प्रकार मुँह में रख लिया, तब तो गंधर्वसेन को समझ आ जानी चाहिए थी। किंतु प्रकरण में कथा इसके बिलकुल विपरीत है।

(९) २६४.८-९ निर्धारित पाठ है : 'बोला भाँट नरेस सुनु गरब न छाजा जीवँ। कुंभकरन की खोपरी बूड़त बाँचा भीवँ।' इसके स्थान पर द्वि० ६,

तृ० ३ में हैं: 'ताबों को सरवरि करै अरे अरे झूठे भाँट। छार होसि जौ चालौं गज हस्तिन्ह के ठाट।' विवेचनीय पंक्तियों के पूर्व गंधर्वसेन की गर्वोक्तियों की पंक्तियाँ हैं, जिनमें से अंतिम है: 'चहौं तो सब भाँगौ धरि केसा। और को कीट पतंग नरेसा।' आगे के छंद में भाँट द्वारा दिया हुआ इस गर्वोक्ति का उत्तर है, और उसकी पहली पंक्ति है: 'रावन गरब बिरोधा रामू। औ ओहि गरब भएउ संग्रामू।' इन दोनों पंक्तियों के बीच कहीं न कहीं यह आना चाहिए कि गंधर्वसेन की बातों के उत्तर में भाँट ने कहा। निर्धारित पाठ में यह आता है, और पाठांतर में नहीं आता। इसके अतिरिक्त पाठांतर के पाठ में भरती के शब्द आए, हैं और शब्दोंकी पुनरावृत्ति भी है: 'अरे अरे' और 'गज हस्तिन्ह' उनके ज्वलंत उदाहरण हैं।

(१०) २६५.१ निर्धारित पाठ है: 'भै अग्याँ को भाँट अभाऊ। बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ।' इसके स्थान पर द्वि० ३,६, तृ० ३ में है 'अनरथ होइ रे भाँट भिखारी। का तूँ मोहिं देसि असि गारी।' इसके पूर्व भाँट का कथन आया है। उसे सुन कर राजा ने यह कहना आरम्भ किया है, इस प्रकार का उल्लेख प्रसंग में आवश्यक है। निर्धारित पाठ के 'भै अग्याँ' द्वारा यही उल्लेख हुआ है, और पाठांतर में इस प्रकार की कोई शब्दावली नहीं है। इसके अतिरिक्त पाठांतर में राजा से जो यह कहलाया गया है कि भाँट ने उसे गाली दी है, वह भी किसी अर्थ में ठीक नहीं माना जा सकता।

(११) २६५.२ निर्धारित पाठ है: 'को जोगी अस नगरी मोरी। जो दै सेंधि चढ़ै गढ़ चोरी।' इसके स्थान पर द्वि० ६, तृ० ३ में है 'को मोहि जोग होइ जग पारा। जासौं हेरौं होइ जरि छारा।' 'होइ जग पारा' में एक प्रकार से दूरान्वय दोष तो है ही, गंधर्वसेन के 'जोग'='योग्य' होने का कोई अर्थ नहीं ज्ञात होता है, और न अपने योग्य होने के विरुद्ध किसी पर उसे ऐसा रुष्ट ही होना चाहिए कि उसे वह देख कर भस्म कर दे।

(१२) २६७.१ निर्धारित पाठ है: 'और जो भाँट उहाँ हुत आगें। बिनै उठा राजहि रिसि लागें।' इसके स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ का पाठ है: 'सुनि कै भाँट भाँट जत जाती। राजा कहँ उठि कीन्हि बिनाती।' भाँटों की जाति मात्र का उठ कर राजा से बिनती करना असंभव और असंगत लगता है, क्योंकि भाँटों की पंचायत वहाँ कोई हो नहीं रही थी। और बिनती भी किसी 'कहँ'='को' नहीं की जाती है, 'सौं'='से' की जाती है।

(१३) २६८.१ निर्धारित पाठ है: 'जौ सत पूँछहु गँधरब राजा। सत पै कहौं परै किन गाजा।' प्र० १, द्वि० ७ में इसके स्थान पर है: 'जौ

राजा तुम्ह पूँछहु अंतू। सत्तै कहौं जोहि परजंतू।' 'अंतू' की संगति कदाचित् किसी प्रकार लग भी जावे, पाठांतर के 'परजंतू'(पर्यंत)='तक' की संगति किसी प्रकार नहीं लग सकती है

(१४) २७६.३ निर्धारित पाठ है : 'जेहि लगि तुम्ह साधा तप जोगू। लेहु राज मानहु सुख भोगू।' इसके स्थान पर प्र० १, द्वि० ७ का पाठ है : 'लीजै (कीजै-द्वि० ७) राज साज तुम्ह जोगू। अब सो सँवरि उतारहु (चढ़ावहु-द्वि० ७) जोगू।' पाठांतर के दोनों चरणों में तुक 'जोगू' 'जोगू' का है, जिससे एक भद्दी पुनरुक्ति आती हैं। उसके 'लीजै' (या कीजै') के रूप भी चिंत्य हैं; पूरे छंद में विधि की क्रियाएँ 'हु' अंत हैं : 'करहु', 'उतारहु', 'सारहु', 'काढ़हु', 'पहिरहु', 'छोरहु', 'झारहु', 'लेहु', 'देहु', 'तजहु', 'बाँधहु', 'तानहु', और 'होहु'; उनके साथ 'लीजै' या 'कीजै' रूप ग्राह्य नहीं है। पुनः 'सँवरि'='स्मरण करके' का कोई प्रसंग नही है, एवं जोग का 'उतारना' भी असंगत लगता है, और उससे भी अधिक जोग का 'चढ़ाना'।

(१५) ३३९.१, ३४०.१ निर्धारित पाठ है : 'आइ सिसिर रितु तहाँ न सीऊ। अगहन पूस जहाँ पर पीऊ।' और 'रितु हेवंत संग पीउ न पाला। माघ फागुन सुख सीउ सियाला।' प्र० १, २, द्वि० ७ में प्रथम स्थल पर 'सिसिर' के स्थान पर 'हेम' तथा द्वितीय स्थल पर 'हेवंत' के स्थान पर 'सिसिर' है। किंतु अगहन-पूस के महीने 'हेमंत' और माघ-फागुन के महीने 'शिशिर' के माने गए हैं। प्रश्न यह है कि यहाँ पर कौन सा पाठ मान्य होगा। यदि प्र० १, २, द्वि० ७ के पाठ को प्रामाणिक माना जावे, तो परिणाम में यह मानना पड़ेगा कि शेष समस्त प्रतियाँ निश्चित रूप से एक ही प्रतिलिपि-परम्परा में है, जिसमें प्रारम्भ में ही पाठ-विकृति हुई है, और प्र० १, २, द्वि० ७ उससे भिन्न प्रतिलिपि-परम्परा में है, जिसमें पाठ-विकृति नहीं हुई है, अथवा प्र० १, २, द्वि० ७ शेष समस्त प्रतियों से पाठ-परम्परा में पूर्व आतो हैं। किंतु अन्यत्र हम सर्वत्र देखते हैं कि जो पाठ केवल प्र० १, २, द्वि० ७ में मिलता है, अन्यत्र नहीं मिलता, वह अप्रामाणिक ठहरता है, और प्रतिलिपि-परम्परा तथा प्रक्षेप-परम्परा—दोनों में ये प्रतियाँ सब से नीचे की पीढ़ी में आती हैं। ऐसी दशा में इन दोनों स्थलों पर भी प्र० १, २, द्वि० ७ के पाठ को अप्रामाणिक और अन्य समस्त प्रतियों में समान रूप में मिलने वाले पाठ को प्रामाणिक मानना होगा। कवि से भूलें होना भी असंभव नहीं माना जा सकता।

(१६) ३६६.८-९ निर्धारित पाठ है : 'काया जीउ मिलाइ कै कीन्हेसि

अनँद उछाहुँ । लवटि बिछोउ दीन्ह तस कोउ न जानै काहुँ ।' दोहे के तीसरे चरण का पाठ प्र० १, २, द्वि० ७ में है 'बिछुरे आपु आपु कहँ पल महँ (आपु आपु कहँ—प्र० २, आपु आपु कहँ दोऊ—द्वि० ७) ।' यह शब्दावली छंद की छठी पंक्ति के दूसरे चरण में इस प्रकार आई हुई है: 'पल महँ आपु आपु कहँ भए ।' इसलिए पाठांतर में पुनरुक्ति है । दोहे के प्रथम दो चरणों में जो कुछ कहा गया है, उसके ध्यान से निर्धारित पाठ पाठांतर की अपेक्षा अधिक संगत भी लगता है ।

(१७) ३६६.८-६ उपर्युक्त दोहे का पाठांतर द्वि० २,४, ५,६ तथा पं०१ में है 'काया जीउ मिलाइ के मारि करे दुइ खंड । तन रोवत धरती परा जीउ चला ब्रह्मंड ।' मारने-मरने अथवा जीव के ब्रह्मांड जाने का यहाँ कोई प्रसंग नहीं है ।

द्वि० ७ में इस पाठांतर के शेष चरण ज्यों के त्यों ले लिए गए हैं, केवल चौथा चरण इस प्रकार है : 'एक पलक एक दंड' । शेष चरणों के पाठांतर के सम्बन्ध में ऊपर विचार हो चुका है । चौथे चरण का इस प्रति का पाठांतर और भी असंगत ज्ञात होता है ।

(१८) ४२४.१ निर्धातित पाठ है : 'अब लगि सखी पवन हा ताता । आजु लाग मोहिं सीतल बाता ।' द्वि० ४, ५ में प्रथम चरण के 'हा ताता'= 'तस था' के स्थान पर पाठ है 'आ हाता', जो स्पष्ट ही निरर्थक ज्ञात होता है ।

(१६) ४३७.८-६ निर्धारित पाठ है : 'सुरुज किरिन तोहि रावै सरवर लहरि न पूज । करम बिहून ये दूनौं कोउ रे धोबि कोउ भूँज ।।' द्वि० ४, ५ में दूसरी पंक्ति का पाठ है : 'भँवर इहाँ तोहि पावै धूप देह तोरि भूँज ।' प्रथम पंक्ति में जो 'सुरुज किरिन तोहि रावै' कहा गया है, 'धूप देह तोरि भूँज' में उसका ठीक विपरीत कथन है, इसलिए पाठांतर की असंगति प्रकट है ।

(२०) ४४३.५ निर्धारित पाठ है : 'बिद्रुम अधर रंग रस राते । जूड़ अमी अस रबि परभाते ।' द्वि० ७, पं० १ में द्वितीय चरण का पाठ है : "जो दामिनी अमर बिनु ताके ।' और द्वि० १ में है 'चूव अमी रस और हो ताते ।' दोनो ही पाठांतर अशतः उर्दू लिपि की त्रुटियों से उत्पन्न तो हैं ही, वे असंगत भी लगते हैं ।

(२१) ४४७.७ निर्धारित पाठ है : 'राधौ करत जाखिनी पूजा । चहत सो रूप देखावत दूजा । तेहि बर भए बैज के कहा । झूठ होइ सो देस न

रहा।' दूसरी पंक्ति का पाठ प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ में है : 'तोहि ऊपर राघौ बर खाँचा। दुइज आज तौ पंडित साँचा।' पाठांतर में आए हुए 'ऊपर' की असंगति और निर्धारित पाठ के 'बर'='बल' की संगति प्रकट है। पाठांतर का 'बर खाँचना'='बल खींचना' भी अर्थहीन लगता है। इसके अतिरिक्त, रत्नसेन ने आगे चलकर राघवचेतन का जो देश-निकाला किया है, उसके लिए भी निर्धारित पाठ प्रसंग में आवश्यक है।

(२२) ४४७.६ निर्धारित पाठ है : 'पंथ गरंथ न जे चलहिं ते भूलहिं बन माँझ।' प्र० १, २, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'पँडितहि पँडित न देखइ भएउ बैर दुहुँ माँझ।' प्रसंग में राघवचेतन और शेष पंडितों में बैर तो हुआ है, किंतु 'पंडितों' और राघवचेतन को 'दुहुँ' शब्द से व्यक्त करना समीचीन नहीं है। इसके स्थान पर 'तिन्ह' शब्द सुगमता से रक्खा जा सकता था। अन्यथा भी निर्धारित पाठ पाठांतर से अधिक संगत ज्ञात होता है।

(२३) ४८७.४ निर्धारित पाठ है : 'तीसर पाहन परस पखाना। लोह छुअत कंचन होइ बाना।' द्वि० ३, ७ में द्वितीय चरण का पाठ है 'पूज सो कनक दुआदस बाना।' 'पूज'='पूरा होता है' यहाँ असंगत है। यदि उसका अर्थ 'पूरा करता है' लिया जावे, तो यह नहीं कहा गया है कि वह किस प्रकार पूरा करता है।

(२४) ४९१.२ निर्धारित पाठ है : 'जिऔं लेइ घर कारन कोई। सो घर देइ जो जोगी होई।' प्र० १,२, द्वि० ७, पं० १ में पाठ है : 'जियतै लेइ घर कारन भोगी। घरनि सो देइ होइ जो जोगी।' पाठांतर का प्रथम चरण अर्थहीन ज्ञात होता है।

(२५) ५१५.४ निर्धारित पाठ है : 'चढ़ा बजाइ चढ़ै जस इंदू। देव-लोक गोहन सब हिंदू।' दूसरे चरण का पाठ प्र० १,२ में है 'जहाँ हनिवंत बैठ होइ इंदू।' पाठांतर की असंगति प्रकट है।

(२६) ५२७.२ निर्धारित पाठ है : 'सौंहँ साहि जहँ उतरा आछा। ऊपर नाच अखारा काँछा।' द्वि० १, तृ० १ में पाठ है : 'सौंहैं साहि केरि जहँ दीठी। पातरि नारि चूर दै पीठी।' पाठांतर के दूसरे चरण में 'पातर' के साथ 'नारि' निरर्थक है, और 'चूर' की भी कोई संगति नहीं ज्ञात होती है।

(२७) ५२८.५ निर्धारित पाठ है : 'छवउ राग गाएनि भल गुनी। औ गाएनि छत्तिस रागिनी।' प्र० १,२, द्वि० ७ में पाठ है : 'छवउ राग ये प्रथमहिं गाए। पुनि तीसौ भारजा सुनाए।' कर्म 'भारजा' स्त्रीलिंग है, इसलिए उसकी क्रिया भी स्त्रीलिंग की 'सुनाई' होनी चाहिए थी, पुल्लिंग 'सुनाए' नहीं। पाठांतर की अशुद्धि फलतः प्रकट है।

(२८) ५२८.७ निर्धारित पाठ है : 'सरस कंठ भल राग सुनावहिं। सबद देहिं मानहुँ सर लावहिं।' प्र० १,२, पं० १ में यह पंक्ति नहीं है। इसके स्थान पर निर्धारित पाठ की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के बीच निम्नलिखत पंक्ति है : 'छवउ राज नाचहिं जस तारा। सगरौ कटक होइ झनकारा।' 'तारा' प्रस्तुत प्रसंग में निरथक है, और रागों का नृत्य भी प्रयोग-सम्मत नहीं ज्ञात होता है।

(२९) ५२८.८ निर्धारित पाठ है : 'सुनि सुनि सीस धुनहिं सब कर मलि मलि पछिताहिं।' दोहे के प्रथम चरण का पाठ प्र० १, २ में है : 'धनुक बान तहँ पहुँचहिं नाहीं'। वाणों का न पहुँचना तो संगत है, किंतु 'धनुष' का न पहुँचना स्पष्ट ही असंगत है, क्योंकि वे तो वाण चलाने वाले के हाथों में बने रहते हैं।

द्वि० ७ में पाठ है 'धनुक बान तहँ पहुँचै' दोनों का पहुँचना, जैसा इस पाठांतर में है, और भी असंगत है; यदि दोनों पहुँच रहे थे, तब हाथ मल-मल कर पछताने की क्या आवश्यकता थी ?

(३०) ५२८.८-९ निर्धारित पाठ है : 'सुनि सुनि सीस धुनहिं सब कर मलि मलि पछिताहिं। कब हम हाथ चढ़हिं ये पातरि नैनन्ह के दुख जाहिं।' च० १, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'पाछें नाच होइ भल नाचत होइ भिनुसार। बाजे तुरुक तरातर (तुरुक औ तुर्रा—च० १) आछे जस बनिजार।' नाच 'पाछें' नहीं, सामने हो रहा था : 'पतुरिनि नाचै दिहें जो पीठी। परि गौ सौंह साहि कै डीठी।' (५२९.१) और 'आछेइ जस बनिजार' की भी कोई संगति नहीं ज्ञात होती है।

(३१) ५२९.२-३ निर्धारित पाठ है : 'देखत साहि सिंहासन गूँजा। कब लगि मिरिग चंद रथ भूँजा। छाड़हु बान जाहिं उपराहीं। गरब केर सिर सदा तराहीं।' प्रथम पंक्ति के द्वितीय चरण का पाठ प्र० १, २, पं० १ में है : 'साहि सिंहासन ऊपर गूँजा। देखा चाँद सरग भा दूजा।' दूसरी

पंक्ति में बादशाह उस की ओर पीठ करके नाचती हुई नर्तकी को लक्ष्य करके बाण चलाने की आज्ञा देता है, इसलिए उसे देखकर उसके विषय में स्वर्ग में दूसरे 'चन्द्रमा' की कल्पना करना बादशाह के लिए संगत नहीं माना जा सकता।

(३२) ५२९.७ निर्धारित पाठ है : 'उदसा नाँच नचनिश्रा मारा। रहसे तुरुक बाजि गए तारा।' प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ में यह पंक्ति नहीं है, और इसके स्थान पर सामान्य पाठ की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के बीच में है 'जबहि ताल दै बैठी चूरी। देखा साहि भई रिसि पूरी।' पाठांतर का 'बैठी चूरी' अर्थहीन ज्ञात होता है। इसके अतिरिक्त बाद की पंक्ति में पुनः 'देखना' क्रिया आती है, जिससे पाठांतर में पुनरुक्ति भी ज्ञात होती है।

(३३) ५३०.३ निर्धारित पाठ है : 'इनिवँत होइ सब लाग गुहारा। आवहिं चहुँ दिसि केर पहारा।' द्वि० १, तृ० १ में पाठ है : 'चले पखान चहूँ दिसि आवहिं। गढ़ि गढ़ि कारे करि बैसावहिं।' पाषाणों का (स्वतः) चला आना, और 'बैसाना' क्रिया का लुप्तकर्त्ता युक्त होना—दोनों ठीक नहीं लगते हैं, और 'कारे करि' तो अर्थहीन ज्ञात होता है।

(३४) ५३०.५ निर्धारित पाठ है : 'खँड ऊपर खँड होइ पटाऊ। चित्र अनेग अनेग कटाऊ।' प्र० १,२ में प्रथम चरण का पाठ है: 'खँड पर खंड भाउ पर भाऊ।' 'भाउ पर भाऊ' प्रसंग में सर्वथा अर्थहीन ज्ञात होता है।

(३५) ५३०.७ निर्धारित पाठ है : 'भा गरगच अस कहत न आवा। मनहुँ उठाइ गँगन कहँ लावा।' द्वि० १, तृ० १ में पाठ है, 'चित्तरसारी होहिं अनेका। लिक्खहिं मोकल मेरु औ बेका।' पाठांतर के 'मोकल मेरु औ बेका' नितांत निरर्थक लगते हैं।

(३६) ५४५.३ निर्धारित पाठ है : 'बहुतै सोंधे धिरित बघारा। औ तहँ कुहँकुहँ पीसि उतारा।' प्र० १,२ में पाठ है : 'बहुतै सोंधे धिउ महँ तरे। कस्तूरी केसर पीसि उतारे।' 'तरे' औ 'उतारे' में असाधारण तुक-वैषम्य प्रकट है, और 'पीसि उतारे' भी असंगत लगता है।

(३७) ५५४.१ निर्धारित पाठ है : 'चढ़ि गढ़ ऊपर बसगति देखी। इंद्रपुरी सो जानु बिसेखी।' प्र० १,२, पं० १ में पाठ है : 'पुनि देखा

गढ़ ऊपर बसा। धनि राजा जाकरि असि दसा।' पाठांतर की क्रिया 'बसा' कर्महीन है, और उसका 'असि दसा'—जिसमें सामान्यतः 'गिरी हुई दशा' की व्यंजना होनी चाहिए—असंगत लगता है।

(३८) ५६७.३ निर्धारित पाठ है: 'दरपन साहिं पैंत तहँ लावा। देखौं जबहिं झरोखे आवा।' प्र० १,२, पं० १ में पाठ है: 'रचा खेल दरपन धरि आगे। रही सुदिष्टि धौरहर लागें।' 'लागें'='लगने पर' सर्वथा असंगत है, 'सुदिष्टि' स्त्रीलिंग कर्म के साथ 'लागी' क्रिया ही संगत और व्याकरण-सम्मत होती। इसके अतिरिक्त यदि शाह को धौरहर की ओर 'सुदिष्टि' लगाए ही रहना था, तो उसने अपने आगे 'दरपन' क्यों रक्खा? धौरहर की ओर सुदिष्टि लगाए रहने पर तो उसे पद्मावती का दर्शन कदाचित् असंभव ही हो जाता।

(३९) ५६७.४-५ निर्धारित पाठ है: 'खेलहिं दुऔ साहि औ राजा। साहि क रुख दरपन रह साजा। पेम क लुबुध पयादे पाऊँ। चलै सौहँ ताकै कोनहाऊँ।' इनमें से प्रथम पंक्ति का पाठ प्र० १,२, पं० १ में है: 'मकु धनि झाँकइ आइ झरोखे। दरस होइ सतरँज के धोखे।' दूसरी पंक्ति के प्रसंग में पाठांतर की पहली पंक्ति की संगति नहीं लगती, यह स्पष्ट है।

(४०) ६६५.५ निर्धारित पाठ है: 'रुख माँगत रुख तासौं भएऊ। भा सह माँत खेल मिटि गएऊ।' प्र० १,२, तृ० १, पं० १ में इसके स्थान पर है: 'भा रुख दाव जो मुहरा भेंटा। भा सह माँत खेल सब मेंटा।' पाठांतर का प्रथम चरण अर्थहीन लगता है।

(४१) ५८०.१ निर्धारित पाठ है: 'पूँछेन्हि बहुत न बोला राजा। लीन्हेसि चूपि मींचु मन साजा।' प्र० १, २, पं० १ में इसके स्थान पर है: 'पूछा बहुत न राजा बोला। दीन्ह केवार न कैसेहुँ खोला।' अभी तक राजा किसी कोठरी में बंद नहीं किया गया था, वह बंद बाद की पंक्ति में किया जाता है: 'खनि गढ़ ओबरी महँ लै राखा।' ऐसी दशा में 'दीन्ह केवार न कैसेहुँ खोला' असंभव है।

(४२) ५८३.८-९ निर्धारित पाठ है: 'कवन खंड हौं हेरौं कहाँ मिलहु हो नाहँ। हेरे कतहुँ न पावौं बसहु तौ हिरदय माहँ।' प्रथम पंक्ति का पाठ प्र० १,२ में है: 'को गुरु अगुवा (कुकुरा कौवा—प्र० १) होइ सखि कहाँ मिलहु

हो नाहँ ।' पूरे छंद में और विवेचनीय पंक्ति में भी संबोधन 'नाहँ' को है : 'तुम्ह बिनु कंत को लावै तीरा ।' (.४), 'कवने जतन कंत तुम्ह पावौं ।' (.७), 'कहाँ मिलहु हो नाहँ ।' (.८), 'बसहु तो हिरदै माहँ ।' (.९) 'सखि' को जो संबोधन पाठांतर में किया गया है, वह इसलिए असंगत लगता है। इसके अतिरिक्त पाठांतर में 'गुरु' के होते हुए 'अगुवा' अनावश्यक है, और 'कुकुरा कौवा' की असंगति तो स्वतः प्रकट है।

(४३) ५९९.३ निर्धारित पाठ है : 'लोना सोइ जहाँ मसि रेखा । मसि पुतरिन्ह निरमल जग देखा ।' प्र० १,२ में इस पंक्ति का पाठ है : 'मसि सोभा केतेहुँ जग देखा । मसि कोटी (गौनी—प्र० २) रोमावलि रेखा ।' पाठांतर के 'केतेहुँ'='कितना भी' (४१) और 'कोटी' (अथवा 'गौनी'—प्र० २) का प्रसंग में कोई अर्थ नहीं ज्ञात होता है।

(४४) ६०४.५ निर्धारित पाठ है : 'का सो भोग जेहि अंत न कोऊ । एहि दुख लिएँ भई सुख देऊ ।' प्र० १, २ में पाठ है : 'का सो भोग जेहि अत न खेवा । जेहि दुख लिएँ भई महि देवा ।' पाठांतर के 'खेवा' और 'महिदेवा' प्रसंग में अर्थहीन ज्ञात होते हैं।

(४५) ६१२.३ निर्धारित पाठ है : 'कँवल चरन भुइँ धरत दुखावहु । चढ़हु सिंघासन मँदिल सिधावहु ।' प्र० १, २, पं० १ में पाठ है : 'साजि सिंघासन आगे आने । कँवल चरन धरि भुइँ कुम्हिलाने ।' पूर्व की पंक्ति है 'साजि सिंघासन तानहिं छातू । तुम्ह माथें जुग जुग अहिवातू ।' इसके द्वितीय चरण में गोरा-बादिल द्वारा पद्मावती को संबोधन है। निर्धारित पाठ में विवेचनीय पंक्ति के भी दोनों चरणों में पद्मावती को संबोधन है, किंतु पाठांतर की पंक्ति के प्रथम चरण में पुनः सिंहासन सजा कर उसे आगे लाने का उल्लेख है, जो पूर्ववर्ती पंक्ति में हो चुका है, जिससे उसमें पुनरुक्ति स्पष्ट है, और तब पुनः पद्मावती को संबोधन है। इसके अतिरिक्त पाठांतर का दूसरा चरण अर्थहीन लगता है। 'धरि' के स्थान पर 'धरिअ' होता तो भले ही किसी प्रकार संगति लग सकती थी।

(४६) ६१४.७ निर्धारित पाठ है : 'हनिवँत सरिस जंघ बर जोरौं । धँसौं समुंद स्यामि बँदि छोरौं ।' प्र० १, २, पं० १ में पाठ है : 'हनिवँत जस राघौ बँदि छोरी । धँसौं समुंद करौं तसि जोरी (पोरी—प्र० २)। पाठांतर के 'जोरी' (अथवा 'पोरी'—प्र० २) का कोई अर्थ नहीं ज्ञात होता है। यदि 'जोरी' 'जोर'

के लिए आया है तो वह स्पष्ट ही अशुद्ध है, और अन्यत्र जायसी में कहीं भी इस प्रकार नहीं प्रयुक्त हुआ है।

(४७) ६१५.१ निर्धारित पाठ है : 'बादिल गवन जूझि कहँ साजा। तैसेहिं गवन आइ घर बाजा।' प्र० १, २ में पाठ है : 'जा दिन बादिल चलै सिधावा। ओही देवस गौना गढ़ आवा।' 'चलना' और 'सिधारना' समानार्थी है; 'चलने के लिए चला'—(अथवा 'गया') निरर्थक है, फिर "कहाँ चलने के लिए गया?' इस प्रश्न का भी कोई उत्तर पाठांतर में नहीं है।

(४८) ६१७.१ निर्धारित पाठ है : 'मान किहें जौं पिआहिं न पावौं। तजौं मान कर जोरि मनावौं।' प्र० १, २, पं० १ में इसके स्थान पर है: 'ठाढ़ि ठाढ़ि मन कीन्ह तेवानू (गियानू—पं० १)। जौ पै पीठि भाव असमानू (जौ पिय जाइ न भावै मानू—पं० १)। 'तेवानू' प्रसंग में अर्थहीन है, और अन्यत्र जायसी में नहीं आया है; 'पीठि भाव अस मानू' भी अर्थहीन ज्ञात होता है। पं० १ के पाठ का 'भावै' भी असंगत ज्ञात होता है—प्रियतम के जाने पर मान का भाना, न भाना कोई अर्थ नहीं रखते हैं।

(४९) ६१७.७ निर्धारित पाठ है : 'तहँ सब आस भरा हिय केवा। भँवर न तजै बास रस लेवा।' यह पंक्ति प्र० १, २, पं० १ में नहीं है। इसके स्थान पर निर्धारित पाठ की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के बीच निम्नलिखित पंक्ति है : 'तजौं लाज कर जोरि मनावौं। करौं ढिठाइ पीठि जौ पावौं।' पाठांतर के 'पीठि जौ पावौं' का प्रसंग में कोई अर्थ नहीं ज्ञात होता है। 'पीठ पाना' तो पराङ्मुख करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है, यथा : 'जिन्हकै लहहिं न रिपु रन पीठी।' ('मानस', बाल० २३१), जो यहाँ प्रसंग-विरुद्ध भी होगा।

(५०) ६१८.७ निर्धारित पाठ है : 'पुरुष बोलि कै टरै न पाछू। दसन गयंद गीवँ नहिं काछू।' प्र० १, २ में इसके स्थान पर पाठ है : 'आजु करौं रन भारथ सोई। अस रन करौं करै नहिं कोई।' पाठांतर का 'सोई' निरा भरती का है, और इसके अतिरिक्त 'आजु करौं रन' और 'अस रन करौं' में पुनरुक्ति भी है।

(५१) ६१८.८ निर्धारित पाठ है : 'तूँ अबला धनि मुगुध बुधि जानै जाननिहार। जहँ पुरुषन्ह कहँ बीर रस भाव न तहाँ सिंगार।' प्र० १, २,

पं० १ में द्वितीय चरण का पाठ है 'अजहुँ समुझि पगु धारि'। 'अजहुँ समुझि' और 'पगु धारि'—दोनों प्रसंग में अर्थहीन ही नहीं असंगत भी हैं।

(५२) ६२०-२ निर्धारित पाठ है: 'उठे सो धूम नैन करुआने। जब ही आँसु रोइ बेहराने।' प्र० १, द्वि० ७ में दूसरे चरण का पाठ है: 'चुवहिं आँसु रोवहिं बिहसाने।' 'बिहसाने' का प्रसंग नहीं हैं—उसमें प्रसंग-विरोध फलतः स्पष्ट है। प्र० २, पं० १ में इसी चरण का पाठ है: "हिअ (ए—पं० १) दौ लाइ कंत (लागि कंठ—पं०१) बिहराने।' बाद की पंक्तियों में हार चीर आदि के भीगने का उल्लेख हुआ है, जिसके कारण यह पाठांतर असंगति-कारक भी है।

(५३) ६२०.३ निर्धारित पाठ है: 'भीजे हार चीर हिय चोली। रही अछूति कंत नहीं खोली।' प्र० २, पं० १ में इसके स्थान पर पाठ है: "चले आँसु धनि बहुरि न बोली। भीजेउ हार चीर उर मेली।' 'बोली' और 'मेली' का तुक—वैषम्य तो प्रकट है ही 'चीर' पुल्लिंग है, यथा:

'हार चीर अरुझाना जहाँ छुअइ तहँ काँट।' (१८८.६)

इसलिए उसके साथ 'मेली' स्त्रीलिंग क्रिया किसी प्रकार भी व्याकरण-सम्मत नहीं मानी जा सकती। पूर्व की पंक्ति में आँसुओं के गिरने का उल्लेख आ चुका है: 'जब ही आँसु रोइ बेहराने ' इसलिए पाठांतर के पाठ में पुनरुक्ति भी है। प्र० २ तथा पं० १ में उक्त पंक्ति का भी पाठ भिन्न है, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, इसलिए प्र० २ तथा पं० १ के दोनों पंक्तियों के पाठ-भेद परस्पर संबंद्ध ज्ञात होते हैं।

(५४) ६२०.४ निर्धारित पाठ है: 'भीजी अलक चुईं कटि मंडन। भीजे भँवर कँवल सिर फुंदन।' प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ में पाठ है; 'भीजै अलक चुवै गति मंदे। भीजै भँवर कँवल रस बंदे।' अलकों का 'मंद गति' से चूना, और भँवरों का कँवल के रस का 'बंदी' होना—अथवा 'बंदा' होना—दोनों निरर्थक लगते हैं। यह पाठांतर अंशतः उर्दू लिपि की त्रुटियों के कारण भी हुआ ज्ञात होता है।

(५५) ६२०.६ निर्धारित पाठ है: 'छाड़ि चला हिरदै दै डाहू। निठुर नाहँ आपन नहिं काहूँ।' प्र० २, पं० १ में पाठ है: 'जो तुम्ह कंत जूझ अब साधा। तुम्ह किए साका मैं सत बाँधा।' 'जूझ' का 'साधना' न जायसी में ही अन्यत्र आया है, और न अन्यथा प्रयोग-सम्मत लगता है। इसके

अतिरिक्त प्रथम चरण का जैसा पाठ इन प्रतियों में है, उसको लेते हुए दूसरे चरण के 'तुम्ह किए साका' में पुनरुक्ति भी है।

(५६) ६२०.८-६ निर्धारित पाठ है : 'रोए कंत न बाहुरै तेहि रोएँ का काज। कंत धरा मन जूझि रन धनि साजे सब साज।' प्र० २, पं० १ में पाठ है : 'तुम्ह लै गै रन साहस मोहिं दै माँग सिंदूर। देहु पँवारे हे सखी बाजै मंदिर तूर।' 'रन साहस' को 'तुम्ह लै गै' कहना असंगत लगता है, और इससे भी अनहोना यह कि रणक्षेत्र में जाने के अपने पति के निश्चय से किसी प्रकार समझौता करने के अनंतर कोई भी स्त्री बाजे बजवाने की आज्ञा दे।

प्र० १, द्वि० ७ में केवल दोहे की द्वितीय पंक्ति का पाठ भिन्न है, और वह इस प्रकार है : 'देहु पँवारे (बधावा—द्वि० ७) हे सखी मंदिल बाजहि आज।' यहाँ भी मंदिल का 'बजना' असंगत लगता है, और पति के रण-प्रयाण के उपलक्ष में पत्नी का पँवारा या बधावा बजवाना उतना ही अनहोना लगता है।

(५७) ६२१.४ निर्धारित पाठ है : 'सजग जो नाहि काहु बर बाँधा। बधिक हुतें हस्ती गा बाँधा।' प्र० १, २, पं० १ में पाठ है : 'सुबुधि सिआर सिंघ कहँ मारा। कुबुधि जो सिंघ कूप परि मरा।' पाठांतर के दूसरे चरण में भी वही बात कही गई है जो उसके प्रथम चरण में है - अतः पुनरुक्ति उसमें स्पष्ट है। 'मारा' और 'मरा' का तुक-वैषम्य भी चिंत्य है।

(५८) ६२३.४ निर्धारित पाठ है : 'बिनै करै आई हौं ढीली। चितउर की मो सिउँ है कीली।' प्र० १, २, पं० १ में पाठ है : 'बिनती करै भाँति सो केती। चितउर की कुंजी मोहिं सेती।' पाठांतर के दूसरे चरण का वाक्य अपूर्ण है।

(५९) ६२३.६ निर्धारित पाठ है : 'बिनवहु पातिसाहि के आगे। एक बात दीजै मोहिं माँगे।' द्वि० ३, तृ० ३ में दूसरे चरण का पाठ है : 'अब सो थाति आवै सँग लागें।' 'थाति' स्त्रीलिंग कर्त्ता के लिए 'लागें' क्रिया अशुद्ध है, 'लागी' शुद्ध होगा। फिर थाती का संग लगी हुई आना भी संगत नहीं लगता।

(६०) ६२७.२ निर्धारित पाठ है : 'पिता मरै जो सारै साथें। मींचु न देइ पूत के माथें।' द्वि० ६, तृ० २ में इसके स्थान पर है : 'पिता बरोक मरै जो (जिउ—द्वि० ६) लिए। आपन मींचु भएउ तेहि (न पूँछहि—द्वि० ६) दिए।'—पाठांतर की सारी पंक्ति ही अर्थहीन ज्ञात होती है।

(६१) ६३३.५ निर्धारित पाठ है : 'लोटहिं कंध कबंध निनारे । माँठ मजीठि जानु रन ढारे ।' प्र० १,२ का पाठ है : 'सेल कि भभकि उठै असरारा । माँठ मँजीठि जानु रन ढारा ।' पाठांतर का पहला चरण अर्थहीन लगता है ।

(६२) ६३८.७ निर्धारित पाठ है : 'देखि चाँद असि पदुमिनि रानी । सखी कमोद सबै बिगसानी ।' प्र० १, २, तृ० ३, पं० १ में इसके स्थान पर है : 'दिनकर गहन सो कीन्ह पयाना । निसि कर गहन आइ निअराना ।' पूर्व की पंक्ति है 'अस्तु अस्तु सुनि भा किलकिला । आगें मिलइ कटक सब चला ।' और बाद की पंक्तियाँ हैं : 'गहन छुटइ दिनकर कर ससि सौं होइ मेराउ । मँदिल सिंघासन साजा बाजा नगर बधाउ ।' प्र० १, २, द्वि० ३, पं० १ का पाठ मानने पर पाठांतर के प्रथम चरण में पुनरुक्ति होती है, क्योंकि दोहे के प्रथम चरण में वही शब्दावली आई है, और प्रसग से विरोध भी होता है, क्योंकि निसिकर के गहन की गंभीर विभीषिका सामने आ जाती है, जो उस हर्ष के प्रसंग में कवि-अभीष्ट नहीं ज्ञात होती है। भाषा की दृष्टि से भी पाठांतर अशुद्ध है : 'गहन' 'दिनकर कर' और 'निसिकर कर' होता है, 'दिन कर' ='दिन का' अथवा 'निसि कर'='निसि का' नहीं ।

(६३) ६४०.८-९ निर्धारित पाठ है : 'जौं सूरज सिर ऊपर तब सो कँवल सुख छात । नाहिं त भरे सरोवर सूखै पुरइनि पात ।' द्वि० २,३, च० १ में पाठ है : 'तुम्ह बिनु हौं किछु नाहीं जौं तुम्ह तौ सिर छात । जौ तुम्ह करहु सुदिष्टि पिय तौ मोहि होइ अहिबात ।' 'तुम्ह बिनु हौं किछु नाहीं' और 'जौ तुम्ह करहु सुदिष्टि पिय'—विशेष रूप से दूसरा—प्रसंग में असंगत लगते हैं। रत्नसेन की सुदिष्टि तो पद्मावती पर सदैव ही थी—जब वह अलाउद्दीन के बंदीगृह में था तब भी थी ।

उपर्युक्त में से निम्नलिखित संख्याओं के बीस पाठांतर दोनों—प्रतिलिपि तथा प्रक्षेप—संबंधों से सिद्ध हैं :

प्र० १, २ : (२५), (३४), (३६), (४२), (४३), (४४), (४७), (५०), (६१)
प्र० १, २, द्वि० ७ : (१५), (१६), (२७), (२९)
द्वि० ६, तृ० ३, : (९), (११)
द्वि० ४, ५ : (१८), (१९)

द्वि० ३, तृ० ३ : (५६)
द्वि० ३, द्वि० ६, तृ० ३ : (१०)
प्र० १, २ द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ : (२१)

निम्नलिखित सत्ताईस केवल प्रतिलिपि-संबंध से सिद्ध हैं :

प्र० १, २, पं० १ : (२२), (२८), (३१), (३७), (३८), (३९), (४१), (४५), (४६), (४८), (४९), (५१), (५७), (५८)
प्र० १, द्वि० ७ : (१२), (१३), (१४), (५२)
द्वि० १, तृ० १ : (२६), (३३), (३५)
प्र० २, पं० १ : (५३), (५५)
द्वि० ४, ६ : (५)
द्वि० २, तृ० २ : (४)
द्वि० ६, तृ० २ : (६०)
द्वि० ५, च० १ : (२)

निम्नलिखित दो केवल प्रक्षेप-संबंध से सिद्ध हैं :

द्वि०२, ४, ५, ६, ७ : (१७)
द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ (७)

शेष चौदह निम्नलिखित हैं :

प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ : (२४), (५४), (५६)
द्वि० ७, पं० १ : (२०)
प्र० १, २, तृ० १ : (३)
प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ : (३२)
प्र० १, २, तृ० १, पं० १ : (४०)
प्र० १, २, तृ० ३, पं० १ : (६२)
द्वि० २, ३, च० १ : (६३)
द्वि० ३, ६, तृ० १, ३ : (८)
च० १, पं० १ : (३०)
प्र० १, द्वि० ६, ७, तृ० २ : (१)
द्वि० ३, द्वि० ७ : (२३)
द्वि० १, ५, तृ० २, ३ : (६)

इनमें से केवल प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ के पाठांतर-साम्य के स्थल

एक से अधिक हैं, और इसलिए विचारणीय हैं। प्र० १, २, द्वि० ७ का प्रतिलिपि एवं प्रक्षेप-संबंध ऊपर देखा जा चुका है ; प्रस्तुत पाठांतर—संबंध को मानने के लिए केवल यह मानना होगा कि पं० १ का प्रतिलिपि-संबंध द्वि० ७ से भी है; और यह मान लेने पर द्वि० ७, पं० १ के पाठांतर-साम्य का स्थल (२०) भी सिद्ध हो जाता है।

चौदह स्थलों में उपर्युक्त तीन+एक=चार स्थलों के सिद्ध हो जाने पर केवल दस स्थल उपर्युक्त प्रकारों से असिद्ध ठहरते है। हाशियों में पाठांतर लिखने की जो प्रवृत्ति हमने 'पदमावत' की प्रतियों में सामान्यतः देखी है, उसके ध्यान से इतने असिद्ध स्थल—तिरसठ में केवल दस—नितांत स्वाभाविक हैं।

शेष तिरपन में से बीस+सत्ताइस+चार=इक्कावन प्रतिलिपि-संबंध से सिद्ध हो जाते हैं, और बीस+दो=बाइस प्रक्षेप-संबंध से सिद्ध होते हैं। इससे विभिन्न प्रतियों के प्रतिलिपि और प्रक्षेप-संबंध के जिन परिणामों पर हम ऊपर पहुँचे हैं, उनकी मान्यता प्रमाणित होती है। प्रतिलिपि-संबंध और प्रक्षेप-संबंध के सापेक्षिक महत्त्व में इस प्रकार का अन्तर होना भी स्वाभाविक है, और इस दृष्टि से भी सम्पादन-शास्त्रियों ने प्रतिलिपि-संबंध को 'मुख्य संबंध' और प्रक्षेप-संबंध को 'गौण संबंध' माना है।

इस शीर्षक के अंतर्गत केवल पाठांतर के ऐसे स्थल लिए गए हैं, जो किसी न किसी प्रकार अशुद्ध ठहरते हैं। किंतु ग्रंथ में अनेकानेक ऐसे स्थल भी हैं, जहाँ के दोनों या उससे अधिक भी पाठ विभिन्न दृष्टियों से—कुछ कम या अधिक—सम्मत और संगत ज्ञात होते हैं। और यह असम्भव भी नहीं है कि सभी स्थलों पर कवि ने जो पाठ दिया हो उससे भिन्न किंतु उतना ही सम्मत और संगत पाठ न दिया जा सकता हो।

इसलिए प्रतियों के प्रतिलिपि-संबंध और प्रक्षेप-संबंध के विषय में अंतिम रूप से ऊपर जिस परिणाम पर हम पहुँचे हैं, उसी के आधार पर हमें ग्रंथ के समस्त पाठभेदों का निराकरण करना होगा। वस्तुतः इन संबंधों का निर्धारण स्वतः साध्य नहीं है, साध्य तो है प्रामाणिक पाठ की प्राप्ति, और उसी के लिए इन समस्त संबंधों का निर्धारण साधन रूप में अनिवार्य हुआ है।

१०. ग्रंथावली के अन्य ग्रंथ

'पदमावत' के अतिरिक्त जायसी कृत माने हुए दो अन्य ग्रंथ भी प्राप्त थे—

'अखरावट' और 'आखिरी कलाम'। पं० रामचन्द्र शुक्ल को इनके उर्दू अक्षरों में मुद्रित एक-एक संस्करण मिले थे। उन्हीं से लेकर अपनी जायसी-ग्रंथावली में शुक्लजी ने इन ग्रंथों के पाठ दिए थे। मुझे भी इन ग्रंथों की कोई प्राचीन प्रतियाँ नहीं मिल सकीं, इसलिए वही क्रिया मुझे भी करनी पड़ रही है। इन ग्रंथों का पाठ असंतोषजनक है। भविष्य में यदि प्राचीन प्रतियाँ उपलब्ध हो सकीं, तो इनका भी संपादन संभव हो सकेगा।

उपर्युक्त के अतिरिक्त खोज में मुझे जायसी की एक अन्य कृति मिली है, जिसे इस संस्करण में पहिली बार प्रकाशित किया जा रहा है। यह है 'महरी बाईसी'। यह नाम मेरा दिया हुआ है, स्पष्ट नामोल्लेख कृति में नहीं है। केवल 'महरी' गाने का उल्लेख कृति में जहाँ-तहाँ हुआ है, और इस कृति में कुल बाइस गीत हैं, इसलिए यह नाम दे दिया गया है। संभव ही नहीं, आशा भी है कि आगे की खोजों में इस कृति का ठीक नाम ज्ञात हो जावेगा।

यह कृति केवल सन् ११६४ हिजरी की एक प्रति के आधार पर संपादित हुई है, जो ऊपर वर्णित द्वि० २ के प्रारंभ में उसी जिल्द में दी हुई है। लिखावट प्रायः शिकस्त है, और दिया हुआ पाठ अत्यंत कठिनतापूर्वक उससे प्राप्त किया गया है। प्रति में कहीं-कहीं शब्द और पंक्तियाँ छूटी हुई हैं। उन स्थलों का यथास्थान निर्देश कर दिया गया है। भविष्य में यदि और प्रतियाँ प्राप्त हो सकीं तो इस रचना का भी यथेष्ट संपादन संभव हो सकेगा।

इन तीनों कृतियों की प्रामाणिकता के बारे में मुझे संदेह है, किंतु वैज्ञानिक रीति से पाठ-निर्धारण के बिना उस संदेह का निराकरण असंभव है। मुझे विश्वास है कि जिन सज्जनों के पास भी इन ग्रंथों की हस्तलिखित या मुद्रित प्रतियाँ होंगी, अथवा उनके कहीं भी होने की जानकारी होगी, वे उनके संबंध में मुझे सूचित करके इन कृतियों के भी प्रामाणिक पाठ-निर्धारण में मेरे सहायक होंगे।

११. ग्रंथावली के अन्य संस्करण

'पदमावत' के निम्नलिखित संस्करण ज्ञात हैं :

१—रामजसन मिश्र द्वारा संपादित, चन्द्रप्रभा प्रेस काशी से, १८८४ में प्रकाशित।

२—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से १८८१ में प्रकाशित, (सम्पादक अज्ञात) ।

३—मौलवी अलीहसन द्वारा सम्पादित, मुंशी नवलकिशोर द्वारा प्रकाशित (तिथि अज्ञात) ।

४—शेख अहमद अली द्वारा सम्पादित, शेख मुहम्मद अज़ीम उल्लाह द्वारा कानपुर से प्रकाशित, (तिथि अज्ञात) ।

५—सर जार्ज ए० ग्रियर्सन और महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी द्वारा सम्पादित, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता द्वारा १८९६-१९११ में प्रकाशित ।

६—पं० रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा, १९२४ में प्रकाशित ।

७—डा० सूर्यकांत द्वारा सम्पादित, पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर से १९३४ में प्रकाशित ।

८—पं० भगवती प्रसाद द्वारा सम्पादित, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ द्वारा प्रकाशित, (तिथि अज्ञात) ।

९—डा० लक्ष्मीधर द्वारा सम्पादित, लूज़क एंड कंपनी, लंदन द्वारा १९४९ में प्रकाशित ।

१०—बंगवासी फ़र्म द्वारा १८९६ में प्रकाशित, (सम्पादक अज्ञात) ।

इनमें से रामजसन मिश्र द्वारा सम्पादित संस्करण नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के पुराने सूचीपत्रों में दिया हुआ है, किंतु सभा को लिखने पर ज्ञात हुआ कि वहाँ वह नहीं है । बंगवासी फ़र्म वाले संस्करण का पता भी नहीं लग सका कि वह कहाँ मिल सकेगा ।

नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित १८८१ के संस्करण की छठी आवृत्ति वहाँ से प्राप्त हुई । उसे देख कर बड़ी निराशा हुई । न उस पर सम्पादक का नाम है, और न यह लिखा हुआ है कि किन प्रतियों के अनुसार उसका पाठ निर्धारित किया गया है । मंगलमूर्ति गणेश जी का चित्र मात्र देकर ग्रंथ प्रारम्भ करना यथेष्ट समझा गया है । इसके पाठ से परिचय कराने के लिए नीचे उन्हीं नौ पंक्तियों का पाठ दिया जा रहा है, जिनका पाठ अन्यत्र विभिन्न प्रतियों के चित्रों में दिया गया है :

नाभी कुण्ड सो मलय समीरू । समुद्र भँवर जस भवै गँभीरू ।
बहुते भँवर बौंडर भये । पहुँच न सके स्वर्ग कहँ गये ।

चन्दन माँझ कुरंगिन खोजू। वेहिं को पाव को राजा भोजू।
को वहि लागहिवंचल सीझा। काकहिं लिखी ऐस को रीझा।
सोहै कमल सुगन्ध शरीरू। समुद्र लहर सोहै तन चीरू।
झूलहिं रतनपाट के झोपा। साज मदन वहिका कहँ कोपा।
अबहिं सो अहै कमल की करी। न जनों कौन भँवर कहँ धरी।
बेध रही जग बासना, निरमल मेद सुगन्ध।
तेहि अरघान भँवर सब लुब्धे, तजहिं न दिये बन्ध॥

इसे देखने पर ज्ञात होगा कि ग्रंथ के पाठ को शोध करके शुद्ध कर देने में पंडित जी ने कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। टिप्पणी में उन्होंने शब्दार्थ भी दिये हैं। उसके सम्बन्ध में हमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

मौलवी अलीहसन और शेख अहमद अली खाँ के संस्करणों में भी प्रतियों का कोई उल्लेख नहीं है, किंतु सम्पादक ज्ञात हैं। इनमें पाठ प्रायः अछूता छोड़ा हुआ ज्ञात होता है—कम से कम किन्हीं पंडित जी की वैसी कृपा इन पर नहीं हुई है, यह प्रकट है, जैसी उपर्युक्त नवलकिशोर प्रेस के संस्करण पर हुई है। इसलिए इन दोनों प्रतियों का पाठ उपयोगी है, और प्रस्तुत संस्करण में उनका उपयोग भी किया गया है। उपर्युक्त पंक्तियों के चित्र इन प्रतियों से अन्यत्र दिये जा चुके हैं।

शेष संस्करण ज्ञात रूप से सम्पादित संस्करण हैं। उनके संबंध में नीचे क्रमशः विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

ग्रियर्सन का संस्करण—यह प्रस्तुत संस्करण के छंद २७४ तक ही है। विभिन्न पीढ़ियों की हमारी निम्नलिखित प्रतियाँ ग्रियर्सन को प्राप्त थीं :

(१) तृ० १, ३
(२) द्वि० २, ३
(३) द्वि० ४, ५
(४) प्र० १

इनके अतिरिक्त उन्हें तीन कैथी लिपि की तथा एक उदयपुर की नागरी लिपि की भी प्रतियाँ प्राप्त थीं।[1] कैथी की प्रतियों में से केवल एक के पाठांतर उन्होंने अपने संस्करण में दिये हैं, शेष दोनों कैथी

१—खेद है कि यत्न करने पर भी इनमें से कोई प्रति प्राप्त नहीं हो सकी।

प्रतियों के पाठांतर न देते हुए लिखा है कि इनका पाठ भी इसी प्रति से मिलता-जुलता है।

उन्होंने यह भी लिखा है कि ये दोनों कैथी की प्रतियाँ बहुत भ्रष्ट पाठ की हैं, और पाठ-निर्धारण में इनका उपयोग भी प्रायः नहीं किया है। उदयपुर की प्रति के पाठांतर उन्होंने दिए हैं। उक्त कैथी की और उदयपुर की प्रतियाँ पाठ की दृष्टि से प्र० १ की या उस से भी किंचित् नीचे की पीढ़ी की ज्ञात होती हैं।

संपादन के संबंध में ग्रियर्सन ने दो सिद्धान्तों का उल्लेख किया है। एक तो यह कि उन्होंने प्रायः प्रतियों का बहुमत ग्रहण किया है, और दूसरा यह कि द्वि० ३ के पाठ को उन्होंने सामान्यतः ग्रहण किया है, और उसे आधार-प्रति माना है। इन दोनों सिद्धान्तों के द्वारा प्राप्त परिणामों पर विचार कर लेना चाहिये।

उदयपुर की तथा कैथी की उपर्युक्त प्रतियों को लेने पर बहुमत तीसरी, चौथी और पाँचवीं पीढ़ियों का ही रहता है, और द्वि० ३ को आधार-प्रति मानने पर भी वह दूसरी पीढ़ी से आगे नहीं बढ़ता। किंतु इन सिद्धान्तों का भी यथेष्ट उपयोग उन्होंने पाठ-निर्णय या प्रक्षेप-निर्णय में नहीं किया है। यह निम्न- लिखित उदाहरणों से प्रकट होगा।

ऊपर विभिन्न प्रतियों का पाठ-संबंध निर्धारण करने में हमने प्रतिलिपि-संबंधी जिन भूलों का निरीक्षण किया है, उनमें से ११वीं संख्या की भूल इस संस्करण के मूल पाठ में भी पाई जाती है। जैसा वहाँ बताया गया है, कि द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ में २५५.६ के स्थान पर तथा द्वि० ६ में २५५.७ के स्थान पर निम्नलिखित पंक्ति पाई जाती है :

तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देऊ। उतरौं पार तेही विधि खेऊ।

जिससे ज्ञात यह होता है कि यह पाठ दोनों प्रकार की प्रतियों के सामान्य पूर्वज में हाशिए पर लिखा हुआ था, जिससे द्वि० २,४, ५, तृ०३ के पूर्वज ने उसे एक पंक्ति और द्वि० ६ के पूर्वज ने उसे दूसरी पंक्ति का ठीक पाठ मान कर उसे इस प्रकार भिन्न-भिन्न ढंगों से ग्रहण किया। ग्रियर्सन को द्वि० ६ प्राप्त नहीं थी। इसलिए वे इस ढंग से विवेचनीय पंक्ति के संबंध नहीं सोच सकते थे। किंतु यह पाठान्तर उनकी प्रतियों में से केवल दो में—द्वि० २, तृ० ३ में था—शेष समस्त प्रतियों में मूल पाठ की ही पंक्ति थी, इसलिए

प्रतियों का बहुमत उसके पक्ष में था, और द्वि० ३ में भी मूल पाठ की ही पंक्ति थी, इसलिए उनकी आधार-प्रति का भी साक्ष्य इसी के पक्ष में था। फिर भी ग्रियर्सन ने उक्त पाठान्तर की ही पंक्ति को ग्रहण किया।

पुनः ऊपर जिन छंदों को विभिन्न प्रतियों में प्रक्षिप्त माना गया है, उनमें से निम्नलिखित ग्रियर्सन के संस्करण में मूल पाठ के रूप में सम्मिलित कर लिए गए हैं :

६०अ, १५६अ, १८०अ, १८५ अ, २६२ अ, २६२ आ, २६२इ, २६८अ, २६८ आ, २६८ इ, २६८ ई, २६८ उ।

इनमें से ६० अ उनकी केवल तीन प्रतियों—द्वि० २, तृ० ३, तथा एक कैथी की प्रति—में था, और प्रतियों का बहुमत इसके विपक्ष में था। फिर भी ग्रियर्सन ने इसे मूल में ग्रहण कर लिया।

इनके अतिरिक्त एक और प्रक्षिप्त छंद भी ग्रियर्सन ने मूल पाठ में रख लिया है, वह है ५५ अ, जो मुझे प्राप्त किसी भी प्राचीन प्रति—हस्तलिखित या मुद्रित—में नहीं मिला है। ग्रियर्सन की प्रतियों में भी यह केवल एक कैथी की प्रतिमा में था, और उसी के प्रमाण पर उन्होंने इसे मूल पाठ में ग्रहण किया है।

यहाँ तक तो ग्रियर्सन के अपने द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों के अनुसार उनके पाठ के विषय में हुआ। कहने की आवश्यकता नहीं कि उनके ये दोनों सिद्धान्त वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक नहीं थे। प्रामाणिक पाठ-निर्णय के संबंध में संपादन विज्ञान के जो सिद्धान्त हैं, उनसे ग्रियर्सन अपरिचित ज्ञात होते हैं। प्रतिलिपि-संबंध, प्रक्षेप-संबंध, अथवा पाठान्तर-संबंध के आधार पर विभिन्न प्रतियों के पाठों की स्थिति निर्धारित करके पाठ-निर्धारण का कोई प्रयास उन्होंने नहीं किया है।

ग्रियर्सन की टिप्पणियों को देखने पर यह तो ज्ञात होता है कि उनका ध्यान प्रतियों के सामान्य उर्दू-लिपि में लिखे गए पूर्वज की ओर था। किंतु, ऊपर हम देख चुके हैं, 'पदमावत' की आदि प्रति नागरी लिपि में थी, जिसके उर्दू-लिपि के रूपांतर से प्रस्तुत प्रतियों की विभिन्न परंपराएँ निकलीं। इसलिए और भी ग्रियर्सन का संस्करण आदि प्रति के पाठ तक न पहुँच कर बीच ही तक रह गया है। उन्हें जायसी की भाषा तथा उनकी छंद-योजना के भी स्वरूपों का ठीक-ठीक परिज्ञान नहीं ज्ञात होता है।

शुक्ल जी का संस्करण—पं० रामचन्द्र शुक्ल ने अपने संस्करण के वक्तव्य में लिखा है कि उनके देखने में 'पदमावत' के चार संस्करण आए

थे—एक नवलकिशोर प्रेस का, दूसरा पं० रामजसन मिश्र का, तीसरा कानपुर के किसी प्रेस का, और चौथा ग्रियर्सन का। उन्होंने लिखा है, "प्रथम दो संस्करण किसी काम के नहीं हैं। एक चौपाई का भी पाठ शुद्ध नहीं। शब्द बिना इस विचार के रक्खे हुए हैं कि उनका कुछ अर्थ भी हो सकता है या नहीं।" इन दोनों के संबंध में ऊपर लिखा जा चुका है। शेष दोनों के संबंध में उन्होंने लिखा है, "कानपुर वाले उर्दू संस्करण को कुछ लोगों ने अच्छा बताया। पर देखने पर वह भी इसी श्रेणी का निकला। उसमें विशेषता इतनी ही है कि चौपाइयों के नीचे अर्थ भी दिया हुआ है।" इस संस्करण से इसके अनंतर शुक्ल जी ने अर्थों के कुछ उदाहरण दिये हैं, पाठ से कोई उदाहरण देकर उसके विषय में और कुछ नहीं कहा है। ग्रियर्सन के संस्करण के संबंध में पहले उन्होंने सुधाकर जी की दी हुई टीका-टिप्पणी की आलोचना की है, उसके अनंतर पाठ के विषय में कहा है, "कहीं-कहीं अर्थ ठीक बैठाने के लिए पाठ भी विकृत कर दिया गया है, जैसे

(१) 'कतहुँ चिरहँटा पंखिन्ह लावा' का 'कतहुँ छरहटा पेखन्ह लावा' कर दिया गया है, और 'छरहटा' का अर्थ किया गया है 'छार लगाने वाले, नकल करने वाले'।

(२) जहाँ 'गथ' शब्द आया है (जिसे हिंदी कविता का साधारण ज्ञान रखने वाले भी जानते हैं) वहाँ 'गंठि' कर दिया गया है।

(३) इसी प्रकार 'अरकाना' (अरकाने दौलत अर्थात् सरदार या उमरा) का 'अरगाना' करके 'अलग होना' अर्थ किया गया है।"

टीकाओं और टिप्पणियों के संबंध में जो कुछ शुक्ल जी ने कहा है, उससे हमारा यहाँ प्रयोजन नहीं है। केवल पाठ के संबंध में हमें विचार करना है।

(१) ३९.५ निर्धारित पाठ है : 'कतहुँ छरहटा पेरवन लावा।' शुक्ल जी का कहना है कि 'छरहटा' के स्थान पर 'चिरहँटा' और 'पेखन' के स्थान पर 'पंखिन्ह' होना चाहिए। किंतु शुक्ल जी का बताया हुआ यह पाठ न ग्रियर्सन को किसी हस्तलिखित प्रति में मिला था और न मुझे मिला है। शुक्ल जी को यद्यपि उन्होंने कहा नहीं है, यह पाठ नवलकिशोर प्रेस वाले उक्त संस्करण में मिला था जिसकी पाठभ्रष्टता की स्वतः उन्होंने निंदा की है। और 'चिरहँटा' का अर्थ उन्होंने 'बहेलिया' किया है। यह अर्थ भी उन्होंने किस प्रमाण पर किया है, यह अज्ञात है; न लोक भाषा में यह अर्थ मिलता है, और न जायसी ने ही अन्यत्र कहीं इस अर्थ में शब्द का प्रयोग

किया है। 'बहेलिया' के अर्थ में जायसी ने 'चिरिहार' शब्द का प्रयोग किया है :

कत चिरिहार ढुकत लेइ लासा। (७०.४)
सुनि बाम्हन बिनवा चिरिहारू। (७८.१)

यदि 'बहेलिया' अर्थ के लिए जायसी को कोई शब्द रखना होता, तो वे 'चिरहँटा' के स्थान पर कदाचित् 'चिरिहरा' रखते :

कतहुँ 'चिरिहरा' पंखिन्ह लावा।

किंतु लिपि की संभावनाओं के ध्यान से 'चिरिहरा' का 'चिरहँटा' या 'छरहटा' नहीं हो सकता, इसलिए 'चिरिहरा' पाठ भी मान्य नहीं हो सकता।

'पंखिन्ह' का अर्थ तो 'चिड़ियाँ' होता ही है, और उर्दू लिपि की संभावनाओं के अनुसार 'पंखिन्ह' का 'पेखन्ह' हो भी सकता है। किंतु प्रतियों में 'पेखन' ही मिलता है; न 'पंखिन्ह' मिलता है, और न 'पेखन्ह'। नवलकिशोर प्रेस वाले उक्त संस्करण में शुक्ल जी को पाठ मिला 'पंखी' और ग्रियर्सन में मिला 'पेखन्ह', इसीलिए कदाचित् शुक्ल जी ने 'पंखिन्ह' पाठ कर दिया, यद्यपि कानपुर वाले संस्करण में पाठ 'पेखन' था।

अर्थ की दृष्टि से भी 'छरहटा पेखन लावा' विचारणीय है। 'छरहट' शब्द यद्यपि 'पदमावत' के मूल पाठ के छंदों में नहीं मिलता है, एक प्रक्षिप्त छंद में मिलता है, जिसे ग्रियर्सन और शुक्ल जी—दोनों ने अपने-अपने संस्करणों में मूल पाठ में सम्मिलित कर लिया है। ग्रियर्सन में वहाँ पाठ है :

खिन इक महँ 'छरहट' होइ बीता। दर महँ छरहि रहै सो जीता।

और शुक्ल जी में है :

खिन इक महँ 'झुरमुट' होइ बीता। दर महँ चढ़ि जो रहै सो जीता।

इस प्रसंग में उक्त नवलकिशोर प्रेस तथा कानपुर वाले संस्करणों का पाठ भी द्रष्टव्य है। नवलकिशोर प्रेस में है :

खिन इक महँ 'झुरमुट' हो बीता। दर महँ चढ़ै जो रहै सो जीता।

कानपुर में है :

खिन इक महँ 'झुरमुट' हो बीता। दर महँ चढ़ैं जो रहै सो जीता।

ऐसा ज्ञात होता है कि प्रतियों का बहुमत और शब्द की सार्थकता देख कर

शुक्ल जी ने 'छरहँट' के स्थान पर 'झुरमुट' पाठ को ही ग्रहण किया। 'झुरमुट' का अर्थ शुक्ल जी ने किया है 'अँधेरा'। अँधेरा—संध्या का विरल अंधकार—'झुटपुटा' कहलाता है, 'झुरमुट' नहीं। 'झुरमुट' शब्द 'छोटी झाड़ी' के अर्थ में और प्रायः 'झाड़ी' के साथ प्रयुक्त होता है। किंतु यहाँ पर न 'अँधेरा' का कोई प्रसंग है, और न 'झाड़ी' का। और एक क्षण में 'अंधकार' होकर समाप्त भी नहीं हो जाता, जैसा 'होइ बीता' से नितांत स्पष्ट है। प्रसंग 'छरहट' का ही है। और 'छरहट' की व्युत्पत्ति है 'छल+हट्ट' 'छल'='इंद्रजाल' की 'हट्ट'='हाट'। वहाँ पर अंगद और हनुमान के पराक्रम के जो दृश्य आते हैं, महेश के घटे और विष्णु के शंख के जो नाद सुनाई पड़ते हैं, समस्त दानव, राक्षस, 'अहुठौ बज्र' जो जुटे हुए दिखाई पड़ते हैं, वे सब इस 'छलहट्ट' के ही अंग हैं। यही 'छरहट' या 'छलहट्ट' वहाँ सिंघल-वर्णन में भी आया है।

'पेखन' शब्द के संबंध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। 'पेखना'='देखना' तो जायसी में बराबर आया ही है, तुलसीदास में 'पेखन' शब्द का भी 'तमाशे' या दृश्य के अर्थ में सुंदर प्रयोग हुआ है :

जग पेखन तुम्ह देखन हारे। विधि हरि संभु नचावन हारे।

शुक्ल जी 'पेखन' और उसके इस अर्थ से कदाचित् परिचित रहे होंगे, और उनके पास के कानपुर के संस्करण में 'पेखन' पाठ के साथ ही 'तमाशा' उसका अर्थ भी दिया हुआ था। इन अर्थों को ध्यान में रखते हुए यदि पंक्ति का अर्थ दिया जावे, तो वह होगा : "कहीं 'छल की हाट' और 'खेल-तमाशे' लोगों ने लगा रक्खे हैं;" और दूसरे चरण के 'कतहुँ पखंडी काठ नचावा' के प्रसंग में यही अर्थ विशेष संगत भी ज्ञात होगा।

(२) 'गथ' शब्द ग्रियर्सन के संस्करण में निम्नलिखित दो स्थलों पर ही आया है :

चेटक लाइ हरहिं मन जौ लहिं 'गथ' होइ फेंट। (३८.८)

जो तेहि हाट सजग भा 'गथ' ताकर पै बाँच। (३६.६)

ग्रियर्सन के अतिरिक्त उक्त नवलकिशोर प्रेस तथा कानपुर वाले संस्करणों में भी इन स्थलों पर पाठ 'गठि' है। यद्यपि शुक्ल जी ने कहा नहीं है, असंभव नहीं कि उन्हे 'गथ' पाठ पं० रामजसन के संस्करण या कैथी की उक्त प्रति में मिला हो, जिसका उल्लेख शुक्ल जी ने किया है, क्योंकि इन स्थलों पर 'गथ' पाठ मुझे भी हिंदी और उर्दू लिपियों की अनेक हस्तलिखित

प्रतियों में मिला है। इन स्थलों पर पाठ 'गथ' ही होना चाहिए, यह मान्य है।

किंतु, ग्रियर्सन द्वारा यह पाठ-विकृति नहीं हुई है; ग्रियर्सन ने जिन प्रतियों का उपयोग किया था उनमें से अधिकतर में, और जिस प्रति को उन्होंने आधार-प्रति माना था, उसमें पाठ 'गठि' ही था, अतएव 'गठि' पाठ स्वीकार करने में उन्होंने कोई पाठ-विकृति न कर अपने द्वारा निर्धारित सिद्धांतों का पालन ही किया है। उन प्रतियों में भी 'गथ' का 'गठि' पाठ की गई पाठ-विकृति के रूप में नहीं हुआ है, वरन् उर्दू लिपि की विशेषताओं के कारण हुआ है, क्योंकि 'गथ' और 'गठि' दोनों प्राचीन उर्दू लिपि में एक ही प्रकार से लिखे जाते थे।

(३) ग्रियर्सन में 'अरगाना' शब्द निम्नलिखित स्थल पर आया है :

जावँत अहहिं सकल अरगाना। साँबर लेहु दूरि है जाना। (१२८.२)

'अरगाना' के स्थान पर 'अरकाना' पाठ होने के संबंध में शुक्ल जी का प्रमाण 'अरकाने-दौलत' उसकी व्युत्पत्ति पर आधारित है। 'अरकाना' पाठ और उसकी 'अरकाने-दौलत' व्युत्पत्ति दोनों शुक्ल जी को उक्त कानपुर वाले संस्करण से मिले हैं, यद्यपि शुक्ल जी ने यह लिखा नहीं है— उसमें मूल में पाठ 'अरकाना' तथा अनुवाद में 'अरकाने-दौलत' दिए हुए हैं।

किंतु भाषा की संभावनाओं की ओर उनका ध्यान नहीं गया—'अरकाना' का 'भाषा' में 'अरगाना' और 'अरगाना' का 'उरगाना' या 'ओरगाना' हुआ होना स्वाभाविक है, यथा शोक से 'निसोगा' (४२.७) '(५८.८)' 'अनेक' से 'अनेग' (३७.३) 'बिकसै' से 'बिगसै' (३२६.८)। 'पदमावत' में यह शब्द अन्यत्र इसी रूप में आया भी है। एक स्थान पर है :

राघवचेतन चेतन महा। आई 'ओरगि' राजा के रहा। (४४६.१)

'ओरगि' शब्द की इस व्युत्पत्ति को न समझ कर शुक्ल जी ने वहाँ पाठ दिया है :

आऊ सरि राजा के रहा।

यद्यपि नवलकिशोर प्रेस, और कानपुर वाली उक्त प्रतियों में पाठ 'ओरकि' था—जो 'ओरिग' का ही उर्दू लिपि की विशेषताओं के कारण विकृत पाठ है। दूसरे स्थान पर है :

अष्टौ कुरी नाग 'ओरगाने' भै केसन्हि के बाँद। (६६'६)

'ओरगाने' के स्थान पर नवलकिशोर प्रेस वाले में पाठ 'उरके' था, कानपुर वाले में 'अरुझे' था, और ग्रियर्सन में 'सब' पाठ स्वीकृत किया गया था। कदाचित् कानपुर वाले संस्करण का ही अनुसरण करते हुए शुक्ल जी ने भी पाठ 'अरुझे' दिया। किंतु यदि ग्रियर्सन द्वारा दिये हुये पाठांतरों पर उन्होंने ध्यान दिया होता, तो उन्हें ज्ञात होता कि प्र० १ तथा तृ० १ के अतिरिक्त उनकी सभी प्रतियों में इसके स्थान पर 'उरगाने' 'उरगानेउ' 'ओरगाएन' 'अउँरगे' पाठ है। ग्रियर्सन ने स्वतः इस स्थल पर—कदाचित् 'ओरगाने' शब्द से अपरिचित होने के कारण—प्रतियों के बहुमत एवं आधार-प्रति विषयक अपने दोनों सिद्धान्तों का उल्लंघन किया था। शुक्ल जी शब्द से तो परिचित थे, किंतु उन्होंने कदाचित् ग्रियर्सन के संस्करण में दिये हुए पाठांतरों पर कोई ध्यान नहीं दिया, अन्यथा कदाचित् वे भी 'ओरगाने' पाठ ही स्वीकार करते।

इन सबसे भी अधिक विचारणीय यह है कि शुक्ल जी ने पूर्ववर्ती संस्करणों के विषय में इस प्रकार के आरोप किसी भी हस्तलिखित प्रति के प्रमाण पर नहीं किए हैं, वरन् या तो किसी मुद्रित संस्करण के आधार पर किए हैं, और या तो अपने अनुमानों के प्रमाण पर। हस्तलिखित प्रति के नाम पर केवल एक प्रति का उपयोग उन्होंने किया था, जिसके विषय में उन्होंने केवल इतना कहा है कि वह कैथी लिपि में थी। उन्होंने यह नहीं बताया है कि वह उन्हें कहाँ से मिली थी, किस तिथि की थी, किसकी लिखी हुई थी, किस आकार-प्रकार की थी, और उसका पाठ कैसा था। पूर्ववर्ती संस्करणों के पाठों के बारे में तो उन्होंने इतना लिखा, उक्त हस्तलिखित प्रति के पाठ के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं लिखा।

शुक्ल जी के संस्करण का पाठ जैसा है, उसे भी हमें देखना है। उसमें निम्नलिखित तैंतालीस छंद भी पाए जाते हैं, जो प्रस्तुत संस्करण में प्रक्षिप्त माने गए हैं :

५५ अ, ६० अ, १५६ अ, १८० अ, २६२ अ, २६२ आ, २६२ इ, २६८ अ, २६८ आ, २६८ इ, २६८ ई, २६८ उ, २७४ अ, २८४ अ, २८४ आ, २८४ इ, २६३ अ, ३१५ अ, ३१५ आ, ३१५ इ, ३१६ अ, ३३२ अ, ३६१ अ, ३८३ अ, ३८३ आ, ३८३ इ, ३८३ ई, ४१८ अ, ८१८ ई, ४१८ उ, ४२६ अ, ४४५ अ, ४४५ इ, ४६८ अ, ५२८ उ, ५७४ अ, ५८३ अ, ५८३ आ, ५८३ इ, ५६३ अ१, ६०३ अ, ६११ अ१, १३३ अ।

विभिन्न प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध निर्धारित करते हुए इनमें से अधिकतर का विस्तृत विवेचन किया जा चुका है, केवल दो के संबंध में यहाँ कुछ कहना आवश्यक है। एक है ५५ अ, जो प्रस्तुत संस्करण के लिए प्रयुक्त किसी भी प्रति में नहीं मिलता है। ग्रियर्सन के संस्करण में अवश्य यह छंद है, किंतु उन्हें भी केवल एक कैथी की प्रति में मिला था, जो, जैसा बताया जा चुका है, पाठ की दृष्टि से उनके और मेरे द्वारा प्रयुक्त समस्त प्रतियों से नीचे की पीढ़ी की थी। शुक्ल जी ने केवल ग्रियर्सन के प्रमाण पर इसे स्वीकृत किया, या कोई और प्रमाण उन्हें इसके पक्ष में प्राप्त हुए थे, यह अज्ञात है।

दूसरा, ऊपर दिया हुआ १३३ अ है। यह शुक्ल जी के संस्करणमें प्रायः अंत में आता है, और कथा के गूढ़ार्थ का निर्देश करता है—चित्तौर को तन, राजा को मन, सिंहल को हृदय, पद्मिनी को बुद्धि आदि बताता है। यह छंद शुक्ल जी को नवलकिशोर प्रेस, और कानपुर वाले संस्करणों में मिला था, कदाचित् इसीलिए उन्होंने इसे प्रामाणिक मान कर ग्रंथ के मूल पाठ में स्थान दिया। मुझे केवल दो हस्तलिखित प्रतियों में यह छंद मिला है, प्र० १, तथा (तृ० १)। ऊपर हम यह देख चुके हैं कि यह प्रतियाँ पाठ परम्परा में सब से नीची पीढ़ी में आती हैं। इसलिए यह छंद निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है। किंतु इस छंद को प्रामाणिक मान लेने के कारण जायसी के रूपक-निर्वाह के विषय में शुक्ल जी ने और उनके पीछे के जायसी के समस्त समालोचकों ने कितना बड़ा वितंडावाद किया है!

प्रक्षिप्त छंदों की उपर्युक्त तालिका को देखने पर ज्ञात होगा कि ग्रंथ के उस अंश में जो ग्रियर्सन के भी संस्करण में आता है, १८५ अ को छोड़ कर सभी उक्त संस्मरण के हैं, क्योंकि वे अन्यथा किसी भी एक प्रति में नहीं मिलते; शेषांश के समस्त प्रक्षिप्त छंद यदि किसी एक प्रति में मिलते हैं तो वह है द्वि० ४, अर्थात् कानपुर का वह संस्करण जिसके विषय में शुक्ल जी के विचारों से हम ऊपर परिचित हो चुके हैं। इस अंश में उन्होंने द्वि० ४ का केवल एक अतिरिक्त छंद छोड़ा है, वह है ४१९ आ। फलतः दोनों संस्करणों का ऋण शुक्ल जी पर प्रकट है, और कम से कम प्रक्षिप्त और प्रामाणिक-छंद-निर्णय में रुपये में सवा पंद्रह आने है। जिनका इतना ऋण शुक्ल जी पर है, उनकी जिन शब्दों में खबर शुक्ल जी ने अपनी प्रस्तावना में ली है, वह शुक्ल जी जैसे समालोचक के लिए ही संभव था।

ग्रियर्सन के संस्करण के पाठ पर विचार करते हुए हमने ऊपर देखा है कि उसमें प्रतिलिपि की उन भूलों में से एक—ग्यारहवीं—आ गई है जिनके

आधार पर हमने विभिन्न प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध निर्धारित किया है। वह भूल शुक्ल जी के संस्करण में भी आ गई है। ग्रियर्सन के अतिरिक्त वह द्वि० ४—अर्थात् कानपुर के संस्करण—में भी मिलती है। दोनों संस्करणों का जैसा ऋण शुक्ल जी के ऊपर है, उससे यह स्वाभाविक ही था।

प्रतिलिपि-परम्परा, प्रक्षेप-परम्परा, पाठांतर-परम्परा आदि के आधार पर ग्रंथ के पाठ-निर्धारण की बात ही शुक्ल जी के संस्करण के विषय में न सोचनी चाहिए, क्योंकि प्रति के नाम पर केवल एक हस्तलिखित प्रति का उन्होंने उपयोग किया, और वह भी किस अंश तक—यह बताने की उन्होंने आवश्यकता नहीं समझी।

उर्दू लिपि के कारण पाठ-विकृति की संभावनाओं पर उन्होंने अवश्य कुछ ध्यान दिया था, किंतु ग्रियर्सन ने भी इस प्रकार का ध्यान दिया था, और दोनों में अंतर अधिक नहीं है। ग्रियर्सन की भाँति ही शुक्ल जी का ध्यान भी इस बात की ओर नहीं गया कि वास्तव में 'पदमावत' की आदि प्रति उर्दू नहीं, नागरी लिपि में थी। इसलिए वे भी उसी प्रकार मार्ग के बीच में ही रह गए जैसे ग्रियर्सन। जायसी की भाषा और छंद-योजना के स्वरूपों का भी ठीक-ठीक परिज्ञान उनके संस्करण में नहीं दिखाई पड़ता है।

डा० सूर्यकांत शास्त्री का संस्करण—यह संस्करण भी ग्रंथ के उसी अंश तक का है, जिसका ग्रियर्सन का है, और इसके सम्पादक ने प्रस्तावना में यह भी कहा है कि इस संस्करण का पाठ उन्होंने सावधानी के साथ ग्रियर्सन के संस्करण पर आधारित रक्खा है। उन्होंने यह भी लिखा है कि ग्रियर्सन का पाठ उन्हें प्रामाणिक ज्ञात हुआ है, क्योंकि वह पंजाब (अब पश्चिमी पंजाब) यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय में सुरक्षित एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति के पाठ से मिलता है।[1] उन्होंने इस प्रति का कोई परिचय नहीं दिया है, इसलिए उनके इस कथन पर विचार करना असम्भव है। और शुक्ल जी के संस्करण का उल्लेख करते हुए उन्होने लिखा है कि "यह ग्रियर्सन के संस्करण से बहुत भिन्न है, और उसकी यह भिन्नता भी ग्रंथ के पाठ और उसकी भाषा—दोनों के बिषय में ग़लत दिशा में है।" ऊपर ग्रियर्सन और शुक्ल जी के संस्करणों के संबंध में प्रर्याप्त रूप से विचार हो चुका है। इसलिए संपादक के इस कथन पर भी विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

[1] खेद है कि यह प्रति यत्न करने पर भी नहीं प्राप्त हो सकी।

डा० सूर्यकांत के संस्करण का पाठ डा० ग्रियर्सन के पाठ पर ही आधारित है, इसलिए ग्रियर्सन के संस्करण पर विचार कर लेने के अनंतर उसके विषय में अलग से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। डा० सूर्यकांत के संस्करण का महत्त्व वस्तुतः उनके द्वारा प्रस्तुत की गई 'पदमावत' की शब्द-सूची (Index) के कारण है, और प्रस्तुत संस्करण में उसका यथेष्ट उपयोग किया गया है।

पं० भगवती प्रसाद पांडेय का संस्करण—सम्पादक ने अपने दीबाचे में ग्रंथ के मूल पाठ के चार संस्करणों का उल्लेख किया है—एक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ का, दूसरा कानपुर का, तीसरा ग्रियर्सन का, और चौथा शुक्ल जी का। इन पर अलग-अलग कोई विचार न करके, उन्होंने लिखा है "इसमें कोई शक नहीं कि पंडित जी (पं० रामचन्द्र शुक्ल) मौसूफ़ ने तसनीफ़ात जायसी की तालीफ़ फ़रमा कर जो एहसान अदबी दुनिया पर फ़रमाया है, उसकी तारीफ़ करना आफ़ताब को चिराग़ दिखाना है।...'जायसी-ग्रंथावली' के सिवाए जितने भी नुस्खे 'पदमावत' के मिले वह सब बेहद मशकूक और ग़लत हैं।" इसीलिए इस संस्करण का पाठ उन्होंने शुक्ल जी के संस्करण के ही अनुसार रक्खा है। पांडेय जी ने जिन प्रतियों का उल्लेख किया है, उन पर ऊपर विचार किया जा चुका है, और पांडेय जी का संस्करण पाठ की दिशा में कोई नया प्रयास नहीं है, इसलिए उसके संबंध में अलग से विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

डा० लक्ष्मीधर का संस्करण—यह ग्रियर्सन की ही दिशा में प्रस्तुत संस्करण के छंद २७५ से ३७३ तक के अंश का संस्करण है। इसके लिए प्रयुक्त हस्तलिखित प्रतियाँ निर्धारित पीढ़ियों के अनुसार निम्न-लिखित हैं :

(१) तृ० १, २, ३
(२) द्वि० २, ३
(३) प्र० १

इन प्रतियों के अतिरिक्त संपादक ने शुक्ल जी के संस्करण का भी उपयोग किया है।

प्रस्तावना में संपादक ने कहा है कि उन्होंने भी ग्रियर्सन की भाँति द्वि० ३ को आधार-प्रति माना है। इससे अधिक प्रकाश उन्होंने अपने संपादन-

सिद्धान्तों पर नहीं डाला है। यह अतः सम्पादन किस प्रकार का हुआ है, यह इमें बहुत कुछ अपने ही यत्नों से समझना होगा।

इस संस्करण की छंद-संख्या १०६ है, किन्तु इसमें ऐसे भी सात छंद सम्मिलित कर लिए गए हैं जिन्हें ऊपर हमने प्रक्षिप्त पाया है। इनमें से चार ही—२८८ अ, २८८ आ, ३३२ अ, ३६१ अ—ऐसे हैं जो कुछ अन्य प्रतियों के साथ द्वि० ३ में भी मिलते हैं, और कदाचित् मुख्यतः द्वि० ३ के प्रमाण पर मूल पाठ में ग्रहण कर लिए गए हैं। शेष तीन—२८४ अ, आ, इ—अन्य प्रतियों में ही हैं, द्वि० ३—आधार-प्रति—में नहीं है, और फिर भी मूल पाठ में सम्मिलित कर लिए गए हैं। अतः यह प्रकट है कि ग्रियर्सन की भाँति इन्होंने भी आधार-प्रति के सिद्धान्त का यथेष्ट निर्वाह नहीं किया है।

दूसरी ओर संपादक ने ग्रंथ के परिशिष्ट में इस अंश के उन छंदों का भी पाठ दिया है जिन्हें उन्होंने प्रक्षिप्त माना है। इन छंदों में उन्होंने प्रस्तुत संस्करण में मूल पाठ में रक्खे गए छंद ३७७ को भी रक्खा है, जो उनके और मेरे द्वारा प्रयुक्त समस्त प्रतियों में पाया जाता है, और अन्य समस्त संस्करणों में भी मिलता है। उनकी इस भूल का कारण यह है कि उनकी दृष्टि केवल उपर्युक्त अंश की सीमा के भीतर संकुचित थी। उन्हें यह छंद द्वि० ३ में छंद ३७२ और ३७३ (प्रस्तुत संस्करण) के बीच मिला, और यहीं पर उन्होंने उक्त छंद को अपनी अन्य प्रतियों में ढूँढ़ा, और जब वह अन्य प्रतियों में यहाँ न मिला, तो इसे प्रक्षिप्त मान लिया। अपनी सीमा से केवल चार छंद बाहर तक यदि संपादक ने दृष्टि डाली होती, तो उन्हें वहाँ यह छंद उनकी अन्य समस्त प्रतियों में मिल जाता।

जिन छंदों को उन्होंने इस परिशिष्ट में दिया है, ऐसा ज्ञात होता है कि वैसे भी उन्हें पर्याप्त ध्यान से नहीं देखा, क्योंकि छंद २८४ और २८५ (प्रस्तुत संस्करण) के बीच में आने वाले तीन प्रक्षिप्त छंदों का पाठ उन्होंने एक बार शुक्ल जी के संस्करण के प्रक्षिप्त छंदों के रूप में, और पुनः तृ० ३ के प्रक्षिप्त छंदों के रूप में दिया है।

इस संस्करण में भी ग्रियर्सन के संस्करण की भाँति द्वि० ३ को आधार-प्रति मानने के कारण उसकी अशुद्धियाँ आ गई हैं। ऐसी केवल एक भूल की ओर ध्यान आकृष्ट करना यथेष्ट होगा, जो ऊपर प्रतियों के प्रतिलिपि-संबंध निर्धारित करने वाली भूलों की सूची में सम्मिलित की गई है—वह है उस सूची की बीसवीं। निर्धारित पाठ है 'रानी तुम्ह ऐसी सुकुआरा। फूल

बास तनु जीउ तुम्हारा।' (३२३.२) दूसरे चरण का पाठ इस संस्करण में है : 'पान फूल के रहहु अधारा।' यह चरण समस्त प्रतियों में १३४.२ का दूसरा चरण है, और उसी प्रकार द्वि० ३ में भी है, और जैसा हम देख चुके हैं, प्रसंग की दृष्टि से भी वहीं उपयुक्त है, यहाँ नहीं। इसलिए अशुद्धि प्रकट है।

इस संस्करण के लिए संपादक ने इंडिया ऑफिस, लंदन के बाहर की ही नहीं, इंडिया ऑफ़िस लंदन की भी कुल प्रतियों को देखने की आवश्यकता नहीं समझी। पाठ की दृष्टि के ऊपर हमने देखा है पं० १ का विशेष महत्त्व है: संपूर्ण ग्रंथ में उसमें सब से कम—केवल तीन—प्रक्षिप्त छंद हैं, और ग्रंथ के इस अंश में कोई भी नहीं हैं। यह प्रति भी इंडिया ऑफ़िस, लंदन की है। किंतु इसका उपयोग संपादक ने नहीं किया है।

संपादक ने यह पाठ लंदन यूनिवर्सिटी की पी-एच०डी० की थीसिस के रूप में संपादित किया है, किंतु न इसमें उन्होंने उर्दू या हिंदी लिपियों की विभिन्न प्रवृत्तियों के कारण ग्रंथ की पाठ-विकृति की संभावनाओं पर कोई विचार किया है, न प्रतियों की प्रतिलिपि-परम्परा, प्रक्षेप-परम्परा, और पाठांतर-परम्परा पर विचार किया है, और न जायसी की भाषा और छंद-योजना पर पाठ-निर्धारण में यथेष्ट ध्यान दिया है। फिर भी आश्चर्य यह है कि इसी को समालोचनात्मक संपादन कहा गया है, और इसी पर संपादक को लंदन यूनिवर्सिटी की पी-एच० डी० उपाधि मिली है।

संपादित पाठ के अतिरिक्त डा० लक्ष्मीधर ने इस अंश का अंग्रेजी अनुवाद और शब्द-सूची (Glossary) भी दी है, और इसके अतिरिक्त जायसी और नानक की भाषाओं की तुलनात्मक समीक्षा की है। उनकी शब्द-सूची से ही प्रस्तुत संस्करण में कुछ सहायता ली जा सकी है।

पद्मावत

[१]

सँवरौं आदि एक करतारू। जेइँ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू[१]।
कीन्हेसि प्रथम जोति परगासू। कीन्हेसि तेहिं[२] पिरीति[३] कबिलासू[४]।
कीन्हेसि अगिनि पवन जल[५] खेहा। कीन्हेसि बहुतइ रंग उरेहा[६]।
कीन्हेसि धरती सरग पतारू। कीन्हेसि बरन बरन अवतारू।
कीन्हेसि सात दीप[७] ब्रह्मंडा[८]। कीन्हेसि भुवन चौदहउ[९] खंडा।
कीन्हेसि दिन दिनअर[१०] ससि राती। कीन्हेसि नखत तराइन पाँती[११]।
कीन्हेसि धूप सीउ औ[१२] छाहाँ। कीन्हेसि मेघ बीजु तेहि[१३] माहाँ।

कीन्ह सबइ[१४] अस जाकर दोसरहि छाज न काहु।
पहिलेहिं तेहिक[१] नाउँ लइ कथा कहौं[१६] अवगाहु[१७]॥

[२]

कीन्हेसि हेवँ समुंद्र अपारा[१]। कीन्हेसि मेरु खिखिंद[२] पहारा।
कीन्हेसि नदी नार औ झरना। कीन्हेसि मगर मंछ बहु बरना[३]।

---

[१] १. प्र० २ करतारू २. प्र० १, (तृ० १), च० १ तिन्हहि ३. प्र० २ प्रिथिमी, द्वि० २, ३ परबत ४. (तृ० १) कैलासू ५. प्र० २ अरु ६. द्वि० ३ औ रेहा ७. द्वि० २ सात सरग, द्वि० ४ सपत मही, तृ० २ सपत प्रस्त, तृ० ३ सत्त सत्त ८. द्वि० ५ महिमंडा, द्वि० ६ नौखंडा ९. प्र० २ चतुर्दस १०. द्वि० ४ दिनेस ११. प्र० २ धूप दीप बहु भांती १२. प्र० २ बहु १३. प्र० २ जल १४. (तृ० १), तृ० २ कीन्हेसि सब १५. प्र० १, द्वि० ४ ताकर, द्वि० १ तेहिं कौं, द्वि० ३, तृ० २, पं० १ तेहि का १६. द्वि० ६, पं० १ करौं १७. प्र० १, द्वि० ६ अरु काह, द्वि० ५, (तृ० १), तृ० २ अरकाह, तृ० ३ अरिगाहु।

[२] १. द्वि० २ भौंर समुद्र अपारा, द्वि० ३ सातउ समुँद अपारा, द्वि० ४ बहम (हेम?) समुंद अपारा, द्वि० ५ सात समुंद अपारा, द्वि० ६ भुवन समुंद अपारा, २. प्र० २ महिषउ मेरु, तृ० ३ मेरु खंड खंड ३. द्वि० २ तरना

कीन्हेसि सीप मोंति बहु भरे । कीन्हेसि बहुतइ नग निरमरे ।
कीन्हेसि बनखँड औ जरि मूरी । कीन्हेसि तरिवर तार खजूरी ।
कीन्हेसि साउज आरन रहहीं । कीन्हेसि पंखि[४] उड़हिं जहँ[५] चहहीं ।
कीन्हेसि बरन सेत औ स्यामा । कीन्हेसि भूख नींद बिसरामा ।
कीन्हेसि पान फूल बहु[६] भोगू । कीन्हेसि बहु ओषद बहु[७] रोगू ।

निमिख न लाग कर ओहि सबइ कीन्ह पल एक ।
गगन अंतरिख[८] राखा[९] बाज[१०] खंभ बिनु[११] टेक ॥[१२]

[३]

कीन्हेसि मानुस दिहिस[१] बड़ाई । कीन्हेसि अन्न भुगुति तेहिं पाई[२] ।
कीन्हेसि राजा भूँजहिं राजू । कीन्हेसि हस्ति घोर तिन्ह[३] साजू ।
कीन्हेसि तिन्ह कहँ[४] बहुत[५] बेरासू[६] । कीन्हेसि कोइ ठाकुर कोइ दासू ।
कीन्हेसि दरब गरब जेहिं होई । कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई ।
कीन्हेसि जिअन[७] सदा सब चहा । कीन्हेसि मीचु न कोई रहा ।
कीन्हेसि सुख औ कोड[८] अनंदू । कीन्हेसि दुख चिंता औ[९] दंदू[१०] ।
कीन्हेसि कोइ भिखारि कोइ धनी । कीन्हेसि सँपति बिपति पुनि[११] घनी ।

कीन्हेसि कोइ निभरोसी[१२] कीन्हेसि कोइ बरिआर ।
छार हुते[१३] सब कीन्हेसि पुनि कीन्हेसि[१४] सब[१५] छार ॥

[४]

कीन्हेसि अगर कस्तुरी बेना । कीन्हेसि भीवँसेन औ चेना ।

---

४. प्र० १ पंछि ५. प्र० २ उड़न कहँ, द्वि० ७ उड़ैं जौं ६. तृ० ३ औ ७. द्वि० २ औ ८. प्र० १ अंतरिछ ९. प्र० १ राखेउ, द्वि० १ राखेसि, १०. द्वि० १, तृ० २ बाझ, द्वि० ६ बाछ ११. द्वि० ६ पुनि १२. प्र० २ में इस छंद के पूर्व छंद २ की पाँच पंक्तियाँ दुहराई हुई हैं ।

[३] १. प्र०१, द्वि० १, तृ० ३ दीन्हि २. द्वि० ३, ५ तेहिं खाई, तृ० ३ तिन्ह जाई ३. द्वि० ३ घोर बहु, द्वि० ६ घोरन्ह ४. द्वि० १ तिन्हहिं, च० १ बहु गुन ५. च० १ भोग ६. द्वि० ५ परासू ७. तृ० ३ जीव ८. द्वि० ५, (तृ० १) कोटि ९. तृ० २, ३ बहु १०. द्वि० १, ५, (तृ० १) धंदू ११. द्वि० १, ३, ६, च० १ बहु, द्वि० ५ तृ० ३ सँग, प्र० १, २ अति १२. तृ० ३ भरोसा १३. द्वि० ३ छार हुतें १४. च० १ अंत कीन्ह १५. प्र० २, तृ० २, धार, तृ० ३ तिन्ह ।

कीन्हेसि नाग मुखहि विष बसा। कीन्हेसि मंत्र हरइ जेहिं डसा।
कीन्हेसि अमिअ जिअन[१] जेहि पाएँ[२]। कीन्हेसि बिष जो मीचु तेहि खाएँ[२]।
कीन्हेसि ऊखि मीठि रस भरी। कीन्हेसि करुइ बेलि बहु फरी[३]।
कीन्हेसि मधु लावइ लइ माखी। कीन्हेसि भवँर पतंग[४] औ पाँखी।
कीन्हेसि लोवा उंदुर[५] चाँटी[६]। कीन्हेसि बहुत रहहिं खनि माँटी।
कीन्हेसि राकस भूत परेता। कीन्हेसि भोकस देव दयंता[७]।

कीन्हेसि सहस अठारह बरन बरन उपराजि।
भुगुति दिहेसि पुनि सब कहँ सकल साजना साजि॥

[५]

धनपति[१] उहइ जेहिक संसारू। सबहि देइ नित घट न भँडारू।
जावँत जगति हस्ति औ चाँटा। सब कहँ भुगुति रात दिन बाँटा।
ताकरि दिस्टि सबहिं उपराहीं। मित्र सत्रु कोइ बिसरइ नाहीं।
पंखि[२] पतंग न बिसरइ कोई। परगट गुपुत जहाँ लगि होई।
भोग भुगुति बहु भाँति उपाई। सबहि खियावइ[३] आपु न खाई।
ताकर इहइ सो[४] खाना पिअना। सब कहँ देइ[५] भुगुति औ जिअना।
सबहिं आस ताकरि हरि स्वाँसा[६]। ओह न काहु कइ आस निरासा।

जुग जुग देत घटा[७] नहिं उभै हाथ तस कीन्ह।
अउर जो देहिं[८] जगत महँ सो सब ताकर दीन्ह॥

---

[४] १. द्वि० ४ जिअइ, द्वि० ६, तृ० ३ जीव २. द्वि० १ पाएँ, जो खाइ मर जाएँ, द्वि० ५ पाएहि, मीचु तेहि खाएहिं, तृ० ३ पाई, मीचु तेहि खाई ३. द्वि० २ तूँबरी, (तृ० १) विष भरा ४. द्वि० १, ३, ६, पं० १ पंखि, तृ० ३ नाग, द्वि० ७ फुनिग ५. प्र०१ एँदुर, द्वि० ७ इंदुर ६. तृ० २ कीन्हेसि मधु लावइ चाँटी ७. द्वि० ६, तृ० २ कीन्हेसि राकस देव दयंता। कीन्हेसि भोकस भूत परेता (तृ० २ दयंता)।

[५] १. द्वि० ७ धनइत २. (तृ० १) फनिग ३. द्वि० २, ३ खवावइ ४. प्र० २, द्वि० २, ३, ४ जो ५. द्वि० ५ सबहिन्ह देइ तृ० २, पं० १ सब ही दीन्ह ६. प्र० १ सबहि सो ताकरि हेरइ आसा। द्वि० ५ सबइ आस हर ताकरि आसा ७. द्वि० ७, पं० १ न निघटेउ, द्वि० ६ घटइ नहिं, तृ० २ खाइ नहिं ८. द्वि० १, २, ५ देन, तृ० ३ (दे) इ।

[६]

आदि सोई बरनौं बड़[१] राजा। आदिहुँ[२] अंत राज जेहि छाजा।
सदा सरबदा राज करेई। औ जेहिं चहइ राज तेहिं देई।
छत्रहि अछत[३] निछत्रहि छावा[४]। दोसर नाहिं जो सरबरि पावा।
परबत ढाह देख सब लोगू। चाँटिहि करइ हस्ति कर जोगू।
बज्रहि तिन कै मारि[५] उड़ाई[६]। तिनहि बज्र की देइ बड़ाई।
ताकर कीन्ह न जानइ कोई। करै सोइ जो मन चित[७] होई।
काहू भोग[८] भुगुति सुख सारा। काहू भीख भवन[९] दुख भारा[१०]।

सबइ नास्ति वह अस्थिर अइस साज जेहिं केर[११]।
एक साजइ अउ भाँजइ चहइ सँवारइ फेर॥

[७]

अलख अरूप[१] अबरन सो करता। वह सब सों सब ओहिसों[२] बरता[३]।
परगट गुपुत सो[४] सरब बियापी[५]। धरमी चीन्ह चीन्ह नहिं[६] पापी[५]।
ना ओहि पूत न पिता न माता। ना ओहि कुटुँब न कोइ[७] सँग नाता।
जना न काहु न कोइ ओइँ[८] जना। जहँ लगि सब ताकर सिरजना।
ओइँ सब कीन्ह जहाँ लगि कोई। वह न कीन्ह काहू कर होई।
हुत[९] पहिलेइँ औ अब[१०] है सोई। पुनि सो रहहि रहिहि नहिं कोई।

---

[६] १. द्वि० ५ पं० १, एक बरनउँ सो, द्वि० ६ एक बरनौं बड़ २. द्वि० २ आदि ३. प्र० १ छत्र अछत्र, प्र० २ छत्रिहि मारि, द्वि० १ छत्रपति अछइत, द्वि० २, ३, (तृ० १) छत्तार अछत, द्वि० ६ छत्रहि छत्र ४. द्वि० १ राज जो पावा, तृ० १ निछत्तार छावा ५. तृ० २ वहि केर ६. प्र० १ लड़ाई ७. प्र० १ करै सो जो मन चिंता, च० १ जो मन चिंत करै सो, पं० १ करै सोइ मन चिंत ८. पं० १ भवन ९. प्र० १ भूँख भीख, द्वि० १ भीख भोग; द्वि० ३ भीख भवन, द्वि० ५ भूख भवन, पं० १ भोग भुवन १०. च० १ फारा ११. द्वि० ६ तोरि।

[७] १. द्वि० १, ३, ४, तृ० ३ रूप २. द्वि० ३, तृ० २ महँ ३. द्वि० १ यह संसार सो ओहि सों बरता ४. तृ० ३ जो ५. पं० १ जहाँ लगि पाए, नहिं पाए ६. द्वि० ५ चीन्ह न चीन्हइ, द्वि० १ जिऔ जिऔ औ ७. प्र० १ ओहि, द्वि० ४ कोउ ८. प्र० १ न कोई ९. प्र० १ हुता, द्वि० १ रहा १०. प्र० १ सो पहिलहि सो

अउर जो होइ सो[११] बाउर अंधा। दिन दुइ चार मरइ करि[१२] धंधा।
जो ओइँ चहा[१३] सो कीन्हेसि करइ जो चाहइ कीन्ह।
बरजन हार न कोई सबइ चहइ[१४] जिअ दीन्ह॥

[८]

एहि बिधि[१] चीन्हहु करहु गिआनू। जस पुरान महँ लिखा बखानू।
जीउ नाहिं पै जिअइ गोसाइँ। कर नाहीं पै करइ सबाइँ[३]।
जीभ नाहिं पै सब किछु बोला। तन नाहीं जो डोलाव सो[४] डोला।
स्रवन नाहिं पै सब किछु सुना। हिअ नाहीं गुनना सब[५] गुना।
नैन नाहिं पै सब किछु देखा। कवन भांति अस[६] जाइ बिसेषा।
ना कोइ है[७] ओहि के रूपा। न ओहि काहु अस तइस अनूपा[८]।
ना ओहि ठाउँ न ओहि बिन ठाऊँ। रूप रेख बिनु निरमल नाऊँ।

ना वह[९] मिला न बेहरा[१०] अइस रहा भरपूरि।
दिस्टिवंत कहँ निअरें अंध मुरुख कहँ[११] दूरि॥

[९]

अउर[१] जो दीन्हेसि रतन अमोला। ताकर मरम न जानइ भोला।
दीन्हेसि रसना औ रस भोगू। दीन्हेसि दसन जो बिहसइ जोगू[२]।

---

११. प्र० १ जो होहिं, द्वि० ७ जो कहै, तृ० १ होइ सो १२. प्र० १ मरहिं, (तृ० १) मरन १३. प्र० १ चाह १४. द्वि० १ चाही, द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ चाह।

[८] १. द्वि० ४ तेहि विधि, द्वि० ५ तेहि बुधि २. द्वि० ५, (तृ० १) चीन्हि जो, तृ० २ चहौं ३. प्र० १ सवै कराहीं ४. प्र० १ तन नहिं डिगइ डोलाव सो, द्वि० ५ तन नाहीं सब ठाहर ५. द्वि० १, (तृ० १) पै गुन सब, द्वि० ५ पै सब कुछ ६. द्वि० २ सो ७. द्वि० ३ कोइ आहिन ८. प्र० १, द्वि० ७ ना काहू अस रूप अनूपा, प्र० २ वह सब से है रूप अनूपा, द्वि० २ में यह अर्धाली नहीं है, द्वि० ४ ना ओहि अस कोइ तइस अनूपा, द्वि० ५ ना ओहि सों कोइ आहि अनूपा, द्वि० ६ ना कोई वह अइस अनूपा ९. द्वि० ४ है १०. द्वि० ४, ६ बिछुड़ा, ११. प्र० १ मुगुध कहँ, द्वि० १ मुक्ख पहँ, द्वि० ५ मूरखहिं।

[९] १. द्वि० २ पुनि, तृ० ३, पं० १ सबहि २. प्र० १, द्वि० ३ बिहसै लोगू, तृ० ३ बिहुसो जोगू, द्वि० ४ बिहसन जोगू

दीन्हेसि जग देखइ कहँ नैना । दीन्हेसि स्रवन सुनइ कहँ[3] बैना ।
दीन्हेसि कंठ बोल जेहि माहाँ । दीन्हेसि कर पल्लौ बर[4] बाहाँ ।
दीन्हेसि चरन अनूप चलाहीं । सोई जान जेहि दीन्हेसि नाहीं[5] ।
जोबन मरम[6] जान पै बूढ़ा । मिला न तरुनापा जब[7] ढूँढ़ा ।
सुख कर[8] मरम न जानइ[9] राजा । दुखी जान जाकहँ दुख बाजा ।

कया क मरम जान पै रोगी भोगी रहइ निचिंत ।
सब कर मरम गोसाईं जानइ[10] जो घटघट महँ[11] निंत[12] ॥

[१०]

अति अपार करता कर[1] करना । बरनि न कोई पारइ[2] बरना ।
सात सरग जौं कागर[3] करई[5] । धरती सात समुँद[4] मसि भरई[5] ।
जावँत जग साखा बन ढाँखा । जावँत केस रोवँ पँखि पाँखा ।
जावँत रेह खेह जहँ ताईं[6] । मेघ बूँद[7] औ गगन तराईं ।
सब लिखनी कइ लिखि[8] संसारू । लिखि न जाइ गति समुँद[9] अपारू ।
एत कीन्ह सब[10] गुन परगटा । अबहूँ समुँद[11] बूँद नहिं घटा ।
अइस जानि मन गरब न होई[12] । गरब करइ मन बाउर सोई[12] ।

---

३. द्वि० २ चह ४. तृ० २ दुइ, तृ० ३ कर ५. तृ० ३ मरम जान जेहि नाहीं ६. द्वि० २ जरम ७. प्र० १ नाहिं तरु नापा, द्वि० २ न तरुनापा सब, द्वि० ६ न तरुनापा चाहै ८. द्वि० २ पेमक, तृ० ३, च० १ दुख कर ९. तृ० २ न जानै, द्वि० १, ६, च० १, पं० १ जान होइ १०. द्वि० ३ जान पै करता ११. द्वि० १ है, द्वि० २, च० १ बर १२. तृ० ३ बित्त ।

[१०] १. द्वि० ३, ४, तृ० ३ के २. प्र० १, द्वि० ५, ६, (तृ० १) बरनि न कोई पावइ, प्र० २ बरनि न कोई सकै अस, द्वि० १ करै न कोई पारै, द्वि० २ बरनि न पार काहु किन, द्वि० ३, ४ बरनि न काहू पारै ३. प्र० १, २, द्वि० १, २, ४, ५, ६, (तृ० १) कागद, द्वि० ७ कागज ४. द्वि० ७सरग ५. द्वि० २ होई, होई ६. द्वि० ५, ६, ७, (तृ० १) पं० १ दुनिआई ७. द्वि० ३ पवन ८. द्वि० ५ लिखइ ९. प्र० १, (तृ० १), तृ०३ कबि समुद, द्वि० २ अति समुंद, द्वि० ७ बिधि चित्र १०. प्र० १ एते गुनन्ह, प्र० २ एते गुन अहुगुन, द्वि० ३ अइस कीन्ह सब तृ० ३ एक गुनन्हि सब, ११. द्वि० ४ दीन्ह समुँद तेहि, द्वि० ५, तृ० २ अबहुँ समुद महँ, द्वि० ६, पं० १ अबहुँ समुद तेहि, द्वि० ३ तबहूं समुंद १२. द्वि० १ उठा, भूठा १३. द्वि० ३ बहु ।

बड़[13] गुनवंत गोसाईं चहइ सो होइ तेहि[14] बेगि ।
औ अस गुनी सँवारइ जो गुन करइ[15] अनेग ॥

[११]

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा । नाउँ मुहम्मद पूनिउँ करा ।
प्रथम जोति बिधि तेहि कै[1] साजी । औ तेहि प्रीति सिस्टि उपराजी ।
दीपक लेसि[2] जगत कहँ[3] दीन्हा । भा निरमल जग मारग चीन्हा ।
जौं न होत अस[4] पुरुष[5] उज्यारा । सूझि न परत पंथ अँधियारा ।
दोसरइँ ठाँव[6] दई[7] ओइँ लिखे । भए धरमी जो पाढ़ित[8] सिखे ।
जगत[9] बसीठ दई[10] ओइँ कीन्हे । दोउ जग तरा नाउँ ओहि[11] लीन्हे ।
जेइँ नहिं लीन्ह जरम सो[12] नाऊ । ताकहँ कीन्ह नरक महँ ठाऊँ ।

गुन अवगुन बिधि पूँछत[13] होइहि लेख अउ जोख ।
ओन्ह बिनउब आगे होइ करब[14] जगत कर[15] मोख ॥

[१२]

चारि मीत जो मुहमद ठाऊँ । चहुँक[1] दुहूँ जग[2] निरमर नाऊँ ।
अबाबकर सिद्दीक सयाने[3] । पहिलइँ सिदिक दीन ओइँ[4] आने ।
पुनि जो[5] उमर खिताब सुहाए । भा जग अदल दीन जौं[6] आए ।
पुनि उसमान पँडित बड़[7] गुनी । लिखा पुरान[8] जो आयत सुनी ।

---

१४. द्वि० ३ कर सो, द्वि० ५ सँवारइ १५. द्वि० ३, ५, चहइ ।

[११] १. प्र० १ उन्ह कइ, पं० १ ताकरि २. द्वि० ३, ४ अइस ३. पं० १ महँ ४. प्र० १, तृ० ३, पं० १ नहिं होत ५. पं० १ जात ६. तृ० १ नाउँ ७. प्र० १ दुनी ८. प्र० १ पढ़ता ९. द्वि० ४, ७, तृ० २ उमति १०, द्वि० ७ दीन्ह ११. द्वि० १ तेहिं, द्वि० ६ जिहि १२. प्र० १, द्वि० ६ जनम ओहिं, द्वि० २ जरमन्ह सो १३. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ६, (तृ० १) पूँछब १४. द्वि० ५ करइ, द्वि० ४, तृ० १ करत १५. पं० १ सवहि कर ।

[१२] १. प्र० १ चहूं, द्वि० ५ जिहिंका, द्वि० ६ सवहि २. प्र० १ दीन्ह जग, द्वि० ६ चहूं कर ३. पं० १ बखाने ४ प्र० १ दीन तब, द्वि० १ दीन तिन्ह ५. प्र० १, द्वि० ६ सो, (तृ० १) तेहिं ६. तृ० २ वोई जो, द्वि० २ दीन वै ७. द्वि० १ अति, द्वि० ३ बहु ८. प्र० १, तृ० २, पं० १ कुरान ।

चौथइँ अली सिंघ बरियारू[९]। सौंह न कोई रहा जुझारू[१०]।
चारिउ एक मतइँ एक बाता। एक पंथ[११] औ एक सँघाता।
बचन जो एक सुनाएन्हि साँचा। भए परवान[१२] दुहूँ जग बाँचा[१३]।
जो पुरान बिधि पठवा[१४] सोई पढ़त[१५] गिरंथ।
अउर जो भूले आवत[१६] ते सुनि लागत तेहि[१७] पंथ॥

[१३]

सेरसाहि ढिल्ली सुलतानू[१]। चारिउ खंड तपइ जस भानू।
ओही[२] छाज छात[३] औ पाटू। सब राजा भुइँ[४] धरहिं लिलाटू।
जाति सूर औ खाँडइ सूरा। औ बुधिवंत[५] सबइ गुन[६] पूरा।
सूर नवाई नवउ खंड भई। सातउ दीप दुनी सब नई।
तहँ लगि राज खरग बर[७] लीन्हा। इसकंदर जुलकरन जो कीन्हा[८]।
हाथ सुलेमा केरि अंगूठी। जग कहँ जिअन[९] दीन्ह[१०] तेहि मूठी।
औ अति गरू पुहुमिपति[११] भारी। टेकि पुहुमि सब सिस्टि सँभारी[१२]।
दीन्ह असीस मुहम्मद[१३] करहु जुगहि[१४] जुग राज।
पातसाहि[१५] तुम्ह जग के जग तुम्हार मुहताज॥

---

९. प्र० १ बरिआरा १०. प्र० २ द्वि० २, ३, ५, (तृ० १), तृ० २, च० १ चढ़इ त काँपइ सरग पतारू, द्वि० ४ जिन्ह डर काँपइ सरग पतारू, द्वि० ६ बल सों काँपइ सरग पतारू ११. प्र० १ संग १२. द्वि० ५ भए पुरान, द्वि० ३, (तृ० १), भा पुरान १३. (यथा-२) द्वि० ६ चारि मीत का करौं बड़ाई। आदि अंत जैसी चलि आई। १४. द्वि० ७ निरमैवौ १५. प्र० १ पढ़ १६. प्र० १, (तृ० १) आवहिं, द्वि० १ आवतहिं द्वि० ३ अउर तेइं १७. प्र० १, (तृ० १) ते सुनि लागहिं, द्वि० ५, पं० १ सो सुनि लागे, तृ० ३ ते सब लागे, तृ० २ ते सुनि लागत, द्वि० ४, ६, (तृ० १) सो सुनि लागत, च० १ सो सुनि पावत।

[१३] १. प्र० १ सुरतानू २. द्वि० ३ ओहि कहँ ३. प्र० १, २, द्वि० २, ६, (तृ० १) राज, तृ० ३ छत्र ४. तृ० १ सुनि ५. प्र० १ गुनवंत ६. द्वि० ३ बिधि, तृ० ३ निधि ७. प्र० १ बल, द्वि० २ पर ८. प्र० १ न कीन्हा, द्वि० १ सो कीन्हा ९. द्वि० ५ दान दियो, द्वि० ६ जीव दीन्ह १०. द्वि० ३ चहइ ११. द्वि० २ बहुत १२. प्र० १, द्वि० ६, ७, तृ० २ ओ ही सकइ पुहुमि पति भारी। पुहुमि भार सब लीन्ह संभारी। (तृ० २ लै सीस संभारी) १३. द्वि० ३ सबइ मिलि १४. प्र० १ चहूँ १५. प्र० १. द्वि० ५, (तृ० १) बादसाहि।

[१४]

बरनौं सूर पुहुमिपति राजा। पुहुमि न भार सहइ जो साजा।
हय गय सेन चलइ जग पूरी[1]। परबत टूटि[2] उड़हिं होइ धूरी।
रेनु रइनि होइ रबिहि गरासा[3]। मानुस पखि लेहिं फिरि बासा।
ऊपर होइ छावइ महि मंडा। षट खँड धरति अष्ट ब्रह्मंडा[4]।*
डोलइ गगन इंद्र डरि काँपा। बासुकि जाइ पतारहिं चाँपा।*
मेरु धसमसइ समुँद सुखाई। बन खँड टूटि खेह मिलि[5] जाई।*
अगिलहि काहिं पानि खर बाँटा[6]। पछिलेहि काहिं न काँदहु आँटा[7]।*

जो गढ़ नए न काऊ चलत होहिं सत[8] चूर।
जबहि[9] चढ़इ पुहुमीपति सेरसाहि जगसूर॥

[१५]

अदल कहौं जस प्रिथिमी होई। चाँटहि[1] चलत न दुखवइ कोई।

---

[१४] १. प्र० १ गय रेनु, द्वि० २,३, तृ० १ मय सेन। २. प्र० १, तृ० ३ फूटि। ३. प्र० १ सूर रैनि होइ दिनहि गरासा, द्वि० १, ३ दिनहिं रैनि होइ रबिहि गरासा, द्वि० २ रबी रैनि होइ दिनहि गरासा, द्वि० ४, ५ परइ रैनि होइ रबिहि गरासा, तृ० १ में यह अर्द्धाली नहीं है, तृ० २ रैनि होइ जो रबिहि गरासा, च० १ रेनु रैनि होइ गगन गरासा, पं० १ रेनु रैनि होइ दिनहि गरासा।
४. प्र० १, २ ऊपर होइ छावइ महिमंडा। डोलइ धरती औ ब्रह्मंडा।
द्वि० १ " " " ब्रह्मंडा। खांडइ धरति सिस्टि नौ खंडा।
द्वि० २ " " " " । खट खँड अष्ट भए ब्रह्मंडा।
द्वि० ६ " " " महिमंडा। चौदह खंड धरति ब्रह्मंडा।
पं० १ " " " " । षट खँड धरति अष्ट ब्रह्मंडा।
द्वि० ४ सत खंड धरती भइ षट खंडा। ऊपर अष्ट भए ब्रह्मंडा।
द्वि० ५ भुइं उड़ि अंतरिख गइ मृतमंडा। ऊपर होइ छावइ महिमंडा।
द्वि० ३ तृ० ३ भुइं तजि अंतरिख गयो मृतमंडा। खट खँड धरति अष्ट ब्रह्मंडा।
तृ० १ भुइं उड़ि अंतरिख मृतमंडा। " " " " " ।
५. तृ० ३ मै। ६. द्वि० ४ घर बाँटा, द्वि० ७ खन्ह छाटा। ७. तृ० ३ पाछे परा सो काँदइ चाँटा, द्वि० ६ पछिलेहि काहि न काँदहु बाँटा। ८. प्र० १, द्वि० १, ३, ४, ५, सब, तृ० १ सो, च० १ ते। ९. द्वि० १ जब कहुँ पं० १ जौहि। * तृ० २ में इनके स्थान पर १८. ४, ५, ६, ७ हैं।

[१५] १. तृ० ३ चींटा।

नौसेरवाँ जो आदिल कहा। साहि अदल सरि[2] सोउ[3] न अहा[4]।
अदल कीन्ह उम्मर की नाईं। भइ अहान[5] सिगरी[6] दुनिआईं।
परी नाथ कोइ छुअइ ना पारा। मारग मानुस सोन उछारा[7]।
गउव[8] सिंघ रेंगहिं एक बाटा। दूअउ पानि पिअहिं एक घाटा।
नीर खीर छानइ दरबारा। दूध पानि सो[9] करइ[10] निरारा।[11]
धरम निआउ चलइ सत भाषा। दूबर बरिअ दुनहुँ[12] सम राखा।

सब पिरथिमी असीसइ जोरि जोरि कै हाथ[13]।
गाँग[14] जउँन जौं लहि जल[15] तौ लहि अम्मर[16] माथ[17]॥

[१६]

पुनि रुपवंत बखानौं काहा[1]। जावँत जगत सबइ मुख चाहा[1]।
ससि चौदसि जो दइअ सँवारा। तेहूँ चाहि रूप[2] उँजियारा।
पाप जाइ[3] जौं दरसन दीसा। जग जोहारि कइ[4] देइ असीसा।
जइस भान जग ऊपर तपा। सबइ रूप ओहि आगें छपा।
भा अस सूर पुरुष निरमरा। सूर चाहि दह[5] आगरि करा।
सौंह दिस्टि कइ हेरि न जाई। जेइँ देखा[6] सो[7] रहा सिर नाई।
रूप सवाई दिन दिन चढ़ा। बिधि सुरूप जग ऊपर गढ़ा।

---

२. द्वि० ३ साह अदल सम, तृ० २ सेरसाहि सरि। ३. तृ० ३ सेउ, तृ० १ सौहँ। ४. द्वि० १, तृ० १, ३, पं० १ रहा ५. द्वि० २ तृ० १, ३, भई आन, द्वि० ६, ७, तृ० २, च० १ फिरी आन। ६. द्वि० ४, तृ० २ सकल। ७. द्वि० ५ से उजिआरा, द्वि० २, ४, तृ० १ सों उजियारा। ८. द्वि० ४, तृ० ३ गाय। ९. तृ० २ धरि, द्वि० ४ धर, द्वि० ३ दोउ। १०. प्र० १ होइ। ११. द्वि० ६ कीरति गई समुंदर पारा। १२. द्वि० ३, तृ० २ एक। १३. प्र० १ लाइ लाइ भुइं माथ, द्वि० २, तृ० २ जोरि जोरि दुइ हाथ। १४. द्वि० ३ गगन। १५. तृ० १ जग। १६. द्वि० ४ अमर सो, तृ० १ अमर तो। १७. द्वि० २, तृ० २ नाथ।

[१६] १. द्वि० ३, तृ० २ काहा, चहा। २. द्वि० २, तृ० २ अधिक। ३. द्वि० ३ घटइ। ४. तृ० २ जगत जोहारै। ५. द्वि० २, ३, ६, ७, वहिं, प्र० १, ४, ५, तृ० १, च० १ दस। ६. प्र० १ जेइं जेइं देख, द्वि० ३ जो देखइ सो, तृ० २ जेइं हेरा सो। ७. प्र० १, द्वि० ३ रहै।

रूपवंत[८] मनि माथें चंद्र घाट वह बाढ़ि।
मेदिनि दरस लोभानी अस्तुति बिनवइ ठाढ़ि॥

[१७]

पुनि दातार[१] दइअ बड़[२] कीन्हा। अस जग दान न काहूँ दीन्हा।
बलि औ बिक्रम दानि[३] बड़ अहे[४]। हेतिम करन तिआगी कहे[४]।
सेरसाहि सरि पूज न कोऊ। समुँद सुमेर घटहिं नित[५] दोऊ।
दान डाँक बाजइ दरबारा। कीरति गई समुद्रहँ[६] पारा।
कंचन बरिस सोर[७] जग[८] भएऊ। दारिद भागि देसंतर गएऊ।
जौं कोइ जाइ एक बेर[९] माँगा। जरमहु होइ[१०] न भूखा नाँगा।
दस असुमेध जग्गि जेइँ[११] कीन्हा। दान पुन्नि सरि सेउ[१२] न दीन्हा[१३]।

अइस दानि जग उपना[१४] सेरसाहि सुलतान।
नां अस भएउ न होइहि ना कोइ देइ अस दान[१५]॥

[१८]

सैयद असरफ पीर[१] पिआरा। तिन्ह[२] मोहिं पंथ दीन्ह उजिआरा।
लेसा हिएँ[३] पेम कर दिया। उठी[४] जोति भा निरमल हिया।
मारग हुत अँधियार असूझा[५]। भा अँजोर सब जाना बूझा।
खार समुद्र पाप मोर मेला। बोहित धरम लीन्ह[६] कइ चेला।

---

८. प्र० १, तृ० १, च० १, पं० १ दरपवंत।

[१७] १. द्वि० १ अवतार। २. द्वि० ५ जग। ३. प्र० १, द्वि० ३ बलि बिक्रम-दानी। ४. द्वि० २,५,७, तृ० १,२ कहे, अहे, द्वि० ४ अहे, अहे, द्वि० १ कहे, कहे। ५. द्वि० ५ भँडारी दोऊ ६. प्र० १ समुँद के। ७. तृ० ३ परसि सूर। ८. द्वि० ४,६,७ कुलि। ९. प्र० १ बार एक, द्वि० ५, ५ तृ० १, पं० १ एक बर। १०. द्वि० ३, तृ० २ भएउ। ११. प्र० १ जग्य जिन्ह, प्र० २ जगत जिन्ह। १२. प्र० १ तिन्हहु सुरसरि दान, द्वि० ३ दान पुन्नि सरि ताहु, द्वि० १ दान पुन्नि सरि केहुँ। १३. द्वि० ४,५ चीन्हा १४. द्वि० ४ दीन्हा, द्वि० ७ ऊपर। १५. तृ० २ ना ओहि अस कोइ दान।

[१८] द्वि० ३ जो पीर। २. प्र० १, द्वि० ५ जिन्ह, तृ० २ वहि। ३. प्र० १ लेसेन्हि एक। ४. द्वि० ३ ओहीं, द्वि० १,(तृ० १) भई। ५. प्र० १, द्वि० ४ हुता अँधेर असूझा, द्वि० १ हुता सो आगें सूझा, तृ० ३ हुत अँधियार जो सूझा, द्वि० ३ हुत अंधेर जो सूझा। ६. द्वि० ४ कीन्ह।

उन्ह[७] मोर करिअ[८] पोढ़ कर गहा। पाएउँ तीर घाट जो[९] अहा।
जा कहँ अइस होहिं[१०] कँड़हारा। तुरित बेगि सो पावइ[११] पारा।
दस्तगीर गाढ़े के साथी। जहँ[१२] अवगाह देहिं तहँ हाथी।

जहाँगीर ओइ चिस्ती निहकलंक जस[१३] चाँद।
ओइ मखदूम जगत के हौं उन्हके[१४] घर बाँद॥

[१९]

उन्ह[१] घर रतन एक निरमरा। हाजी सेख सभागइँ[२] भरा।
तिन्ह घर दुइ दीपक उजिआरे। पंथ देइ कहँ दइअ सँवारे।
सेख मुबारक[३] पूनिउँ करा। सेख कमाल जगत निरमरा।
दुऔ अचल धुव डोलहिं नाहीं। मेरु खिखिंद[४] तिनहुँ[५] उपराहीं[६]।[७]
दीन्ह जोति औ रूप गोसाईं। कीन्ह खाँभ दुहुँ जगत[८] की ताईं।
दुहूँ खंभ टेकी सब[१०] मही। दुहुँ के[११] भार सिस्टि थिर[१२] रही।[१३]
जिन्ह दरसे औ परसे[१४] पाया। पाप हरा निरमल भौ[१५] काया।

महमद तहाँ निचिंत पथ जेहि सँग मुरसिद पीर।
जेहि रे नाव करिआ औ खेवक[१६] बेग पाव[१७] सो तीर॥

---

७. द्वि० १ तिन्ह। ८. प्र० २ मोर कर, द्वि० ४ कर मोर। ९. प्र० १, द्वि० ४ जहँ। १०. द्वि० १, ३, च० १ होइ। ११. प्र० १, तृ० २ गहै बेगि लै लावइ, द्वि० २,(तृ० १) ताहिं गहइ लै लावइ, द्वि० १, ३ तुरित बेगिसो उतरइ, पं०१ बाँह गहइ लै लावइ। १२. प्र० १ जौ, द्वि० ५ महँ। १३. द्वि० ७ रूप जैस नग। १४. द्वि० १ उन्ह, तृ० ३ ओन्हकार।

[१९] १. प्र० १, द्वि० १, २, ४, ७, च० १ तिन्ह २. प्र० २ भाग गुन, द्वि० २ सभा गुन, द्वि० ४,६,च० १ सभै गुन, द्वि०३ सोभागइ। ३. तृ०३ ममारख, द्वि० ४,५ मुहम्मद। ४. तृ० ३ खँड खँड। ५. द्वि० २ भवा, द्वि० ४ न भवा, द्वि० ५ तहँवा, च० १ दुहुं जग। ६. प्र० १ परिछाहीं, च० १ के ताईं। ७. द्वि० १ मेरु धसै औ समुद सुखाहीं। ८. प्र० १, द्वि० ५, ३ जग ९. तृ० १ खंभइ। १०. तृ० २ सत'। ११. द्वि० ७ औतेहि। १२. द्वि० ५ सब। १३. द्वि० १ पलटि भेस सब सिस्टि सँभारी। १४. तृ० ३ दरसेउ औ परसेउ। १५. प्र० १ द्वि० ५, तृ० २ भइ, द्वि० ७, पं० १ तेहि। १६. द्वि० १ करिआ होइ, द्वि०५ नाव औ खेवक, तृ० २ नाव अस खेवक, पं० १ करिआ अस खेवक। १७. द्वि० ५ लाग।

[२०]

गुरु मोहदी[1] खेवक मैं सेवा[2]। चलै उताइल जिन्हकर[3] खेवा।
अगुआ भएउ सेख बुरहानू[4]। पंथ लाइ जेहिं दीन्ह गिआनू[5]।
अलहदाद भल तिन्ह कर गुरू। दीन दुनिअ रोसन सुरखुरू।
सैयद महमद के ओइ चेला। सिद्ध पुरुष संगम जेहिं खेला[6]।
दानिआल गुरु पंथ लखाए। हजरति ख्वाज खिजिर तिन्ह[7] पाए।
भए परसन ओहि[8] हजरति ख्वाजे। लइ मेरए जहँ सैयद राजे।
उन्ह सौं मैं पाई जब[9] करनी। उघरी जीभ[10] प्रेम कबि[11] बरनी।

ओइ सो गुरु[12] हौं चेला निति बिनवौं भा चेर।
उन्ह हुति[13] देखइ पावौं[14] दरस गोसाईं केर॥

[२१]

एक नैन कबि मुहमद गुनी। सोइ बिमोहा जेइँ कबि सुनी।
चाँद जइस जग बिधि औतारा। दीन्ह कलंक कीन्ह उजिआरा।
जग सूझा एकइ नैनाहाँ। उवा[1] सूक[2] अस[3] नखतन्ह माहाँ।
जौं लहि अंबहि डाभ न होई। तौं लहि सुगंध बसाइ न सोई[4]।
कीन्ह समुद्र पानि जौं खारा। तौ अति[5] भएउ[6] असूझ अपारा।
जौं सुमेरु तिरसूल बिनासा। भा कंचनगिरि[7] लाग अकासा।
जौं लहि घरी कलंक न परा। काँच होइ नहिं[8] कंचन करा[9]।

---

[२०] १. द्वि० १ मुहमद। २. द्वि० ७ कलि महँ देखु इहै मैं सेवा। ३. द्वि० ६, तृ० १ जाकर। ५. तृ० ३ ताकर। ६. प्र० १, तृ० ३ सिद्धन्ह पुरुषन्ह सँग जेहिं खेला, द्वि० ४ भए सिद्ध जो तिन्ह सँग खेला, द्वि० २, ६ जेइँ रे सिद्ध पुरुष सँग खेला। ७. द्वि० २, ४, ३ जिन्ह। ८. प्र० १, द्वि० ५ तेहि, तृ० ३ जे। ९. तृ० ३ सब, तृ० १ जो। १०. तृ० २ उघर नैन। ११. प्र० १,२, द्वि० २,४, (तृ० १), तृ० ३ परम छबि, च० १ परम गति। १२. प्र० १, पं० १ तेहिं घर का, द्वि० १, (तृ० १) तेहिं गुरु का १३. प्र० १ सैं। १४. प्र० १, ४, तृ० २ पाएउ।

[२१] १. द्वि० ७ हुआ। २. प्र० १ सुक्र, तृ० ३ सुर। ३. तृ० २ जस ४. द्वि० १, ४, ५ कोई। ५. प्र० १ सुठि, द्वि० १, ३, ४, तृ० २, पं० १ अस ६. प्र० १, (तृ० १), तृ० १, २, पं० १ कीन्ह। ७. द्वि० ५, ६, (तृ० १), २ गढ़। ८. द्वि० १, काँच होइ तब, तृ० ३ कंचन होइ न, द्वि० ४ तौ लहि होइ न। ९. द्वि० १, ४ खरा।

एक नैन जस दरपन औ तेहि निरमल भाउ।
सब रुपवंत पाँव गहि[10] मुख जोवहिं[11] कइ चाउ[12] ॥

[२२]

चारि मीत कबि मुहमद पाए। जोरि मिताई सरि पहुँचाए।
यूसुफ मलिक पंडित औ[1] ग्यानी। पहिलै भेद बात उन्ह जानी[2]।
पुनि सलार काँदन[3] मति माहाँ। खाँडै दान उभै निति बाहाँ।
मिआँ सलोने सिंघ[4] अपारू[5]। बीर खेत रन[7] खरग[8] जुझारू।
सेख बड़े बड़ सिद्ध बखाने। कइ अदेस सिद्धन्ह बड़ माने[9]।
चारिउ चतुरदसौ गुन[10] पढ़े। औ सँग जोग[11] गोसाईं गढ़े[12]।
बिरिख[13] जो आछहिं[14] चंदन पासाँ। चंदन होहिं[14] बेधि[15] तेहि बासाँ।

मुहमद चारिउ मीत मिलि भए जो एकइ चित्त।
एहि जग साथ जो निबहा[16] ओहि[17] जग बिछुरन[18] कित्त ॥*

[२३]

जाएस नगर धरम अस्थानू[1]। तहवाँ यह[2] कबि कीन्ह बखानू।

---

[10]. प्र० १ रूपवंत मुख जोहहिं। [11]. द्वि० ५, ३ चाहहिं, द्वि० ४ देखइ, द्वि० ७ चाहन। [12]. प्र० १ सेव करहिं गहि[illegible]भाउ।

[२२] [1]. प्र० १ जो पंडित, द्वि० ५ पंडित बहु, (तृ०१), तृ०३ पँडित बड़। [2]. तृ० २ अलख लखाव बात जिन्ह जानी। [3]. प्र० १, द्वि० २, (तृ० १) कादन, तृ० ३ कंदन, द्वि० ३ गाजन। [4]. द्वि० ५ सूर। [5]. प्र० १ सिद्ध। [6]. द्वि० ५ बरिआरू। [7]. प्र० १ औ। [8]. तृ० २ जीति। [9]. प्र० १ जाना। [10]. तृ० ३ चारि चतुर गुन दस बेद, द्वि० ४, ५, ६, तृ० २ पं० १ चारिउ चतुर दसागुन। [11]. तृ० ३ संजोग। [12]. तृ० ३ में अर्द्धाली ५ ही दुहराई गई है। [13]. द्वि० ७ पुरुष। [14]. द्वि० ४, ५ होइ जो होइ, (तृ० १), द्वि० ३, पं० १ जो उपने, होहिं, द्वि० १ जो उपना, रहा, द्वि० ७ जो आपे, होहिं। [15]. द्वि० ३, तृ० ३ बोधि होहिं। [16]. प्र० १ निबाहा, द्वि० १ उपना, द्वि० ५ बइठी, द्वि०६ दीन्हा। [17]. द्वि० १ दस। [18]. द्वि० ३ बिछुरै। * द्वि० १ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[२३] [1]. द्वि० १ कर थाना [2]. प्र० १, २ तहाँ आइ कबि, द्वि० २ तहँ उन्ह कबितन्ह, तृ० ३ तहाँ अवर कबि, द्वि० ४, ५ तहाँ जाइ कबि, द्वि० ७, पं० १ तहाँ अवनि कबि।

औ बिनती[3] पंडितन्ह[4] सों भजा[5]। टूट सँवारेहु मेरएहु सजा[5]।
हौं सब कबिन्ह केर[6] पछिलगा। किछु कहि चला तबल दइ डगा[7]।
हिअ भंडार नग आहि जो पूँजी[8]। खोली जीभ तारा[9] कै कूँजी।
रतन पदारथ बोलइ बोला। सुरस पेम मधु[10] भरी अमोला।
जेहि के बोल बिरह के घाया[11]। कहु तेहि भूख[12] कहाँ तेहि छाया[13]।
फेरे[14] भेस रहइ भा तपा। धूरि लपेटा[15] मानिक छपा।

मुहमद कबि जो प्रेम[16] का ना तन[17] रकत न माँसु।
जेइँ मुख देखा तेइँ[18] हँसा सुना तो[19] आए आँसु[20]॥

[२४]

सन नौ सै सैंतालिस[1] अहै[2]। कथा अरंभ बैन कबि[3] कहै[2]।
सिंघल दीप पदुमिनी[4] रानी। रतनसेनि चितउर गढ़ आनी[5]।
अलाउदीं ढिल्ली सुलतानू। राघौ चेतन कीन्ह बखानू।
सुना साहि[6] गढ़ छेंका आई[7]। हिंदू तुरुकहिं भई लराई।
आदि अंत जसि कथ्था[8] अहै। लिखि[9] भाषा चौपाई कहै।

---

3. द्वि० २ कइ बिनती, द्वि० ४ औ कइ बिनती, तृ० १ बिनती करि ४. द्वि० ४ कवितन्ह। ५. द्वि० १, ७, तृ० ३ भाजा, साजा, द्वि० ३ भाखे, साखे, पं० १ चही, सही। ६. द्वि० ३ पंडितन्हकर प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५ तृ० १, ३ कबितन्ह कर। ७. तृ० ३ गौ। ८. प्र० १ नग जो कछु, द्वि० ३ आहइ जो। ९. तृ० ३ खोलु जीय तारा, द्वि० १ खोजु जीय ताला। १०. प्र० १, द्वि० १, ६ रस, तृ० ३, तृ० १ मद, पं० १ बड़ ११. प्र० १ गाया। १२. द्वि० २, ४, तृ० १, च० १, पं० १ कहँ तेहि रूप। १३. प्र० १, द्वि० १ नींद कहँ छाया, द्वि० २ कहाँ कै माया, तृ० ३ नींद का माया, द्वि० ५ कहाँ तेहि छाया। १४. प्र० १ लाएँ। १५. द्वि० १ लपेटाँ। १६. द्वि० २, ३, तृ० १ परम। १७. तृ० ३ भात न, द्वि० ३ ना तेहि। १८. द्वि० ४ सो। १९. प्र० १, द्वि० ५ सुने तेहि, द्वि० २, ६ तृ० १, २, पं० १ सुना तौ, तृ० ३ सुनतहि, च० १ सुनि कबि। २०. द्वि० १ सासु।

[२४] १. द्वि० ५, तृ० २ पं० १ सत्ताइस, द्वि० ७, ३ पैंतालिस २. प्र० १ अहा, कहा। ३. प्र० १ ताहि दिन। ४. तृ० १ कि पदुमिनि। ५. तृ० ३ राजा। ६. द्वि० ४ सुनि पदुमिनि। ७. द्वि० ३ जाई। ८. प्र० १, तृ० २ कथा जो, द्वि० ७ कथा असि, पं० १ बस कथ्था। ९. द्वि० ४ कइ।

कबि बिश्रास रस[१०] कौंला पूरी । दूरिहि निश्चर निश्चर भा दूरी[११] ।
निश्चरहि दूरि फूल सँग काँटा । दूरि जो निश्चरें जस[१२] गुर चाँटा ।

भँवर आइ बनखंड हुति[१३] लेहि कँवल कै बास ।
दादुर बास न पावहिं भलेहिं[१४] जो आछहिं[१५] पास ॥

[२५]

सिंघल दीप कथा अब गावौं । औ सो[१] पदुमिनि बरनि सुनावौं ।
बरनक[२] दरपन भाँति बिसेखा । जेहिं जस रूप[३] सो तैसेइ देखा[४] ।
धनि सो दीप[५] जहँ दीपक नारी[६] । औ सो पदुमिनि दइअँ अवतारी[७] ।
सात दीप बरनहिं सब लोगू । एकौ दीप न ओहि[८] सरि जोगू ।
दिया दीप नहिं तस[९] उजिआरा । सरौं दीप[१०] सरि होइ न पारा[११] ।
जंबू दीप कहौं[१२] तस नाहीं । पूज न लंक दीप[१३] परिछाहीं[१४] ।
दीप कुसस्थल[१५] आरन परा[१६] । दीप महुस्थल मानुस हरा[१७] ।

---

१०. द्वि० २, ७, च० १ जस, द्वि० ७ जे । ११. प्र० १, द्वि० ६ दूरि जो निश्चरैं निश्चरैं दूरी, द्वि० ५ दूरिहि निश्चरैं निश्चरैं दूरी, द्वि० ४, ३, च० १ दूरि सो निश्चर निश्चर सो दूरी, तृ० २ दूरिहि निश्चर निश्चर होइ दूरी । १२. च० १ दूरि सो निश्चर जैस, द्वि० ४ दूरि न निश्चर सो जस, द्वि० २ दूरि निश्चर जैसे । १३. प्र० १, द्वि० ५, तृ० १, पं० १ सों, द्वि० २, ७ तें । १४. द्वि० ४, ५ फलहिं, तृ० १ सदा । १५. द्वि० १ जाइ जो, द्वि० २ सो आछइ, द्वि० ३ आछहिं वहि ।

[२५] १. द्वि० ४, तृ० १ सब । २. द्वि० ५ निरमल दरपन भाँति, द्वि० ३ परतख दरपन भाँति, द्वि० ७ बदन कुंदन जस भान । ३. प्र० १ जो जेहि भाँति, द्वि० २, (तृ० १) जो जेहि रूप, तृ० ३ जो जस रूप । ४. च० १ बरनक जस दरपन निरमरा । तेहि तस दरसन जेहि जस करा । ५. तृ० ३ धन्य देस । ६. प्र० २, तृ० ३ जेहि दीपक नारी, द्वि० २,४,५,७, तृ० २, च० १ जहँ दीपक बारी । ७. प्र० १, द्वि० १,५,६, (तृ० १) औ सो पदुमिनि दई सँवारी, द्वि० ३ औ बिधिनै पदुमिनि अवतारी, च० १ औ पदुमिनि जहँवा अवतारी । ८. द्वि० ३, तृ० २ तेहि । ९. द्वि० १ नाहीं । १०. तृ० ३ सरद दीप, द्वि० ३, ६, पं० १ सरन दीप । ११. द्वि० १ दीप कुसस्थल होइ न पारा । १२. प्र० १ कहा । १३. तृ० २ सरौं दीप । १४. प्र० १ सरि पूज न ताहीं, द्वि० ५ सरि पूज न छाहीं, द्वि० ३, तृ० २ नहिं पूजइ छाहीं । १५. प्र० १, द्वि० ४, द्वि० ३ कुँभस्थल, द्वि० ५ गुहस्थल । १६. तृ० ३ पारा ।

सब संसार परथमैं[18] आए सातौं[19] दीप।
एकौ दीप न उत्तिम[20] सिंघल दीप समीप॥

[२६]

गंध्रपसेन सुगंध नरेसू। सो[1] राजा यह[2] ताकर देसू।
लंका सुना जो रावन राजू। तेहु चाहि बड़ ताकर साजू।
छप्पन कोटि कटक दर साजा। सबै छत्रपति ओरँगन्ह[3] राजा।
सोरह सहस घोर घोरसारा। सावँकरन बालका[4] तुखारा[5]।
सात सहस हस्ती सिंघली। जिमि[6] कबिलास एरापति बली[7]।[8]
असुपती क सिरमौर कहावा। गजपती क[9] आँकुस गज नावा[10]।
नरपती क कहाव[11] नरिंदू। भुअपती क जग[12] दोसर इंदू।

अइस चक्कवै राजा चहूँ खंड भै होइ[13]।
सबै आइ सिर नावहिं सरवरि करै न कोइ[14]॥

[२७]

जबहि[1] दीप निअरावा[2] जाई। जनु कबिलास निअर भा[3] आई।
घन अँबराउँ लाग चहुँ पासा। उठै पुहुमि हुति[4] लाग अकासा।

---

१७. तृ० ३ आर न पारा। १८. तृ० ३ सबै सार प्रिथिमी कर, द्वि० ७ सब संसार पिरिथिमी। १९. प्र० १, द्वि० ३ औ सातौ सब, द्वि० ४ है सो सातौ। २०. प्र० १ उपमा, द्वि०२ पावौं, द्वि० ३ ऊपर।

[२६] १. प्र० १ धनि। २. द्वि० २,५, तृ० ३ और। ३. द्वि० ४,५ औ गढ़ ४. तृ० ३ चालुक, द्वि० २,५ जस बाँक, द्वि० ७ औ तुरकी, (तृ० १), द्वि० ३ बाँक। ५. द्वि० ४ मुखारा, (तृ० १) तुम्हारा। ६. प्र० २, द्वि० ५, तृ० १,३, पं० १ इमि, द्वि० ४, च० १ जनु। ७. द्वि० ३ नित बली। ८. द्वि० १ जिमि रूप केला औ महचली। ९. द्विं० ७ गजपति सिर। १०. द्वि० ७, च० १ आँकुस गहि नावा। ११. प्र० १ कहौं जो आहि, द्वि० २,३,४,५, तृ० २, कहौ ओर, (तृ० १) कहवाव, च० १ को आहि। १२. प्र० १ महँ। १३. तृ० ३ चाहिहुँ खँड भै होइ, तृ० २ चारिहुँ खंड नहिं कोइ। १४. द्वि० १ चहूं खंड नै होइ।

[२७] १. प्र० १, द्वि० ३,४,५, च० १, जौंहि (हिंदी मूल)। २. द्वि० २ निअर जो, द्वि० ५ निअर भा। ३. प्र० १ भौ। ४. प्र० १, द्वि० १ तिन

तरिवर सबै मलैगिरि लाए। भै जग[५] छाँह रैनि होइ छाए[६]।
मलै समीर सोहाई[७] छाहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहि[८] माहाँ।
ओही छाँह रैनि होइ आवै[९]। हरिअर सबै अकास दिखावै।
पंथिक जौं पहुँचै सहि[१०] घामू। दुख बिसरै सुख होइ बिसरामू।
जिन्ह वह पाई[११] छाँह अनूपा। बहुरि न[१२] आइ सही यह[१३] धूपा।

अस अबराउँ सघन घन[१४] बरनि न पारौं[१५] अंत।
फूलै फरै छहूँ रितु[१६] जानहु सदा बसंत॥

[२८]

फरे आँब अति सघन सोहाए। औ जस[१] फरे अधिक सिर नाए।
कटहर डार पींड सो पाके। बड़हर सोउ अनूप अति[२] ताके।
खिरनी पाकि खाँड असि मीठी। जाँबु जो पाकि भँवर असि डीठी।
नरिअर[३] फरे फरी[४] खुरहुरी। फुरी[५] जानु इंद्रासन पुरी।
पुनि महु चुवै सो[६] अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप[७] जस बासू।
और खजहजा आव न[८] नाऊँ। देखा सब[९] रावन[१०] अँबराऊँ।
लाग सबै जस[११] अंब्रित साखा। रहै[१२] लोभाइ सोइ जोइ[१३] चाखा।

---

५. तृ० ३ सीतल, द्वि० ६, द्वि० ३ भइ तसि। ६. द्वि० १, ४,५, पं० १ आए। ७. प्र० १ सोहावन। ८. (तृ० १) तन। ९. तृ० २ महा नीक जिमि कोमल छावा। १०. प्र० १सहि आवै, द्वि० १,२ पहुँचै तेहि, द्वि० ४, च० १ पहुँचै सहिकै। ११. प्र० १ जबहिं पाव वह। १२. द्वि० ४, तृ० १ फिरि नहिं। १३. प्र० १ सो, द्वि० २ दुख। १४. द्वि० १, सघन सो, च० १ सुहावन। १५. द्वि० १, पारै, तृ० १ ३ पारहिं, तृ० २ पावौं। १६. द्वि० २ चहूँ दिसि।

[२८] १. प्र० १ जो, द्वि० ७ जत। २. प्र० १ अति अनूप फर, द्वि० १ सोइ अनूप फर, द्वि० ४, च० १ अति अनूप सब, द्वि० ३ फर अनूप अस। ३. च० १, जैफर। ४. द्वि० ४ जो फरी। ५. द्वि० १ तेहि, द्वि० २ सदा। ६. प्र० १,२, द्वि० ४,५ महुआ चुवै सो, तृ० ३ पुनि मधु चुवै सो, तृ० १ चुवै जो महुआ, द्वि० ३ पुनि महुआ चुवै। ७. च० १ बहुत। ८. द्वि० १ अनूप तेहि, द्वि० ४, ५ अनवन (हिंदी मूल)। ९. द्वि० ७ जत, (तृ० १) जस, पं० १ जनु। १०. प्र० १ सोभित। ११. प्र० १, अस। १२. प्र० १ रहा। १३. प्र० १ सोइ जेइँ, द्वि० ३ कोइ जौं।

गुआ[१४] सुपारी जायफर सब फर फरे अपूरि।
आस पास घनि इँबिली औ घन तार खजूरि॥

[२९]

बसहिं पंखि बोलहिं बहु भाषा। करहिं हुलास देखि कै[१] साखा।
भोर होत बासहिं[२] चुहचुही। बोलहिं पाँडुक एकै तुहीं।
सारौ सुवा सो[३] रहचह करहीं[४]। गिरहिं[५] परेवा औ[६] करबरहीं[७]।
पिउ पिउ लागै करैं[८] पपीहा। तुही तुही[९] कह गुडुरू[१०] खीहा।
कुहू कुहू[११] कोइल करि राखा[१२]। औ भिंगराज बोल बहु भाषा[१३]।
दही दही[१४] कै महरि पुकारा। हारिल बिनवै आपनि हारा।
कुहकहिं मोर सोहावन लागा[१५]। होइ कोराहर बोलहिं कागा[१६]।[१७]

जावँत पंखि कहे सब[१८] बैठे भरि अँबराउँ।
आपनि आपनि भाषा[१९] लेहिं दइअ कर नाउँ॥

[३०]

पैग पैग[१] पर कुआँ बावरी। साजी बैठक औ[२] पाँवरीं[३]।
औरु कुंड बहु[४] ठाँवहि ठाँऊ। सब तीरथ औ तिन्ह के नाऊँ॥

---

१४. द्वि० २, ५, तृ० २, च० १ लौंग।

[२९] १. च० १ सब। २. द्वि० ६, पं० १ बोलहिं। ३. द्वि० ४, ५, द्वि० ३ च० १ सुवा जो, पं० १ सूवा। ४. द्वि० २ सोर बहु करहीं, तृ० ३ रहस करेहीं। ५. प्र० १ घिरिन, प्र० २, द्वि० ४,५,७, तृ० १ घुरहिं, तृ० ३ दुरहिं, द्वि० ३ कठिन, द्वि० ६ लुरहिं, द्वि० १ बोल। ६. प्र० १ तहँ। ७. तृ० ३ कुरुरेहीं। ८. द्वि० ५ करै जो लागा। ९. प्र० १, द्वि० २,४, ५, द्वि० ३ तुहीं तुही कार, तृ० ३ तूही तूही। १०. प्र० १ गुड़रा, द्वि० ४ गादुर। ११. तृ० ३ वहो वहो, च० १ बहु भागी। १२. च० १ बोल कोकिला। १३. च० १ फाग सब मिला। १४. द्वि० ४ दई दई। १५. द्वि० १ कुहुकै कोकिल रागा। १६. प्र० १ रुगरौ बागा। १७. द्वि० १ बैठि कोलाहल करहिं जो कागा, तृ० २ ककउर करहिं काग अनुरागा। १८. प्र० १ अहै सब, द्वि० १ तृ० ३ जगत के, द्वि० ५ बन के, च० १ कहै बन। १९. द्वि० ४ भाषा बोलहिं।

[३०] १. द्वि० ७ परग परग। २. तृ० ३ साजे पंथिक कहँ जो। ३. प्र० १ चौपारी, तृ० २ चावरीं। ४. प्र० १ खंड सब, प्र० २, द्वि० ३ कुंड सब.

मढ़[५] मंडप चहुँ पास सँवारे। जपा तपा सब आसन मारे।
कोइ रिखेस्वर कोइ सन्यासी। कोइ रामजन[६] कोइ मसवासी[७]।
कोई ब्रह्मचर्ज पँथ[८] लागे। कोइ दिगंबर आछहिं नाँगे।
कोइ सरसुती सिद्ध[९] कोइ जोगी। कोइ निरास पँथ बैठ बियोगी।
कोइ महेसुर जंगम जती[१०]। कोइ एक परखै देबी सती।

सेवरा खेवरा बानपरस्त[११] सिध[१२] साधक अवधूत।
आसन मारि बैठ सब[१३] जारि[१४] आतमा भूत[१५]॥

[३१]

मानसरोदक[१] देखिअ[२] काहा। भरा समुँद अस[३] अति[४] अवगाहा।
पानि[५] मोति अस निरमर तासू। अंब्रित बानि[६] कपूर सुबासू।
लंक दीप कै सिला अनाई[७]। बाँधा सरवर घाट बनाई[७]।
खँडखँड सीढ़ी भईं गरेरी[८]। उतरहिं चढ़हिं[९] लोग चहुँ फेरी।
फूला कँवल रहा होइ राता। सहस सहस पंखुरिन्ह कर छाता[१०]।
उलथहिं सीप मोंति उतिराहीं[११]। चुगहिं हंस औ[१२] केलि कराहीं।

---

५. द्वि० ३ मढ़ं। ६. प्र० २, द्वि० २ पं०१, रामजनी, द्वि० ५, (तृ० १) रामजति, च० १ रामजपी। ७. प्र० १ द्वि० १,४,५, (तृ० १) कोइ बिसवासी। ८. प्र० १ सौ। ९. द्वि० १, तृ० ३, तृ० २ संत सिद्ध, द्वि० २, पं० १ सनसंत सिद्ध, द्वि० ५ सरसुती संत, द्वि० ४,६, द्वि० ३, च० १ मुनिसंत सिद्ध, द्वि० ७ सुन्यी तपसी। १०. तृ० १ जोगी। ११. तृ० ३ बानपर, द्वि० ४ पारथी, द्वि० २ बान सिख, तृ० २ बान परस, द्वि० ३ नानक पंथी। १२. द्वि० ४,५, तृ० १, च० १, पं० १ सिख। १३. प्र० १ जंगम जती सन्यासी। १४. द्वि० ७ पाय। १५. प्र० १ सेवरा औ अवधूत, द्वि० ३, ५, ६, तृ० १, पं० १ पाँच आतमा भूत।

[३१] १. प्र० १ सरोवर। २. प्र० १,२, द्वि० ४ देखौं, द्वि० ५,७, तृ० ३ बरनौं, च० १ एक जो। ३. प्र० १, द्वि० ३ जल। ४. द्वि० ३ हर। ५. प्र०१ जल। ६. द्वि० १, पं० १ पानि, द्वि० २, तृ० ३ आनि, द्वि० ४ बानि (हिंदीमूल), द्वि० ५, बरन, तृ० १ नीर। ७. प्र० १, द्वि० १, तृ० २ मँगाई, बनाई, तृ० ३ मँगाए, सोहाए। ८. प्र० १ उपर गरेरी, द्वि० १ दीन्ह गरेरी, द्वि० ३ बहुतेरी। ९. तृ० ३ उतरै लाग। १०. तृ० ३ पाता। ११. प्र० १ छितराहीं। १२. द्वि० ४ बहु।

कनक पंखि पैरहिं[13] अति लोने। जानहु चित्र सँवारे[14] सोने[15]॥

ऊपर पाल[16] चहूँ दिसि अंम्रित फर सब रूख।
देखि रूप सरवर कर गइ पिआस औ भूख॥

[३२]

पानि भरइ आवहिं पनिहारी। रूप सुरूप पदुमिनी नारीं[1]॥
पहुम गंध तेन्ह अंग बसाहीं। भँवर लागि तेन्ह संग फिराहीं।
लंक सिंघिनी साँरग नैनी। हंसगामिनी[2] कोकिल[3] बैनी।
आवहिं झुंड सो[4] पाँतिहि पाँती। गवन[5] सोहाइ सो[6] भाँतिहि भाँती॥
केस मेघावरि सिर ता पाईं[7]। चमकहिं दसन बीज की नाईं।
कनक कलस मुख चंद दिपाहीं। रहस कोड[8] सों[9] आवहिं जाहीं[10]।
जासौं वै हेरहिं चख नारीं। बाँक नैन[11] जनु हनहिं कटारी॥

मानहु मैन मुरति सब[12] अछरीं बरन[13] अनूप।
जेन्हिकी ये[14] पनिहारी सो[15] रानी केहि रूप॥

[३३]

ताल तलावरि[1] बरनि न जाहीं। सूझइ वारपार तेन्ह[2] नाहीं॥

---

१3. तृ० ३ पौरहिं। १४. द्वि० १,२, तृ० १, पं० १ कीन्ह सब, तृ० ३ लिखा सब, द्वि० ६ कीन्ह धरि, द्वि० ७, ३, कीन्ह गढ़ि। १५. द्वि० ५, च० १ खनि पतार पानी जेहि काढ़ा। खीर समुँद निकसा हुत बाढ़ा। १६. द्वि० २,४ ताल, द्वि० ७ बेलि, च० १ पानि।

[३२] १. च० १ तरुनी सिंघल दीप की बारीं। २. प्र० १ गवन औ। ३. तृ० ३ सारँग। ४. प्र० १ झुंडहि, द्वि० ४ चहुँ दिसि। ५. प्र० १, द्वि० १ चाल। ६. प्र० १, द्वि० ४ सुहावन। ७. प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३, पाताईं, द्वि० १ बरताईं। ८. द्वि० १, ३, ५, तृ० १ च० १ केलि। ९. प्र० १ सब, पं० १ सिउँ। १०. द्वि० ७ रहसत केलि करत सभ जाहीं। ११. द्वि० ४ नैन बान। १२. द्वि० ५ माँथे कनक गागरी, द्वि० ७ मानहु मोर मैन तनु, तृ० २ मानहु मैन मूरती। १3. द्वि० ५ आवहिं रूप, द्वि० ७ अछरी रूप। १४. प्र० १ जाकरि असि, द्वि० १ जहाँ की असि। १५. प्र० १, द्वि० ३, ४,५ ते।

[३३] १. द्वि० १,७ तलाव, द्वि० ४,५,६, पं० १ तालावा, द्वि० २ तलाव सो, द्वि० ३ तलाउ जो। २. प्र० १ जेहि, द्वि० ५ कछु, तृ० २ सो।

फूले कुमुद केत[3] उजिआरे। जानहुँ उए गगन महँ तारे।
उतरहिं मेघ चढ़हिं लै पानी। चमकहिं मंछ बीजु[4] की बानी।
पैरहिं[5] पंखि सो संगहि[6] संगा। सेत पीत राते बहु[7] रंगा।[8]
चकई चकवा केलि कराहीं[10]। निसि बिछुरहिं[9] औ दिनहिं मिलाहीं[10]।
कुरलहिं सारस भरे हुलासा[11]। जिअन हमार मुअहिं एक पासा[12]।
केंवा[13] सोन[14] ढेक बग लेदी। रहे अपूरि मीन जल भेदी[15]।

नग अमोल तेन्ह तालन्ह[16] दिनहिं बरहिं[17] जनु दीप।
जो मरजिआ होइ[18] तहँ सो पावइ वह सीप॥

[३४]

पुनि जो लाग[1] बहु[2] अंब्रित बारी। फरीं अनूप होइ रखवारी।
नवरँग[3] नीबू सुरँग[4] जँभीरा। औ बादाम बेद[5] अंजीरा।
गलगल[6] तुरँज[7] सदाफर फरे। नारँग अति राते[8] रस[9] भरे।
किसमिस सेब फरे नौ पाता[10]। दारिवँ दाख देखि मन राता[11]।

---

३. प्र० १, द्वि० ४,६ काँवल कुमुद। ४. तृ० ३ मंछ कच्छ, द्वि० १ पंखि बीजु ५. तृ० ३ पौरहिं, द्वि० ५ तैरहिं। ६. द्वि० १ रहसि एक। ७. प्र० १, तृ० १,३, पं० १ राते सब, द्वि० १ सब तिन्हके। ८. च० १ कनक पंखि पैरहिं अति लोने। जानहु चित्र सँवारे सोने। (तुलना० ३१.७)। ९. प्र० १, द्वि० १, तृ० ३ क विछोहा। १०. तृ० ३ करेहीं, दिनहि मिलि लेहीं, द्वि० ४,५, कराहीं, दिन मिलि जाहीं, च० १ कराहीं, औ देवस मिलाहीं। ११. प्र० १, द्वि० ५ करहिं हुलासा, द्वि० ४, तृ० २, च० १ जिअन हमारा। १२. द्वि० २,५ जीवन मरन सो एकहि पासा। द्वि ४, तृ० २, च० १ मुएहु न बिछुरै साथ पिआरा। १३. द्वि० २ लेना, द्वि० ४ तृ० ३ बोलहिं, द्वि० ३ नकठा १४. द्वि० १सेदं। १५. च० १ होइ जल जिअन मीन रस भेदी। १६. द्वि० २ तहँ नागन्ह, द्विं० ४ तहँ उपजहिं। १७. च० १ जरहिं। १८. प्र० १ होइ धँसइ, द्वि० ६, च० १ तहँ परइ, द्वि० १ भै रहै।

[३४] १. द्वि० ४,५, च० १ आस पास। २. द्वि० १ तहँ, च० १ सब। ३. प्र० १ कागद। ४. प्र० १, द्वि० ५,६, तृ० ३ तुरँज। ५. प्र० १ बेदान, द्वि० २, ५ बहु बेद, द्वि० ४ बहु पेड़, पं० १ बेर। ६. प्र० १, तृ० ३ गागल ७. द्वि० १ तूत, तृ० ३ सुरँग। ८. द्वि० ४ औ अनार, तृ० २ तसराते द्वि० ७ रकत राते। ९. द्वि० ७ रँग। १०. प्र० १, द्विं० ५, च० १फरे सौ बाता, राता, तृ० १ होइ फरे पाता, राता। ११. प्र० १, द्वि० १ सुहावनि।

लागि सोहाई[11] हरपारेउरी। ओनइ रही केरन्ह की घउरी।
फरे तूत कमरख औ निउँजी। राय करौंदा बैरि[12] चिरउँजी[13]।
संखदराउ[14] छोहारा डीठे। औरु खजहजा खाटे मीठे[15]।

पानी देहिं खँडवानी कुअँहि[16] खाँड बहु मेलि।
लागीं घरी रहट की सींचहिं अंम्रित बेलि॥

[३५]

पुनि[1] फुलवारी लागि चहुँ पासा। बिरिख बेधि[2] चंदन भै[3] बासा।
बहुत[4] फूल फूली घन बेली। केवरा चंपा कुंद चँबेली।
सुरँग गुलाल कदम औ कूजा। सुगँध[5] बकौरी[6] गंध्रप[7] पूजा।
नागेसरि सदबरग नेवारी। औ सिंगारहार फुलवारी।
सोन जरद फूली[8] सेवती[9]। रूप मंजरी औ मालती[10]।
जाही जूही बकचुन लावा। पुहुप[11] सुदरसन लाग[12] सोहावा।
बोलसिरी[13] बेइलि[14] औ करना। सबहि फूल फूले बहु बरना।

तेन्ह सिर फूल चढ़हिं वै जेन्ह थें मनि भागु।
आछहिं सदा सुगंध भे[15] जनु बसंत औ फागु[16]॥

[३६]

सिंघल नगर देखु[1] पुनि[2] बसा[3]। धनि राजा असि जाकरि दसा[3]।

१२, प्र० १ और। १३. द्वि० १ खिरौंजी। १४. द्वि० ५, तृ० २, च० १ सुगंध राव, द्वि० ४ सँगतरा, द्वि० ३ राय सुगंध। १५. द्वि० २ अंब्रृत फर बहु फरे अपूरी। अउ तहँलागि सर्जीवन पूरी (अतिरिक्त पंक्ति के रूप में १६४.४) १६. द्वि० १ कूअहिं।

[३५] १. द्वि० ४ बहु। २. प्र० १ बेलि। ३. तृ० ३ भौ, द्वि० ३ पहिं। ४. प्र० १, द्वि० १,७ पुहुप, तृ० ३ पूर औ। ५. द्वि० १ सुरँग। ६. तृ० ३ बिकौरा। ७. द्वि० १ अंब्रित। ८. द्वि० १ सोन बरन भै फूल ९. तृ० ३ सेवाती। १०. तृ० ३ औ मालति जाती। ११. द्वि० १ और द्वि० २,४,७, तृ० ३ बहुत। १२. द्वि० १ दीख। १३. प्र० १, तृ० ३ मौलसिरी। १४. प्र० १ जो बेइलि, द्वि० १,२,३, बेला। १५. प्र० १ भो, द्वि० ३ पहि। १६. च० १ सोई पेड़ सुगंध होइ जहाँ पौन बहि लाग।

[३६] १, द्वि० ६ दीप नगर, च० १ दीप देखु। २. प्र० १ तस, तृ० ३ फिरि, द्वि० ४. च० १ गन ३. द्वि० १, दासा, जाकर कबिलासा।

ऊँची पँवरी ऊँच अवासा। जनु कबिलास इंद्र कर[४] बासा।
राउ राँक सब घर घर सुखी। जो देखिअ सो हँसता मुखी।
रचि रचि राखे चंदन चौरा[५]। पोते अगर मेद औ केवरा।
सब चौपारिन्ह चंदन खँभा। ओठँधि सभापति बैठें सभा[६]।
जनहुँ सभा देवतन्ह कै जुरी। परी द्रिस्टि इंद्रासन पुरी।
सबै गुनी पंडित औ ग्याता। संसकिरत सब के मुख बाता[७]।

औहिक पंथ[८] सवाँरहिं[९] जस सिवलोक[१०] अनूप[११]।
घर घर नारि पदुमिनी मोहहिं दरसन रूप[११]॥

[३७]

पुनि देखिअ सिंघल की हाटा। नवौ निद्धि लछिमी सब बाटा[२]।
कनक हाट सब कुँहकुँह लीपी। बैठ महाजन सिंघल दीपी।
रचे हँथौड़ा[३] रूपइँ ढारी। चित्र कटाउ अनेग सँवारी।
रतन पदारथ मानिक मोती। हीर पँवार सो अनबन[४] जोती।
सोन रूप सब[५] भएउ पसारा। धवलसिरी[६] पोतहिं घर बारा[७]।

---

४. च० १ दीन्ह बड़। ५. द्वि० २, तृ० १ खौरा। ६. द्वि० १ ओठँधि ओठँधि बैठे अन सभा, द्वि० ४ औ तहँ बैठ सभापति सभा, द्वि० ५ ओठँधि सभा तब बैठ्यो राजा, तृ० १ ठेंगि सभापति बैठे सभा, च० १ ओठँधि सभा सब बैठे सभा। ७. द्वि० ५ राता। ८. द्वि० १ ओही क ग्रंथ, प्र० १, २, तृ० १, २, ३, च० १ आहंक पंथ, द्वि० २ नाहक पंथ, द्वि० ४ अहनिसि बैठि, द्वि० ५ अलख पंथ, द्वि० ३, पं० १ आधक पंथ, द्वि० ६ अंतक पंथ, द्वि० ७ भौ अस पंथ। ९. प्र० १ सरोज ससि। १०. प्र० १ सोभित कला। ११. प्र० १ २, अनूप, सुभ दरसन सुभ रूप, द्वि० २,४,५,६, तृ० १,२ अनूप, सब अछरी के रूप। च० १ भेष, पाप हरैं जो देष।

[३७] १. च० १ का बरनौं। २, द्वि० ३, तृ० ३ पाटा। ३. प्र० १ हाथ रचे सब, द्वि० ७ रचे हाट सभ। ४. द्वि० २ हीरालाल पना बहु, द्वि० ५ हीरा लाइ सँवारे, तृ० २ हीरा लाल मान बहु, द्वि० ३,४,५, च० १ हीर पँवार सो अनवन (हिंदी मूल)। ५. प्र० १, द्वि० २,४,५,७, च० १, पं० १ भल। ६. पं० १ रह्यो बिसरि। ७. द्वि० १ पितवहिं घर बारा, प्र० १ पाटहिं पटसारा, द्वि० ४ पच्छहिं बनिजारा, द्वि० २,३, तृ० १, च० १ पटवहिं घर बारा, तृ० ३ पाटहिं घर बारा, पं० १ पवनहिं घर बारा।

औ कपूर बेना कस्तूरी। चंदन अगर रहा भरिपूरी।
जेइँ न हाट एहि लीन्ह[9] बेसाहा। ताकहँ आन हाट कित[10] लाहा।

कोई करै बेसाहना काहू केर बिकाइ।
कोई चला[11] लाभ सौं[12] कोई मूर गवाँइ॥

[३८]

पुनि सिंगार हाट धनि[1] देसा[2]। कइ सिंगार तहँ[3] बैठी बेसा।
मुख तँबोर तन[4] चीर कुसुंभी। कानन्ह कनक जराऊ खुंभी।
हाथ बीन सुनि मिरिग भुलाहीं। नर मोहहिं सुनि[5] पैगु न[6]जाहीं[7]।
भौंह धनुक तह नैन अहेरी। मारहिं बान सान[8] सौं[9] फेरी[10]।
अलक कपोल डोल हसि देहीं। लाइ कटाख[11] मारि[12] जिउ लेहीं।
कुच कंचुकि जानहुँ जुग सारी। अंचल देहि सुभावहिं ढारी[14]।
केत खेलार हारि[15] तेन्ह पासा। हाथ झारि होइ[16] चलहिं निरासा।

चेटक लाइ हरहिं मन जौ लहि गथ है फेंट[17]।
साँठि नाठि[18] उठि[19]भए बटाऊ[20] ना[21]पहिचान न भेंट॥

---

९. प्र० १ अस हाट न लीन्ह, द्वि० ६ वहि पहिलेहिं हाट, तृ० २ तेहि वहो हाट, पं० १ न लीन्ह तेहि हाट। १०. प्र० १,२ नहिं, तृ० ३ कस, पं० १ का। ११. तृ० ३ चलै। १२. प्र० १, च० १ लै।

[३८] १. प्र० १ कइ। २. द्वि० ६ पुनि देखिअ सिंघल कै हाटा। ३. द्वि० ४,६, च० १ सत्र। ४. द्वि० २,५, तृ० १ सिर। ५. प्र० १ मोहित होहिं, द्वि० १ नर मोहहिं पुनि, तृ० ३ नरमोहहिं गुन, द्वि० ३ सुर मोहहिं सुनि। ६. द्वि० ६ पर कोट न। ७. प्र० १ पैगु नहिं जाहीं। ८. द्वि० ४ सैन। ९. प्र० १ वै। १०. द्वि० ५ हेरी। ११. तृ० २ काम कटाछ। १२. च० १ काढ़ि। १४. द्वि० २ सारी, द्वि० ३ टारी, द्वि० ५ ढारी। १५. प्र० १ केते खेलि रहे, द्वि० १ केते खेलार रहहिं, तृ० ३ कत खेलार हारे। १६. द्वि० ५ उठि, द्वि० १ कै। १७. द्वि० ५ गथ होइ फेट, द्वि० ६ गथ भा मेट। १८. द्वि० १ घटे। १९. द्वि० ५ पुनि, द्वि० ७ भै। २०. प्र० १ उठि भागा, द्वि० २ औं यह भए, द्वि० १ नहिं पूछहिं, द्वि० ४ उठि भागइं, तृ० १ पुनि भेट न पावै। २१. द्वि० १ जस।

[३९]

लै लै बैठ[1] फूल फुलहारी[2]। पान अपूरब धरे सँवारी[3]।
सोंधा सबै बैठु लै गाँधी[4]। बहुल[5] कपूर खिरौरी बाँधी[4]।
कतहूँ पंडित पढ़हिं पुरानू। धरम पंथ[6] कर करहिं बखानू।
कतहूँ कथा कहै कछु कोई। कतहूँ नाच कोड भलि होई।
कतहुँ छरहटा पेखन लावा। कतहूँ पाखँड[7] काठ नचावा[8]।
कतहूँ नाद सबद[9] होइ भला। कतहूँ नाटक चेटक कला[10]।
कतहुँ काहुँ[11] ठग बिद्या[12] लाई। कतहुँ लेहिं मानुस बौराई[13]।

चरपट चोर धूत[14] गँठिछोरा मिले रहहि तेहि नाँच।
जो तेहि[15] नाँच[16] सजग भा अगुमन[17] गथ ताकर पै[18] बाँच॥

[४०]

पुनि आइअ[1] सिंघल गढ़ पासा। का बरनौं जस लाग अकासा[2]।
तरहिं कुरुँम[3] बासुकि कै पीठी। ऊपर इन्द्रलोक पर[4] डीठी।
परा खोह[5] चहुँ दिसि तस[6] बाँका। काँपै जाँघि जाइ नहिं झाँका।
अगम असूझ देखि डर खाई। परै सो[7] सप्त पतारन्ह जाई।

---

[३९] १.प्र०२, द्वि० ६, तृ० २ बैठ सिंगारहाट, द्वि० ७बैठ सिंगारहार, द्वि० ५ लै कै फूल बैठ। २.द्वि०७, तृ० ३ फुलवारी। ३.द्वि० १ पुंज कपूर सो धरे सँवरी। औ लै बैठे फूल सँवारी। ४. तृ० ३ गंधी, बंधी। ५. प्र० १, द्वि० ७ बहुत, द्वि० ४ फूल, द्वि० ६ आव, द्वि० ३ मेलि, च० १ फरे। ६. तृ० ३ रासि, द्वि० ३ पाव। ७. द्वि० १ पेखन, द्वि० ४, ६, तृ० २ पखंडी। ८. द्वि० ५ नाँच नचावा, तृ० २ नाँच बनावा। ९. द्वि० ४ नाँव सबद, द्वि०७ नाद निरित, द्वि० ३ नाद बेद। १०. तृ० ३ चला। ११. प्र० १, द्वि० ५, तृ० १ काहुँ, प्र० २ कतहुँ। १२. द्वि० २ ठगौरी। १३. प्र० १ मानव कर लेहिं छड़ाई, तृ० २ लेहिं काहू बौराई। १४. द्वि० ४ ठग चरवट लोभ। १५.द्वि० एहि। १६. प्र० १, द्वि० १,२,३, तृ०२, पं० १ हाट, प्र० २भाँति, द्वि० ६, च०१ रहैं। १७. प्र० २ द्वि० १,७ भा। १८. प्र० १ गथ ता कर सो, द्वि० ७ अगुमन ग्रंथ पै।

[४०] १. तृ० १ जोगी। २. द्वि० १ अस उरिन बासा, द्वि० ४, ५, तृ० ३ जनु लाग अकासा। ३. द्वि० १ कुंभ शेष प्रतियों में कुरुँभ (हिंदीमूल)। ४. प्र० १ सब, तृ० ३ सों, पं० १ बर। ५. प्र० १ खाँच फेर, द्वि० ४ परा खाँव। ६. द्वि० ५ सब। ७. तृ० ३ तो।

नव पँवरीं बाँकी नव खंडा। नवहुँ जो[८] चढ़ै जाइ[९] ब्रह्मंडा।
कंचन कोट जरे नग सीसा[१०]। नखतन्ह भरा बीजु[११] अस[१२] दीसा।
लंका चाहि ऊँच गढ़ ताका[१३]। निरखि न जाइ दिस्टि मन थाका।

हिअ न समाइ दिस्टि नहिं पहुँचै जानहु ठाढ़ सुमेरु।
कहँ लगि कहौं उँचाई ताकरि[१४] कहँ लगि बरनौं फेरु॥

[४१]

निति गढ़ बाँचि चलै ससि[१]सूरू। नाहि त बाजि होइ रथ चूरू[२]।
पँवरी नवौ[३] बज्र कइ साजी। सहस सहस तहँ बैठे पाजी।
फिरहिँ पाँच कोटवार सो[५]भँवरी। काँपै पाँय[६] चँपत वै[७] पँवरी।
पँवरिहि पँवरि सिंघ[८]गढ़ि काढ़े। डरपहिं राय[९] देखि तेन्ह ठाढ़े।
बहु बनान[१०] वै नाहर गढ़े। जनु गाजहिं[११] चाहहिं सिर चढ़े।
टारहिं पूँछि पसारहिं जीहा। कुंजर डरहिं कि गुजरि[१२] लीहा[१३]।
कनक सिला गढ़ि सीढ़ी लाई। जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताई।

नवौ खंड नव पँवरीं औ तहँ बज्र[१४] केवार।
चारि बसेरें सों[१५]चढ़ै सत[१६]सत सौं चढ़ै जो[१७]पार॥

---

८. प्र० १ जो तेहि, द्वि० २, तृ० २, च० १ तिन्ह कै, द्वि० ३ जो वहिं। ९. द्वि० २, तृ० २ चढ़ै। १०. प्र० १, द्वि० २,३ जरे कौसीसा, द्वि० ४ जड़ावै सीसा, द्वि० ७ जरे नग सीसा, तृ० १ जरा पुनि सीसा। ११. द्वि० ४,६ गगन, द्वि० ३ निरखि। १२. प्र० १, द्वि० २, पं० १ जनु, द्वि० ३ तहँ। १३. प्र० १, च० १ बाँका। १४. द्वि० १, २, ३,५, तृ० २, च० १ उँचाई।

[४१] १. प्र० १ जग। २. तृ० ३ होइ बाजि रथ चूरू, द्वि० ७ हो तबाजि चक चूरू, तृ० १ होइ बाजि कर चूर। ३. तृ० ३ नवौ पवरिं। ५. प्र० १ तेहँ। ६. तृ० ३ जाँघ। ७. प्र० १ जेहिं। ८. तृ० ३ सिंघल। ९. द्वि० २ हस्ति, द्वि० ४ लाइ, द्वि० ७ गयंद। १०. द्वि० १ यहै बान, द्वि० २ यहै जान, द्वि० ७, तृ० ३ बहु बिनान, द्वि० ३, च० १ बहु बनाव। ११. प्र० १ अस गाजहिं। १२. प्र० १ लीलै, तृ० ३ कुंजल। १३. द्वि० २ कीन्हा, तृ० १ खीहा। १४. द्वि० ७ दशम, तृ० १ नवौ। १५. प्र०१, तृ० १, च० १ जो। १६. तृ० २ सिर। १७. प्र० १, च० १ चढ़ै सो, द्वि० ५,६ उतरै।

[४२]

नवौं[1] पँवरि पर[2] दसौं दुआरू। तेहि पर बाज राज घरिआरू।
घरी सो बैठि[3] गनै घरिआरी। पहर पहर सो आपनि[4] बारी[5]।
जबहिं[6] घरी पूजी वह[7] मारा। घरी घरी घरिआर पुकारा[8]।
परा जो डाँड जगत सब डाँड़ा। का निचिंत माँटी कर भाँडा।
तुम्ह तेहि चाक चढ़े होइ काँचे। आएहु फिरै[9] न थिर होइ बाँचे[10]।
घरी जो भरै घटै तुम आऊ। का निचिंत सोवहि रे[11] बटाऊ।
पहरहि पहर गजर नित होई[12]। हिआ निसोगा जाग न सोई[13]।
मुहमद जीवन जल भरन[14] रहँट घरी[15] की रीति।
घरी सो आई ज्यों भरी[16] ढरी जनम गा बीति[17]॥

[४३]

गढ़ पर[1] नीर खीर[2] दुइ नदी। पानी भरहिं जैसे दुरुपदी।
औरु कुंड एक मोंतीचूरू। पानी अंब्रित कीच[3] कपूरू।
ओहि क पानि राजा पै पिआ। बिरिध[4] होइ नहि जौलहि जिआ।
कंचन बिरिख एक तेहि पासा। जस कलपतरु इंद्र कबिलासा।
मूल पतार सरग ओहि[5] साखा। अमर बेलि को पाव को[6] चाखा।

---

[४२] १. द्वि० २,४,५,७, च० १ नव। २. द्वि० ५,६ औ। ३. प्र० १ घरी जो बैठि, द्वि० २ घरी घरी सो। ४. द्वि० १,४,५, तृ० ३ पहर सो अपनी अपनी। ६. द्वि० ४,५, च० १ जौहि, तृ० २ जौहीं (हिंदी मूल) ७. प्र० १ तब। ८. द्वि० ७ (यथा-७) जौलगि देवस अंत नहिं होई। तौ लहि चेत करहु नर लोई। ९. प्र० १ भएउ सो फेर, तृ० ३ आएहु रहैं, द्वि० ३,४, आपहि फिरै, द्वि० ५ अवहि न फिरै, च० १ अवहुँ न भरै। १०. प्र० १ नाहिं फिर बाँचे। ११. प्र० १ अब सोवहु, तृ० ३ हौ सोवहु. द्वि० ४,५ सोवहु जो। १२. द्वि० २ पुनि। १३. प्र० १ हिया वसन काजी गुन सोई, तृ० ३ हिय न सुगाइ जाग नहिं सोई, द्वि० ४ हिया वजर मन जाग न सोई, च० १ तबहुं निसोगा जाग न सोई। १४. द्वि० १ तजमरन, द्वि० ७ दिन भरन। १५. प्र० १ जैसि रहट, द्वि० ३ गवनइ घरी। १६ प्र० १,२ घरी जो आई मरन की। १७. प्र० १ जनम गयो तब बीति, द्वि० ७ जनम गमो तिमि बीति।

[४३] १. प्र० १ तर। २. प्र० १ छीर। ३. द्वि० १ बास, तृ० ३ काँच ४. च० १ बूढ़। ५. प्र० १ गौ। ६. द्वि० २ अस पाव को, तृ० ३ पावै को, तृ० १ को पाव न।

चाँद पात औ फूल तराईं। होइ उजिआर नगर जहँ ताईं[७]।
वह फर पावै तपि कै कोई। बिरिध खाइ नव[८] जोबन होई।

राजा भए भिखारी सुनि वह अंम्रित भोग।
जेइँ पावा सो अमर भा ना किछु[९] व्याधि न रोग ॥

[४४]

गढ़ पर बसहिं चारि[१] गढ़पती। असुपति गजपति औ नरपती[३]।
सब क धौरहर सोनै साजा। औ अपने अपने घर[४] राजा।
रूपवंत धनवंत सभागे। परस पखान[६] पँवरि तेन्ह लागे।
भोग बेरास सदा सब[७] माना। दुख चिंता कोइ जरम न[८] जाना।
मँदिर मँदिर सबकें चौपारी। बैठि कुँवर सब खेलहिं सारी।
पाँसा ढरै खेल भलि[९] होई। खरग दान सरि पूज न कोई।
भाँट बरनि कहि[१०] कीरति भली। पावहिं हस्ति घोर सिंघली।

मँदिर मँदिर फुलवारी[११] चोवा चंदन बास।
निसि दिन रहै बसंत भा[१२] छहु[१३] रितु बारहु मास ॥

[४५]

पुनि चलि देखा राज दुआरू। महिं धूँबिअ पाइअ[१]नहिं बारू[२]।[३]
हस्ति सिंघली बाँधे बारा। जनु सजीव[४] सब ठाढ़ पहारा।

---

७. तृ० १ भर सो नखत बरनौं कहँ ताईं। ८. तृ० ३ तौ। ९. प्र० १, द्वि० ७ तेहि।

[४४] १. प्र० १,२, द्वि० ७, पं० १ भारी। २. द्वि० २, च० १ भुअपती। ३. द्वि० ४ असुपति गजपति नह नरपती. द्वि० ५ असुपति गजपती. भुवनपति औ नरपती। ४. द्वि० ४, च० १ सब। ५. द्वि० ४ पाहन। ६. प्र० १ पाँव तिन्ह, द्वि० ७ पँवारन। ७. तृ० ३ सबै केउ, द्वि० ६ सभै सुख। ८. तृ० ३ कोउ कहूँ न, द्वि० ५, तृ० १ कोई नहिं। ९. तृ० ३ खेड भलि, द्वि० ७ खेज बहु। १०. द्वि० ४ सब। ११. प्र० २ मंदिर मंदिर सब के फुलवारी। १२. तृ० २ होइ। १३. द्वि० ६, हो, द्वि० ३ षट।

[४५] १. द्वि० ५ मास फेर पाइअ, द्वि० ७ महिपति मुखहि पाव। २. पं० १ पारू। ३. द्वि० ६ तेहिपर बाज राज घरिआरू।(४२·१)४ तृ० १ सेवान।

कवनौ[5] सेत पीत रतनारे। कवनौ[5] हरे धूप औ कारे[6]।
बरनहि[7] बरन गगन जस मेघा। औ तिन्ह गगन पीठ[8] जनु[9] ठेघा।
सिंघल के बरने सिंघली। एकेक[10] चाहि सो एकेक[11] बली।
गिरि[12] पहार पब्बै[13] गहि[14] पेलहिं। बिरिख उपारि[15] झारि[16] मुख मेलहिं।
मात निमत सब गरजहिं बाँधे। निसि दिन रहहिं महाउत काँधे।

धरती भार न अँगवै[17] पाँव धरत उठ[18] हालि।
कुरुँभ[19] टूट[20] फन[21] फाटे तिन्ह हस्तिन्ह की चालि।

[४६]

पुनि बाँधे[1] रजबार तुरंगा। का बरनौं जस[2] उन्ह के रंगा।
लील समुंद[3] चाल जग जानै। हाँसुल भँवर किआह बखानै।
हरे[5] कुरंग[6] महुअ बहु भाँती। गुरं कोकाह[7] बलाह[8] सो पाँती[9]।
तीख तुखार चाँड़ औ बाँके। तरपहिं तबहि[10] तायन[11] बिनु हाँके।
मन तें अगुमन डोलहिं बागा[13]। देत[14] उसास गगन सिर लागा।

---

५. द्वि० २, च० १ कोई कोई। ६. प्र० १ अति, द्वि० ५ अस। ७. द्वि० ३ फेरहिं। ८. प्र० १ भार बैठि गगन, द्वि० २,४, ५, ३ उट्ठहिं गगन बैठि। ९. द्वि० ७, च० १ गै। १०. प्र० १ एकहि। ११. प्र० १ एक बड़। १२. च० १ गढ़। १३ प्र० १, द्वि० ५,६, तृ० १.२, च० १ परबत, द्वि० १ परवै, द्वि० ३ हस्ती। १४. प्र० १, द्वि० ४ ५, च० १ कहँ, द्वि० ७ ते। १५. प्र० १, द्वि० ४,५,६ उच्चारि। १६. द्वि० ४ छार। १७. द्वि० ७ न लै सकै। १८. द्वि० २ महि। १९. द्वि० ४ गिरहिं, शेष प्रतियों में कुरुँभ है (यथा ४०.२ हिंदी मूल)। २०. प्र० १ धसै। २१. च० १ मन।

[४६] १. द्वि० ७ बरनौं। २. तृ० ३ हौं। ३. प्र० १ च० १ सुरंग, द्वि० २, तृ० ३ नील। ४. द्वि० ४ चौधर, द्वि० जरदा। ५. द्वि० २ माहरे। ६. प्र० १, च० १ सुपंग। ७. द्वि० २ सक। ८. द्वि० १ बोलै, द्वि० २, तृ० १ बोलाक। ९. प्र० १, तृ० १ सो माती, द्वि० १ तिसु जानैं। १०. द्वि० ४,५, तृ० २, च० १ तौहि (हिंदी मूल), द्वि० ६ टटि। ११. प्र० १ तेज, द्वि० १,६ पाय, द्वि० २ ताय, द्वि० ५ ताजि, द्वि० ७ जाहिं, तृ० ३ जात। १३. द्वि० १,३ आगा, द्वि० २ तुरागा, तृ० ३ राजा, तृ० १ रागा, द्वि० ७, च० १ बेरागा, पं० १ तुरंगा। १४. प्र० १, द्वि० ४ लेत।

पावहिं साँस[१५] समुँद पर[१६] धावहिं। बूड़ न पावँ पार होइ आवहिं[१७]।
थिर न रहहिं रिस लोह चबाहीं। भाँजहि[१८] पूँछि सीस उपराहीं।
असि तुखार सब देखे जनु मन के रथवाह[१९]।
नैन पलक[२०] पहुँचावहिं जहँ पहुँचा कोउ चाह॥

[४७]

राज सभा पुनि[१] दीख बईठी[२]। इंद्रसभा जनु परि गइ[३] डीठी।
धनि राजा असि सभा सँवारी। जानहु फूलि रही फुलवारी।
मुकुट बंध सब[४] बैठे राजा। दर[५] निसान नित[६] जेन्ह के बाजा[७]।
रूपवंत[८] मनि दिपै[९] लिलाटा। माँथें छात[१०] बैठ सब[११] पाटा[१२]।
मानहु कँवल सरोवर[१३] फूलै। सभा क रूप[१४] देखि मन[१५] भूलै।
पान कपूर मेद कस्तूरी। सुगँध बास भरि[१६] रही अपूरी[१७]।
माँझ ऊँच इंद्रासन साजा। गंध्रपसेनि बैठ जहँ[१८] राजा।
छत्र गगन लहि ताकर सूर तवै[१९] जसु आपु।
सभा कँवल जिमि बिगसै माँथे बड़[२०] परतापु॥

[४८]

साजा राजमँदिर कबिलासू[१]। सोने कर सब पुहुमि[२] अकासू[३]।

---

१५. द्वि० ४ पौन समान। १६. द्वि० २ समुँद उड़ावहिं, तृ० ३ गगन कहँ धावहिं। १७. द्वि० ३ पहुँचावहिं। १८. द्वि० ३ धावहि, द्वि० ६ भागी जहि। १९. प्र० १ मनमथ के वाह द्वि० २ इंदर रथवाह। २०. द्वि० २,६ निमिख।

[४७] १. द्वि० ५, पं० १ सब। २. तृ० १ बैठी देखी। ३. द्वि० २ असि आवइ द्वि० ३ जनु जुरी सो। ४. प्र० १ बाँधि कै, द्वि० ७, ३ बाँधि सब। ५. द्वि० ७ धन, द्वि० ३ द्वार। ६. प्र० १, द्वि० २, ५, ६, तृ० १, ३, पं० १ सब। ७. द्वि० ५, ७ साजा। ८. तृ० १ दरपवन्त। ९. प्र० २ धनवंत। १०. तृ० ३ छत्र। ११. प्र० १, द्वि० ६ निति। १२. द्वि० ५ राजा। १३. च० १ हाथ कँवल जस सरवर। १४. द्वि० ७ ब्रह्मा जस रूप, च० १ भाग सुरूप। १५. प्र० १ देवता, द्वि० २ देखि जनु, तृ० ३ देखि सब। १६. द्वि० ४, तृ० १, च० १ सब, द्वि० ६ निति। १७. द्वि० ३ भरिपूरी। १८. प्र० १, द्वि० २, ५, ६, तृ० १ बैठ तहँ, पं० १ बैठ बड़। १९. द्वि० ५ दिपै। २०. प्र० १ मनि।

[४८] १. प्र० १, तृ० ३ रनिवासू। २. द्वि० ३ धरति, द्वि० ७ मंदिल।

सात खंड धौराहर साजा। उहै सँवारि सकै अस राजा।
हीरा ईंट कपूर गिलावा। औ नग लाइ सरग लै[4] लावा[5]।
जाँवत सबै उरेह उरेहे। भाँति भाँति नग[6] लाग उबेहे।
भा कटाव सब अनबन[7] भाँती। चित्र होत गा[8] पाँतिहि पाँती[9]।
लागे खंभ मनि मानिक जरे। जनहु दिया दिन आछत[10] बरे[11]।
देखि धौरहर कर उँजियारा। छपि[12] गे चाँद सूर औ तारा।
सुने[13] सात बैकुंठ जस तस साजे खँड सात।
बेहर बेहर भाउ तेन्ह[14] खँड खँड ऊपर[15] जात[16]॥

[४६]

बरनौं राज मंदिर[1] रनिवासू। अछरिन्ह भरा जानु[2] कबिलासू।
सोरह सहस पदुमिनी रानीं। एक एक तें रूप बखानीं।
अति सुरूप औ अति सुकुवारा। पान फूल के रहहिं अधारा।
तिन्ह ऊपर चंपावति रानी। महा सुरूप पाट परधानी।
पाट बैसि रह किए सिंगारू। सब रानी ओहि करहिं जोहारू।
निति नव[3] रंग सुरंगम सोई। प्रथमै बैस[4] न सरबरि कोई।
सकल[6] दीप महँ चुनि चुनि आनी[7]। तेन्ह महँ दीपक[8] बारह बानी[9]।

---

३. प्र० १ अबासू। ४. तृ० १ पै। ५. प्र०१ मलयागिरि चंदन सब लावा। ६. प्र० १, तृ० ३ सब। ७. द्वि० ४, ५, च० १ अनवन (हिंदी मूल)। ८. प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, च० १ कटाव सो, तृ० ३ गोटिका, प्र० २ उरेहा, तृ० २ अनेग सो। ९. प्र० १, द्वि० २, ६ भाँतिहि भाँती। १०. प्र० २ निसि दिन ही दीपक जनु, तृ० २ जनहुँ दिया दिन निसि कहँ द्वि० ३ जानहुँ दिया रैनि दिन। ११. द्वि० ४, ६ धरे। १२. च० १ झपि। १३. द्वि० ५ साजे। १४. द्वि० २, ३, ५, ६, तस। १५. द्वि० ६ तस। १६. द्वि० २, ४, ३ छात। १७. तृ० ३ में, ४,. ५ के पहले चरण और ६,. ७,. ८,.९ छूटे हुए हैं।

[४९] १. प्र० १ राजा कर। २. तृ० ३ जनहुँ। ३. द्वि० ७ अति नौरंग, च० १ निति तन रंग। ४. द्वि० ६ प्रथमै बासन, द्वि० ७ प्रीति मानहि तोहि, तृ० २ परथम तैसन, च० १ प्रथमै अइस। ५. तृ० ३ होई। ६. द्वि० ४, ५, च० १ सिंघल। ७. द्वि० ४ सुनी जो रानी, द्वि० ५, च० १ जेतनी रानी, द्वि० ६ रही जो रानी, तृ० १ जनी सो रानी। ८. द्वि० ५ कंचन। ९. पं० ५ (यथा-३) सकल दीप महं जो उजिआरी। चुनि चुनि लीन्हि आप सो नारी.

कुअँरि बतीसौ लक्खनी[१०] अस सब माँह अनूप।
जाँवत सिंघल दीपइ[१२] सबै बखानइ[१३] रूप॥

[५०]

चंपावति जो रूप उतिमाहाँ। पदुमावति कि जोति मन छाहाँ[१]।
भै चाहै असि कथा सलोनी[२]। मेंटि न जाइ लिखी[३] जसि होनी।
सिंघल दीप भएउ तब[४] नाऊँ। जौं अस दिया दीन्ह[५] तेहि ठाऊँ।
प्रथम सो जोति गगन निरमई। पुनि सो पिता माथें मनि भई।
पुनि वह जोति मातु घट आई। तेहि ओदर आदर बहु[६] पाई।
जस औधान पूर[७] होइ तासू। दिन दिन हिएँ[८] होइ परगासू।
जस अंचल झीनें[९] महँ दिया। तस उजियार देखावै हिया।
सोनै मँदिर[१०] सँवारै औ चंदन[११] सब लीप।
दिया जो मनि सिव लोक महँ[१२] उपना[१३] सिंघलदीप॥

[५१]

भए दस मास पूरि भै[१] घरी। पदुमावति कन्या औतरी।
जानहु सुरुज किरिन हुति[२] काढ़ी। सूरुज करा घाटि वह बाढ़ी।
भा निसि माँह दिन क[३] परगासू। सब उजिआर भएउ कबिलासू।

---

१०. तृ० ३ बन्त सुलच्छनि। १२. द्वि० २, ३, तृ० ३, सिंघल दीप महँ, तृ० २ सिंघल दीप है। १३. प्र० १, द्वि० ७ सराहहिं, द्वि० ३ भुलाने, च० १ छपातइ।

[५०] १. प्र० १, द्वि० ६ चंपावति रूपवंती माहाँ। पदुमावति कि जोति मन छाहाँ। द्वि० १, ३, ५ चंपावति जो रूप मनि ताहाँ। पदमावति सो तेहि की छाँहाँ। (द्वि० ५ की जोति की छाहाँ।) द्वि० ७ चंपावति सो नाव सोहाई। पदुमावति भई तेहि की जाई। २. प्र० १ कन्या अति लोनी, द्वि० ६, तृ० २ असि कथ्था लोनी, तृ० ३ अति कथा सलोनी। ३. तृ० ३ कथा। ४. प्र० १ तस। ५. द्वि० ४, ६ दीपक भा, तृ० ३ दिया दीप, द्वि० ५ दिया जरा, पं० १ दिया दिपहिं। ६. द्वि० २ सो। ७. तृ० ३ रूप। ८. च० १ व। ९. द्वि० ५ महँ छिपाए। १०. तृ० ३ सोनै सब मँदिर। ११. द्वि० १ सोनै सब। १२. प्र० १ मान सेवक महँ, द्वि० ६ तिहूँ लोक महँ। १३. प्र० १, तृ० ३ उपसा।

[५१] १. प्र० १ पूजिअब, द्वि० ४ पूरि वह, द्वि० ७ पुनी भौ, पं० १ पूरि जब। २. प्र० १, द्वि० ७ तै, पं० १ सो। ३. द्वि० २ दीपक।

अतें रूप मूरति[४] परगटी। पूनिउँ ससि सो[५] खीन होइ[६] घटी।
घटतहिं घटत अमावस भई। दुइ दिन लाज गाड़ि[७] भुइँ गई।
पुनि जौं उठी दुइजि होइ नई[९]। निहकलंक ससि[१०] बिधि निरमई[११]।
पदुम गंध बेधा जग बासा। भँवर पतंग भए[१२] चहुँ पासा।
अतें रूप[१३] भइ कन्या[१४] जेहि सरि पूज न[१५] कोइ।
धनि सो देस[१६] रुपवंता जहाँ जनम अस होइ॥

[५२]

भइ छठि राति छठी सुख मानी। रहस कोड सों रैनि बिहानी।
भा बिहान पंडित सब[१] आए। काढ़ि पुरान[२] जनम अरथाए।
उत्तिम घरी जनम भा तासू। चाँद उवा भुइँ दिपा अकासू।
कन्या रासि उदौ[३] जग किया[४]। पदुमावती[५] नाउँ जिसु[६] दिया[७]।
सूर परस सों भएउ किरीरा[७]। किरिन जामि उपना[८] नग हीरा[९]।
तेहि तें अधिक पदारथ करा। रतन जोग[१०] उपना निरमरा[११]।
सिंघल दीप भएउ अवतारू[१२]। जंबू दीप जाइ जम बारू[१३]।
रामा आइ अजोध्याँ उपने[१४] लखन बतीसौ संग।
रावन राइ रूप सब[१५] भूलै दीपक जैस पतंग॥

---

४. द्वि० ६ उत्तिम रूप सुरति च० १ अते रूप पदुमिनि। ५. प्र० १ कला। ६. प्र० १ औ। ७. प्र० १ लाज पकरि, द्वि० १ खीन लाज। ८. प्र० १ मरि गई, च० १ भुइँ रही। ९. प्र० १ की नाई, द्वि० ५, होइ आवेइ, द्वि० ७ दिन आई, तृ० १ होइ जोती। १०. द्वि० १ सो, पं० १ अति। ११. तृ० १ निरमोती। १२. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २, च० १ भवहिं द्वि० २ फिरहिं। १३. प्र० १ अति सुरूप। १४. द्वि० ७ भइ परगट कन्या। १५. द्वि० ५ जेहि सरूप नहिं। १६. प्र० १ दीप।

[५२] १. द्वि० ७, तृ० ३ जन। २. द्वि० ३ काढ़ि गरंथ, तृ० २, च० १ पोथा काढ़ि। ३. द्वि० २ दो उ, तृ० १ गरू, च० १ नाऊँ। ४. द्वि० ३ कीन्हा, दीन्हा। ५. द्वि० १ पदुमावति रासिक, तृ० १ पदुमिनि रासि। ६. प्र० १, २ नाऊँ भा, द्वि० ३ माना तेहि। ७. द्वि० ४, ५ गुरीरा। ८. तृ० ३ उपमा। ९. प्र० १ निरमरा। १०. द्वि० १, ६, तृ० २ जोति। ११. द्वि० ४, पं० १ माथें मनि बरा। १२. द्वि० २, ७, ३ अवतारा, जमुआरा। १३. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २, ३ आए अजोध्या। १४. प्र० १, द्वि० ५ रावरूप, तृ० १ देखि सबहि, द्वि० १ राइ रूप। १५. प्र० १, पं० १ तस, द्वि० ४ सत, तृ० १ वह।

[५३]

ही जनम पत्री सो[1] लिखी। दै असीस बहुरे[2] जोतिषी।
च बरिस महँ[3] भई सो बारी[4]। दीन्ह[5] पुरान पढ़ै बैसारी[6]।
पदुमावति पंडित गुनी। चहूँ खंड के राजन्ह सुनी।
घल दीप राज घर बारी। महा सुरूप दैयँ औतारी।
n पदुमिनि औ पंडित पढ़ी। दहुँ केहि जोग दैयँ असि[7] गढ़ी।
कहँ लिखी लच्छि घर[8] होनी। असि[10] सो पाव पढ़ी औ लोनी।
[11] दीप के बर जो ओनाहीं[12]। उतर न पावहिं फिरि फिरि जाहीं।[13]

राजा कहै गरब कै हौं रे इंद्र सिवलोक।
को सरि मोसौं प.वै कासों करौं बरोक॥

[५४]

रह बरिस माँह भइ[1] रानी। राजैं सुना सँजोग सयानी।[2]
त खंड धौराहर तासू। पदुमिनि कहँ सो[3] दीन्ह नेवासू।[4]
दीन्हीं संग[5] सखी सहेली। जो सँग[6] करहिं रहस[7] रस[8] केली।
नवल पिय संग न सोईं। कँवल पास जनु बिगसहिं[9] कोईं।
मा एक पदुमावति ठाऊँ। महा पंडित हीरामनि नाऊँ।
दीन्ह पंखिहि असि जोती। नैन रतन[10] मुख मानिक मोंती।

५३] १. द्वि० १, ७, तस, तृ० ३ जो। २. द्वि० २, ४, ५, तृ० ३, च० १ आसीस फिरे। ३. प्र० १ कइ। ४. द्वि० ५, जो बारी च० १ जो रानी। ५. द्वि० ३ बेद। ६. प्र० १, तृ० ३ बैठारी। ७. प्र० १, द्वि० ५, तृ० २ गोसाईं। ८. च० १, तिंही कहँ। ९. द्वि० १ जा कहँ लिखी होइ असि होनी। १०. द्वि० १ ससि। ११. द्वि० १ सकल। १२. द्वि० १ वर जो ओराहीं, तृ० ३ बरेखो आवहिं, द्वि० ४ बरए आवहिं, द्वि० ६ बरै ओनाहीं, द्वि० ७ बर ओहि आवहिं, तृ० २ बर जो अवाहीं। १३. द्वि० ४, तृ० ३ फिरि फिरि जाहिं उतर नहिं पावहिं, द्वि० ७ उतर न पावहिं फेरि सिधावहिं।

५४] १. द्वि० ४ महँ भई सो। २. द्वि० १ बारह बरिस महँ भइ सो बारी। धुजा धौरी और करी सँवारी।(५५. १) ३. प्र० १ पदुमावति कहँ। ४. द्वि० ५ अवासू, तृ० १ सुवासू। ५. प्र० १ औ दीन्हीं सब, द्वि० २ ओनहिन सँग पुनि। ६. प्र० १ निसि दिन। ७. द्वि० ६ रहहिं करहिं। ८. द्वि० ४ औ। ९. प्र० १ जस बिगसीं, च० १ जैसे सब। १०. च० १ रकत।

कंचन बरन सुआ अति लोना। मानहु मिला सोहागहि सोना।
रहहिं एक सँग दोऊ[१२] पढ़हिं सास्तर[१३] बेद।
ब्रह्मा सीस डोलावहिं सुनत लाग तस भेद॥

[५५]

भइ ओनंत[१] पदुमावति बारी। धज धौरैं सब करी[२] सँवारी।
जग बेधा तेइ अंग सुबासा। भँवर आइ लुबुधे चहुँ पासा।
बेनी नाग मलैगिरि पीठी[३]। ससि माँथे होइ दुइजि बईठी।
भौहैं धनुक साँधि सर[४] फेरी। नैन कुरंगिनि भूलि जनु[५] हेरी।
नासिक कीर[६] कँवल मुख सोहा[७]। पदुमिनि रूप देखि जग मोहा[८]।
मानिक अधर दसन जनु[९] हीरा। हिअ हुलसै कुच कनक जँभीरा।
केहरि लंक गवन गज हरे। सुर नर देखि माथ भुइँ धरे।
जग कोइ दिस्टि न आवै आछहिं नैन[१०] अकास।
जोगी जती सन्यासी[११] तप साधहिं तेहि आस॥

[५६]

राजै सुना दिस्टि भइ आना। बुधि जो देइ सँग सुआ सयाना।
भएउ रजाएसु मारहु सुआ। सूर सनाव[१] चाँद जहँ[२] उआ।
सतुरु सुआ के नाऊ बारी। सुनि[३] धाए जस धाव मँजारी।
तब[४] लगि रानी सुआ छपावा। जब[४] लगि आइ मँजारिन्ह[५] पावा।

---

१२. तृ० १ दूनौ। १३. तृ० ३ सास्त्र औ।

[५५] १. प्र० १ अनंद, द्वि० २,४ अनंत, तृ० १, ३ उतपति, द्वि० ५ अतंत, द्वि० ३ अवस्था। २. द्वि० ५ रचि रचि विधि सब कला। ३. तृ० २ अब उजिआर भई जग दीठी। ४. द्वि० ४ सांत सत। ५. प्र० १, तृ० ३ जेइँ। ६. द्वि० ६ सुवा। ७. प्र० १, च० १ सोभा। ८. प्र० १ च० १, लोभा। ९. प्र० १, द्वि० ७ नग। १०. द्वि० ४ चतुरहँ नैन, द्वि० ५ अछरिन्ह होइँ, तृ० २ आजों नैन। ११. द्वि० ३ जोगी जती तपा सन्यासी, पं० १ जोगी तपी सन्यासी।

[५६] १. प्र० १ सूर न सुनै, द्वि० ४ सूर न आय, द्वि० ५ सूरइ सुना, द्वि० ६ सूर न आव, द्वि० ७ सूर नाम। २. द्वि० २ जस, तृ० ३ जेउँ। ३. प्र० १ अस। ४. तृ० ३ तौ, जौ (हिंदी मूल)। ५. तृ० ३ जौ लहि ब्याधा आइ न।

पिता क आएसु माँथे मोरे। कहहु जाइ[६] विनवै कर जोरे।
पंखि न कोई[७] होइ सुजानू। जानै भुगुति कि जान उड़ानू।
सुआ जो पढ़ै पढ़ाए बैना। तेहि कत बुधि[८] जेहि हिएँ न नैना[९]।
मानिक मोति देखावहु हिएँ न ग्यान करेइ।
दारिवँ दाख जानि कै[१०] अबहिं[११] ठोर भरि[१२] लेइ॥

[५७]

वै तौ फिरे उतर अस पावा। बिनवा सुअैं हिएँ डरु खावा।
रानी तुम्ह जुग जुग सुख आऊ। हौं अब[१] बनोबास[२] कहँ जाऊँ[३]।[४]
मोंतिहि[५] जौं मलीन होइ करा। पुनि सो पानि कहाँ निरमरा।
ठाकुर अंत चहै जौं[६] मारा। तहँ[७] सेवक कहँ कहाँ उबारा।
जेहि घर काल मँजारी नाचा। पंखी नाउँ जीउ नहिं बाँचा[८]।
मैं तुम्ह राज बहुत सुख देखा। जौं पूँछहु दै जाइ न लेखा।
जो इंछा मन कीन्ह सो जेंवा। भा पछिताउ चलेउँ बिनु सेवा।
मारै सोइ निसोगा[९] डरै न अपने दोस।
केला[१०] केलि करै का जौं भा बैरि परोस॥

[५८]

रानी उतर दीन्ह कै मया[१]। जौं जिउ जाइ रहै किमि कया[१]।

---

६. द्वि० २ कहि न जाइ। ७. प्र० १ न होखे (भोजपुरी प्रभाव)। ८. तृ० ३ जीभ। ९. प्र० १ हिए कत नैना, तृ० ३ हिए हो नैना। १०. द्वि० ५ छाड़ि कै, द्वि० ७ देखि कै। ११. प्र० १ अजहुँ, प्र० २ १ द्वि० ३, ५ च० १ अंब, द्वि० २ नींब, द्वि० ४ ऊभि, द्वि० ७, तृ० १ तबहिं, पं० १ आपु। १२. प्र० १ रखि, च० १ कइ।

[५७] १. द्वि० २, तृ० २ हौं पंखी, द्वि० ५ होइ अग्याँ। २. द्वि० ४ दास बनौं, द्वि० ८ बचलौं बास। ३. तृ० ३ गहि पाऊँ। ४. द्वि० ६ हौं रे दास तबौं कह बाऊ। ५. तृ० १ तहँ तुम्ह। ६. प्र० १, द्वि० ४, ५, च० १ जेहि। ७. द्वि० २ वहि। ८. द्वि० २, च० १ न पाँखौं, द्वि० ७ जीव सो, द्वि० ३ जीउ कहँ। ९. तृ० ३ न सुअटा, तृ० २ सो का डरै। १०. तृ० ३ अकेला।

[५८] १. प्र० १, द्वि० १, तृ० ३ माया काया। २. प्र० १, द्वि० २, ४, च० १ तोहि सेवा बिछुरत, द्वि० १ तोहितें बिछुरन मैं, द्वि० ३ तोहि कौं बिछुरन हौं।

हीरामनि तूँ प्रान परेवा। धोख न लाग करत तोहि सेवा।
तोहि सेवा बिछुरन[2] नहि आखौं। पींजर हिए घालि तोहिं[3] राखौं।
हौं मानुस तूँ पंखि पिआरा। धरम पिरीति तहाँ को मारा।
का सो[4] प्रीति तन[5] माहँ बिदाई[6]। सोइ प्रीति जिअ साथ जो जाई।
प्रीति भार लै हिएँ न सोचू। ओहिं पंथ भल होइ कि पोचू[7]।
प्रीति पहार भार जौं काँधा। सो कस[8] छूट लाइ जिअ[9] बाँधा।

सुआ न रहै खुरुक जिअ अबहिं काल सो आउ।
सतुरु अहै[10] जो करिआ कबहुँ सो[11] बौरै नाउ॥

[५६]

एक देवस कौनिउँ[1] तिथि आई। मानसरोदक[2] चली अन्हाई[3]।
पदुमावति सब सखीं बोलाईं। जनु फुलवारि सबै चलि आईं।
कोइ चंपा कोइ कुंद सहेलीं[4]। कोइ सुकेत[5] करना रस बेली[6]।
कोइ सु गुलाल सुदरसन[7] राती। कोइ बकौरि बकचुन बिहँसाती[8]।
कोई सु बोलसरि[10] पुहुपावती। कोइ जाही जूही सेवती[11]।
कोइ सोनजरद जेउँ[12] केसरि। कोइ सिंगारहार नागेसरि।
कोइ कूजा[13] सदबरग चँबेली। कोई कदम सुरस रस बेली[14]।[15]

---

३. प्र० १. द्वि० २, ५, कै। ४. द्वि० १ गयो। ५. द्वि० १ मन, तृ० ३ छिन, च० १ जहँ। ६. द्वि० १, २, ४, ५, ६, ७, तृ० २, च० १, पं० १ बिलाई, द्वि० ३ मिलाई। ७. द्वि० ४ मोचू। ८. द्वि० ४ ततकत। ९. प्र० १ चित। १०. प्र० १ होइ। ११. द्वि० ४, ५, ६, पं० १ कौहु (हिंदी मूल) सो, द्वि० १ कबहुँ तो, तृ० ३ कहूँ सो, च० १ सोपै।

[५६] १. द्वि० ३, तृ० १ पून्यो। २. प्र० १, द्वि० १, ५, पं० १ सरोवर। ३. प्र० २ तृ० ३ नहाई। ४. च० १ नेवारी, द्वि० १, ७, तृ० २, पं० १ चँबेली। ५. प्र० २ केत, द्वि० ७, तृ० ३, केतुकि। ६. च० १ रस-बारी। ७. प्र० २ सद बरगजु। ८. द्वि० ३ बकौरि कंचन बिहसाती, द्वि० १ बकाउरि भुगुचुन बिहसाती, द्वि० ७ बकाउरि कच्च बिहसाती। द्वि० २ बकाउरि बकचुन भाती, तृ० ३ बिकाउ बकचुन बिहसाती, द्वि० २, ४ सुबकाउरि बकचुन भाती। १०. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३, पं० १ भौलसिरि। ११. प्र० १ मालती। १२. प्र० १, २ जिमि, द्वि० २ जस, तृ० २ जनु। १३. द्वि० ७, तृ० ३ कुंद। १४. द्वि० ३, ७, तृ० २, ३ सुरस रस केली, च० १ सुरस रस बेली. पं० १ पनवारी बेली। १५. द्वि० १ कोइ सो गुलाल सुदरसन कूजा। कोइ सो बसंत पाव भल पूजा।

चलीं सबै मालति सँग फूले[16] कँवल कमोद[17]।
बेधि रहे[18] गन गंध्रप बास परिमलामोद[19] ॥

[६०]

खेलत मानसरोवर[1] गईं। जाइ पालि[2] पर ठाढ़ी भईं।
देखि सरोवर रहसहिं केली[3]। पदुमावति सौं कहहिं सहेलीं।
ऐ रानी मन देखु बिचारी। एहि[4] नैहर रहना दिन चारी।
जौ लहि अहै[5] पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु[6] आजू।
पुनि सासुर हम गौनब काली। कित हम कित एह सरवर[7] पाली[8]।
कित आवन[9] पुनि अपने हाथाँ। कित मिलिकै खेलब एक[10] साथाँ।
सासु नँनद बोलिन्ह जिउ लेहीं[11]। दारुन[12] ससुर न आवै[13] देहीं।

पिउ पिआर सब[14] ऊपर सो पुनि करै दहुँ[15] काह।
कहुँ सुख राखै की दुख[16] दहुँ कस[17] जरम निबाहु ॥*

[६१]

सरवर तीर पदुमिनीं आई। खोंपा छोरि केस मोकराईं[1]।

---

१६. प्र० २ फूला, द्वि० १ आनहु। १७. द्वि० १ कुमेद, बेध। १८. प्र० २ रहा। १९. प्र० १, तृ० १ परीमल मोद, द्वि० ६, तृ० ३, पं० १ परमदामोद, द्वि० ७ जो परम अमोद।

[६०] १. द्वि० २, च० १ सरोदक। २. द्वि० २, ६ ताल, द्वि० ३ पार। ३. द्वि० ४ हँसी कुलेलीं, द्वि० ५ हियँ कुलेलीं, तृ० १ करहिं जो केलीं। ४. द्वि० ४ तहँ। ५. प्र० १, २, द्वि० ३ आहि। ६. तृ० ३ खेलहु खेलि लेहु। ७. प्र० १ नैहर एह। ८. प्र० २ आली, द्वि० २, ४, ६ ताली। ९. प्र० १, २ आउब, तृ० ३ खेलन। १०. द्वि० १ खेलै पाउब, द्वि० ३, तृ० ३ खेलै आउब, द्वि० ५ मिलि कै आउब एक। ११. प्र० २ बोलब दुख देईं। १२. च० १ देवर। १३. प्र० १, द्वि० ३, ५ निसरै, तृ० १ उत्तर। १४. द्वि० १ जग। १५. द्वि० ४, तृ० ३ सेउ दहूँ करैं। १६. प्र० १, २, द्वि० ६ दहुँ सुख राखै कै दुखी, तृ० ३ कै दुख राखै कै सुख, द्वि० ५ तहँ सुख राखै कै दुख। १७. प्र० १ कस होइ।

*द्वि० ३, तृ० १, २, ३, च० १, में यहाँ एक अतिरिक्त छंद है, और प्र० १, २ में उससे भिन्न दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६१] १. द्वि० ४, ५ बिखराईं, च० १ मुँगराईं।

ससि मुख अंग मलैगिरि रानी[2] । नागन्ह झाँपि लीन्ह अरधानी[3] ।
ओनए मेघ[4] परी जग छाहाँ । ससि की सरन[5] लीन्ह जनु राहाँ[6] ।
छपि गै दिनहि[7] भानु कै दसा । लै निसि नखत चाँद[8] परगसा ।
भूलि चकोर दिस्टि तहँ[9] लावा[10] । मेघ घटा महँ[11] चाँद देखावा[12] ।
दसन दामिनी कोकिल भाषीं । भौहैं धनुक गगन लै राखीं ।
नैन खाँजन[13] दुइ केलि करेहीं[14] । कुच नारँग मधुकर रस लेहीं[14] ।

सरवर रूप बिमोहा हिएँ हिलोर करेइ[15] ।
पाय छुअइ मकु पावौं तेहि मिसु[16] लहरैं देइ[17] ॥*

[६२]

धरीं तीर[1] सब[2] छीपक[3] सारीं[4] । सरवर महँ पैठी[5] सब[6] बारी[7] ।
पाएँ नीर[8] जानु सब बेलीं[9] । हुलसी करहिं[10] काम कै केलीं ।
नवल बसंत सँवारहि[11] करीं । होइ परगट चाहहिं[12] रस भरीं ।
करिल[13] केस बिसहर[14] बिसभरे[15] । लहरैं[16] लेहि कँवल मुख धरे ।
उठे कोंप जनु दारिवँ दाखा । भई ओनंत[17] प्रेम कै साखा ।

---

२. द्वि० ४, ६, पं० १ बासा, चहुँपासा । ३. प्र० १ कनक सुगंध दुआदस बानी । ४. द्वि० ५ ओनई घटा । ६. तृ० ३ तहाँ । ७. तृ० ३ गा दीन । ८. प्र० १ भइ निसि चाँद नखत । ९. प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, तृ० २ मन, द्वि० ३, तृ० ३ तेहि, द्वि० ४ मुख । १०. तृ० १ आवा । ११. द्वि० १ निसि, तृ० ३, पं० १ तर, द्वि० ४ मुख, द्वि० ५ बर, तृ० १ नव । १२. द्वि० १ छपावा । १३. प्र० २ औ खंजन । १४. द्वि० २ कराहीं । दहुँ वह रस कोउ पावा नाहीं । १५. च० १ हिलोरैं लेइ । १६. प्र० १, द्वि० २, ४, तृ० १ एहि मिसु, द्वि० ५ तनमन, द्वि० ६ एहि मन । १७. प्र० १, द्वि० ३, ४, तृ० १ लेहें ।

*तृ० २ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं । (देखिये परिशिष्ट)

[६२] १. प्र० २ उतारि, च० १ छोरि । २. प्र० १ लै । ३. प्र० १, २, द्वि० ७ कंचुकि, तृ० २, पं० १ चंपक, द्वि० २, ३, ४, तृ० १, ३ चुनि कै । ४. द्वि० १ तीर उतारि धरीं सब सारीं । ५. प्र० १, २, द्वि० ४ माँह पैठि । ६. प्र० २ बर । ७. द्वि० २, ६ नारीं । ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, च० १ पानी तीर, द्वि० २ ३, पाएँ तीर । ९. द्वि० १ पानी माँझ जो रहीं सहेलीं, द्वि० ७ पाइ नीर जइ सबै सहेली । १०. द्वि० ३, च० १ हुलसीं कली, द्वि० २ हाँसहिं करहिं, तृ० २ रहसी करहिं । ११. द्वि० ६ नवल कै । १२. द्वि० २, ५, ३ जानहु, द्वि० ६ जो आहिं । १३. द्वि० २ करले, द्वि० ४ काले, तृ० १ करन । १४. तृ० ३ बिहरा । १५. द्वि० २ तस । १६. द्वि०२ बहुरैं ।

सरवर नहिं[१८] समाइ[१९] संसारा। चाँद नहाइ[२०] पैठ लिए तारा।
धनि[२१] सो नीर ससि[२२] तरईं उईं[२३]। अब कत[२४] दिस्टि कँवल औ कुईं[२३]।

चकई बिछुरि पुकारै कहाँ मिलहु[२५] हो नाँह।
एक चाँद निसि सरग पर दिन दोसर जल माँह॥

[६३]

लागीं केलि[१] करै मँझ नीरा। हंस लजाइ बैठ होइ[२] तीरा।
पदुमावति कौतुक करि[३] राखी। तुम्ह ससि[४] होहु तराइन साखी।
बादि मेलि कै खेल पसारा। हारु देइ जौं खेलत हारा।
सँवरिहि साँवरि गोरिहि गोरा। आपनि आपनि लीन्हि सो जोरी[५]।
बूझि खेल खेलहु एक साथा। हारु न होइ पराएँ हाथा।
आजुहि खेल बहुरि कित होई। खेल[६] गएँ[७] कत खेलै[८] कोई।
धनि सो खेल खेलहि[९] रस पेमा। रौताई औ कूसल[१०] खेमा।

मुहमद बारि[११] परेम की जेउँ भावै तेउँ खेलु।
तीलहि फूलहि[१२] संग जेउँ[१३] होइ[१४] फुलाएल तेल॥

[६४]

सखी एक तेइँ खेल[१] न जाना। चित अचेत भइ[२] हार गँवाना।

---

१७. प्र० २, द्वि० २ अनंत, द्वि० ४ उतपति, द्वि० ५ अतिश्रांत। १८. प्र० १, २, द्वि० ४, ६ महँ, च० १ महँ न। १९. प्र० १ समान। २०. तृ० २, द्वि० ३ अन्हाइ। २१. द्वि० ७ कै। २२. द्वि० २ जस। २३. प्र० १, २ उईं तराईं, उगाईं। २४. तृ० १ देखत। २५. द्वि० ४, तृ० ३ मिलौं हो, प्र० १, द्वि० ३ मिलन हो।

[६३] १. तृ० ३ केरि। २. प्र० १ गो, प्र० २, द्वि० २, ३ तेहि। ३. द्वि० २, ७ तृ० ३, च० १, पं० १ कहँ, द्वि० ४, ६, तृ० २ कह। ४. प्र० १, द्वि० १ सीख। ५. प्र० १, २, तृ० १ जो जेहिं जोग सो तेहिं कर जोरी, द्वि० १ जेहिं जस बनी सो तेहिं कर जोरी, द्वि० ७ चुनि चुनि लेही सो आपनि जोरी। ६. तृ० ३ खेलि। ७. प्र० २ लेहु। ८. द्वि० ४ खेलइ। ९. तृ० ३ खेल १०. प्र० १ द्वि० ५ कूसर। ११. द्वि० ४ बाजी। १२. द्वि० ७ कुरलहिं। १३. प्र० १ संगही, प्र० २ जो संग है, द्वि० ३ संगभा। १४. द्वि० ३ नाउँ।

[६४] १. प्र० २, द्वि० ५ खेलि। २. प्र० २ भइ अचेत तब, द्वि० २ भइ अचेत जब, तृ० ३ भइ अचेत मन।

कँवल डार गहि[3] भै बेकरारा[4]। कासौं[5] पुकारौं आपन हारा।
कत खेलै आइउँ एहि[6] साथाँ[7]। हार गँवाइ चलिउँ सैं हाथाँ[8]।
घर पैठत पूँछब एहि[9] हारू। कौनु उतर पाउबि[10] पैसारू।
नैन सीप आँसुन्ह तस भरे। जानहु मोंति गिरहिं[11] सब[12] ढरे[13]।
सखिन्ह कहा भोरी कोकिला। कौनु पानि जेहि पौनु न मिला।
हारु गँवाइ सो असैसेहिं रोवा। हेरि हेराइ लेहु जौं खोवा।

लागीं सब मिलि हेरै बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोई उठी[14] मोंति लै घोंघा[15] काहू हाथ॥

[६५]

कहा मानसर चहा[1] सो पाई[2]। पारस रूप इहाँ लगि[3] आई[4]।
भा निरमर तेन्ह पायन्ह परसें[5]। पावा रूप रूप कें[6] दरसें[7]।
मलै समीर बास तन[8] आई। भा सीतल गै[9] तपनि बुझाई।
न जनौं[10] कौनु पौन[11] लै आवा। पुन्नि दसा[12] भै पाप गँवावा[13]।
ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना।

---

३. द्वि० ३ सो। ४. तृ० ३ कहँ भौ किरारा (उर्दू मूल)। ५. प्र० २ कासुँ, तृ० ३ कासु, तृ० १ काहि। ६. द्वि० २, ७, च० १ तेहिं, द्वि० ५ एक। ७. द्वि० ७ मायाँ। ८. द्वि० ७, तृ० १, ३ साथाँ। ९. प्र० १ जब, द्वि० ४ तेहिं, द्वि० ३ कहँ। १०. प्र० २ देवै, द्वि० ४, तृ० १ पाउर, च० १ पाउब। ११. प्र० १ गोंद, प्र० २ करहु, द्वि० ५ करहि। १२. प्र० २ रस भरे, द्वि० ४ तस ढरे, द्वि० ७ हिश्र ढरे। १३. द्वि० २ तृ० २—सीपि फूटि जिमि मोंती झरे, पं० १ नैनन्ह नीर ढरे तेहिं जोती जनहु मंद कहि टूटहिं मोती। १४. प्र० १ निकरा, प्र० २ उठा, तृ० ३ उठै। १५.प्र० १, तृ० २, ३, च० १ घोंघी।

*प्र० १, २ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६५] १. प्र० १, २ द्वि० ७ चाह, तृ० १ जहाँ। २. प्र० १, २ पावा, द्वि० ४ तृ० १ पानी। ३. द्वि० १ इहवाँ चलि, तृ० ३ इहाँ सो, द्वि० ४ होइ बैठी, तृ० १ इहाँ यक, च० १ इहाँ लहि, द्वि० २ जहाँ लगि। ४.प्र० १ आवा, द्वि० ४, तृ० १ रानी। ५. पं० १ परसन, दरसन। ६. तृ० ३ रूप केर, द्वि० १ आपु जब। ७. प्र० १ तहँ, प्र० २ तब, तृ० ३ तस। ८. तृ० ३ तन। ९. तृ० ३ जानी। १०. द्वि० १ पाप, तृ० ३ रूप। ११. तृ० ३ सदा। १२. तृ० ३ नसावा। १३. द्वि० ५ बिकसा कँवल।

बिगसे कुमुद[14] देखि ससि रेखा। भै तेहिं रूप[15] जहाँ जो देखा[16]।
पाए रूप रूप जस चहे[17]। ससि मुख सब[18] दरपन होइ रहे[19]।

नैन जो देखे कँवल भए[20] निरमर नीर[21] सरीर।
हँसत जो देखे हंस भए[22] दसन जोति[23] नग हीर॥

[६६]

पदुमावति तहँ[1] खेल धमारी[2]। सुआ मँदिर महँ देखि[3] मँजारी।
कहेसि चलौं जौं लहि तन पाँखा। जिउ लै उड़ा ताकि बन ढाँखा।
जाइ परा बनखँड जिउ[4] लीन्हे। मिले पंखि बहु आदर कीन्हे।
आनि धरीं आगें बहु[5] साखा। भुगुति न मिटै जौं लहिं बिधि[6] राखा।
पाई भुगुति सुक्ख[7] मन भएऊ। अहा जो दुक्ख बिसरि सब गएऊ।
ऐ गोसाइँ तू अैस बिधाता। जाँवत जीउ[8] सब क[9] भख दाता।
पाहन महँ न पतंग बिसारा। जहँ तोहिं सँवर[10] दीन्ह तुइँ चारा[11]।

तब लगि सोग[13] बिछोह कर भोजन परा[14] न पेट।
पुनि बिसरा[15] भा सँवरना[16] जनु सपने भइ[17] भेंट॥*

---

१४. द्वि० १ ससि रूप, द्वि० २,४, ५ तेहिं ओप, तृ० ३ तहँ ओप। १५. प्र० १ हराजेइँ, प्र० २ हार जिन्ह, द्वि० १ दरस जिन्ह, तृ० ३ जहाँ लगि। १६. प्र० १, २ तेहि तस रूप जैस जेहिं चहा। १७. द्वि० ४ जनु। १८. प्र० १ दरसन कै रहा, प्र० २ दरपन कै रहा। १९. द्वि० १ पाए रूप अपु जब दरसे, भै ससि रूप दरपन भैं बिगसे। २०. तृ० ३ हंस भे, तृ० १ कँवल मुख। २१. प्र० १ समीर। २२. प्र० १ कनूभा, प्र० २ कँवल। २३. तृ० १ देखि।

[६६] १. द्वि० १ तब, तृ० ३ तेहि। २. प्र० १, द्वि० २, ५, ३ दुलारी, तृ० ३, पं० १ दुआरीं। ३. द्वि० २, ४, ६ परी। ४. तृ० ३ डरु। ५. प्र० १, २, द्वि० ७ फ़र, द्वि० २, ३, च० १ सब। ६. प्र० १, २, द्वि० २, ३,४, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ न मेटइ जौं लहिं राखा, द्वि० १ न मिटइ जौ लगि जिउ राखा। ७. तृ० ३ सौख। ८. द्वि० १ जगत, तृ० ३ जग। ९. प्र० १, २ सबन्हि, द्वि० २, च० १ सब कहँ, तृ० ३ सब कर, द्वि० ४, ५, ३ सब का। १०. प्र० २, तृ० ३ सँवरि। ११. द्वि० ४ तेही कहँ चारा। १२. द्वि० १ पाहन मांझ जो कीट पतंगू, जेहि जेहि दीन्ह न कबहूँ खंगू। १३. च० १ सोच। १४. प्र० १ जब लगि भरइ न पेट। १५. द्वि ६ विसरावा १७. प्र० १ सपना भौ, तृ० १ सपने नहिं।

* यह छंद द्वि० ७ में नहीं है, किंतु प्रसंग में अनिवार्य है, यह प्रकट है।

[६७]

पदुमावति पहँ आइ[1] भँडारी। कहेसि मँदिर महँ परी मँजारी।
सुआ जो उतर देत हा[2] पूँछा। उड़ि गा पिंजर न बोलै छूँछा[3]।
रानी सुना सुक्ख सब गएऊ[4]। जनु निसि परी अस्त दिन भएऊ।
गहनै गही[5] चाँद कै करा[6]। आँसु गगन जनु नखतन्ह[7] भरा[8]।
टूटि पालि सरवर बहि[9] लागे। कँवल बूड़ मधुकर उड़ि भागे।
एहिं बिधि आँसु नखत[10] होइ चुए। गगन छाँड़ि सरवर भरि[11] उए।
चिहुर चुवहिं[12] मोतिन्ह कै माला। अब हम फिरि[13] बाँधा चह[14] बाला[15]।

उड़ि वह[16] सुअटा कहँ[17] बसा खोजहु सखी सो बासु[18]।
दहुँ है धरति कि सरग गा पवन न पावै[19] तासु[20]॥

[६८]

चहूँ पास समुझावहिं सखी। कहाँ सो अब पाइअ गा[1] पँखी।
जौं लहि पिंजर अहा परेवा। अहा बाँदि[2] कीन्हेसि निति[3] सेवा।

---

[६७] १. प्र० १ गई। २. प्र० १ देत हुत, तृ० ३ देत तहँ, द्वि० ४ दीन्हा। ३. प्र० १ उड़िगा हंस पींजरा छूछा। ४. प्र० २, द्वि० ३ सूखि जिअ गयऊ, तृ० ३ सूखि तब गयऊ, द्वि० १ दुक्ख जिअ भएऊ, तृ० २ बिसरि सुख गएऊ, पं० १ हरष सब गएऊ। ५. प्र० २ खीन जो भई। ६. द्वि० ४, तृ० १ चाँद कै रेखा, च० १ चंदन कै करा। ७. प्र० १ आँसू तेहिं नखत गगन सब, प्र० २ आँसू नखत गगन सब। ८. द्वि० ४, तृ० १ पेखा। ९. प्र० १, २, द्वि० ६, तृ० २ टूटि टूटि परे पाल पर, द्वि० २ टूटि टूटि परे ताल पर, च० १ सरवर बूड़ पाल पर पं० १ टूटि पाल सरवर महँ। १०. प्र० २, द्वि० ४ गगन। ११. द्वि० ५ महँ। १२. तृ० ३ चीर चुए, द्वि० ५ झरहिं चुवहिं' द्वि० ३ जनहु टूटि। १३. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० ३, च० १ अब सकेत, तृ० १, २ पुनि हम भरि। १४. प्र० १ कै बाँधहु, प्र० २ बाँधहु चहुँ, द्वि० १, ४, तृ० १ बाँधा चहुँ। १५. प्र० २, द्वि० १, २, ४, ३ पाला। १६. तृ० २ उड़ि दहुँ, च० १ आनि वह। १७. प्र० १ तहँ। १८. प्र० १, २ पास, द्वि० १ ठाँउ, द्वि० ५, च० १ तासु। १९. प्र० १ कौन मिलावा, द्वि० १ जहाँ पाऊँ, पं० १ पंखिन पावै। २०. प्र० २, द्वि० २, ४, ५, च० १ बासु, द्वि० १ तहाँ जाउँ।

[६८] १. प्र० १, २ कहाँ सो पाइअ उड़िगा, तृ० १ गा सो कहाँ पाइअ अब। २. प्र० १ रहा बंदि, द्वि० ६, तृ० १, च० १ अहा बाँध, तृ० ३ अहा बंदि, द्वि० ३ रहा बाँद।

तेहिं बँदि हुतें जौं[4] छूटै पावा। पुनि फिरि[5] बाँदि होइ[6] कित आवा।
ओइँ उड़ान फर तहिऔं खाए। जब[8] भा पंखि पाँख तन पाए[9]।
पिंजर जेहि क सौंपि[10] तेहि गएऊ। जो जाकर सो ताकर भएऊ।
दस बाटैं[11] जेहि पिंजर माहाँ।[12] कैसें बाँच मँजारी पाहाँ।
एइँ धरती अस केतन[13] लीले। तस पेट गाढ़ बहुरि नहिं[14] ढीले।

जहाँ न राति न देवस है जहाँ न पौन न पानि[15]।
तेहि बन होइ सुअटा बसा[16] को रे[17] मिलावै आनि॥

[६६]

सुऐं तहाँ दिन दस[1] कलि काटी। आइ[2] बिआध ढुका लै टाटी।
पैग पैग[3] भुइँ चाँपत आवा। पंखिन्ह देखि सबन्हि[4] डर खावा।
देखहु कछु अचरिजु अनभला[6]। तरिवर एक आवत है चला।
एहि बन रहत[7] गई हम आऊ। तरिवर चलत न देखा काऊ।
आजु जो तरिवर चल[8] भल नाहीं। आवहु एहि बन छांड़ि पराहीं।
वै तौ उड़े औरु[9] बन ताका। पंडित सुआ भूलि मन थाका।
साखा देखि राज जनु पावा। बैठ[10] निचिंत चला वह आवा।

---

3. प्र० १, २, द्वि० १ तोरि। 4. प्र० १ तेहिं बंदितें, तृ० ३ तेहु बँदि हुति। 5. प्र० १, द्वि० १ सो। 6. तृ० ३ बंदि होइ, द्वि० ४ बंदि होने। 7. द्वि० ६ तेहि दिन खाए, द्वि० ५ फुरहरि मैं खाए, द्वि० ३ भौ भरहर खाए, च० १ फर हेरि न आए। 8. द्वि० ४, ५, च० १ जौ (हिंदी मूल)। 9. द्वि० २, ३ तन आए, द्वि० १, ४, ५, ६ तृ० १ तन लाए, च० १ तेहिं जाए। 10. प्र० १ सो तन। 11. तृ० ३ पिंजर, प्र० १ दुआर। 12. प्र० २ जेहिं पिंजर महँ दह दिसि राहा। 13. प्र० १, २ द्वि० २ केतेइ, च० १ केतक। 14. प्र० १ अइस गाढ़ अबहूं नहिं, प्र० २ पेट गाढ़ नाहीं तसु, द्वि० ५ असुपति गजपति असधरि, द्वि० ३ अस बड़ पेट न कबहूँ। 15. प्र० १, २, द्वि० ३ तहाँ न पौन की पानि, तृ० ३ जहाँ पौन न लेइ अरघानि। 16. प्र० १, २, सुअटा चलि बसा। 17. प्र० १, २ द्वि० १, ४ कौन।

[६६] 1. तृ० १ दिवस दिन। 2. द्वि० २ जाइ। 3. प्र० २, द्वि० १ परग परग। 4. प्र० १, २, द्वि० ७, च० १ हिएँ। 5. तृ० १ आजु। 6. द्वि ७, तृ० १ नहिं भला। 7. प्र० १, २ बसत। 8. प्र० १ तरिवर आजु चला। 9. प्र० १, च० १ आन। 10. प्र० १, द्वि० ४ रहा, प्र० २ इहाँ।

पाँच बान कर खोंचा लासा भरे सो[11] पाँच ।
पाँख भरे तनु अरुझा कत मारे[12] बिनु बाँच ॥

[७०]

दि भा[1] सुआ करत सुख[2] केली । चूरि पाँख धरि मेलेसि[3] डेली ।
हवाँ बहुल पंखि[4] खरभरहीं । आपु आपु कहँ रोदन[5] करहीं ।
ख दाना कत दैय अँकूरा[6] । जेहि भा मरन डहन धरि[7] चूरा ।
ौं न होति चारा कै आसा । कत चिरिहार ढुकत लै लासा ।
इँ बिख चारै सब बुधि ठगी । औ भा[8] काल हाथ लै[9] लगी ।
हि झूठी माया मन भूला । चूरे[10] पाँख जैस[11] तन[12] फूला[13] ।
हु मन कठिन मरै नहिं मारा । जार[14] न देखु देखु पै चारा ।

हम तौ बुद्धि गँवाई[15] बिख चारा अस खाइ ।
तूँ सुअटा पंडित हता[16] तूँ कत[17] फाँदा[18] आइ ॥

[७१]

ुऐं कहा हमहूँ अस भूले[1] । टूट हिंडोर गरब जेहिं[2] भूले[3] ।
ेरा के बन लीन्ह बसेरा । परा साथ तहँ[4] बैरी[5] केरा ।

---

११. प्र० १, २ द्वि० ७ ते, द्वि० ३ जो । १२. प्र०२ रे मुए ।

[७०] १. द्वि० ७ फाँदा, च० १ पंडित । २. च० १ रस । ३. प्र० २ नाएसि । ४. प्र० १ तहाँ पंछि बहुते, प्र० २, द्वि० ५ तहाँ बहुत पंखी, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३ तहवाँ पंखि बहुत, तृ० २ तहवाँ बहु पंखी । ५. तृ० ३ रोवन । ६. द्वि० ४ अँगूरा । ७. तृ० ३ बिधि । ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७ आण्ड, तृ० १ औ । ९. तृ० २ मीचु लै, द्वि० ३ हाथ कै । १०. तृ० ३ जोरे । ११. तृ० ३ तैस । १२. प्र० १, त्रिन, प्र० २ तिन , १३. द्वि० २ भूला । १४. प्र० १, तृ० ३ जाल, द्वि० ५ काल । १५. प्र० १, २ द्वि० ७, तृ० ३, पं० १ कुबुधि गँवावा । १६. द्वि० १ पंडित अहै, तृ० ३ अस पंडित, द्वि० ६ पंडित हा । १७. प्र० १, २ सो कत, तृ० ३, कहाँ कत, तृ० १, २ कत रे । १८. प्र० २ फाँदेसि, तृ० ३ बाझेसि, द्वि०६ बाँधा, तृ० १, च० १ फंदा, तृ० २ परा फँद ।

[७१] १. प्र० १, २ तस भूले, च० १ भूले । २. प्र० १ सो, द्वि० १ जस, द्वि० ३ जो । ३. प्र० २ भूलें । ४. द्वि० ४ अब, द्वि० ५ तन । ५. प्र० १,२, द्वि० ६, ७, तृ० ३, च० १ बैरिन्ह ।

सुख कुरिआर फरहरी[६] खाना। बिख भा जबहिं[७] बिआध तुलाना।
काहेक[८] भोग[९] बिरिख अस फरा। अड़ा[१०] लाइ पंखिन्ह कहँ धरा।
होइ निचिंत बैठे तेहि अड़ा[११]। तब जाना खोंचा हिय[१२] गड़ा[११]।
सुखी चिंत[१३] जोरब धन[१४] करना। यह न चिंत[१५] आगे है मरना।
भूले हमहु गरब तेहि माहाँ[१६]। सो बिसरा पावा जेहि पाहाँ[१६]।

चरत न खुरुक कीन्ह तब[१७] जब सो चरा[१८] सुख सोइ।
अब जो फाँद परा गियँ तब[१९] रोएँ का होइ॥

[७२]

सुनि कै[१] उतर आँसु सब[२] पोंछे। कौनु पख बाँधा[३] बुधि ओछे[४]।
पंखिन्ह बुधि जौं होति उज्यारी। पढ़ा सुआ कत धरति मंजारी।
कत तीतर बन जीभ उघेला[५]। सकति हँकारि फाँदि गियँ मेला[५]।
ता दिन ब्याध भएउ जिउ लेवा। उठे पाँख भा नाउँ परेवा।
भै बिआधि[६] तिस्ना सँग[७] खाधू। सूझै भुगुति न सूझ बिआधू।
हमहिं लोभ ओइँ मेला चारा। हमहिं गरब[८] वह[९] चाहै मारा।
हम निचिंत वह[९] आउ छपाना। कौनु बिआधहि दोख[१०] अपाना।

---

६. प्र० २ कुरुहरी, द्वि० १ खुरुहरी तृ० ३ फुरुहरी। ७. प्र० १,२, तृ० ३ तबहि, द्वि० ४, ५, च० १ जौंहि। (हिंदी मूल) ८. प्र० १, २ काहे को, तृ० ३ काहे। ९. प्र० २ भूख, द्वि० ३ फूल। १०. प्र० २, च० १ आड़। ११. प्र० २, द्वि० ३ आड़ा, गाढ़ा। १२. प्र० १, २, द्वि० १ जब। १३. द्वि० ६, च० १ सबके चिंत, द्वि० २, तृ० २ सबके जीभ, तृ० ३ सुख निचिंत। १४. प्र० १, २ जो रे बध, तृ० ३ जोरत धन, द्वि० ५ जो बंधन, तृ० १ चोर बधन। १५. प्र० २ इहै चिंत, द्वि० ७ हम निचिंत। १६. प्र० १ पाहाँ, माहाँ, च० १ माहाँ, छाहाँ। १७. द्वि० २, ७, च० १ जिअ। १८. प्र० १, २ चारा, तृ० १, च० १ रे चरा। १९. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ तउ।

[७२] १. प्र० १ संगिन, पं० १ सुनि वइ। २. प्र० १, २ तस, द्वि० ४ जब, द्वि० ५ पुनि, द्वि० १ तौ, द्वि० ३, च० १ तब। ३. तृ० ३ बाचे। ४. प्र० १ छूछे। ५. तृ० ३ उघेलें, मेले। ६. प्र० १ भा ब्याधा, द्वि० २ बिआध द्वि० ३ भै ब्याधा। ७. प्र० १, २ मन। ८. तृ० १ हम गरबी। ९. द्वि० ३ वहु। १०. द्वि० ६ छावस।

सो औगुन कत कीजै जिउ दीजै जेहि काज।
अब कहना कछु नाहीं[11] मस्ट भली पँछिराज[12] ॥

[७३]

चित्रसेन चितउर गढ़ राजा। कै गढ़ कोटि[1] चित्र जेइं[2] साखा।
तेहि कुल रतनसेनि उजिआरा[3]। धनि जननी[4] जनमा अस बारा।
पंडित गुनि[5] सामुद्रिक देखहिं[6]। देखि रूप औ लगन बिसेखहिं।[7]
रतनसेनि एहि कुल औतरा[8]। रतन जोति मनि माथें बरा[8]।[9]
पदिक[10] पदारथ लिखी[11] सो जोरी। चाँद सुरुज जसि होइ[12] अँजोरी[13]।
जस मालति कहँ[14] भँवर बियोगी। तस ओहि लागि होइ यह[15] जोगी।
सिंघल दीप जाइ ओहि[16] पावा[17]। सिद्ध होइ चितउर लै[18] आवा।
भोग भोज जस मानै[19] बिक्रम साका कीन्ह।
परखि सो रतन पारखी[20] सबै लखन लिखि दीन्ह ॥

[७४]

चितउर गढ़ क[1] एक बनिजारा। सिंघल दीप चला बैपारा।
बाँभन एक हुत[2] नष्ट[3] भिखारी। सो पुनि चला चलत बैपारी।

---

११. तृ० १ अब का कहना कछू नहीं। १२. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १, २, च० १ बछराज।

[७३] १. प्र० २, तृ० ३ कोट। २. प्र० १, २, लंक सम, पं० १ चित्र सब। ३. प्र० १ निरमरा। ४. द्वि० २, तृ० १ सो जेइँ। ५. प्र० १, द्वि० २, तृ० २, च० १ गुनी, तृ० ३ गुनि। ६. द्वि० ३, च० १ देखा, बिसेषा। ७. तृ० ३ में अतिरिक्त पंक्ति—अस गरंथ मह देखु बिचारी, सिंघल दीप बिआहबि नारी। ८. प्र० १, द्वि० ५ यह कुल निरमरा, बरा, प्र० २ एक नग निरमरा, बरा, तृ० २ यहि लगन औतरा, वरा, तृ० ३ यह नग अवतारा, बारा। ९. द्वि० १ बरनि न जाइ रूप औ करा। १०. द्वि० ४ पदुम। ११. तृ० ३ लिखु। १३. प्र० १ जगत। १४. द्वि० ४ गुन। १५. द्वि० ४, ६, तृ० १, २ चलै होइ। १६. प्र० १, २ सो, द्वि० २ यह। १७. द्वि० १ चाहा। १८. प्र० १, द्वि० १ गढ़। १९. तृ० ३ माना। २०. प्र० १ परीखिन्ह, द्वि० २ पारखिन्ह, तृ० ३ पारिखा,

[७४] १. प्र० १, द्वि० २, ३, ५, तृ० १ कर। २. तृ० ३ एक जो। ३. प्र० १, २, द्वि० २, ७, निष्ठ, तृ० ३, पं० १ निसठ, द्वि० ३ सठ।

रिनि काहू कर[४] लीन्हेसि काढ़ी। मकु तहँ गएँ होइ किछु बाढ़ी।
मारग कठिन बहुत दुख भए[५]। नाँघि समुद्र दीप ओहि[६] गए[५]।
देखि हाट किछु सूझ न ओरा। सबै बहुत किछु दीख न[७] थोरा।
पै सुठि ऊँच बनिज तह केरा। धनी[८] पाउ निधनी मुख हेरा।
लाख करोरन्हि बस्तु[९] बिकाई[१०]। सहसन्हि केर न कोइ ओनाई[१०]।

सबहीं लीन्ह बेसाहना[११] औ घर कीन्ह बहोर।
बाँभन तहाँ लेइ का गाँठि[१२] साँठि सुठि[१३] थोर॥

[७५]

झुरवै[१] ठाढ़ कहाँ हौं[२] आवा। बनिज न मिला रहा पछितावा।
लाभ जानि आएउँ एहि हाटाँ। मूर गँवाइ चलेउँ तेहि[४] बाटाँ।
का मैं मरन सिखावन सिखी। आएउँ मरै मीचु हुति लिखी।
अपने चलत न[५] कीन्हि कुबानी[६]। लाभ न दीख मूर भौ[७] हानी।
का मैं बोवा जरम ओहि[८] भूँजी। खाइ चलेउँ घरहू कै पूँजी।
जेहि बेवहरिआ कर बेवहारू। का लै देब जौं छेंकिहि बारू।
घर कैसें पैठब मैं छूँछें। कौन उतर देवेउँ[१०] तिन्ह पूँछें।

साथ चला सत बिचला[११] भए[१२] बिच समुँद पहार।
आस निरासा[१३] हौं फिरौं[१४] तूँ बिधि देहि अधार[१५]॥

---

४. तृ० ३ कै ५, प्र० १, २, द्वि० ७, ३ भएऊ, गएऊ। ६. प्र० १, २ तेहि ७. प्र० १, २ आहि न, तृ० ३ है नहिं। ८. तृ० ३ धनिक। ९. तृ० ३ बनिज। १०. तृ० ३ बिकाहीं, ओनाहीं। ११. तृ० ३ बेसहनी, द्वि० ४ बे सामन। १२. प्र० १, द्वि० ७ दाम। १३. द्वि० ६ किछु।

[७५] १. द्वि० ४, ५ तृ० ३ झूरै। २. प्र० १ द्वि० १, कहाँ मैं, प्र० २ काहे को मैं, द्वि० ४, ३ काहे कहौं, तृ० ३, च० १ काहे कहँ, पं० १ काहे कौं, द्वि० ५ हौं काहे क। ३. द्वि० ३ लाग। ४. द्वि० ५ एहि। ५. प्र० १, २ द्वि० ७, तृ० १ चलत सो, तृ० ३ चलत जे, पं० १ चलते। ६. द्वि० ५, ३, च० १ गियानी। ७. प्र० १, द्वि० ४ भा, प्र० २, द्वि० ३, ५, तृ० १, च० १ भै। ८. प्र० १ यह, तृ० ३ जे, द्वि० ४ नहिं। ९. द्वि० १ गाँठि। १०. द्वि० २, तृ० १ देवौं, तृ० ३ पाउब, द्वि० ५, ३, च० १, पं० १ देहौं, च० १ देउब। ११. द्वि० ४ सँग बिछुरा। १२. प्र० १, तृ० १ भा, प्र० २ भौ। १३. तृ० ३ अैस निरासी। १४. प्र० १ मैं चला। १५. प्र० २ अहार।

[७६]

तबहि[1] बिआध सुआ लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा।
बेंचै लाग हाट लै[2] ओहीं। मोल रतन[3] मानिक जहँ[4] होहीं।
सुआ को पूँछ पतिंग मँदारे[5]। चलन देखि आछै[6] मन मारे[5]।
बाँभन आइ सुआ सौं[7] पूँछा। दहुँ गुनवंत कि निरगुन छूँछा।
कहु परबते जो गुन तोहिं पाहाँ। गुन न छपाइअ हिरदै माहाँ।
हम तुम्ह जाति बराभँन[8] दोऊ। जातिहि जाति पूँछ सब कोऊ।
पंडित हहु तो[9] सुनावहु बेदू। बिन पूँछे पाइअ नहिं भेदू।
हौं[10] बाँभन औ पंडित कहु आपन गुन सोइ।
पढ़े के आगे जो पढ़ै दून लाभ तेहि[11] होइ॥

[७७]

तब गुन मोहि अहा हो देवा। जब[1] पिंजर हुँत[2] छूट परेवा।
अब गुन कवन जो बँदि जजमाना[3]। घालि मँजूसा बेंचै आना।
पंडित होइ सो[4] हाट न चढ़ा[5]। चहौं[6] बिकाइ[7] भूलि गा पढ़ा[5]।
दुइ मारग देखौं एहि हाटाँ। दैय चलावै दहुँ केहि बाटाँ।
रोवत रकत भएउ मुख राता। तन भा पिअर[8] कहौं का बाता।
राते स्याम कंठ दुइ गीवाँ। तिन्ह दुइ फाँद[9] डरौं सुठि[10] जीवा।

---

[७६] १. द्वि० २, ५ तौलहि, द्वि० ४, ५ च० १ तौहि (हिंदीमूल)। २. प्र० २ चढि। ३. द्वि० १ मोंति। ४. प्र० १, २ द्वि० २ जेहि। ५. तृ० ३ पतंग मदोरे, मोरे, द्वि० १ पतंग पँखारे, मारे द्वि० ५ पतंग मडारे, मारे, द्वि० ७ पतंग निनारे, मारे, द्वि० ४ पंखि भँडारें, मारें, द्वि० ३ बधिक मनडारें, मारें। ६. प्र० २ चालु न देखु रहै, द्वि० ३ चलन न देख रहै, च० १ चलन न देख आछै। ७. प्र० २ कहँ। ८. च० १ बराबर। ९. प्र० १,२ अहहु, तृ० ३ हहु जो, द्वि० ५,३ हो तो, च० १ होहु। १०. प्र० २ मैं। ११. द्वि० १ पै।

[७७] १. द्वि० ७, तृ० २, च० १ बिनु। २. प्र० १ तें छूट, प्र० २ महँ हुता, द्वि० १ महँ अहा, तृ० ३ सों छूट। ३. प्र० १ महँ आना। ४. तृ० ३ सो जो। ५. प्र० २ चढ़ई, पढ़ई। ६. प्र० १ चहै, प्र० २ चढ़ा। ७. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ६, ७, तृ० १, ३ बिकान। ८. द्वि० २, ३, पीत। ९. प्र० १, २ तेहिं डर अधिक, तृ० १ तहँ हुइ जीभ। १०. प्र० १ डरै सो।

अब हौं[11] कंठ फाँद गिवँ[12] चीन्हा। ददुँ कै फाँद[13] चाह का कीन्हा।
पढ़ि गुनि देखा बहुत मैं है आगें डरु सोइ।
धंध जगत सब[14] जानि कै[15] भूलि रहा बुधि खोइ।।

[७८]

सुनि बाँभन बिनवा चिरिहारू। करु पंखिन्ह कहँ मया[1] न मारू।
कत रे निठुर जिउ बधसि[2] परावा। हत्या केर न तोहि डरु आवा।
कहेसि पंखि खाधुक मानवा[4]। निठुर ते कहिअ[5] जे पर मँसु खवा[4]।
अ.वहिं रोइ जाहि कै रोवना। तबहुँ न तजहिं भोग सुख सोवना।
औ जानहिं तन[6] होइहि नासू। पोखहिं माँसु[7] पराएँ माँसू।
जौं न होत अस पर मँस खाधू। कत पंखिन्ह कहँ धरत[8] बिआधू।
जौं रे ब्याध पंखी निति धरई। सो बेंचत[9] मन[10] लोभ न करई।
बाँभन सुआ बेसाहा सुनि मति बेद गरंथ।
मिला आइ कै साथिन्ह भा चितउर के पंथ।।

[७९]

तब[1] लगि चित्रसेनि सिव साजा। रतनसेनि चितउर भा राजा।
आइ बात तेहिं आगें चली। रजा बनिज आव[2] सिंघली।
हहिं गजमोंति भरीं सब[3] सीपी। औरु बस्तु बहु सिंघल दीपी।

---

११. तृ० ३ अबहूँ, द्वि० ४ अबहीं। १२. प्र०२ कर, द्वि० २, ३ को, द्वि० ४ ७ दुइ। १३. प्र० २ जिअ फाँद, द्वि० २, ३, तृ० २ जियँ बाँधि, तृ० ३ कै बंदि, पं० १ कै बाँद। १४. प्र० १, २ जिअ। १५. द्वि० २ जायकै।

[७८] १. प्र० १ दया। २, प्र० १, २ हतसि। ३. द्वि० २ में यह पंक्ति छूटी हुई है। ४. प्र० १, २ खाधुक मन लावा, खावा, द्वि० ४ खाधुक मावा, खावा, द्वि० ५ का दुक्ख जनावा, खावा, द्वि० ३,७ खाधुकु मनावा,खावा, द्वि० १ खाधुक मन लावा, निठुर अहा तो पेम सँतावा। ५. तृ० ३ सोइ जो, तृ० २ कहिऐ, द्वि० ३ तेइ। ६. प्र० १, २ अउतरि जनकर। ७. द्वि० ३ आपु। ८. प्र० २ फिरत, तृ० १ गहैं, च० १ परै। ९. द्वि० ५, च० १ निचिंत। १०. प्र० २ जिउ।

[७९] १. द्वि० १ तौ (हिंदी मूल)। २. प्र० १, द्वि० १, ५ राजा बनिज आए, तृ० ३ राजा बनिज आवा, द्वि० ३ आवा बहुत बनिज, पं० १ राजा बनिज आएउ। ३. द्वि० २ औ, द्वि० ४ सत, द्वि० ७ नग।

बाँभन एक सुआ लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा।
राते स्याम[५] कंठ दुइ काँठा[६]। राते डहन[७] लिखे सब पाठा[८]।
औ दुइ नैन सोहावन राता। राता ठोर अमिअ रस बाता।
मस्तक[८] टीका काँध जनेऊ। कबि बिआस पंडित सहदेऊ।

बोल अरथ सों बोले सुनत सीस पै[९] डोल।
राजमँदिर महँ चाहिअ अस वह[१०] सुआ अमोल॥

[८०]

भई[१] रजाएसु जन दौराए[२]। बाँभन सुआ बेगि लै आए।
बिप्र असीसि बिनति औधारा। सुआ जीउ[३] नहिं करौं निनारा।
पै यह पेट भएउ[४] बिसवासी। जेहिं नाए सब[५] तपा सँन्यासी।
दारा सेज जहाँ जेहि[६] नाहीं। भुइँ परि रहै लाइ गिव बाहीं।
अंध रहै जो देख न[७] नैना। गूँग रहै मुख आव[८] न बैना।
बहिर रहै सरवन नहिं सुना। पै एक पेट न रह[९] निरगुना[१०]।
कै कै फेर[११] अंत[१२] बहु[१३] दोषी। बारहिं बार फिरै न[१४] सँतोषी[१५]।

---

४. प्र० १, २, द्वि० ४, ३ सब। ५. प्र० १, २ ठोर। ६. प्र० १, २ कंठा, पंथा। ७. द्वि० १ पात। ८. प्र० १, २ माँथे। ९. प्र० १, २, द्वि० ५ सब। १०. प्र० १, २ अइसन, द्वि० १ अस है।

[८०] १. द्वि० १, ५, द्वि० १, २ भएउ। २. द्वि० ३ दुइ धाए। ३. द्वि० १, ३, पं० १ जरम, द्वि० ६ जिअत। ४. द्वि० ३, ५, ६, तृ० १, च० १ महा। ५. प्र० १, २, द्वि० ३, च० १ नाए, द्वि० २, ४, ५, पं० १ नावा, तृ० ३ नवा, तृ० १ नवाए। ६. द्वि० १ औ घर सेज जहाँ जेहि, तृ० ३ जेहि हैं नींद सेज जौं, द्वि० ५ दारी सेज जहाँ किछु, द्वि० २, ३, तृ० २ डासन सेज जहाँ जेहिं (द्वि० २—किछू)। ७. प्र० १ सो जेहि नहिं। ८. द्वि० ५ और, द्वि० ३ कहैं। ९. द्वि० १ भवा। १०. तृ० ३ देखा राज बहुत सुख पावा, चारौं बेद पढ़त सुख आवा। ११. द्वि० १ भीर, च० १ फिरै। १२. द्वि० ४ आप। १३. द्वि० ५, च० १ यहु। १४. द्वि० १ नहिं। १५. तृ० ३ हरे बरन कँठ राते रेखा, जनौं स्याम महं बिन्दु बिसेषा।

सो मोहिं लिहैं मँगावै[१६] लावै भूख पिआस।
जौं न होत अस बैरी[१७] तौ केहि काहू कै[१८] आस॥

[८१]

सुअैं असीस दीन्ह बड़ साजू[१]। बड़ परताप अखंडित राजू[१]।
भागवंत बड़ बिधि[२] औतारा[३]। जहाँ भाग तह रूप जोहारा[३]।
कोउ केहु पास आस कै गौना। जो निरास दिढ़ आसन मौना[४]।
कोउ बिनु पूँछे बोल[५] जो बोला। होइ बोल माँटी के मोला।
पढ़ि गुनि जानि[६] बेद मत[७] भेऊ। पूँछी बात कही[८] सहदेऊ।
गुनी न कोई[९] आपु सराहा। जौं सो बिकाइ कहा पै चाहा[१०]।[११]
जौं लहि गुन परगट नहिं होई। तौ लहि मरम न जानै कोई।

चतुर[१२] बेद हौं पंडित हीरामनि मोहि नाउँ।
पदुमावति[१३] सों मेरवौं[१४] सेव करौं तेहि[१५] ठाउँ॥

[८२]

रतनसेनि हीरामनि चीन्हा[१]। एक लाख[२] बाँभन कहँ दीन्हा।
बिप्र असीसा[३] कीन्ह पयाना[४]। सुआ सो राजमँदिर महँ आना।

---

१६. प्र० १, २ फिरावै। १७. प्र० २ पेट अस बैरी, तृ० ३ अस पतिता।
१८. प्र० १ कत काहू कै, तृ० ३ कोउ काहू कत, द्वि० ४ कहँ काहु कै।

[८१] १. प्र० १ राजू, साजू। २. तृ० ३ बिधि जेहि, द्वि० ४ बुध जेहि। ३. तृ० ३ अवतारू, गोहारू। ४. द्वि० १ में इस पंक्ति के स्थान पर निम्नलिखित दो(यथा १-२) हैं :

देखा सुवा लोन अति राजा। कहा कि परगट करु गुन साजा।
काहु कि पंछि तव न इन कोई। आपुन बताइ आपुन गुन होई।

५. प्र० १, २ अनपूछे बोलै। ६. च० १ जेहि महँ म्कल। ७. तृ० ३ हुति। ८. तृ० ३ कहै हि, द्वि० ७ कहै। ९. तृ० ३ कौन कोइ जै। १०. द्वि० ५ ज्ञान सो जाहा। ११. प्र० १, २ सुवै सो आपन गुन दरसावा, हीरामनि तब नावँ कहावा। (तुलना २५५.७) १२. प्र० १, २ चारि। १३. प्र० २ मधु मालति। १४. तृ० ३ कर सुअटा। १५. प्र० १, २ सब' तृ० ३ ओहि, तृ० १ जेहि।

[८२] १. प्र० २ लीन्हा। २. प्र० १ लाख टका, द्वि० १ एक लच्छ।
३. तृ० ३ असीस कै, तृ० १ असीस कहि। ४. प्र० १ बिनति औधारा।

बरनौं काह सुआ कै भाखा। धनि सो नाउँ हीरामनि राखा।
जौं बोलै तौ मानिक[५] मूँगा। नाहिं तौ मौन[६] बाँध होइ[७] गूँगा।
जौं बोलै राजा मुख जोवा। जनहुँ मोति हिअ हार पिरोवा[८]।
जनहुँ मारि मुख अंब्रित मेला। गुर होइ आपु कीन्ह चह[१०] चेला।
सुरुज चाँद कै कथ्था कहा[११]। पेम क गहन लाइ चित रहा[११]।

जो जो[१२] सुनै धुनै सिर[१३] राजा प्रीति क होइ अगाहु[१४]।
अस गुनवंत नाहिं भल सुअटा[१५] बाउर करिहै काहु[१६]॥

[८३]

दिन दस पाँच तहाँ[१] जो भए। राजा कतहुँ[२] अहेरें गए।
नागमती रुपवंती रानी। सब रनिवास पाट परधानी।
कै सिंगार दरपन कर लीन्हा। दरसन देखि गरब जियँ कीन्हा।
भलेहि सो और पिआरी नाहाँ[३]। मोरे रूप कि कोइ जग माहाँ।
हँसत सुआ पहँ आइ सो नारी[४]। दीन्हि कसौटी औ बनवारी[५]।

---

५. तृ० ३ तौ मोती, द्वि० ४ सब मानिक। ६. तृ० ३ पौन। ७. प्र० १, २, द्वि० २ रह। ८. प्र० १, २ चुवै मोति हिअ हार पिरोवा, तृ० ३ मानिक मोती माँग पिरोवा। ९. तृ० २, ३ जीभ मारि मुख, द्वि० ३ चहै ढारि बिष। १०. द्वि० २, तृ० ३ जग। ११. प्र० १, २, द्वि० १ कहै, चितग हैं, द्वि० ४ कहा, जिउ गहा। १२. द्वि० ४ ज्यों ज्यों। १३. तृ० ३ सीस धुनै। १४. प्र० १ परतख होइ अवगाह, प्र० २ परतख होइ अगाह, तृ० ३ सुनत पेम होइ ताहि, द्वि० ३ राजा प्रीति अगाह, पं० १ प्रीतिक होइ अगाह। १५. प्र० १ अस गुनवंत सुवा भल नाहीं, तृ० ३ अस गुनवंता नहिं भला। १६. प्र० १, द्वि० १ कीन्ह जो चाह, प्र० २, पं० १ किआ चहं काह, द्वि० २ करै डर काहि, द्वि० ३ कीजै काह, च० १ कै जिउ चाह !

[८३] १. प्र० २ दश। २. प्र० २ बहुरि। ३. प्र० १, २ भलेहि सुआ हौं सौपी नाहाँ, तृ० ३ भलेहि सोहाइ पिआरी नाहाँ, द्वि० ५ बोलहु सुआ पिआरे नाहाँ, द्वि० ६ भलेऊँ सुवा सो प्यारी नाहाँ, द्वि० ३, तृ० १ भलेहि सुआ और प्यारी नाहाँ, च० १ भलेहि सुआ रे प्यारी नाहाँ, तृ० २ भलेहँ सुआ जो प्यारी नाहाँ। ४. तृ० ३ बारी। ५. द्वि० ५ पनवारी।

सुआ बान दहुँ कहु[६] कसि सोना[७]। सिंघलदीप तोर कस लोना[७]।
कौन दिस्टि तोरी[८] रुपमनी[९]। दहुँ हौं लोनि[१०] कि वै पदुमिनी[९]।

जौं न कहसि सत सुअटा तोहि राजा कै आन।
है कोई एहि जगत महँ मोरें रूप समान॥

[८४]

सँवरि रूप पदुमावति केरा। हँसा सुआ रानी मुख हेरा।
जेहि सरवर महँ हंस न आवा। बकुली[१] तेहि जल[२] हंस कहावा।
दैयँ कीन्ह अस जगत अनूपा। एक एक तें आगरि रूपा।
कै मन गरब न छाजा काहू। चाँद घटा औ लागा[३] राहू।
लोनि बिलोनि तहाँ को कहा। लोनी सोइ कंत जेहि चहा।
का पूँछहु सिंघल की नारी[४]। दिनहिं न[५] पूजै निसि[६] अँधिआरी।
पुहुप[७] सुगंध सो[८] तिन्ह कै काया। जहाँ माँथ का बरनौं पाया।

गढ़ी सो सोंने सोंधै भरी सो रूपै[९] भाग।
सुनत रूखि भै[१०] रानी हिएँ लोन अस लाग॥

[८५]

जौं यह सुआ मँदिर महँ रहई[१]। कबहुँ कि होइ[२] राजा सौं कहई।
सुनि राजा पुनि होइ बियोगी। छाड़ै राज चलै होइ जोगी।

---

६. तृ० ३ देखी कसि. ।द्वि० २ कसि मुख कसु, द्वि० ५ तोर कहु कस, द्वि० १ तोहि कसु जस द्वि० ३ कसि कहु कस। ७. द्वि० २ सुनी, लोनी। ८. प्र० १, २, च० १ सिस्टि मोरी। ९. प्र० १, २ पदुमिनी, रुपमनी। १०. प्र० २ कहु हौं लोनि, तृ० ३ कहुँ हौं नीकी।

[८४] १. प्र० १, २, द्वि० ५ बकुला। २. तृ० ३ सर। ३. प्र० १ घटइ जिमि लाग, प्र० २ घटा जैं लागै, द्वि० ७ घटा कह लागा। ४. तृ० ३ बारी। ५. प्र० २, द्वि० ३, तृ० ३ कि। ६. द्वि० २ रैनि। ७. द्वि० ५ कनक। ८. द्वि० १ सुबास सो, प्र० २ जहाँ लगि। ९. प्र० १ भरी सो रोकी, तृ० ३ सो रूपे अति। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ४, तृ० २, सूखि गइ, च० १ रोक गइ, पं० १ रूखि गइ।

[८५] १. द्वि० २, ५, ७, तृ० २, ३, च० १, पं० १ अहई। २. प्र० २ कबहुँ कि बार, द्वि० ५ कौन होइ, द्वि० ६ कौहु होइ (हिंदी मूल)।

जौ न कंत के आएसु माहाँ[2]। कौनु भरोस नारि कै नाहाँ[9]।
मकु एहि खोज होइ निसि[10] आई। तुरै रोग[11] हरि माथें जाई[12]।

दुइ सो छपाए ना छपैं एक हत्या औ पापु।
अंतहु करहिं बिनास ये[13] सै[14] साखी दै आपु[15]॥

[८७]

राखा सुआ धाइ मति[1] साजा। भएउ खोज निसि आएँ[2] राजा।
रानी[3] उतर मान सौं दीन्हा। पंडित सुआ मँजारी लीन्हा[4]।
मैं पूँछा सिंघल पदुमिनी। उतरु दीन्ह तूँ को[5] नागिनी।
वै जस दिन तूँ निसि अँधिआरी। जहाँ बसंत करील को बारी[6]।
का तोर पुरुष रैनि को राऊ। उलू न जान देवस कर भाऊ।
का वह पंखि कोटि महं कोटी[8]। अस बड़ बोल जीभ कह[9] छोटी।
रुहिर चुऐ जब जब[11] कह बाता। भोजन बिनु भोजन मुख राता।[12]

माथें नहिं बैसारिअ सठहि सुआ जौं[13] लोन।
कान टूट जेहि अभरन[14] का लै करब[15] सो सोन॥*

---

१०. प्र० १ रस, प्र० २ ससि, द्वि० १ तस। ११. प्र० १ दोख। १२. द्वि० ७ बिसाई। १३. द्वि० ३, ७, पुनि, द्वि० ६ ते, तृ० ३ लै, तृ० १, २ वै। १४. द्वि० १ सब। १५. प्र० २ कहै।

[८७] १. द्वि० ७ मन। २. प्र० १ जब आएउ, द्वि० १ निसि आवा, द्वि० ६ आएउ निमि। ३. प्र० २ धनि। ४. द्वि० २ बेगि सुवा लै आवहु रानी, नींद परै कछु कहै कहानी। ५. प्र० १. २ क्या। ६. (?) अइसि न देखौं तस उजिआरी। ८. प्र० १ बेट महँ कोटी, छोटी, प्र० २, तृ० ३ कोडि महँ कोटी, छोटी, द्वि० २ खोट महँ खोटै, छोटै, द्वि० १ कोटि महँ कोटी, मोटी, द्वि० ७ कोटि महँ गोटी, छोटी। ९. प्र० १ सठ, प्र० २ तेहि, द्वि० ७ मुख। ११. द्वि० २, ५, ६, तृ० १, पं० १ जो जो (हिंदी मूल), तृ० ३ ज्यो ज्यों। १२. तृ० २ रुहिर चुऐ जो जो कह बैना। रकत आइ भरिं मोरे नैना। १३. प्र० १, २ जौं सुवटा सुठि लोन, द्वि० २ अंतहु सुवा सो लोन, तृ० ३ जै। सुठि सुवा बड़ लोन, द्वि० ४ सो तेहि जो सुवा है लोन, द्वि० ५ का सठ सुवा सलोन, द्वि० ७ सुठिहि सुवा जौं लोन। १४. द्वि० ७, तृ० ३ पाहरे। १५. द्वि० ४ करै, तृ० १ सरब।

* तृ० २ में इस छंद में मूल पाठ की .१, .२, .३, .५, .७ तथा अन्य ७ अर्द्धा॰ लियाँ आती हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[८८]

ाजैं सुनि बियोग तस[1] माना। जैसें[2] हिएँ[3] बिक्रम पछिनाना।
ग्रह[4] हीरामनि पंडित सुआ। जौं बोलै तौं अंब्रित चुआ।
ंडित दुख खंडित[5] निरदोखा। पंडित हुतें परै नहि धोखा।
ंडित केरि जीभि मुख सूधी। पंडित बात न कहै निबूधी[6]।
ंडित सुमति देइ पंथ लावा। जो कुपथ तेहि पँडित न भावा।
ंडित राते बदन[7] सरेषा। जो हत्यार रुहिर पै देखा।
कै[8] परान घट आनहु मती[9]। कै चलि होहु सुआ सँग सती।

जनि जानहु कै अँगुन मँदिर होइ[10] सुख साज।
आएसु मेटि कंत कर काकर भा न अकाज[11]॥

[८९]

चाँद जैस धनि उजिअरि[1] अही। भा पिउ रोस गहन[2] अस[3] गही।
परम[4] सोहाग निबाहि न पारी[5]। भा दोहाग सेवाँ जब[6] हारी।
एतनिक दोस बिरचि[7] पिउ रुठा। जो पिउ आपन कहै सो झूठा।
औसें गरब न भूलै कोई। जेहि डर बहुत पिआरी सोई।
रानी आइ धाइ के पासाँ। सुआ[8] मुआ सेंवर कै[9] आसाँ[10]।

---

[८८] १. द्वि० १ दुख। २. द्वि० १ औसैं। ३. प्र० १, २ जास हिरदै। ४. तृ० ३ आउ। ५. द्वि० ७ पंडित। ६. प्र० १, २ न कहै बिरुद्धी, तृ० ३ कहैं निरबूःी, द्वि० ४ न कहै निबृढ़ी, द्वि० ७, च० १ न कहै निर-बूधी, द्वि० ५, ३ न कहै बियोधी, तृ० १ कहै निबूध। ७. पं० १ बरन। ८. ० ३ गए। ९. प्र० १, २ राखहु मती। १०. प्र० १, २ करहु। ११. द्वि० ६, तृ० ३ न भएउ अकाज, द्वि० ४ भा भल काज।

[८९] १. प्र० १, २ आछरि। २. द्वि० २ खता। ३. प्र० १ गा, प्र० २ जो। ४. प्र० २, तृ० ३ पिरम, तृ० २ पेम। ५. द्वि० ७ सोहागिनि नाहिं पिआरी। ६. तृ० ३ जीति, द्वि० ७ जाति। ७. प्र० १ लागि। ८. प्र० १ मुनग, प्र० २, द्वि० १ सुवा। ९. प्र० १, २, द्वि० २ करि सेंवर। १०. द्वि० ३ तस मुख सूख न तन महँ साँसा।

परा प्रीति कंचन महँ सीसा। बिथरि[11] न मिलै स्याम पै दीसा।
कहाँ सोनार[12] पास जेहि जाऊ। देइ सोहाग करै एक ठाऊँ।

मैं पिय प्रीति भरोसे गरब कीन्ह जिअ माहँ।
तेहि रिसि[13] हौं परहेलिउँ[14] निगड़ रोस किअ[15] नाहँ।

[९०]

उतर धाइ तब दीन्ह रिसाई। रिसि आपुहि बुधि औरहि खाई।
मैं जो कहा रिसि करहु न बाला। को न गएउ एहि रिसि कर घाला।
तूँ रिसि भरी न देखसि आगू। रिसि महँ काकर भएउ सोहागू।
बिरस बिरोध रिसिहि पै होई। रिसि मारै तेहि मार न कोई।
जेहि की रिसि मरिए रस जीजै[1]। सो रस तजि रिसि कबहुँ[2] न कीजै।
जेहि रिसि तेहि[3] रस जोगै न जाई। बिनु रस हरदि होइ पिअराई।
कंत सोहाग कि[5] पाइअ साँधा। पावै सोइ जो ओहिं चित बाँधा[6]।

रहै जो पिय के आएसु औ बरतै होइ खीन[7]।
सोइ चाँद अस निरमरि जरम न होइ मलीन॥*

---

११. प्र० १ तबहुँ, द्वि० १ बिछुरि, द्वि० ४ बिहरि। १२. तृ० ३ सो नारि। १३. तृ० ३ तेहि दुख हौं, द्वि० ७ नै जानौं। १४. प्र० २ परहेलिनि, द्वि० २, तृ० ३, च० १ परहेली, द्वि० ७ परहेल बिनु। १५. प्र० १ निगुन रोस भौ तृ० ३ निरँग रोस किए, द्वि० ७ डारी रोस किय, तृ० १ नेक रोस किए, द्वि० ३ रूस्यो नागर, द्वि० ४ निगड़ रोस का।

[९०] प्र० १, २, द्वि० ७ जहवाँ रिस मारे रस पीजै, द्वि० १ जेहि के रिस मरिए रस छीजै, तृ० ३ रिसहि जो मरिए औ रस जीजै, द्वि० ६ जेहि के रिस मरिए रस दीजै, तृ० १ जिय कै रिस मरिए रस जीजै। २. तृ० ३ अनरीस, द्वि० ४, ६ रिसि कोह, तृ० २ रिसि कोहु। ३. प्र० १ जाकहं रिस। ४. प्र० २ चूकि, द्वि० ६ चुकइ, द्वि० ३ गोइ। ५. प्र० १, द्वि० १, ३, ७ न, द्वि० २, ५, तृ० १, च० १ की। ७. द्वि० ४, तृ० ३ हीन। ८. प्र० २ सो देखु चाँद जग निरमल, प्र० १, तृ० १ सोई देखिअ चाँद अस, द्वि० ४ सो धनि चाँद असि निरमलि, द्वि० ५ निरमल देखिअ चाँद अस, च० १ सोइ चाँद असि देखिअ।

* तृ० २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिये परिशिष्ट)

[६१]

जुआ हारि समुझी[1] मन[2] रानी। सुआ दीन्ह राजा कहँ[3] आनी।
मान मते हौं[4] गरब जो कीन्हा। कंत तुम्हार मरम मैं लीन्हा।
सेवा करै जो बरहौ मासा। एतनिक औगुन करहु बिनासा।
जौं तुम्ह देइ नाइ कै गीवाँ। छाँड़हु नहिं बिनु मारें[5] जीवाँ।
मिलतहि महँ[6] जनु अहहु[7] निनारे। तुम्ह सौं अहै[8] अदेस पिआरे।
मैं जाना तुम्ह मोहीं[9] माहाँ। देखौं ताकि तौ हहु सब पाहाँ[10]।
का रानी का चेरी कोई। जा कहँ मया करहु भलि सोई[11]।

तुम्ह सौं कोइ न जीता हारे बररुचि[12] भोज।
पहिलें आपु जो खोवै[13] करै तुम्हारा[14] खोज॥

[६२]

राजैं कहा सत्त कहु सुआ। बिनु सत कस[1] जस सेंवर भुआ[2]।
होइ मुख रात सत्त की बाता[3]। जहाँ सत्त तहँ धरम सँघाता।
बाँधी सिस्टि अहै सत[4] केरी। लछिमी आहि सत्त की चेरी।

---

[९१] १. प्र० १ समुझा। २. प्र० २, तस, द्वि० ७ पिउ। ३. द्वि० २ तृ० ३ पहँ, द्वि० ४ पै। ४. प्र० १, २ नागमती मैं, तृ० ३ नागमती हिय, द्वि० ७ मानमती गौं। ५. प्र० १, २ छाँड़हु ताहि न मारहु, द्वि० १ मारहु पै नहिं छाँड़हु, तृ० १ छाँड़हु नहिं मारहु पुनि। ६. तृ० ३ मिलेहि माँह। ७. द्वि० २ अहहिं, तृ० ३ हौन, द्वि० ७ अजहुँ। ८. द्वि० २ अहहिं, तृ० ३ अहौ, द्वि० ७ होइ, द्वि० ३ आहि। ९. प्र० १, २ हहु मोहि, द्वि० १ अहो मोहि, तृ० ३, च०१ मन मोहि। १० प्र० १, २ तौ हहु जग पाहाँ, द्वि० १ सकल जग पाहाँ, द्वि० ४,५ चहौं सब माहाँ, द्वि० ३ तौ सब हिय पाहाँ। ११. प्र० २ जेहि डर बहुत पिआरी सोई। १२. द्वि० ४ बिक्रम। १३. प्र०, १, २ द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २, च० १ खोइ कै। १४. तृ० ३ करै तुम्हार सो, तृ० २ सो करै तुम्हारा।

[९२] १. प्र० १ कर। २. तृ० ३ बिनु सत कस सेंवर जस हुआ, तृ० १ सत्त न कहसि मानहु सुर छुआ। ३. प्र० २ सत्तहि तें आहै मुख राता। ४. प्र० १, २ तृ० ३ जो सत्तहि, द्वि० ७ सभै सत, तृ० १ धरम सत, पं० १ सत्तहि।

सत्त[५] जहाँ साहस[६] सिधि पावा। जौं सतवादी पुरुष कहावा।
सत कहँ सती सँवारै सरा[७]। आगि लाइ चहुँ दिसि सत जरा[७]।[८]
दुइ जग तरा सत्त जेइँ राखा। औ पिआर दैअहि सत[९] भाखा।
सो सत छाँड़ि जो धरम बिनासा। का[१०]मति हिएँ कीन्ह सत नासा[११]।

तुम्ह सयान औ पंडित असत न भाखहु काउ।
सत्त कहहु सो मोसों[१२] दहुँ काकर अनियाउ॥

[९३]

सत्त कहत राजा जिउ जाऊ। पै मुख असत न भाखौं काऊ।
हौं सत लै निसरा एहि[२] पतें[३]। सिंघल दीप राज घर हतें।
पदुमावति राजा कै बारी। पदुम गंध ससि[४]बिधि औतारी[५]।
ससि मुख अंग मलैगिरि रानी। कनक सुगंध दुआदस बानी[६]।
हहिं जो पदुमिनि सिंघल माहाँ। सुगँध सुरूप सो[७]ओहि की छाहाँ।
हीरामनि हौं तेहि क परेवा। कंठा फूट करत तेहि सेवा।
औ पाएउँ मानुस कै भाखा। नाहिं त कहाँ[८] मूँठि भरि[९] पाँखा।

---

५. तृ० ३ सती (उर्दू मूल)। ६. प्र० २ सहसा, द्वि० १ सहसै। ७. प्र० १, २ सारा, जारा द्वि० ३ सरा, भाषा, तृ० ३ सरा, चरा। ८. द्वि० १ अभी लाइके चाहे जरा। ९. प्र० १ औ पिआर दै अस तन, द्वि० १ औ पिअ दीन्ही वसत कै, द्वि० ४ औ पै पार देहि सत। १०. द्वि० ६ को। ११. प्र० १ का मतिहीन जो धरम बिनासा, तृ० ३ का मतिहीन सत्त जेइँ नासा, प्र० २ का मतिहीन जो सतहि विनासा, द्वि० ७ का तप हीन कीन्ह सत नासा। १२. प्र० १ तुम्ह मोसों, प्र० २, द्वि० १ हीरामनि, द्वि० ३ तुम्ह मोतें।

[९३] प्र० २ अस तन बोलौं, पं० १ सत्त न भाखौं। २. तृ० ३ हौं एहि सत निसरा लै। ३. तृ० ३ पथें, द्वि० ४ सतें। ४. प्र० १, २, तृ० ३ सों। ५. प्र० १, २, द्वि० १, ५, तृ० १ दइअ सँवारी, द्वि० ७ हैं अस वानी (हिंदी मूल), द्वि० २ बदन औतारी। ६. तृ० ३ (यथा. ३) पदुमावति कर किए बखानू, नागमती रिसि मन महँ आनू। तृ० २ चंद्र बदनि मलयागिर रानी, कनक सुगंध दुआ दस बानी। ७. तृ० ३ रूप सत्र। ८. द्वि० ६ पंखि। ९. द्वि० १ एक।

जौ लहि जिऔं रात दिन सुमिरौं मरौं[10] तो ओहि लै नाउँ[11]।
मुख राता तन हरिअ र कीन्हे[12] ओहूँ जगत[13] लै[14] जाउँ॥

[६४]

हीरामनि जौं कँवल बखाना। सुनि राजा होइ[1] भँवर[2] भुलाना।
आगें आउ पंखि उजिआरे। कहहि सो दीप पतंग कै मारे[3]।
रहा[4] जो कनक सुबासिक ठाऊँ। कस न होइ हीरामनि नाऊँ।
को राजा[5] कस दीप[6] उतंगू। जेहि रे सुनत मन भएउ पतंगू।
सुनि सो समुँद[7] चखु भे किलकिला। कँवलहि चहौं भँवर होइ मिला।
कहु सुगंध धनि कसि निरमरी। भा[8] अलि संग कि अबहीं[9] करी।
औ कहु तहाँ जो पदुमिनि लोनी। घर घर सब के होइ जसि[10] होनी।

सबै बखान तहाँ कर[11] कहत सो मोसौं आउ।
चहौं[12] दीप वह देखा सुनत उठा तस[13] चाउ॥

[६५]

का राजा हौं बरनौं तासू। सिंघल दीप आहि कबिलासू।

---

१०. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १, २, च० १ जौ लहि जिऔं राति दिन। ११. प्र० १, २ द्वि० २, ३, ५, च० १ सँवर मरौ लै नाउँ, प्र० २ मरौं सो लै लै नाउँ, द्वि० १, तृ० १ सँवरौं ओहि कैं नाउँ, द्वि० ४, ६, तृ० २ सँवरि मरौं ओहि नाउँ। १२. प्र० १, २, च० १, द्वि० १, २, ७, तृ० १, ३ मुख राता तन हरिअर। १३. प्र० १, २ दुहुँ जग जस, द्वि० ३ दुहुँ जग तपै, द्वि० १ एहि जग जसु, पं० १ दुहूँ जगत। १४. तृ० १ कै जाउँ, तृ० २, पं० १ लै नाउँ।

[६४] १. प्र० १, २ भै। २. प्र० २ भरम। ३. द्वि० १ पतंग पखारे, द्वि० २ पंखि के बारे, द्वि० ७, तृ० ३, पं० १ पनिग कै मारे, द्वि० ४ सिंघल के बारे, तृ० १ पनिग के बारे, द्वि० ३ पन्नग बारे, च० १ पनग के नारे। ४. द्वि० १, तृ० ३ अहा। ५. द्वि० २ अस। ६. प्र० १, २ दस। ७. तृ० १ सबद। ८. द्वि० ३, ४, तृ० १ दहुँ। ९. प्र० १, द्वि० १ अजहूँ, द्वि० ६ अबहूँ। १०. प्र० १ होहिं जो होनी, प्र० २ होइ जग होनी, द्वि० १ होइ सलोनी, तृ० १ होहिं जिअ होनी, द्वि० २, ३, ४, च० १, पं० १ होहिं जहँ होनी। ११. तृ० ३ भाउ सत, द्वि० ७ तहाँ जस। १२. तृ० ३ जौ रे, द्वि० ७ जनहुँ। १३. प्र० २ चित, द्वि० ७ मोहि।

जो गा तहाँ भुलानेउ सोई। गे जुग बीत[1] न बहुरा[2] कोई।
घर घर पदुमिनि छतिसौ जाती। सदा बसंत देवस औ राती।
जेहि जेहि बरन फूल फुलवारी। तेहि तेहि बरन सुगंध सो नारी।
गंध्रपसेनि तहाँ बड़ राजा[3]। अछरिन्ह माहँ इंद्र बिधि[4] साजा।
सो पदुमावति ताकरि बारी। औ सब दीप माहिं उजिआरी।
चहूँ खंड के बर जो[5] ओनाहीं[6]। गरबन्ह राजा बोलै नाहीं[7]।

उअत सूर जस देखिअ[8] चाँद छपै तेहि[9] धूप।
ऐसै सबै जाहिं छपि[10] पदुमावति के रूप॥

[९६]

सुनि रबि नाउँ रतन भा राता। पंडित फेरि इहै[1] कहु बाता।
तुइँ सुरंग मूरति वह कही। चित महँ लागि चित्र होइ रही[2]।
जनु होइ सुरुज आइ[3] मन बसी[4]। सब घट पूरि हिएँ परगसी[5]।
अब हौं सुरुज[5] चाँद वह छाया[6]। जल बिनु मीन रकत बिनु काया।
किरिनि करा भा[7] पेम अँकूरू। जौं ससि सरग मिलौं[8] होइ सूरू।
सहसहुँ कराँ रूप मन भूला। जहँ जहँ दिस्टि कवल जनु[9] फूला।

---

[९५] १. द्वि० १ प्रीति। २. प्र० १, २ पलटा, द्वि० २ बहु रेंग, तृ० ३ बहुरो। ३. द्वि० १ तहाँ नृप छाजा. द्वि० ३, ६ तहाँ कर राजा। ४. प्र० २ इंद्र बड़, द्वि० ६, पं० १ इंद्र अस, द्वि० ५ इंद्रासन। ५. प्र० १, २ बरै, तृ० ३ बरेख, तृ० १ बर। ६. प्र० १ ओनाहीं, उतर न पावहिं फिरि फिरि जाहीं। द्वि० १ औ लाहीं, गरबन्ह तिन्हहिं बोलावत नाहीं। द्वि० ७ उन्ह आवहिं, फिरि फिरि जाहिं उतर नहिं पावहिं। प्र० २ ओनाहीं, राजा गरब सौं बोलै नाहीं। द्वि० २ ओनाहीं, राजा करतहि कि बोलै नाहीं। ८. प्र० १ जिमि देखतइ। ९. द्वि० ४ जेहि। १०. प्र० १, २ छपैं सब रानी।

[९६] १. प्र० १, २, द्वि० ६, तृ० २ फेरि बहइ, द्वि० ७ बहुरि उहै। २. प्र० २ भै राता। ३. प्र० १ सूर आइ, द्वि० ४ सुरुज अही। ४. द्वि० ७ हिए परगासा, मन बासा। ५. प्र० १, २ सू। ६. द्वि० २, ३ छया, कया। ७. प्र० १ परतै कआ भा, प्र० २ प्रीति कराभा, द्वि० ३, गिरत किरिनि भा। ८. द्वि० ४, ५, ६ चढ़ौ। ९. प्र० १, द्वि० २ मनु, प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ तहँ, द्वि० १ मैं।

तहाँ भँवर जेउँ[10] कँवला गंधी। भै ससि राहु केरि रिनि बंधी[11]।
तीनि लोक चौदह खंड[12] सबै परै[13] मोहि सूझि।
पेम छाँड़ि किछु औरु न लोना जौं देखौं[14] मन बूझि॥

[९७]

पेम सुनत मन भूलु न[1] राजा। कठिन पेम सिर देइ तौ[2] छाजा।
पेम फाँद जो परा न छूटा[3]। जीउ दीन्ह बहु फाँद[4] न टूटा।
गिरगिट छंद धरै दुख[5] तेता। खिन खिन रात[6] पीत[7] खिन सेता।
जानि पुछारि जो भै[8] बनबासी। रोवँ रोवँ परे[9] फाँद नगवासी।
पाँखन्ह[10] फिरि फिरि परा सो फाँदू। उड़ि न सकै अरुझी भा बाँदू।
मुयों मुयों[11] अहनिसि[12] चिललाई। ओहि रोस नागन्ह[13] धरि[14] खाई।
पाँडुक सुआ कंठ ओहि चीन्हा। जेहि गियँ परा चाह जिउ दीन्हा।
तीतिर गियँ जो फाँद है नितहि पुकारै दोख।
सकति हँकारि फाँद गियँ मेलै[15] कब मारै होइ मोख[16]॥

[९८]

राजैं लीन्ह ऊभ भरि[1] साँसा। ऐस बोल जनि बोलु निरासा।

---

10. प्र० २ जिमि, द्वि० ३, ५, तृ० १ जहँ। 11. प्र० १ केरि सन बंधी, द्वि० १ केर ओन बंधी, तृ० १ किरिनि रबिबंधी। 12. प्र० १, २ भुवन। 13. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० ३ परा। 14. द्वि० ६, ७ देखा, द्वि० ३, तृ० २ देखिअ, च० १ देखेउँ।

[९७] 1. द्वि० २ भूला। 2. प्र० १ दिएँ न, द्वि० २ देइ न, तृ० ३ देइ जो, द्वि० ५ देइ तेहि, तृ० १ देइ तबहिं. च० १ देइ त। 3. द्वि० १ परा सो लूटा, द्वि० ३ परै न छूटा। 4. द्वि० २ औ दीन्ह। द्वि० ३ दिन। 6. प्र० १, २, द्वि० ५ होइ। 7. तृ० ३ पेन (उर्दू मूल)। 8. प्र० १ जानि पिचोर भई, प्र० २ जानि पिचोर भआ, तृ० ३ पुनि पुछार जौ भई, तृ० १ जानि बूझि जो भइ। 9. प्र० १, २ रोवँहिं रोवँ। 10. प्र० १ पंछिन्ह। 11. द्वि० ३ करन्हि। 12. द्वि० ६ निसि दिन। 13. तृ० १ ता कहँ। 14. प्र० १, २ धै, द्वि० २, च० १ कहँ। 15. प्र० १ फाँद गियँ, च० १ फाँद गियँ मेला। 16. द्वि० १ मुएँ भलेहि होइ मोख, द्वि० ७ होइ मोर कब मोख, द्वि० ३, ५ कत मारै होइ मोख, तृ० १ कब मारै बिन जोख, द्वि० ६ कत मारे बिन मोख।

[९८] 1. प्र० १, २. द्वि० ४, ५, ३ कै, द्वि० २, तृ० १ मन, च० १ मरि।

भलेहिं पेम है कठिन दुहेला। दुइ जग तरा पेम जेइँ खेला।
दुख भीतर जो[२] पेम मधु राखा। गंजन मरन[३] सहै[४] सो चाखा।
जेइँ[५] नहिं सीस पेम पँथ लावा। सो प्रिथिमी महँ काहे कों आवा।
अब मैं पेम पंथ सिर मेला। पाँव न ठेलु राखु कै चेला।
पेम बार सो कहै जो[७] देखा। जेइँ न देख का जान बिसेखा[८]।[९]
तब[१०] लगि दुख प्रीतम नहिं भेंटा। जब भेंटा जरमन्ह[११] दुख मेटा।

जसि अनूप तुइँ देखी[१२] नख सिख बरनि सिंगार।
है मोहि आस मिलन कै जौं मेरवै[१३] करतार॥

[९९]

का सिंगार ओहि[१] बरनौं राजा। ओहि क सिंगार ओहि पै[२] छाजा।
प्रथम हि सीस कस्तुरी केसा। बलि[३] बासुकि को औरु नरेसा।
भँवर[४] केस वह मालति[५] रानी। बिसहर लुरहिं लेहिं अरघानी।
बेनी छोरि झारु जौं बारा। सरग पतार होइ अँधियारा।
कोंवल कुटिल केस[६] नग कारे। लहरन्हि भरे भुअंग बिसारे[७]।
बेधे जानु मलैगिरि बासा। सीस चढ़े लोटहिं चहुँ पासा।
घुँघुरवारि[८] अलकैं बिख भरीं। सिंकरीं पेम[९] चहहिं[१०] गियँ परीं।

---

२. प्र० १ के मद्धि, प्र० २ ही भीतर, द्वि० ४ भीतर सो। ३. द्वि० ३, च० १ गंजन बरन, तृ० १ कंचन मरम। ४. द्वि० २ बहै, द्वि० ४, ७ चहै। ५. प्र० २ जौ। ६. प्र० १, द्वि० २, ७, द्वि० ३ पेम फाँद सिर, द्वि० ४, ६, तृ० ३, च० १ पेम पाइँ सिर, द्वि० ५ पाइ पेम पँथ। ७. प्र० १ जो कहै सो, प्र० २ जो गहै सो, द्वि० १ जेइँ जाव। ८. प्र० २ सरेघा ९. द्वि० १ तब जानै जौं होइ सरेखा। १०. तृ० ३ तौ (हिंदी मूल)। ११. प्र० १ मिलतहि को न जनम, प्र० २ मिलै तौ गवन जनम, द्वि० २, ३, ६, तृ० २ मिला तो गएउ जरम, द्वि० ५, तृ० ३, पं० १ मिला तो गा जरम क, द्वि० ४ जो सों भेंटि जरम, च० १ मिला तेहि गएउ जनम। १२. द्वि० ४, ५, च० १ बरनी, द्वि० ७ बरने। १२. द्वि० ५ पुरवै।

[९९] १. प्र० १, २ मैं, द्वि० ६ हौं। २. प्र० १ सब। ३. तृ० १ बन। ४. प्र० २ दुसर। ५. द्वि० १ मलैगिरि। ६. प्र० १ कुटिल केस बिसहर, प्र० २, द्वि० ३ कोंतिल कुटिल केस, च० १ नवल कुटिल केस। ७. द्वि० २, ४ पसारे। ८. प्र० १, २, द्वि० २, ६, ७, च० १ घुँघुरारी। ९. द्वि० १ साँकरि जैस, तृ० ३ सकरे फाँद, द्वि० ७ सकती प्रेम, च० १ सगरै पेम। १०. द्वि० १ पेम, द्वि० ७ आवै।

अस फँदवारे केस वै राजा परा सीस गियँ फाँद।
अस्टौ कुरी नाग ओरगाने[११] भै केसन्हि के[१२] बाँद ॥

[१००]

बरनौं माँग सीस उपराहीं। सेंदुर अबहिं[१] चढ़ा तेहि[२] नाहीं।
बिनु सेंदुर अस जानहुँ[३] दिया। उजिअर पंथ[४] रैनि महु[३] किया।
कंचन रेख कसौटी कसी। जनु घन महँ दामिनि परगसी।
सुरुज किरिनि[५] जस गगन बिसेखी। जमुना माँझ[६] सरसुती[७] देखी।
खाँडै धार[८] रुहिर जनु भरा। करवत लै बेनी पर धरा।
तेहि पर पूरि धरे जौं मोंती। जमुना माँझ गाँग[९] कै सोती।
करवत तपा लेहिं होइ चूरू। मकु सो रुहिर[१०] लै देइ[११] सेंदूरू।

कनक दुआदस बानि होइ[१२] चह[१३] सोहाग वह माँग।
सेवा करहिं नखत औ[१४] तरईं[१५] उऐ गगन निसि[१७] गाँग[१८]॥

[१०१]

कहौं लिलाट दुइजि के जोती। दुइजिहि जोति कहाँ जग ओती।
सहस करौं[१] जो[२] सुरुज दिपाई[३]। देखि लिलाट सोउ छपि जाई[३]।

---

११. प्र० १ नाग वै, द्वि० १ नाग सब, तृ० ३ नाग सब ओरंगे, द्वि० ४, ६ नाग सब अरुझे, द्वि० ५ नाग सब छरि कै, च० १ नाग सब वारगे, द्वि० ७, पं० १ नाग ओरगावन, तृ० १ नाग अरघानी। १२. द्वि० ४ तेहि केसिन्ह, द्वि० ३, ५ भए केस के।

[१००] १. द्वि० २, तृ० ३ अजहुँ। २. द्वि० ५ जेहि, द्वि० ७ वोहि। ३. द्वि० ३ गगन महँ, च० १ गगन निसि। ४. प्र० १, २ पंथ उजिआर। ५. प्र० १, २ सूर किरिनि, द्वि० १ सूर चाँद। ६. प्र० १, २ महँ जनु, तृ० १ माँझ जस। ७. प्र० १, २, तृ० ३ सुरसरी। ८. प्र० १, २, तृ० १ देख, द्वि० १ देखु। ९. प्र० २, तृ० ३ गगन। १०. द्वि० ६ सोरह। ११. प्र० १, २, करइ। १२. द्वि० १ माँगतेहि। १३. प्र० १, २ चढ़, द्वि० ४ चहैं। १४. द्वि० ५ ससि। १५. तृ० ३ तारे। १६. प्र० १, द्वि० ४, ७, तृ० १ चढ़ै। १७. द्वि० ४, ६ सिर, तृ० १, ५ अस, द्वि० ३ जस। १८. प्र० २ संग, तृ० ३ माँग, द्वि० ५ साँग।

[१०१] १. प्र० १ सहसौं कला। २. तृ० १ सो, च० १ होइ। ३. प्र० २, तृ० ३ दिपाही, जाही।

का सरवरि[४] तेहि[५] देउं मयंकू। चाँद कलंकी वह निकलंकू।
औ[६] चाँदहि पुनि राहु गरासा। वह बिनु[७] राहु सदा परगासा।
तेहि लिलाट पर तिलक बईठा। दुइजि पाट[८] जानहुँ ध्रुव डीठा।
कनक पाट जनु बैठेउ[९] राजा। सबै सिंगार[१०] अत्र[११] लै साजा।
ओहि आगें थिर रहै न काऊ। दहुँ काकह अस जुरा सँजोऊ।

खरग धनुक औ चक्र बान दुइ[१२] जग मारन तिन्ह नाउँ[१४]।
सुनि कै[१५] परा मुरुछि कै[१६] राजा मो कहँ भए एक ठाउँ[१७]॥

[१०२]

भौहैं स्याम धनुकु जनु ताना। जासौं हेर[१] मार[२] बिख बाना।
उहै[३] धनुक उन्ह भौहन्ह चढ़ा। केइ[४] हतियार काल अस गढ़ा।
उहै धनुक किरसुन पहँ अहा। उहै धनुक राघौ[५] कर गहा[६]।
उहै धनुक रावन संघारा। उहै धनुक कंसासुर मारा।
उहै धनुक बेधा हुत राहू। मारा ओहीं सहस्सर बाहू।
उहै धनुक मैं ओपहँ चीन्हा। धानुक[७] आपु बेझ[८] जग कीन्हा।
उन्ह भौहन्हि सरि केउ न जीता। आछरिं छपीं छपीं गोपीता।

---

४. द्वि० १ सरै, तृ० १ सुर नर। ५. प्र० १, २ मैं। ६. प्र० २ जौ। ७. तृ० ३ पर। ८. द्वि० ४, ५, ६, ३ पास। ९. प्र० २ बैठे, तृ० ३ बैठा, द्वि० ७ बैसेउ। १०. द्वि० ७ बदन लिलाट। ११. द्वि० २, तृ० १ उत्तर। १२. प्र० १. द्वि० २, ४, ५, ३, च० १ चक्र बान, द्वि० १ चक्र जस। १४. प्र० १, २, तृ० १ जग मारन तेहि नाउँ, द्वि० २ दुहुँ जग मारक नाउँ, तृ० ३ जग मारै कहँ आउ, द्वि० ५ दुइ जग मारन नाउँ, द्वि० ७ जग मारक तिन्ह नाउँ, द्वि० ३ जग मारन तिन नाउँ, च० १ औ जग मारन नाउँ। १५. प्र० १, २ सुनतहिं। १६. द्वि० ३ गा। १७. प्र० १ भा एक ठाउँ, प्र० २ भएउ बेपाउ द्वि० १ भए कुठाँव।

[१०२] १. १ जात न हेरि। २. तृ० ३ लाग। ३. द्वि० ७, तृ० ३ हनै, द्वि० ४, च० १ स्याम। ४. तृ० ३ क्यों। ५. च० १ रामचंद्र। ६. तृ० ३ में यह पंक्ति छूटी हुई है। ७. प्र० १, २, च० १ धनुक। ८. द्वि० २ पच्छ' द्वि० ३ मंझ, च० १ बीच।

भौंह धनुक धनि धानुक[9] दोसर सरि न कराइ[10]।
गगन धनुक जो[11] ऊगवै[12] लाजन्ह सो छपि जाइ[13]॥

[१०३]

नैन बाँक[1] सरि पूज न कोऊ। मान समुँद अस उलथहिं दोऊ।
राते कवल करहिं अलि[2] भवाँ[3]। घूमहिं माँति चहहिं उपसवाँ[3]।
उठहिं[5] तुरंग लेहिं नहिं बागा[4]। चाहहिं उलथि[6] गगन कहँ लागा।
पवन झकोरहिं[7] देहिं[8] हलोरा। सरग लाइ[9] भुइँ लाइ बहोरा।
जग डोलै डोलत नैनाहाँ। उलटि अड़ार चाह पल माहाँ।
जबहिं फिराव[10] गँगन गहि बोरा[11]। अस वै भवर चक्र[12] के जोरा।
समुद हिंडोर[13] करहिं जनु[14] झूले। खंजन लुरहिं[15] मिरिग जनु[16] भूले।

सुभर[17] समुँद अस नैन दुइ[18] मानिक भरे तरंग।
आवत तीर जाहिं फिरि[19] काल[20] भवर[21] तेन्ह[22] संग॥

[१०४]

बरुनी का बरनौं इमि[1] बनी। साँधे बान जानु दुइ अनी[2]।

---

९. द्वि० १ औ धनुका, द्वि० ७, च० १ जस ओपहँ। १०. तृ० ३ कराहिं। ११. प्र० २ सो। १२. द्वि० १ उबहे, तृ० ३ उगवहिं। १३. तृ० ३ सो छपि जाहिं, तृ० १ सोउ मिलाइ।

[१०३] १. द्वि० १, २ बान। २. प्र० २ रति। ३. प्र० १, २, तृ० ३ भावाँ, अपसावाँ। ४. प्र० २, द्वि० ७ देहिं। ५. प्र० २ नागा। ६. द्वि० १ चहहिं उठाइ, द्वि० २, ५ जानहुँ उलटि, तृ० १, २ चाहहिं उलटि। ७. द्वि० ७ तरंगनि। ८. द्वि० ७, च० १ उठहिं। ९. प्र० २ जाइ। १०. प्र० २ एकहिं फिराव, द्वि० ४, ५ जौहि (हिंदी मूल) फिराइ, द्वि० ३, तृ० १ जो (हिंदी मूल) फिर आव, च० १ चहहिं फिराइ। ११. तृ० १ कहँ पूरा। १२. द्वि० ५ भवहिं भँवर। १३. प्र० १, द्वि० ५ हिलोर। १४. प्र० १, २ तस। १५. च० १ कंचन लरहिं, प्र० २, तृ० ३ खंजन लरहिं। १६. तृ० ३ बन। १७. द्वि० ५ भरे। १८. तृ० ३ वह नना। १९. प्र० १, २ मनहुँ फिरावत, द्वि० ४, ६ तृ० ३ तीर फिरावहिं, द्वि० ३ तीर फिरावइ। २०. तृ० ३ कँवल। २१. तृ० १ भँवहि। २२. प्र० १, २ तेहि।

[१०४] १. तृ० १ अब का बरनौं। २. तृ० ३ जानहुँ दुइ सैना।

जुरी राम रावन कै सैना। बीच[3] समुंद भए दुइ[4] नैना।
बारहिं पार बनावरि साँधी। जासौं हेर[5] लाग[6] बिख बाँधी।
उन्ह बानन्ह अस को जो न मारा। बेधि रहा सगरौं संसारा।
गँगन नखत जस[7] जाहिं न गने। हैं[8] सब बान ओहि के हने।
धरती बान बेधि[9] सब[10] राखी। साखा ठाढ़ि देहिं[11] सब साखी।
रोवँ रोवँ मानुस तन ठाढ़े। सोतहि सोत बेधि तन[12] काढ़े।

बरुनि बान[13] सब[14] ओपहँ[15] बेधे रन[16] बन[17] ढंख।
सउजन्ह[18] तन सब[19] रोवाँ पंखिन्ह तन सब[20] पंख॥

[१०५]

नासिक खरग देउँ[1] केहि जोगू। खरग खीन ओहि बदन सँजोगू।
नासिक देखि लजानेउ सुआ। सूक आइ बेसरि[2] होइ[3] उआ।
सुआ सो पिअर[4] हिरामनि[5] लाजा[6]। औरु[7] भाउ का बरनौं राजा।
सुआ सो नाँकि कठोर पँवारी। वह कोंवलि तिल पुहुप सँवारी।
पुहुप सुगंध करहिं सब[8] आसा। मकु हिरगाइ[9] लेइ हम बासा।
अधर दसन पर नासिक सोभा[10]। दारिवँ देखि सुआ मन लोभा[10]।
खंजन दुहुँ दिसि केलि कराहीं। दहुँ वह रस को पाव को[11] नाहीं।

---

३. द्वि० १ आँतर। ४. द्वि० २, ७, पं० १ ओइ। ५. प्र० १, २ द्वि० ७ जा कहँ छूट, द्वि० १ जेहि तन ताक। ६. द्वि० ६, ३ च० १ मार। ७. प्र० १ सब। ८. प्र० १, २ द्वि०६ हैं ते, द्वि० १ तस वै, द्वि० ३,४ तृ० २, च० १ वै। ९. तृ० ३ बेधि जनु। १०. द्वि० २ भुइँ। ११. तृ० ३ ठारव देखि। १२. प्र० १ सब, द्वि० ४, पं० १ अस, तृ० २ कै। १३. द्वि० ६ पास। १४. प्र० १, २, द्वि० ६, च० १ अस, द्वि० ३, ४ जस, पं० १ जनु। १५. द्वि० १ औं मै। १६. द्वि० ३ बेधि रहे। १७. द्वि० २ रन। १८. प्र० १, २ साउज, द्वि० ३ अउजन्ह। १९. द्वि० २ जब। २०. द्वि० २ जब तब, द्वि० ७ सबन्ह रोवँ।

[१०५] १. द्वि० २ देवान। २. प्र० १ बेसर सरकि सुक्र। ३. प्र० २ पर। ४. द्वि० ३ सँवरि। ५. प्र० १ हीरामनि भा। ६. प्र० २ साजा। ७. प्र० २, द्वि० २, ६ तृ० १, २ ओहिका। ८. द्वि० १ मन। ९. प्र० १, द्वि० २,३, ४, ५, ७, तृ० १, पं० १ हिरकाइ, प्र० २, तृ० ३ हिरि-काइ। १०. प्र० २ सोहा, मोहा। ११. तृ० ३ कोउ पावति।

देखि अमिअ रस अधरन्हि[12] भएउ[13] नासिका कीर।
पवन बास पहुँचावै[14] अस रम[15] छाँड़ न तीर[16] ॥

[१०६]

अधर सुरंग अमिअ रस भरे। बिंब[1] सुरग लाजि बन फरे[2]।
फूल दुपहरी मानहुँ राता। फूल[3] झरहिं[4] जब जब[5] कह बाता।
हीरा गहै[6] सो[7] बिद्रुम धारा[8]। बिहँसत जगत होइ उजिआरा।
भए मँजीठ पानन्ह रंग लागें। कुसुम रंग थिर रहा न आगें।
अस कै अधर अमिअ भरि[9] राखे। अबहिं[10] अछूत न काहूँ चाखे।
मुख तँबोल रँग[11] धारहिं रसा[12]। केहि मुख जोग सो अंब्रित बसा।
राता जगत देखि रँग राते[13]। रुहिर भरे आछहिं बिहँसाते।

अमिअ अधर अस राजा[14] सब जग आस करेइ।
केहि कहँ कँवल बिगासा[15] को[16] मधुकर रस लेइ ॥

[१०७]

दसन चौक[1] बैठे जनु हीरा। औ बिच बिच[2] रँग स्याम गँभीरा।

---

१२. द्वि० ७ अधर रस अमिअन्ह। १३. प्र० १, २ लोभेउ। १४. प्र० १ बास रंचक पहुँचावै, प्र० २ पहुँचावै ताकहँ। १५. प्र० २, तृ० ३ आस्रम। १६. द्वि० ७ भीर।

[१०६] १. तृ० ३ निपट। २. द्वि० २ मुहँ परे। ३. द्वि० ७ पुहुप। ४. तृ० ३ परै, तृ० १ परहिं। ५. तृ० ३ ज्यों ज्यों, द्वि० ७ जौ जौ (हिंदी मूल), द्वि० १, २, ३, ५, ६, तृ० १, च० १ जो जो (हिंदी मूल)। ६. प्र० १, २, द्वि० १, ५, तृ० १, च० १ दसन, द्वि० १ लहि, द्वि० ७ लहै, तृ० ३ कहैं, द्वि० ७ लहै. तृ० २ किएँ। ७. द्वि० २, च० १ जो। ८. प्र० २, तृ० ३ ढारा। ९. तृ० ३, पं० १ रस। १०. प्र० १, द्वि० ३, तृ० २ अजहुँ, द्वि० ७ अहहिं। ११. तृ० ३ रस। १२. प्र० २, तृ० ३ ढारहिं, द्वि० ७ धारिन्ह, द्वि० ३ अधरन्हि। १३. प्र० २ जग। १४. प्र० १ रानी। १५. तृ० ३ बिगासै। १६. प्र० १ अंब्रित।

[१०७] १. द्वि० १, ३ जोग। २. द्वि० २ ऊँच नीच।

जनु भादौं निसि[3] दामिनि[4] दीसी[5]। चमकि उठी तसि[6] भीनि[7] बतीसी[8]।
वह जो जोति हीरा उपराहीं। हीरा दीपहिं[9] सो तेहि परिछाहीं।
जेहि दिन दसन जोति निरमई। बहुतन्ह जोति जोति ओहि भई।
रबि ससि नखत दीन्हि[8] ओहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोंती।
जहँ जहँ बिहसि सुभावहिं हँसी। तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी।
दामिनि[10] दमकि न सरबरि पूजा। पुनि[11] वह जोति औरु को दूजा।

बिहँसत हँसत दसन[12] तस[13] चमके पाहन उठे झरक्कि[14]।
दारिवँ सरि जो न कै सका[15] फाटेउ हिया दरक्कि[16]॥

[१०८]

रसना कहौं[1] जो कह रस बाता। अंम्रित बचन सुनत मन राता।
हरै सो सुर[2] चात्रिक कोकिला[3]। बीन बंसि[4] वह बैनु न मिला।
चात्रिक कोकिल रहहिं जो नाहीं[5]। सुनि वह बैन[6] लाजि छपि जाहीं।
भरे[7] पेम मधु बोलै बोला[8]। सुनै सो माति घुमि कै[9] डोला।
चतुर बेद मति सब ओहि पाहाँ। रिग जजु साम अथर्बन माहाँ।
एक एक बोल अरथ चौगुना। इंद्र मोह बरम्हा सिर धुना।
अमर[9] भारथ पिंगल औ गीता। अरथ जूझ[10] पंडित नहिं जीता[11]।

---

3. द्वि० ३ वन। 4. तृ० १ आवै। 5. द्वि० १ न दीसा, बतीसा। 6. प्र० १, २ ज़नु। 7. द्वि० १ भई, द्वि० २ मुईं, द्वि० ४ पं० १ तहीं, द्वि० ६ तृ० १ बनी। 8. द्वि० २ दीन्ह, तृ० ३ जोति। 9. प्र० २ सब। 10. द्वि० ७ न कीन्हा। 11. प्र० १, द्वि० ५, तृ० १ बिन। 12. प्र० २ बिहँसत दसन। 13. प्र० १ जो, प्र० २ सो, तृ० १ वै। 14. द्वि० ७ भरक्कि (हिंदी मूल ?)। 15. द्वि० ७ न कीन्हा। 16. प्र० १, २ द्वि० २, ६, ७, ३, च० १, पं० १ तरक्कि, च० १ छलक्कि।

[१०८] 1. द्वि० ७ सुनहु। 2. प्र० १, द्वि० ७ सुरस, प्र० २ सुसर, तृ० ३ सो सरि, द्वि० ६ ससि सरत, तृ० १ होइ तस। 3. प्र० २ मोरा। 4. प्र० २ बेन बंस(उर्दू मूल), द्वि० ३ बिनु बसंत। 5. तृ० ३ सरि न कराहिं। 6. तृ० ३ बोल। 7. द्वि० ६ तेहिं रे। 8. द्वि० १ वै मधुरे बोला, तृ० ३ रस भरे अमोला, तृ० १ मद भरे अमोला। 9. प्र० २ तन। 10. प्र० १, तृ० ३, च० १ जो जो, द्वि० ३ जो चह। 11. प्र० २ ही जीता।

भावसती[१२] ब्याकरन सरसुती[१३] पिंगल[१४] पाठ[१५] पुरान ।
बेद[१६] भेद सैं बात[१७] कह तस जनु लागहिं बान[१८] ।।

[१०९]

पुनि बरनौं का सुरँग कपोला । एक नारँग के दुऔ[१] अमोला ।
पुहुप पंक रस[३] अंम्रित साँधे । केइँ ये[४] सुरँग खिरौरा बाँधे ।
तेहि कपोल बाएँ तिल परा । जेइँ[५] तिल देख सो तिल तिल जरा ।
जनु घुँघुची वह तिल करमुहाँ[६] । बिरह बान साँधा[७] सामुहाँ[८] ।
अगिनि बान तिल जानहुँ सूझा । एक कटाख लाख दुइ[९] जूझा ।
सो तिल काल मेंटि नहिं गएऊ । अब वह[१०] गाल[११] काल जग[१२] भएऊ ।
देखत नैन परी परिछाहीं[१३] । तेहतें[१४] रात स्याम उपराहीं ।

सो तिल देखि कपोल पर गँगन रहा[१५] धुव गाड़ि ।
खिनहि उठै खिन बूड़ै[१६] डोलै नहिं[१७] तिल छाँड़ि[१८] ।।

---

१२. च० १ भागवंत । १३. प्र० २ जत, द्वि० ३ सभ, द्वि० ६ सहेसै, द्वि० ५ सुबल, द्वि० १ बिसीठी, द्वि० ७ सरसै, तृ० २ सुने, तृ० ३ सत । १४. द्वि० १ औ सुठि पिंगल पाठ, तृ० ३ सत सौं पढ़ै, प्र० २ औ बहु पाठ । १६. द्वि० ३ भेद । १७. प्र० २ सौ बार । १८. प्र० १ जनु लागत सर जान, प्र० २ तस जनु लागु रस बान, द्वि० ५ जनु लागहिं हिय बान, द्वि० ४, तृ० २ सुनि जनु लागहिं बान, द्वि० ७ जनु लागै सर बान, तृ० १ जनु राखहिं सुनि बान, द्वि० ३ तस सुनि लागहिं बान, च० १ जनु लागहि बिख बान ।

[१०९] १. प्र० २ सुरँग । २. द्वि० १ कपोला । ३. तृ० ३ पंक अस, द्वि० ४, ६ सुरँग रस । ४. प्र० २ पै, तृ० ३ क्यों । ५. तृ० ३ जोइ । ६. प्र० २ करमुखी, जानहुँ ससिमुखी । ७. प्र० १, २ जानहु, द्वि० १ मारेसि । ८. च० १ जाइ न । ९. द्वि० २, तृ० ३ दस । १०. द्वि० ३ तिल । ११. द्वि० १ गरी, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, ३, च० १ काल । १२. द्वि० २ जगत कहँ । १३. च० १ जेहिं छाहीं, तृ० १ मुरझाहीं । १४. प्र० १, २, द्वि० २, ५, ७, तृ० ३, च० १ तन । १५. प्र० १, २, द्वि० २, तृ० १, पं० १ गएउ । १६. प्र० २ खन बूड़ै भूला । १७. द्वि० १ छाँड न सो । १८. प्र० १ नहिं तिल जाइ छो छाँडि, तृ० १ डोलै नहिं पग छाँडि ।

[११०]

स्रवन सीप दुइ दीप[1] सँवारे। कुंडल[2] कनक रचे उँजिआरे।
मनि कुंडल चमकहिं[3] अति लोने। जनु कौंधा लौकहिं[4] दुहुँ कोने।
दुहुँ दिसि चाँद सुरुज[5] चमकाहीं। नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं।
तेहि पर खूँट दीप दुइ बारे[6]। दुइ धुव दुऔ खूँट बैसारे[6]।
पहिरे खुंभी सिंघल दीपी। जानहुँ भरी कचपची सीपी।
खिन खिन जबहिं चीर सिर गहा। काँपत बीज दुहूँ दिसि रहा।
डरपहिं देव लोक सिंघला। परै न बीज टूटि[9] एहि[10] कला।

करहिं नखत सब सेवा स्रवन दिपहिं अस[11] दोउ।
चाँद सुरुज[5] अस गहने[12] औरु जगत का कोउ॥

[१११]

बरनौं गीवँ कूँज[1] कै रीसी[2]। कंज नार जनु लागेउ[3] सीसी।
कुंदै[4] फेरि जानु गिउ काढ़ी[5]। हरी पुछारि ठगी[6] जनु ठाढ़ी[5]।
जनु हिय काढ़ि परेवा ठाढ़ा। तेहि तें अधिक भाउ गिउ[7] बाढ़ा[8]।
चाक चढ़ाइ साँच जनु कीन्हा। बाग[9] तुरंग जानु गहि लीन्हा।

---

[११०] १. तृ० ३ सीप। २. तृ० ३ कुंदन। ३. तृ० ३ झमकहिं। ४. तृ० ३ कौ धार कीन्ह। ५. प्र० १ सूर। ६. प्र० २ बरै, लै धरे, तृ० ३, ३ बारे, बैसी पीआरे, तृ० १ अनिआरे, बैठारै, द्वि० २, ३ तारे, बैठारे। ७. प्र० २ खोंटिला, द्वि० ५, तृ० १ खूँटी। ८. द्वि० ५ कहजही, तृ० १, द्वि० ३ गजमोती। ९. च० १ जग जनि छाडि जाहु। १०. द्वि० ५ तेहि, तृ० १ केहि। ११. प्र० १ सीप अस, द्वि० १ दिपहिं बड, तृ० ३ दिपहिं नग। १२. प्र० १, द्वि० २, ५, तृ० १ कहने, प्र० २, तृ० ३ गोहने, द्वि० ४, च० १ कहिये, द्वि० ७ गहें भय।

[१११] १. द्वि० ३ कूँच। २. तृ० १ दीसी। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, तृ० १, च० १ कंचन तार लाग जनु, तृ० ३ कनक तार जनु लागेउ, द्वि० ३ कंज नार मकु लागेउ, पं० १ कंज तार जनु लागेउ। ४. द्वि० ३ कुँदेरे। ५. प्र० २ काढ़ा, ठाढ़ा। ६. प्र० १ हारि पुछारि हरौं, प्र० २ मनहुँ पुछारि ग्रीव। ७. प्र० २ जिअ। ८. द्वि० १ ठाढ़ा। ९. प्र० १, द्वि० २, ४, तृ० २, पं० १ बाँक, प्र० २ बाज, तृ० ३ कंक।

खीर अहार न कर[२] सुकुवाँरा[३]। पान फूल के रहै[४] अधारा[३]।
स्याम भुअंगिनि रोमावली[५]। नाभी निकसि[६] कँवल कहँ चली।
आइ दुहूँ नारंग बिच भई। देखि मँजूर ठमकि रहि गई।
जनहुँ चढ़ी[७] भँवरन्हि[८] कै पाँती। चंदन खाँभ[९] बास कै[१०] माँती।
कै[११] कालिंद्री बिरह सताई। चलि पयाग अरइल बिच आई।
नाभी कुंडर[१२] बानारसी। सौंह को होइ मीचु तहँ बसी।

सिर करवत तन करसी लै लै बहुत[१३] सीझे तेहि आस।
बहुत धूम घूँटत मैं देखे[१४] उतरु न देइ[१५] निरास॥

[११५]

बैरिनि[१] पीठि लीन्ह[२] ओहँ पाछें। जनु फिरि चली अपछरा काछें।
मलयागिरि कै पीठि सँवारी। बेनी नाग चढ़ा जनु कारी।
लहरैं देत[३] पीठि जनु[४] चढ़ा। चीर ओढ़ावा कंचुकि[५] मढ़ा।
दहुँ का कहँ असि बेनी कीन्ही। चंदन बास भुअंगन्ह दीन्ही।
किस्न कै करा चढ़ा[६] ओहि माथें। तब सो छूट अब छूट न नाथें।
कारी कँवल गहे मुख[७] देखा। ससि पाछें जस राहु बिसेखा[८]।

---

२. द्वि० २ सुरँग, द्वि० ४ करै। ३. प्र० २ तृ० ३ सुकुमारी, अधारी। ४. प्र० २ औ पवन। ५. तृ० ३ बनी रोमावली। ६. तृ० ३ बेधि। ७. द्वि० ७ चली। ८. तृ० ३ नागन्ह। १०. द्वि० ३ गौ। ११. द्वि० ३ गै। १२. प्र० १ कुंड जो भई, प्र० २ कुंडल जानहु, द्वि० २ कुंडस, द्वि० ७ कुंड जस, तृ० ३ कुंडर बीच। १३. प्र० १, २ करसी लै, द्वि० १ करसी लंक, द्वि० ४, ५ करसी लैं लै, च० १ कलपहिं बहुत। १४. प्र० १, २, द्वि० २, ३, च० १ घँटत मुए। १५. प्र० १ बहुतक मुए, द्वि० २ देखे नहीं।

[११५] १. द्वि० ४, ५ चोटी, द्वि० ३ पातर, च० १ बेनी। २. प्र० १ दीन्ह। ३. तृ० ३ लेत। ४. तृ० ३ जानहु पीठि। ५. प्र० १ ओढ़ाइ जनु केंचुल, प्र० २, च० १ ओढ़ावा कंचुरी, द्वि० ३, ४, ५. ६, तृ० १, पं० १ ओढ़ावा केंचुल। ६. प्र० १, २ कारी किश्न चढ़े, द्वि० २ किसुन चढ़ा नाथि, द्वि० ४, ५, तृ० ३, पं १ किस्न करा चढ़ा, द्वि० ३ किरसुन करा चढ़ी, च० १ किशन केर साज, द्वि० ७ केस सो कारी। ७. द्वि० २ मैं। ८. प्र० २ (यथा. ७) जग न ऐस बेनी दहुँ देखा, जो पावै सो नवल सरेखा।

को देखै पावै वह नागू। सो देखै माथें मनि[9] भागू।

पन्नग पकज मुख गहे[10] खंजन तहाँ बईठ।
छात[11] सिंघासन राज धन[12] ता कहँ होइ जो[13] डीठ ॥

[११६]

लंक पुहुमि[1] अस आहि न काहूँ। केहरि कहौं न ओहि[2] सरि ताहूँ।
बसा[3] लंक बरनै जग भीनी[4]। तेहि तें अधिक लंक वह खीनी।
परिहँस पिअर भए तेहिं बसा[5]। लीन्हे लंक[6] लोगन्ह[7] कहँ डँसा।
जानहुँ नलिनि[8] खंड दुइ भई। दुहुँ बिच लंक[9] तार रहि गई।
हिय सौं मोरि चलै वह तागा[10]। पैग देत कत सहि सक[11] लागा[12]।
छुद्र घंटि मोहहिं नर[13] राजा। इंद्र अखार आइ जनु साजा[14]।
मानहुँ बीन गहे कामिनी। रागहिं[15] सबै राग रागिनी।

सिंघ न[16] जीता लंक सरि[17] हारि लीन्ह बन बासु।
तेहिं रिसि रकत पिऔ मनई[18] कर खाइ मारि कै माँसु ॥

---

९. द्वि० १, २, ६, जेहि। १०. द्वि० २, पं० १ फुनग जो पंकज मुख गहे, द्वि० ६ अस वंक जो तकहिं, च० १ पंकज कँवल मुख गहे। ११. प्र० १ औंर। १२. प्र० १ यह सगुन। १३. प्र० १ ताकहँ मिलइ जो, द्वि० ३ सो पावै जिन्ह।

[११६] १. द्वि० २ उपहम, द्वि० ५, ३ कहौं, तृ० १ उपम। २. द्वि १ न तेहि, तृ० ३ न होइ। ३. प्र० २ नीसा। ४. द्वि० ७ हीनी। ५. प्र० १ पिअर भए तेहिं रिसा, तृ० ३ पिअर भएँ बन बसा, द्वि० ३ एहीं पिअर भए वसा। ६. द्वि० १ लीन्हें डंक, पं० १ वहीं लंक। ७. तृ० ३ नागन्ह, द्वि० ४, ५, च० १ मानुस। ८. द्विं० २, ३ मैंन। ९. च० १ कनक। १०. प्र० १ कै तागा, प्र० २ एक थाका, तृ० ३ जनु तागा, द्वि० ३, तृ० १ वह वागा। ११. द्वि० २ सहसहत। १२. प्र० १ थागा। १३. प्र० १ घंटिका मोहैं, प्र० २ घंटिका महहिं सुनि। १४. द्वि० ५ वाजा। १५. प्र० १, द्वि० २, ४, ५, तृ० १, पं० १ लागहिं, च० १ वाजहिं, तृ० २ अलापहिं। १६. तृ० ३ सिंघिनि। १७. द्वि० ३ सरि हारा। १८. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २ मानुस।

खिनहि पीत खिन होइ मुख सेता । खिनहि चेत खिन होइ अचेता[१०] ।
कठिन मरन तें पेम बेवस्था[११] । ना जिअँ[१२] जिवन न दसइँ अवस्था[१३] ।

जनु लेनिहारन्ह[१४] लीन्ह जिउ[१५] हरहिं तरासहिं[१६] ताहि[१७] ।
एतना बोल न आव[१८] मुख करहि तराहि तराहि ॥

[१२०]

जहँ लगि कुटुँब लोग औ नेगी । राजा राय आए सब बेगी ।
जाँवत गुनी गारुरी[२] आए । ओझा बैद सयान बोलाए ।
चरचहिं चेष्टा[४] परिखहिं[५] नारी । निअर नाहिं ओषद तेहि[६] बारी ।
है राजहिं लछ्न[७] कै करा । सकति बान[८] मोहा है परा[९] ।
नहिं सो राम[१०] हनिवँत बड़ि[११] दूरि । को लै आव सजीवनि मूरी ।
बिनौ करहिं जेते[१२] गढ़पती । का जिउ कीन्ह कवनि मति[१३] मती ।
कहहु सो पीर काह बिनु[१४] खाँगा । समुँद सुमेरु आव तुम्ह माँगा[१५] ।

---

१०. प्र० २ चलहु सुआ हम तहाँ आई, जहाँ देखी पदुमिनी भाई। ११. प्र० १, २, द्वि० ६, तृ० ३ अवस्था। १२. तृ० ३ जानहु जीवन, द्वि० २, ३ ना जेहि जीव, च० १ जैइँ जीवन है। १३. प्र० १, २ मरन करस्था, द्वि० २, तृ० १ दसइँ अवस्था, द्वि० ४, ५ जाइ अवस्था, तृ० ३ सकै बेवस्था, द्वि० ६ होइ अवस्था। १४. प्र० १ २, तृ० ३ लवहारैं, द्वि० २ नखहारन्ह, द्वि० ६ कवहारन्ह, तृ० १ नवहारन्ह, द्वि० ३ बनहार। १५. द्वि० ६, तृ० २, पं० १ लीन्हा। १६. द्वि० १ परासहिं। १७. प्र० १ हरि हरि हरामहिं ताहिं, प्र० २ हरि हरि त्रीअहिं चाहिं, द्वि० २ हरि हरि जनौं तरासैं ताहि, तृ० १ हरि हरि त्रास न ताहि। १८. द्वि० २ आव, द्वि० ३ जो आव।

[१२०] १. प्र० ३ नेग। २. प्र० १ गररिया, प्र० ४ गारुरि सब, पं० १ गारुरू। ३. प्र० ४ औ नहँ। ४. प्र० २ देखहिं चेष्टा, द्वि० १ चरचहिं तिष्ना, द्वि० २ चरचि चेष्टा, तृ० १ चरचहि चिंता। ५. द्वि० २, ४, पं० १ निरखहिं। ६. प्र० १ सो ओषद, प्र० २ ओषद आ। ७. प्र० १, २ लछ्न, द्वि० ५ लछिमन। ८. द्वि० ३ सन कै बान। ९. तृ० ३ मोहै अपछरा। १०. द्वि० २ नहिं रामा, द्वि० ४ तहँ सो राम, द्वि० ६ सो रामा। ११. पं० १ बल। १२. प्र० १, २, द्वि० १, २, ६, तृ० ३ चेतहु। १३. प्र० २ मन, तृ० ३ गति। १४. द्वि० ४, ५ पुनि। १५. प्र० २ संगा।

धावन तहाँ पठावहु[16] देहिं लाख दस रोक।
है सो बेलि[17] जेहि बारी आनहिं[18] सबै बरोक[19] ॥

[१२१]

जौं भा चेत उठा बैरागा। बाउर जनहुँ सोइ अस जागा।
आवन जगत[2] बालक जस रोवा। उठा रोइ हा ग्यान सो[3] खोवा।
हौं तो अहा अमरपुर जहाँ। इहाँ मरनपुर[4] आएउँ कहाँ।
केइँ उपकार[5] मरन[6] कर कीन्हा। सकति जगाइ जीउ हरि[7] लीन्हा।
सोवत अहा जहाँ सुख साखा। कस न तहाँ सोवत बिधि[8] राखा।
अब जिउ तहाँ इहाँ तन[9] सूना। कब लगि रहै[10] परान बिहूना।
जौं[11] जिउ घटिहि[12] काल के हाथाँ। घटन[13] नीक[14] पै जीउ निसाथाँ[15]।[16]

अहुठ हाथ तन सरवर[17] हिया कँवल तेहि माँह।
नैनन्हि जानहु निअरें कर पहुँचत अवगाह[18] ॥[19]

---

१६. द्वि० २ नोवांहें। [17]. प्र० २ बेर्शा, द्वि० २ तन। [18]. प्र० १, द्वि० १ आनिअ, तृ० ३ आनथु, तृ० १ आनहु। [19]. प्र० १ सबै (हिंदी मूल) बरोग, द्वि० ३ सब तेहि रोग।

[१२१] [1]. प्र० २ सोइ क एक, द्वि० ४, ५ सोवत उठि। [2]. प्र० १ जगत आव, प्र० २ जगत अवनी, द्वि० ४ आवत जग, द्वि० ५ आइ जगत, तृ० ३ आवन जग। [3]. द्वि० १ हियँ जान जस, द्वि० ६ वह ज्ञान सो, तृ० १, च० १ हिअ ज्ञान सो। [4]. प्र० २ अमरपुर, तृ० ३ मरन पुनि। [5]. प्र० २ अपकार, तृ० ३ उपचार। [6]. प्र० २ मरम कर, द्वि० ५ मरनपुर। [7]. तृ० ३ जीव जेइँ हरिकै, द्वि० ३, च० १, पं० १ हँकारि जीउ हरि। [8]. द्वि० ४ नहिं (?), च० १ बिन। [9]. प्र० २ गावर। [10]. प्र० १ कैसें रहैं, द्वि० ६ कब लगि रह तन। [11]. प्र० १ जेइँ। [12]. प्र० १ दीन्ह। [13]. द्वि० २, ३ कठिन। [14]. तृ० ६ नपइँ। [15]. द्वि० २ लै जीवन साथ। [16] प्र० २ तुम अबहीं जेइं घर पोईं, कँवलन बैठहु पैठहु कोईं। (१२३.२) [17]. प्र० १ तन सरवर भा औं हत। [18]. प्र० ४ करहिं पहुँचत नाहिं। [19]. प्र० २ राज करहु तुम राजा सभ तोहरे भंडार, रानी नागमती अस सो बेलसहु तुम सार।

[११७]

नाभी कुंडर[1] मलै समीरू। समुँद भँवर जस भँवै गँभीरू[2]।
बहुतै भँवर[3] बौंडरा भए। पहुँचि न सके सरग कहँ गए[4]।
चंदन माँझ कुरंगिनि खोजू। दहुँ को पाव को राजा भोजू[5]।
को ओहि लागि हिवंचल[6] सीझा। का कहँ लिखी औस को[7] रीझा।
तीवइ[8] कँवल सुगंध सरीरू[9]। समुँद लहरि सोहै[10] तन चीरू।
झूलहिं[11] रतन पाट के झोंपा। साजि मदन दहुँ[12] कापहँ कोपा[13]।[14]
अबहिं सो आहि कँवल कै करी। न जनौं कवन भँवर[15] कहँ धरी।

वेधि रहा जग बासना परिमल मेद सुगंध।
तेहि अरघानि भँवर सब लुबुधे तजहिं न नीवी[16] बँध ॥

[११८]

बरनौं नितँब[1] लंक[2] कै सोभा। औ गज गवन देखि सब[3] लोभा।

---

[११७] १. प्र० २ कुंड, पं० १ कुंड पर, द्वि० ५, तृ० २ कुंड सो, द्वि० २ कुंड जो। २. प्र० २ लहरि जो वह नीरू। ३. द्वि० २ लोंह, द्वि० ६ धूर। ४. प्र० २ कँवल कली जस बिगसत राए। ५. प्र० २ जैसे फिरै भँवर केहिं भोगू। ६. द्वि० १ होइ रस। ७. तृ० ३ लिखी औस की, द्वि० ४ औस रची को। ८. प्र० १ नवल, प्र० २, द्वि० २ नीवी, द्वि० ४ कोंवल, द्वि० ५ सोहै, च० १ सोई, तृ० १ तन वह। ९. द्वि० ६ कँवल सुगंध सुहाइ सरीरू। १०. प्र० २ सोहहीं। ११. द्वि० ४ सोलहिं। १२. द्वि० ६ अस। १३. प्र० १ रोपा। १४. तृ० ३ मदन भँडार रोमावलि गई, जनु दरपन कै मूँठि सो भई। १५. प्र० २ कँवल नभ। १६. प्र० १ लुबुधे तजहिं न तेहि सनमंध, प्र० २ बार बुध तरुनौ बंध, द्वि० १ लुबुधे तजहिं न सोई बंध, द्वि० २, ३, ६, तृ० २ लुबुधे तजहिं न नीवी बंध। द्वि० ४ लुबुधे तजहिं न ताकर रंध, द्वि० ५ लुबुधे तजहिं न देई बंध, द्वि० ७ तपही नीभी बंध, तृ० १ लुबुधे तजहिं न पीवी बंध, तृ० ३ लुबुधे तजहिं न (तेहिं) सँग बंध, च० १ लुबुधे तजहिं न अपने बंध, पं० १ तजहिं न तिन वै बंध।

[११८] १. प्र० १ कहौं जाँघि, प्र० २, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १ बरनौं तैसि, द्वि० २. तृ० २ बरनौं जपक। २. द्वि० २, तृ० २ लंक तर, द्वि० ६, च० १ जंघ कै, तृ० १, ३ कनक कै। ३. द्वि० २ मन, तृ० ३ जग।

जुरे[४] जंघ सोभा अति पाए। केरा खाँभ[५] फेरि जनु लाए।
कँवल चरन अति रात[६] बिसेखे। रहहिं पाट पर पुहुमि न देखे।
देवता हाथ[७] हाथ पगु लेहीं[८]। पगु पर जहाँ[९] सीस तहँ देहीं।
माँथें भाग को दहुँ अस पावा। कँवल चरन लै सीस चढ़ावा।
चूरा[१०] चाँद सुरुज उजिआरा पायल[११] बीच[१२] करहिं झनकारा[१३]।
अनवट बिछिआ नखत तराईं। पहुँचि सकै को पावन्हि ताईं।

बरनि सिंगार न जानेउँ नखसिख जैस अभोग[१४]।
तस जग किछौ[१५] न पावौं उपमा देउँ ओहि जोग[१६] ॥*

[११९]

सुनतहि राजा गा मुरुछाई[१]। जानहुँ लहरि सुरुज[२] कै आई।
पेम घाव दुख जान न कोई। जेहि लागै जानै पै सोई।
परा सो पेम समुंद अपारा। लहरहि लहर होइ[३] बिसँभारा।
बिरह भँवर होइ[४] भाँवरि देई। खिन खिन जीव हिलोरहि[५] लेई।
खिनहि निसास[६] बूड़ि जिउ जाई। खिनहि[७] उठै निसँसै[८] बौराई[९]।

---

४. द्वि० ४ जोरि, द्वि० ७ जोरी। ५. प्र० १ केदलि खाँभ, द्वि० २ तृ० ३, च० १ केरा गाभ। ६. द्वि० २ रकत। ७. द्वि० २ लोकि। ८. प्र० २ देखहिं। ९. प्र० १, २, द्वि० ४, ३, च० १ जहँ पगु धरै पं० १ जहँ पगु परै। १०. द्वि० १ जुरे, द्वि० २ जूरा, द्वि० ३ जरा। ११ प्र० २ पाएन्ह। १२. प्र० १, द्वि० ७ बीजु। १३. प्र० १, द्वि० ४ चमकारा, द्वि० ६ जमकारा। १४. प्र० १, द्वि० ७ सिंगार। १५. प्र० १ तस जगत नहिं, प्र० २ तस जगत न पावै किछू, द्वि० २ तस किछु जगत न पावौं. द्वि० ३ तस किछु उपमन पाएउँ। १६. प्र० १, द्वि० ७ जो नारि।

*प्र० १, २, द्वि० ७ में इसके अनन्तर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिये परिशिष्ट)

[११९] १. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १, पं० १ मुरझाई। २. प्र० १ सुरा, द्वि० १ बिरह। ३. द्वि० २ लहर लहर होइ गा, तृ० ३ लहरहिं लहर लेइ। ४. प्र० २ दै, द्वि० २ भा। ५. द्वि० ४ बरनह। ६. तृ० ३ साँस। ७. द्वि० १ स्रीन। ८. प्र० १, २, द्वि० २, तृ० २, ३, निसरइ, द्वि० १ जैसें। ९. प्र० २ यह बिरहा जो जानै जिआ, सो तजि गए रहास कै पिआ।

[१२२]

सबन्हि कहा मन समझहु राजा । काल सतें कै जूझि[1] न छाजा[2] ।
तासौं[3] जूझि जात जौं जीता[4] । जात न किरसुन तजि[5] गोपीता[4] ।
औ नहिं नेहु काहु सौं कीजै । नाउँ मीठ खाएँ जिउ दीजै ।
पहिलेहिं सुक्ख नेहु जब[7] जोरा । पुनि होइ[8] कठिन निबाहत ओरा ।
अहुठ हाथ तन जैस सुमेरू[10] । पहुँचि न जाइ[11] परा तस फेरू ।
गँगन दिस्टि सौं[12] जाइ पहूँचा । पेम अदिस्ट[13] गँगन सौं ऊँचा ।
धुव[14] तें ऊँच पेम धुव उवा[15] । सिर दै पाउ देइ[16] सो छुवा ।

तुम्ह राजा औ सुखिआ करहु राज सुख भोग ।
एहि रे[17] पंथ सो पहुँचै सहै जो दुक्ख बियोग ॥*

[१२३]

सुऐं कहा मन समुझहु[1] राजा । करत पिरीत[2] कठिन है काजा[3] ।

---

[१२२] १. प्र० १ जूझ काल सों किएँ, द्वि० २ काल सनान कै जूझि, तृ० ३ काल सेंति कै जूझि, द्वि० ५ काल सतें कछु जूझि, द्वि० ४ कालहु ते कोउ जूझि, च० १ काल सपनान कै जुझि । २. द्वि० ३ साजा । ३. तृ० ३ सातौं । ४. प्र० १, द्वि० २, ५, च० १ जीता, गोपीता, द्वि० १ जीता, ससि कीता, तृ० ३ जीतना, गोपिना, द्वि० ४ जिना, गोपिना, द्वि० ३ जिता, गोपिता । ५. प्र० १ तजि नहिं किरन जात, द्वि० २, ४, ५, ३, च० १ जात न किसन तजि, तृ० ३ जात न किरन जात । ६. तृ० १ तासौं दुख कहै इमि बीरा, जेहि सुनि करि लागइ पर पीरा । (तुलना० ३६१·१) । ७. द्वि० २ जत, द्वि० ६, च० १ जो (हिंदी मूल) । ८. द्वि० २ सुठि, द्वि० ३ सो । ९. द्वि० ५ रहन हाथ, द्वि० ३ औ न साथ । १०, द्वि० ५ सरीरू । ११. प्र० १ मिला न जाइ, द्वि० ५ पहुँचि न सकै । १२. तृ० ३ जौं, पं० १ तें । १३. तृ० ३ दिस्टि । १४. तृ० ३ धुआँ । १५. तृ० १ जो धुवा । १६. द्वि० ३ धरै । १७. द्वि० ६ तेहि रे ।

*यह छंद प्र० २ में नहीं है, किंतु प्रसंग में आवश्यक लगता है । अगले छंद की प्रथम पंक्ति प्रायः इस छंद की प्रथम पंक्ति जैसी है, कदाचित् इसीलिए यह छंद उसमें छूटा है ।

[१२३] १. प्र० १, तृ० १ मोसौं सुन, द्वि० ३ मन चेतहु । २. तृ० ३ प्रीति करब, द्वि० ४, ३ करब पिरीति । ३. प्र० २ जौं चाहहु सिंघल कै बारी, पहिरो केथरा पटंबर उतारी ।

तुम्ह अबहीं जेइँ घर पोईं[४]। कँवल न बैठि बैठ हहु कोईं[५]।[६]
जानहि भँवर जो तेहि पँथ लूटे। जीउ दीन्ह औ[७] दिएँ न छूटे।
कठिन आहि सिंघल कर राजू। पाइअ नाहिं राज के[८] साजू।
ओहिं पँथ जाइ जो[९] होइ उदासी। जोगी जती तपा[१०] संन्यासी[११]।
भोग[१२] जोरि पाइत वह[१३] भोगू[१४]। तजि सो भोग कोइ[१५] करत न जोगू[१४]।
तुम्ह राजा चाहहु सुख पावा। जोगहि भोगहि कत बनि आवा[१६]।

साधन्ह सिद्धि न पाइअ जौं लहि साध न तप्प[१७]।
सोई[१८] जानहिं बापुरे जो सिर[१९] करहिं कलप्प[१७]।

[१२४]

का भा जोग कहानी कथें। निकसै न घिउ बाजु[१] दधि[२] मथें।
जौं लहि आपु हेराइ न कोई। तौ लहि हेरत पाव न सोई[३]।

---

४. तृ० ३ जेहि घर होई। ५. प्र० १, पं० १ कँवल न बैठहु बैठहु कोई, द्वि० ५ कँवल न भेंटहु भेंटहु कोई, द्वि० ६ कँवल न बैठि बैठ है कोई, तृ० १ कँवल न बैठ बैठ जो कोई, द्वि० १ कँवल न बैठा नेह कि कोई, द्वि० २ कँवल न बैठि बैठ तहँ कोई, तृ० ३ कौन बैठ बैठे तहँ कोई, द्वि० ४ कँवल न भेंटहु भेंटहु हो कोई, तृ० २ कँवल न बैठिं बैठि कै कोई, द्वि० ३ कँवल न बैठि बैठ नहिं कोई।
६. प्र० २ जौ चाहहु सिंघल कै राजू चलहु बेगि तुम करहु समाजू।
७. प्र० १ पै। ८. द्वि० ४. ५ जूझ। ९. तृ० ३ सो। १०. प्र० १ तपी। ११. द्वि० १ औ ओहि पंथ जाइ सो कोई, जोगी जती सन्यासी होई। १२. द्वि० ६, ३ जोग। १३. प्र० १, २ असे रूप न पाइअ वह, तृ० ३ भोग जोरि वह पाइत, द्वि० ३ भोग जोरि वह पावत, च० १ भोग किएँ वह पावत। १४. तृ० ३ भोगी, होइ न जोगी।
१५. प्र० १ तजि सो रूप कोइ, प्र० २ तजि सो भोग चाह। १६. तृ० ३ जोगहि भोगहि न्याव न आवा, द्वि० ४, ५ जोगहि भोग करत नहिं भावा।
१७. प्र० १ कोइ, डालहि खोइ। १८. प्र० १, द्वि० ५ सो पै, द्वि० ३, च० १ ते पै। १९. प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ६, तृ० १, २, पं० १ सीस जो।

[१२४] १. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ निकसै घीउ न बिनु, द्वि० ६ निकसै घिउ न छाछ। २. द्वि० २, ३, ७ दूध। ३ द्वि० २ कोई।

पेम पहार कठिन बिधि गढ़ा। सो पै चढ़ै[४] सीस सौं चढ़ा[५]।
पंथ सूरिन्ह[६] कर[७] उठा अंकूरू। चोर चढ़ै कि चढ़ै मंसूरू[८]।
तू राजा का पहिरसि कंथा। तोरें घटहिं[९] माँह दस पंथा।
काम क्रोध तिस्ना मद[१०] माया। पाँचौ चोर न छाड़हिं काया।
नव सेंधै[११] ओहि घर मँझिआरा[१२]। घर मूसहिं निसि कै उजिआरा[१३]।

अबहूँ[१४] जागु अयाने होत आव निसु[१५] भोर।
पुनि किछु हाथ न लागिहि मूसि जाहिं जब[१६] चोर॥

[१२५]

सुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मार[१] पेम चित[२] लागा।
नैनन्ह[३] ढरहिं मोति औ मूँगा। जस गुर खाइ रहा होइ गूँगा।
हिएँ की जोति दीप वह सूझा। यह जो दीप अँधिअर भा बूझा[४]।
उलटि दिस्टि माया सौं रूठी। पलटि न फिरी जानि कै[५] झूठी।
जौ पै नाहीं अस्थिर दसा। जग उजार का कीजै बसा।

---

४. प्र० १ पाव, द्वि० ४, ५ जाइ। ५. तृ० २ जौलहि मथै न कोइ दै चितू। सूधी अँगुरी न निकस न घीऊ। ६. प्र० १ कौनिन्ह, द्वि० ६, ३, च० १ सूर। ७. प्र० २ केर, तृ० ३ की, द्वि० ४ कै, तृ० १ सौं। ८. तृ० २ स्वाँस डेंड मन मथनी गाढ़ी, हिएँ जोति तें फूटइ साढ़ी। (तुलना० १५२. ४) ९. प्र० १, २, तृ० ३ घटहि माँझ, द्वि० १, ६ घरहि माँह, द्वि० २ कंठ पाँच। १०. द्वि० २, तृ० ३ औ, द्वि० ४, ५, तृ० १, २, ३, च० १ पं० १ मन। ११. प्र० २ नवनिधि। १२. प्र० १, द्वि० २ तिन्हकै, प्र० २ तहाँ किआ, तृ० ३ जिन्हके, द्वि० ४, च० १, पं० १ उन्हकै, द्वि० ३ जेहि घर। १३. प्र० १, द्वि० २ डिठिआरा, उजिआरा, प्र० २ दिठिआरी, उजेआरी, तृ० २, ३ माँधआरा, अँधिआरा, द्वि० १ अंधिआरा, उजिआरा। १४. प्र० १, द्वि० २ अजहूँ। १५. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १, च० १, प्र० २, तृ० ३ निसि। १६. द्वि० १ मूसि जाहिं ज्यों, द्वि० २ जौ (हिंदी मूल) मूसहिं घर, तृ० १ मूसि जाहिं घर।

[१२५] १. प्र० २ लागी। २. प्र० १, द्वि० ४, ५, ३ टकटका। ३. द्वि० १ सोनन्हि, द्वि० ३ बहुतहि। ४. प्र० १, २ अंधिआरइ बूझा, द्वि० २ अंधियर होइ बूझा, तृ० ३ अंधियर भा सूझा, द्वि ३, तृ० १ अँधियर कै बूझा। ५. प्र० २ पलटो जानि फिरी, द्वि० २, तृ० २ पलटि न भिरी।

गुरू बिरह चिनगी पै मेला। जो सुलगाइ लेइ सो चेला।
अब कै फनिग[७] भृंगि कै करा[८]। भँवर होउँ[९] जेहि कारन जरा।

फूल फूल फिरि पूछौं जौं पहुँचौं ओहि केत[१०]।
तन नेवछावर कै मिलौं ज्यौं मधुकर[११] जिउ देत[१०] ॥*

[१२६]

तजा राज राजा भा जोगी। औ किंगरी[१] कर गहेँ बियोगी।
तन बिसँभर मन[२] बाउर रटा[३]। अरुझा पेम परी सिर जटा।
चंद बदन औ चंदन[४] देहा। भसम चढ़ाइ कीन्ह तन खेहा।
मेखल सिंगी चक्र धँधारी[६]। जोगौटा रुद्राख[७] अधारी[६]।
कंथा पहिरि डंड कर गहा। सिद्ध होइ कहँ[८] गोरख कहा।
मुंद्रा स्रवन कंठ जपमाला[९]। कर[१०] उदपान[११] काँध बघछाला[१२]।
पाँवरि पाँव[१३] लीन्ह[१४] सिर छाता। खप्पर[१५] लीन्ह भेस कै राता।

चला भुगुति माँगै कहँ साजि[१६] कया तप जोग।
सिद्ध होउँ पदुमावति पाएँ[१७] हिरदै जेहि क[१८] बियोग ॥

---

७. द्वि० १ अब कै पतंग, द्वि० ६ अब हौं भएउँ। ८. प्र० १ अब मैं भृंग फनिग कै करा, द्वि० २, ४ अबकै पतँग भृंग कै करा। ९. द्वि० १, तृ० १ होइ। १०. प्र० २ केउ, देउ, द्वि० ३ केट, भेंट। ११. प्र० १ जनै न कनौ, प्र० २ जीव गँवावौं, द्वि० १, ३ जीव कैरा ओहिं, तृ० २ ज्यों रे भँवर।

*इसके अनंतर द्वि० ४, ५ में एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१२६] १. प्र० २ सींगी। २. द्वि० १ काहयहि, प्र० २ बिसँभारन। ३. प्र० १ द्वि० ३, ४, ५, तृ० ३, पं० १ लटा। ४. तृ० ३ चंद्रउ। ५. द्वि० ३ पुहुमि। ६. प्र०१ अधारी, धँधारो, प्र० २ अधारी, सँवारी, द्वि० ४ धँधारी, सँभारी। ७. द्वि० १ जोगौटा, ?वराक, तृ० ३ औ गौटा रुद्राख द्वि० ४, ५ लीन्ह हाथ तिरसूल, द्वि० ३, च० १ जोगतार रुद्राख। ८. प्र० १ होन कहँ। ९. प्र० २ बनमाला। १०. प्र० १ कटि, च० १ गर। ११. प्र० १, द्वि० २, तृ० १, ३ उदयान, द्वि० १, ४,५, च० १ वध्यान प्र० २ उडिआनी। १२. प्र० बघंबर छाला, प्र० २ काँध मृगछाला, द्वि० १ लीन्ह बघछाला, द्वि० ४, ५, काँध सिंघ छाला। १३. प्र० १ पहिरि। १४. द्वि० ३, ६, तृ० १ कीन्ह। १५. प्र० १, २ कापर। १६. प्र० १, २, द्वि० १, ~~६, तृ०~~ ३, च० १ साधि। १७. प्र० १, २ पदुमावति, द्वि० १ पदुमावति पहँ। १८. तृ० २ बास।

राज पाट दर[१०] परिगह सब तुम्ह सों उजिआर।
बैठि भोग रस मानहु कै न चलहु अँधिआर[११]॥

[१३०]

मोहिं यह लोभ सुनाउ न[१] माया। काकर सुख काकर यह काया[२]।
जौं निआन तन[३] होइहि छारा। माँटी पोखि मरै[४] को भारा[५]।
का भूलहु एहि चंदन चोवाँ। बैरी जहाँ आँग के[६] रोवाँ।
हाथ पाउ सरवन औ आँखी। ये सब ही भरिहैं पुनि[७] साखी।
सोत सोत बोलिहिं[८] तन दोखू। कहु कैसें होइह गति[१०] मोखू।
जौं भल होत राज औ[११] भोगू। गोपिचंद कस[१२] साधत जोगू[१३]।
ओनहूँ सिस्टि जौं[१४] देख परेवा। तजा राज कजरी बन[१५] सेवा।

देखु अंत अस होइहि गुरू दीन्ह उपदेस।
सिंघल दीप जाब मैं माता मोर अदेस[१६]॥

[१३१]

रोवै नागमती रनिवासू। केइँ तुम्ह कंत दीन्ह बन बासू।

---

१०. द्वि० ७ धन। ११. प्र० २, पं० १ सब छार।

[१३०] १. प्र० २ सुनावहु। २. प्र० १ काकर घर काकर मठ माया, द्वि० १ काकर घर काकर यह माया। ३. प्र० २, तृ० ३ पुनि, तृ० १ पै। ४. प्र० २, तृ० ३ भरै। ५. द्वि० ६ हारा। ६. प्र० १, २ जहाँ आँग का, तृ० ३ जहाँ लहि आँग क। ७. प्र० १ ये पुनि तहाँ भरहिं जो, प्र० २ एई पुनि करिहहिं सब, द्वि० १ ये सब भरहिं आइ, तृ० ३ पै सब भरिहैं हो पुनि, द्वि० ५ ये सब भरइ आइ पुनि, द्वि० ३ आपुन आपुन बोलहिं, पं० १ एई फिरिहोइ हैं सब। ८. द्वि० १ पोषिहिं। ९. प्र० १ सो। १०. प्र० १ तन। ११. प्र० १ सुख। १२. प्र० १ गोपिचंद नहिं। १३. प्र० २ हम कहँ सिख देवै जनि माता, हम अब चलब सिंघल के रता। १४. प्र० २, द्वि० ७ वोहूँ दिसि तौ, द्वि० १, ३, ६, तृ० १ दुहूँ सिस्टि जौ, द्वि० २ बहीं सिस्टि जैां, तृ० ३ एहु सिस्टि जै। १५. प्र० १, २ आपन गुर। १६. द्वि० ४, ५ माता तुम सो अदेस, तृ० २ तहाँ मोर आदेस।

अब को हमहिं करिहि[1] भोगिनी। हमहूँ[2] साथ होइब[3] जोगिनी।
कै हम लावहु अपने[4] साथाँ। कै अब[5] मारि चलहु सैं हाथाँ[6]।
तुम्ह अस बिछुरे पीउ पिरीता। जहवाँ राम तहाँ सँग सीता।
जौ लहि जिउ सँग[7] छाड़ न काया। करिहौं सेव पखरिहौं पाया।
भलेहिं पदुमिनी रूप अनूपा। हमतें कोइ न आगरि रूपा।
भवै भलेहिं पुरुषन्ह कै डीठी। जिन्ह जाना तिन्ह दीन्हि न पीठी[8]।

देहिं असीस सबै मिलि तुम्ह माथें निति[9] छात।
राज करहु गढ़ चितउर राखहु पिय अहिबात॥*

[१३२]

तुम्ह तिरिआ मति हीन तुम्हारी। मूरुख सो जो मतै घर[1] नारी।
राघौ जौं सीता सँग लाई। रावन हरी कवन सिधि पाई।
यहु संसार सपन कर लेखा[2]। बिछुरि गए जानहु नहिं देखा[3]।
राजा भरथरि सुनि रे[4] अयानी। जेहि के घर सोरह सै रानी।
कुचन्ह लिहें तरवा सहराईं। भा जोगी कोइ साथ न लाईं।
जोगिन्ह काह भोग सौं काजू। चहै न मेहरी चहै न राजू[5]।

---

[१३१] १. प्र० १, २ करिहि काम रस। २. द्वि० २ हम तुम्ह। ३. प्र० १ संग होव तुम्ह, प्र० २ साथ पिअ होव, तृ० ३ साथ होव अब, द्वि० ४, ५, तृ० १ साथ होइहहिं, द्वि० ३ साथ होहिं, द्वि० ७ सँग होइब। ४. द्वि० ५, च० १ आपन। ५. प्र० २, द्वि० २ हम। ६. प्र० २ निज हाथ, द्वि० १ तेहि हाथा, तृ० ३ सैं साथाँ। ७. द्वि० ३ तन। ८. द्वि० ७, तृ० १ दीन्ही पीठी, द्वि० ३ दीन्हि बईठी। ९. प्र० १ मनि, द्वि० ७ सिर।

*यह छंद तृ० २ में नहीं है, किंतु प्रसंग में अनिवार्य है, यह छंद १३२ से प्रकट है।

[१३२] १. तृ० १ सँग। २. द्वि० २, ३ जस मेरा, द्वि० ४, ५ जस हेरा। ३. द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ अंत न आपन को केहि केरा। ४. प्र० १, तृ० ३ राजा भर्थहरि सुनहिं, प्र० २, द्वि० १, २, च० १, पं० १ राजा भरथ नहिं सुने, द्वि० ४, ५ राजा भरथरिहिं नहिं सुने, द्वि० ३ राजा भरथहिं सुनेन। ५. प्र० १, २ वर बरनी औ राजू, द्वि० ३ तिरिआ चहै न राजू।

जूड़ कुरकुटा पै भखु[६] चाहा। जोगिहि तात भात दहुँ[७] काहा।

कहा न मानै राजा तजी सबाई[८] भीर।
चला छाड़ि सब[९] रोवत फिरि कै देइ न धीर॥

[१३३]

रोवै मता[१] न बहुरै[२] बारा। रतन चला जग भा[३] अँधिआरा।
बार[४] मोर रजियाउर रता[५]। सो लै चला सुवा परबता।
रोवहिं रानी तजहिं पराना। फोरहिं बलय करहिं खरिहाना।
चूरहिं गिव[६] अभरन औ[७] हारू। अब काकहँ हम करब सिंगारू।
जाकहँ कहहिं रहसि कै पीऊ। सोइ चला काकर यहु[८] जीऊ।
मरै चहहिं पै मरै न पावहिं। उठै आग तब लोग बुझावहिं।
घरी एक सुठि भएउ[९] अँदोरा। पुनि पाछें बीता[१०] होइ रोरा[११]।

टूट मनै नव मोती फूट मनै दस काँच।
लीन्ह समेटि ओबरिन[१२] होइगा दुख[१३] कर नाँच॥*

---

६. प्र० १, द्वि० ७ जोगी भुगुति कुरकुटा, प्र० २ होइ कुरकुटा जो पै, तृ० १ जूड़ भात नित। ७. द्वि० ३, ४, ५, तृ० ३, च० १ सों। ८. प्र० १ समइ भइ। ९. प्र० १, २, ६, तृ० २ छाड़ि कै।

[१३३] १. प्र० १, तृ० ३ मातु, द्वि० ४, ५, च० १ माता, प्र० २ माए, तृ० २ मता। २. तृ० ३ नहिं पलटै, द्वि० ४, ५, च० १ फिरै नहिं। ३. प्र० २ घर भा, द्वि० ६, ७ कै जग। ४. द्वि० २ बाउर, द्वि० ६ राज। ५. प्र० १ राजा बौराता, तृ० ३ राजा बाउर, च० १, पं० १ रज बाउर। ६. द्वि० ७ जर। ७. प्र० २, तृ० २, पं० १ जो अभरन, द्वि० २, तृ० ३ अभरन उर। ८. प्र० १ अब, द्वि० ७ हौं। ९. प्र० १ भै उठा, प्र० २ सम भएउ। १०. द्वि० ७ बूझी निबरा। ११. प्र० १ भारोरा, प्र० २ भए भोरा। १२. तृ० ३ लीन्ह समेटि बैरनु, प्र० २ लीन्ह समेटि चोआरन, द्वि० ३ लीन्ह समेटि चेरिनि, द्वि० ७ लीन्ह समेटि बोहेरन, द्वि० ४, ५ लीन्ह समेटि सब अभरन, तृ० १ लीन्ह समेटि सभ बैरन, च० १ लेहु समेटहु अभरन। १३. प्र० १ भै गो दुख, प्र० २ होए गाहुर।

* प्र० १, द्वि० ४, ५, (तृ० १) में इसके अनंतर एक छंद और है—मैं एहि अरथ पंडितन्ह बूझा—आदि। (देखिए परिशिष्ट)

[१३४]

निकसा राजा सिंगी पूरी। छाड़ि नगर[१] मेला होइ दूरी।
राय राने सब[२] भए बियोगी। सोरह सहस कुँवर भए जोगी।
माया मोह हरी सैं हाथाँ। देखेन्हि बूझि[३] निश्रान न साथाँ।
छाड़ेन्हि लोग कुटुँब घर सोऊ[४]। भे निनार दुख सुख तजि दोऊ[५]।
सँवरै राजा सोइ अकेला। जेहि रे पंथ खेलै[६] होइ चेला।
नगर नगर[७] औ गावँहिं गाऊँ। चला छाड़ि सब ठावँहिं ठाऊँ।
काकर घर काकर मढ़[८] माया। ताकर सब जाकर जिउ काया।

चला कटक जोगिन्ह कर कै गेरुआ[९] सब भेषु[१०]।
कोस बीस चारिहुँ दिसि जानहुँ फूला टेसु[१०]॥

[१३५]

आगें सगुन सगुनिआँ ताका। दहिउ मच्छ रूपे कर टाका[१]।
भरें कलस तरुनी[२] चलि[३] आई। दहिउ लेहु ग्वालिनि[४] गोहराई।
मालिनि आउ मौर लै[५] गाँथें। खंजन बैठ नाग के माँथें।
दहिनें मिरिग आइ गौ[६] धाई। प्रतीहार बोला खर बाईं।
बिरिख[७] सँवरिआ दाहिन बोला। बाएँ दिसि गादुर नहिं[८] डोला[९]।

---

[१३४] १. द्वि० ७ तज। २. प्र० १ राजा राय जो, द्वि० ४, ५, ६, तृ० १, २, ३ राय राँक सब, द्वि० ७, तृ० २ राय राजा सब, द्वि० १, पं० १ राय रखै। ३. प्र० २ निश्रर, द्वि० २ नहिं आन। ४. प्र० १, २, द्वि० १, ६, ७, तृ० २ सब कोऊ। ५. द्वि० ७ भए निनारे दुख सुख, तृ० २ भए निरारे दुख सुख तजि। ६. तृ० ३ चलौं। ७. प्र० १ देस कोस। ८. प्र० १, २ मठ, च० १ यह। ९. द्वि० ७ भाग सबन्ह। १०. च० १ कर भेषु, केस।

[१३५] १. प्र० १, २, तृ० १ टका, द्वि० ३ थाका। २. तृ० १, च० १ तिरियाँ। ३. प्र० १ लै, प्र० २, द्वि० ४, ७ तृ० १ जल। ४. प्र० १ मालिनि। ५. प्र० २ सिर। ६. प्र० २ आए बहु। ७. द्वि० ५, ३, ६, च० १ पुरुष। ८. तृ० १, च० १ गादुर तहँ, तृ० २ जंबुक नहिं। ९. प्र० २ धोबिनि आइ सौंह दिठि बोला।

बाएँ[१०] अकासी[११] धोबिनि आई[१२] । लोवा दरसन आइ[१३] देखाई ।[१४]
बाएँ कुरारी दाहिन कूचा[१५] । पहुँचै भुगुति जैस मन रूचा ।

जाकहँ होहिं सगुन अस औ गवनै जेहि आस[१६] ।
अस्टौ महासिद्धि तेहि[१७] जस[१८] कबि कहा बिआस ।।

[१३६]

भएउ पयान चला पुनि[१] राजा । सिंघनाद जोगिन्ह कर बाजा ।
कहेन्हि[२] आजु कछु[३] थोर पयाना । कालि्ह पयान दूरि है जाना ।
ओहिं मेलान[४] जब[५] पहुँचिहि कोई । तब[५] हम कहब पुरुष भल सोई ।
एहि आगे परबत की पाटी[६] । बिषम पहार अगम सुठि[७] घाटी ।
बिच बिच खोह नदी औ नारा । ठाँवहिं ठाँव उठहिं[८] बटपारा[९] ।
हनिवँत केर सुनब पुनि[१०] हाँका । दहुँ को पार होइ को थाका ।
अस मन जानि सँभारहु आगू । अगुआ केर होहु पछलागू[११] ।

करहिं पयान भोर उठि[१२] नितहि[१३] कोस दस जाहिं ।
पंथी पंथाँ[१४] जे चलहिं ते का रहन ओनाहिं[१५] ।।

---

१०. प्र० १, २ बाम । ११. तृ० ३ अकासिनि । १२. द्वि० ४, ५ धवरिनि आई, तृ० २, च० १ बोल सुहाई, पं० १ दाहिनि आई । १३. द्वि० २, तृ० २ दीन्ह । १४. प्र० २ लिहे सुगंध गंधी बहु आए, देखी सभा बहुत सुख पाए । १५. प्र० १ दहिने काक बाम कुचकुचा, प्र० २ बाएँ खर बाएँ कुचकुचा, तृ० ३ बाएँ कुरारी औ पुनि कूचा, द्वि० ७, च० १ दहिंन कुरारी बाएँ कूचा । १६. द्वि० ३ पास । १७. द्वि० ४, ५ सिधि पँथ, द्वि० ७ निधि ताकहँ । १८. द्वि० ७ अस ।

[१३६] १. प्र० २ उठा चलि, द्वि० १, २ चला उठि, तृ० ३ चलावा, द्वि० ४, ५, च० १ चला तब । २. द्वि ७ कीजै । ३. तृ० ३ है । ४. तृ० ३ एहि मेलान । प्र० १ ओहि पयान । ५. द्वि० ३, ४, ५ जौ, तब, च० १ जौ, तौ । (हिंदीमूल) ६. द्वि० २, ४, ५, ७, तृ० १ बाटी । ७. प्र० १ अति, प्र० २ है । ८. द्वि० ५ बैठ, तृ० २ रहहिं, च० १ अहहिं । ९. द्वि० ३ पटहारा । १०. प्र० १ तहँ, द्वि० ४ नित । ११. प्र० १ सँग लागू । १२. द्वि० ४ भोरा नहिं । १३. प्र० २ तबहिं, द्वि० १, २, ३ पंथ । १४. प्र० १ पंथी, प्र० २ पंथ न, तृ० ३ पंथ, द्वि० ७ पंथहि । १५. प्र० १ ताकहँ रहन जो नाहिं, प्र० २ तेहि कै रहना नाहिं, द्वि० ५ तेका रहै ओटाहिं, द्वि० ६ तेका रहै ओनाहिं, द्वि० ७ तेहिका रहन होइ नाहिं, तृ० ३ तेहि कर रहनौ नाहिं ।

[१३७]

करहु दिस्टि थिर[1] होहु बटाऊ। आगू देखि धरहु मुइँ[1] पाऊ।
जौं रे उबट[3] होइ[4] परे भुलाने। गए मारे पँथ चलै न जाने।
पावन्ह पहिरि लेहु सब पँवरी। काँट न चुभै न गड़ै अँकरवरी।
परे आइ अब[5] बनखँड[6] माहाँ। डंडक आरन[7] बीझ बनाहाँ[8]।
सघन[9] ढाँख बन चहुँ दिसि फूला। बहु दुख मिलिहि इहाँ कर[10] भूला।
झाँखर जहाँ सो छाड़हु पंथा। हिलगि मकोइ न फारहु[11] कंथा।
दहिने बिदर चँदेरी बाएँ। दहुँ[12] कहँ[12] होब बाट दुहुँ[14] ठाएँ।

एक बाट गौ सिंघल दोसर लंक समीप।
हहिं आगे पँथ दोऊ दहुँ गवनब केहि दीप॥

[१३८]

ततखन बोला सुआ सरेखा। अगुआ सोइ[1] पंथ जेइँ देखा।
सो का उड़ै न जेहि तन पाँखू। लै सो परासहिं[2] बूड़ै साखू।
जस अंधा अंधे कर संगी। पंथ न पाव[3] होइ सहलंगी।
सुनु[4] मति काज[5] चहसि[6] जौं साजा। बीजानगर बिजैगिरि[7] राजा।
पूँछु न[8] जहाँ कुंड औरं गोला[9]। तजु बाएँ अँधियार खटोला।

---

[१३७] १. द्वि० १, २ फिर, पं० १ निजु। २. प्र० १ दुइ। ३. प्र० २ बाट, तृ० १ अत। ४. द्वि० १, २ तृ० १ मुइँ। ५. द्वि० १ सब, द्वि० ६, च० १ तेहि। ६. प्र० १, २, द्वि० ३, ७ परबत। ७. प्र० १ डंडाकार। ८. द्वि० ६ बन तहाँ तृ० ३ बन माहाँ। ९. प्र० १ साँख, प्र० २ संख। १०. प्र० २ हँकारन। ११. प्र० २ हीइन्ह। १२. प्र० २ कहु। १३. तृ० ३ केहि। १४. प्र० १ दहुँ केहि बात होब एक ठाएँ, प्र० २ दहुँ कहँ होत बाट एक ठाएँ, द्वि० ६ दहुँ कहँ होत बाट केहि ठाएँ। १५. प्र० २ द्वि० ७ पाए।

[१३८] १. द्वि० ७ सुआ। २. द्वि० ३ पुनि सब। ३. प्र० १ भुलाइ। ४. च० १ तस। ५. तृ० ३ को। ६. द्वि० ७ साहि। ७. द्वि० ७ बिजै पुर। ८. प्र० १, द्वि० ३ पूँछहु, द्वि० ४, ५ पूँछा। ९. प्र० १ कोह औ कोला, प्र० २, द्वि० ३, तृ० ३ गोंड औ कोला।

दक्खिन दहिने रहै तिलंगा। उत्तर[१०] माँझे[११] गढ़ा खटंगा।
माँझ रतनपुर[१२] सौंह[१३] दुआरा। झारखंड दै बाउँ पहारा।

आगें पाउँ[१४] ओड़ैसा बाएँ देहु सो बाट।
दहिनावर्त लाइकै[१५] उतरु समुंद्र के घाट॥

[१३९]

होत पयान जाइ[१] दिन केरा। मिरगारन[२] महँ भएउ बसेरा।
कुस साँथरि भै सौर[३] सुपेती। करवट आइ बनी[४] भुइँ सेती।
कया मलै[५] तेहि[६] भसम[७] मलीजा। चलि दस कोस ओस निति[८] भीजा।
ठाँवहिं ठाँव सोवहिं सब चेला। राजा[९] जागै आपु[१०] अकेला।
जेहि कें हिएँ पेम रँग जामा। का तेहि भूख नींद बिसरामा।
बन अँधिआर रैनि अँधियारी। भादौं बिरह भएउ[११] अति भारी[१२]।
किंगरी हाथ गहें बैरागी। पाँच तंतु[१३] धुनि उठै लागी[१४]।

नैन लागु तेहि मारग पदुमावति जेहि दीप।
जैस सेवाती सेवहिं[१५] बन चातक जल सीप॥

---

१०. द्वि० २ औतन। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ बाँचहु, द्वि० २ पच्छूँ, द्वि० ६ सो जाइ सो, द्वि० ३ बाँचि चलु। १२. द्वि० ७ रतन कर। १३. तृ० ३, सिंह, द्वि० ६ समुह। १४. प्र० १ अहै, द्वि० ४, ५, तृ० ३, च० १, बाउँ, तृ० १ आव, द्वि० ३ पंथ। १५. द्वि० १, ३, तृ० १, २, दहिनाबर्त देइकै, पं० १ दहिना मारग देइकै।

[१३९] १. प्र० १ रात, प्र० २ पाए। २. तृ० ३ मिरगा बन, द्वि० ३ रनबन खंड। ३. द्वि० १, ३, ६, तृ० ३ सेज। ४. प्र० २ परी। ५. प्र० २ तृ० ३ मिली, द्वि० ३ मैल। ६. द्वि० ४, तृ० ३ जस, द्वि० २ अस, तृ० १ तन, द्वि० १, ६ तस। ७. द्वि० १ पुहुमि। ८. प्र० १, २, द्वि० १, ६ तन। ९. तृ० ३ लागा। १०. तृ० १ रैन। ११. प्र० १, २ भई। १२. प्र० १ अतिकारी, द्वि० ४ निसिकारी, द्वि० ६, तृ० १ दुख भारी। १३. पं० १ मरतिहुँ बार। १४. प्र० १, द्वि० ५, च० १, पं० १ ओही लागी, प्र० २ उठै एक रागी, तृ० ३ ऐसों जागी, द्वि० ४ एकहि रागी, द्वि० ६ उठै एक लागी, द्वि० ३ यह एक लागी। १५. प्र० १ सीप सेवाती, द्वि० १ बुंद सेवाती बिनु, द्वि० ७ सेवहिं बुंद कहँ, द्वि० ३, तृ० १, सेवाती बूँद कहँ, पं० १ सेवाती सँवरहिं।

[१४०]

मासेक लाग चलत तेहि बाटाँ। उतरे जाइ समुँद[1] के घाटाँ।
रतनसेनि भा जोगी जती। सुनि भेंटै आएउ गजपती।
जोगी आपु कटक सब[2] चेला। कौन दीप कहँ चाहिअ खेला।
पहिलेहिं[3] आए माया कीजै[4]। हम पहुनई[5] कहँ आएसु दीजै।
सुनहु गजपती उतरु हमारा[6]। हम तुम्ह एकै भाव[7] निरारा[8]।
सो तिन्ह कहँ जिन्ह महँ[9] बहु भाऊ[9]। जो निरभाव न लाव नसाऊ[10]।
यहै बहुत जो बोहित पावौं। तुम्हतें सिंघल दीप सिधावौं।

जहाँ मोहि निजु जाना होहुँ कटक लै पार।
जौं रे जिऔं लै बहुरौं[11] मरौं तौ ओहि के बार[12]॥

[१४१]

गजपति कहा सीस बरु[1] माँगा। एतने बोल[2] न होइहि खाँगा।
ये सब[3] देहु आनि नै[4] गढ़े। फूल सोइ जो महेसहि[5] चढ़ै।
पै गोसाइँ सों एक बिनाती। मारग कठिन जाब केहि भाँती।
सात समुंद असूझ अपारा। मारहिं मगर मच्छ घरियारा।

---

[१४०] १. द्वि० ३ सिंघल। २. प्र० १ सँग। ३. प्र० २ कहहिं, प्र० १, द्वि० ३, ४, ५ भलेहिं। ४. प्र० १ मया करीजै। ५. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २ पहुनाई। ६. प्र० २ बात हमारी, निनारी। ७. तृ० ३ हैं न। ८. द्वि० ५ यहु, द्वि० ७ मै। ९. प्र० १, २ सो तुम्ह कहहु जो हमहुँ न भाऊ (प्र० २ भावा), द्वि० ३ नेवतहु तेहि जेहि महँ बहु भाऊ। १०. प्र० १, द्वि० ५, ६ जो निरास तेहि लाव नसाऊ, प्र० २ जो निरभौ तेहि त पावा. द्वि० २ जो नर भावहिं लावहिं स्याऊ, द्वि० ४, तृ० ३ जो निरभौ तो लाव नसाऊ। द्वि० ३, तृ० १ जो निरभव भा लाव नसाऊ। ११. द्वि० २ लै फिरौं, द्वि० ४ लै बाहुरौं, प्र० २, द्वि० ६ तौ बाहुरौं, द्वि० ७ जिऔं जोरी लै बहुरौं, च० १ जौरे जिऔं तौ लै फिरौं। १२ प्र० १ थार।

[१४१] १. तृ० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० ३, च० १ पर। २. प्र० १, २ बोहित नाव। ३. द्वि० २ बोहिन, तृ० २ जे हैं। ४. द्वि० १ कै, द्वि० ५ पै। ५. द्वि० ४, ५, ६, च० १ महेसुर।

उठै लहरि नहिं जाइ सँभारी। भागहिं कोइ निबहै बैपारी।
तुम्ह सुखिया अपने घर राजा। एत जो दुक्ख सहहु केहि काजा[६]।
सिंघल दीप जाइ सो कोई। हाथ लिहें जिउ आपन होई।

खार खीर दधि उदधि सुरा जल पुनि किलकिला[७] अकूत[८]।
को चढ़ि बाँधहि समुँद ये सातौं है काकर[९] अस बूत[८]॥

[१४२]

गजपति यह मन सकती[१] सीऊ। पै जेहि पेम कहाँ तेहि[२] जीऊ।
जौं पहिलें सिर दै पगु[३] धरई[४]। मुए केर मीचुहि का करई[४]।
सुख सँकलपि[५] दुख साँबर लीन्हेउँ। तौं पयान सिंघल कहँ[६] कीन्हेउँ।
भँवर जान पै कँवल पिरीती। जेहिं महँ बिथा[७] पेम कै बीती।
औ जेइँ समुँद पेम कर देखा। तेइँ यह समुँद बुंद बरु[८] लेखा।
सात समुँद सत कीन्ह सँभारू[९]। जौं धरती का गरुव पहारू[९]।
जेइँ[१०] पै जिय बाँधा सतु बेरा। बरु[११] जिय जाइ फिरै[१२] नहिं फेरा।

---

६. प्र० २ अति सो दुख सहिए केहि काजा, द्वि० ६, तृ० २ अत जोखहिं सो कवने काजा, द्वि० ७ एत जो जीउ सहौ केहि काजा, द्वि० २ एत जो कठिन सहहु केहि काजा, तृ० १ एतक जोख सहौ केहि काजा, द्वि० ३ एन दुख सहहु कहहु केहि काजा, च० १ एत जो सहहु कहहु केहि काजा, पं० १ एत जो सभ दुक्ख केहि काजा। ७. प्र० १ सुरा किलकिला, तृ० ३ सुर राजा किलकिला (उर्दू मूल), द्वि० ६ सुर पुनि किलकिला। ८. द्वि० ४, ३, च० १ अकूत, असपूत द्वि० ७ अकूत, अवधूत, तृ० १ कूट, अस बूट। ९. प्र० १ समुँद है काकर, प्र० २ समुँद एह सातौ, द्वि ७ समुँद सातौ है।

[१४२] १. तृ० १ सुनि कै। २. प्र० १ सो। ३. प्र० २ ऊपर सिर। ४. द्वि० २, तृ० ३ देई, करेई। ५. प्र० १, २ त्यागा। ६. द्वि० २ मुख सिंघल। ७. तृ० १ कथा। ८. प्र० २, द्वि० १ कए, द्वि० २, ६, ३, तृ० १, च० १ पर। ९. द्वि० २ सात समुँद सत कीन्ह सँभारू, जौं धरती का गरुव पहारू। च० १ सात समुँद सत लीन्ह सो भारू। जौं सत हिएँ जिएँ का भारू। पं० १ सात समुँद सत लीन्ह सँभारू, जौं धरती का गरुव पहारू। १०. प्र० १ मैं। ११. द्वि० ४, ३ पर। १२. द्वि० ७ जाइ।

रंगनाथ हौं जाकर[13] हाथ ओही के नाँथ[14]।
गहें नाँथ सो खाँचै फेरे फिरै न माँथ ॥

[१४३]

पेम समुंद अैस[1] अवगाहा। जहाँ न[2] वार पार नहिं थाहा।
जौं वह[3] समुँद काह[4] एहि[5] परे। जौं[6] अवगाह हंस होइ[7] तिरे।
हौं पदुमावति कर भिखमँगा। दिस्टि न आव समुँद औ गँगा।
जेहि कारन गियँ काँथरि कंथा। जहाँ सो मिलै जाउँ तेहि पंथा।
अब एहि समुँद परौं होइ मरा। पेम मोर पानी कै[8] करा[9]।
मर होइ बहा[10] कतहुँ[11] लै जाऊ। ओहि के पंथ कोइ लै[12] खाऊ।
अस मन जानि समुँद महँ परऊँ[13]। जौ कोइ खाइ[14] वेगि निस्तरऊँ[15]।

सरग सीस धर धरती हिया सो पेम समुंद।
नैन कौड़िया[16] होइ रहे[17] लै लै उठहिं सो बुंद[18] ॥

[१४४]

कठिन बियोग जोग दुख डाहू। जरम जरत[1] होइ ओर निबाहू।
डर लज्या तहँ दुवौ गँवानी। देखै कछु न आगि औ पानी[2]।

---

१३. द्वि० ४, ६ हौं चेला जाकर, तृ० १ हौं जोगी। १४. द्वि० ७ अहौं ताहि के साथ।

[१४३] १. द्वि० जो अति। २. प्र० १ जइाँ सो, तृ० ३ जहँवा। ३. तृ० १ जेहि। ४. प्र० २ अवगाह, द्वि० १, ३, ७, च० १ गाह। ५. च० १, द्वि० ४, ६, महँ। ६. प्र० १, तृ० २ अति।। ७. द्वि० २, ३, तृ० ३ हंस हिय तरे द्वि० ७ हंसिहि औतरे। ८. प्र० २ फनिग। ९. द्वि० ४, ६ मुए केर पानी का करा। १०. प्र० २ मर भा उहै, तृ० ३ मर भा वहौं, द्वि० ४ मर भा कोउ, द्वि० ६ मर भा मरहि, द्वि० ७ मरना जहाँ, तृ० १ मरेहि भाव, च० १ मर भा जबहि। ११. प्र० १ बहौं कहुँ कोई १२. प्र० २, द्वि० ३, ६, धरि, च० १ जबहि। १३. प्र० १ जो आपने जीव घट राखा। १४. द्वि० ७ जाइ। १५. प्र० १ सो काहे को बिरह तन राखा। १६. द्वि० ७ कौड़िना। १७. प्र० १ होइ धसौं, तृ० २ होई। १८. द्वि० ५ उड्डहिं बुंद।

[१४४] १. द्वि० २ जौति। २. प्र० २ जौ पै पीर जानै गति सोई, जेहि जिव जानी अब मानी सोई।

आगि देखि ओहि आगिअ भावा[3]। पानी देखि कै सौंहैं धावा[4]।
जस बाउर न बुझाए बूझा। जौनिहिं भाँति जाइ का[5] सूझा।
मगर मच्छ डर हिएँ न लेखा। आपुहिं जान पार भा[6] देखा।
औ न खाहिं ओहि सिंघ सदूरा। काठहु चाहि अधिक सो भूरा[7]।
काया[8] माया संग न आथी[9]। जेहि जिय सौंपा सोई साथी[9]।

जो कछु दरब अहा सँग[10] दान दीन्ह संसार।
का[11] जानी केहि के सत[12] दैय उतारै पार॥

[१४५]

धनि जीवन औ ताकर जिया[1]। ऊँच जगत महँ जाकर दिया।
दिया सो सब जप तप[2] उपराहीं। दिया बराबर जग किछु नाहीं।
एक दिया तेइँ दस गुन लाहा। दिया देखि धरमी[3] मुख चाहा।
दिया सो काज दुहूँ जग आवा। इहाँ जो दिया उहाँ सो[4] पावा।
दिया करै आगें उजिआरा। जहाँ न दिया तहाँ अँधियारा।
दिया मँदिल निसि करै अँजोरा। दिया नाहिं घर मूसहिं चोरा।
हातिम[5] करन दिया[6] जौं[7] सिखा। दिया अहा धरमन्हि[8] महँ लिखा[9]।

---

3. द्वि० ३, ४, आगें धावा। 4. प्र० १ सौंह धँसावा, प्र० २ सौंह नसावा, द्वि० १ तहाँ सो धँसावा। 5. प्र० १, २, तृ० ३, पं० १ जेंहि पँथ जाइ सोइ पँथ, द्वि० ४ कौन भाँति जाइगा। 6. प्र० १, २, द्वि० २ जहाँ परै तहाँ आपुहि, द्वि० १, ४ आपहि चहौं पार भा, द्वि० ६ जनहुँ पार तस आपुहिं, पं० १ जौन पार तस बैठहिं। 7. प्र० २ काहि चाहि अधिकारू। 8. प्र० २ माया। 9. प्र० १ साथी, आथी, द्वि० १ सार्था, सार्था। 10. प्र० १ हाथ हा। 11. प्र० १ ना। 12. प्र० २, द्वि० ७, ३ सत सौं।

[१४५] 1. प्र० २, द्वि० ३, च० १ हिया। 2. तृ० ६ जगत। 3. प्र० १, २ द्वि० ४ सब जग, द्वि० १ सबही, द्वि० ५, ६ सब कोउ। 4. प्र० १, द्वि० ६ सब। 5. प्र० २, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० ३, च० १ हैतिम। 6. प्र० १, २, तृ० ३ अवनि दिया, द्वि० १, २ दान देइ, द्वि० ४ दान दीन्ह, तृ० १ आइ दिया। 7. प्र० १ महँ। 8. प्र० २ धरती। 9. तृ० २ दिया जगत बदि कै करतारा, दिया देखि मुख सकल कहारा॥

निरमल पंथ कीन्ह तिन्ह जिन्ह रे दिया कछु हाथ।
किछु न कोइ लै जाइहि[10] दिया जाइ पै साथ॥

[१४६]

सत न डोल[1] देखा गजपती। राजा दत्त[2] सत्त दुहुँ सती[3]।
आपन नाहिं कया[4] पै[5] कंथा। जीउ दीन्ह अगुमन तेहि पंथा।
निस्चैं चला भरम डर[6] खोई। साहस[7] जहाँ सिद्धि तहँ होई।
निस्चैं चला छाड़ि कै राजू। बोहित दीन्ह दीन्ह नै[8] साजू।
चढ़े बेगि औ[9] बोहित पेले। धनि ओइ पुरुष पेम पँथ[10] खेले।
तिन्ह पावा उत्तिम कबिलासू। जहाँ न मीचु सदा सुख बासू।
पेम पंथ जौं पहुँचै पाराँ। बहुरि न आइ मिलै एहि[11] छाराँ[12]।

एहि जीवन कै आस का जस सपना[13] तिल आधु।
मुहमद जिअतहि जे मरहिं[14] तेइ पुरुष कहु[15] साधु॥*

[१४७]

जस रथ रेंगि[1] चलै गज[2] ठाटी[3]। बोहित चले समुँद गा पाटी।

---

१०. प्र० २ आइहिं।

[१४६] १. प्र० २ छोड़। २. प्र० २ सत्ता। ३. द्वि० ७ सर्ता। ४. द्वि० ३ गयाँ। ५. प्र० १ आपन नाहिं कया है, प्र० २ आपुहि नीक आपु एक, द्वि० ४, ६ आपन नाहिं कया औ। ६. प्र० २ जिय। ७. च० १ धावसि। ८. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १ सब। ९. प्र० १ कै। १०. तृ० ३ जेइ। ११. प्र० १, द्वि० ६ आइ मिले तेहि, तृ० ३ आई सहे वह, च० १ आइ मिलै पहँ। १२. प्र० १, तृ० ३ भारॉ। १३. द्वि० ७ अंजुलि। १४. प्र० १, २, तृ० १, च० १ जो मरहिं, द्वि० २, ५, तृ० ३ जो मुवे, द्वि० ३, तृ० २ जे मुवे। १५. प्र० १ तेहि पुरुषन्ह कहु, तृ० ३ ते पूरुष गनु, द्वि० ४ तेइ पुरुष सदा, द्वि० ५ तेइ पूरुष सिधि, द्वि० ६, तृ० २ ते पूरुष हहिं, च० १ तेइ पुरुष कै।

*इनके अनंतर प्र० १ में एक छंद अतिरिक्त है, जो कुछ अन्य प्रतियों में छंद १५६ के बाद आता है। (देखिए परिशिष्ट १५६ अ)

[१४७] १. प० १, द्वि० ३, तृ० ३ रथ रैनि, द्वि० ५ दिन रैन, द्वि० १ रथ उपन, तृ० १ रथ रतन। २. द्वि० ६, ७, तृ० २ जग। ३. द्वि० ४, ५, तृ० १ भाँती।

धावहिं बोहित मन उपराहीं। सहस कोस एक पल[४] महँ जाहीं।
समुँद अपार सरग जनु लागा[५]। सरग न घालि गनै[६] बैरागा।
ततखन चाल्हा एक देखावा। जनु धौलागिरि परबत आवा।
उठी हिलोर जो चाल्ह नराजी[७]। लहरि अकास लागि[८] भुइँ बाजी।
राजा सेंति[९] कुँवर[१०] सब[११] कहहीं। अस अस[१२] मच्छ समुँद महँ रहहीं।
तेहि रे पंथ हम चाहहिं गवना। होहु सँजूत[१३] बहुरि नहिं अवना।

गुरु हमार तुम्ह राजा हम चेला औ[१४] नाथ।
जहाँ पाँव गुरु राखै चेला राखै[१५] माँथ॥

[१४८]

केवट हँसे सो सुनत गवेंजा[१]। समुँद न जान कुँआ कर मेंजा।
यह तौ चाल्ह न लागै[२] कोहू। काह कहौ जौ देखहु[३] रोहू।
अबहीं तौ तुम्ह देखे नाहीं। जेहि मुख ऐसे सहस[४] समाहीं[५]।
राज पंखि तिन्ह पर[६] मँडराहीं। सहस कोस जिन्ह की परिछाहीं।
ते ओइ मच्छ ठोर गहि लेहीं। सावक मुख चारा लै देहीं।
गरजै गँगन पंखि जौ बोलहिं। डोलै समुँद डहन[७] जौ खोलहिं[८]।
तहाँ न चाँद न सुरुज असूझा। चढ़ै सो जो अस अगुमनबूझा[९]।

---

४. प्र० २, द्वि० २ तिल एक। ५. द्वि० ७ संक तनु जागा। ६. प्र० २ गगन। ७. द्वि० २, ४ बिराजी। ८. द्वि० ४ लेत, द्वि० ७ बाजि। ९. द्वि० २ हुतें, द्वि० ६, पं० १ सतें। १०. च० १ पुरुष। ११. प्र० १, तृ० २ अस। १२. द्वि० ६, च० १ बड़। १३. प्र० १ होइ संभुगति, द्वि० १ होहु सजुग, द्वि० ६ होहु सचेत, द्वि० ३, तृ० २ होहु संजूग। १४. प्र० १, द्वि० १, ३, ४, ५, ७, तृ० २, तुम्ह, प्र० २ तुअ। १५. प्र० २, तृ० ३ राख तहँ।

[१४८] १. तृ० ३ कवेजा (उर्दू मूल)। २. प्र० २ आवनए, तृ० ३ तुम्ह लागे ३. प्र० १, २, द्वि० ३, ४ का कहिहौ जो देखिहौ, द्वि० ७ का कहबे जौं देखबे। ४. द्वि० ७ कोटि। ५. द्वि० १ अमाहीं। ६. प्र० १ एक तहँ प्र० २, च० १ अस तहँ। ७. तृ० ३ सहस। ८. द्वि० ७ डोलहि उठहि समुँद सब डोला, गरजै गगन जाइ तस झोला। ९. प्र० १, २, द्वि० ४ सोइ जो अगमन, तृ० ३ सो ऐस अगम जो, च० १ सो असमन अगुमन।

दस महँ एक जाइ कोइ[१०] करम धरम सत नेम।
बोहित पार होइ जौं तौ कूसल औ खेम॥*

[१४६]

राजैं कहा कीन्ह सो[१] पेमा। जेहिं रे कहाँ कर[२] कूसल खेमा।
तुम्ह खेवहु[३] खेवै जौं पारहु[४]। जैसें आपु तरहु मोहिं तारहु।
मोहिं कूसल कर सोच न ओता। कूसल होत जौं जनम न होता।
धरती सरग जाँत पर[५] दोऊ। जो तेहि बिच[६] जिय राख न[७] कोऊ।
हौं अब कुसल एक पै माँगौं। पेम पंथ सत बाँधि न खाँगौं।
जौं सत हिएँ तो नैनन्ह दिया। समुँद न डरै पैठि[८] मरजिया।
तहँ लगि हेरौं समुँद ढँढोरी[९]। जहँ लगि[१०] रतन पदारथ जोरी।
सप्त पतार खोजि जस[१२] काढ़े[१३] बेद गरंथ।
सात सरग चढ़ि धावौं पदुमावति जेहि पंथ॥

[१५०]

सायर तिरै हिएँ सत पूरा। जौं जियँ सत[१] कायर पुनि[२] सूरा।
तेहिं सत बोहित पूरि चलाए। जेहिं सत[३] पवन पंख जनु[४] लाए।

---

१०. प्र० २ पुनि, द्वि० ४, तृ०३ सो।

*इसके अनंतर द्वि० ४, ५ में दो छंद अतिरिक्त हैं, जो द्वि० १, ६ में छंद १४६ के अनंतर अतिरिक्त हैं। (देखिए परिशिष्ट)।

[१४९] १. प्र० १ जेइँ, द्वि० ४, ६ मैं। २. प्र० १ ताकहँ कहा, द्वि० २, ४, च० १ जहाँ पेम कहाँ, द्वि० ७ जेहि सो कहा। ३. तृ० ३ खेवक। ४. प्र० २ मैं तोहार अब चरन मनावहुँ। ५. प्र० २ परि, द्वि० ७, तृ० ३ पिर, द्वि० ४ पै, द्वि० ३, तृ० १ वर। ६. प्र० १ तेहि बीच, द्वि० १ तन मीचु, तृ० २ दुहुँ बिच। ७. प्र० १ न राखै, द्वि० २, ३ जिअ बाँचन। ८. द्वि० ४ देखि। ९. द्वि० ४ ढढोरौं, जोरौं। १०. प्र० १ पांवउँ। ११. द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है। १२. द्वि० ७ जग, द्वि० ६ कै। १३. प्र० १, द्वि० ४, ५, ७, तृ० १, च० १, पं० १ काढ़ौं।

[१५०] १. प्र० १, २ जौं सत सँग, तृ० २ जौ सत हियें तृ० ३ जेहि जिय रुत। २. द्वि० ७ लै, तृ० २ तौ। ३. प्र० १ सहसा। ४. प्र० १ तस, प्र० २ तहाँ, तृ० ३ पर, द्वि० ४ जस, च० १ जिमि।

सत साथी[५] सत कर सहिवाँरू[६]। सत्त खेइ[७] लै लावै पारू।
सतै ताक सब आगू पाछू। जहँ जहँ मगर[८] मच्छ औ काछू।
उठै लहरि नहिं जाइ सँभारा[९]। चढ़ै सरग औ परै पतारा।
डोलहिं बोहित लहरैं खाहीं। खिन तर खिनहिं होहिं उपराहीं[१०]।[११]
राजैं सो सतु हिरदैं बाँधा। जेहि सत टेकि[१२] करै गिरि[१३] काँधा।

खार समुँद सो[१४] नाँघा आए समुँद जहँ[१५] खीर।
मिले समुँद वै[१६] सातौं बेहर बेहर[१७] नीर॥

[१५१]

खीर समुँद का बरनौं नीरू। सेत[१] सरूप पियत जस खीरू।
उलथहिं मोंती मानिक हीरा। दरब देखि मन धरै[२] न धीरा[३]।
मनुवाँ[४] चहै दरब औ भोगू। पंथ भुलाइ[५] बिनासै[६] जोगू।

---

५. तृ० ३ साथ, द्वि० ७ साहस। ६. प्र० १ सत करम हियारू, द्वि० १ सत करै सँवारू, तृ० ३ सतगुरु सहिवारू, द्वि० ४ सतगुरु सँभारू, द्वि० ५ सतगुरु हम वारू, द्वि० ६, पं० १ सतगुरू बहारू, तृ० १ सत को सहिवारू, द्वि० ३ सतगुरु सतभारू, च० १ सत खेव सँभारू। ७. द्वि० ४ गहे। ८. प्र० १ जैहिं जेहि मारग। ९. प्र० १ मनु परै पहारा, प्र० २. द्वि० १, ४, ६ जनु उठै पहारा। १०. प्र० १ खिन तर होइ खिन ऊपर जाहीं, प्र० २ खिनहिं तरे खिनऊ पर जाहीं, द्वि० ७ खिन तर जाइ होहिं उपराहीं, द्वि० २ खिन तर खिनहिं होहिं उपराहीं, तृ० १ खिन तर होहिं खिनहिं उपराहीं, द्वि० ३, च० १ खिनतर खिन खिन होइ उपराहीं। ११. द्वि० ४, ५ सहस कोस एक पल महँ जाहीं, (तुलना० १४७.२)। १२. तृ० ३ तुरैं, द्वि० ७ गही, तृ० २ देइ, १३. प्र० २, द्वि० ४, ५, च० १ गुर, द्वि० २ कै, द्वि० १, ७, तृ० ३ कर। १४. पं० १ सब। १५. तृ० ३ जेहि। १६. प्र० २ एह, तृ० ३ हहिं १७. प्र० १, पं० १ बेगर बेगर, द्वि० २ पहर पहर सत, द्वि० ७ बाहर बेगर, तृ० १ फेर फेर सत।

[१५१] १. तृ० ३ सोत। २. प्र० १ रहै, द्वि० १, ६, ३ होइ। ३. प्र० २ थीरा। ४. प्र० १ मानुष, तृ० ३ मनवाँ, तृ० १ पंथिहि। ५. तृ० १ पंथी हिए। ६. द्वि० ३ न पासै।

जोगी मनहिं ओहिं[7] रिस[8] मारहिं । दरब हाथ कै समुँद पबारहिं ।
दरब लेइ सो अस्थिर राजा । जो जोगी तेहि के केहि[9] काजा ।
पंथहि पंथ दरब रिपु होई । ठग[10] बटवार चोर सँग सोई ।
पंथिक[11] सो जो दरब सों रूसै[12] । दरब समेंटि बहुत[13] अस[14] मूसै ।

खीर समुँद सो[15] नाँघा आए समुँद दधि माँह ।
जो हहिं[16] नेह[17] के बाउर ना तिन्ह[18] धूप न छाँह ।।

[१५२]

दधि समुँद्र देखत मन[1] डहा । पेम क लुबुध दगध पै[2] सहा ।
पेम सों दाधा धनि वह जीऊ । दही माहिं मथि काढ़ै घीऊ ।
दधि एक बूँद जाम सब खीरू । काँजी बुंद[3] बिनसि[4] होइ नीरू ।
स्वाँस दहेंड़ि(?)[5] मन मँथनी गाढ़ी । हिएँ चोट[6] बिनु फूट[7] न साढ़ी ।
जेहि जियँ पेम चँदन तेहिं आगी । पेम बिहून फिरहिं डरि भागी[8] ।
पेम कि आगि जरै जौं कोई । ताकर दुख न अँबिरथा होई ।
जो जानै सत आपुहि जारै । निसत हिएँ सत करै न पारै[9] ।

---

७. द्वि० ३ हींसि । ८. प्र०१ इहै जानि मन । ९. प्र० १,२ का ।
१०. प्र० २ जग । ११. प्र० २ जोगी । १२. प्र० २ अरूझै, सूझै ।
१३. पं० १ थोर । १४. प्र० १ धर, प्र० २ नहिं । १५. प्र० १ सब,
द्वि० २ पुनि, द्वि० ४, ५ जो । १६. द्वि० १ इह । १७. द्वि० ४, ५
पंथ, तृ० १, २, च० १ पेम । १८. प्र० १ तिनही ।

[१५२] १. प्र० १, द्वि० १, २,४, तृ० १, २, च० १, पं० १ देखत तस, द्वि० ७ पुनि
देखत । २. द्वि० २, ३ इमि । ३. प्र० १ दूध । ४. प्र० २ बिना
सहि खीरू, प्र० १, तृ० ३ बिनासइ नीरू, द्वि० ४ हंस होइ नीरू, च० १
बिनसि गा नीरू । ५. प्र० १, द्वि० २, तृ० १ बेध, प्र० २ बोठ, तृ० ३
बैठ, द्वि० ७ बोइठा, द्वि० ४ दूध, द्वि० ६ दहि, द्वि० १, ३ दधि, च० १
दवालै, तृ० २, पं० १ डोंढ़ । ६. प्र० २, द्वि० १, ४,५ जाति । ७. द्वि० ३ होउ ।
८. प्र० १ पेम बिहून फिरहिं बैरागी, द्वि० २ पेम बिहूने फिरहिं अभागी,
तृ० ३ पेम भुअंग डरिहु ते भागी, द्वि० ४, ५, च० १ पेम बिहून फिरहिं डरि
भागी, तृ० १ पेम न होइ फिरहिं डरि भागी, द्वि० ३, पं० १ पेम बिहून
भरम डर भागी ९. द्वि० ४ पिआरै ।

दधि समुँद्र पुनि पार भे पेमहिं कहाँ सँभार।
भावै पानी सिर परौ भावै परौ अँगार ॥

[१५३]

आए उदधि समुंद अपाराँ[1]। धरती सरग जरै तेहि झाराँ।
आगि जो उपनी[3] ओहि समुंदा। लंका जरी ओहि एक बुंदा।
बिरह जो उपना वह हुत गाढ़ा[5]। खिन न बुझाइ जगत तस बाढ़ा।
जेहिं सो बिरह तेहिं आगि न डीठी। सौंह जरै फिरि देइ न पीठी।
जग महँ कठिन खरग कै धारा। तेहिं तें अधिक बिरह कै झारा।
अगम पंथ जौं ऐस न होई। साध किएँ पावत सब कोई।
तेहि समुंद महँ राजा परा। चहै जरै पै रोवँ न जरा।

तलफै तेल कराह जिमि इमि तलफै तेहि नीर।
वह जो मलैगिरि पेम का बुंद समुंद समीर ॥

[१५४]

सुरा समुँद पुनि राजा आवा। महुआ मद छाता[1] देखरावा।
जो तेहि पिऔ सो भाँवरि लेई। सीस फिरै[2] पँथ पैगु न देई।
पेम सुरा जेहि के जिय[3] माहाँ। कत बैठै महुआ की छाहाँ।
गुरु के पास दाख रस रसा। बैरि बबूर मारि मन कसा[5]।
बिरहैं दगध कीन्ह तन भाठी। हाड़ जराइ दीन्ह जस[6] काठी।

---

[१५३] १. प्र० २ के पारा। २. द्वि० ७ सहित। ३. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ७, तृ० १, च० १ बिरह जो उपना। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १ आगि जो उपनी। ५. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १ हुति गाढ़ी, बाढ़ी, द्वि० ५, ३ हीएँ गाढ़ा, बाढ़ा, द्वि० १ जलगाढ़ा, बाढ़ा, तृ०३ भै काढ़ा, बाढा। ६. प्र० १ प्रीति। ७. प्र० १, तृ० १ आगि तसि प्र० २ जगत महँ, तृ० ३ जासु तन, द्वि० ५ जाइ तन। ८. द्वि० २ पैन। ९. प्र० २ जग महँ। १०. द्वि० ३ बंध। ११. प्र० १, तृ० १ न परत सरीर, द्वि० १, ४ समुँद सरीर, द्वि० ७ समीर समीर।

[१५४] १. द्वि० १ जहाँ तहाँ। २. प्र० २ पीठि, द्वि० ७ केर। ३. प्र० १, २ मन, तृ० ३ हिय। ४. प्र० २ भाया। ५. च० १ काम कलाल गुरुमन तोरा, रत मद महँ भा मानुस अहारा। ६. प्र० २, द्वि० २ जनु, तृ० ३ जग।

नैन नीर सो पोती किया[7]। तस मद चुआ बरै जनु[8] दिया।
बिरह सरागन्हि भूँजै माँसू। गिरि गिरि[9] परहिं रकत के[10] आँसू।

मुहमद मद जो परेम का किएँ[11] दीप तेहि[12] राख।
सीस न देइ पतंग होइ[13] तब लगि जाइ न चाखि[14] ॥

[१५५]

पुनि किलकिला समुँद महँ आए। किलकिल उठा देखि डरु खाए[1]।
गा धीरज वह देखि हिलोरा[2]। जनु अकास टूटै चहुँ ओरा।
उठै लहरि परबत की नाईं। होइ फिरै[3] जोजन लख ताईं।
धरती लेत सरग लहि बाढ़ा। सकल समुँद[4] जानहुँ भा ठाढ़ा।
नीर होइ तर ऊपर सोई। महनारंभ[5] समुँद जस होई।
फिरत समुँद जोजन लख ताका। जैसें फिरै कुम्हार क चाका।
भा परलौ निअराएन्हि[6] जबहीं[7]। मरै सो ताकर परलौ तबहीं[7]।

गै अवसान सबहिं कै देखि समुँद कै बाढ़ि।
निअर होत जनु लीलै[8] रहा नैन अस काढ़ि ॥

[१५६]

हीरामनि राजा सौं बोला। एही समुँद आइ सत डोला।

---

७. प्र० १, २ पोता हिया। ८. द्वि० ४, ५ जस, द्वि० ६, च० १ सोहिं, द्वि० ३ जौ, तृ० १ होइ, तृ० ३ जेहि। ९. द्वि० ३ चुइ चुइ। १०. तृ० ३ औ। ११. प्र० २, द्वि० ७ गए, द्वि० ४, ५ हिए, तृ० १ होइ, द्वि० २, तृ० २ च० १ लेसु। १२. प्र० १ दीप तै, द्वि० ७ देव-तहिं। १३. प्र० १ पतंग जिमि, प्र० २ परत तब, तृ० ३ दीप तहँ, द्वि० ४ ज्यों। १४. प्र० २ साखि।

[१५५] १. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ६, तृ० २ गा धीरज देखत। २. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ६, तृ० २ भा किलकिल अस उठा। ३. प्र० २ बहुरै। ४. च० १ सुमेरु। ५. प्र० १ मथन अरंभ, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १ महा अरंभ, तृ० २ तहाँ अरंभ, द्वि० ६, च० १, पं० १ महनामंथ, द्वि० १ महतार नीह। ६. द्वि० ४, ५ च० १ निअराना। ७. द्वि० ४, ५, च० १ जौहीं तौहीं (हिंदी मूल)। ८. द्वि० ३ तर ऊपर।

एहि ठाउँ कहँ गुरु सँग कीजै। गुरु सँग होइ पार तौ लीजै।[1]
सिंघल दीप जो नाहिं निबाहू। एही ठावँ साँकर सब काहू।
यह किलकिला समुंद गँभीरू। जेहि गुन होइ सो पावै तीरू।
एही समुँद पंथ मँझधारा[2]। खाँडै कै असि धार[3] निनारा।
तीस सहस्र कोस कै पाटा। अस साँकर चलि सकै न चाँटा।[1]
खाँडै चाहि पैनि[4] पैनाई[5]। बार चाहि पातरि पतराई[5]।[1]

मरन जिअन एही पँथ एही आस निरास।
परा सो गया पतारहि तिरा सो गा कबिलास॥*

[१५७]

कोइ बोहित जस पवन उड़ाहीं। कोई चमकि बीजु बर जाहीं[1]।
कोई भल[2] जस धाव तुखारा[3]। कोई जैस बैल गरिआरा[4]।
कोई हरुव जनहुँ रथ हाँका। कोई गरुव भार तें थाका।
कोई रेंगहिं जानहुँ चाँटी। कोई टूटि[5] होहिं सिर[6] माँटी[7]।

---

[१५६] १. द्वि० २, ४, तृ० २, च० १, पं० १ में •२ के स्थान पर है—एही पंथ सब कहँ है जाना, होइ दूसरे बिसवास निदाना।
प्र० १, २ में यह पाठांतर •६ के स्थान पर है।
द्वि० ६ में यही •७ के स्थान पर है।
तृ० १ में यही पाठांतर एक अतिरिक्त पंक्ति के रूप में है—अर्थात् छंद में ७ के स्थान पर कुल ८ पंक्तियाँ चौपाई की हैं।
और द्वि० ७ में •६ के स्थान पर प्र० १, २ की भाँति है,
ओ ही पंथ जाना सब काहू। ओ ही पंथ महँ होइ निबाहू।
२. प्र० १ माँझ पँथधारू। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ४ रेख। ४. द्वि० १ पातरि। ५. प्र० १ सोनई, पतरई, प्र० २ बहुताई, पतराई, द्वि० १, २, ५, ७, तृ० १, ३, च० १ लहँताई, पतराई।
* प्र० १, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, ३, पं० १ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१५७] १. द्वि० २, तृ० १ परछाहीं, तृ० ३ अस जाहीं। २. तृ० ३ बोहित। ३. तृ० ३ धाउ तेखारा, द्वि० ७ धावहिं घोरू। ४. द्वि० ७ कर जोरू। ५. द्वि० ७ बूड़ि। ६. प्र० १ कर। ७. प्र० २ में नहीं है।

कोई खाहिं पवन कर झोला। कोई करहिं[8] पात जेउँ[9] दोला।
कोई परहिं भँवर जल माहाँ। फिरत रहहिं[10] कोइ देहि न वाहाँ।
राजा कर अगुमन भा खेवा। खेवक आगें सुवा परेवा।

कोइ दिन मिला सवेरे कोइ आवा पछिराति[11]।
जाकर साज जैस हुत[12] सो उतरा[13] तेहि भाँति ॥

[१५८]

सतएँ समुँद मानसर[1] आए। सत जो कीन्ह साहस[2] सिधि पाए।
देखि मानसर रूप सोहावा। हियँ हुलास[3] पुरइनि होइ छावा।
गा अँधियार रैनि मसि छूटी। भा भिनुसार किरिन रबि फूटी।
अस्तु अस्तु साथी सब बोले। अंध जो अहे नैन बिधि खोले।
कँवल बिगस तहँ बिहँसी[4] देही। भंवर दसन[5] होइ होइ रस लेहीं[6]।
हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा। चुनहिं[7] रतन मुकताहल[8] हीरा।
जौं अस साधि आव[9] तप जोगू। पूजै आस मान रस भोगू।

भँवर जो मनसा[10] मानसर लीन्ह कँवल रस[11] आइ।
घुन जो हियाव न कै सका झूर काठ तस[12] खाइ[13] ॥*

---

८. प्र० १ करर, प्र० २ करै, द्वि० ७ करह, द्वि० ४ गिरहिं, च० १ फिरहिं। ९. प्र० २ पातर पर दोला, द्वि० २, ६, च० १ पात पर दोला, द्वि० ३, पं १ पात बर डोला। १०. द्वि० ७ कीरा करहिं। ११. द्वि० ७ अधिराति। १२. प्र० २ जस हुत सावँज. प्र० २ जस हो संजुति, द्वि० ४, ५ जस हुत साजू, तृ० १ जस हुत साहस, द्वि० ३ हुत साजु जस। १३. तृ० २ आवा।

[१५८] १. द्वि० १ महँ राजा। २. द्वि० ४ सहस। ३. तृ० ३ हुलसा। ४. प्र० १ बिकासत बिकसी, प्र० २, द्वि० १ बिकस तहँ बिकसी, द्वि० ६, तृ० ३ बिहसि तहँ बिहसी, द्वि० ७ बिकस तस बिकसी, द्वि० ४ ५ बिकस तस बिहसी। ५. द्वि० २, तृ० २, च० १ बास, द्वि० ४ दरस। ६. तृ० २ भँवर बास रस सँग सो लेहीं। ७. द्वि० १ जनहुँ। ८. प्र० २ पदारथ। ९. द्वि० ३ होइ, तृ० ३ आवत। १०. द्वि० २, पं० १ हंसा। ११. प्र०१ बास लीन्ह ओहिं। १२. तृ० ३ वहिं। १३. प्र० १ सूखा काठ चबाइ।

*द्वि० ३ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१५६]

पूँछा राजैं कहु गुरु सुवा। न जनौं आजु कहाँ दिन[1] उवा।
पवन बास[2] सीतल लै आवा। कया डहत जनु चंदन लावा[3]।
कबहुँ[4] न ऐस जुड़ान[5] सरीरू। परा अगिनि महँ मलै समीरू[6]।
निकसत आव किरिन रबि[7] रेखा। तिमिर गए[8] जग निरमर देखा।
उठे मेघ अस जानहुँ आगें। चमकै बीजु गँगन पर लागें।
तेहि ऊपर जस[9] ससि परगासू। औ सो कचपचिन्ह भएउ[10] गरासू।
और नखत चहुँ दिसि उजिआरे। ठाँवहिं ठाँव दीप अस बारे[11]।[12]

औरु दछिन दिसि निअरें कंचन मेरु देखाव।
जस[13] बसंत रितु आवै तैस बास[14] जग पाव[15]॥

[१६०]

तूँ राजा जस बिक्रम आदी[1]। तूँ हरिचंद बैन[2] सत बादी।
गोपिचंद तूँ जीता जोगाँ[3]। औ भरथरी न पूज[4] बियोगाँ[3]।
गोरख सिद्धि दीन्हि तोहि हाथू। तारे[5] गुरू मछिंदर नाथू।

---

[१५९] 1. तृ० ३, पं० १ दहुँ। 2. द्वि० ७ वाव। 3 प्र० २ पावा। 4. द्वि० १, ४, ५, कौहुँ (दिंदी मूल)। 5. प्र० २, च० १ तिमिर गएउ, द्वि० ३ तिमिर गहा। 6. द्वि० ४ जानहुँ नारू, द्वि० ३ मलै सुमेरू। 7. द्वि० ७ जस, द्वि०१ अब। 8. प्र० १ गए तिमिर, प्र० २, च० १ तिमिर गएउ, तृ० ३ तिमिर गहा, पं० १ तिमिर कटें। 9. द्वि० ७ तेहि पर पूनिवँ। 10. प्र० १, २, द्वि० २, ६, तृ० २, पं १ चंद कचपचिन्ह। 11. द्वि० ७ उजियारा, उगी जनु तारा। 12. द्वि० ३ में यह पंक्ति हाशिए में दी है; मूल में है: सात समुँद जस पंथ बखाने, सातौ नाँघि दीप निअराने। 13. प्र० २, द्वि० २ जनु, तृ० ३ औ। 14. प्र० १, २, द्वि० १, ३, तृ० १ तस बसंत, तृ० २ तैस होत। 15. प्र० २ जग जाव, प्र० १, द्वि० ३, ४, ६, तृ० १, २ जग आव।

[१६०] 1. प्र० १ बिक्रम सतबादी। 2. प्र० २, द्वि० ७ बेनु। 3. प्र० १ जती तैं जोगू, बियोगू, तृ० ३ जीवा जोगी, बियोगी, द्वि० ४ जीव जोगू, बियोगू। 4. प्र० १, २ और भर्थरी। 5. तृ० ३ तोरे, द्वि० ४ दिपैं, द्वि० १ ताकर, तृ० १ मारे, तृ० २ तवै।

जीता प्रेम तूँ पुहुमि अकासू। दिस्टि परा सिंघल कबिलासू।
वै जो मेघ गढ़ लाग अकासाँ। बिजुरी कनै[6] कोट चहुँ पासाँ।
तेहि पर ससि जो[7] कचपचिन्ह भरा। राजमँदिर सोनै नग जरा।
और जो नखत कहसि चहुँ पासाँ। सब रानिन्ह[8] के आहिं अवासाँ।

गँगन सरोवर[9] ससि[10] कँवल कुमुद तराईं पास।
तूँ रबि उवा[11] जो भँवर होइ पवन मिला लै[12] बास[13]॥

[१६१]

सो गढ़ देखु गँगनु तें ऊँचा। नैन देख कर नाहिं[1] पहूँचा।
बिजुरी चक्र[2] फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात[3] फिरै जम केरी।
धाइ जो बाजा[4] कै मन साधा। मारा चक्र भएउ[5] दुइ आधा।
चंद सुरुज औ नखत तराईं। तेहि डर अँतरिख फिरैं सबाईं।
पवन जाइ तहँ पहुँचै चहा। मारा तैस[6] टूटि भुइँ बहा[7]।
अगिनि उठी जरि बुझी निआना[8]। धुआँ उठा उठि बीच बिलाना[8]।[9]
पानि उठा उठि जाइ[10] न छुवा। बहुरा[11] रोइ आइ भुइँ चुवा।

रावन चहा सौहँ होइ हेरा[12] उतरि गए दस[13] माँथ।
संकर धरा लिलाट भुइँ औरु को जोगी नाथ।

---

६. प्र० २, द्वि० २ लवै, द्वि० ४, ५ कटै, तृ० १ वटै। ७. प्र० १ मिस एक। ८. प्र० २ रानी, द्वि० ७, तृ० ३ राजन्ह, द्वि० ४ गएन। ९. प्र० २ तराएन। १०. द्वि० ५ सहस। ११. प्र० १, पं० १ आव, द्वि० ६ उठा। १२. प्र० १, द्वि० ६ न पावै, प्र० २, तृ० २, ३ मिलावै, द्वि० ३ मिलाई। १३. द्वि० ७ पास।

[१६१] १. तृ० ३ कान, द्वि० ५ ग्यान, द्वि० ७ गगन, तृ० १ कहाँ। २. प्र० २, द्वि० ७ चमकि। ३. द्वि० ७, तृ० १ जमकात्रि, द्वि० ३ चमकात। ४. प्र० ३ बाचा। ५. प्र० १ कियो। ६. प्र० १ चक्र। ७. प्र० १ भुइँ अहा, द्वि० ४, ५, ६, च० १ भुइँ रहा, द्वि० ७ भुइँ माँहा। ८. प्र० २ बीजु समाना, द्वि० ७ बीच भुलाना। ९. प्र० २ जैसे उठै मेघ असमाना। १०. प्र० १ जाइ नहिं, द्वि० ३ तेहि जाइ न। ११. तृ० ३ फिरा, द्वि० ७ पहुँचा। १२. प्र० १, २, द्वि० ७ सौंह होइ, द्वि० ३, ५, तृ० ३, च० १ सौंह कै हेरा। १३. द्वि० ५, ६, तृ० १ दसौ गए।

[१६२]

तहाँ देखु पदुमावति रामा[१]। भँवर न जाइ न पंखी नामा।
अब सिधि[२] एक देउँ तोहि जोगू। पहिलें दरस होइ तब[३] भोगू।
कंचन मेरु देखावसि जहाँ। महादेव कर मंडप[४] तहाँ।
ओहिक खंड[५] जस परबत मेरू। मेरुहि लागि होइ अति[७] फेरू।
माघ[८] मास पाछिल पख लागें। सिरी[९] पंचिमी होइहि आगें।
उघरिहि महादेव कर बारू। पूजिहि जाइ[१०] सकल संसारू।
पदुमावति पुनि पूजै आवा। होइहि एहि मिसु[११] दिस्टि[१२] मेरावा।

तुम्ह गवनहु मंडप ओहि हौं पदुमावति पास।
पूजै आइ बसंत जौं पूजै मन कै आस[१३]॥

[१६३]

राजैं कहा दरस जौं[१] पावौं। परबत काह[२] गँगन कहँ[३] धावौं।
जेहि परबत पर दरसन लहना। सिर सौं चढ़ौं पाय का कहना।
मोहि भाव ऊँचै सो[४] ठाऊँ। ऊँचे लेउँ प्रीतम के नाऊँ।
पुरुषहि चाहिअ ऊँच हिआऊ। दिन दिन ऊँचे राख पाऊ।
सदा ऊँच सेइअ पै बारू[५]। ऊँचे सौं कीजै बेवहारू[५]।
ऊँचे चढ़े ऊँच खँड सूझा। ऊँचे पास ऊँचि बुधि[६] बूझा।

---

[१६२] १. द्वि० २ बाराँ, द्वि० १ नामाँ। २. प्र० २ सुधि, द्वि० ४, ७ वुधि, तृ० १ सब्द। ३. च० १ तौ। (हिंदी मूल) ४. द्वि० ७ परवत। ५. द्वि० औ खँड खँड, पं० १ औ जो खिखिंद, द्वि० २, च० १ औ खिखिंद। ६. प्र० १, २, द्वि० ५, ७ वह खिखिंद परबत जस, द्वि० ४ औ खँड खँड परबत जस। ७. प्र० २ सत्र, द्वि० २ तब, द्वि० ५ तस, द्वि० ७ सत, द्वि० १ तत, तृ० १ नित। ८. प्र० २ फागुन, द्वि० ६ माँह। ९. द्वि० ३ सबै। १०. प्र० १, द्वि० ७, च० १ आइ। ११. द्वि० ५ वहि दिन। १२. प्र० १ दरस, द्वि० ७ दीन। १३. च० १ तौ पूजै मन आस।

[१६३] द्वि० २, ३ जो दरसन। २. द्वि० २, तृ० १, २ छाड़ि। ३. प्र० १, द्वि० ६, तृ० १ चढ़ि। ४. प्र० १, तृ० १ मोहूँ भाव ऊँचे सों, द्वि० ५, च० १ मोहि सो भावै ऊँचै, द्वि० ७ मोहि मन भाव चला सो। ५. प्र० १ दरबारा, बेवहारा। ६. प्र० २, द्वि० २, ३, ४, तृ० ३ मति।

ऊँचे संग संग[7] निति कीजै। ऊँचे काज[8] जीव बलि[9] दीजै।

दिन दिन ऊँच होइ सो जेहि ऊँचे पर चाउ।
ऊँचे चढ़त परिअ जौं[10] ऊँच न छाड़िअ काउ॥

[१६४]

हीरामनि दै बचा कहानी। चला जहाँ पदुमावति रानी।
राजा चला सँवारि सो लता[1]। परबत कहँ[2] जो चला परबता।
का परबत चढ़ि देखै राजा। ऊँच मँडप सोनै सब साजा।
अंब्रित फर सब लाग[3] अपूरी। औ तहँ[4] लागि सजीवनि मूरी।
चौमुख[5] मंडप चहूँ[6] केवारा। बैठें देवता चहूँ दुआरा[7]।
भीतर मँडप चारि खँभ लागे। जिन्ह वै छुए पाप तिन्ह[8] भागे।
संख घंट घन[9] बाजहिं सोई। औ बहु होम जाप तहँ होई।

महादेव कर मंडप जगत जातरा[10] आउ।
जो हिंछा[11] मन[12] जेहि कें सो तैसै फल पाउ॥

[१६५]

राजा बाउर बिरह बियोगी। चेला सहस बीस[1] सँग जोगी।

---

७. द्वि० ७ केर। ८. द्वि० ४, ५ लागि। ९. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० ३ पुनि, द्वि० ६ तेहि, तृ० १ नित। १०. प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, ७, च० १ जो खसि परै।

* प्र० १, २, द्वि० ३, ५, ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१६४] १. प्र० १, २ सता। २. प्र० १, २ परबत कहा, द्वि० २, तृ० ३ परबत कहँ सो, द्वि० ७ कै परबोध। ३. प्र० १ अमीं सदा फर फरें, प्र० २ सदा अंब्रित फल फले, द्वि० १ अंब्रित हर फर लाग, द्वि० २ अंब्रित फर फर लाग, तृ० ३ अंब्रित करि फर लाग, द्वि० ४ अंब्रित फर पुनि फरें। ४. द्वि० ७, तृ० ३ बहु। ५. प्र० १, २ चहुँ दिसि। ६. द्वि० ७ चारि। ७. द्वि० ७ चारिउ बारा। ८. तृ० ३ सब। ९. द्वि० ५ नित। १०. प्र० २ मनसि। ११. द्वि० १, ६ पं० १ इंछा। १२. तृ० ३ होइ।

[१६५] १. द्वि० १ एक, द्वि० ४, तृ० १ तीस।

पदुमावति के दरसन आसा। दँडवत कीन्ह मँडप चहुँ पासा।
पुरुब बार होइ कै सिर नावा। नावत सीस देव पहँ आवा।
नमो नमो नमो नारायन देवा। का मोहिं[2] जोग सकौं कर सेवा।
तूँ दयाल सब के उपराहीं। सेवा केरि आस तोहि नाहीं।
ना मोहि गुन न जीभ[4] रस बाता। तूँ दयाल गुन निरगुन दाता।
पुरवौ मोरि दास[5] कै आसा। हौं मारग जोवौं हरि स्वाँसा[6]।

तेहि बिधि बिनै[7] न जानौं जेहि बिधि अस्तुति तोरि।
करु सुदिस्टि औ किरिपा[8] हिंछा[9] पूजै[10] मोरि॥

[१६६]

कै अस्तुति जौं[1] बहुत मनावा। सबद अकूट[2] मँडप महँ[3] आवा।
मानुस पेम भएउ[4] बैकुंठी। नाहिं त काह छार एक मूँठी।
पेमहि माहँ[5] बिरह औ[6] रसा। मैन[7] के घर मधु अंब्रित बसा।
निसत धाइ जौं मरै तो काहा। सत जौं करै बैसेइ होइ लाहा[8]।
एक बार जौं मनु कै सेवा। सेवहि फल परसन होइ देवा।
सुनि कै सबद मँडप झनकारा। बैठा आइ[9] पुरुब के बारा।
पिंड चढ़ाइ छार जेत आँटी। माँटी होउ अंत जौं[11] माँटी।

---

२. द्वि० ६ तोहि। ३. द्वि० ७ करौं का। ४. प्र० २ जीभ न गुन। ५. प्र० १ जगत। ६. द्वि० ७ तू देनिहार निरासन्हि आसा, पुरवनि, हार मोर सुखवासा। ७. प्र० १, द्वि० १, च० १ करै। ८. प्र० २ मोहि जिउ पर। ९. द्वि० १, ६, तृ० २, पं० १ इंछा। १०. प्र० १ पुरवहु।

[१६६] १. प्र० २ सिव। २. प्र० १, २, द्वि० २, ५, ६, तृ० ३ अकूत, द्वि० ३ अकूप। ३. द्वि० २ सों, द्वि० ७ तैं। ४. प्र० १ पेमहि भा। ५. द्वि० १ महँ पै। ६. प्र० १, द्वि० ४, ६ रस, प्र० २ वोह। ७. द्वि० १ पेम, तृ० ३ मौन, द्वि० ४ मैं। ८. प्र० १ सत सों रहै बैठि सो लाहा, प्र० २ सत जो मरै बैठ होए छाहा, द्वि० २, ५, ३, तृ० १ सत जो करै बैठेइ होइ लाहा, द्वि० ४, ६ सत जो करै होए तेहिं लाहा। ९. प्र० १ बैठा जाइ, तृ० २ भएउ आइ। १०. द्वि० १ पुरुब बार होइ आसन मारा, द्वि० ३ पूरन होइहि जोग तुम्हारा। ११. प्र० २ पुर।

माँटी मोल न किछु लहै औ माँटी सब[12] मोल।
दिस्टि जो माँटी सौं करै माँटी होइ अमोल॥

[१६७]

बैठ सिंघ छाला होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा।
दिस्टि समाधि ओहि सौं[1] लागी। जेहि दरसन कारन बैरागी।
किंगरी गहे बजावै झूरै। भोर साँझ सिंगी[2] निति पूरै।
कंथा जरै आगि जनु लाई। बिरह धँधार जरत न बुझाई।
नैन रात निसि मारग जागें। चकित चकोर जानु ससि लागें।
कुंडल गहें सीस भुइँ लावा। पाँवरि होउँ जहाँ ओहि पावा।
जटा छोरि कै बार बोहारौं। जेहि पँथ होइ सीस तहँ वारौं।

चारिहुँ चक्र[3] फिरै मन खोजत डँड[4] न रहै थिर मार।
होइ के भसम पवन सँग धावौं[5] जहाँ सो प्रान अधार॥

[१६८]

पदुमावति तेहि[1] जोग सँजोगाँ[2]। परी पेम[3] बस गहें बियोगाँ।
नींद न परै रैनि जौं आवा। सेज केवाँछ[4] जानु कोइ लावा[5]।
दहै चाँद[6] औ चंदन चीरू। दगध करै तन बिरह गँभीरू।
कलप[7] समान रैनि हठि[8] बाढ़ी[9]। तिल तिल मरि[10] जुग जुग बर[11] गाढ़ी।

---

[12]. प्र० १ बहु।

[१६७] [1]. प्र० १ दिसि। [2]. प्र० २ गीती। [3]. तृ० ३ जुग। [4]. द्वि० १ दिनहि, च० १ दिन। [5]. प्र० १ होउँ सँग भसम पौन होइ जहाँ सो पेम पिआर।
प्र० २ होए भसम मिलि धावै जहवाँ प्रान पिआर।
द्वि० ४ होइ करि भसम पौन सँग धावौं सो प्रान अधार।
पं० १ होइ के भसम पौन मिसि धावौं जहाँ सो प्रान अधार।

[१६८] द्वि० १ तहाँ। [2]. प्र० २ जहाँ सँग जोगू, द्वि० ४ तहाँ जोग सँजोगा, द्वि० ७ तहाँ बैस सँजोगा। [3]. द्वि० ७ प्रेम पीर। [4]. द्वि०४, ५ को आँच। [5]. च० १ सेज नाग होइ डहि डहि खाआ। [6]. प्र० २ चोली, तृ० ३ अंग। [7]. प्र० १ काल। [8]. द्वि० १, ५ हिएँ, द्वि० २, पं० १ हुति, तृ० १ जहँ। [9]. तृ० ३ धारी। [10]. प्र० १ घर, तृ० ३ भरि, द्वि० ३ जौ। [11]. द्वि० १, २, ३, ५, तृ० १ पर।

गहै बीन[१२] मकु[१३] रैनि बिहाई[१४]। ससि बाहन तब[१५] रहै ओनाई[१६]।
पुनि धनि[१७] सिंघ उरेहै लागै। ऐसी बिथा[१८] रैनि सब[१९] जागै।
कहाँ सो भँवर कँवल रस लेवा। आइ परहु होइ घिरिनि परेवा।

सो धनि बिरह पतंग होइ जरा चाह तेहि दीप।
कंत न आवहु भृंगि होइ को चंदन तन लीप॥

[१६६]

परी बिरह बन[१] जानहुँ घेरी। अगम असूझ जहाँ लगि हेरी।
चतुर दिसा चितवै जनु भूली[२]। सो बन कवन जो मालति फूली[२]।
कँवल[३] भँवर ओही बन पावै। को मिलाइ तन तपनि बुझावै।
अंग अनल अस कँवल[४] सरीरा। हिय भा पियर पेम की पीरा।
चहै दरस रबि कीन्ह बिगासू। भँवर दिस्टि महँ कै सो अकासू[५]।
पूँछै धाइ बारि[६] कहु बाता। तूँ जस कँवल करी रँग राता।
केसरि बरन हिया भा तोरा। मानहुँ मनहिं भएउ कछु फोरा[७]।

पवनु न पावै संचरै भँवर न[८] तहाँ बईठ।
भूलि कुरंगिनि कसि भई[९] मनहुँ[१०] सिंघ तुइ[११] डीठ॥

---

१२. तृ० ३ बेनु। १३. तृ० १ कुल। १४. प्र० १ सिराई, द्वि० ७ गँवाई।
१५. द्वि० ४ सब, द्वि० ५, च० १ नित, द्वि० ७ तौ (हिंदी मूल)।
१६. च० १ रहहिं लुभाई। १७. तृ० १ जनु। १८. द्वि० ३ भाँति।
१९ प्र० २ रही, द्वि० ४ सवै।

* तृ० ३ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)।

[१६९] १. प्र० २, तृ० १, च० १ तनु, द्वि० ७ बस। २. द्वि० २ भूला, फूला।
३. द्वि० ७ कबही। ४. प्र० १ अनल भा कँवल, प्र० २ अनग अस करै, तृ० ३ अगिनि अस करै, द्वि० ४ अनँग अस कँवल, द्वि० ७ अगिनि अस कँवल, तृ० १, च० १, पं० १ अंग अस कँवल, द्वि० ३ अनल अस कँवल।
५. द्वि० २ कीन्ह निवासू, द्वि० ७ आव अकास, द्वि० ३ कँवल अकासू, च० १ कँवल बिकासू। ६. प्र०१ नारि। ७.प्र० १ मयन किया कछु जोरा, द्वि० १ मनहि भयो कछु थोरा, तृ० १ मनहि भौंर कछु भोरा, तृ० २, पं० १ मनहि भयो कछु भोरा। ८. तृ० ३ नतन। ९. तृ० ३ तसि।
१०. द्वि० ७ कहाँ। ११.द्वि० १ कीन्हि।

[१७०]

धाइ सिंघ बरु[1] खातेउ मारी। कै तसि रहति[2] अही जसि बारी।
जोबन सुनेउँ कि नवल बसंतू। तेहि बन[3] परेउ[4] हस्ति मैमंतू।
अब जोबन बारी[5] को राखा[6]। कुंजर बिरह बिधाँसै साखा[6]।
मैं जाना जोबन रस भोगू[7]। जोबन कठिन सँताप बियोगू।
जोबन गरुअ[8] अपेल[9] पहारू। सहि न जाइ जोबन कर भारू।
जोबन अस मैमंत न कोई। नवै हस्ति जौं आँकुस होई।
जोबन भर भादौं जस गंगा। लहरैं देइ समाइ[10] न अंगा[11]।

परी[12] अथाह धाइ हौं[13] जोबन उदधि[14] गँभीर।
तेहिं[15] चितवौं चारिउँ दिसि को गहि लावै तीर॥

[१७१]

पदुमावति तूँ सुबुधि[1] सयानी। तोहिं सरि समुँद[2] न पूजै रानी।
नदी समाहिं समुँद महँ आई। समुँद डोलि कहु कहाँ समाई।
अबहीं कँवल करी हिय तोरा। आइहि भँवर जो तो कहँ जोरा।
जोबन तुरै हाथ गहि लीजै[3]। जहाँ जाइ तहँ जाइ न दीजै।
जोबन जो रे मतँग गज[4] अहै। गहु गिआन जिमि आँकुस गहै[5]।
अबहिं बारि तूँ पेम न खेला। का जानसि कस होइ दुहेला।

---

[१७०] १. द्वि० ५ पर। २. द्वि० ७ कस नहिं हतेउँ। ३. द्वि० ५ पर। ४. प्र० १, द्वि० ७ बिरह। ५. द्वि० २, तृ० ३ पारै। ६. तृ० ३ राखी, साखी। ७. द्वि० जो अब सुख भोगू। ८. प्र० २ चारित्र। ९. द्वि० २ बैल बहु, द्वि० ४ सुमेरु। १०. प्र० २ सहि जाए। ११. तृ० ३ गंगा। १२. तृ० ३ परी। १३. तृ० १ पुनि। १४. द्वि० ४ सलिल। १५. प्र० १ केहि, प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, च० १ तहँ।

[१७१] १. प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ७, तृ० १, च० १ समुँद, तृ० ३ सुमति। २. प्र० २ बुधि। ३. प्र० २ कए लीजै, प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३ देखि कीजै, द्वि० १ महँ कीजै, तृ० १ वहिं कीजै। ४. प्र० २ जस मतंग गज, द्वि० २ जोर मस्त गज, द्वि० ५, ३ जोर मात गज, द्वि०७ जोइ गैमँत गज।

गँगन दिस्टि करु जाइ[6] तराहीं। सुरुज देखि कर आवै नाहीं[7]।
जब लगि पीउ मिलै तोहिं[8] साधु पेम कै पीर।
जैसें सीप सेवाति कहँ तपै समुँद[9] मँझ नीर[10] ॥

[१७२]

दहै धाइ[1] जोबन औ जीऊ। होइ न बिरह[2] अगिनि महँ घीऊ।
करवत सहौं होत दुइ आधा। सही न जाइ बिरह[3] कै दाधा।
बिरहा सुभर समुँद असँभारा[4]। भँवर मेलि जिउ लहरन्हि मारा[5]।
बिरह नाग होइ सिर चढ़ि डसा। औ होइ अगिनि चँदन[6] महँ बसा[7]।
जोबन पंखी बिरह बिआधू। केहरि भयो कुरंगिनि खाधू।
कनक बान[8] जोबन कत कीन्हा। औ तन कठिन[9] बिरह दुख[10] दीन्हा।
जोबन जलहिं बिरह मसि छुवा[11]। फूलहिं[12] भँवर फरहिं भा सुवा।

---

5. प्र० १ आहै, द्वि० १, २, ६, तृ० २, पं १ रहै। 6. द्वि० ४ पाइ। 7. द्वि० ७ जोबन समौ बड़े दुख पाई, भए ठाइ पुनि जिउ पछताई। 8. प्र० १ तोकहँ पिउ मिलै। 9. द्वि० २ सदा। 10. तृ० ३ मँझार।

[१७२] 1. प्र० १, द्वि० ४, तृ० ३, च० १, पं० १ रहै न धाइ, प्र० २ दहै धरै, द्वि० २ गहै धाइ, द्वि० ७ रहै धाइ। 2. प्र० २, द्वि० ७ होइ न परै, तृ० ३ होइ परै, द्वि० ४ जानहु परहिं, द्वि० ५ जानहुँ परा, तृ० १ होइ जनु परेउ, द्वि० ३ होइ तौ परै, च० १ होइ तेहि बिरह। 3. प्र० १ जौबन। 4. प्र० १ समुँद आहि है भरा, प्र० २, द्वि० ५ समुँद बिसहर असँभारा, द्वि० २, तृ० १ सुभर समुँद बिसँभारा, द्वि० ४ सुभर समुँद आपारा, द्वि० ७ सुभर समुँद रस भरा, तृ० ३ सुभर समुँद अस भरा। 5. द्वि० २, तृ० ३ भरा। 6. प्र० १, द्वि० २, च० १ चंद महँ, द्वि० ३ चंदमुख। 7. द्वि० १ परगसा। 8. प्र० १, तृ० १, ३, च० १ कनक पानि, प्र० २ कंचन बान। 9. प्र० २ औतन बिरह, तृ० ३ औटन घटन, द्वि० ७ औघट घटन, च० १ जोबन कठिन। 10. प्र० २ कठिन सिर, द्वि० ४ बिरह बहु, द्वि० ६ बिरह जिउ, च० १ बिरह तन। 11. प्र० १, द्वि० ४, ५ जलहि बिरह मसि छुवा, द्वि० २ चलहि बिरह मस खवा, द्वि० ३ जल अंचल उास,छुवा च० १ चलहि बिरह मिस छुवा, द्वि० ७ जब बिरह मसि छुवा। 12. तृ० १ भोगहि।

जोबन चाँद उवा जस बिरह भएउ सँग राहु[13] ।
घटतहि घटत खीन भा कहै[14] न पारौं काहु[15] ॥

[१७३]

नन[1] जो[2] चक्र[3] फिरै[4] चहुँ ओराँ । चरचै[5] धाइ समाइ[6] न कोराँ ।
कहेसि पेम जौं उपना[7] बारी । बाँधु सत्त मन डोल न भारी[8] ।
जेहि जिय महँ सत होइ पहारू[9] । परै पहार न बाँकै बारू ।
सती जो जरै[10] पेम पिय[11] लागी । जौं सत हिएँ तौ सीतल आगी ।
जोबन[12] चाँद जो चौदसि करा[13] । बिरह कि चिनगि चाँद[14] पुनि जरा ।
पवन बंध होइ जोगी जती । काम बंध होइ[15] कामिनि[16] सती ।
आउ बसंत फूल फुलवारी । देव बार सब जैहहिं[17] बारी ।

पुनि तुम्ह जाहु[18] बसंत लै पूजि मनावहु देव ।
जिउ पाइअ[19] जग जनमे[20] पिउ[21] पाइअ कै सेव ॥

[१७४]

जब[1] लगि[2] अवधि[3] चाह सो आई[4] । दिन जुग बर[5] बिरहिनि कहँ जाई ।

---

[13]. तृ० ३ भयो जस, द्वि० ४ संग भाविन, तृ० १ संगभा । [14]. द्वि० ५ गति । [15]. प्र० १, २, द्वि० ७ पारै काहु, तृ० ३ पारौं ताहु ।

[१७३] [1]. द्वि० २ सुनि । [2]. द्वि० ५ ज्यों । [3]. तृ० ३ चाक । [4]. प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, च० १ फिरहिं, द्वि० ७ भए । [5]. प्र० २ बरजै । [6]. तृ० १ समान । [7]. प्र० २ कस उपना जोवन । [8]. प्र० १ सैंति सँभारि बाँधु तैं बारी, द्वि० ५, च० १ बाँधु सत्त मन बोझ विचारी । [9]. प्र० १ अधारू, प्र० २ सँभारू । [10]. द्वि० ७ जपै, तृ० ३ मरै । [11]. द्वि० ६ पँथ । [12]. प्र० २ जेहि वन । [13]. तृ० १, ३ चौंदसि, च० १ चौदह । [14]. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६, ७, पं० १ सोउ । [15]. प्र० १ सो । [16]. पं० १ तिरिआ । [17]. प्र० २ जो जइहसि । [18]. प्र० १ चलहु । [19]. तृ० ३ जो उपाइ । [20]. द्वि० १, ६, तृ० १ जनमि को, द्वि० ७ जनम लै । [21]. प्र० १ सो ।

[१७४] [1]. द्वि० १ जौ (हिंदी मूल) । [2]. तृ० ३ लहि । [3]. द्वि० ७ आवत । [4]. द्वि० ३, ४, ५ आइ निअराई । [5] द्वि० ४, ५ जुग, द्वि० ३, तृ० १, च० १ पर ।

नींद भूख अह[६] निसि गै दोऊ। हिएँ माझ[७] जस कलपै कोऊ[७]।
रोवँहिं रोवँ लागे जनु चाँटे। सोतहि सोत बेधे बिख[८] काँटे।
दगध कराह जरै सब जीऊ[९]। बेगि न आउ मलैगिरि पीऊ।
कवन देव कहँ जाइ परासौं। जेहि सुमेरु[१०] हिय लाइ गरासौं[११]।
गुपुत जो फल साँसहि[१२] परगटे। अब[१३] होइ सुभर चहहिं पुनि घटे[१४]।
भए[१५] सँजोग जौं रे अस[१६] मरना। भोगी भएँ[१७] भोग[१८] का करना।

जोबन चंचल ढीठ[१९] है करै निकाजहिं काज।
धनि कुलवंति जो कुल धरै करि जोबन[२०] महँ[२१] लाज॥

[१७५]

तेहि बियोग हीरामनि आवा। पदुमावति जानहुँ जिउ पावा।
कंठ लागि[१] सो हौसुर[२] रोई। अधिक मोह जो मिलै बिछोई।
आगि[३] बुझी[४] दुख हियँ जो[५] गँभीरू। नैनन्ह आइ चुवा होइ नीरू।

---

६. द्वि० २ वह, द्वि० ३, ५ दिन। ७. प्र० १, २, द्वि० ७ हिएँ माँसु जस कलपै कोऊ, द्वि० १, ५, तृ० २, ३ सेज केँवाछ लाव जनु सोऊ (तुलना० १६८.२)। ८. प्र० २ ही, तृ० ३ तनु, द्वि० ४, तृ० १, पं० १ जनु, द्वि० ५ दुख। ९. प्र० १ करै तस जीऊ, प्र० २, द्वि० ५, तृ० ३ जरै जस घीऊ, द्वि० २ करै नित जीऊ, द्वि० ३ जरै सब कोऊ। १०. द्वि० १ सुमिरन। ११. प्र० १ परसौं जिउ लाइ गरासौं, प्र० २, द्वि० ७ समीर, जिअ लागि गरासौं, द्वि० २ पसाध हिअ लाइ गरासौं, तृ० ३ गुमिरौं हिअ लाइ तरासौं, द्वि० ६ समीर होइ लाइ गरासौं। १२. प्र० १, २, द्वि० ७ चाहहिं, द्वि० ३, तृ० १, च० १ सामनहिं। १३. द्वि० ५ आप। १४. प्र० १ सुमर चाह होइ रते, द्वि० १ सबहि चाह परगसे, तृ० ३ चहै तन घटे, द्वि० ४ सुभर चहहिं हमगटे, तृ० १ सब जेहि तन महँ घटे। १५. द्वि० २ यह रे। १६. प्र० २ अति। १७. द्वि० २, ४, ६ भूखइँ गए। १८. द्वि० २ भोजन। १९. द्वि० ४ दीन्ह। २०. द्वि० २ धीरज। २१. द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, पं० १ मन।

[१७५] १. द्वि० १ हिएँ लाइ। २. प्र० १ सूवा कर, प्र० २ तेहि औसर, द्वि० १ सो होइ सुर, तृ० ३ अति गहवरि, द्वि० ४, ५ सूवा सों, द्वि० ६ कै रहि रहि, द्वि० ७ सहौं सुर, तृ० २ सूवा सोइ, द्वि० ३ सूवा सँग, च० १ कै बहुत जो। ३. प्र० १ अगिनि। ४. द्वि० ४, तृ० १ उठी। ५. द्वि० २, तृ० २, ३ अहा।

रही रोइ जब पदुमिनि[6] रानी। हँसि पूँछहिं सब सखी सयानी।
मिले रहस चाहिअ भा दूना। कत रोइअ जौं मिलै बिछूना।
तेहि क उतर पदुमावति कहा। बिछुरन दुक्ख हिएँ भरि रहा।
मिला जो[8] आइ हिएँ सुख भरा[9]। वह[10] दुख नैन नीर[11] होइ ढरा[12]।

बिछुरंता जब भेंटिऔ सो जानै जेहि नेहु[13]।
सुक्ख सुहेला उग्गवइ दुक्ख झरै जेउँ मेहु॥

[१७६]

पुनि रानी हँसि कूसल[1] पूँछा। कत गवनेहु पिंजर कै छूँछा।
रानी तुम्ह जुग जुग सुख[2] पाटू। छाज न पंखिहि पिंजर ठाटू।
जौं भा पंख कहाँ थिर रहना। चाहै उड़ा पंखि जौं डहना[3]।
पिंजर महँ जो[4] परेवा[5] घेरा। आइ मँजारि कीन्ह तहँ फेरा।
देवसेक आइ हाथ पै[6] मेला। तेहि डर[7] बनोबास कहँ खेला[8]।
तहाँ बिआध जाइ[9] नर[10] साँधा। छूट न पाव[11] मीचु[12] कर बाँधा।
ओइँ धरि बेचा बाँभन हाथाँ। जंबू दीप गएउँ तेहि[13] साथाँ[14]।

तहाँ चित्रगढ़ चितउर[15] चित्रसेनि कर राज।
टीका दीन्ह[16] पुत्र कहँ आपु लीन्ह[17] सिब साज॥

---

६. प्र० १, तृ० १ पदुमावति, द्वि० ७ कै पदुमिनि, द्वि० ३, च० १ जो पदुमिनि। ७. प्र० १ सँग, तृ० १ तब। ८. प्र० १ मिलन जो, प्र० २, तृ० ३ मिला, द्वि० १, २, ३, ६, तृ० १ मिलतहि, द्वि० ४ मिला जो द्वि० ७ मिलत जो, द्वि० ५,६, च० १ मिला तो। ९. प्र० १ हिएँ अहादुख भरा। १०. प्र० १ सो। ११. द्वि० ७ हिएँ। १२. द्वि० २ भरा। १३. प्र० १ यह, प्र० २ सो।

[१७६) १. प्र० १, द्वि० ३ कुशल जो, द्वि० १ सुवासो। २. द्वि० ७ सिर। ३. प्र० १ ताकै उड़े रहै नहिं तहना। ४. प्र० १ पिंजरा रहा, द्वि० २ तृ० ३ पिंजर महँ सो। ५. प्र० २ रेव रेव। ६. तृ० ३ तहँ, द्वि० ७ जो। ७. द्वि० १ तृ० ३ दुख हौं। ८. द्वि० २ हेरा। ९. प्र० १, द्वि० ५, ७, तृ० १ तहाँ बिआध आइ, प्र० २ तव बेआधा आए, तृ० ३ तहँ बहु व्याध जाइ। १०. प्र० २, द्वि० १ सर। ११. प्र० २ प्रान। १२. द्वि० २, ७, ३ रिन। १३. प्र० १ हम। १४. प्र० २ सुमिरि ले गा राजा के हाथा। १५. प्र० १ आहि गढ़ चितउर, द्वि० १, ४, ५ चित्र चितउर गढ़। १६. प्र० १ दीन्हेउ। १७. प्र० २, द्वि० ६ आपु कीन्ह, च० १ और कीन्ह। १८. द्वि० १ राज।

[१७७]

बैठ जो राज पिता के ठाऊँ। राजा रतनसेनि ओहि नाऊँ।
का बरनौं धनि देस दियारा[1]। जहँ अस नग उपना उजियारा।
धनि माता धनि[2] पिता बखाना। जेहि कें बंस अंस अस[3] आना[4]।
लखन बतीसौ कुल[5] निरमरा[6]। बरनि न जाइ रूप औ करा।
ओइँ हौं लीन्ह अहा अस भागू। चाहै[7] सोनहि[8] मिला सोहागू।
सो नग देखि इंछ भै मोरी। है यह रतन पदारथ जोरी।
है ससि जोग इहै पै भानू[9]। तहाँ तुम्हार[10] मैं कीन्ह बखानू।

कहाँ[11] रतन रतनाकर[12] कंचन कहाँ[13] सुमेरु।
दैय जौं जोरी दुहुँ[14] लिखी मिलै सो कवनेहु फेर॥

[१७८]

सुनि कै बिरह चिनगि ओहि[1] परी। रतन पाव जौं[2] कंचन करी।
कठिन पेम बिरहा दुख[3] भारी। राज छाड़ि भा जोगि[4] भिखारी।
मालति[5] लागि भँवर जस होई। होइ बाउर निसरा बुधि खोई।
कहेसि पतंग होइ धँसि लेऊँ। सिंघल दीप जाइ जिउ[6] देऊँ।
पुनि ओहि कोउ न छाड़ अकेला। सोरह सहस कुँवर भए चेला।
औरु गनै को संग सहाई। महादेव मढ़ मेला जाई।
सूरुज[7] परस दरस की ताईं। चितवै चाँद चकोर कि नाईं।

---

[१७७] १. द्वि० १ अपारा, द्वि० ५ दुआरा, च० १ दिपारा। २. प्र० १ राजा औ, द्वि० ६ माता औ। ३. प्र० २ अस जन्मे सआना, तृ० ३ अस भया सयाना द्वि० ७ हुआ सयाना। ४. यह पंक्ति द्वि० २ में नहीं है। ५. प्र० २, पं० १ जग ६. द्वि० १ सूर निकलंक औ। ७. द्वि० २ जानहुँ। ८. द्वि० ७ तेहि अस। ९. द्वि० १ जोग सँजोग जनौं ससि भानू। १०. प्र० १, द्वि० ७ कँवल। ११. द्वि० १ तहाँ। १२. द्वि० ४. ५, तृ० २ रतनागढ़, प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३, च० १ रतनागिरि। १३. प्र० १ मेरु। १४. द्वि० ३ यह।

[१७८] प्र० २ अस, द्वि० ७ एक। २. द्वि० १ जनु, तृ० ३ ज्यों, द्वि० ६ सो। ३. प्र० १ उपना हिय। ४. प्र० १ भा बिरह, च० १ जनु होइ। ५. प्र० २ केतुकि। ६. द्विं० ४, ५ पग। ७. द्वि० ७, अस हुआ सयाना।

तुम्ह बारीं रस जोग जेहि[८] कँवलहि जस अरघानि[९]।
तस[१०] सूरुज परगासि कै भँवर मिलाएउँ आनि ॥

[१७९]

हीरामनि जौं कही रस[१] बाता। सुनि कै रतन[२] पदारथ राता।
जस सूरुज देखत होइ ओपा। तस भा बिरह[३] काम दल कोपा।
पै सुनि जोगी केर बखानू। पदुमावति मन भा अभिमानू[४]।
कंचन जौं कसिअै कै ताता। तब जानिअ दहुँ पीत कि राता[५]।
कंचन करी न काँचहि लोभा। जौं नग होइ पाव तब[६] सोभा।
नग कर मरम सो जरिया जाना। जरै[७] जो[८] अस नग हीर पखाना[९]।
को अस हाथ[१०] सिंघ मुख घाला[११]। को यह बात पिता सौं चाला।

सरग इंद्र डरि काँपै बासुकि डरै पतार।
कहाँ अैस बर[१२] प्रिथिमी मोहि[१३] जोग[१४] संसार ॥

[१८०]

तूँ रानी ससि कंचन करा। वह नग रतन सूर[१] निरमरा।
बिरह बजागि बीच का[२] कोई। आगि जो छुवै जाइ जरि[३] सोई।

---

८. प्र० १ रस भोग जेहि, द्वि० ३ रस भोग चह, प्र० २ संजोग चह, तृ० १ अस जोग जेहि। ९. प्र० १, द्वि० ७ अवरानि। १०. प्र० २ कै।

[१७९] १. प्र० २ एक, द्वि० ४, ५, ७ यह। २. द्वि० ७ रंग। ३. प्र० १ ओप, च० १ बिरम। ४. प्र० १ भएउ गियानू। ५. प्र० २ में यह पंक्ति नहीं है। ६. द्वि० ४, ५ जुरै होइ तब, तृ० ३ होइ तौ पावै (हिंदी मूल), द्वि० ७ पाव तबहि पै। ७. तृ० ३ जुरै। ८. प्र० २ जरिअे। ९. प्र० २ देखि बखाना, प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, ७, तृ० १, च० १ हेरि बखाना। १०. द्वि० २ नाथ। ११. प्र० १ को अस सिद्ध देउँ जैमाला। १२. द्वि० २ पर। १३. तृ० ३ जो मोहि। १४. तृ० १ जो गत।

[१८०] १. प्र० १ रतनजोति, द्वि० ३, ७ रतनसेनि। २. प्र० १, २ बचा का, द्वि० २ सीज का, द्वि० ४, ५ वीति गा, द्वि० ३, च० १ बीज का। ३. द्वि० ७ मरि।

आगि बुझाइ ढोइ जल काढ़ै[४]। यह न बुझाइ आगि असि[५]बाढ़ै।
बिरह कि आगि सूर नहिं[६]टिका[७]। राति हुँ दिवस जरा औ धिका[८]।[९]
खिनहिं सरग खिन जाइ पतारा। थिर न रहै तेहि आगि अपारा।[९]
धनि सो जीव दगध इमि सहा[१०]। तैस जरै[११] नहिं दोसर कहा[१२]।[९]
सुलुगि सुलुगि भीतर होइ स्यामा। परगट होइ न कहा दुख नामा[१३]।[९]
काह[१४] कहौं मैं ओहि कहँ[१५] जेइ दुख कीन्ह अमेंट[१६]।[९]
तेहि दिन आगि करौं यह बाहर[१७] होइ जेही दिन भेंट[१८]॥[९]*

[१८१]

हीरामनि जौं कही रस[१] बाता। पाएउ पान भएउ मुख राता[२]।[३]
चला सुआ रानी तब कहा। भा जो परावा सो कैसें रहा।[३]

---

४. प्र० २ धाइ जल काढ़ै, द्वि० २, तृ० १ दुहूँ जल काढ़ै, द्वि० ५, ३ दुहूँ जग गाढ़ै, द्वि० ४ धोइ जल गाढ़े, तृ० ३ धोइ जल काढ़ै। ५. प्र० १, द्वि० ४, ५, ३ अति, तृ० ३ अति। ६. द्वि० १ तहँ, द्वि० ३ पंथ। ७. पं० १ जुड़ाई, जरै अधिकाई। ८. प्र० १ फिरैं तस धिका, प्र० २ जरै अधिका। ९. तृ० २ में यह पंक्तियाँ नहीं हैं। प्रति पहिले खंडित हो गई थी, बाद को ठीक की गई, किंतु नए पृष्ठ का प्रारम्भ अगले छंद की तीसरी पंक्ति से किया गया। मूल प्रति की अगली पंक्ति 'बिरह कि आगि' थी, यह निचले हाशिए पर लिखे हुए इन शब्दों से प्रकट है। १०. प्र० २ सहई। ११. द्वि० २ अकसर जरै, द्वि० ४, ५ औस जरै। १२. प्र० २ दोसर होए समाई, द्वि० २ नहिं दोसर चहा, च० १ करि जाइ न कहा। १३ प्र० २ श्यामा, न काहु दुख नामा, द्वि० २ स्यामा, न देखा दुख नामा, द्वि० ४, ५, ३ स्यामा, न काढ़ै नामा, द्वि० ७ वासा, न कहै दुख नासा। १४. द्वि० २, तृ० १ कहैं। १५. प्र० १ वाहि दई सौं, द्वि० २ औ एहिसों, द्वि० ६ जो हा हर ठाऊँ। १६. प्र० २, द्वि० १, ४, ५, ७, पं० १ निमेंट, द्वि० २ सो मेंट, द्वि० ३ निकेत, तृ० १ सचेत। १७. प्र० १ होइ उर बाहर, द्वि० २ निकस यह बाहर, च० १ करौं घर बाहर। १८. प्र० १ जब प्रीतम सों भेंट, प्र०२, द्वि० ४, ५. ७ जेहि दिन होइ सो भेंट, तृ० ३ होइ प्रीतम सो भेंट, तृ० १, च० १ होइहि जेहि दिन भेंट।

* प्र० १, २, द्वि० १, २,३,४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १, पं० १ में यहाँ एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[१८१] १. प्र० २ सुनी एक, तृ० ३ कही यह। २. तृ० ३ पंखिनि कहँ तोहर मेराऊ, देहु पान मैं तहवाँ जाऊँ। ३. तृ० २ में छंद १८० की पंक्तियों की भाँति यह पंक्तियाँ भी नहीं हैं।

जो निति चलै सँवारै पाँखा । आजु जो रहा कालिह को राखा ।[४]
न जनौं आजु[५] कहाँ[६] दिन[७] उवा । आएहु मिलै चलेहु मिलि सुवा ।
मिलि कै बिछुरन मरन की आना[८] । कत आएहु जौं चलेहु निदाना[९] ।
अनु रानी हौं रहतेउ राँधा । कैसें रहौं बचा कर बाँधा ।
ताकरि दिस्टि अैस[१०]तुम्ह[११] सेवा । जैस[१२]कूँज मन[१३]सहज[१४]परेवा ।

बसै मीन जल धरती अंबा बिरिख[१५] अकास ।
जौं रे पिरीति दुहुन महँ अंत होहिं एक पास ।।

[१८२]

आवा सुवा बैठ जहँ जोगी । मारग नैन बियोग बियोगी ।
आइ पेम रस कहा[१] सँदेसू । गोरख मिला मिला उपदेसू[२] ।
तुम्ह कहँ गुरू मया बहु कीन्हा । लीन्ह अदेस आदि कहँ दीन्हा ।
सबद एक होइ कहा अकेला । गुरु जस भृंगि फनिग[३]जस चेला ।
भृंगि ओहि पंखिहिं[४] पै[५] लेई । एकहिं बार छुएँ जिउ देई ।

---

४. तृ० ३ (यथा. २) सुनै जो अस धनि जारै काया, पावा पान भयो सुख राया । ५. द्वि० १, तृ० ३ इहाँ, प्र० २ आहि, तृ० १ अहा, द्वि० ३ भानु । ६. तृ० ३ कहा । ७. प्र० २, २, द्वि० ३, ६, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ दहुँ, द्वि० १ तूँ । ८. प्र० १ बिछूरे चले कि आना, प्र० २ बिछूरन मरन कि आसा, द्वि० १ बिछुरन मरन कि जाना, द्वि० २ बिछुरन मरन समाना । ९. प्र० २ परासा । १०. प्र० १ कछुव । ११. प्र० १ पंथ, प्र० २ तव, तृ० ३ तूँ, तृ० १ कर । १२. प्र० १ कहइँ । १२. प्र० २ दन । १४. प्र० १ हंस, प्र० २ रहई, द्वि० ४, ५ सेज, द्वि० ३ सीम । १५. प्र० २ अंम्रित ब्रिच्छ, तृ० १ चंदा पुरुष, प्र० १, द्वि० ५, ६ अंबा बसे ।

१६. तृ० ३ चलीं पवनि सब गोहने फूल डाल लै हाथ ।
बिस्वनाथ की पूजा पदुमावति के साथ ।।

[१८२] १. द्वि० २, ३, तृ०३ परेवै कहा, प्र० १ कहा तेहि तहाँ, तृ० १ सुवैं रस कहा । २. द्वि० ७ अदेसा, मिटा अँदेसा । ३. द्वि० १, २, ४, ५, ६ पतँग, पं० १ पंखि । ४. प्र० १ भृंगी आहि फनिग, द्वि० ५ भृंगी ओहि पतंग, द्वि० ७ भृंग बै ओहि फनिग, तृ० १ भृंगी ओहि पंखि । ५. द्वि० ७, तृ० १ गहि द्वि० ३ जौ । ६. द्वि० १ जानु, द्वि० २ चहौं, द्वि० ४, ५ चहै, तृ० १, ३ गहे ।

ताकहँ गुरू[7] करै असि माया[8]। नव अवतार देइ नै काया[9]।
होइ अमर अस मरि कै जिया[10]। भँवर कँवल मिलि कै मधु[11] पिया।

आवै रितू बसंत जब तब मधुकर तब बासु[12]।
जोगी जोग जो इमि[13] करहिं[14] सिद्धि समापति तासु॥

[१८३]

दैय दैय कै सिसिर[1] गँवाई। सिरी पंचिमी पूजी[2] आई।
भएउ हुलास नवल रितु माँहाँ। खिनु न सोहाइ धूप औ छाहाँ।
पदुमावति सब सखीं हँकारीं[3]। जावँत सिंघल दीप की बारीं[3]।
आजु बसंत नवल रितुराजा[4]। पंचिमि होइ[5] जगत सब साजा।
नवल सिंगार बनाफति[6] कीन्हा। सीस परासन्ह[7] सेंदुर दीन्हा[8]।
बिगसि फूल फूले[9] बहु[10] बासाँ। भँवर आइ लुबुधे चहुँ पासाँ।[11]
पियर पात दुख झरे निपाते[12]। सुख पालौ[13] उपने[14] होइ राते।

अवधि आइ सो पूजी[15] जो इंछा मन कीन्ह।
चलहु देव मढ़ गोहने चहौं सो पूजा दीन्ह[16]॥

---

७. प्र० १, २, च० १ जाकहँ, द्वि० ३ तोकहँ। ८. द्वि० ५ मया भल कीन्हा। ९. द्वि० ५ कया नव दीन्हा। १०. तृ० १ हुवा सुवा अस को मरजिआ। ११. प्र० १ रस। १२. द्वि० २ पूजें मन आस, तृ० २ मधु कर बनबास। १३. प्र० २ सोइ, तृ० १ अमर। १४. द्वि० ४, ५, ६ सहहिं।

[१८३] १. द्वि० १, २, ३, ६, ७, तृ० ३, च० १ सो रितु, द्वि० ४, ५, पं० १ सुरितु। २. प्र० १ पहुँची। ३. द्वि० ५ बोलाईं, की सब आईं। ४. प्र० २ सिव बर्त आहि सब कै राजा। ५. तृ० ३ पंचत सोइ। ६. प्र० १ बनस्पति, प्र० २ सबन्हि तहाँ, द्वि० १ बना सब। ७. द्वि० ५ भरा सब, द्वि० ३ बना अस। ८. प्र० २ सब मिलि चलीं पदुमावति पाहाँ। ९. द्वि० ४ कँवल फूल। १०. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ चहुँ। ११. प्र० २ में यह पंक्ति छूट गई है। १२. द्वि० ७ में नौ पाते। १३. द्वि० ४ पल्हपा, च० १ पलुहा। १४. प्र० १ निसरे। १५. प्र० १ पहुँची। १६. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० ३ कीन्ह।

[१८४]

फिरी आन रितु[1] बाजन बाजे। औ सिंगार सब बारिन्ह साजे।
कँवल करी पदुमावति रानी। होइ मालति जानहुँ बिगसानी[2]।
तारा मँडर पहिर भल चोला[4]। पहिरै ससि[5] जस[6] नखत अमोला।
सखी कमोद[7] सहस दस संगा। सबै सुगंध चढ़ाए अंगा।
सब राजा रायन्ह कै बारीं। बरन बरन पहिरें सब[8] सारीं।
सबै सुरूप पदुमिनी जाती। पान फूल सेंदुर सब[9] राती।
करहिं कुरेरैं[10] सुरँग[11] रँगीलीं। औ चोवा चंदन सब गीलीं[12]।[13]

चहुँ दिसि रही[14] बासना फुलवारी असि फूलि।
वह बसंत सौं भूली[15] गा बसंत ओहिं भूलि[16]॥

[१८५]

भै अहान[1] पदुमावति चली। छतीस कुरी भै[2] गोहने भली।
भै कोरी सँग[3] पहिरि पटोरा। बाँभनि ठाउँ[4] सहस अँग मोरा।
अगरवारिनि गज गवन करेई। बैसिनि पाव हंस गति देई।

---

[१८४] १. द्वि० ३ सब। २. प्र० १, च० १ विहसानी। ३. द्वि० ३ तार अमोल। ४. प्र० १, २ पहिरे चोला, अमोला, तृ० ३ पहिरि भलि चोली, अमोली। ५. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ३ मरे सीस। ६. द्वि० १ सब। ७. द्वि० १ कोटि, तृ० १ कोर। ८. प्र० १, २, द्वि० १ तन। ९. प्र० १ रँग। १०. प्र० १ करहिं जो करीं, च० १ करहीं कलीं, प्र० २ द्वि० ३, ७, तृ० २ करहीं केलि, द्वि० ४ करहिं किलोल, द्वि० ५ करहि कुलेल, तृ० १ खेडै करै। १२. प्र० १ मिली, प्र० २, द्वि० ५ मीली, द्वि० ४ खीली, द्वि० ७ सिवली। १३. प्र० २ में इसके स्थान पर (यथा . ७) पदुमावति महादेव पूजै चली, करहिं केलि सुरंग रँगीली। और (यथा . ८) ओवा चोवा चंदन सब भीली, सखिन्ह हाथ पिचुकारी भली। १४. प्र० १, द्वि० ६, ७, पं० १ रही बसाइ, द्वि० ५ चहुँ दिसि रही बसाइ।

[१८५] प्र० १ भै नहान, प्र० २ भै आहनी, तृ० ३ भै पयान, द्वि० ३, ४, तृ० २ भै आहाँ, द्वि० ७ चढि बेवान। २. प्र० १ सब, प्र० २ भव, तृ० ३ सो। ३. प्र० १ चली कुँवारिनि, प्र० २ भा गौरी, तृ० ३ भै गवने, द्वि० ४, ५ भै गौरी, द्वि० ६, ७, च० १, पं० १ भै कुँवारि, द्वि० ३ भै गौरिनि। ४. द्वि० ४ आइ।

चंदेलिनि ठवँकन्ह[५] पगु ढारा। चली चौहानी होइ झनकारा।
चली सोनारि सोहाग सोहाती[६]। औ कलवारि पेम मधु माँती।
बानिनि भल[७] सेंदुर दै माँगा। कैथिनि चली समाइ न आँगा[८]।
पटुइनि पहिरि सुरँग[९] तन चोला। औ बरइनि मुख सुरस[१०] तँबोला[११]।

चलीं पवनि सब गोहने फूल डालि लै हाथ।
बिस्वनाथ[१२] की पूजा पदुमावति के साथ ॥*

[१८६]

कँवल सहाय[१] चलीं फुलवारीं। फर फूलन्ह कै[२] इछा बारीं।
आपु आपु महँ करहिं जोहारू। यह बसंत सब कर तेवहारू।
चही मनोरा[३] झूमक[४] होई। फर औ फूल लेइ[३] सब कोई।
फागु खेलि पुनि दाहब होली। सैंतब खेह उड़ाउब झोली।
आजु साज[५] पुनि देवस न दूजा। खेलि बसंत लेहु दै[६] पूजा।
भा आएसु पदुमावति केरा। बहुरि न आइ करब हम फेरा।
तस हम कहँ होइहि रखवारी। पुनि हम कहाँ कहाँ यह बारी।

पुनि रे चलब घर आपुन पूजि बिसेसर देउ।
जेहिका होइ हो खेलना आजु खेलि हँसि[७] लेउ ॥

---

५. प्र० १, तृ० १, च० १ ठकवन्ह। ६. तृ० ३ सो राती। ७. प्र० १, द्वि० ४, च० १, पं० १ बानिनि चलि, प्र० २ मालिनि चली, द्वि० १ बानिनि फूलु। ८. प्र० २ चली बरइनी मोरत अंगा। ९. प्र० २ चली गंध, पं० १ न चली सुरंग। १०. प्र० १, द्वि० २, ७ सुरँग, द्वि० ४, ५, तृ० २, ३ खात, द्वि० ३, च० १ रात, द्वि० ६ खाइ। ११. प्र० २ कैथिनि चली मुख भरे तँबोला। १२. द्वि० २ बेहा नहिं।
* इसके अनंतर प्र० १, २ द्वि० १, २, ४, ५, ६, तृ० ३ में एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)।

[१८६] १. प्र० १ गवन सुहाय, तृ० ३ कँवल चुभाव, द्वि० ४ कँवल सुभाय। २. च० १ लै। ३. प्र० १ करहिं मनोहर, प्र० २ करि मंडल। ४. प्र० २ झमकावहु। ५. प्र० १ खेल, द्वि० ४, ५ छोड़ि। ६. प्र० १ चलहु कै, प्र० २ लेहु कै। ७. प्र० १, तृ० २, च० १, पं० १ भो।

[१८७]

काहूँ गही आँब कै डारा। काहूँ बिरह जाँबु अति[1] भारा।
कोइ नारँग कोइ झार चिरौंजी[2]। कोइ कटहर बड़हर कोइ न्यौंजी[3]।
कोइ दारिउँ कोइ दाख सो[4] खीरी[5]। कोइ सदाफर तुरँज जँभीरी।
कोइ जैफर औ लौंग[6] सुपारी। कोइ कमरख कोइ गुवा[7] छुहारी[8]।
कोइ बिजौर[9] कोइ नरियर जोरी[10]। कोइ अँबिलि कोइ महुव खजूरी[10]।
कोइ हरपा रेउरी[11] कसौंदा। कोइ अँवरा[12] कोइ बेर[13] करौंदा।
काहुँ गही केरा की घौरी। काहूँ हाथ परी निबकौरी।

काहूँ पाई[14] निअरैं काहूँ कहँ गए दूरि[15]।
काहूँ खेल भएउ बिख काहूँ अंम्रित मूरि[16]।

[१८८]

पुनि बीनहि सब फूल सहेली। जो जेहि आस पास रह[1] बेली।
कोइ केवरा कोइ चंप नेवारी। कोइ केतुकि मालति फुलवारी।
कोइ सदबरग कुंद औ[2] करनाँ। कोइ चँबेलि नागेसरि बरनाँ[3]।
कोइ सो गुलाल सुदरसन कूजा। कोइ सोनजरद पाव भलि पूजा[4]।
कोइ बोलसिरि[5] पुहुप बकौरी। कोइ रुपमाँजरि कोइ गुनगौरी[6]।
कोइ सिंगारहार तिन्ह पाहाँ[7]। कोइ सेवती[8] कदम की छाहाँ।

---

[१८७] १. प्र० १ बरदा जामुन. प्र० २ जाँतु अस, द्वि० १ फरो चाँप, तृ० ३ जाँबु अरु, द्वि० २, ३, ४, ६, तृ० १, च० १ चाँप अति। २. प्र० २ रंग जँभीरी। ३. प्र० २ खोरी। ४. प्र० १ जो। ५. द्वि० ४ खरीरी, च० १ कोइ खीरी। ६. प्र० १ गुवा। ७. प्र० १ लौंग। ९. द्वि० २ बज को, प्र० २ गुआ। १०. प्र० २ तुरै, खजूरै। ११. प्र० १ हर बहेरा, द्वि० ४, ५ कोइ चूर, द्वि० ६ कोई राय। १२. प्र० २ द्वि० ५, ६, पं० १ अनार। १३. प्र० १ पियर। १४. प्र० १ पावा। १५. प्र० १ काहू गइ बड़ि दूरि, प्र० २ काहू पाई दूरि, द्वि० ६ काहूँ कहँ भा दूरि। १६. प्र० १ सञ्जीवन मूरि।

[१८८] १. प्र० १, २, तृ० २ तेहि, द्वि० १ तहाँ, द्वि० ४ सब। २. प्र० १, २ कोइ। ३. द्वि० ५, च० १ कोइ केसरि। ४. प्र० १, २ भल। ५. प्र० १ धौल सिरी कोइ। ६. प्र० १, २, द्वि० ६, तृ० ३ हरपाखेरी, द्वि० १ नहिं सो गौरी, द्वि० २, ५ कोइ दिन कौरी, द्वि० ४ औ गौरी, तृ० १ गुन सब पूरी। ७. प्र० १, २ माहाँ। ८. तृ० ३ कोई बाट।

कोइ चंदन फूलन्ह जनु फूली। कोइ अजान बीरौ तर भूली[९]।

कोई फूल पाव कोइ पाती हाथ जेहि क जहं[१०] आँट।
कोइ सिउँ हार[११] चीर अरुझानी जहाँ छुवै[१२] तहँ काँट॥

[१८९]

फर फूलन्ह सब[१] डारि ओनाई[२]। झुंड बाँधि कै पंचमि गाईं।
बाजे ढोल डंड औ भेरी[३]। मंदिर[४] तूर झाँझ पहुँ फेरी[५]।
संख सींग डफ संगम[६] बाजे। बंसकारि[७] महुवर सुर साजे।
औरु कहा जेत[८] बाजन भले। भाँति भाँति सब बाजत चले।
रथन्ह चढ़ीं सब रूप[९] सोहाईं[१०]। लै बसंत मढ़[११] मँडप सिधाईं[१२]।
नवल बसंत नवल वै बारीं। सेंदुर बुक्का होइ[१३] धमारी।
खिनहिं चलहिं खिन चाँचरि होई। नाँच कोड भूला सब कोई।

सेंदुर खेह उठा तस गगन भएउ सब रात।
राति सकल महि धरती[१४] रात बिरिख बन[१५] पात[१६]॥

[१९०]

एहि बिधि खेलत सिंघल रानी। महादेव मढ़[१] जाइ[२] तुलानी।
सकल देवता देखैं लागे। दिस्टि पाप सब तिन्हके भागे।

---

९. द्वि० ५, बिरिख तर भूली, द्वि० ३ तरवर तर भूली। १०. तृ० १ जस। ११. प्र० २, तृ० १ जस, द्वि० २, ३ सैं, तृ० ३ सो। १२. तृ० ३ देखै।

[१८९] १. प्र० १ कै। २. द्वि० १, ३, ५, तृ० १, ३, ओढ़ाईं. द्वि० ४,६ भराईं। ३. प्र० २ दुंदुभी बाजी। ४. प्र० १, तृ० १, ३ माँदर, प्र० २ भाँझर। ५. प्र० २ बहु बाजी, द्वि० ३ मंजीरी। ६. प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३ बाजन, प्र० २ पंचम, द्वि० ३ टै कम। ७. प्र० १ मानस करीं। ८. द्वि० ३ गहगहे। ९. द्वि० ३ आव। १०. प्र० १ सोईं। ११. तृ० ३ मरह (उर्दू मूल)। १२. प्र० २, तृ० ३ आईं। १३. प्र० २ करहिं। १४. तृ० १ मंडल। १५. द्वि० ३ पुनि। १६. तृ० १, ३ बात।

[१९०] १. तृ० ३ मरह (उर्दू मूल)। २. प्र० १, २, तृ० ३ आइ।

ये कविलास सुनी[3] आछरीं। कहँ हुत आईं परमेसरीं[4]।
कोई कहै पदुमिनीं आई। कोइ कहै ससि नखत तराईं।
कोई कहै फूल फुलवारीं[5]। भूलै सबै देखि[6] सब बारीं[7]।
एक सुरूप औ सेंदुर सारे। जानहुँ दिया सकल महि बारे।
मुर्छि परे जाँवत जे[8] जोहे। जानहुँ मिरिग[9] देवारी[10] मोहे।

कोई परा भँवर होइ बास लन्ह जनु चाँप।
कोइ पतग भा दीपक होइ अधजर तन[11] काँप॥

[१६१]

पद्मावति गै देव दुआरु। भीतर मँडप कीन्ह[1] पैसारू।
देवहि संसौ भा जिय केरा। भागौं केहि दिसि[2] मँडप घेरा[3]।
एक जोहार कीन्ह औ[4] दूजा। तिसरैं आइ चढ़ाएन्हि पूजा।
फर फूलन्ह सब मँडप भरावा[5]। चंदन अगर देव नहवावा।
भरि सेंदूर आगें होइ खरी। परसि देव औ[6] पाएन्ह परी।
औरु सहेलीं सबै बियाहीं। मो कहँ देव कतहुँ बर नाहीं।
हौं निरगुनि जेइँ कीन्ह[7] न सेवा। गुनि निरगुनि[8] दाता तुम्ह देवा।

---

३. प्र० १ कोइ कहै कविलास, प्र० २ एक कविलास सुनी, तृ० ३ जेहि कविलास सुनी, द्वि० ३ ये कविलास सबै। ४. प्र० १ आईं कला परमेसरी, प्र० २ आइ परीं परमेसरी, द्वि० २, ४, ५ आइ टूटि भुइँ परीं, तृ० २ आइ नखत (टूटि?) भुइँ परीं। ५. प्र० १, २, द्वि० ४, ६ कोइ कहै फूल कोइ फुलवारी। ६. प्र० १ भूले सबै देव, प्र० २ फूले अस देखिअ। ७. प्र० १ देखि बारी, द्वि० २ वै बारी, तृ० ३ तेहि बारी, द्वि० ७ बर नारी, तृ० १ सब नारी, तृ० २, पं० १ कै बारी। ८. द्वि० ५ मुख। ९. प्र० १, २, द्वि० ४, च० १ म्रिगा, तृ० ३ भृंग। १०. द्वि० १ दियारहु, द्वि० ६, पं० १ दियारिन्ह। ११. प्र० १ अस अधजर तन, प्र० २ कोइ अधजर जस, द्वि० १ अधजर होइ जस, द्वि० ३ आधजरत तन।

[१६१] १. तृ० ३ किएहु। २. प्र० २, तृ० १ कौनै मंडप, द्वि० ४ केहि विधि मंडप, द्वि० २ केहि मंडपहि, द्वि० १ कहाँ मंडप। ३. प्र० २, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३ गरेरा। ४. प्र० १, च० १ पुनि। ५. प्र० १, २ छावा, द्वि० १ छपावा। ६. प्र० १ पुनि। ७. प्र० २ न जानेउँ, तृ० ३ न कीन्हेउँ। ८. प्र० २ निरगुन के।

बर सजोग मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि।
जेहि दिन इंछा पूजै[२] बेगि चढ़ावौं आनि॥

[१९२]

इंछि इंछि[१] बिनई जसि[२] जानी। पुनि[३] कर जोरि ठाढ़ि भै रानी॥
उतर को देइ देव मरि गएऊ। सबद अकूट[४] मँडप महँ भएऊ॥
काटि पवारा जैस परेवा। मर[५] भा ईस औरु[६] को देवा॥
भए बिनु जिउ नावत औ[७] ओझा। बिख भइ[८] पूरि काल भा गोझा॥
जो देखैं जनु[९] बिसहर डंसा। देखि चरित पदुमावति हँसा॥
भल हम आइ मनावा देवा। गा जनु[१०] सोइ को मानै सेवा[११]॥
को इंछा पुरवै दुख धोवा। जेहि मनि आए सो तनि तनि सोवा[१२]॥

जेहि धरि सखी[१३] उठावहिं सीस बिकल तेहि[१४] डोल।
धर कोइ[१५] जीव न जानै मुख रे बकत[१६] कुबोल॥

[१९३]

ततखन आइ[१] सखी बिहसानी। कौतुक एक न देखहु रानी॥
पुरुब[२] बार कोइ[३] जोगी छाए। न जनौं कौन देस सौं आए॥

---

२. प्र० २ पूजै मोरी।

[१९२] प्र० २ कछु हिंछा। २. प्र० १ अपने मन, प्र० २ बीनै जग, द्वि० २, ४, ५, तृ० १ बिनती जसि, च० १ बिनवै जस। ३. तृ० २ तब। ४. प्र० १, २, द्वि० २, ६, तृ० १, ३ अकुत, च० १ अकूब। ५. तृ० ३ मरन। ६. द्वि० १, ५ उतर। ७. प्र० १ भए बिनु जीव मनावत, प्र० २, द्वि० ४ भए जीव बिनु नावत, द्वि० ३ भए बिनु जिव सब नायक, च० १ भए बाउर सब नावत। ८. प्र० १, २, तृ० ३ भा, द्वि० ४ भईं। ९. प्र० १ सो। १०. प्र० १ सो। ११. द्वि० २ उतर को देवा। १२. प्र० १ आव तानि कै सोवा, प्र० २ आए दुख धोवा, पं० १ आए सो तनि रोवा। १३. प्र० १ चहुँ दिसि सखी, तृ० जेहि धर सीस। १४. द्वि० १, ४, ५, ३ मरन। १५. च० १ धर हुत। १६. प्र० १ मुख रे बचन, तृ० ३ रे बकतत।

[१९३] १. प्र० १, तृ० २, द्वि० ३ एक। २. प्र० २ देव। ३. द्वि० ३, तृ० ३ मठ।

जनु उन्ह[4] जोग तंत अब[5] खेला। सिद्ध होइ निसरे सब चेला।
उन्ह महँ एक जो गुरू कहावा। जनु गुर दै काहूँ बौरावा।
कुँवर बतीसौ लक्खन[6] राता। दसएँ लखन कहै एक[7] बाता।
जानहुँ आहि गोपिचंद जोगी। कै सो भरथरि आहि बियोगी।
वै[8] पिंगला गए[9] कजरी[10] आरन। यह सिंघल दहुँ सो[11] केहि कारन।

यह मूरति यह मुंद्रा[12] हम न देखा औधूत[13]।
जानहुँ होहिं न जोगी केहु राजा के पूत[14]॥

[१९४]

सुनि सो बात रानी सिउँ[1] चढ़ी[2]। कहाँ सो जोगी[3] देखौं मढ़ी।
लै सँग सखी कीन्ह तहँ फेरा। जोगिहि[3] आइ जनु अछरिन्ह[4] घेरा।
नैन[5] कचोर[6] पेम मद भरे। भइ सुदिस्टि[7] जोगी सौं ढरे[8]।
जोगीं दिस्टि[9] दिस्टि सो लीन्हा[10]। नैन रूप नैनन्ह जिउ दीन्हा।
जो मधु[11] चहत[12] परा तेहि[13] पालें। सुधि न रही ओहि एक पियालें।
परा माँति गोरख का[14] चेला। जिउ तन छाँड़ि सरग कहँ खेला।
किंगरी गहै जु[15] हुत बैरागी। मरतिहुँ बार उहै धुनि लागी।

---

४. तृ० ३ एन्ह। ५. प्र० १ सब। ६. तृ० ३ लखन ना। ७. तृ० १ कछु। ८. प्र० १ जस। ९. प्र० १ द्वि० १, ६, पं० १ कहँ, द्वि० ४, तृ० १, ३ कीं, द्वि० ७ लगि, द्वि० ३ जो, द्वि० २, तृ० २, च० १ सो। १०. प्र० १ कंदलि। ११. प्र० १ आएहु, तृ० ३ दहुँ भा। १२. च० १ मंदिर मँह। १३. द्वि० ६ अस धूत। १४. तृ० ३ अहि, पं० १ होइ। १५. पं० १ कर।

[१९४] १. प्र० १, द्वि० ५, ६ रथ, प्र० २ रिसि, द्वि० १, तृ० ३, चित, द्वि० ३ मन। २. प्र० २, द्वि० ४ चर ही, मर ही (उर्दू मूल)। ३. पं० १ जोगि जो। ४. प्र० १ अपछरिन्ह। ५. द्वि० ७ कनक। ६. प्र० २ चकोर। ७. तृ० ३ दुइ दिस्टि। ८. द्वि० २ पुनि। ९. तृ० ३ आइ। १०. द्वि० १, ६, कीन्हा। ११. द्वि० १, तृ० ३ मद। १२. प्र० १ चाह, प्र० २, द्वि० ७ घात, द्वि० ५ छकत। १३. प्र० १ सो। १४. द्वि० ४ को, च० १ का। १५. प्र० १, तृ० ३ गहाथहे, प्र० २ गहे होत, द्वि० १ गहे जु हाथ।

जेहि धंधा जाकर मन लागै[16] सपनेहु सूझ सो धंध।
तेहि कारन तपसी तप साधहिं[17] करहिं पेम[18]मन[18]बंध ॥

[१९५]

पदुमावति जस सुना बखानू। सहसहुँ कराँ देखा तस भानू।
मेलेसि[2] चंदन मकु खिनु[3]जागा[4]। अधिकौ सूत[5] सिअर[6] तन लागा।
तब चंदन आखर हिय लिखे। भीख लेइ तुइं जोगि न सिखे।
बार आइ तब गा तैं सोई। कैसें भुगुति परापति होई।
अब जौं सूर अहै[7] ससि राता। आइहि चढ़ि सो गंगन पुनि साता[8]।
लिखि कै बात सखी सौं कही। इहै ठाउँ हौं[10] बारति[10] अही।
परगट होइ तौ होइ अस भंगू[12]। जगत दिया[13] कर[14] होइ पतंगू।

जासौं हौं चख हेरौं[15] सोइ ठाउँ जिउ देइ।
एहि दुख कबहुँ[16] न निसरौं[17] को[18] हत्या असि लेइ ॥

[१९६]

कीन्ह पयान सभन्ह[1] रथ हाँका। परबत[2] छाड़ि सिंघल गढ़ ताका।
भए बलि[3] सबै देवता बली। हत्यारिनि हत्या लै[4] चली।

---

16. प्र० १ जाकर मन, द्वि० ४, ६, च० १ जेहि मन बस। 17. प्र० २ तपसी तन, तृ० ३ तप साधहि, द्वि० ७ करहीं तप। 18. द्वि० ७ तपसी कर।

[१९५] 1. द्वि० ४ सहस करा देखिसि तस, द्वि० ३ करा सहस देखा तस। 2. द्वि० २ धसि। 3. द्वि० १ तबहुँ न, तृ० ३ मुख बिन्दु, द्वि० ५, तृ० १ मख खिनु, द्वि० ७ सूरज बिनु। 4. तृ० ३ न जाना। 5. द्वि० ७ अधिक सीतल, द्वि० ३ सोवत अधिक। 6. प्र० १, २, द्वि० १ सीतल। 7. प्र० १ होहु, प्र० २, द्वि० ४, ५ आह। 8. द्वि० ७ तारा। 9. द्वि० ७ लाँघि समुद्र अपारा। 10. प्र० १ मैं। 11. द्वि० ५ बाँचति। 12. प्र० २ सँजोगू, द्वि० १ रस भंगू। 13. प्र० १ दीपक। 16. द्वि० १ कहूं। 17. प्र० १ निकसौं। 18. तृ० ३ कोइ।

[१९६] 1. प्र० १, २ सखिन्ह। 2. प्र० २ मंडप। 3. प्र० २ चली भौ। 4. तृ० ३ दै।

को अस हितू मुए[5] गह बाहीं। जौं पै जिउ अपने तन[6] नाहीं।
जौं लगि जिउ आपन सब कोई। बिनु जिउ सबै निरापन[7] होई[8]।
भाइ बंधु औ लोग पियारा। बिनु जिय घरी न[9] राखै पारा।
बिनु जिय पिंड छार कर कूरा। छार मिलाव सोइ हितु पूरा[10]।
तेहि जिय बिनु अब मर भा राजा। को उठि बैठि[11] गरब सौं गाजा।

परी कया भुइँ रोवै[12] कहाँ रे जिय बलि[13] भीवँ।
को उठाइ बैसारै बाजु पियारे जीवँ[14]॥

[१९७]

पदुमावति सो मँदिर पईठी। हँसत सिंघासन जाइ[1] बईठी।
निसि सूती सुनि कथा बिहारी[2]। भा बिहान औ[3] सखी हँकारी।
देव पूजि जब[4] आइउँ काली। सपन एक निसि देखिउँ आली।
जनु ससि उदौ पुरुब दिसि कीन्हा। औ रवि उदौ पछिवँ[5] दिसि लीन्हा।
पुनि चलि सुरुज[6] चाँद पहँ आवा। चाँद सुरुज दुहुँ भएउ मेरावा।
दिन औ राति जानु भए एका। राम आइ रावन गढ़ छेंका।
तस किछु कहा न जाइ निखेधा[7]। अरजुन बान राहु गा बेधा।

---

५. द्वि० ३, ५ जोरि, च० १ मरै। ६. प्र० १, २, द्वि० २ घट। ७. द्वि० १ परावा, द्वि० २ न आपन, तृ० ३ निरापद, तृ० १ बरावर। ८. द्वि० ४ सोई। ९. प्र० १, च० १ को। १०. (?) देखौं आज नयन सों कूरा। ११. प्र० २, द्वि०, ४, तृ० १, ३ अब उठै। १२. द्वि० १ लोटै। १३. प्र० १ सो बल औ भीवँ, द्वि० ६ रे नल औ भीवँ। १४. प्र० २ पियारे पीउ, द्वि० १, ३ पिरीतम जीव, तृ० ३ प्रीतम यह जीव।

[१९७] १. तृ० ३ आइ, द्वि० ३ जानु। २. प्र० १ पहारी, प्र० २ पखारी, द्वि० ७ पिआरी। ३. प्र० १, तृ० २ सब। ४. प्र० २ अस, द्वि० १, २, ५, तृ० १, २, पं, १ जस, द्वि० ४ हौ, द्वि० ६ जौ (हिंदी मूल)। ५. तृ० ३ पुरब। ६. द्वि० ४ चाँद सुरुज। ७. प्र० १ कहा न जाइ जो तेहि निसि बेधा, प्र० २ कहा न जाइ जूझि कत बोधा, तृ० ३ तस कुछ कहा न जाइ बिसेखा।

जनहुँ लंक सब लूसी[८] हनूँ[९] बिधाँसी बारि[१०]।
जागि उठिउँ अस[११] देखत सखि सो कहहु[१२] बिचारि ॥

[१९८]

सखी सो[१] बोली सपन बिचारू। काल्हि जो गइहु देव के बारू।
पूजि मनाइहु बहुत बिनाती[२]। परसन आइ[३] भएउ तुम्ह राती।
सूरुज पुरुख चाँद तुम्ह रानी। अस बर दैव मिलावा आनी।
पछिवँ खंड कर राजा कोई। सो आवै बर तुम्ह कहँ होई।
पुनि कछु जूझि लागि[४] तुम्ह[५] रामा। रावन सौं होइहि[६] संग्रामा।
चाँद सुरुज सिउँ[७] होइ बिआहू। बारि[८] बिधाँसब बेधब राहू।
जस ऊखा कहँ अनिरुध मिला। मेंटि न जाइ लिखा पुरुबिला[९]।

सुख सोहाग है तुम्ह कहँ[१०] पान फूल रस भोग।
आजु काल्हि भा चाहिअ अस सपने क[११] सँजोग ॥

[१९९]

कै[१] बसंत पदुमावति गई[२]। राजहिं तब बसंत सुधि भई।
जौं जागा न बसंत न बारी। ना सो खेल न खेलनिहारी।
ना ओहि की वै[३] रूप सहाईं। गैं हेराइ पुनि दिस्टि न आईं।
फूल झरे[४] सूखीं फुलवारीं। दिस्टि परीं उकठीं सब झारीं[५]।

---

८. प्र० २ हुलसां, द्वि० १, २, तृ० १ लूटी, तृ० ३ लीन्हेउ, द्वि० ७ लुहसा। ९. प्र० २, तृ० ३ हनिवँत। १०. द्वि० ४ बाग। ११. प्र० २ सब। १२. द्वि० १, २, ५, तृ० ३ सखि कहु सपन, तृ० ३ सखि सो कहु, द्वि० ४ को सखि सपन।

[१९८] १. प्र० २, द्वि० १ जो, तृ० ३ सत्र। २. द्वि० २ कहु भल भाँती। ३. प्र० १ देव। ४. प्र० १ होइ। ५. प्र० २ कछु। ६. द्वि० ५ सती होइ। ७. द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, ३, च० १ हुउँ, द्वि० ६ सों। ८. द्वि० २, ३, ५ लंक। ९. द्वि० २ परमला, द्वि० ३ पुरबुला। १०. प्र० १ तुम्ह होइहि। ११. प्र० १ कछु सपन।

[१९९] १. प्र० २ गै। २. प्र० १ खेलि बसंत कुँवरि जब गई। ३. प्र० १ ओहि कै कोइ न। ४. प्र० १ गएँ। ५. प्र० १, द्वि० ३ सब बारी, प्र० २ फुलवारी, तृ० ३ सो वारी।

केइँ यह बसत बसंत उजारा। गा सो चाँद अँथवा लै तारा।
अब तेहि बिन जग भा अंधकूपा। वह सुख छाँह जरौं हौं धूपा[६]।
बिरह दवा अस को रे बुझावा। को प्रीतम सें करै मेरावा।

हिआ देखि सो चंदन घेवरा[७] मिलि कै लिखा बिछोव।
हाथ मींजि सिर धुनै सो रोवै जो निचिंत अस सोव॥

[२००]

जस बिछोव जल मीन दुहेला। जल हुति काढ़ि अगिनि महँ मेला।
चंदन आँक[१] दाग होइ[२] परे। बुझहिं[३] न ते आखर परजरे[४]।
जनहुँ सरागिनि[५] होइ होइ लागे[६]। सब बन[७] दागि सिंघ बन[८] दागे।
जरे मिरिग बनखँड तेहि ज्वाला। औ ते जरे[९] बैठ तहँ[१०] छाला।
कत ते अंक लिखा जेहिं सोवा। मकु आँकत नहिं[११] करत बिछोवा[१२]।
जस दुखंत कहँ साकुंतला[१३]। माधौनलहि काम कंदला[१४]।
भए अंक नल जैस दमावति। नैना मूँदि[१५] छपी[१६] पदुमावति।

आइ बसंता छपि रहा[१७] होइ फूलन्ह के भेस।
केहिं बिधि पावौं भँवर[१८] होइ कौनु सो गुरु[१९] उपदेस॥

---

६. प्र० १ हौं बिनु छाँह मरौं तेहि धूपा। ७. प्र० १, द्वि० ५, तृ० ३, च० १ खेवरा, द्वि० ४ धौरा।

[२००] १. तृ० ३ आँग (उर्दू मूल), च० १ आगि। २. प्र० २ हिअ। ३. द्वि० ५ तजहिं। ४. प्र० १ नाहिं ते आखर जरे। ५. द्वि० ७, तृ० ३ सरागै। ६. प्र० २ जानहु सर होइ कै ये लागे। ७. द्वि० ४, तृ० ३ तन। ८. च० १ सब। ९. तृ० ३ सो जरा। १०. तृ० ३ जेहिं। ११. प्र० १ सोइ अंग जे, द्वि० २ आँकत तेहि, तृ० ३ अंकन्ह तें, द्वि० ३ अबला कहँ। १२. तृ० १ करवत छोवा। १३. प्र० १, द्वि० ७ अब जो बिछोइ गहि ससि मंडला। १४. प्र० १ जस कंदला। १५. द्वि० ७ माँह। १६. द्वि० १ चहौं। १७. द्वि० २ फिरि गया। १८. तृ० १ राखौं पौन। १९. प्र० १, द्वि० २, ३, ७, केहि गुर के, द्वि० १ सो मुहिं, पं० १ सारै गुरु।

२०. प्र० २ कामकंदला बिछुरता माधव बिकल सरीर।
तेहि बिधि राजा रोअत का हकहत एह पीर॥

[२०१]

रोवै रतन माल जनु चूरा। जहँ होइ ठाढ़ होइ तहाँ कूरा।
कहाँ बसंत सो कोकिल[२] बैना। कहाँ कुसुम अलि बेधै[२] नैना।
कहाँ सो मूरति परी जो डीठी। काढ़ि लीन्ह[३] जिउ हिएँ पईठी[४]।[५]
कहाँ सो दरस परस जेहि[६] लाहा। जौं सो बसंत करीलहि[७] काहा।
पात बिछोव[८] रूख जौं फूला। सो महुवा रोवै अस भूला[९]।
टपकै महुव आँसु तस परई। होइ महुवा बसंत जेउँ[११] झरई[१२]।
मोर बसंत सो पदुमिनि बारी। जेहि बिनु भएउ[१३] बसंत उजारी।

पावा नवल[१४] बसंत बन[१५] बहु आरति बहु चोप।
अैस न जाना अंत होइ पात झरहिं होइ[१६] कोंप[१७]।[१८]।।

[२०२]

अरे मलिछ[१] बिसवासी देवा। कत मैं आइ कीन्हि तोरि सेवा।
आपनि नाउ चढ़ै जो देई[२]। सो तौ पार उतारै खेई।
सुफल लागि[३] पग टेकेउँ तोरा[४]। सुवा क सेंवर तूँ भा मोरा।
पाहन चढ़ि जो चहै भा पारा। सो अैसैं[५] बूड़ै मँझधारा।

---

[२०१] १. तृ० ३ सारँग। २. तृ० ३ वेध जो। ३. च० १ गहेसि।
४. प्र० १, द्वि० ७ चित्र होइ सो चितहि पईठी। ५. द्वि० १ कहाँ बसंत कहाँ वै बारी, कहाँ सो फूल कहाँ फुलवारी। ६. प्र० १ अस।
७. प्र० करीलै, द्वि० ५ गरी कहि, द्वि० ७ करै कह (उर्दू मूल)।
८. प्र० १ अस बिनु छाँह। ९. द्वि० ७ बहुरि बसंत कि होइ बसंता, नाहीं तौ जरि होइ भसमंता। १०. द्वि० ७ असरंग तार।
११. द्वि० २, च० १ रितु। १२. द्वि० ७ निपाता। १३. प्र० १, द्वि० ६, च० १ सबै। १४. द्वि० ७ पावनै सदा। १५. द्वि० १ पुनि।
१६. द्वि० ५ कै, द्वि० ७ बिनु।
१७. प्र० १ मिलि जो प्रीतम बिछुरही सो जानहि एह भेव।
प्रान रहै घट भीतर कोइ अंत न पावै भेव।।

[२०२] १. द्वि २, ३ निलज। २. प्र० १ चढ़ाइ जो लेई। ३. द्वि ४ जानि। प्र० १, २, द्वि० ४, ७ सेएउँ पग। ५. प्र० २ अवसइ।

पाहन सेवाँ काह[६] पसीजा। जरम न पलुहै जौं निति[७] भीजा।
बाउर सोइ जो पाहन पूजा। सकति को[८] भार लेइ सिर[९] दूजा।
काहे न[१०] पूजिअ सोइ निरासा। मुएँ जिअत मन[११] जाकरि आसा।
सिंघ तरेंडा जिन्ह गहा पार भए तेहि साथ।
ते परि बूड़े वार ही[१२] भेंड़ पोंछि जिन्ह हाथ॥

[२०३]

देव कहा सुनु बौरे राजा। देवहिं अगुमन मारा गाजा।
जौं पहिलें[१] अपुने सिर परई[२]। सो का काहु कै धरहरि करई[३]।[४]
पदुमावति राजा कै बारी। आइ सखिन्ह सौं मँडप उघारी।
जैसें चाँद गोहने सब तारा। परेउँ भुलाइ देखि उँजियारा।
चमकै दसन[५] बीज की नाईं। नैन चक्र जमकात[६] भवाईं।
हौं तेहि दीप पतँग[७] होइ परा। जिउ जम गहा[८] सरग लै धरा।
बहुरि न जानौं दहुँ का भई। दहुँ कबिलास कि कहँ उपसई[९]।
अब हौं मरौं निसाँसी[१०] हिएँ[११] न आवै[१२] साँस।
रोगिआ की को चालै[१३] बैदहि[१४] जहाँ उपास॥

---

६. प्र० १, पं० १ कहा। ७. प्र० १ जग, द्वि० १, २, ५, ६, ७, तृ० १ जल। ८. प्र० १, २, द्वि० ३, ७, तृ० २, ३ कि, द्वि० ४, ५ के, च० १ का। ९. प्र० २, द्वि० ५, च० १ को। १०. द्वि० ६ बोहत। ११. द्वि० ६ महँ। १२. प्र० १, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, २, ते बूड़े अवगाह महँ, प्र० २ ते पै झुरवै पार भए, द्वि० ५, ६, च० १ ते बूड़े मँझधार मँह [द्वि० ६--हीं]

[२०३] १. प्र० १ जहाँ आगि, प्र० २, तृ० १ जबही आग, द्वि० ७ जेहि आगी। २. प्र० २ जबहीं आगि अपुने सिर लागा। ३. प्र० १, द्वि० ७ औरहि कहाँ बुझावै जरई, प्र० २ आनि बुझावै कहाँ को जागा। ४. तृ० १ में मूल में ही ऊपर के मूल पाठ की पंक्ति, तथा पादटिप्पणी २, ३ में प्र० २ के पाठांतर की पंक्ति है, और इस प्रकार कुल सात के स्थान पर आठ पंक्तियाँ चौपाई की हैं। ५. द्वि० १ अधर। ६. द्वि० ३, ५, तृ० १, च० १ चमकात। ७. प्र० १, तृ० ३ पतिग। ८. प्र० १, द्वि० १, ५, च० १ काढ़ि, द्वि० ४, तृ० २ लीन्ह। ९. तृ० १ कब आछरि कबिलासहि गई। १०. द्वि० ७ नहीं चेतत। ११. प्र० २ होइ न। १२. तृ० १ पावौं। १३. तृ० ३ को चलावै, द्वि० ३ औ जानै १४. प्र० २ बैस को।

[२०४]

अनु हौं दोख देहुँ का काहू। संगी कया[2] मया नहिं ताहू।
हतेउ[3] पियारा मींत[4] बिछोई। साथ न लागि आपु गै सोई।
का मैं कीन्ह जो काया पोखी। दूखन[5] मोहि आपु निरदोखी।
फागु बसंत खेलि गै गोरी। मोहि तन[6] लाइ आग दै[7] होरी।
अब अस काह[8] छार सिर मेलौं। छारै होउँ फागु तस खेलौं[9]।
कत तप कीन्ह[10] छाड़ि कै राजू। आहर[11] गएउ[12] न भा सिध काजू।
पाएउँ नहिं होइ जोगी जती। अब सर चढ़ौं[13] जरौं[14] जसि सती।

आइ जो प्रीतम फिरि गएउ मिला न आइ बसंत।
अब तन[15] होरी घालि कै[16] जारि[17] करौं भसमंत॥

[२०५]

ककनूँ पंखि जैस सर साजा। सर चढ़ि तबहिं[2] जरा चह राजा।
सकल देवता आइ तुलाने। दहुँ कस होइ देव अस्थाने।
बिरह आगि बज्रागि असूझा। जरै सूर[3] न बुझाएँ बूझा।

---

[२०४] १. द्वि० ४ सुनि कै। २. प्र० २ किआ। ३. द्वि० ७ हते। ४. प्र० १ प्यार का मती, द्वि० ७ पिआर ते मीत। ५. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ दोष न मोहि, पं० १ दोख बिमोहि। ६. तृ० ३ जिअ। ७. प्र० २ बिरह कै, द्वि० ४ आगि दहुँ। ८. प्र० १ अस जानि, द्वि० १ का करौं। ९. प्र० २ छार सिर मेलौं। १०. तृ० ३ लीन्ह। ११. द्वि० ७ आह, द्वि० ४ उहर, द्वि० ३ ऊहर। १२. प्र० २, तृ० १ भएउ १३. प्र० १ जिय चढ़ौं प्र० २ चित चढ़ौं, द्वि० २, तृ० २ सर साजि, द्वि० ७ चुरिचुरी, च० १ तस मरौं, तृ० ३ सर चर्हौं (उर्दू मूल)। १४. प्र० २ रचौं। १५. प्र० १ तेहि। १६. प्र० १ घालि तन, प्र० २ जारि कै, द्वि० ५, च० १ लाइ कै। १७. प्र० २ घालि।

१८. द्वि० १ कै सो बसंत उजारि कै रज होली दै आगि।
कै सो बुझावै तब बुझै कै रे जरौं वहि लागि॥

[२०५] १. द्वि० ३, तृ० ३ गगन। २. प्र० १, द्वि० २, ३, तृ० १ तस सर साज, प्र० २ तस चिता चढ़ि, तृ० ३ तस सर बैठि, च० १, पं० १ तसँ चढ़ि बैठि ३. प्र० १ जरतै रहै, प्र० २ जरै सोई।

तेहि के जरत उठै बज्रागी। तीनौ लोक जरहिं तेहि आगी[४]।
अबहुँ की घरी चिनगि तेहिं छूटहिं। जरि[५] पहार पाहन सब फूटहिं[६]।
देवता सबै भसम भए जाहीं। छार समेटे[७] पाउब नाहीं।
धरती सरग होइ सब[८] ताता। है कोई एहिं राख बिधाता।

मुहमद चिनगी अनँग[९] की सुनि महि गँगन डेराइ।
धनि बिरही औ धनि हिया जेहिं सब[१०] आगि समाइ॥

[२०६]

हनिवँत बीर[१] लंक जेइँ जारी। परबत ओहि रहा रखवारी।
बैठ तहाँ भा लंका ताका। छठएँ मास देइ उठि हाँका।
तेहि की आगि उहौ पुनि जरा। लंका छाड़ि[२] पलंका परा।
जाइ तहाँ यह कहा सँदेसू। पारबती औ जहाँ महेसू।
जोगी आहि बियोगी कोई। तुम्हरे मँडप आगि तेहिं बोई।
जरे लँगूर सो राते उहाँ। निकसि जो भागे भए[३] करमुँहाँ।
तेहि बज्रागि जरै हौं लागा। बज्जर अंग[४] जरत उठि भागा[५]।

रावन लंका मैं उही ओइँ हम डाहन[६] आइ।
कनै[७] पहार होत है रावट[८] को राखै गहि पाइ॥

---

४. प्र० २ जेहि की आगि बुझाए सो आगी, अबहि कि आगि चिनगि छुटि लागी। ५. द्वि० ३ चाढ़ि। ६. प्र० २ जरि पहार पाहन सब छूटहिं, जैसे बीजु बान बन फूटहिं। ७. प्र० १ समेटत। ८. प्र० १, द्वि० ७ होत है। ९. प्र० १, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ७, तृ० १, २, ३ प्रेम। १०. प्र० १, द्वि० ५ हिय, पं० १ यह।

[२०६] १. प्र० १ कत हनवंत। २. प्र० २ उलथा जाइ। ३. द्वि० २ ६, च० १ भागे ते, द्वि० ५ भाग सो। ४. द्वि० ३ बज्जर आगि। ५. प्र० २ जरि उड़त लागा, द्वि० २, पं० १ जरि उठा तो भागा, द्वि० ३ जरै न भागा। ६. प्र० १ दहा जो, प्र० २, द्वि० ६ दाहए, द्वि २ डाढ़े, तृ० ३ डहान, द्वि० ४ [मोरा] दहै, द्वि० ५, तृ० २ डाढ़ा, तृ० १ डाहा, द्वि० ३ डाढ़। ७. प्र० १, २ कनक, द्वि० २ कन्है, द्वि० ४ गगन, द्वि० ५ गिरि, द्वि० ३ भए, च० १ कर। ८. प्र० १ होइ जरि रावट, द्वि० २ होइ रावट, तृ० ३ जरत है, तृ० १ होत है, द्वि० ३ जरावट।

[२०७]

ततखन पहुँचा[1] आइ महेसू। बाहन बैल कुस्टि कर भेसू।
काँथरि[2] कया हड़ावरि बाँधे[3]। रुंडमाल[4] औ[5] हत्या काँधे[3]।
सेस नाग[6] औ[7] कंठै माला[8]। तन बिभूति हस्ती कर[9] छाला।
पहुँची[10] रुद्र कँवल के गटा। ससि माथे औ सुरसरि जटा।
चँवर घंट औ डँवरू हाथा। गौरा पारबती धनि साथा।
औ हनिवंत बीर सँग आवा। धरे बेष जनु[11] बंदर छावा[12]।
औतहिं कहेन्हि न लावहु आगी। ताकरि सपथ जरहु जेहि आगी।

कै तप करै न पारेहु[13] कै रे[14] नसाएहु जोग।
जियन जीय कस काढ़हु कहहु सो मोहिं[15] बियोग॥

[२०८]

कहेसि को मोहिं[1] बातन्ह बेलवाँवा[2]। हत्या केर न तोहिं डर आवा।
जरै देहु दुख जरौं[3] अपारा। निस्तरि परौं[4] जरौं[5] एक बारा।
जस भर्तहरि लागि पिंगला। मो कहँ पदुमावति सिंघला।
मैं पुनि तजा राज औ भोगू। सुनि सो नाउँ लीन्हा तप जोगू।
यह मढ़[6] सेएउँ आइ निरासा। गै सो पूजि मन पूजि न आसा।
तेइँ यह जिउ दाधे पर दाधा। आधा निकसि रहा घट आधा।
जो अधजरत सो बेलँब न लावा। करत बेलंब बहुत दुख पावा।

---

[२०७] १. प्र० २, द्वि० २ पहुँचे। २. प्र० १, २ कथरी। ३. प्र० २ काँधे, गरे मैं बाँधे। ४. प्र० २ मुंड माल। ५. प्र० १ दुइ, द्वि० ७ पुनि। ६. द्वि ७ शेषमाल। ७. पं० १ सो। ८. प्र० १ कंठे जप माला, द्वि ७ कंठे कँठमाला। ९. प्र० १, २ बाघंबर। १०. प्र० २, द्वि० ७ हाथ, तृ० ३ पहुँचे (उर्दू मूल)। ११. तृ० ३ औ। १२. प्र० १ कपि के रूप सो अधिक सोहावा। १३. प्र० १ न जानहु। १४. प्र० २, पं० १ निसरि। १५. द्वि० १, २, ३, ६, तृ० २, पं० १ दुक्ख।

[२०८] १. प्र० १ कि को। २. तृ० ३ बेल वाला। ३. प्र० १ मोहि। ४. द्वि० २ निसरइ प्रान, तृ० ३ निस्तरि जाउँ। ५. द्वि० ६, पं० १ जाइ। ६. तृ० ३ मरह (उर्दू मूल)।

एतना बोल कहत मुख उठी बिरह की आगि।
जौं महेस नहिं आइ बुझावत[७] सकल जगत हुति[८] लागि[९] ॥

[२०९]

पारवती मन उपना चाऊ। देखौं कुँवर केर सत भाऊ।
दहुँ यह बीच[१] कि पेमहि पूजा। तन मन एक कि मारग दूजा।
भै सुरूप जानहुँ अपछरा। बिहँसि कुँवर कर आँचर[२] धरा।
सुनहु कुँवर मोसौं एक[३] बाता। जस रँग मोर न औरहि राता।
औ बिधि रूप दीन्ह है तोकाँ[४]। उठा सो सबद[५] जाइ सिव लोकाँ।
तब[६] हौं तो कहँ इंद्र पठाई। गै पदुमिनि तैं आछरि पाई।
अब तजु जरन मरन[७] तप जोगू। मो सौं मातु जनम भरि भोगू।

हौं आछरि कबिलास की जेहि सरि पूजि न कोइ।
मोहि तजि सँवरि[८] जो ओहि सरसि[९] कौन लाभु तोहि होइ ॥

[२१०]

भलेहिं रंग तोहि आछरि राता। मोहि दोसरें सौं भाव न बाता[१]।
मोहि ओहि सँवरि मुएँ अस लाहा[२]। नैन सो देखसि पूँछसि काहा[३]।
अबहीं तेहि जिउ देइ न पावा। तोहि असि आछरि ठाढ़ मनावा[४]।
जौं जिउ देहुँ ओहि कि आसाँ। न जनौं काह होइ कबिलासाँ।

---

७. प्र० १ नहिं आवत, द्वि० १, २, ३, ६, ७, न बुझावत, तृ० ३ नहिं अमिअ बुझावत। ८. तृ० ३ हित, द्वि० ६ महँ। ९. प्र० २ तौ जगती होती लागि, द्वि० ७ तौ उठंत बजागि।

[२०९] १. प्र० २ नीच, द्वि० ४ बीज। २. तृ० ३ अँचला धरा, तृ० १ अप्सर धरा। ३. प्र० १, द्वि० ७ सत। ४. प्र० १, द्वि० ७ मोका। ५. प्र० १ सुने सो चाँद, प्र० २, द्वि० २, ४, ६, च० १ सुना सो सबद, द्वि० ७ सुनै जो स्रवन। ६. प्र० १, द्वि० ७ अब। ७. प्र० १ मरन जिअन, प्र० २ जुरा मरन। ८. द्वि० ५ मोहि सँवरि। ९. द्वि० ७ ओहि सँवरसि।

[२१०] १. प्र० १ मोहि ओहि सँवरि मुख न बाता, तृ० ३ मोहि दोसरे सौं भाव बाता। २. प्र० १ हैं लाहा, प्र० २ सत लाहा, पं० १ अपनावा। ३. पं० १ तोहि अस आछरि ठाढ़ मनावा। ४. पं० १ नैन सो देखसि पूँछसि काहा।

हौं कबिलास काह लै करऊँ। सोइ कबिलास लागि ओहि मरऊँ[5]।
ओहि के बार जीवनहिं वारौं[6]। सिर उतारि नेवछावरि डारौं[7]।
ताकरि चाह कहै जो[8] आई। दुऔ जगत तेहि देउँ बड़ाई[9]।

ओहि न मोरि कछु आसा[10] हौं ओहि आस करेउँ।
तेहि निरास प्रीतम कहँ जिउ न देउ[11] का देउँ॥

[२११]

गौरैं हँसि महेस सौं कहा। निस्चैं यहु बिरहानल[1] दहा।
निस्चैं यह ओहि कारन तपा। परिमल पेम न आछै[2] छपा।
निस्चैं पेम पीर यह जागा। कसत कसौटी कंचन लागा।
बदन पियर जल डभकहिं[3] नैनाँ। परगट दुऔ पेम के बैनाँ।
यह ओहि लागि जरम एहि[4] सीझा। चहै न औरहि ओहीं रीझा।
महादेव देवन्ह के पिता। तुम्हरी सरन[5] राम रन जिता।
एहू कहँ तसि[6] मया करेहू। पुरवहु आस कि हत्या लेहू।

हत्या दुइ जो[7] चढ़ाएहु काँधे[8] अबहुँ न गे[9] अपराध।
तीसरि लेहु एहु कै माँथे[10] जौं रे लेइ कै[11] साध॥

---

[5]. पं० १ आस गहे मरऊँ, द्वि० २, ३, ४ च० १ लागि जेहि मरऊँ, तृ० ३ लागि ओहि मरऊँ। [6]. प्र० १ जीव बलि दीन्हा, प्र० २ जीवनहि वारौं, द्वि० ४, ५ जीव निरवारौं। [7]. प्र० १ नेवछावरि कीन्हा, प्र० २ नेवछावरि करौं, द्वि० ४, ५ नेवछावरि सारौं। [8]. प्र० १ क़ोइ। [9]. तृ० ३ बधाई। [10]. प्र० १ आस है। [11]. तृ० ३ देउँ।

[२११] [1]. प्र० १ बिरहै नल। [2]. प्र० १ रहै तेहि, प्र० २ छपाए। [3]. तृ० १ बहकै, द्वि० ३ टपकहिं। [4]. प्र० १, द्वि० ५ कै, द्वि० २, ३, ४ वह, तृ० १ पुनि, तृ० ३ तौ, पं० १ तस। [5]. तृ० ३ सन। [6]. द्वि० २ अस, तृ० १ अव, तृ० ३ सिव। [7]. च० १ दो एक। [8]. द्वि० २ चढ़ाएहु। द्वि० ३, तृ० २ चढ़ाएहु माथे। [9]. प्र० १ अजहुँन गे, प्र० २, च० १ तबहुँ न गे, द्वि० १, ३ तेहि न गए, द्वि० ४ औ तिन के। [10]. प्र० १ एहु लेहु तुम्ह, प्र० २ इहै लेहु गे, द्वि० २ एहु लेहु अब, तृ० ३ लेहु कै माथें, द्वि० ६ इहौ लेहु कै। [11]. प्र० १, रजो रे लेवै कै, द्वि० ३ कै पुरवहु एहु।

[२१२]

सुनि कै महादेव कै भाखा[1]। सिद्ध पुरुष राजैं मन लखा[1]।
सिद्ध अंग नहिं बैठै माखी। सिद्ध पलक नहिं लागै आँखी।
सिद्धहि संग[2] होइ नहिं[3] छाया। सिद्धहि होइ न भूख औ माया।
जौं जग सिद्धि गोसाईं कीन्हा। परगट गुपुत रहै को[4] चीन्हा।
बैल चढ़ा[5] कुस्टी के भेसू। गिरिजापति सत[6] आहि महेसू।
चीन्है सोइ रहै तेहि[7] खोजा। जस बिक्रम औ राजा भोजा[8]।
कै जियँ तंत मंत सो हेरा। गएउ हेराइ जबहि भा मेरा[9]।[10]

बिनु गुरु पंथ न पाइअ भूलै सोइ जो मेंट।
जोगी[11] सिद्ध होइ तब जब गोरख[12] सौं भेंट।।[13]

[२१३]

ततखन रतनसेनि गहबरा। छाड़ि डफार[1] पाउ लै परा।
माता पितैं जनमि कत पाला। जौं पै फाँद पेम गियँ[2] घाला।
धरती सरग मिले हुत[3] दोऊ। कत[4] निरार कै दीन्ह[5] बिछोऊ।

---

[२१२] १. प्र० २, तृ० २ भाषा, लाखा, तृ० ३ भाषा, राखा। २. प्र० १, द्वि० ४ सिद्ध के अंग। ३. प्र० १ न होखे (भोजपुरी प्रभाव)। ४. प्र० १, द्वि० १ नहिं। ५. प्र० १ वसह चढे। ६. प्र० २ गिरिजासुत सो, द्वि० २ गिरिजासुत तप, तृ० ३ गिरिजापति सो, द्वि० ४, ५ कहा राजै सत, द्वि० ६ को जानै यह, द्वि० ७ काकर सुत पति, द्वि० ३ कह राजा सत, च० १ गिरिजासुत पितु। ७. प्र० १, द्वि० ७ करैं अस, द्वि० ६ रहै जो। ८. प्र० १ पर काया परवेस सँजोगू। ९. द्वि० १ जो मिलै न हेरा। तृ० १ को छोड़कर सभी पतियों में 'जबहि' के स्थान पर 'जोहि' है (हिंदी मूल)। १०. प्र० १, द्वि० ७ जौं भलि होति लछिमी नारी, तजि महेस कल होत भिखारी। ११. द्वि० १, ६, तृ० ३, च० १ चेला। १२. तृ० ३ गुरू। १३. प्र० १, द्वि० ७ जो जो सुनै सो रोवै ढुरहिं रकत के आँसु।
रोम रोम तन रोवै सोत सोत भर माँसु।।

[२१३] १. प्र० २ रोदव छाड़ि। २. तृ० ३ के। ३. प्र० १, तृ० ३ तहँ, प्र० २ हुए। ४. द्वि० ६ कत। ५. प्र० १ कीन्ह।

पदिक पदारथ कर हुँति खोवा। टूटहिं रतन[६] रतन तस रोवा।
गँगन मेघ जस बरिसहिं भले। पुहुमि[७] अपूरि सलिल होइ[८] चले।
साएर उपटि[९] सिखर गा पाटी। जरै पानि[१०] पाहन हिय फाटी।
पवन पानि होइ होइ सब गिरई। पेम के फाँद कोउ जनि परई।[११][१२]

तस रोवै जस जरै जिउ[१३] गरै रकत औ माँसु।
रोवँ रोवँ सब रोवहिं सोत सोत भरि आँसु ॥[१४]

[२१४]

रोवत बूड़ि उठा संसारू। महादेव तब भएउ मयारू।
कहेसि न रोव बहुत तैं रोवा। अब ईसर भा दारिद खोवा[१]।
जो दुख सहै होइ सुख[२] ओकाँ। दुख बिनु सुख न जाइ[३] सिवलोकाँ।
अब तूँ सिद्ध भया सिधि[४] पाई। दरपन कया छूटि गै[५] काई।
कहौं बात अब होइ[६] उपदेसी[७]। लागु पंथ भूले परदेसी[८]।
जौं लहि चोर सेंध नहिं देई। राजा केर न मूँसै पेई[९]।
चढ़ै तौ जाइ बार वह खूँदी[१०]। परै तौ सेंधि सीस सौं[११] मूँदी[१०]।

कहौं तोहि सिंघल गढ़ है खँड सात चढ़ाउ।
फिरा न कोई जिअत जिउ सरग पंथ दै[१२] पाउ ॥

---

६. प्र० १ मोति। ७. द्वि० ४ धरती। ८. प्र० १ सब। ९. प्र० १ उँमड़ि। १०. प्र० २, द्वि० ६ जरे पहार, द्वि० २, ४ चढ़े पानि। ११. प्र० १ जरै पहार नीर ते आँटी, द्वि० ७ परै पहार पानी महँ ठाढ़े, प्र० २ जरे पहार पाहन हिअ फाटे। १२. प्र० १, द्वि० ७ जरै नीर तस मरै बिहूना, परवत जरै होइ जरि चूना। १३. प्र० २ जिअ खौवै। १४. प्र० १, द्वि० ७ में यहाँ वह दोहा है, जो ऊपर स्वीकृत पाठ में छंद २१२ में है।

[२१४] १. प्र० १ भा प्रसन्य दारिद दुख खोवा। २. प्र० २ सित्र। ३. प्र० १ होइ। ४. तृ० ३ सुधि (उर्दू मूल)। ५. प्र० १, २ गौ। ६. प्र० १ अब सुनु, प्र० २ एक सुनु, द्वि० १ अब हौं, द्वि० ७ तोहि, तृ० २ सुनु हो। ७. प्र० १ परदेसी। ८. प्र० १ सहदेसी। ९. प्र० २ कै धन मूस न कोई, च० १ केर न मूसि पै लेई। १०. प्र० २ होए खुंदा, मुंदा। ११. प्र० १, द्वि० ६ दै, प्र० २ पै। १२. प्र० २ लै, द्वि० ५ दुइ, तृ० १,३ धरि।

[२१५]

गढ़ तस बाँक जैसि तोरि काया। परखि[1] देखु तैं[2] ओहि की[3] छाया[4]।
पाइअ नाहिं जूझि हठि[5] कीन्हे। जेइँ पावा तेइँ आपुहि चीन्हे।
नौ पौरी तेहि गढ़ मँझिआरा[6]। औ तहँ फिरहिं[7] पाँच कोटवारा।
दसवँ दुआर गुपुत एक नाँकी[8]। अगम चढ़ाव बाट सुठि बाँकी[8]।
भेदी कोइ जाइ ओहि घाटी। जौं लै[9] भेद चढ़ै होइ[10] चाँटी।
गढ़ तर सुरँग कुंड अवगाहा[11]। तेहि महँ पंथ कहौं तोहिं पाहाँ[12]।
चोर पैठि जस सेंधि सँवारी। जुआ पैंत जेउँ लाव जुआरी।

जस मरजिया समुँद धँसि मारै[13] हाथ आव[14] तब[15] सीप।
ढूँढ़ि[16] लेहि ओहि सरग दुवारी[17] औ चढ़ु[18] सिंघल दीप॥

[२१६]

दसवँ दुवार तारु का लेखा। उलटि दिस्टि जो लाव सो देखा।
जाइ सो जाइ साँस[1] मन बंदी[2]। जस धँसि लीन्ह कान्ह कालिंदी[2]।[3]
तूँ मन[4] नाँथु मारि कै स्वाँसा। जौं पै मरहि आपुहि करु[5] नाँसा।
परगट लोकचार कहु[6] बाता। गुपुत लाउ जासौं[7] मन[8] राता।

---

[२१५] १. प्र० २ निरखि, द्वि० ४, ५ पुरुख। २. द्वि० ३ यह। ३. प्र० १, २ दहुँ काकरि। ४. द्वि० ७ साआ। ५. द्वि० ४ लठ, द्वि० २, ३ के। ६. प्र० १ कहँ लाग देवारा, द्वि० ७ पर दशन केवारा। ७. तृ० १ देव तहँ फिरहिं, च० १ हठि तेहिं पंथ, पं० १ हुत तहँ बैठ। ८ प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ नौंकी, बाँकी। ९. प्र० १ करि। १०. प्र० १ लै, द्वि० ७ सुर। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ७ कुंड सुरँग तेहि माँहा, तृ० ३ एक कुंड अवगाहा। १२. प्र० १, द्वि० ७ अगम अवगाहा। १३. द्वि० २ लेई। १४. प्र० १ समुँद महँ ढूँढि उठै लै, द्वि० ७ समुँद महँ ढूँढि फिरै एक। १५. तृ० ३ तस। १६. प्र० १, द्वि० ७ खोजि। १७. प्र० १ सों। १८. द्वि० २, ४, तृ० २, च० १ चढ़ै सो।

[२१६] प्र० १ सो तहाँ साँस, द्वि० २ सोइ जो अस। २. प्र० १ साँधी, मन बाँधी, प्र० २ बाँधी, सर काँधी, द्वि० २ बंधी, कालिंदी। ३. तृ० २ उलटा पंथ पेम के वारा, चढ़ै सरग सो परै पतारा। (तुलना० २२९. ६) ४. प्र० १ पुनि, तृ० ३ परु। ५. प्र० १ करसि आपु कहँ। ६. प्र० १ करु। ७. द्वि० ५ आव वहि सों। ८. द्वि० ६ रँग।

हौं हौं कहत[१०] मंत सब कोई। जौं तूँ नाहिं आहि सब सोई।
जियतहिं जौं रे मरै[११] एक बारा। पुनि कत मीचु को मारै पारा[१२]।
आपुहि गुरु सो आपुहि चेला। आपुहि सब सो[१३] आपु अकेला।[१४]

आपुहि मीचु जियन पुनि[१५] आपुहि तन मन[१६] सोइ।
आपुहि आपु करै जो चाहै कहाँ क दोसर कोइ[१७]॥

[२६७]

सिद्धि गोटिका राजैं पावा। औ भै[१] सिद्धि गनेस मनावा।
जब संकर सिधि दीन्ह गोटेका[२]। परी हूल जोगिन्ह गढ़ छेंका।
सबै पदुमिनीं देखहिं चढ़ीं। सिंघल घेरि[३] गईं[४] उठि[५] मढ़ीं[६]।
जस खरभरा[७] चोर मति कीन्ही। तेहि बिधि सेंधि चाह[८] गढ़ दीन्ही।
गुपुत जो रहै चोर सो साँचा। परगट होइ जीव नहिं बाँचा।
पँवरि पँवरि गढ़ लाग केवारा। औ[९] राजा सौं भई पुकारा।
जोगी आइ छेंकि गढ़ मेले। न जनै[१०] कौन देस सौं[११] खेले।

भई[१२] रजाएसु देखहु को भिखारि अस ढीठ।
जाइ[१३] बरजि तिन्ह आवहु[१४] जन दुइ[१५] जाइ[१६] बसीठ॥

---

९. तृ० ३ कहब। १०. च० १ मति। ११. प्र० २ मुआ, द्वि० १, पं० १ मुएउ, तृ० ३ मुए। १२. प्र० १, द्वि० ६ मरै को पारा, द्वि० ४, तृ० २, ३ मरै को मारा। १३. द्वि० २ सरबसु। १४. प्र० १, द्वि० ७ (यथा. ३) गो पतार कारी पुनि नाथा, अपुरुब कँवल आव तब हाथा। १५. द्वि० २ मन आपुहि। १६. द्वि० २, ३. तृ० १, होइ। १७. द्वि० ६ कहाँ व दोसर होइ।

[२६७] १. प्र० १, द्वि० २, ६ भा, प्र० २ भव। २. प्र० १ दन्हीं टेका, द्वि० १, २, ३, ५, तृ० १, ३ दीन्ह को टेका। ३. प्र० १ सब गढ छेंकि, प्र० २ सिंघल छेंकि। ४. द्वि० २, ३, तृ० १ कीन्ह। ५. तृ० १ वै। ६. प्र० १ सब गढ़ छेंकि गईं तजि मढ़ी। ७. तृ० ३ खरफरा, द्वि० ४ घर फिरा, च० १ खरपरा। ८. प्र० १ आई, द्वि० १ जाइ। ९. द्वि० २ कै, द्वि० ६, तृ० २ जाइ। १०. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, च० १ कै न जनौं। ११. द्वि० १ देस कहँ, द्वि० २, ६, च० १ कहाँ कहँ, द्वि० ४ कहाँ हुत। १२. प्र० २, द्वि० ५, तृ० १, च० १ भएउ। १३. प्र० २, द्वि० ४, ६, तृ० २ बेगि। १४. प्र० २ पठवहु। १५. प्र० १ पठौ। १६. तृ० ३ होइ, पं० १ चारि।

[२१८]

उतरि बसिठ दुइ आइ जोहारे। कै तुम्ह जोगी कै बनिजारे।
भई[1] रजाएसु आगें खेलहु। यह गढ़[2] छाड़ि अनत[3] होइ मेलहु।
अस लागेहु केहि के सिख दीन्हे। आएहु मरै हथि जिउ लीन्हे।
इहाँ इंद्र अस राजा तपा। जबहिं[4] रिसाइ सूर डरि छपा।
हहु बनिजार तौ बनिज बेसाहहु[5]। भरि बैपार[6] लेहु जो[6] चाहहु।
जोगी हहु तौ जुगुति सौं माँगहु। भुगुति लेहु[7] लै मारग लागहु।
इहाँ देवता अस गए हारी। तुम्ह पतिंग को आहि[8] भिखारी।

तुम्ह जोगी बैरागी कहत[9] न मानहु[10] कोहु[11]।
माँगि लेहु कछु भिख्या खेलि अनत कहुँ होहु[12]॥

[२१९]

अनु हौं भीख जो आएउँ लेई। कस न लेउँ जौं राजा देई।
पदुमावति राजा कै[1] बारी। हौं जोगी तेहि लागि भिखारी।
खप्पर लिए बार भा माँगौं। भुगुति देइ लै मारग लागौं।
सोई भुगुति परापति पूजा। कहाँ जाउँ अस बार[3] न दूजा।
अब धर इहाँ जीउ ओहि ठाऊँ। भसम होउँ पै[3] तजौं न नाऊँ।[4]
जस बिनु प्रान पिंड है छूँछा। धरम लागि कहिअहु जौं पूँछा।
तुम्ह बसीठ राजा की ओरा। साखि होहु एहि भीखि निहोरा।

---

[२१८] [1]. तृ० ३ भए (उर्दू मूल)। [2]. प्र० २, द्वि० २,३,४,६, तृ० १ गढ़तर। [3]. प्र० २, द्वि० ४, ६ दूरि। [4]. द्वि० १ जोवहि, द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० १, २, च० १ जोहि (हिंदी मूल)। [5]. द्वि० ५, ७ बेसाह। [6]. प्र० १ जत। [7]. तृ० ३ देहिं। [8]. प्र० १, २, च० १ केहि महिं, द्वि० २ केहि जोग। [9]. प्र० २ सुनत। [10]. प्र० १, द्वि० ७ लागइ। [11]. प्र० २ कोहु जाहु, तृ० १ तोहिं, होहि।

[२१९] [1]. द्वि० ३ धर। [2]. द्वि० १, तृ० ३ आहि। [3]. प्र० १ जर। [4]. प्र० २, तृ० २ अब जिउ उहाँ धरा एहि बारा, तजौं न नाँव मिलौं जो छारा।

जोगी बार आव सो जेहि भिख्या[5] कै आस[6] ।
जौं निरास[7] दिढ़[8] आसन[9] कत गवनै केहु पास ॥[10]

[२२०]

सुनि बसिठन्ह मन उपनी रीसा । जौं पीसत घुन जाइहि पीसा ।
जोगी अैस कहै नहिं कोई । सो कहु बात जोग[1] तोहि होई ।
वह बड़ राज इंद्र कर पाटा । धरती परें सरग को[2] चाँटा ।
जौं यह बात होइ तहँ चली । छूटहिं हस्ति अबहिं सिंघली ।
औ छूटहिं तहँ बज्र के गोटा । बिसरै भुगुति होहु तुम्ह रोटा[3] ।
जहँ लगि दिस्टि न जाइ पसारी । तहाँ पसारसि हाथ भिखारी ।
आगू देखि पाव धरु[4] नाथा । तहाँ न हेरु टूट जहँ माँथा ।

वह रानी जेहि जोग है तेहि क[5] राज औ पाट[6] ।
सुंदरि जाइ[7] राज घर[8] जोगिहि बंदर काट ॥

[२२१]

जौं जोगिहि सुठि बंदर काटा । एकै जोग न दोसरि बाटा ।
और साधना आवै साधें । जोग साधना आपुहिं दाधें ।
सरि पहुँचाइ जोग करु साथा । दिस्टि चाहि होइ अगुमन हाथा ।[1]

---

५. तृ० ३ भिखिआ (उर्दू मूल) । ६. तृ० २ कतु छाला नित चाव । ७. द्वि० ३ निराग । ८. तृ० ३ दिरह (उर्दू मूल) । ९. तृ० १ एहि नगरी । १०. प्र० २ आवै केहु, पं० १ काहू के । ११. द्वि० ७ जोगी बार आव तब जब रे भुगुति तन जाग ।
नाहीं तौ बैठि रहै थिर आपन कत इच्छै बैराग ॥

[२२०] १. प्र० २ होए । २. प्र० १, तृ०३ कहँ । ३. प्र० १ जोत बड़हि रोटा, प्र० २, द्वि० २, ५, तृ० २, च० १, पं० १ सब रोटा, द्वि० ४ होइ सब खोटा, तृ० १ होहु तुम्ह लोटा । ४. प्र० १ दुइ । ५. प्र० १ ताहि, द्वि० २ तहाँ, द्वि० ३, ४ तेही । ६. द्वि० २ बैठ सुख पाट, तृ० २ राज सुख पाट । ७. प्र० १ सुंदर बरहिं, प्र० २ सुंदरि गई । ८. द्वि० १ घर बैठी ।

[२२१] १. प्र० १ करकत हिए जो पाएहिं बारू, तेहि उठाइ कै करै पहारू ।

तुम्हरे जौं हैं[२] सिंघली हाथी। मोरें हस्ति गुरू बड़[२] साथी।[३]
हस्ति[४] नास्ति जेहि करत न बारा। परवत करै पाव कै छारा।
गढ़ कै गरब खेह मिलि गए। मंदिर उठहिं ढहहिं भै नए।[५]
अंत जो चलना कोऊ न चीन्हा। जो आवै सो आपुन[६] कीन्हा।[७]

जोगिहि कोह न चाहिअ तब न[८] मोहिं रिसि[९] लागि।
जोग तंत जेउ[१०] पानी[११] काह करै तेहि आगि[१२]॥

[२२२]

बसिठन्ह जाइ कही असि[१] बाता। राजा सुनत कोह भा राता[२]।
ठाँवहि ठाँव कुँवर सब माँखे[३]। केइँ अब लहि जोगी जिउ[४] राखे।
अबहुँ[५] बेगि कै करहु सँजोऊ। तस मारहु हत्या किन होऊ।
मंत्रिन्ह कहा रहहु मन बूझे। पति[६] न होइ जोगी सौं जूझे।
ओइँ मारै[७] तौ काह भिखारी। लाज होइ जौ मानिअ हारी।
ना भल मुएँ न मारे मोखू। दुहूँ बात लागै तुम्ह[८] दोखू।
रहै देहु जौं गढ़ तर मेले। जोगी कत आछहिं बिन[९] खेले।

---

२. द्वि० ३, तृ० १ हैं, तृ० ३ कै। ३. प्र० १ राजा तोर हस्ति कर साईं, मारे जीव वह एक गुसाईं। ४. प्र० १ अस्ति। ५. द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ जो गरुए गढ़ जाँवत भए, जो गढ़ गरब करहिं ते गए। ६. द्वि० २, च० १, पं० १ तेइ आपुहिं, तृ० ३ आपुन चइ। ७. प्र० १ राज करत तेहिं भीख मँगावै, भीख माँग तेहि राज दिवावै। ८. द्वि० ४ तब तो, तृ०३ तचन। ९. प्र०१ मया मोह। १०. द्वि० ३, तृ० १, ३ पेम पंथ जहँ। ११ द्वि० २, ३, तृ० १ पानि है, द्वि० ४ पानी का।

२२२] १. प्र० १ यह, द्वि० १ जसि, द्वि० ६. पं० १ सब। २. प्र० २ में यह अर्द्धाली नहीं है। ३. द्वि० ३ आवे। ४. प्र० १ कहँ, द्वि० ४, च० १ लै। ५. प्र० १ अछहूं। ६. द्वि० २ तप, तृ० ३ मति। ७. [illegible]० १ बारे। ८. प्र० १ हम आवै, द्वि० ६ आवै तुम्ह। ९. द्वि० २ आइ सो ऐसेहिं, द्वि० ४ कत आछहिं पुनि, प्र० १, द्वि० ६ जो आए सो, द्वि० २ आइ सो ऐसेहिं, तृ० २ कत आए सो, द्वि० ३ कत अचकन्ह बिनु, तृ० २ कत आई सो, च० १ कत आए ते।

रहै देहु जौं गढ़ तर[10] जनि चालहु यह[10] बात।
नितिहि[12] जो पाहन भख करहि[13] अस केहि के मुख दाँत ॥

[२२३]

गए बसीठ पुनि बहुरि न आए। राजैं कहा बहुत दिन लाए।
न जनौं सरग बात दहुँ काहा[1]। काहु न आइ कही फिरि चाहा।
पाँख[2] न कया पवन नहिं पाया[3]। केहि बिधि मिलौं होउँ केहि[4] छाया[5]।
सँवरि रकत[6] नैनन्ह भरि चुवा। रोइ हँकारा माँझी[7] सुवा।[8]
परे सो आँसु रकत के टूटी। अबहुँ सो राती बीर बहूटी।
ओहि रकत लिखि दीन्ही[9] पाती। सुवा जो लीन्ह चोंच भै राती।
बाँधा कंठ परा जरि[10] काँठा। बिरह क जरा जाइ कहँ नाँठा।

मसि नैना लिखनी बरुनि रोइ रोइ लिखा अकथ्थ[11]।
आखर दहै न केहुँ गहै[12] सो दीन्ह सुवा के[13] हथ्थ[11] ॥

[२२४]

औ मुख बचन सो कहेसु परेवा। पहिले मोरि बहुत कै सेवा।
पुनि सँवराइ कहेसु अस दूजी। जौं बलि दीन्ह देवतन्ह पूजी।

---

[10]. प्र० २ रहैं देहु आर मास दुइ, द्वि० ५ आछै देहु जो गढ़ तर मेले। [11]. प्र० १ कछु। [12]. द्वि० ५ निनहि, च० १ बैठि। [13]. प्र० १, २, तृ० २, च० १ पाथर खाइहि, द्वि० ६ पाहन खाइहि, तृ० ३ भीखि कर।

[२२३] [1]. प्र० २ कस बात भा ताहा। [2]. प्र० २ पाप। [3]. प्र० १ माया। [4]. प्र० १ तेहि। [5]. द्वि० ३ पाँख न मोको देहु गोसाईं, पंखी होउँ जाहुँ वहि ठाईं। [6]. द्वि० ४ याद सँवरि। [7]. प्र० ३, द्वि० ३ पाँछी। [8]. प्र० २ रोवहु कहा कइ मंत्री सुवा। [9]. प्र० १ लिखी सो। [10]. प्र० १, २, द्वि० ४ परा जस, द्वि० १ जरा जनु, च० १ परा तब। [11]. प्र० २ अरथ सुवा के हाथ, द्वि० १ आँक पवन के हाँक। [12]. प्र० १ आखर जरै न छुइ सकहिं, प्र० २ आग जर न छुइ सकहिं, द्वि० ६, तृ० २ आखर जरै न कोइ छुवै। [13]. प्र० १, द्वि० ३,४,५ परेवा, प्र० २ पवन पथ, तृ० ३ पराए, द्वि० ७ कीर के।

सो अबहीं तपसी[1] बलि लागा। कब लगि कया सून मढ़[2] जागा।
भलेहिं अैस हौं तुम्ह बलि दीन्हा। जहँ तुहुँ तहँ भावै[3] बलि कीन्हा।
जौं तुम्ह मया कीन्ह पगु धारा[4]। दिस्टि देखाइ बान बिख मारा।
जो अस जाकर आसामुखी। दुख महँ अैस न मारै दुखी।
नैन भिखारि न माँगै[5] सीखा। अगुमन दौरि[6] लेहिं पै भीखा।

नैनहिं नैन जो बेधिगै[7] नहिं निकसहिं वै बान।
हिएँ जो आखर तुम्ह लिखे ते सुठि घटहिं[8] परान॥

[२२५]

ते बिष बान लिखौं कहँ ताईं। रकत जो चुवा भीजि दुनियाईं।
जातु सो गारै[1] रकत पसेऊ। सुखी न जान दुखी कर भेऊ।
जेहि न पीर तेहि काकरि चिंता। प्रीतम निठुर होइ अस निंता[2]।
कासौं कहौं बिरह कै भाखा। जासौं कहौं होइ जरि राखा[3]।
बिरह अगिनि तन जरि बन[4] जरै[5]। नैन नीर साएर सब भरै[6]।[7]
पाती लिखी सँवरि[7] तुम्ह नामाँ। रकत लिखे[8] आखर[9] भे स्यामाँ।
अच्छर जरे न काहूँ छुवा। तब[10] दुख देखि चला लै सुवा।

अब सुठि[11] मरौं छूँछि गै पाती पेम पियारे हाथ।
भेंट होत दुख रोइ सुनावत जीउ जात जौं[12] साथ॥

---

[२२४] १. प्र० १ सुना अबहि तेईं, तृ० ३ अब ताईं सोईं। २. तृ० ३ मरह (उर्दू मूल)। ३. प्र० १, २, द्वि० ४ तहाँ भाव, ४. तृ० ३ ढारा (उर्दू मूल)। ५. द्वि० २, तृ० २ न मानहिं। ६. तृ०३ दवरि (उर्दू मूल)। ७. तृ० ३ कै (उर्दू मूल)। ८. प्र० १ लीन्ह, द्वि० १ तजौं, द्वि० ६ दहे, तृ० २ जर.हं।

[२२५] १.प्र० १ तन जो कर। २. प्र० १ अनचिंता। ३. प्र० १ दुख ताता। ४. प्र० २ बन जरि, तृ० ३ जर तन तृ० १ जरिईं, द्वि० ५ जरि मन, च० १ जरि पर। ५. तृ० ३ जरईं, भरईं। (उर्दू मूल) ६. प्र० में इसके स्थान पर (यथा. ५): बासों कहौं दुक्ख को नामा, जासों होइ दुहूँ जग कामा। ७. प्र० २ लिखि सँवरौं, तृ० ३ लिखि सँवरा। ८. प्र० १ के के अंक, तृ० ३ लिखा। ९. प्र० १ लिखे। १०. प्र० १, २ अति। ११. तृ० ३ तौ। १२. प्र० १ तेहि, द्वि० २ सो, द्वि० १ चलु।

[२२६]

कंचन तार बाँधि गियँ पाती। लै गा सुवा जहाँ धनि राती।
जैसें कँवल सुरुज कै आसा। नीर कंठ लहि मरै पियासा।
बिसरा भोग सेज सुख बासू। जहाँ भँवर सब तहाँ[१] हुलासू[२]।
तब लगि धीर सुना नहिं[३] पीऊ। सुनतहिं घरी रहै नहिं जीऊ।
तब लगि सुख हियँ पेम न जामा। जहाँ पेम का सुख बिसरामा[४]।
अगर चंदन सुठि दहै सरीरू। औ भा अगिनि कया कर चीरू।
कथा कहानी सुनि सुठि जरा। जानहुँ घीउ बैसंदर परा[५]।
बिरह न आपु सँभारै मैल चीर सिर रूख।
पिउ पिउ करत रात[६] दिन पपिहा भइ मुख सूख॥

[२२७]

ततखन गा[१] हीरामनि आई[२]। मरत पियास छाँह जनु पाई[२]।
भल तुम्ह सुवा कीन्ह है फेरा। गाढ़[३] न जाइ[४] पिरीतम केरा।
बातन्ह जानहु[५] बिखम पहारू। हिरदै मिला न[६] होइ निनारू।
मरम पानि कर[७] जान पियासा। जो जल महँ ताकहँ का आसा[८]।
का रानी पूँछहु यह[९] बाता। जनि कोइ होइ प्रेम कर राता[१०]।
तुम्हरे दरसन लागि बियोगी। अहा जो महादेव मढ़[११] जोगी।
तुम्ह बसंत लै तहाँ सिधाईं। देव पूजि पुनि ओपहँ आईं।
दिस्टि बान तस[१२] मारेहु धाइ[१३] रहा तेहि ठाउँ।
दोसरी बार[१४] न बोला लै पदुमावति नाउँ॥

---

[२२६] प्र० १, २ संग तहाँ, द्वि० ६ रस तहाँ। २. प्र० १, २ निवासू, द्वि० ६ बिलासू। ३. तृ० ३ सुनावहिं। ४. द्वि० २ में यह पंक्ति नहीं है। ५. तृ० ३ वरा। ६. पं० १ रैनि।

[२२७] १. प्र० २ पहुँच। २. प्र० १ आवा, आस जल पावा, च० १ आई, जनु जल पाई। ३. तृ० ३ गा ह (उर्दू मूल)। ४. प्र० १ छमिहहु, प्र० २ छूटा। ५. प्र० १ बात न जानहु, प्र० २ बाट न जाहु, द्वि० २ दिस्टि दीन्ह जनु। ६. प्र० १ मिलन कै। ७. प्र० १ को। ८. तृ० ३ त्रासा। ९. च० १ जिअ। १०. तृ० ३, च० १ राता। ११. तृ० ३ नन्ह (उर्दू मूल ?)। १२. प्र० २ तेहि, तृ० ३ सर। १३. तृ० ३ धाव। १४. प्र० १ दोसरि बोल न बोला, द्वि० २ दूजी बार जो मारा, द्वि० ३ दोसरि बार जो बोला।

[२२८]

रोवँहिं रोवँ बान बै[1] फूटे। सोतहि सोत रुहिर मकु[2] छूटे।
नैनन्हि चली रकत कै धारा। कंथा भीजि भएउ रतनारा।
सूरज बूड़ि उठा परभाता[3]। औ मँजीठ टेसू बन राता।
पुहुमि जो भीजि[4] भएउ[5] सब गेरू। औ तहँ अहा सो[6] रात पखेरू।
भएउ बसंत राती बनफती। औ राते[7] सब जोगी जती।
राती सती[8] अगिनि सब[9] काया। गगन मेघ राते तेहि छाया।
ईंगुर भा पहार[10] तस[11] भीजा। पै तुम्हार नहिं रोवँ पसीजा।

तहाँ[12] चकोर कोकिला तिन्ह हिय मया पईठि[13]।
नैन रकत भरि आए[14] तुम्ह फिरि कीन्हि न डीठि॥

[२२९]

अैस बसंत तुम्हहिं पै खेलहु। रकत पराएँ सेंदुर मेलहु।
तुम्ह तौ खेलि मँदिर कहँ आई। ओहिक मरम[1] जस[2] जान गोसाईं।
कहेसि मरै को बारहि बारा। एकहिं बार होउँ जरि छारा।
सर रचि रहा[3] आगि जौं लाई। महादेव गौरैं सुधि पाई।
आइ बुझाइ दीन्ह पँथ तहाँ। मरन[4] खेल कर[5] आगम जहाँ।
उलटा पंथ पेम के बारा। चढै सरग जौं[6] परै पतारा।
अब धँसि लीन्ह चहै[7] तेहि[8] आसा। पावै साँस[9] कि मरै निसाँसा[10]।

---

[२२८] १. तृ० ३ जनु। २. प्र० १ बिख, प्र० २ तेहि, द्वि० १, २, ३, ४, ५, तृ० १, च० १, पं० १ मुख। ३. प्र० २ भए राता। ४. तृ० २ जरी, तृ० ३ पूजि। ५. च० १ पं० १ रकत। ६. प्र० १ २ और तहाँ जो रात, द्वि० २, तृ० २ औ तेहि बन सब, द्वि० ४ औ राते तहँ पंखि, तृ० ३ और तहाँ सो। ७. द्वि० ५ जितने। ८. तृ० १ कया। ९. प्र० १ जलि, द्वि० २ तेहि, तृ० ३ सहि। १०. द्वि० ४ पाहन। ११. प्र० १ सब, तृ० ३ जहँ। १२. तृ० १, २ जहाँ। १३. द्वि० ५ न बैठ। १४. तृ० ३ रोम, द्वि० ४ आहिं।

[२२९] १. तृ० ३ सरम। २. प्र० १ तौ, तृ० ३ पै। ३. द्वि० १, ६ चहा। ४. तृ० १, च० १ मरम। ५. प्र० २ गम, तृ० ३ गढ़। ६. प्र० १, च० १ औं, द्वि० ३ सो। ७. प्र० १ चाह, तृ० ३ चढ़ै। ८. च० १ तोहि। ९. प्र० १ द्वि० १, ३, तृ० १ आस, द्वि० ५ पानि। १०. प्र० १, २, द्वि० १, ३ निरासा, द्वि० ५, तृ० १ पियासा।

पाती लिखि सो पठाई लिखा[11] सबै दुख रोइ।
दहुँ जिउ रहै कि निसरै काह रजाएसु होइ॥

[२३०]

कहि कै सुअै[1] छोड़ि दई[2] पाती। जानहु दिव्ब[3] छुअत तसि[4] ताती[5]।
गीवँ जो बाँधे कंचन तागे। राते स्याम कंठ जरि लागे।
अगिनि स्वाँस सँग[6] निकसै ताती[7]। तरिवर जरहिं तहाँ का पाती[7]।
जरि जरि हाड़ भए सब[8] चूना। तहाँ माँसु[9] का रकत बिहूना।
रोइ रोइ सुअै कही सब[10] बाता। रकत के आँसुन्ह भा मुख राता।
देखु कंठ जरि लाग सो गेरा। सो कस[11] जरै बिरह अस[12] घेरा।
ओइँ तोहि लागि कया असि जारी। तपत मीन जल देइ न पारी[13]।

तोहि कारन वह जोगी भसम कीन्ह तन[14] डाहि।
तूँ अस निठुर निछोही बात न पूँछी[15] ताहि॥

[२३१]

कहेसि सुआ मोसौं सुनु बाता। चहौं तौ आजु मिलौं जस राता।
पै सो मरमु न जानै मोरा[1]। जानै प्रीति[2] जो मरि कै जोरा।

---

[11]. प्र० १ अभै।

[२३०] [1]. कहा सँदेस। [2]. द्वि० ४ दिय। [3]. प्र० २, द्वि० ६, ७ दीप, द्वि० १ दरब, द्वि० ५ दुब। [4]. द्वि० १ घूटि सन, तृ० ३ छोड़ि तस। [5]. प्र० १ जसि बाती। [6]. तृ० ३ तस, द्वि० ४, ६ सुख, च० १ तन। [7]. द्वि० २ राती, पाती, तृ० ३ पाती, बाती। [8]. प्र० १, २ बिरह हाड़ भा, द्वि० ४ हाड़ भए ते, च० १ हाड़ भए जो। [9]. तृ० ३ मानुस। [10]. प्र० १ यह, तृ० ३ मुख, द्वि० ४, ५ सो। [11]. प्र० १ कन। [12]. तृ० ३ कै। [13]. प्र० १ देइ पियारी, प्र० २ देइ निकारी, द्वि० ४ रहै पनारी, द्वि० २, ३, तृ० २ रहै न पारी, द्वि० ६ सूखी बारी, च० १ रहै बतारी। [14]. प्र० १ अँग। [15], द्वि० ६, तृ० २, च० १, पं० १ मुगुति न दीन्ही।

[२३१] [1]. तृ० ३ भोला। [2]. प्र० १, द्वि० ४, तृ० २ सोह, प्र० २, द्वि० ५ मरम।

हौं जानति हौं अबहूँ काँचा। न जनहु[3] प्रीति रंग थिर राचा।
न जनहु[3] भएउ मलैगिरि बासा। न जनहु[3] रवि होइ चढ़ा अकासा।[4]
न जनहु[3] होइ भँवर कर रंगू। न जनहु[3] दीपक होइ पतंगू।
न जनहु[3] करा भृंगि कै होई। न जनहु[3] अबहिं[5] जिऔ मरि सोई।
न जनहु[3] पेम औटि[6] एक[7] भएऊ। न जनहु[3] हिय महँ कै डर[8] गएऊ[9]।

तेहिं का कहिअ रहन[10] खिन[11] जो है प्रीतम लागि।
जहँ वह सुनै[12] लेइ धँसि का पानी का आगि॥*

[२३२]

पुनि धनि कनक पानि मसि[1] माँगी। उत्तर लिखत भीजि तन[2] आँगी।
तेहिं कंचन कहँ चहिअ[3] सोहागा। जो निरमल नग होइ सो[4] लागा।
हौं जो गई सढ़[5] मंडप भोरी[6]। तहवाँ तूँ न गाँठि गहि जोरी[6]।
भा बिसँभार देखि कै[7] नैना। सखिन्ह लाज का बोलौं[8] बैना।
खेल मिसुइँ[9] मैं चंदन घाला। मकु जागसि तौ[10] देउँ जैमाला।
तबहुँ न जागा गा तैं सोई। जागें भेंट न सोएँ होई[11]।

---

३. द्वि० ६, तृ० ३ नाजहु, द्वि० ३ नाँचह, द्वि० ४, ५ ना जनहु। ४. तृ० २ में (यथा. ७) ना जेहिं अस्थिर भा रँग राता, ना जेहि हम जिव भा वह् काता। ५. द्वि० ४ आप। ६. प्र० १ उवत। ७. च० १ रँग। ८. द्वि० ४, ५, तृ० १ हिए माँहि। ९. द्वि० २ में ऊपर पाद टिप्पणी ४ में दी हुई अर्द्धाली अतिरिक्त है, कुल आठ हैं। १०. प्र० . रहव। ११. तृ० १ कहँ। १२. द्वि० १ पिय तहाँ, द्वि० ३ सुनै तहँ, च० १ जानइ तहँ, पं० १ तहँ आपुहि।

* तृ० ३ में इसके अनंतर, द्वि० ३, ६, में अगले छंद के अनंतर और द्वि० ५ में उसके भी अगले दोहे के अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[२३२] १. द्वि० ४ पुनि धनि कनक वान मसि, द्वि० ५ पुनि धनि कनक पानि हँसि, द्वि० ६ पुनि सो नैन कनक मसि। २. प्र० १ गौं। ३. प्र० १ लागि। ४. प्र० १, २ तौं। ५. प्र० १, २ सिव, तृ० ३ मरह (उर्दू मूल)। ६. भोरी, प्र० १ तहवाँ कह न गाँठि तैं जोरी, द्वि० २, ४, ५, ६, च० १ भोरी, तहवाँ कस न गाँठि तैं जोरी, तृ० १ तोरी, तहवाँ तूँ न गाँठि गहि जोरी। ७. प्र० १ सो देखत। ८. प्र० १ सुख आव न। ९. प्र० १ खेल के मिसु प्र० २, तृ० १, ३ खेलत मिसु। १०. प्र० १ मकु खिन जाग। ११. द्वि० ३ कैसे भुगुति परापति होई।

अब जौं सूर[12] होइ चढ़ै[13] अकासा। जौं जिउ देइ तौ[14] आगै पासा।

तब लगि[15] भुगुति न लै[16] सका रावन सिय[17] एक साथ।
अब कौन भरोसें किछु[18] कहौं[19] जीउ पराएँ हाथ॥

[२३३]

अब जौं सूर गँगन चढ़ि धावहु[1]। राहु होहु तौ ससि कहँ पावहु[1]।
बहुतन्ह ऐस जीउ पर खेला। तूँ जोगी[2] केहि माहँ[3] अकेला।
बिक्रम धँसा पेम के बाराँ। सपनावति[4] कहँ गएउ पताराँ।
सुदैवच्छ[5] मुगुधावति[6] लागी। कँकन पूरि[7] होइ गा बैरागी।
राजकुँवर कंचनपुर गएऊ। मिरगावति कहँ[8] जोगी भएऊ।
साधा कुँवर[9] मनोहर[10] जोगू। मधुमालति कहँ कीन्ह[11] बियोगू।
पेमावति[12] कहँ सरसुर[13] साधा। उखा लागि[14] अनिरुध बर[15] बाँधा।

हौं[16] रानी पदुमावति सात सरग पर बास।
हाथ चढ़ौं सो तेहि कें प्रथम जो आपुहिं नास[17]॥

---

१२. प्र० १, २ रवि, द्वि० १, २, ३, ४, ६, तृ० १, २, ३ ससि,। १३. तृ० ३ चरही (उर्दू मूल)। १४. प्र० २, द्वि० २, ४, तृ० ३, च० १ सो। १५. तृ० १ तैं। १६. च० १ कै। १७. प्र० २ रावन सनि, द्वि० २ राम सीय, द्वि० ३ आएउँ सब, तृ० ३ राम गीय। १८. प्र० १ नैन भरोसें किछु, तृ० ३ कौन भरोसा अब।

[२३३] १. प्र० २, द्वि० १ आवहुँ, पावहु, द्वि० ४, ६ आवसि, पावसि। २. प्र० १ भिखारि। ३. द्वि० ६ को अहसि, द्वि० ३, च० १, द्वि० ५ को आहि। ४. द्वि० ३, च० १ चंपावति। ५. प्र० २ मुर्दए बछ, द्वि० २ सदा वच्छ, द्वि० ४ सुदैपच्छ, द्वि० ५ सिरीभज्ज, द्वि० ७ छुद्र पछ, द्वि० ३, तृ० १. सदैपच्छ, पं० १ सुधापच्छ। ६. द्वि० ५ खंडावत। ७. तृ० १ कनक पूर। ८. प्र० १ लगि। ९. तृ० १ कुँआर। १०. प्र० १ कुसुमावति, द्वि० ४ खंडावति, तृ० ३ कंडावति, द्वि० ५, ६ कँधलावति, द्वि० ३ गंधावति। ११. प्र० १ भएउ, च० १ दीन्ह। १२. च० १ पदमावति। १३. प्र० २ सुरसरि, तृ० ३ सीधर, द्वि० २, ३, ५, तृ० १, २ सरहर। १४, च० १ काहँ। १५. प्र० १, २, तृ० ३ गा, द्वि० ५ पर। १६. प्र० १ मैं, प्र० २ हौं। १७. प्र० १, २, तृ० १ प्रथम करै जिउ नास; द्वि० २, तृ० ३ प्रथम करै अपुनास, च० १ आपुहिं कर जिउ नास।

[२३४]

हौं पुनि अहौं ऐसि तोहि[1] राती। आधी भेंट पीतम कै पाती।[2]
तोहिं[3] जौं प्रीति निबाहै[4] आँटा। भँवर न देखु केतु महँ काँटा।
होहु पतंग अधर गहु[5] दिया। लेहु समुंद[6] धँसि होइ[7] मरजिया।
राति रंग जिमि दीपक बाती। नैन लाउ होइ सीप सेवाती।
चात्रिक होहु पुकारु पिआसा। पिउ न पानि रहु स्वाति की आसा।
सारस कै बिछुरी जिमि जोरी। रैनि होहु जस[8] चक्क[9] चकोरी।
होहु चकोर दिस्टि ससि पाहाँ। औ रबि होहु कँवल दधि[10] माहाँ।

हहूँ ऐसि हौं तो सौं[11] सकसि तौ प्रीति[12] निबाहु[13]।
राहु बेधि होइ अरजुन जीति द्रौपदी ब्याहु[13]॥

[२३५]

राजा इहाँ तैस तपि भूरा। भा जरि बिरह छार कर कूरा[1]।
मौन गँवाए गएउ[2] बिमोही। भा निरजिउ जिउ दीन्हेसि[3] ओही।
गही[4] पिंगला सुखमन[5] नारी। सुन्नि समाधि लागि गौ तारी।

---

[२३४] [1]. प्र० १ ऐसी तोसौं, तृ० ३ अहौं औसि तुम्ह। [2]. प्र० १, २ में यह पंक्ति. ७ है। [3]. द्वि० ६ अबहूँ। [4]. तृ० ३ निबाहे (उर्दू मूल)। [5]. द्वि० १ आवहु गहि, च० १ औ धर करु। [6]. च० १ आइ, पं० १ पानि। [7]. द्वि० १ होहु, तृ० ३ जस। [8]. द्वि० १, ६, तृ० ३ जल। [9]. प्र० १, २ चंद, द्वि० २, ३, ४, ५ चकइ। [10]. प्र० २ दह, द्वि० ६, तृ० २, ३, जल, द्वि० २, ३, ५ ओहि। [11]. प्र० १, द्वि० ३ महूं अहा अस तोसौं, प्र० २ महूं ऐसि हौं तोहि सै, द्वि० १, ४, तृ० २ होंहु ऐस तोहि राती, तृ० ३ अहौं ऐसै जौं राते (उर्दू मूल), द्वि० ५ रहूं ऐसि हौं तोहि कहँ, तृ० १ महूं ऐसि तोहि राती। [12]. प्र० २, द्वि० १, २, ६ ओर। [13]. द्वि० ३ उतर लिखा जस आहि, ब्याहि।

[२३५] [1]. तृ० २ जहँ होइ ठाढ़ तहाँ होइ कूरा। [2]. प्र० २ मौन लाए न गए, द्वि० २ हौं असमै गया, तृ० ३ जवन लवाए गएउ, द्वि० ४, ६ जीव गँवाइ सो गएउ, द्वि० ५ हौं तेहिं देखत गएउ, तृ० २ मदन कुंवर मैं, च० १ यह तो जीव पुनि गएउ। [3]. प्र० १, २ दीन्हि जिव, तृ० ३ जीव दिसि। [4]. द्वि० ५ कहाँ, पं० १ इंगला। [5]. तृ० ३ सुषना।

बुंदहि समुँद जैस होइ मेरा। गा हेराइ तस[6] मिलै न हेरा।
रंगहि पानि मिला जस होई। आपुहि खोइ रहा होइ सोई।
सुवा आइ देखा भा नासू। नैन रकत भरि आए आँसू।
सदा जो प्रीतम गाढ़[7] करेई। वह न भूल[8] भूला जिउ देई।

मूरि सजीवनि आनि कै औ मुख मेला[9] नीर।
गरुर पंख जस झारै[10] अंब्रित बरसा[11] कीर[12]।

[२३६]

सुवा जियहि अस बास जो पावा[1]। बहुरी[2] साँस[3] पेट जिउ आवा।
देखेसि जाग सुऐं सिर नावा। पाती दै मुख बचन सुनावा[4]।
गुरु कर बचन[5] स्रवन दुहुँ मेला। कीन्ह सुदिस्टि बेगि चलु चेला।[6]
तोहिं अलि कीन्ह आपु भइ केवा। हौं पठवा कै बीच परेवा[7]।
पवन[8] स्वाँस तोसौं मन लाए। जोवै[9] मारग दिस्टि बिछाए[10]।
जस तुम्ह कया कीन्ह अगिडाहू। सो सब गुरु कहँ भएउ अगाहू।
तव उड़ंत[11] छाला लिखि[12] दीन्हा। बेगि आउ चाहौं[13] सिध कीन्हा।

६. प्र० १ पुनि। ७. प्र० २ प्रीति सो। ८. द्वि० ३ फूल। ९. द्वि० ५ छिरका। १०. द्वि० ३ झारि कै। ११. द्वि० १ परसा। १२. द्वि० २, ३ बरसा खीर, तृ० १ परा सरीर।

[२३६] १. प्र० १, २, तृ० १ मुरछित आस बास जो पावा, तृ० २ सुवा आहा जेहि आस सो पावा, द्वि० ६ बोले रतन साँस जो पावा, द्वि० ७ सुवा जिमि आन पास मन लावा, पं० १ मुरझि आस पास तहँ पावा। २. प्र० १, च० १ फिरी, द्वि० १, २, ५ लीन्हेसि, तृ० ३ फिरि कै। ३. च० १ आँसु। ४. द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ देखिसि जाग सुवा है ठाढ़ा, गुरु कर बचन सुनइ मुँह काढ़ा। ५. द्वि० २, ६, पं० १ सबद। ६. द्वि० १, ३, तृ० १, ३ सबद बोलि कै स्रवन उघेला, गुरू बोलाव बेगि चलु चेला। द्वि० ५ सबद सुनाइ अमी मुख मेला, गुरु बोलाव बेगि चलु चेला। ७. द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ (यथा. ७)) औ अस कहै हैं नैन पसारे, दरसन चाहौं रूप तुम्हारे। द्वि० २ में यह पंक्ति (यथा. ४) अतिरिक्त अर्द्धाली के रूप में है। ८. द्वि० १ बैन। ९. तृ० २ चितवै। १०. द्वि० २ छिपाएँ, तृ० ३ बुझाएँ (उर्दू मूल)। ११. द्वि० ४ तपावंत। १२. द्वि० १ मुख। १३. द्वि० १, ३ कहैं चलि आउ चहौं, द्वि० ४ बेगि चलि आउ चहौं, तृ० १ बेगि जो आउ चहौं, द्वि० २, ६, तृ० २, च० १ पल महँ आउ चहौं, तृ० ३ पगु चलि आउ चहौं।

आवहु स्यामि सुलक्खने[14] जीव बसै तुम्ह नाउँ।
नैनन्ह भीतर पंथ है हिरदै भीतर ठाउँ॥

[२३७]

सुनि पदुमावति कै असि[1] मया। भा बसंत उपनी[3] नै कया।
सुवा क बोल पवन होइ लागा। उठा सोइ हनिवँत[3] अस[4] जागा।
चाँद मिलन कहँ दीन्हेउ आसा। सहसौ कराँ सूर परगासा।
पाती[5] लीन्ह लै सीस चढ़ावा[6]। दिस्टि चकोर चाँद जनु पावा[7]।
आस पिआसा जो जेहि केरा। जौं झिझकार[8] वाहि सौं[9] हेरा।
अब यह कवन पवन[10] मैं पिया[11]। भा तन[12] पंख पंखि मरि[13] जिया[14]।
उठा फूलि हिरदै न समाना[14]। कंथा टूक टूक बेहराना।

जहाँ पिरीतम वै बसहिं यह जिउ बलि तेहि बाट[15]।
जौं सो बोलावहि पाउ सौं हम तहँ चलहिं[16] लिलाट॥

[२३८]

जो[1] पँथ मिला महेसहि सेई। गएउ समुँद ओही धँसि लेई।
जहँ[2] वह कुंड बिषम अवगाहा। जाइ परा जनु[3] पाई[4] थाहा।
बाउर अंध प्रीति[5] कर लागू। सौहँ धँसै कछु सूझ न आगू।

---

१४. द्वि० ४ औ अस कहेहु बेगि चलि आवहु।

[२३७] १. द्वि० ३, तृ० ३ सुनि कै असि पदुमावति। २. द्वि० ७, तृ० १ पलुही। ३. प्र० १ सिंघ। ४. द्वि० १, ३, ५, ७, होइ। ५. द्वि० १, ३, ५, तृ० ३ पत्र, द्वि० ७ पत्री। ६. प्र० १ सीस लै लावा, च० १ लै सीस चढ़ाई। ७. द्वि० २, ३, तृ० १. २ लावा, च० १ लाई। ८. द्वि० १ जौं जूझ केर, द्वि० ३, तृ० १ जौं जेहि कार। ९. प्र० १ दिसि। १०. द्वि० २, ५ कवन पानि, द्वि० ७ गौन पाव (उर्दू मूल)। ११. प्र० १ सुनतहि कवन पौन सुख किया, प्र० २ सुनतहि गवन (उर्दू मूल) पौन सुख किया। १२. द्वि० २ वहुरे। १३. द्वि० १ टेकि मरि, तृ० ३ पनग मरि, द्वि० ४, ५ पतँग मरि। १४. ये दोनों चरण प्र० २ में नहीं हैं। १५. द्वि० ७ हाट। १६. द्वि० ४ हम तहाँ चलैं, द्वि० ५ हौं तहँ चलौं, द्वि० ६ हौं तहँ जाउँ, च० १, पं० १ तहँ हम जाहिं।

[२३८] १. द्वि० ४ जहँ। २. प्र० १ है, द्वि० १ जनु। ३. प्र० १, तृ० २ तहँ। ४. द्वि० २ पाइन, तृ० १ पावन। ५. तृ० ३ प्रेम।

[२४१]

आवहु करहु गुदर मिस साजू। चढ़हु बजाइ जहाँ लगि राजू।
होहु सँजोइल[1] कुँवर जो भोगी[2]। सब दर छेंकि धरहु अब[3] जोगी।
चौबिस लाख छत्रपति साजे। छप्पन कोटि दर बाजन[4] बाजे।
बाइस सहस सिंघली चाले[5]। गिरि[6] पहार पब्बै सब[7] हाले[5]।
जगत बराबर दै सब चाँपा। डरा इंद्र बासुकि हिय[8] काँपा।
पदुम कोटि रथ साजे[9] आवहिं। गिरि[10] होइ खेह गँगन कहँ[11] धावहिं।
जनु भुइँचाल जगत महँ[12] परा। कुरुम[13] पीठि टूटिहि[14] हियँ डरा[15]।

छत्रन्ह सरग[16] छाइ गा सूरुज गएउ अलोपि।
दिनहिं राति अस देखिअ चढ़ा इंद्र अस[17] कोपि[18]।।

[२४२]

देखि कटक औ मैमंत हाथी। बोले रतनसेनि के साथी।
होत आव दर बहुत असूझा। अस जानत हैं होइहि जूझा।
राजा तूँ जोगी होइ खेला। एही दिवस कहँ हम भए चेला।
जहाँ गाढ़[1] ठाकुर कहँ होई। संग न छाडै सेवक[2] सोई।
जो हम मरन देवस मन[3] ताका। आजु आइ पूजी वह साका।

---

[२४१] १. प्र० १ भए सँजोव। २. प्र० १, पं० १ सब भोगी, प्र० २ रस भोगू, द्वि० २ जे भोगी, द्वि० ४ स भोगी, द्वि० ३ सो भोगी। ३. प्र० १ पै, प्र० २ सब। ४. प्र० १ कटक दर। ५. प्र० १, २ चले, हले, द्वि० १ चाले, हाले। ६. प्र० १, २ सकल। ७. प्र० १, २ सहित महि, द्वि० १ सबै उठि, द्वि० २, ३, तृ० २ परवत सब, द्वि० ४, ५ पब्बै सब। तृ० ३ पुबै (उर्दू मूल) सब, च० १ पत्तौ सब। ८. द्वि० २ भय, तृ० ३ डरि। ९. प्र० १ हाँके। १०. च० १ गढ़। ११. प्र० १ लगि। १२. प्र० १ चलत महि, प्र० २ चलत भुइँ, तृ० ३ चलत। १३. समस्त पंक्तियों में 'कुरुँभ' (हिंदी मूल)। १४. प्र० १, २ टूटी कमठ पीठि १५. प्र० १ हिय हला, द्वि० ३ अस डरा, तृ० ६ हियँ धरा। १६. प्र० १ गगन। १७. द्वि० ३, ४ होइ। १८. पं० १ में दोहा छंद २४२ का है।

[२४२] १. तृ० ३ गारह (उर्दू मूल)। २. प्र० १ सेवक भल। ३. प्र० १ नित, प्र० २ जिउ, द्वि० ६ महँ, तृ० २ जियँ।

बरु जिउ जाइ जाइ जनि बोला। राजा सत्त सुमेरु न डोला।
गरु केर जौं आएसु पावहिं। हमहुँ सौहँ होइ[4] चक्र चलावहिं।

आजु करहिं रन भारथ सत्त[5] बचा लै राखि[6]।
सत्त[5] करै[7] सब[8] कौतुक सत्त[5] भरै पुनि[9] साखि॥

[२४३]

गुरू कहा चेला सिध होहू। पेम बार होइ[1] करिअ न[2] कोहू।
जा कह सीस नाइ कै दीजै। रंग न[3] होइ ऊभ[4] जौं कीजै[5]।
जेहि जियँ पेम पानि भा सोई। जेहि रँग मिलै तेहि[6] रंग होई।
जौं पै जाइ पेम सिउँ[7] जूझा[8]। कत तपि मरहिं सिद्ध जिन्ह बूझा[9]।
यह सत बहुत जो जूझि न करिऔ। खरग देखि पानी होइ ढरिऔ।
पानिहि काह खरग कै धारा। लौटि[10] पानि सोई जो[11] मारा।[12]
पानी सेंति[13] आगि का करई। जाइ बुझाइ पानि जौं परई।

सीस दीन्ह मैं अगुमन पेम पाय[14] सिर मेलि।
अब सो प्रीति निबाहैं चलौं सिद्ध होइ खेलि॥

[२४४]

राजैं छेंकि धरे सब[1] जोगी। दुख ऊपर दुखु सहै बियोगी।

---

४. द्वि० १ सौंह होहिं औ, तृ० ३ सौंह होइ कै, तृ० १ हमहूँ सौंहैं। ५. तृ० ३ सत्य। ६. प्र० १, २ बीच लै राखि, तृ० ३ बचा दै साखि, तृ० १ बचा जिय राखि। ७. प्र० १, २ देख। ८. द्वि० ६ सत। ९. द्वि० १ सब। १०. पं० १ में दोहा छंद २४० का है।

[२४३] १. प्र० १ चढ़ि। २. तृ० ३ जो चइ। ३. प्र० २ रगर, तृ० १ नीक। ४. द्वि० ४ उभर, द्वि० ३, ५ जूझ। ५. द्वि० ४ लीजै। ६. प्र० १ सोइ, तृ० २ वही। ७. तृ० ३ पथ। ८. तृ० ३ सूझा। ९. प्र० १, च० १ सिद्ध जिन्ह पूजा, तृ० ३ पेम जेइँ बूझा। १०. द्वि० १ टूटि। ११. प्र० १ खरगहि पुनि तृ० २, च० १ तैसै जौं। १२. प्र० २ में यह पंक्ति नहीं है। १३. द्वि० १, ६, पं० १ सतें, तृ० २ केर, द्वि० ३ हुतें। १४. प्र० १, २, द्वि० ५ पानि, द्वि० २ पंथ, द्वि० ४, च० १ बार।

[२४४] १. द्वि० १ पुनि।

ना जियँ धरक[२] धरत[३] है कोई। ना जियँ[४] मरन जियन कस होई।
नाग फाँस उन्ह मेली गीवाँ। हरख न बिसमौ एकौ[५] जीवाँ।
जेइँ जिउ दीन्ह सो लेउ[६] निरासा। बिसरै नहिं जौ लहि तन स्वाँसा।
कर किंगरी तिन्ह तंत[७] बजावा। नेहु[८] गीत बैरागी[९] गावा।
भलेहिं आनि गियँ मेली फाँसी। हिएँ न सोच रोस[१०] रिसि नासी।
मैं गियँ फाँद ओही[११] दिन मेला। जेहि दिन पेम पंथ होइ खेला।

परगट गुपुत सकल महि मंडल[१२] पूरि रहा सब ठाउँ[१३]।
जहँ देखौं[१४] ओहि देखौं दोसर नहिं कहँ[१५] जाउँ॥

[२४५]

जब लगि गुरु मैं अहा न चीन्हा। कोटि अँतरपट बिच हुत दीन्हा[१]।
जौं चीन्हा तौ औरु न कोई। तन मन जिउ जोबन सब सोई।
हौं हौं कहत[२] धोख अँतराहीं[३]। जौं भा सिद्ध कहाँ परिछाहीं।
मारै गुरू कि गुरू जियावा। औरु को मार मरै सब आवा।
सूरी मेलु हस्ति[४] कर[५] पूरू। हौं नहिं जानौं जानै गूरू[५]।
गुरू हस्ति पर चढ़ा सो पेखा[६]। जगत जो नास्ति नास्ति सब देखा।

---

२. प्र० १, २ डर जिय कै, द्वि० ४ जिय डर कि, द्वि० ६ जिय धरक, तृ० १ जिय डरत, द्वि० ३ जिय दुख कि। ३. द्वि० ५ करत। ४. प्र० १ नाहीं, प्र० २ नहिं मन, द्वि० २, तृ० १, ३ ना जानौं। ५. प्र० २ समै कवल भा, द्वि० ३ बिस हो एको। ६. च० १ लीन्ह। ७. तृ० ३ तब तेइँ। ८. द्वि० ५ यहै। ९. तृ० ३, ४ बैरागिन्ह। १०. प्र० १, २, पं० १ जियैं न सोच हिए रिसि नासी द्वि० २, ५, तृ० २ तजीं न नाँव करहिं जो नासी, तृ० १ हिएँ न सोच जेइँ रिसि नासी, च० १ जीउ न सूझ सूझ पै हाँसी। ११. तृ० ३ ताहि। १२. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ महि, द्वि० २, तृ० २, च० १ महँ। १३. द्वि० १, ३, तृ० ३ सो (हिंदी मूल) ठाउँ, शेष प्रतियों में सो (हिंदी मूल) नाउँ। १४. प्र० १ जहाँ जाउँ, तृ० ३ जहँ ताकौ। १५. प्र० १ ठाउँ न।

[२४५] १. प्र० १ तासों कीन्हा, तृ० २ तब लगि दीन्हा। २. द्वि० २ तो कहत, द्वि० ४ हौं कहब। ३. तृ० २ तन पाहीं। ४. प्र० १ साइ गोर अस्ति। ५. द्वि० २, तृ० २ गुरु बरू, गुरू, द्वि० ४ गुरु पूरू, गूरू, द्वि० ५ गुरु पुरवा, गुरवा। ६. द्वि० २, च० १ बिसेखा।

अंध मीन जस जल महँ धावा। जल जीवन जल[७] दिस्टि न आवा।

गुरु मोर मोरें हित[८] दीन्हें तुरँगहि[९] ठाठ[१०]।
भीतर करै[११] डोलावै बाहर नाचै[१२] काठ॥

[२४६]

सो पदुमावति गुरु हौं चेला। जोग तंत जेहि कारन खेला[१]।
तजि ओहि बार[२] न जानौं दूजा। जेहि दिन मिले जातरा पूजा।
जीउ काढ़ि[३] भुइँ धरौं लिलाटू[४]। ओहि[५] कहं देहुँ हिए महँ पाटू[४]।
को मोहि लै सो छुवावै पाया। को[६] अवतार देइ नइ काया।
जीउ चाहि सो अधिक पियारी। माँगै जीउ[७] देउँ बलिहारी।
माँगै सीस देउँ सिउँ गीवा। अधिक नवौं[८] जौं मारै जीवा।
अपने जिय कर लोभ न मोही। पेम बार होइ माँगौ ओही।

दरसन ओहि क दिया जस हौं रे भिखारि पतंग।
जौं करवत सिर सारै[१०] मरत न मोरौं अंग॥

[२४७]

पदुमावति कँवला ससि[१] जोती। हँसै फूल[२] रोवै तब मोंती।
बरजा पितैं हँसी औ रोजू। लाई दूति[३] होई निति खोजू।

---

७. द्वि० २ जग, तृ० ३ पुनि। ८. प्र० १, २, द्वि० २ हिएँ, द्वि० ३, ४, ५, ६, च० १, पं० १ सिर। ९. प्र० १, २ दिए तुरंगम, द्वि० ३ दिहें जस तुरंगहि। १०. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, च० १ ढाठ। ११. प्र० १, २ कल सो। १२. द्विं० २, ३, तृ० ३ करै डोलावै बाहर नाचहिं, द्वि० ५ करै डोलावहिं बाहर नाचहिं, च० १ करै डोलावहिं बाहर नाचै।

[२४६] १. च० १ मोंहि बोलहु कै सिद्ध नवेला। २. द्वि० ३, ५, तृ० ३ नाउँ। ३. द्वि० २ सीस काटि। ४. प्र० १, २ लिलाटा, बाटा। ५. तृ० ३ बैठक। ६. प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, च० १, पं० १ नब। ७. प्र० १, द्वि० ४ सीस। ८. प्र० २ बोहि, द्वि० २ सौ, द्वि० ५ सौं, द्वि० ४, तृ० ३ सै, च० १ सैं। ९. द्वि० ५ तरौं। १०. प्र० १ नासै।

[२४७] प्र० २ असि। २. द्वि० ५ सींप। ३. प्र० २, तृ० ३ लाए दूत (उर्दू मूल)।

जबहिं[४] सुरुज कहँ लागेउ राहू। तबहिं[५] कँवल मन[५] भएउ अगाहू[६]।
बिरह अगस्ती[७] बिसमौ भएऊ[८]। सरवर हरख[९] सूखि सब[१०] गएऊ।
परगट ढारि सकै नहिं आँसू। घटि घटि[११] माँसु गुपुत होइ नासू।
जस दिन माँझ रैनि होइ आई। बिगसत कँवल[१२]गएउ कुँभिलाई[१३]।
राता बरन गएउ होइ सेता। भँवति भँवर[१४]रहि गईं[१५] अचेता।

चितहि जो चित्र कीन्ह[१६]धनि रोवँ रोवँ रंग समेंटि[१७]।
सहस साल दुख आहि भरि मुरुछि परी गा मेंटि॥

[२४८]

पदुमावति सँग सखी सयानी। गुनि कै नखत पीर ससि जानी।
जानहिं मरम[१] कँवल कर कोई। देखि बिथा बिरहिनि की रोई।
बिरहा कठिन काल कै[२] कला। बिरह न सहिअ काल बरु भला।
काल काढ़ि[४] जिउ लेइ सिधारा[५]। बिरह काल मारे पर मारा[५]।[६]
बिरह आगि पर मेलै आगी। बिरह घाउ पर घाउ[७] बजागी[८]।

---

४. द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ जौहि, तौहि (हिंदी मूल), द्वि० २ चौहि, तौहि (हिंदी मूल)। ५. प्र० १ कहँ। ६. प्र० २ (यथा. ७) जस दीपक पतंग पर परई। तस जिउ देखि देखि हिअ डरई। ७. प्र० १ अगस्ति हिय, द्वि० १ अगिनि सब, द्वि० २ आगि तन। ८. तृ० १ (यथा. दूसरा चरण) बिगसत कँवल छार मिलि गएऊ। ९. प्र० १ हिया। १०. प्र० १, पं० १ हिय। ११. द्वि० १ परगट, द्वि० ६, ३ कटि कटि। १२. च० १ नलिनि। १३. प्र० १, २ लागु कुँभिलाई, द्वि० २ गएउ मुरझाई, द्वि० ३ लागु सुखाई। १४. तृ० ३ भँवत। १५. प्र० २ गए (उर्दू मूल)। १६. प्र० १ चित्र जो कीन्ह बिचित्र, प्र० २ चित्र जो चित्र कीन्ह, तृ० १ चितहि जो चैन कीन्ह, द्वि० ३ दिनहि जो चित्त। १७. प्र० १ गा मेंटि, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, च० १, पं० १ अंग समेटि, तृ० ३ रंग मेटि। १८. प्र० १ सीस साल दुख आदि भरि, प्र० २ सीस साल दुख अति भई, द्वि० २ सहस साल दुख उभरे, तृ० ३ सहस सहस दुख हिय भरि।

[२४८] १. द्वि० २, तृ० २ बिथा। २. द्वि० ३ काम। ३. द्वि० २, ४, तृ० २, च० १ पर। ४. तृ० ३ बिरह काल। ५. प्र० २ सिधारा, लावा। ६. द्वि० १ बिरह घाव पर घाव अँगारा। ७. तृ० ३ बिरह। ८. प्र० २ जो लागी।

बिरह बान पर बान[9] पसारा[10]। बिरह रोग पर रोग सँचारा।
बिरह साल पर साल[11] नवेला। बिरह काल पर काल दुहेला।

तन रावन होइ सिर चढ़ा[12] बिरह भएउ हनिवंत।
जारे ऊपर जारै[13] तजै न कै[14] भसमंत॥

[२४९]

कोइ कमोद परसहिं कर[1] पाया। कोइ मलयागिरि छिरकहिं[2] काया।
कोइ मुख सीतल नीर चुवावा। कोइ अंचल सौं[3] पौनु डोलावा।
कोइ मुख अंम्रित आनि[4] निचोवा। जनु बिख दीन्ह अधिक धनि सोवा।
जोवहिं स्वाँस खिनहिं खिन सखी। कब जिउ फिरै पवन औ पँखी।
बिरह काल होइ हिए पईठा[6]। जीउ काढ़ि लै हाथ बईठा[6]।
खिन एक[7] मूँठि[8] बाँध खिन[9] खोला[10]। गही[11] जीभ मुख जाइ न बोला।
खिनहिं बेझ[12] कै बानन्हि मारा। कपि कँपि नारि मरै बिकरारा।

कैसेहुँ बिरह न छाड़ै[13] भा ससि गहन गरास।
नखत चहूँ दिसि रोवहिं अँधियर धरति[14] अकास॥

---

९. तृ० ३ बिरह। १०. प्र० १, २, तृ० १, ३ बिसारा। १२. द्वि० १, ४, ६ जरि बुझा। १३. प्र० २ जारै चित, द्वि० २, तृ० १, च० १ ऊपर जारि कै, तृ० ३ जारे पर जारै।

[२४९] १. प्र० १ लै परसहिं, प्र० २ परसहिं पर, द्वि० २ कोइ परसहिं, तृ० ३ परसहिं गैं (उर्दू मूल), द्वि० ४ कर परसहिं। २. प्र० १ सींचहिं काया, प्र० २ आनि चढाया। ३. द्वि० २ हुत। ४. प्र० १ अंम्रित धरि नीर। ५. प्र० १ अधिक परि, प्र० २ बिआधी। ६. तृ० ३ पईठी, बईठी। ७. द्वि० १ गा खिन्न। ८. प्र० १, तृ० १ मौनहिं, द्वि० २ दसन, द्वि० ४, ६ मौंन। ९. प्र० १ चख। १०. प्र० २ खिन कहि (उर्दू मूल) मुठी काढ़ि कै खोला। ११. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६, तृ० १ कहेसि, द्वि० २ कहन, च० १ रही, द्वि० ३ खिनहि। १२. प्र० १ बेध, द्वि० ३ नजर, द्वि० ४, ५ बीज। १३. तृ० १ न जागी। १४. प्र० १, २, द्वि० ७ रोवँधे धरति, तृ० १ भा अँधियार, तृ० ३ रोवहिं धरति।

[२५०]

घरी चारि[1] इमि गहन गरासी। पुनि बिधि जोति हिएँ[2] परगासी।
निसँसि ऊभि भरि[3] लीन्हेसि स्वाँसा। भई अधार जियन कै आसा।
बिनवहिं सखी छूट ससि राहू। तुम्हरी जोति जोति सब काहू।
तूँ ससि बदन जगत उजियारी। केइँ हरि लीन्हि[4] कीन्हि अँधियारी।
तूँ गजगामिनि गरब गहीली[5]। अब कस आस छाँड़ि[6] सत[7] ढीली।
तूँ हरि[8] लंक हराए[9] केहरि। अब कस[10] हारें करसि हहे हरि[11]।
तूँ कोकिल बैनी जग मोहा। केइँ व्याधा होइ गही निछोहा[12]।

कँवल करी तूँ पदुमिनि गै[13] निसि भएउ बिहान।
अबहुँ[14] न संपुट खोलहि जौं रे उठा[15] जग भान ॥

[२५१]

भान नाउँ सुनि कँवल बिगासा। फिरि कै भंवर[1] लीन्ह मधु बासा।
सरद चंद मुख जानु[2] उघेली। खंजन नैन उठे कै केली।
बिरह न बोल[3] आव मुख ताईं। मरि मरि बोल जीव[4] बरियाईं।
दवैं[5] बिरह दारुन हिय काँपा। खोलि[6] न जाइ बिरह दुख झाँपा।

---

[२५०] १. तृ० २ एक। २. प्र० १ जोति कीन्ह, प्र० २ जोति आनि, च० १ छूट हिएँ। ३. प्र० २, तृ० ३ भरि। ४. द्वि० २ कंठ। ५. प्र० १ कहत कहीली। ६. प्र० १ कस सत छाँडइ, द्वि० २, ५, तृ० १ कस अस छाँडइ, द्वि० ३ कैसे छाँडइ, द्वि० ४ कस अस सत। ७. प्र० १ होइ, प्र० २, पं० १ अस, द्वि० १, २ सब, तृ० ३ तस। ८. च० २ तूँ हरि। ९. प्र० १ हरि गा। १०. प्र० १, २, द्वि० २ रकत, तृ० ३ केहूँ। ११. प्र० १, द्वि० ४ हारि करसि हा हे हरि, द्वि० २ हाति परी जी हे हरि, तृ० ३ हारें कहौं ससि हे हरी, पं० २ हारे करति जो हे हरि। १२. द्वि० २, ३, तृ० १ कीन्ह बिछोह, द्वि० ५, च० १ दीन्ह बिछोह। १३. तृ० ३ कै (उर्दू मूल)। १४. तृ० ३ अजहुँ। १५. प्र० १, ३, द्वि० २ उवा।

[२५१] १. द्वि० ३ कँवल। २. प्र० २ जबहिं। ३. तृ० २ बिरह बोल आवा, च० १ बिरहा सूर आव। ४. तृ० ३ मरि जिऔ बोला, द्वि० ३ पिउ गै बोल, तृ० १ मरि मरि नारि जिवै। ५. द्वि० ५ डोल। ६. प्र० १, द्वि० ३ बोलि।

उदधि समुद जस तरँग देखावा। चखु कोटिन्ह[७] मुख एक न[८] आवा।
यह सुठि लहरि लहरि पर धावा[९]। भँवर परा जिउ थाह न पावा[१०]।[११]
सखी आनि बिष देहु तौ मरऊँ[१२]। जिउ नहिं पेट ताहि डर डरऊँ[१३]।

खिनहिं उठै खिन बूड़ै अस हिय कँवल सकेत।
हीरामनिहि बोलावहु[१४] सखी गहन जिउ लेत॥

[२५२]

पुरइनि धाइ[१] सुनत खिन[२] धाई[३]। हीरामनिहि बेगि लै आई[४]।
जनहुँ बैद ओषद लै आवा। रोगिऐं रोग मरत[५] जिउ पावा।
सुनत असीस नैन धनि खोले। बिरह बैन कोकिल जिमि बोले।
कँवलहि बिरह बिथा जसि बाढ़ी। केसरि बरन पियर हिय[६] गाढ़ी[७]।
कत कँवलहि भा पेम अँकूरू। जौं पै गहन लीन्ह दिन सूरू।
पुरइनि[८] छाँह कँवल कै[९] करी। सकल बिथा सो अस तुम्ह हरी[१०]।
पुरुष गँभीर न बोलहिं काऊ। जौं बोलहिं तौं ओर निबाहू।

---

७. प्र० १, ३, तृ० १, च० १ चखु खोटिन्ह (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, तृ० २ चखु घूमहिं. तृ० ३ चखु छूटहिं, द्वि० ४ हिय कोटिन्ह, द्वि० ३ हिये कोटि। ८. द्वि० २ बकत न, द्वि० ५ बात न। ९. प्र० १ आवा। १०. तृ० १ थाह न आवा, तृ० ३ हाथ परावा। ११. तृ० १ यह सुठि लहर लहर पर धारा, भँवर मेलि जिउ लहर न मारा। १२. द्वि० १ खाऊँ। १३. प्र० १ हिएँ डर डरऊँ, द्वि० ४, ६ मरन का डरऊँ, द्वि० २ जो मरत सकाऊँ, द्वि० ३ तबहिं डर डरऊँ, द्वि० ५, पं० १ तौहि डर डरऊँ (हिंदी मूल)। १४. प्र० १ बेगि लै आवहु।

[२५२] १. द्वि० १ परबत ढाह। २. प्र० १ पुरइनि सखी सुनत उठि, प्र० २ सुनतहि बचन धाइ खिन, द्वि० २, ४, ५ चेरिनि धाइ सुनत खिन, द्वि० ६ सखी धाइ पुनि सहन क, तृ० १ सखी सबै जो उठि कै, पं० १ तरुनी धाइ सुनत खिन। ३. तृ० २ आई। ४. प्र० १, २, द्वि० १, ५, तृ० २ लै आइ बोलाईं, द्वि० ४ बुला लै आईं, च० १, पं० १ बोलाइ लै आईं। ५. च० १ केर। ६. प्र० २ तन। ७. प्र० १ काढ़ी (उर्दू मूल)। ८. तृ० १, पं० १ बन बन। ९. प्र० २ गी (उर्दू मूल)। १०. प्र० १, २, द्वि० १, ३, तृ० ३, पं० १ करी, सकल बिभास आस तुम्ह हरी, द्वि० २ कहीं, सकल बिथा बिरहिनि की लहीं, द्वि० ४, ५, तृ० २ करी, सकल बिथा सुनि जस तुम्ह हरी।

एतना बोल कहत मुख पुनि होइ गई[११] अचेत।
पुनि जौं चेत सँभारै[१२] बकत उहै[१३] मुख लेत[१४]।

[२५३]

औरु दगध का कहौं अपारा। सुनै[१] सो जरै कठिन असि झारा[२]।
होइ हनिवंत बैठ है कोई। लंका डाह लाग तन होई[३]।
लंका बुझी आगि जौं लागी। यह न बुझै तसि उपजि बजागी[४]।
जनहुँ अगिन[५] के उठहिं पहारा। वै सब लागहिं अंग अँगारा।
कटि कटि[६] माँसु सराग पिरोवा। रकत के आँसु माँसु[७] सब रोवा[८]।
खिनु एक मारि माँसु अस भूँजा। खिनहिं जिआइ[९] सिंघ अस गूँजा।
एहि रे दगध हुँत[१०] उत्तिम मरीजै[११]। दगध न सहिअ जीउ बरु दीजै[११]।

जहँ लगि चंदन मलैगिरि औ साएर सब नीर।
सब मिलि आइ बुझावहिं बुझै न आगि सरीर॥

[२५४]

हीरामनि जों देखी नारी। प्रीति बेलि उपनी हियँ[१] भारी[२]।
कहेसि कस न तुम्ह होहु दुहेली[३]। अरुझी पेम प्रीति की[४] बेली।

---

११. द्वि० ३, च० १, पं० १ होइ गइ नारि। १२. प्र० १, २ चेत सँभारि जों पुनि उठी, तृ० ३ पुनि जो चेत सँभारि चित। १३. द्वि० १ रहै बकत, तृ० ३ बकतावै, द्वि० ३ उठी बकत, च० १ भए बिकट। १४. द्वि० ४ मुख पेत, तृ० ३ जो लेत।

[२५३] १. द्वि० ४ सती। २. च० १ धरती सरग जरै तेहिं झारा। ३. द्वि० २, ३ लंका डाह करै तन सोई, तृ० ३ लंका डाहि लाइ तन खोई। ४. प्र० १, २ आगि तसि जागी, तृ० ३ उपनै बज्रागी, द्वि० ५ तस आँच बजागी। ५. च० १ रकत, पं० १ लंक। ६. द्वि० २, तृ० १ काँपि काँपि। ७. पं० १ गिरहिं जो आँसु माँसु। ८. प्र० १, २, तृ० ३, पं० १ धोवा। ९. द्वि० २ जगाइ। १०. प्र० १, २ मरना, दगध के सहे जीउ का करना। ११. प्र० १, द्वि० २ तें, प्र० २ सों, तृ० ३ बरु।

[२५४] १. द्वि० ५ तन, तृ० १ जियँ। २. द्वि० ४, ५, तृ० ३ बारी। ३. तृ० ३ सुहेली। ४. प्र० १, २ अरुझा पेम पिरीतम।

प्रीति बेलि जनि अरुझै कोई। अरुझें मुएँ[5] न छूटै सोई।
प्रीति बेलि ऐसैं तनु डाढ़ा। पलुहत[6] सुख बाढ़त दुख बाढ़ा[7]।
प्रीति बेलि सँग बिरह अपारा। सरग पतार जरै तेहि झारा।
प्रीति बेलि केइँ अम्मर बोई। दिन दिन बाढ़ै खीन न[8] होई।
प्रीति अकेलि बेलि चढ़ि छावा[9]। दोसरि बेलि न पसरै[10] पावा।

प्रीति बेलि अरुझाइ जौं तब सो छाँह[11] सुख साख।
मिलै जो प्रीतम आइ कै दाख बेलि रस चाख॥

[२५५]

पदुमावति उठि टेकै पाया[1]। तुम्ह हुँत होइ[2] प्रीतम कै छाया।
कहत लाज औ रहै न जीऊ। एक दिसि आगि दोसर दिसि सीऊ[3]।
सूर उदैगिरि चढ़त भुलाना। गहने गहा[4] चाँद[5] कुँभिलाना।
ओहटें होइ मरिउँ नहिं[6] झूरी। यह सुठि मरौं जो निअरें दूरी।
घट महँ निकट बिकट भा मेरू। मिलेहुँ न मिलै[7] परा तस फेरू।
दसइँ अवस्था असि मोहि भारी। दसएँ लखन होहु उपकारी।[8]
दमनहि[9] नल जस हंस मेरावा। तुम्ह[10] हीरामनि नाउँ कहावा।[11]

---

५. द्वि० २ जरम। ६. द्वि० १ उपनत। ७. द्वि० २ सुख सूखे पलुहे दुख बाढ़ा। ८. द्वि० २ छीन नहिं, तृ० ३ खिन खिन। ९. प्र० २, तृ० ३ धावा। १०. प्र० १, २, द्वि० २, च० १ सँचरै, द्वि० ५, तृ० ३, पं० १ सरबरि। ११. तृ० ३ पावै सुख, द्वि० ४ सो जानै, तृ० १ सो जेहि न।

[२५५] १. द्वि० २, ४ काया। २. प्र० १ हुते हौं, प्र० २ होतेहु, द्वि० ४, ५ हुँत देखौं, तृ० ३ ते हो। ३. द्वि० २, तृ० १, २ पीऊ। ४. प्र० १, २ द्वि० २ लीन्ह। ५. च० १ कँवल। ६. प्र० १ तसि, प्र० २ तब, द्वि० ३, तृ० १ तहँ। ७. प्र० १ मिला न जाइ। ८. द्वि० २, ४, ५, तृ० ३ तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देवा, उतरौं पार तेहि बिधि खेवा। ९. प्र० १, २, द्वि० ३ दमावती नल, द्वि० १ दमावति कहँ नल, द्वि० २ दामन नलहि जो, द्वि० ४, च० १ दमनहिं नल जो, द्वि० ५ दामहिं नलहिं जो, द्वि० ३ दमावती नल। १०. द्वि० ५, तृ० ३, च० १ तब। ११. द्वि० ६ में इस पंक्ति के स्थान पर वह है जो ऊपर पाद-टिप्पणी ८ में है।

मूरि सजीवनि दूरि इमि[१२] सालै सकती[१३] बान।
प्रान मुकुत अब होत हैं[१४] बेगि देखावहु भान[१५]॥

[२५६]

हीरामनि भुइँ धरा लिलाटू। तुम्ह रानी जुग जुग सुख पाटू।
जेहि के हाथ जरी औ मूरी। सो जोगी नाहीं अब दूरी।
पिता तुम्हार राज कर[१] भोगी। पूजै बिप्र[२] मरावै जोगी।
पौंरि पंथ कोटवार बईठा। पेम क लुबुधा सुरँग पईठा।
चढ़त रैनि गढ़ होइगा भोरू। आवत बार धरा कै चोरू।
अब लै देइ गए ओहि सूरी। तेहि[३]सो अगाह बिथा[४]तुम्ह पूरी।
अब तुम्ह जीव कया वह जोगी। कया क रोग जीव पै रोगी[५]।

रूप तुम्हार जीव कै आपन[६] पिंड कमावा फेरि।
आपु हेराइ[७] रहा तेहि खँड होइ[८] काल न पावै हेरि॥

[२५७]

हीरामनि जौं बात यह कही। सुरुज के गहन[१] चाँद गै गही।
सुरुज के दुख जौं ससि होइ[२]दुखी। सो कत दुख मानै[३] करमुखी।

---

१२. प्र० १, द्वि० १, च० १ आनि कै, प्र० २ आनु गै (उर्दू मूल)। १३. तृ० ३ सकति हिय। १४. प्र० १ प्रान रहहिं घट जात अब, प्र० २ परा मुकुति अब होत हैं। १५. प्र० १ होइ न पाएउ मान, तृ० ३ बेगि देखावहु आनि।

[२५६] १. च० १ गढ़। २. तृ० ३ बैद, तृ० १ आस, च० १ बेर। ३. तृ० ३ तोहि। ४. प्र० १ ओहि की बिथा सोक तुम्ह। ५. तृ० ३ कया क मरम जान पै रोगी, द्वि० ४, ५, ३ कया के रोग जान पै रोगी। ६. द्वि० ५ तुम्हारा जोगी आपन, तृ० १ तुम्हारा जीव बनि, पं० १ तुम्हारा जोगी। ७. प्र० १ लुकाइ। ८. द्वि० १ रहा तेहि भीतर, द्वि० ५, तृ० २, ३ रहा तेहि बन होइ, तृ० १ रहा बन महँ, पं० १ रहा तेहि खँड।

[२५७] तृ० ३ गहें (उर्दू मूल)। २. प्र० १, २ तरुनी भइ, द्वि० १ चांद होइ। ३. प्र० १ कत सुख मानै, तृ० ३ कस दुख जानै, पं० १ कत दुख मानै।

अब जौं जोगि मरै[४] मोहि नेहा। ओहि मोहि साथ[५] धरति गँगनेहा।
रहै तौ करौं जरम भरि सेवा। चलै तौ यह जिउ साथ परेवा।
कौनु सो करनी[६] कहु[७] गुरु[८] सोई। पर काया परबेस जो होई।
पलटि सो पंथ कौन बिधि खेला। चेला गुरू गुरू भा चेला।
कौन खंड अस रहा लुकाई। आवै काल हेरि फिरि[९] जाई।

चेला सिद्धि सौ पावै गुरू सों करै अछेद[१०]।
गुरू करै जौं किरिपा[११] कहै सो चेलहि भेद॥

[२५८]

अनु रानी तुम्ह गुरु वहु चेला। मोहि पूँछहु[१] कै सिद्ध नवेला।
तुम्ह चेला कहँ परसन भई। दरसन देइ मँडप चलि गई[२]।
रूप गुरू कर चेलैं[३] डीठा। चित समाइ होइ चित्र पईठा।
जीउ काढ़ि लै तुम्ह उपसई। वह भा[४] कया जीव[५] तुम्ह भई।
कया जो लाग धूप औ सीऊ। कया न जान जान पै जीऊ।
भोग तुम्हार मिला ओहि जाई। जो ओहि बिथा[६] सो तुम्ह कहँ आई।
तुम्ह ओहि घट वह तुम्ह घट माहाँ। काल कहाँ पावै ओहि छाहाँ[७]।

अस वह जोगी अमर भा[८] पर काया परबेस।
आव काल तुम्हहिं तहँ देखै[९] बहुरै कै[१०] आदेस[११]॥

---

४. च० १ जरै। ५. प्र० १ सात। ६. द्वि० १ कारन, द्वि० ४ काल। ७. द्वि० ४ घर गुर, तृ० १ कर कइ, च० १ कीन्ह गुर। ८. प्र० १ गुन, प्र० २ बिधि। ९. द्वि० १ हेरि कै, द्वि० २, ६, तृ० २ ढूँढ़ि फिरि। १०. तृ० ३ उछेद। ११. प्र० १, २ माया।

[२५८] १. प्र० २ पूजहि मंडप, द्वि० २ मया मोह, द्वि० ५, तृ० ३ जो बूझहु, च० १ मोहि बूझहु। २. द्वि० १ जीव लै गई। ३. प्र० १ तुम्हार जो चेलैं, प्र० २ गुरु जो चेलैं, द्वि० २, ६, तृ० १ तुम्हार तहाँ ओइँ, द्वि० ३ गुरू सो चेलैं। ४. प्र० १ वहि की। ५. पं० १ जीव कया। ६. तृ० ३ माता। ७. प्र० १ काल न जानै आछै कहाँ, द्वि० २ काल न जानै पावै छाहाँ। ८. प्र० १, २ अस वह खंड लुकाना चेला। ९. प्र० १, २, द्वि० ४ गुरू तहँ, द्वि० १ तेहि हेरै, द्वि० २ गुरू कहँ, च० १ जाइ फिरि। १०. प्र० १ फिरै किए, द्वि० २, तृ० ३ फिरि केइ करै, द्वि० ४ फिरि सो करै, तृ० १, २ बहुरि करै द्वि० ६, च० १ फिरि केइ देइ। ११. तृ० १ उपदेस।

[२५९]

सुनि जोगी कै अम्मर करनी[१]। नेवरी बिरह बिथा कै मरनी[२]।
कँवल करी होइ बिगसा जीऊ। जनु रबि देखि छूटिगा सीऊ।
जो अस सिद्ध[३] को मारै पारा। नेंबू रस नहिं जेइ होइ छारा[४]।
कहहु जाइ अब मोर सँदेसू। तजहु जोग अब भएउ[५] नरेसू।
जनि जानहु हौं तुम्ह सों दूरी। नयनन्हि माँझ गड़ी वह सूरी।
तुम्ह पर सबद[६] घटइ[७] घट केरा। मोहि घट[८] जीउ घटत नहिं[९] बेरा।
तुम्ह कहँ पाट हिएँ महँ[१०] साजा। अब तुम्ह मोर दुहूँ जग राजा।

जौं रे जिअहिं मिलि केलि करहिं[११] मरहिं तौ एकहिं[१२] दोउ।
तुम्ह पै जियँ जिनि होऊँ कछु[१३] मोहि जियँ होउ सो होउ॥

[२६०]

बाँधि तपा आने जहँ सूरी। जुरे आइ[१] सब सिंघलपूरी।
पहिलें गुरू देइ कहँ आना। देखि रूप सब कोउ पछिताना।
लोग कहहिं यह होइ न जोगी। राजकुँवर कोइ अहै बियोगी[२]।
काहूँ लागि भएउ है तपा। हिएँ सो[३] माल करै मुख जपा।
जोगी केर करहु[४] पै खोजू। मकु यह होइ न राजा भोजू।

---

[२५९] १. प्र० १, द्वि० १ कहानी। २. प्र० १, द्वि० १ बानी, प्र० २ करनी। ३. तृ० ३ भा सिद्ध, पं० १ अस गुरू। ४. प्र० १ जेइ सिधि दीन्ह सोइ रखवारा, प्र० २ नीठुर सत्त जिअै होइ छारा, तृ० १, च० १ नेबू रस ते जिय होइ छारा, द्वि० ६ सो अस तौं जरि होइ छारा, पं० १ नीबू रस तेइ होई छारा। ५. प्र० १, द्वि० ६ होहु नरेसू, प्र० २ भए सँदेसू। ६. प्र० १ परगट, प्र० २ परदेस, द्वि० १ परसो मोहि, द्वि० २ परहस्त, तृ० ३ परसेत, द्वि० ५ परसेपत, तृ० १ परशष्ट, च० १ सिद्ध। ७. च० १ घटहिं। ८. तृ० ३ गुपुत। ९. च० १ न होइहि। १०. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ६ तुम्ह कहँ राज पाट मैं साजा, तृ० १ मोहि लागि तुम्ह जोग जो साजा। ११. प्र० १, २ मिलि सुख करहिं, द्वि० ४ निल गल रहहिं, द्वि० ३, ५, पं० १ मिलि कल रहहिं, द्वि० ६ तौ मिलि रहैं, तृ० १ कल मिलि रहहिं। १२. तृ० १ एक सँग। १३. प्र० १ तुम्ह जिय जनि कछु होइ।

[२६०] १. प्र० १ तहाँ। २. प्र० १, द्वि० १, ४, तृ० १, पं० १ आहै कोइ भोगी, प्र० २ आहै रस भोगी। ३. प्र० १, पं० १ जो। ४. द्वि० ३ लेहु।

जस[५] मारइ कहँ बाजा तूरू। सूरी देखि हँसा मंसूरू।
चमके दसन भएउ उँजियारा। जो जहँ तहाँ[६] बीजु अस मारा।

सब पूँछहिं कहु जोगी जाति जनम औ नावँ।
जहाँ ठाँव रोवै कर हँसा सो कौने[७] भावँ॥*

[२६१]

का पूँछहु अब जाति हमारी। हम जोगी औ तपा भिखारी।
जोगिहि जाति कौन हो राजा। गारि न कोह मार[१] नहिं लाजा।
निलज भिखारि लाज जेहिं खोई। तेहि के खोज परहु जनि[२] कोई।
जाकर जीव मरै पर बसा। सूरी देखि सो कस नहिं[३] हँसा।
आजु नेह सौं[४] होइ[५] निबेरा। आजु पुहुमि तजि गँगन बसेरा।
आजु कया पिंजर बँध टूटा। आजु परान परेवा छूटा।
आजु नेह[६] सौं होइ[७] निरारा। आजु पेम सँग चला पियारा।

आजु अवधि[८] सिर पहुँची[९] कै सो चलेउँ[१०] मुख रात।
बेगि होहु मोहिं मारहु का पूँछहु अब बात[११]॥

---

५. तृ० १ जब। ६. तृ० १ अहा। ७. तृ० २, ३ कहु केहि।

*द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किन्तु प्रसंग में इसकी अनिवार्यता प्रकट है, क्योंकि रत्नसेन को शूली देने के लिए ले जाने का उल्लेख इसी छंद में हुआ है।

[२६१] १. प्र० १, २ गारी कोह न मार, द्वि० ७ गारी कैर हम पर नहिं। २. प्र० १ परहु मति, प्र० २ परै का, द्वि० ७ करै का। ३. प्र० १ काहे न। ४. द्वि० १ नेह मैं, द्वि० २, ३, ७, पं० १ पेम सौं, द्वि० ६ नेह कर। ५. प्र० १ करौं। ६. द्वि० १ नेम। ७. प्र० १ होउँ। ८. तृ० १ आइ। ९. प्र० १ पहुँचाइ सिर, प्र० २ सिर बीती, द्वि० ७ पहुँचाइ कै, तृ० १ फिरि पहुँची, द्वि० ३, तृ० २ सो पूजा। १०. प्र० १, द्वि० १ कै सो चलौं, प्र० २, तृ० १ कै सो जाउँ, द्वि० ४ कै सो गएउँ, द्वि० ५, ७ कै सो चला, द्वि० ६ किए जाउँ, पं० १ किहें जाउँ। ११. प्र० १ का पूँछत हहु जात, द्वि० १ का पूँछहु किछु बात, द्वि० २, तृ० ३, पं० १ जनि चालहु यह बात, द्वि० ५ का पूँछत हहु बात, द्वि० ७ का पूँछहु मोरी बात, तृ० २, द्वि० ३ का पूँछहु यह बात।

[२६२]

कहेन्हि सँवरु जेहि चाहसि सँवरा । हम तोहिं करहिं[1] केत[2] कर भँवरा।
कहेसि ओहि सँवरौं[3] हर फेरा[4] । मुएँ जिअत आहौं जेहि केरा।
औ सँवरौं[5] पदुमावति रामा[6] । यह जिउ निवछावरि जेहि[7] नामा[8]।
रकत के बूँद कया जत अहहीं । पदुमावति पदुमावति कहहीं।
रहहुँ त बुंद बुंद महँ ठाऊँ । परहुँ तौ सोई लै लै[9] नाऊँ।
रोवँ रोवँ तन तासौं ओधा । सोतहि सोत बेधि जिउ सोधा[10]।[11]
हाड़ हाड़ महँ सबद सो होई । नस नस माँह उठै धुनि सोई।

खाइ बिरह गा ताकर गूद माँस[12] की खान[13] ।
हौं होइ साँचा[14] धरि रहा[15] वह होइ[16] रूप समान ॥*

[२६३]

राजा[1] रहा दिस्टि किए औंधी । सहि न सका तब भाँट दसौंधी ।[2]

---

[२६२] १. द्वि० ३ कारन। २. प्र० १ करब केत, प्र० २ करहिं केतुकि, द्वि० ४ करहिं तोहिं केत। ३. प्र० १, द्वि० ७ सँवरौं सोइ नाम। ४. प्र० २ सौ। ५. प्र० १, द्वि० ३, ५, ७, पं० १ सुनौ। ६. तृ० १ नामा। ७. प्र० १, द्वि० ५, ६, ७, ३ तोहि। ८. द्वि० ६, तृ० ३ में इसके अनंतर इस छंद की पंक्तियाँ भिन्न हैं। ९. प्र० १ उठहि सोई लै, प्र० २ लै पदुमावति, द्वि० २ सोइ लेत वह, द्वि० ४ सूली लै लै, द्वि० ७ उठहि लै लै। १०. प्र० १ सेधा, बेधा, प्र० २ बेधा, रोधा, द्वि० ७ बेधा, बेधा। ११. प्र० १ रोवँ रोवँ तन तासौं ओधा, सोतहि सोत बेधि जिउ सोधा, द्वि० २ सोत सोत तन तासों ओधा, घट घट रोम रोम वै सोधा। १२. द्वि० ७ माँस कया। १३. द्वि० ५, तृ० १, पं० १ हान। १४. द्वि० १ चाँटा। १५. द्वि० ७ होइ साँच रहा अब, द्वि० ४, तृ० ३ पुनि साँचा होइ रहा १६. द्वि० ४, तृ० ३ ओहि कै।

*इसके अनंतर प्र० १, द्वि० ६, में एक, द्वि० २, तृ० १, ३ में दो, और द्वि० ३, ४, ५ में तीन अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[२६३] १. द्वि० २, तृ० १, २ कहिके। २. प्र० १ द्वि० ७ रतनसेन कर भाँट दसौंधी, भटहि कहा रहै रिस औंधी।

कहेसि मेलि कै हाथ कटारी। पुरुष न[3] आछहिं बैठि पेटारी[4]।
कान्ह कोप कै मारा कंसू। गूँग कि फूँक न बाजइ बंसू[5]।[6]
गंध्रपसेनि जहाँ[7] रिस बाढ़ा[8]। जाइ भाँट आगें भा ठाढ़ा[8]।
ठाढ़ देखि सब राजा राऊ[9]। बाएँ हाथ दीन्ह[10] बरम्हाऊ।
गंध्रपसेनि तूँ राजा महा[11]। हौं महेस मूरति सुनु कहा[12]।
जोगी पानि आगि तुइँ राजा[13]। आगिहि पानि जूझ नहिं छाजा[13]।

अगिनि बुझाइ पानि सौं[14] तूँ राजा मन बूझु[15]।
तोरे[16] बार खपर है लीन्हे[17] भिख्या देहु न[18] जूझु॥*

[२६४]

जोगि न आहि आहि सो भोजू। जानै भेद करै सो खोजू[1]।[2]

---

[3]. प्र० २ न छापहिं, द्वि० ४ औ आछहिं। [4]. द्वि० ७ घाले हाथ खरग जो मूँठी, उठा कोपि सूरन सौं दीठी। [5]. प्र० १, २ तब जाना यह पुरुष क कंसू, पं० १ करन के फूँक बजाई बंसू, द्वि० ४, तृ० ३ गोकुल माँझ बजाएउ बंसू। [6]. द्वि० ७ (भाँट) मूरति महेस कर कला, राजा सभ राखहिं अरगला। [7]. प्र० १ तहाँ। [8]. द्वि० ७ भरा, गहे कटार जाइ भौ खरा। [9]. द्वि० ७ चाह तहाँ आपु ही धाऊ। [10]. प्र० १ राव, प्र० २ कीन्ह। [11]. द्वि० २ सुनु राजा राजेसुर महा, द्वि० ४ बोला गंध्रपसेन रिसाई। [12]. पं० १ सौहँ रिस कछु जाइ न कहा, द्वि० ३ कैस जोगि कस भाँट असाई, द्वि० ७ कानी बूंद बोलि अस कहा। [13]. द्वि० २ जनि जानहु यह जोगि भिखारी, महाराज जगभान मुरारी। द्वि० ७ जोगी पानि आगि तूँ असूझा, अगिनि कोह पानी सौं बूझा। [14]. द्वि० २ रिस मोर मन अमर है। [15]. द्वि० २ बूझहु राजा मन बूझि, द्वि० ४, ५, पं० १ जूझु न राजा बूझु। [16]. प्र० १ जोगी। [17]. तृ० १ लिए माँगै। [18]. प्र० १ मन।

*द्वि० ६, तृ० ३ में यह छंद नहीं है, किंतु इस छंद की. ६ आगे छंद २६८ के अनंतर आने वाले प्रक्षिप्त छंदों में आई हुई है। तृ० ३ में इसके अनंतर तीन छंद प्रक्षिप्त हैं। (देखिए परिशिष्ट)।

[२६४] [1]. प्र० १, द्वि० ७ जोगि न होइ सो आहि नरेसू, औ परसन तेहि सिद्ध महेसू।
प्र० २ जोगि न होइ आहि सो भोजू, जानै भेद जो मरि कै खोजू।
द्वि० ४ जोगि न होइ आहि सो भोजू, जोगी भएउ भोज कै खोजू।
[2]. द्वि० २ (यथा. १) सुर नर गन गंध्रप सारे, जल थल आहे वचई बिचारे। द्वि० ३, ६, तृ० १, ३ भाँट भेस ईसुर जब भाषा, हनिवत बीर रहै नहिं राखा।

भारथ होइ जूझ जौं ओधा[3] । होहिं सहाइ आइ सब जोधा ।[4]
महादेव रन घंट बजावा । सुनि कै[5] सबद ब्रह्मा चलि आवा ।
चढ़े अत्र[6] लै किस्न[7] मुरारी । इंद्रलोक सब लाग गोहारी ।
फनपति[8] फन पतार सौं काढ़ा । अस्टौ कुरी नाग भा ठाढ़ा ।
तैंतिस कोटि देवता साजा । औ छयानवे[9] मेघ दर गाजा ।
छप्पन कोटि बैसंदर बरा । सवा लाख परबत फरहरा ।

नवौ नाथ चलि[10] आवहिं औ चौरासी सिद्ध ।
आजु महा रन भारथ चले[11] गँगन[12] गरुड़ औ गिद्ध ॥

[२६५]

भै अग्याँ को भाँट अभाऊ । बाएँ हाथ देइ[1] बरम्हाऊ ।[2]
को जोगी अस नगरी मोरी । जो दै सेंधि चढ़ै[3] गढ़ चोरी[4] ।
इंद्र डरै निति[5] नावै माथा । किस्न डरै सेस[6] जेइँ नाथा ।
बरम्हा डरै चतुर मुख[7] जासू । औ पातार डरै बलि बासू[8] ।

---

३. द्वि० ३ सोधा । ४. द्वि० २ (यथा.२) देव लाग स्थान सुठि वाए, धाइ सबै बीरासन आए । द्वि० ३, ६, तृ० १, ३ लीन्ह चूरि वै ततखन सूरी । धरि मुख मेलेसि जानहु मूरी । ५. द्वि० ७ सींगी । ६. द्वि० २ चक्र । ७. प्र० १, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, ३, पं० १ बिष्नु, प्र० २ देव । ८. द्वि०३, ५, ६ बासुकि । ९. प्र० १ छप्पन कोटि । १०. द्वि० ७ नवौ नाथ जोगी चलि । ११. प्र० २ अहुठ बज्र धरती चढ़ा, द्वि० ७ अहुठ बज्र सुर धरती, द्वि० ३, तृ० १, पं० १ अहुठ बज्र जुर धरती । १२. प्र० १, द्वि० २ तृ० ३ चलें गरुड औ गिद्ध, प्र० २ गरुर जटाई गिद्ध ।
* इसके अनंतर द्वि० १ में पाँच, द्वि० २ में दो तथा द्वि० ३ अतिरिक्त छंद में हैं (देखिए परिशिष्ट)

[२६५] १. प्र० १ राव, प्र० २ कीन्ह, तृ० १ दीन्ह । २. द्वि० ३, ६, तृ०३ अनरथ होइ रे भाँट भिखारी, का तू मोहिं देसि असि गारी । द्वि० २ बोला गंध्रपसेन रिसाई, केई जोगी को भाँट अभाई । ३. द्वि० ५, ३ आव, पं० १ आइ । ४. द्वि० २ को मोहि सौंह होइ संसारा, जासौं हेरौं होइ जरि छारा । द्वि० ६, तृ० ३ को मोहि जोग होइ जग पारा, जासों हेरौं सो जाइ पतारा । ५. द्वि० ३, पं० १ मोहि । ६. प्र० १, २ कारी । ७. प्र० १, द्वि० ७ भुज । ८. प्र० १, द्वि० ७ कबिलास ।

धरति डरै औ मंदर[9] मेरू[10]। चंद्र सूर औ गँगन कुबेरू।
मेघ डरहिं बिजुरी जहँ डीठी। कुरुम[11] डरै धरनी जेहि पीठी।
चहौं तो सब माँगौं धरि[12] केसा। और को कीट पतंग नरेसा[13]।[14]
बोला भाँट नरेस सुनु[15] गरब न छाजा[16] जीवँ।
कुंभकरन की खोपरी बूड़त बाँचे[17] भीवँ॥[18]

[२६६]

रावन गरब बिरोधा रामू। औ ओहिं गरब भएउ संग्रामू।[1]
तेहि रावन अस को बरिबंडा। जेहि दस सीस बीस भुअडंडा[2]।
सूरज जेहि कै तपै[3] रसोई। बैसंदर निति धोती धोई।
सूक सोंटिया[4] ससि[5] मसिआरा[6]। पवन करै निति बार बुहारा।
मीचु लाइ कै पाटी बाँधा। रहा न दोसर ओहि[7] सौं काँधा[8]।

---

९. प्र० १, द्वि० २, ७, मंदल (मंडल) द्वि० ४, ५ मंडप। १०. प्र० २ महि हालहि औ चालहि मेरू। ११. प्र० २ कमठ, शेष समस्त प्रतियों में 'कुरुँभ' (हिंदी मूल)। १२. प्र० २, द्वि० २, ७ गहि। १३. द्वि० ४ औंर गौर (घोर ?) हस्ति अनेक। १४. तृ० ३ सुर नर मुनि गन गंध्रप देवा, तिन्ह को गनै करहिं निति सेवा। द्वि० ३ सबै देवता करहि अदेसू, और गनै को पतँग नरेसू। १५. द्वि० १ न रोस करु, द्वि० ७ करहु सत। १६. प्र० १, २ गरब न कीजै, द्वि० ७ रोस न लागै। १७. पं० १ बूड़न लागे।
१८. द्वि० ६, तृ० ३, तो सों को सरिबरि करै अरे अरे झूठे भाँट।
छार होसि जौं चालौं गज हस्तिन्ह के ठाट॥
द्वि० २ सुरनर रिखिगन गंध्रप असुर सबाजब देव।
परगट गुपुत सिरिस्टि करहि सबै मिलि सेव॥
द्वि० २ में इसके अनंतर सात अतिरिक्त अर्द्धालियाँ आती हैं, तब उपर्युक्त २६५ छंद का मूल का दोहा आता है। तृ० १ में द्वि० २ वाला दोहा नहीं है, सात अतिरिक्त अर्द्धालियाँ आती हैं और तब उपर्युक्त छंद २६५ का मूल का दोहा आता है।

[२६६] १. द्वि० ६, तृ० ३ बोलहि भाँट फुरहि हम झूठे, जौं यह गरब देवतोहि रूठे। द्वि० २ में यह एक अतिरिक्त पंक्ति के रूप में है, कुल अर्द्धालियाँ आई हैं। २. प्र० २ भुजदंडा, द्वि० ४ भुजबंडा। ३. प्र० १, द्वि० ७ जेहि सूरज तप। ४. प्र० २ सुरुज जो मंत्री। ५. तृ० ३ माह, द्वि० ४ सन। ६. प्र० २ बरिआरा। ७. द्वि० ४ सपनेहु। ८. प्र० २ बाँधा, बैर बिरोध राम सौं काँधा। द्वि० २ बाँधी, रहा न गरब न छाजा काँधी। पं० १ बाँधा, रहा और सिउँ दोसरहि काँधा।

जो अस बजर टरै नहिं टारा। सोउ मुआ तपसी[९] कर मारा।
नाती पूत कोटि दस[१०] अहा। रोवन हार न एकौ[११] रहा।

ओछ जानि कै काहूँ जनि कोइ गरब करेइ[१२]।
ओछे पारइ[१३] दैय है[१४] जीत पत्र जो[१५] देइ[१६]।

[२६७]

औ[१] जो भाँट[२] उहाँ हुत[३] आगें[४]। बिनै उठा[५] राजहि रिसि लागें[६]।[७]
भाँट आहि ईसुर[८] कै कला। राजा सब राखहिं अरगला[९]।[१०]
भाँट मीचु आपुनि पै[११] दीसा। तासौं कौन करै[१२] रस रीसा।[१३]
भएउ रजाएसु[१४] गंध्रपसेनी। काह मीचु कै चढ़ा[१५] निसेनी।[१६]
काह अवनि पाएँ[१७] अस मरसी। करसि बिटंड भरम नहिं करसी[१८]।[१९]

---

९. प्र० २ बीरक। १०. द्वि० ७ कोटिन्ह। ११ प्र० १, तृ० ३ कोई।
१२. द्वि० ३ साथ। १३. द्वि० ७ गरब जो काहू कीन्ह दीन्ह। १४. प्र० १ दई कि दिसि नहिं देखइ। १५. द्वि० १ जब। १६. प्र० १ दहुँ का कहँ जय देइ।

[२६७] १. पं० १ आइ। २. ग भाँट कहत। ३. द्वि० ५, ३ राजा कें। ५. प्र० २ बिनै करै, द्वि० १ उठ्ठै पुनि, ग सुनत बचन। ६. लागें। ७. प्र० १, द्वि० ७ सुनिकै भाँट भाँट जत जाती, राजा कहँ उठि कीन्ह बिनाती। ग में अतिरिक्त पंक्ति—सभा लोग बोलहिं नृत सुनहू, मत हमार अस मन महँ गुनहू। ८. प्र० २ संकर, तृ० १ मींचु। ९. ग मानत वहि भला। १०. प्र० १ (यथा. ६) सत्त न कहे कटावौं माथा, कहाँ परा जो कीन्ह क साथा। ११. प्र० १, द्वि० ७, ३ जौ आपुन, द्वि० ४ अपुनै पै। १२. प्र० १, द्वि० ७ का कीजिअ। १३. ग भाँट मौत कहँ कबहुँ न डरई, तापर कवन क्रोध को करई। १३. ग कहत भाँट सों। १५. प्र० १, द्वि० ७ चढ़ा अस मीचु। १६. प्र० २ इन्हसौं रिसि न कीजिऔ राजा, करहिं बिटंप बात के काजा। १७. प्र० १, द्वि० ५, पं० १ काह अनि बानी, द्वि० १ कहा आपुन रिस, द्वि० ३, ४ काह अवनि वाएँ, ग अस बानी कहि का तोइ, द्वि० ३ कहा अती बानी, द्वि० ७ कएह बान बानी। १८. प्र० १ करई, करौं वितंड भाँट अस मरई। द्वि० १ मरई, आइ बिटंड भाँट अस करई। द्वि० ४ मरसो, करसिन बुद्धि भटंत जो करसी। द्वि० ७ करहू, करै बिटंड भटंत न करहू। १९. प्र० २ छिमा करिअ इन्ह सौं कस रीसा, छिनहिं पूत छिन बाप असीसा।

जाति करा कत[२०] औगुन लावसि। बाएँ हाथ राज[२१] बरम्हावसि।
भाँट नाउँ का[२२] मारौं जीवाँ। अबहूँ बोल[२३] नाइ कै गीवाँ[२४]।

तुइँ रे भाँट यह जोगी तोहि एहि कहाँ क संग।
कहाँ छरै[२५] अस पावा काह भएउ चित[२६] भंग॥

[२६८]

जो सत पूँछहु गंध्रप राजा[१]। सत पै कहौं परै किन गाजा[२]।[३]
भाँटहि काह मीचु सों डरना। हाथ कटारि पेट हनि मरना[४]।[३]
जंबू दीप औ चितउर[५] देसू। चित्रसेनि बड़ तहाँ[६] नरेसू।[३]
रतनसेनि यहु ताकर बेटा। कुल चौहान जाइ नहिं मेंटा।[३]
खाँड़ै अचल सुमेर पहारू। टरै न जौं लागै संसारू।[७]
दान[८] सुमेरु देत नहिं[९] खाँगा। जो ओहि माँग न औरहि माँगा[१०]।[११]

---

२०. प्र० १ जाति को राव, द्वि० ७ जाति क राजा, द्वि० ५ जाति भाँट, तृ० ३ जाति कौन कत, ग जाति को भाँट। २१. प्र० १ राव। २२. प्र० १ भाँटहि का अब। २३. प्र० १, द्वि० ७ पूँछहु कहै नाइकै। २४. द्वि० २ भाँट ठाढ़ मुख अंम्रित बानी, केत कपट रस कथा कहानी। द्वि० ७ सत नै कहै तो कटवौं हाथा, पूँछहु कहै नाए कै माथा। २५. द्वि० ४, पं० १ चढ़ै, द्वि० १ छपा। २६. द्वि० १ सत।

* तृ० ३, द्वि० ६ में यह छंद नहीं हैं, किन्तु प्रसंग में आवश्यक ज्ञात होता है।

[२६८] १. द्वि० ४, ५ राजा, नहिं काजा; ग राई, सीस बरु जाई। २. प्र० १, द्वि० ७ जो राजा तुम्ह पूँछहु अंतू। सतहि कहौं जोहिं पर जंतू।
३. द्वि० २ औं सुनु बिनति करौं एक दाता। निस्चै कहौं सत्त कै बाता।
जंबू दीप भरथ खँड भारी। तहँ चितउर गढ़ कोट करारी।
चित्र सेन राजा सर साजा। जिहि लगि राज पाट पुनि साजा।
तेहि कुल दीपक रतन मुरारी। रतन सेन सब संतति सारी।
४. प्र० १, द्वि० ७ भाँट कहा मरनै जिउ डरई। मींचु नाउँ सुनि अगमन मरई।
५. प्र० १, द्वि० १, ७ सो चितउर, प्र० २ चितउर एक, द्वि० ४, ५ चिताउर, द्वि० ३ जो चितउर। ६. प्र० २ सूर। ७. प्र० १, द्वि० ७ (यथा.६) तेहि क भाँट हौं बोलौं बाना, नाँउ महा पातर और आना। ८. प्र० २ दान समुँद, द्वि० १, ५, ३ समुंद सुमेरु, ग धन कर समुँद। ९. तृ० ३ न कोऊ, ग न कोइ, पं० १ देत को। १०. द्वि० ४ खाँगा। ११. द्वि० ५ खाँगा, दहिने हाथ ओहि मैं माँगा। द्वि० ३ खाँगा, तेहि ज भाँट हौं ओहीं माँगा। पं० १ पूजा, दान समुँद और को पूजा। ग खाँगा, तेहि क भाँ हौं मैं भिखमंगा।

दाहिन हाथ उठाएउँ ताही। और को अस बरम्हावउँ[१२]जाही[१३]।

नाउँ महापातर मोहि[१४] तेहिक भिखारी ढीठ।
जौं खरि[१५] बात कहें रिस लागै खरि पै[१६] कहै बसीठ॥

[२६६]

सोइ बिनती सिउँ[१] करौं[२] बसीठी। पहिलें करुइ अंत होइ मीठी।
तूँ गंध्रप राजा जग पूजा। गुन चौदह सिख देइ को[३] दूजा।
हीरामनि जो तुम्हार परेवा। गा चितउर[४]औ कीन्हेसि सेवा[५]।
तेहि बोलाइ पूँछहु वह[६] देसू। दहुँ जोगी का तहँ क नरेसू[७]।
हमरें कहत रहै नहिं मानू। जो वह कहै सोइ परवानू[८]।
जहाँ बारि तहँ आव बरोकाँ। करै बियाह धरम सुठि तोकाँ[९]।[१०]
जौं पहिलें मन[११]मान[१२]त काँधिअ[१३]। पर खिअ रतन गाँठ तब बाँधिअ[१३]।

---

१२. द्वि० १, ३ अैस उठावउँ। १३. प्र० १, द्वि० ७ दहिने हाथ ओहि बरह्मावौं, दुसरे कहँ नहिं जनम उठावों। १४. प्र० १ द्वि० ७ ओहि छुटि औंर न माँगौं। १५. तृ० ३ कहि। १६. द्वि० ७ जरम।

*द्वि० ६, तृ० ३ में यह छंद भी नहीं है, किंतु प्रसंग में आवश्यक ज्ञात होता है। इसके अनंतर द्वि० ३ में चार, तृ० १ में तीन तथा द्वि० २, ५, ७, तृ० ३ और ग में पाँच अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[२६९] १. प्र० १ सुनि बिनती सिउँ, प्र० २ औ गुन बिनती, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, ३ तब महेस उठि, द्वि० ६ औ महेस उठि, पं० १ अवसि बिनति अब, ग महादेव पुनि। २. द्वि० २, ४, तृ० १, ४, ग कीन्ह, द्वि० ७ कहै। ३. ग सरि और न। ४. द्वि० ६, तृ० ३ गयो तहाँ, द्वि० १ गा सो तहाँ ५. प्र० १ कंठ जो फूट करत तुम्र सेवा, ग गयो तहाँ आयो करि सेवा, द्वि० ७ सो बोलाइ पूछहु किन देवा। ६. प्र० १, द्वि० ७ जानत है ताकर, द्वि० १ हँकारि कै पूँछहु। ७. प्र० १, द्वि० ७ औ आनेसि जोगी के भेसू, द्वि० १, ५, ग औ पूँछहु जोगी कि नरेस, द्वि० ३ औ पूँछहु जोगी जस भेसू। ८. प्र० १ द्वि० ७ आनत जो न घालि कै कंथा, राजा आइ न छाँडइ पंथा। ग हमरे महे न एकहु मानहु, जो वह कहै सत करि जानहु। ९. प्र० १, द्वि० ७ बरोका, बड ओका, प्र० २ बरेखा सत लेखा। १०. द्वि० ३ तू राजा बड औ अति ग्यानी, खचहिं न तेखौ मन मों जानीं। ११ द्वि० २ जो तुह्मार मन, तृ० १ जो लहि मोर मन। १२. तृ० १ पतारै ग महीं तोहि। १३. द्वि० २ काँधहु, बाँधहु।

रतन छिपाएँ ना छिपै पारखि होइ सो परीख।
घालि कसौटी[१५] दीजिए[१६] कनक कचोरी[१७] भीख॥

[२७०]

हीरामनि जौं राजैं सुना। रोस बुझान हिएँ महँ[१] गुना।
अग्याँ भई बुलावहु[२] सोई[३]। पंडित हुँतें[४] घोख[५] नहिं होई[३]।
एक कहत सहसक दस[६] धाए। हीरामनिहि बेगि लै आए[७]।
खोला आगे आनि[८] मँजूसा। मिला निकसि बहु दिन कर रूसा।
अस्तुति करत मिला बहु[९] भाँती। राजैं सुना भई हियँ साँती[१०]।
जानहुँ जरत अगिनि जल परा। होइ फुलवारि[११] रहस हिय भरा[१२]।
राजैं मिलि[१३] पूँछी हँसि बाता। कस तन पीत[१४] भएउ मुख राता[१५]।

चतुर बेद[१६] तुम्ह पंडित[१७] पढ़े सास्तर बेद।
कहाँ चढ़े जोगी गढ़[१८] आनि कीन्ह[१९] गढ़ भेद॥

१४. प्र० १, द्वि० ७ राज रूप कुल सो नग काटी, रतन देखि को बाँध न गाँठी। द्वि० ३ हीरामनि तस करै बखानू, रतनसेनि राजा जस भानू। १५. प्र० १, द्वि० ७ बाँधि गाँठि सो। १६. द्वि० २, ४, पं० १ क सिर। १७. द्वि० १ कटोरी।

[२७०] १. तृ० ३ नहिं। २. प्र० १, द्वि० ७ हम सों रूसि गवा हुत। ३. ग सुवा, हुवा। ४. ग हिए। ५. प्र० १, द्वि० ५, ६, तृ० १ दोखा। ६. द्वि० १ धावत एक जहाँ सौ, द्वि० ३, ५, तृ० ३, पं० १, ग भइ अग्य जन सहसक। ७. प्र० १, द्वि० ७ अग्याँ भई बुलावहु बेगी, एक कहाँ धाये दस बेगी। ८. प्र० १, द्वि० ७ आनि सो खोला बेगि। ९. पं० १, ग तेहि। १०. प्र० १, द्वि० ७, तृ० १ (यथा.२) हीरामनि है पंडित परेवा, कीन्हेसि पदुमावति कै सेवा (तुलना २६८.३)। ११. द्वि० १ आँसू टपन (?), ग फूला कमल। १२. द्वि० १ सो रोवै खरा। १३. प्र० १, द्वि० ७ कंठ लाइ, द्वि० १ तौ राजैं। १४. प्र० १, द्वि० ४ पियर, तृ० ३ पेत (उर्दू मूल)। १५. द्वि० ६ में इस पंक्ति के स्थान पर पाद-टिप्पणी १० की पंक्ति हैं। १६. प्र० २ सुमति। १७. ग गीता ज्ञान समान हिय। १८. प्र० १, द्वि० ७ परे जोगिन्ह सँग, प्र० २, द्वि० ५ चढ़ाए जोगिन्ह, द्वि० २ चढ़े अस जोगी, ग चढ़े जोगिन्ह लै। १९. प्र० १ कीन्ह जाइ, द्वि० ५ कहाँ कीन्ह।

[२७१]

हीरामनि रसना रस खोला[१]। दई असीस औ अस्तुति बोला[१]।
इंद्र राज राजेसुर[२] महा। सौंहैं[३] रिसि किछु जाइ न कहा।
पै जेहि बात होइ भल[४] आगें। सेवक निडर कहै[५] रिस लागें।
सुवा सुफल अंब्रित पै खोजा। होइ न बिक्रम राजा[६] भोजा।
हौं सेवक तुम्ह आदि गोसाईं। सेवा करौं जियौं जब ताईं।
जेइँ जिउ दीन्ह देखावा देसू। सो पै जिय महँ[७] बसै नरेसू।[८]
जो ओहि[९] सँवरै एकै तुँ ही[१०]। सांई पंखि जगत रतमुहीं[११]।

नैन बैन औ सरवन[१२] बुद्धी सबै तोर परसाद।
सेवा मोर इहै निति[१३] बोलौं आसिरबाद॥

[२७२]

जो अस सेवक चह पति दसा[१]। तेहिकि जीभ[२] अंब्रित पै बसा[३]।
तेहि सेवक के करमहि[४] दोसू। सेव करत ठाकुर होइ[५] रोसू।

---

[२७१] [१]. द्वि० ७ कर अंजुलि दीन्हा, कीन्हा। [२]. प्र० १ रजाएसु। [३]. द्वि० ४ सुनि हिए। [४]. प्र० १ भलि बात होइ जेहि। [५]. प्र० २ कहै सरै का भा, तृ० ३ कहै चढ़ै काभा। [६]. प्र० १, २ होहु न बिक्रम, द्वि० २ पै तुह्म होहु बिक्रम, द्वि० ६ होहु न तुह्म सो राजा, तृ० २ पै तुह्म होहु पराजा। [७]. प्र० १ ताहि जीउ घट। [८]. ग में यहाँ अतिरिक्त—जेहि जउ दीन्ह सो लेइ निरासा, मुएँ जियत मन जाकरि आसा। [९]. द्वि० २, ३, ५, तृ० ३ मन। [१०]. प्र० १, द्वि० ७ तूँ सब कछू औ सब पर तूहीं। [११]. प्र० १, द्वि० ७ हौं दछु नाहिं पंखि रतमुही, तृ० १ तेहीं कंठ औ सूरति नहीं। [१२]. द्वि० १, ४, ५, तृ० १, पं० १ औ सरवन। [१३]. प्र० १ द्वि० ७ कहाँ जीभ अस पावौं, प्र० २, द्वि० ५, तृ० १ काह जानि कै आपन, द्वि० ३ सेवा मोर है दिन प्रति।

[२७२] [१]. द्वि० २, ५, तृ० १, २, ३, पं० २ जो पंखी रसना रस। [२]. प्र० २ जीव, तृ० १ जियँ, द्वि० १, ५, पं० १, ग मुख। [३]. प्र० १, द्वि० ७ हौं अस सेवक तुम्ह पति आसा। [४]. ग नाहीं। [५]. प्र० १, पं० १ रोइ पति, द्वि० २ करै तव (उद्‌मूल), द्वि० ५, ७, तृ० १ करै पति, द्वि०, १ ग करै पति।

औ जेहि दोख निदोखहि लागा[६]। सेवक डरहि[७] जीव लै भागा।
जौं पंखी कहँवाँ[८] थिर रहना। ताकै जहाँ जाइ[९] जौं डहना[१०]।[११]
सपत दीप देखेउँ फिरि[१२] राजा। जंबू दीप जाइ पुनि बाजा।[१३]
तहँ चितउर गढ़ देखेउँ ऊँचा[१४]। ऊँच राज सरि तोहि पहूँचा[१५]।
रतनसेनि यहु तहाँ[१६] नरेसू। आएउँ लै जोगी कर भेसू।[१७]

सुवा सुफल[१८] पै आनै[१९] है तेहि गुन[२०] मुख रात।
कया पीत[२१] अस तातें[२२] सँवरौं बिक्रम[२३] बात॥

[२७३]

पहिलें भएउ भाँट सत भाखी। पुनि बोला हीरामनि साखी।
राजहिं भा निरचौ मन[१] माना। बाँधा रतन छोरि कै आना।
कुल पूँछा चौहान कुलीना। रतन न बाँधे होइ मलीना।
हीरा दसन पान रँग[२] पाके[३]। बिहँसत सबन्ह[४] बीज बर ताके[५]।

---

६. प्र० १, द्वि० ७ देखेउँ दोष जो दोसरि लागा, ग औ बिनु दोष दोष जेहिं लागा। ७. प्र० १ तोहि डर डरौं. द्वि० १ तहाँ सो उड़ेउँ, द्वि० ५, पं० १ तहाँ सो डरेउँ, ग तब मैं डरा। ८. द्वि० २ जो भा पंखि कहाँ, द्वि० ६, तृ० १ हैं पंखी कहँवाँ। ९. द्वि० ३ ताकै उडा पाँख। १०. प्र० १, द्वि० ७ पंखिहि का रहना थिर काजू, सपत दीप फिरि देखेंउँ राजू। ११. यहाँ पर ग में अतिरिक्त-देखेउँ धन बन संपति जेता, मेरु फेरु तन जीवन तेता। १२. द्वि० १ चलि। १३. द्वि० १ चलि। १३. प्र० १, द्वि० ७ जब हैं जंबू दीप पहूँचा, देखेउँ राज जगत पर ऊँचा। १४. प्र० १, द्वि० ७ तहवाँ मैं चितउर गढ़ देखा। १५. प्र० १, द्वि० ७ कहा राज नहिं जाइ बिसेखा, द्वि० १ ऊँच राज गढ तेहि नहिं दूजा। १६. प्र० २ बड भानु, तृ० १ बड सुना। १७. प्र० १, द्वि० ७ रतनसेनि तहवाँ वड राजा, देखेउँ परखि राज बर छाजा। १८. ग अर्मा सुरँग। १९. प्र० १ पै आना, प्र० २ फर आनै, द्वि० २ लै खोजै, द्वि० ७ सो आनै, द्वि० ४ कै आनै, तृ० १ लै आनी, ग फल आना। २०. प्र० २ ताके, पं० १ तातें। २१. द्वि० ३ पेत (उर्दू मूल)। २२. प्र० १ तेहिं डरऊँ, प्र० २ सो तेहि डर, द्वि० ७ सैा बिकरम। २३. द्वि० ७ मन बीचारी।

[२७३] १. द्वि० ४ बस। २. द्वि० २ रस। ३. ग पागे। ४. प्र० २, द्वि० ३ दसन। ५. ग लागे।

मुंद्रा स्रवन मैन सो[६] चाँपे। राजबैन[७] उघरे सब झाँपे।
आना काटर एक[८] तुखारू। कहा सो फेरै भा[९] असवारू।
फेरेउ तुरै छतीसौ कुरी। सबहिं[१०] सराहा सिंघलपुरी।

कुँअर बतीसौ लक्खना रुहस करौं जस भान[११]।
काह[१२] कसौटी कसिए कंचन बारह बानि[१३]॥

[२७४]

देखि सुरुज बर कँवल सँजोगू। अस्तु अस्तु[१] बोला सब लोगू।
मिला सुबंस अंस[२] उजियारा। भा बरोक औ तिलक सँवारा।
अनिरुध कहँ जो लिखी जैमारा[३]। को मेटै[४] बानासुर हारा।
आजु मिलै[५] अनिरुध को ऊखा। देव अनंद दैतन्ह[६] सिर दूखा[७]।
सरग सूर भुइँ[८] सरवर केवा। बन खँड भँवर होइ[९] रस लेवा।[१०]
पछिवँ क बार[११] पुरुब की बारी। लिखी जो जोरी[१२] होइ न न्यारी[१३]।
मानुस साज[१४] लाख मन[१५] साजा। साजा बिधि सोई पै बाजा[१६]।[१७]

---

६. प्र० १ मैन वै, द्वि० ७ नगन सो। ७. ग बरन। ८. प्र० १ खतर जो, प्र० २ खरै (जो)। ९. द्वि० ४ सो फिरि भया, ग तुरंत होइ। १०. द्वि० ३, तृ० १ बर भान। ११. प्र० १ जस बान, प्र० २ ससि भान। १२. द्वि० २, ३, तृ० १ घालि, द्वि० ७ जैसें। १३. द्वि० ७ चढ़ै अधिक तेहि बान।

* इसके अनंतर द्वि० ७ में दो अतिरिक्त छंद हैं।

[२७४] १. ग सत्य सत्य। २. द्वि० ४ बंस, द्वि० ५, ग अइस। ३. ग जसि धरि दुख डारा। ४. प्र० २ कोपे देव, ग भा बिधि लिखन। ५. प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७, पं० १ बैर। ६. ग दनुज। ७. द्वि० ४ देवइँ देइ दीन्ह सिर दूखा, द्वि० ७ देवन्ह भो सुख दैतन्ह दूखा। ८. ग औ। ९. ग आइ। १०. ग पुरुब कि नारि पछूँ कर बेटा, सरग सूर जल कँवलहि भेंटा। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ पछिम क बर। १२. तृ० ३ दइअ। १३. प्र० १, द्वि० ७ निनारी, द्वि० ४, तृ० १ निरारी। १४. प्र० १ काज। १५. तृ० २ दस। १६. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, तृ० २ सोई होइ जो बिधि उपराजा। १७. ग मानुस साज करै बहु कोई, साजै बिधि बाजै पै सोई। इसके अतिरिक्त ग में यहाँ है—
देहि उतरु सब सुनु सत जोगी, जो तप करै होइ सो भोगी।

गए जो बाजन[१८] बाजते जिन्हहि[१९] मारन[२०] रन मोहँ।
फिरि बाजन तेइ[२१] बाजे[२२] मंगलचार ओनाहँ॥*

[२७५]

लगन धरी[१] औ रचा बिआहू। सिंघल नेवत फिरा सब काहू।
बाजन बाजे[२] कोटि पचासा। भा अनंद सगरौं कबिलासा।
जेहि[३] दिन कहँ निति[४] देव[५] मनावा। सोइ देवस पद्मावति पावा।
चाँद सुरुज[६] मनि माथें भागू। औ गावहिं[७] सब नखत सोहागू[८]।
रचि रचि मानिक माड़ौ छावहिं[९]। औ भुइँ[१०] रात बिछाउ[११] बिछावहिं।
चंदन खाँभ रचे चहुँ पाँती[१२]। मानिक दिया बरहिं दिन राती[१३]।
घर घर बंदन रचे दुआरा[१४]। जाँवत नगर[१५] गीत झनकारा।

---

१८. द्वि० १ आएउँ बाजन बाजत। १९. प्र० १, द्वि० ४ जिय, द्वि० १ जहाँ। २०. द्वि० १ मरत रतन। २१. द्वि० १ लागे उतरन। २२. ग बिधि बस बाजे उलटि कै। २३. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३, ग उछाह।

* द्वि० २ में यह छंद नहीं है। विवाह का निश्चय इसी छंद में है, इसलिए यह प्रसंग में अनिवार्य है। किंतु यहाँ उसमें दो छंद अतिरिक्त हैं। द्वि० ४ में भी दो छंद अतिरिक्त हैं। प्र० ३, ५, ७, तृ० ३ तथा ग में भी एक छंद अतिरिक्त है, जो द्वि० २, ४ में भी सामान्य है। (देखिए परिशिष्ट)। द्वि० ४ का दूसरा अतिरिक्त छंद वह है जो पुनः द्वि० ४ में तथा द्वि० ५ में समाप्ति पर आता है— मैं एहि अरथ पंडितन्ह पूछा आदि।

[२७५] १. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३, ग धरा। २. द्वि० २ बाजहिं। ३. प्र० १, तृ० ३ जा। ४. प्र० १ हौं, तृ० २ मैं। ५. प्र० १, तृ० ३ देवस। ६. प्र० १ सूर। ७. प्र० २ आवै। ८. तृ० ३ सोहावा, द्वि० ७ सभागू। ९. प्र० १, द्वि० ३ छावा, बिछावा। १०. द्वि० ३ भल। ११. प्र० १, द्वि० ७ बिछौन, द्वि० २ दसौन। १२. प्र० २, ख बहु भाँती, द्वि० ७, तृ० ३ बहु पाँती। १३. तृ० ३, ग बहु भाँती। १४. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, पं० १ मंदिल रचे दुआरा, द्वि० २ रचे सो बंदनवारा, तृ० ३ मंगल रचे दुआरा, तृ० २, ख मंदिर रचे किवारा, ग मंगलचार दुआरा। १५. तृ० ३ दीप, पं० १ होइ।

हाट बाट सिंघल सब[१६] जहँ देखिअ तहँ रात[१७] ।
धनि रानी[१८] पदुमावति जा करि ऐसि बरात[१९] ॥

[२७६]

रतनसेनि कहँ कापर आए । हीरा मोंति[१] पदारथ लाए[२] ।[३]
कुअँर सहस सँग[४] आइ सभागे । बिनौ[५] करहिं राजा सौं लागे ।
जेहि लगि[६] तुम्ह साधा तप जोगू । लेहु राज मानहु सुख[७] भोगू ।[८]
मंजन[९] करहु भभूति उतारहु । कै अस्नान[१०] चतुरसम[११] सारहु[१२] ।
काढ़हु मुंद्रा फटिक अभाऊ[१३] । पहिरहु कुंडल कनक[१४] जराऊ ।
छोरहु जटा फुलाएल लेहू । झारहु केस[१५] मदुक सिर देहू ।
काढ़हु कंथा चिरकुट[१६] लावा । पहिरहु राता दगल[१७] सोहावा ।

पाँवरि तजहु देहु पग पैरीं[१८] आवा[१९] बाँक तोखार ।
बाँधहु मौर[२०] छत्र[२१] सिर तानहु[२२] बेगि होहु असवार ॥

---

१६. प्र० १ गढ, तृ० ३ जहँ । १७. द्वि० ७, तृ० ३ दह दिसि अंतह रात, द्वि० ३ जहँ दीसै तहँ रात । १८. द्वि० २, ५, तृ० १ सो राति । १९. प्र० १ रात सकल महि धरती रात बिरिछ बन पाँति ।

[२७६] १. द्वि० ३, तृ० १ रतन । २. द्वि० ७ जोग उतारि झीन पहिराए, द्वि० २, तृ० २ ख लिहैं जो आइ आइ सिर नाए । ३. द्वि० २ में यहाँ अतिरिक्त— पाट पटंबर सुरंग सुहाए, हीरा रतन पदारथ लाए । ४. प्र० १, २ द्वि० ७ दस । ५. तृ० १ बिनति । ६. द्वि० ४, ख अब लगि, द्वि० १ जेहि नित । ७. प्र० २, द्वि० २, ४, तृ० २ अब, द्वि० ३ रस । ८. प्र० १, द्वि० ७ लीजै राज साज तुम्ह जोगू. अब सो सँवरि उतारहु जोगू । ९. तृ० ३ मुंडन करहु, द्विं० ६ अंजन करहु, ग चंदन लाइ । १०. प्र० १, पं० १ करहु नहान । ११. द्वि० ४ चित्र सम, ग छत्र सिर । १२. प्र० २ साजहु । १३. प्र० २ कनक जराऊ । १४. प्र० २ रतन जराऊ । १५. प्र० २ झारहु जटा, द्वि० ७ केस बनाइ । १६. द्वि० ३ परगट । १७. प्र० २ उत्तिम बसन सोहावा, द्वि० ७ राता सब पहिरावा । १८. प्र० १ पग पाँवरि, प्र० २ पग, द्वि० १ पग बान धरि, द्वि० ७, तृ० १ पग पँवरी । १९. द्वि० २ आना । २०. प्र० २ बाँधहु अत्र, ग बाँधहु कंचन । २१. द्वि० १ बेगि । २२. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २, पं० १ सिर सारहु, द्वि० ४, ख छत्र सिर, ग मौर सिर ।

[२७७]

साजा राजा[1] बाजन बाजे[2]। मदन सहाय दुहूँ दिसि गाजे।
औ राता रथ सोने क साजा। भए बरात गोहन सब राजा।
बाजत गाजत[3] भा असवारू। सब सिंघल नै[4] करहिं जोहारू।
चहुँ ओर मसियर[5] नखत तराईं। सूरज चढ़ा चाँद की ताईं।
सब दिन तपा जैस हिय माहाँ। तैस रात पाई[6] सुख छाहाँ।[7]
ऊपर रात छत्र तस[8] छावा। इंद्रलोक सब सेवाँ[9] आवा।
आजु इंद्र आछरि सौं मिला। सब कबिलास होइ सोहिला।

धरती सरग चहूँ दिसि पूरि रहे मसियार[10]।
बाजत आवै राज मँदिर कहँ[11] होइ[12] मंगलाचार॥

[२७८]

पदुमावति धौराहर चढ़ी। दहुँ कस[1] रवि जाकहँ ससि गढ़ी।
देखि बरात सखिन्ह सौं कहा। इन्ह महँ कौनु सो जोगी अहा।
केइँ[2] सो जोग[3] लै ओर निबाहा। भएउ[4] सूर चढ़ि चाँद बियाहा।
कौनु सिद्ध सो ऐस अकेला। जेइँ सिर[5] लाइ पेम सौं खेला।[6]
कासौं पितै बचा असि हारी। उतर न दीन्ह दीन्हि तेहि[7] बारी।

---

[२७७] १. साजि बरात सो। २. प्र० १, द्वि० ७ लिए साज बाजन अस बाजे। ३. प्र० १, २ बाजन बाजा। ४. द्वि० २ लैं, द्वि० ५, ६ के। ५. प्र० १, द्वि० १, ४, ६, ७, तृ० २ चहुँ दिसि मसिअर। ६. द्वि० ६ पावा राज सभा। ७. प्र० १, द्वि० ७ (यथा .१) भोग चढ़ाउ उतारहु जोगू, जो तप करैं सो मानै भोगू। ८. प्र० १ गगन लहि, प्र० २, तृ० १ दइव अस। ९. द्वि० २ कौतुक, तृ० १ देखै। १०. द्वि० २ संसार। ११. प्र० १ आवै राजा, द्वि० १ गाजत आवा, तृ० ३ आव जो मंदिर कहँ, तृ० २ राजमंदिर महँ। १२. प्र० १ होइ सो, द्वि० १ भएउ सो, तृ० ३ मँदिल हो।

[२७८] १. तृ० १ कहँ अस। २. तृ० ३ को। ३. द्वि० ७, तृ० ३ सँजोग। ४. द्वि० २ भँवर। ५. द्वि० ३ सत। ६. प्र० २ (यथा.७) धन्य समाज देखि मन हरषा, राज छोर काहे फूल बरषा। ७. तृ० २ दै।

काकहँ दैय असि जौ दीन्हा। जेइँ जैमार[८] जीति रन लीन्हा[९]।
धन्नि पुरुख[१०] अस नवै न नाएँ। औ सुपुरुष होइ देस पराएँ।

को बरिवंड[११] बीर अस[१२] मोहि देखै कर चाउ।
पुनि जाइहि जनवासे सखी रे बेगि[१३] देखाउ॥

[२७९]

सखी देखावहिं चमकहिं[१] बाहू। तूँ जस चाँद सुरुज तोर[२] नाहू।
छपा न रहै सुरुज परगासू। देखि कँवल मन भएउ हुलासू[३]।
वह उजियार जगत उपराहीं। जग उजियार सो तेहि परछाहीं।
जस रबि दीख उठै[४] परभाता। उठा छत्र देखिअ तस राता।
आव माँझ भा दूलह सोई। औरु बराति संग सब कोई।
सहसौं कराँ रूप[५] बिधि गढ़ा। सोने के रथ आवै चढ़ा।
मनि माथें दरसन उजियारा। सौंह निरखि नहिं जाइ निहारा।

रूपवंत जस दरपन[६] धनि तूँ जाकर कँत[७]।
चाहिअ जैस मनोहर मिला सो मन भावंत[८]॥

---

८. प्र० १ जै हार, द्वि०, ४, तृ० २ जिउ मार। ९. प्र० २ महादेव जाकहँ बर कीन्हा। १०. तृ० १ को पूरुष। ११. द्वि० ७ धनी खंड। १२. द्वि० ७ अस आहै। १३. प्र० १ रे मोहिं, प्र० २ सो मोहि, तृ० ३ मोहि बेगि।

*द्वि० १ में इस छंद के .२—.७ तथा दोहे के प्रथम दो चरण अगले दोहे के हैं। और दोहे के दूसरे दो चरण इस प्रकार हैं : पुनि जाइहि जनवासे सखि देखाव तोर कंत।

[२७९] १. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ झमकहिं। २. द्वि० ६, ७, पं० १ बिगासू। ३. प्र० २ तुअ, द्वि० ७, तृ० ३ जस। ४. प्र० १ छूट। ५. प्र० १ सर, तृ० ३ जैस। ६. प्र० १ दरस देख जस दरसन, प्र० २ दरसवंत जस दरसन, द्वि० १ दरपवंत मनि माथें, तृ० ३ दरपवंत जस दरपन। ७. प्र० २ पूत। ८. प्र० २ धन संजूत।

*द्वि० १ में इस छंद के .२-.७ तथा दोहे के प्रथम दो चरण पिछले दोहे के हैं, और दोहे के दूसरे दो चरण इस प्रकार हैं : जैसा चाहिअ मनोहर मिला सो ... [illegible]व।

[२८०]

देखा चाँद सुरज जस[1] साजा। अस्टौ[2] भाउ मदन तन गाजा।
हुलसे नैन दरस मद माँते। हुलसे अधर रंग रस राते।
हुलसा बदन ओप रबि आई[3]। हुलसि हिया[4] कंचुकि न समाई।
हुलसे कुच कसनी[5] बँद टूटे। हुलसी भुजा बलय कर[6] फूटे।
हुलसी[7] लंक कि[8] रावन राजू। राम लखन दर साजहिं साजू।
आजु कटक जोरा हठि कामू[9]। आजु बिरह सो[10] होइ संग्रामू।
आजु चाँद घर आवै सूरू। आजु सिंगार होइ सब चूरू।

अंग अंग सब हुलसे केउ कतहूँ न समाइ[11]।
ठाँवहिं ठाँव बिमोहा[12] गइ[13] मुरुछा गति आइ॥

[२८१]

सखी सँभारि पियावहिं पानी। राजकुँवरि काहे कुँभिलानी[1]।
हम तो तोहि देखावा पीऊ। तूँ मुरझानि कैस भा जीऊ।
सुनहु सखी सब कहहिं बियाहू। मो कहँ जैस चाँद कहँ राहू।
तुम्ह जानहु आवै पिय साजा। यह धम धम सब मो कहँ बाजा[2]।
जेत बराती औ असवारा। आए मोर सब चालनिहारा[3]।
सोइ आगम देखत हौं[4] झँखी। आपन रहन न देखौं सखी।
होइ बियाह पुनि होइहि[5] गवना। गौनब तह बहुरि नहिं अवना।

---

[२८०] १. प्र० १ सूर कर। २. द्वि० ४, ५, पं० १ सहसहु। ३. प्र० २ ओमान चिहाई, द्वि० २, ३, ६, तृ० १ रूप रबि आए, तृ० ३ जो परे बिहसाए। ४. द्वि० १ हुलसे कुच। ५. द्वि० २ कंचुकि। ६. द्वि० ३ भुज करया गर। ७. प्र० १ हुलसा। ८. तृ० २ जो। ९. द्वि० ३, तृ० २, ३ हठि रामू, द्वि० ५ हिय कामू। १०. द्वि० २, ३ कर, तृ० १ गढ़। ११. तृ० ३ समान। १२. प्र० २ बिमोहि गा। १३. प्र० २ जो, तृ० ३ तव।

[२८१] १. प्र० १, २ मुरझानी। २. प्र० १, द्वि० ७ यह सब बाजन मोपर बाजा, प्र० २ यह सब धम धम हम सिर बाजा, द्वि० ३ यह सब धम धम मोपर बाजा। ३. प्र० १ ये सब आए मोर लेनिहारा, प्र० २ आए मोर सब चालन हारा, द्वि० ७ ये सा मोर बोलावनिहारा, तृ० २ आए मोरे चालनिहारा। ४. प्र० १, तृ० १ मैं। ५. प्र० १ चलब पुनि।

अब सो[6] मिलन कत सखी सहेलिनि[7] परा बिछोवा टूटि।
तैसि[8] गाँठि पिय जोरब जरम न होइहि छूटि॥

[२८२]

आइ बजावत पैठि[1] बराता। पान फूल सेंदुर सब[2] राता।
जहँ सोने कै चित्तरसारी[3]। बैठि बरात जानु फुलवारी[4]।
माँझ सिंघासन पाट सँवारा। दूलह आनि तहाँ बैसारा[5]।
कनक खंभ लागे चहुँ पाँती। मानिक दिया बरहिं दिन राती[6]।
भएउ अचल धुव जोगि पँखेरू[7]। फूलि बैठ थिर जैस सुमेरू[8]।
आजु दैयँ हौं कीन्ह सभागा। जत[9] दुख कीन्ह[10] नीक[11] सब लागा।
आजु सूर ससिअर घर आवा[12]। चाँद सुरुज[13] दुहुँ[14] होइ[15] मेरावा।

आजु इंद्र होइ आएउँ[16] से[17] बरात कबिलास।
आजु मिलै मोहि आछरि पूजै मन कै आस॥

[२८३]

होइ लाग जेंवनार सुसारा[1]। कनक पत्र पसरे[2] पनवारा।
सोन थार मनि मानिक जरे। राए रंक सब[3] आगें धरे।

---

६. द्वि० २ पुनि रे। ७. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ३ कत है सखि, तृ० ३ कहाँ सखि, द्वि० ५, तृ० १, पं० १ कत सखी, द्वि० ७ कत होइहि। ८. प्र० १ तौन।

[२८२] १. प्र० १, द्वि० २, ३, तृ० १, २ बैठि। २. प्र० १ रँग। ३. प्र० १ सोने केर आहि चित्रसारी, प्र० २ रची राखी सोने चित्रसारी, तृ० ३ जहँ सोने कै चित्र सँवारी। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, तृ० १, २ आनि बरात तहाँ बैसारी, द्वि० ७ बैठि बरात तहाँ सब झारी। ५. तृ० ३ बैठारा। ६. प्र० २, तृ० ३ बहु भाँती। ७. द्वि० २ जोगि भिखारी, तृ० ३ जैस सुमेरू। ८. तृ० १ जस भूल सुमेरू, तृ० ३ जस बैठ पँखेरू। ९. द्वि० २, ३, तृ० २ जस। १०. तृ० ३ सहे, पं० १ दीख। ११. प्र० २, द्वि० ४ नेग। १२. प्र० २ आजु सुरहि जनु होए मेरावा। १३. प्र० १ सूर। १४. प्र० १ सों। १५. तृ० १, द्वि० ३ भएउ। १६. प्र० १ होइ सो, प्र० २ अस आयेउँ, द्वि० १ भै पैठेउँ। १७. द्वि० १ सब रात, तृ० ३ सौ बरात, द्वि० ५, पं० १ स्यूँ (सिउँ) बरात।

[२८३] १. द्वि० ४ पसारा। २. प्र० २ साजे, तृ० ३ परसे। ३. प्र० १ कै।

रतन जराऊ[४] खोरा खोरी। जन जन आगें सौ सौ[५] जोरी।
गडुअन्ह हीर पदारथ लागे। देखि बिमोहे पुरुख[६] सभागे।
जानहु नखत करहिं उजियारा। छपि गा दीपक[७] औ मसियारा[८]।
भै[९] भिलि चाँद सुरुज कै[१०] करा। भा उदोत तैसै निरमरा।[११]
जेहि मानुस कहँ जोति न होती[१२]। तेहि भै जोति देखि वह जोती।

पाँति पाँति सब बैठे भाँति भाँति जेंवनार।
कनक पत्र तर धोती[१३] कनक पत्र पनवार॥[१४]

[२८४]

पहिलें भात परोसै आने[२]। जनहु कपूर[१] सुबास बसाने[२]।
झालर माँड[३] आए[४] घिउ पोए। ऊजर देखि पाप गए धोए।
लुचुई पूरि[५] सोहारीं परीं[६]। एक ताती औ सुठि कोंवरीं[७]।
पुनि बावन[८] परकार जो आए[९]। ना अस देखे न कबहूँ[१०] खाए।
खँडरा खांडि खँडोईं[११] खंडी। परी एकोतर सै कठहंडी[१२]।[१३]

---

४. प्र० २ जरित सब, द्वि० २ जरे सब, द्वि० ६, तृ० १, ३, पं० १ पदारथ। ५. प्र० २ दस दस, तृ० १ सै सै। ६. तृ० ३ सुर्ख। ७. प्र० २ भूले दीपक। ८. प्र० १ छपि गा चाँद सूर औ तारा। ९. प्र० १ द्वि० ७ जनु। १०. द्वि० ३ एक। ११. प्र० २, तृ० १ ना अस सूर न ससि निरमला, भा उदोत अस औरै कला। १२. प्र० १ ओती। १३. द्वि० ४ तर दौनै, द्वि० ५ बर दौनै, तृ० १ तर धरिवै।
१४. प्र० १, द्वि० ७ मँडयें केर सरहना छत्तिस कुरी सब जाति।
धनि राजा सिंघल कर जाकरि असि बराति॥
प्र० २ करहिं रहस मंडप सब एकतीस कुरीं सब जाति।
धनि रानी सिंघल महँ जाकर असि बरिआति॥

[२८४] १. द्वि० १ मात। २. तृ० ३ आनी, बसानी (उर्दू मूल)। ३. प्र० १, द्वि० ४ माँडा, तृ० ३ माँठ। ४. तृ० २ औस। ५. तृ० ३ पोरि (उर्दू मूल)। ६. प्र० २ परा सोहारि साथ तेहि बरी। ७. प्र० १ कोमल रस भरी, प्र० २ सम रस बरी, द्वि० ३ औ अति कोंवरी। ८. तृ० ३ छप्पन। ९. द्वि० २ जेंवाए। १०. प्र० १ ना अस। ११. प्र० १ जो दुइ खंड। १२. प्र० १ बरा एकोतरसै कठहंडी, द्वि० ४ परीं अको तरसो कंट भरी। १३. प्र० २ मास केर छप्पन जेवनारा, सुन मद बोरि घीउ महँ तरा।

पुनि सँधान आए बहु साँधे। दूध दही के मोरँडा[१४] बाँधे।
पुनि जाउरि पछियाउरि आई[१५]। दूध दही[१६] का कहौं मिठाई।

जेंवन अधिक सुबासिक[१७] मुख महँ परत बिलाइ।
सहस सवाद सो पावै[१८] एक कवर[१९] जौं खाइ॥

[२८५]

भै जेंवनार फिरा खँडवानी। फिरा[१] अरगजा कुंकुहँ बानी[२]।[३]
फिरे पान[४] बहुरा[५] सब कोई। लाग बियाहचार सब होई।
माँडौ सोने क गँगन[६] सँवारा। बंदनवार[७] लाग सब तारा[८]।
साजा पाट छत्र[९] कै छाहाँ। रतन चौक पूरा तेहि माँहाँ।
कंचन[१०] कलस नीर भरि धरा। इंद्र पास आनी[११] अपछरा।
गाँठि दुलह दुलहिनि कै जोरी। दुऔ जगत जो[१२] जाइ न छोरी।
बेद भनहिं पंडित तेहि ठाँऊँ। कन्या तुला रासि लै नाऊँ[१३]।

चाँद सुरुज दुइ निरमल दुवौ सँजोग अनूप।
सरुज चाँद सौं भूला चाँद सुरुज के रूप॥[१४]

---

१४. प्र० २ मोहड़ा। १५. प्र० २ बहुरिह भीख खोर सँग आई। १६. प्र० १ दही छीर, प्र० २, द्वि० ४ घिरित खांड। १७. प्र० १ सुबा सरसु, द्वि० ७, तृ० ३ सुबासना। १८. प्र० २ पावै जवंत। १९. प्र०१ गरास।

*प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३ में इसके अनंतर तीन अतिरिक्त छंद हैं। (देखिये परिशिष्ट)

[२८५] १. प्र० १ चला, प्र० २ द्वि० ७, तृ० १, भगा। २. प्र० २ पानी, द्वि० ७ सानी। ३. द्वि० १ जानहु भवा सुबासिक पानी। ४. द्वि० ३ फिर बुलान। ५. द्वि० १ पलटा। ६. द्वि० १ सोन क कनक, द्वि० ७ सबै सोने कै। ७. तृ० ३ बंदनेवार। ८. द्वि० ४, ५, तृ० २, पं० १ बारा। ९. तृ० ३ छात। १०. प्र० १ कनक जो। ११. द्वि० ३ आई। १२. प्र० १ सौं, प्र० २ महँ, तृ० ३ दिन्ह। १३. प्र० २ गोत्र उचार भए बहु भाऊ। १४. द्वि० ७ वोह वोही सौं भूली रहे एहि वोहि के रूप।

[२८६]

दुहूँ नाउँ[1] होइ गोत उचारा[2]। करहिं पदुमिनी मंगलचारा[3]।
चाँद के हाथ दीन्हि जैमाला। चाँद आनि सूरुज गियँ[4] घाला[5]।
सूरुज लीन्हि चाँद पहिराई[6]। हार नखत तरइन्ह सिउँ[7] पाई[8]।[9]
पुनि धनि भरि अंजुलि जल लीन्हा। जोबन जरम कंत कहँ दीन्हा।
कंत लीन्ह दीन्हा धनि हाथाँ। जोरी गाँठि दुहूँ एक साथाँ।
चाँद सुरुज दुहुँ भाँवरि लेहीं[9]। नखत मोंति नेवछावरि देहीं[9]।
फिरहिं दुवौ सत फेर को टेकै। सातौ फेर गाँठि सो[10] एकै।

भै भाँवरि नेवछावरि राजचार[11] सब कीन्ह।
दाइज कहौं कहाँ लगि लिखि न जाइ तत[12] दीन्ह।

[२८७]

रतनसेनि जौं दाइज पावा। गंध्रपसेनि आइ कँठ लावा[1]।
मानुस चित आन कछु निंता[2]। करै गोसाइँ न मन महँ चिंता[3]।
अब तुम्ह सिंघलदीप गोसाइँ। हम सेवक आहहिं[4] सेवकाइँ।
जस तुम्हार चितउर गढ़ देसू। तस तुम्ह इहाँ हमार नरेसू।

---

[२८६] [1]. प्र० १ नात, द्वि० १ लाग। [2]. प्र० २ सेंदुर लीन्ह कुँअरि सिर सारा, द्वि० ४, ६, पं० १ दुहूं नाँउ लै गावहि बारा, द्वि० ३ दुहूँ नाउँ लै गावहिं नारी। [3]. द्वि० ३ मंगलचारी। [4]. तृ० ३ कें। [5]. प्र० २ सूरुज लीन्ह चाँद ग्रिव डाला। [6]. तृ० ३ पहिराए,पाए (उर्दू मूल)। [7]. प्र० १, २. द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, ३ सों। [8]. प्र० २ सेंदुर चीर सोभा अति भाई। [9]. प्र० १, २ लीन्हा,कीन्हा द्वि० १, ७ दीन्हा, कीन्हा। [10]. प्र० १ पुनि, द्वि० १ तो। [11]. प्र० १, द्वि० २ काज। [12]. प्र० १ जस, द्वि० २, ३ अत।

[२८७] [1]. प्र० २ सिर नावा। [2]. प्र० १ चित्त आन कछु चिंता, प्र० २, द्वि० ६ चितै आन चित कोई, द्वि० ३ चित्त आन कछु चीता, द्वि० ५, तृ० २ चित आन कछु कोई। [3]. प्र० १ आपन चिंता, द्वि० १, ३, तृ० ३ ओ मन महँ चिंता, पं० १ न मन कर चिंता, प्र० २, द्वि० ५, ६, तृ० २ सोइ पै होई। [4]. प्र० १, द्वि० १, ६, तृ० ३ करबै, प्र० २ करिहैं, द्वि० २ ओलहिं, द्वि० ४ आपँ, द्वि० ५ जो करहिं, द्वि० ७ करहीं, तृ० १ जो रहहिं द्वि० ३, तृ० २, रहिहहिं।

जंबूदीप दूरि का काजू। सिंघलदीप करहु नित राजू।
रतनसेनि बिनवा कर जोरी। अस्तुति जोग जीभि नहिं मोरी।
तुम्ह गोसाइँ जेइँ छार छड़ाई। कै मानुस[५] असि[६] दीन्हि बड़ाई।

जौं तुम्ह दीन्ह तौ[७] पावा जियन जरम[८] सुख भोग।
नाहिं तौ खेह पाय की[९] हौं न जानौं केहि जोग[१०]॥

[२८८]

धौराहर पर दीन्हेउ बासू। सत खंड जहँवा[१] कबिलासू।
सखी सहस दुइ[२] सेवाँ आईं। जनहुँ चाँद सँग नखत तराईं।
होइ[३] मंडर ससि की चहुँ पासाँ। ससि सूरहि लै चढ़ी अकासाँ।
मिलीं जाइ ससि[४] की चहुँ पाहाँ[५]। सूर न चाँपै पावै छाँहाँ[५]।
चलहि सूर दिन अथवै जहाँ। ससि निरमल तैँ पावसि तहाँ।
गंध्रपसेनि धौराहर कीन्हा। दीन्ह न राजहि जोगिहि दीन्हा।
अब जोगी गुर[६] पाए सोई। उतरा जोग भसम गा धोई।

सात खंड धौराहर सातहुँ रँग नग लागु।
देखत गा कबिलासहि[७] दिस्टि पाप सब[८] भागु॥*

---

५. द्वि० १ भै दयाल। ६. तृ० ३ अति, द्वि० ६, पं० १ अब। ७. द्वि० १ सो। ८. द्वि० ७ मरन। ९. प्र० १ नाहिं तौ खेह औ पाय कै, प्र० २ नाहिं तौ खेह पाइ कै होतेउँ। १०. प्र० १ हौं दुखिया केहि जोग, प्र० २ हौं निजोग केहि जोग, द्वि० ४ हौं जोगी केहि जोग, द्वि० ३, ५ हौं न अहा तुम्ह जोग, द्वि० ७ हौं निरजोअ केहि जोग।

* द्वि० २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[२८८] १. प्र० १, द्वि० ५, पं० १ सातहु। २. प्र० २, द्वि० १, द्वि० ४, ३, प० १ सखी सहस दस, द्वि० २ चेरी सहसक। ३. प्र० १ भा, द्वि० १ भइ। ४. पं० १ सखिऔं। ५. प्र० १ सखी चहुँ पाहाँ, छाहाँ, तृ० ३ ससि की चहुँ पाहीं, छाहीं। ६. द्वि० ३ पुर। ७. प्र० १ देखि जोगि कबिलास महँ, द्वि० १ देखत गो धौराहर। ८. द्वि० २ कै।

* द्वि० ३, ५, ६, तृ० ३ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं, और द्वि० २ में उन्हीं में से एक है। (देखिए परिशिष्ट)

[२८९]

सात खंड सातौ कबिलासा। का बरनौं जस उत्तिम बासा[1]।
हीरा ईंटि कपूर गिलावा। मलयागिरि चंदन सब लावा[2]।
बिसुकर्मैं सैं हाथ[3] सँवारी। सात खंड सातौ चौपारी[4]।
चूना कीन्ह अवटि गज[5] मोंती। मोंतिहु चाहि अधिक सो[6] जोती।
अति निरमर नहि जाइ बिसेखा। जस दरपन महँ दरसन[7] देखा।
भुँइ गच जानहु समुँद हिलोरा। कनक खंभ जनु[8] रचेउ हिँडोरा।
रतन पदारथ होइ उजियारा। भूले दीपक औ मसियारा।

तहँ आछरि पदुमावति रतनसेनि के पास।
सातौ सरग हाथ जनु आए[9] औ सातौ कबिलास॥

[२९०]

पुनि तहँ[1] रतनसेनि पगु धारा। जहँ नव रतन सेज सोवनारा।
पुतरीं गढ़ि गढ़ि[2] खंभन्ह काढ़ीं। जनु सजीव सेवाँ सब ठाढ़ीं।[3]
काहू हाथ चंदन कै खोरी। कोइ सेंदुर की गहे[4] सिंधोरी।
कोइ केसरि कुंकुहँ लै रही[5]। लावै अँग रहसि जनु चही[6]।
कोई गहें कुंकुमा चोवा। दरसन आस[7] ठाढ़ि मुख जोवा।

---

[२८९] १. प्र० २ जग ऊपर अवासा। २. तृ० ३ औ नग लाइ सरग लै आवा। ३. प्र० १ आप। ४. प्र० १ तिन्हहि साथ चहुँ दिसि चौपारी, प्र० २ तेहि पर खंड खंड चौपारी। ५. प्र० १, २ कै। ६. तृ० १ तेहि, द्वि० ३ वहि। ७. प्र० १ दरपन महँ, प्र० २, तृ० २, च० १, पं० १ दरसन सब, द्वि० ७ दरपन लै। ८. प्र० १, द्वि० १ सब, द्वि० ६ जुरि।

* प्र० १ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है, द्वि० ३ में भी इसी प्रकार एक अतिरिक्त छंद है, किन्तु वह प्र० १ वाले छंद से भिन्न है। (देखिए परिशिष्ट)

[२९०] १. द्वि० २ तहवाँ। २. तृ० ३ सब। ३. प्र० १ में इसके अनंतर की छंद की सभी पंक्तियाँ बाद वाले छंद की हैं। ४. द्वि० ३ लीन्हि। ५. प्र० २, द्वि० ७ रहीं। ६. प्र० २, द्वि० ७ लावै अगर हँसी जनु रहीं। ७. प्र० २, द्वि० २ दहुँ कब चाह, द्वि० ६, ७, कब धनि माँग, तृ० १ दरसन आइ।

कोइ बीरा कोइ लीन्हे बीरी। कोइ परिमल अति सुगँध समीरी।
काहू हाथ कस्तुरी मेदू। भाँतिन्ह भाँति[8] लाग तस[9] भेदू।

पाँतिन्ह पाँति चहूँ दिसि पूरी[10] सब सोंधे कर हाट।
माँझ रचा[11] इंद्रासन[12] पदुमावति कहँ पाट॥

[२९१]

सात खंड ऊपर[1] कबिलासू। तहँ सोवनारि[2] सेज सुखबासू।[3]
चारि खंभ[4] चारिहुँ दिसि धरे[5]। हीरा रतन पदारथ जरे[6]।[7]
मानिक दिया बरै औ[8] मोंती। होइ अँजोर रैनि[9] तेहि जोती।[10]
ऊपर रात चँदोवा छावा[11]। औ भुइँ सुरँग बिछाउ बिछावा[11]।
तेहि महँ पलँग सेज सो डासी[12]। का कहँ ऐसि रची सुखबासी[12]।
दुहुँ दिसि[13] गेडुआ औ गलसुई। काँचे पाट भरी धुनि रूई।
फूलन्ह भरी ऐस केहि जोगू[14]। को तेहि पौढ़ि मान सुख[15] भोगू।

---

८. प्र० २ कोइ किछु लिए। ९. द्वि० ६, पं० १ सब। १०. प्र० २, द्वि० १, २, ३, ५, पं० १ चहूँ दिसि, द्वि० ७ रही सम चहुँ दिसि। ११. द्वि० ३ धरा। १२. प्र० २ सिंघासन। १३. प्र० २, द्वि० ६ ७ केर।

२९१] द्वि० ५ साजा, पं० १ सातौ। २. द्वि० ४, ६ तहँवाँ नारि। ३. प्र० २ (यथा. ४) नग झूलहिं सब भाँति अमोला, लहरैं उठहिं पवन जब डोला। ४. द्वि० १ खंड। ५. द्वि० १ खंड लागा। ६. नागा। ७. इस छंद की .१ तथा .२ के स्थान पर प्र० १ में पूर्व के छंद की. १, .२ हैं, और द्वि० ७ में हैं. चारि खंभ साजे चौबारा, का बरनौं उत्तिम सोवनारा। खाँभन लगे पदारथ सोई, बरहिं दीप उजिआरा होई। ८. प्र० २ जरावा, द्वि० ४, तृ० २ जो औ। ९. प्र० २, द्वि० ६ रहा। १०. प्र० १, द्वि० ७ मसिअर दीप जोति कहँ ओती। जनहुँ बुझाइ देखि वह जोती। ११. प्र० २ ताना, भाव हाव नहिं जाइ बखाना। द्वि० ७ ताना, औ भुवपती वोह सुरँग बिछाना। तृ० २ ताना, औ भुइँ रात बिछाउ बिछाना। १२. प्र० २ दासी, कीन्ह दसाव फूल बहु बासी। द्वि० २ सँवारी, काकर ऐसि रची सुख वारी। १३. प्र० १ तापर, द्वि० ७ ऊपर। १४. प्र० २ बिधि अस जोग रचा जेहि जोगू। १५. द्वि० २ रस।

अति सुकुमारि सेज सो साजी[16] छुवै न पावै कोइ।
देखत नवै खिनुहि खिन पाँव धरत कस होइ॥

[२६२]

सूरुज[1] तपत सेज[2] सो पाई। गाँठि छोरि ससि[3] सखी छपाई।
अहै कुँवर हमरे अस चारू। आजु कुँवरि कर करब सिंगारू।
हरदि उतारि चढ़ाएब रंगू। तब निसि चाँद सुरुज[4] सौं[5] संगू।
जनु चात्रिक मुख हुति गौ[6] स्वाती[7]। राजहि चकचौहट तेहि भाँती।
जोगि छरा जनु अछरिन्ह साथा। जोग हाथ हुति भएउ बेहाथा[9]।
वै चतुरा गुरु[10] लै उपसईं। मंत्र अमोल[11] छीनि[12] लै गईं।
बैठेउ खोइ जरी औ बूटी। लाभ[13] न आव मूर भौ टूटी।

खाइ रहा ठग लाडू[14] तंत मंत बुधि[15] खोइ।
भा धौराहर बनखँड[16] ना हँसि आव न रोइ॥

[२६३]

अस तप करत गएउ दिन भारी[1]। चारि पहर बीते जुग चारी।

---

१६. प्र० १ सेज सो, प्र० २, द्वि० ४, ६, द्वि० २, ३, ५, तृ० २ सेज सो डासी, पं० १ सेज तहँ डासी।

[२९२] १. प्र० १, २, द्वि० ४ राजैं। २. प्र० १, द्वि० ६ सेज जो, प्र० २ सेज जब, द्वि० १ चाँद तस। ३. प्र० १, २, द्वि० ४ छबि। ४. प्र० १ सूर। ५. तृ० १ दुहुँ। ६. प्र० २ पावै, द्वि० स्वाति गै, द्वि० ५, च० १ बूँद, द्वि० ३ हुत कर। ७. द्वि० २, पं० १ सांती। ८. प्र० १ सों, प्र० २, तृ० २ केर, द्वि० २, ४, ५, च० १ करि, तृ० १ अब। ९. द्वि० २, ३, तृ० १, निहाथा। १०. प्र० १, द्वि० ७, पं० १ वै जात्रागुर, प्र० २ देइ चित्र गढ़, द्वि० ३ दै चित्र कर (उर्दू मूल)। ११. प्र० १ मूलमंत्र, प्र० २ मात्रामूल, द्वि० १ मातरमूल, तृ० ३ मंत्रामूल, द्वि० ४ मंत्रमूल, द्वि० ६ मंत्र अबोल। १२. प्र० २ सीध।। १३. प्र० १, २, द्वि० १, ५, ७, ३, तृ० १, च० १ बोल। १४. तृ० ३ ठक लादू (उर्दू मूल)। १५. प्र० २ बुधि सब। १६. द्वि० ७ अधबन।

[२९३] १. च० १ चारी।

परी साँझ पुनि सखी सो[२] आईं। चाँद सो रहै न उईं तराईं[३]।[४]
पूछेन्हि[५] गुरू कहाँ[६] रे चेला। बिनु ससियर कस सूर अकेला।
धातु कमाइ सिखे तैं जोगी। अब कस जस निरधातु बियोगी।
कहाँ सो खोए बीरौ लोना। जेहि तें होइ रूप औ सोना।
कस हरतार पार नहिं पावा[७]। गंधक कहाँ[८] कुरकुटा खावा[९]।
कहाँ छपाए चाँद हमारा[१०]। जेहिं बिनु जगत रैनि अँधिआरा।[११]

नैन कौड़िया हिय समुँद गुरू सो तेहि महँ[१२] जोति।
मन मरजिया न होइ परै[१३] हाथ न आवै मोंति॥*

[२६४]

का बसाइ जौं गुरु अस बूझा। चकाबूह अभिमनु[१] जो जूझा[२]।
बिख जो देहि अंब्रित देखराईं। तेहि रे निछोहिहिं को पति आईं।
मरै सो जान होइ तन सूना[३]। पीर न जानै पीर बिहूना।
पार न पाव जो गंधक पिया। सो हरतार[४] कहौ किमि[५] जिया।

---

२. प्र० १ जो। ३. चांद संग जो रहीं तराईं, द्वि० २ चांद सो उवा और उईं तराईं, तृ० ३ चाँद न उईं सो रहीं तराईं, द्वि० ४ चाँद रहा उपनी जो तराईं, द्वि० ७ चाँद सो रही तारा सब जाईं, द्वि० ५, तृ० १ चाँद सूर होइ उईं तराईं, द्वि० ३ चाँद सूर सँग उईं तराईं, तृ०, पं० १ चाँद सो रहैं न उईं तराईं, च० १ चाँद सुरुज होइ उईं तराईं। ४. प्र० २ (यथा. ७) काहे ठग मूरी अस खाए. खोए जानु परा किछु पाए। ५. प्र० २ बिन वोइ। ६. प्र० १ आइ। ७. द्वि० १ मारा। ८. प्र० १, द्वि० ३ कया, प्र० २ भा, द्वि० २ बाजा, च० १ कैर। ९. तृ० ३ पावा, द्वि० ३ खारा। १०. द्वि० २ अस उजियारा। ११. द्वि० २ निुसत कै सराँक भा डोलसि, सीस तराहीं बात न बोलसि। १२. प्र० १, २ तेहि। १३. द्वि० २ धसै।

*द्वि० ४, ६, ख में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिये परिशिष्ट)

[२९४) १. द्वि० १, तृ० ३ अहिबर्न। २. प्र० २ ऊतर देइ जो कोई पूँछा, बोल अरथ बिनु जानहु छूँछा। ३. प्र० २ चूना। ४. प्र० २ हत्यार। ५. प्र० २ कैव।

सिद्धि गोटिका जापहँ नाहीं[६]। कौनु धातु[७] पूँछहु तेहि पाहीं[८]।
अब तेहि बाजु राँग[९] भा डोलौं[१०]। होइ सार तब[११] बर[१२] कै बोलौं[१०]।
अभरक कै तन एँगुर[१३] कीन्हा। सो तुम्ह फेरि अगिनि महँ[१४] दीन्हा।

मिलि जौ पिरीतम बिछुरै[१५] काया अगिनि जराइ।
कै सौ मिलै तन तपति[१६] बुझै कै मोहि[१७] मुएँ बुझाइ॥

[२९५]

सुनि कै बात सखीं सब हँसीं। जनहुँ रैनि तरईं[१] परगसीं।
अब सो चाँद गँगन महँ छपा। लालि[२] किहें कत[३] पावसि तपा।
हमहुँ न जानहिं दहुँ सो कहाँ। करब खोज औ बिनउब तहाँ।
औ अस कहब आहि परदेसी। करु माया हत्या जनि लेसी।
पीर तुम्हार सुनत भा छोहू। दैय मनाव होउ अब[४] ओहू।
तूँ जोगी तप करु मन[५] जथा। जोगिहि कवनि राज कै कथा[६]।
वह रानी जहवाँ सुख राजू। बारह अभरन करै सो साजू।

जोगी दिढ़ आसन करु अस्थिर धरु मन[७] ठाउँ।
जौं न सुनै तौ अब सुनु[८] बारह अभरन नाउँ॥

---

६. प्र० १, द्वि० ७, लीन्हेउ छोरी, तृ० २ लीन्ह अजोरी, द्वि० १, ३, ५, ६, तृ० ३, च० १ ज़ानहिं नाहीं। ७. प्र० २ साधु। ८. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २ अस पूँछहु मोरी। ९. प्र० १, द्वि० ७ निरँग। १०. द्वि० १ नारंग नवेला, लोला। ११. तृ० २ को अतिरिक्त सभी में तौ (हिंदी मूल)। १२. द्वि० ३ घहर। १३. प्र० १, २ सो तुझ ईंगुर, तृ० ३ कै ते नेगुर (उर्दू मूल)। १४. प्र० १, २, द्वि० २ मुख। १५. द्वि० ४ बिछुरि छपै। १६. प्र० १, द्वि० ३ तन तब, तृ० ३ अब तन, तृ० १, द्वि० ३, च० १ अब तब। १७. द्वि० २ एहि।

[२९५] १. प्र० १ जानहु निसि तरईं, तृ० ३ जानहु रैनि तारे, द्वि० ५ जनु घन महँ दामिनि। २. द्वि० ६, तृ० १ लागि, द्वि० ४, ७ लाली। ३. प्र० १ कहँ, तृ० ३ कस। ४. प्र० १ होउ जस, प्र० २ होउ अस, द्वि० १ अस करौ। ५. प्र० १ को मन। ६. प्र० २ तूँ जोगी फिरि करु तप जोगा, तुम कहँ कौन राज सुख भोगा। ७. प्र० १, २ औ मन अस्थिर। ८. प्र० १, द्वि० ७ हम तोहिं कहहिं आप सुनु, प्र० २ सुने न कबहूँ सो सुनहु।

[२९६]

प्रथमहि मंजन होइ[१] सरीरू। पुनि पहिरै तन[२] चंदन चोरू।
साजि[३] माँग पुनि सेंदुर सारा। पुनि लिलाट रचि तिलक सँवारा।
पुनि अंजन दुँहु नैन करेई। पुनि कानन्ह कुंडल पहिरेई।
पुनि नासिक भल फूल अमोला। पुनि राता मुख खाइ तँमोला।
गियँ अभरन पहिरै जहँ ताईं। औ पहिरै कर कँगन कलाईं।
कटि छुद्रावलि अभरन[४] पूरा[५]। औ पायल पायन्ह भल चूरा।
बारह अभरन एइ बखाने। ते पहिरै बरहौ असथाने।

पुनि सोरह सिंगार जस[६] चारिहुँ जोग[७] कुलीन[८]।
दीरघ चारि चारि लघु चारि सुभर चहुँ खीन[९]॥

[२९७]

पदुमावति जो सँवरै[१] लीन्ही। पूनिव राति दैयँ असि[२] कीन्ही।[३]
कै मंजन तब[४] किएहु अन्हानू। पहिरे चीर गएउ छपि भानू।
रचि पत्रावलि[५] माँग सेंदूरा[६]। भरि मोतिन्ह औ मानिक पूरा[६]।
चंदन चित्र भए बहु[७] भाँती। मेघ घटा जानहुँ बग पाँती।
सिरै जो[८] रतन माँग बैसारा। जानहुँ गँगन टूट लै[९] तारा।

---

[२९६] १. प्र० १, द्वि० १ करै। २. प्र०१ औ पहिरै तन, तृ० ३ तब पहिरै पुनि। ३. प्र० १ सखी। ४. प्र० १. द्वि० ६ सबद होइ। ५. प्र० २ पहिरे लांक छुद घंटिका रे पूरा। ६. द्वि० १ सोरह सिंगार बनी धनि। ७. प्र०२ चौक (उर्दू मूल), तृ० ३ जुग (उर्दू मूल)। ८. द्वि० १ औ चारिउ जुग लीन्ह। ९. द्वि० १ जो कीन्ह।

[२९७] १. प्र० १ सेरै। २. प्र० १, २ सो, द्वि० २, ४, च० १ ससि। ३. द्वि० १ पुनि पदुमावति कीन्ह सिंगारा, पनिव राति कीन्ह अवतारा। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, च० १ तन, द्वि० १ तिय, द्वि० ६ मन। ५. द्वि० २ बनै कोद (औ?), तृ० ३ रचि पुत्रावलि (उर्दू मूल)। ६. प्र० २ माँग सँवारी, पूरी, द्वि० २ माँग सेंदुरी, परी। ७. प्र० १, २, द्वि० ३ चीर भए बहु, द्वि० २ चीर भए दुहुँ, तृ० ३ चीर भए तेहिं, द्वि० ४, ५, ६ चीर पहिरि बहु, च० १ चीर पहिरि भलि। ८. प्र० २ सीस, द्वि० ६ रचि द्वि० ७ सरि। ९. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ७, तृ० १, च० १ टूट निसि, द्वि० १ छूट निसि।

तिलक लिलाट धरा तस डीठा। जनहुँ दुइज पर नखत[10] बईठा।[11]
मनि कुंडल खुँटिला[12] औ खूँटी। जानहुँ परी कचपची टूटी[13]।[14]

पहिरि जराऊ ठाढ़ि भौ बरनि न आवै[15] भाउ।
माँग क दरपन गँगन भा[16] तौ ससि तार[17] देखाउ[18]॥

[२६८]

बाँक नैन औ अंजन रेखा। खंजन जनहुँ सरद रितु देखा।
जब जब[1] हेरु फेरु[2] चखु मोरी। लुरै सरद[3] महँ[4] खंजन जोरी।
भौंहैं धनुक धनुक पै हारे। नैनन्ह साँधि बान जनु[5] मारे।[6]
कनक फूल[7] नासिक[8] अति सोभा। ससि मुख आइ सूक[9] जनु लोभा।
सुरँग अधर औ लीन्ह[10] तँबोरा। सोहै पान फूल कर जोरा।
कुसुम गेंद अस सुरँग कपोला। तेहि पर अलक भुअंगिनि डोला।
तिल कपोल अलि पदुम बईठा। बेधा सोइ जो वह तिल डीठा।

---

१०. द्वि० १ सूक। ११. प्र० २ अवर मुख पनबीरी सोहहि। तैसे घन दामिनी मोहहि। १२. द्वि० २, ३, तृ० १ और खूँट, तृ० ३ लागु, द्वि० ५ खूँट औ। १३. प्र० १ सीपी। १४. प्र० २ मनि कुंडल पहिराए लोने, कींधौं लवकि रहे दुहुँ कोने, द्वि० २, ७ रचि पत्रावलि पाटी पारी, औ रचि चीर बिचित्र सँवारी। १५. प्र० १ द्वि० ४ कहि न जाइ तस, द्वि० ७ सुंदर बरन वोहि के। १६. प्र० १, द्वि० ७ दरपन भयो गगन तस निसि, प्र०२ ताहि क दरपन गगन भा, द्वि० ४, ६ मानहु दरपन गगन भा। १७. प्र० १, द्वि० ७ नखत। १८. द्वि० ३ सीस तार दिखराव।

[२९८] १. द्वि० ४, च० १ जो जो (हिंदी मूल) २. प्र० २ निरखि हेर चखु, द्वि० १ चीर पहिरि करि। ३. प्र० २, तृ० १ चंद। ४. प्र० १, द्वि० १ रितु, तृ० १ मुख। ५. प्र० २, द्वि० २ बान बिख, द्वि० ४ जनु चाहैं, च० १ बान जम। ६. द्वि० १ भौंहैं धनुक धना तौ हारू, लोचन फेरि बान जस मारू ७. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, च० १ पं० १ करन फूल। ८. प्र० १, द्वि० ७ सरवन। ९. तृ० ३, च० १, पं० १ सुवा। १०. प्र० २ भोनु।

देखि सिंगार अनूप बिधि[11] बिरह चला तब भागि।
कालकूट एइ ओनए[12] सब मोरें जिय लागि॥

[२९९]

का बरनौं अभरन उर[1] हारा[2]। ससि पहिरें नखतन्ह कै[3] मारा[2]।
चीर चारु औ चंदन चोला। हीर हार नग लाग अमोला[4]।
तिन्ह[5] झाँपी रोमावलि कारी। नागिनि रूप डसै हत्यारी।
कुच कंचुकी सिरीफल उभै[6]। हुलसहिं चहहिं कंत हिय चुभै[6]।
बाँहन्ह बाँहू टाड सलोनी। डोलत बाँह भाउ गति[7] लोनी।
नीवी[8] कँवल करी जनु बाँधी। बिसा लंक जानहु दुइ आधी।
छुद्रघंटि कटि कंचन तागा[9]। चलै तौ उठै छतीसौ रागा।

चूरा पायल अनवट बिछिया[10] पायन्ह परे[11] बियोग[12]।
हिए लाइ टुक हम कहँ[13] समदहु तुम्ह जानहु अउ[14] भोगु[15]॥

[३००]

अस बारह सोरह धनि साजै। छाज न औरहि ओहि पै छाजै।

---

११. प्र० १ धनि, द्वि० १ सो, द्वि० २ सब। १२. प्र० १ काल कुष्ट सब ओनइ रहे, द्वि० २ काल कष्ट वोह ओनवा, द्वि० १ काल कष्ट अस ओनए, द्वि० २, ५, ६, काल कष्ट बहु ओनवा, द्वि० ४ काल कष्ट सब ओनवा, द्वि० ७ काल केश सब ओनइ रहे, तृ० १, च० १ काल कष्ट एह ओनवा, द्वि० ३ काल कष्ट बहु औ तब।

[२९९] १. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ७, तृ० १, च० १, पं० १ औ। २. द्वि० १ हारू, चारू, तृ० ३ हारू, मारू। ३. तृ० ३ कर। ४. प्र० १ पहिरें सब सब नखत अमोला, द्वि० १ चीर हार सुठि नखत अमोला। ५. प्र० २, द्वि० २ तेहि, द्वि० ४ तेहाँ। ६. प्र० १, तृ० ३ उभी, चुभी, द्वि० १ उभा, चुभा। ७. प्र० १, द्वि० ७ अति। ८. प्र० १, द्वि० १, ५, ७, च० १, पं० १ तरुनी, द्वि० २, तृ० २ बिनवै, तृ० ३ करुनी, द्वि० ४ तरिवन, तृ० १ तरईं, द्वि० ३ बरनी। ९. प्र० १, द्वि० ७ लागा। १०. तृ० २ अनवट। ११. प्र० १ परा, तृ० ३ परी (उर्दू मूल)। १२. तृ० २ बिरोग। १३. प्र० १ लाइकै, प्र० २ लाइ मकुहम कहँ, द्वि० १ लाइ चहैं हम कहँ, द्वि० २ लाइ हम कहँ, द्वि० ७ लाइ हम। १४. प्र० २ एह, द्वि० ४, च० १ अब, द्वि० ५ अस। १५. द्वि० ४ तुम्ह जानहु भोग।

बिनवहि सखीं गहरु नहिं कीजै[1]। जेइँ जिउ दीन्ह ताहि जिउ दीजै।
सँवरि सेज धनि मन भौ संका। ठाढ़ि तिवानि टेकि कै लंका।
अनचिन्ह पिउ[2] काँपै मन माहाँ[3]। का मैं कहब गहब जब[4] बाँहाँ।[5]
बारि बएस[6] गौ प्रीति न जानी। तरुनी भइ मैमंत भुलानी[7]।
जोबन गरब कछु मैं नहिं चेता। नेहु न जानिउँ स्याम कि सेता[8]।
अब जौं कंत पूँछिहि सेइ[9] बाता। कस मुँह होइहि पीत[10] कि राता।

हौं सो बारि औ दुलहिनि पिउ सो तरुन औ तेज।
नहिं जानौं कस होइहि चढ़त कंत की सेज॥

[३०१]

सुनि धनि डर हिरदैं तब ताईं। जौ लगि रहसि मिला नहिं ·ाईं।
कवन सो करी जो भँवर न राई[1]। डारि न टूटै फर[2] गरुआई।
माता पिता बियाही सोई। जरम निबाह पियहि[3] सो[4] होई।
भरि जमबार चहै जहँ रहा[5]। जाइ न मेंटा ताकर कहा।
ताकहँ बिलँबु न कीजै बारी। जो पिय आएसु सोइ[6] पियारी।
चलहु बेगि आएसु भा जैसें। कंत बोलावै रहिए कैसें।

---

[३००] १. द्वि० १ गरब नहिं कीजै, द्वि० ५, ६ न गहरु करीजै, पं० १ न कोइ करीजै। २. द्वि० २ अब जहँ, पिउ, तृ० ३ आँचन्ह पिउ (उर्दू मूल), च० १ अजहुँ बियोग। ३. द्वि० ३ नाउँ सुनत हौं दहुँ कस नाटाँ। ४. प्र० १ गहिहि जब, तृ० ४ गहिहि जौं, द्वि० ६ जो पकरिहि, च० १ गहब जौ। ५. द्वि० १ जबहि कंत हँसि पूँछिहि लेखा, स्रवन न सुना नैन नहिं देखा। ६. द्वि० २ बारह बरिस। ७. प्र० २ बौरानी। ८. प्र० २ औ नहिं जान्यो काकर सेता, द्वि० ६ अनबन्ह जान्यों स्याम कि सेता, च० १ तहाँ न जान्यों स्याम किसेता। ९. प्र० २, द्वि० ३ हँसि, तृ० ३ सब, द्वि० ५ सति। १०. तृ० ३ पेत (उर्दू मूल)।

[३०१] १. प्र० २ भँवर न बसाई, द्वि० १ भँवर पराई। २. द्वि० ४ टूट पुहुप। ३. प्र० १, द्वि० ५, ६, कंत, च० १ पै पिय। ४. द्वि० २, तृ० २ सँग। ५. प्र० २ चाहिअ जस रहा, तृ० ३ चहै सो चाहा, च० १ रहै जहँ चहा। ६. प्र० १ पीय।

मान न करु थोरा[७] करु लाडू[८]। मान करत रिस[९] मानै चाडू।
साजन लेइ पठाइया आएसु जेहिं क अमेंट[१०]।
तन मन जोबन साजि सब देइ[११] चलिअ[१२] लै[१३] भेंट[१४]॥

[३०२]

पदुमिनि गवँन हंस गौ दूरी[१]। हस्ती[२] लाजि मेल सिर[३] धूरी।
बदन देखि घटि[४] चंद छपाना। दसन देखि छबि[५] बीजु लजाना[६]।
खंजन छपा देखि कै नैना। कोकिल छपा सुनत[७] मधु[८] बैना।
गीवँ देखि कैं छपा मँजूरू। लंक देखि कै छपा सदूरू।
भौंह धनुक जो छपा अकाराँ[९]। वेनी बासुकि छपा पताराँ[९]।
खरग छपा नासिका बिसेखी[१०]। अंम्रित छपा अधर रस पेखी[११]।
भुजन[१२] छपानि कँवल[१३] पौनारी। जंघ[१४] छपा केदली होइ बारी[१५]।
आछरिं रूप छपानीं जबहिं चली धनि साजि।
जावँत गरब गहीलि हुतिं[१६] सबै छपीं मन लाजि॥

[३०३]

मिलीं तराईं सखी सयानीं। लिए सो चाँद सुरुज पहँ आनीं।[१]

---

७. प्र० १ मन करु थार हिया, प्र० २ मान न करु खारा, द्वि० १, ३, तृ० ३, च० १, पं० १ मान न करु थारा, द्वि० २ मान छाड़ि थोरा।
८. प्र० २ सोई, साई। ९. तृ० ३ रस। १०. प्र० २ जेहि कह मेट, द्वि० १, २ जाइ न मेंट, तृ० १ जाइ अमेट। ११. प्र० २ लेइ। १२. प्र० १ चली देन। १३. द्वि० ३, ५ पिय। १४. च० १ पुनि हम मिलहिं कि ना मिलहिं लेहु सहेलिहु भेंटि।

[३०२] १. द्वि० २ चोरी। २. प्र० २ कुंजल। ३. द्वि० १ चढ़ावै। ४. प्र० २ छबि, द्वि० २, तृ० २ घन, तृ० ३ घट (उर्दू मूल)। ५. प्र० २ छटा, द्वि० २, तृ० २ छपि, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० ३, च० १, पं० १ कै। ६. प्र० १, द्वि० ७ लुकाना, पं० १ बिलाना। ७. प्र० २, द्वि० ७ देखि। ८. प्र० २, च० १, पं० १ वह, प्र० २, द्वि० ७ मुख। ९. द्वि० ५ देखि जो धनुक छपाना, बासुकि छपा लजाना। १०. प्र० १ छपाना नासिक देखी। ११. तृ० ३ बिसेखे, पेखे, प्र० २ बिसेखी, देखी (उर्दू मूल)। १२. द्वि० ४, ५ पहुँचन्ह। १३. तृ० ३ पावन। १४. प्र० २ खंजन। १५. प्र० १ केदलि छपा जंघ देखि बारी। १६. प्र० १, द्वि० १, च० १ गहीली, द्वि० ४, पं० १ गहीलि जग।

[३०३] १. प्र० १, द्वि० ७ लै जो चली ससि नखत तराईं, लिये सो चाँद सुरुज पहँ आईं; प्र० २, द्वि० ६ मिलि सो गौनी सखीं तराईं, लिए चाँद सूर पहं आईं:

पारस रूप चाँद देखराई[२]। देखत सुरुज गएउ मुरुछाई।
सोरह कराँ दिस्टि ससि कीन्ही। सहसौ करा सुरुज कै लीन्ही।
भा रवि अस्त तराइन हँसें। सुरुज न रहा चाँद परगसें[३]।
जोगी आहि न भोगी होई[४]। खाइ कुरकुटा गा परि[५] सोई।
पदुमावति निरमलि जसि गंगा। तोहि[६] जो कित[७] जोगी भिखमंगा।
अबहुँ[८] जगावहिं चेला जागू। आवा गुरू पाय उठि लागू[९]।

बोलहिं सबद सहेलीं कान लागि गहि माँथ।
गोरख आइ ठाढ़ भा उठु रे चेला नाथ[१०]॥

[३०४]

गोरख सबद सुद्ध[१] भा राजा। रामा सुनि[२] रावन होइ गाजा।[३]
गही[४] बाँह धनि सेजवाँ[५] आनी। आँचर ओट रही छपि रानी।
सकुचै डरै मुरै मन नारी[६]। गहु न बाँह रे जोगि भिखारी।
ओहट होहि जोगि तोरि चेरी[७]। आवै बास कुरुकुटा केरी।
देखि भभूति छूति मोहि लागा। काँपै चाँद राहु सौं भागा।
जोगी तोरि तपसी कै काया। लागी चहै अंग मोहि छाया।
बार भिखारि न माँगसि भीखा। माँगै आइ सरग चढ़ि सीखा।

च० १ आई दरसन कै सखी सयानी, लिए सो चाँद सुरुज पहँ आनी। २. प्र० १, २ जो आई। ३. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ६, ७, च० १ के गसे, द्वि० १ जब गसें। ४. द्वि० ५, च० १ कोई। ५. प्र० २ जरि। ६. प्र १, द्वि० २, ४ नाहिं, प्र० २, द्वि० ३, तृ० १ नाहीं, द्वि० ५ तेहिं। ७. प्र० १, तृ० ३ जोग, द्वि० १ लायक। ८. प्र० १ अजहुँ, द्वि० १ आइ। ९. प्र० १, च० १ जागइ, लागइ, द्वि० ४ जागहि, लागहि। १०. प्र० १ उठहु न चेला नाथ, प्र० २ उठहु चेला नाथ, तृ० ३ उठु रे जोगी नाथ, द्वि० ७ उतर दे चेला नाथ।

[३०४] १. तृ० ३ सिध। २. प्र० १, द्वि० ७ राम सुना। ३. प्र० २ पुनि अस सबद अमिअ अस लागा, निद्रा छुटी सति अस जागा ४. तृ० २ गहिकै। ५. प्र० १ सेजहिं, प्र० २ सेज्या, द्वि० १, ७ सेज सो, द्वि० २, ३ सेजियाँ, तृ० ३ सेज औ, तृ० २ सेज धनि, च० १, पं० १ सेज पर। ६. द्वि० २ सकुचति डरइ मुरइ, द्वि० ७ सकुची रही मारि। ७. प्र० १ गहि बाँह न मोरी। ८. प्र० १ होइ सो।

जोगि भिखारी कोई[८] मँदिर न पैसै[९] पार[१०]।
माँगि लेहि किछु भिख्या जाइ ठाढ़ होहि बार॥

[३०५]

अनु तुम्ह कारन पेम पियारी। राज छाँड़ि कै भएउँ[१] भिखारी।[२]
नेह तुम्हार जो हिए समाना। चितउर माँह न सुमिरेउँ आना।
जस मालति कह भँवर बियोगी। चढ़ा बियोग[३] चलेउँ होइ जोगी।
भएउँ भिखारि नारि तुम्ह[४] लागी। दीप पतँग होइ अँगएउँ आगी।
भँवर खोजि जस पावै केवा[५]। तुम्ह काँटे[५] मैं जिव पर छेवा[६]।
एक बार मरि मिलै जौं आई। दोसरि बार मरै कत जाई।
कत तेहिं मीचु जो मरि कै जिया। भा अम्मर[७]मिलि कै[८] मधु पिया।

भँवर जो पावै कँवल कहँ बहु आरति बहु आस।
भँवर होइ नेवछावरि कँवल देइ हँसि बास॥

[३०६]

अपने मुँह न बड़ाई छाजा। जोगी कतहुँ होहिं नहि[१] राजा।
हौं रानी[२] तूँ जोगि भिखारी। जोगिहि भोगिहि कौन[३]चिन्हारी।
जोगी सबै छंद अस[४] खेला। तूँ भिखारि[५] केहि माहँ अकेला।
पवन बाँधि उपसवहिं अकासाँ। मनसहिं जहाँ जाहिं तेहि पासाँ।
तैं तेहि भाँति सिस्टि यह[६] छरी। एहि भेस रावन सिय हरी।

प्र० १, २, द्वि० ७, पं १ पैठें। १०. तृ० २, ३, च० १, प० १ बार।

[३०५] १. प्र० १ भा बिरह, प्र० २, द्वि० ६ भा जोगि। २. द्वि० १ अनु मैं तोहि नित पेम सो खेला, राज छाँडि कंथरि गियँ मेला। ३. द्वि० ३ तस तोहिं लागि। ४. प्र० १ तुम्हहि धनि। ५. द्वि० ४ कारन। ६. प्र० १ जीव परेवा, प्र० २ जीव पछेवा। ७. द्वि० २ भँवर कमल। ८. प्र० १ अंम्रित, द्वि० ६ सो अमर।

[३०६] १. प्र० १ होत इहिं। २. तृ० ३ राजा। ३. द्वि० २, तृ० ३ कैसि। ४. प्र० १ पै। ५. तृ० १ रे जोगि। ६. प्र० १ सब।

भँवरहि मींचु नियर जब[७] आवा। चंपा[८] बास लेइ कहँ धावा।
दीपक जोति देखि उजियारी। आइ पतँग[९] होइ परा भिखारी।

रैनि जो देखिअ चंद मुख[१०] मकु[११] तन होइ अनूप[१२]।
तहूँ जोगि तस भूला भै[१३] राजा के रूप[१४]॥

[३०७]

अनु धनि तूँ ससिअर निसि माहाँ। हौं दिनअर तेहि की तूँ छाहाँ।
चाँदहि कहाँ जोति औ करा। सुरुज कि जोति चाँद निरमरा।
भँवर बास चंपा नहिं लेई। मालति जहां तहाँ[१] जिउ देई।
तुम्ह निति भएउँ पतँग[२] कै करा। सिंघल दीप आइ उड़ि परा।
सेएउँ महादेव कर बारू। तजा अन्न भा पवन अधारू।
तुम्ह सौं प्रीति गाँठि हौं जोरी। कटै न काटे छुटै न छोरी।
सीय भीख रावन कहँ दीन्ही[३]। तूँ असि निठुर[४] अँतरपट कीन्ही।

रंग तुम्हारे रातेउँ चढ़ेउँ गँगन होइ सूर।
जहँ ससि सीतल कहँ तपनि[५] मन इंछा धनि[६] पूर॥

[३०८]

जोगि भिखारि करसि बहु बाता। कहेसि रंग देखौं नहिं राता।
कापर रँगे रंग नहिं होई। हिएँ औटि उपनै रँग सोई[१]।
चाँद के रंग सुरुज जौं राता। देखिअ जगत साँझ परभाता।
दगध बिरह निति[२] होइ अँगारू। ओहि की आँच धिकै संसारू।

---

७. प्र० १ के अतिरिक्त सभी में 'जौ' (हिंदी मूल)। ८. द्वि० २, ३, ४, ५, ६ केतकि। ९. प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३ फनिग। १०. प्र० १ दिनहि जो देखिअ सूर मुख। ११. द्वि० १ ६ मिसु। १२. द्वि० १ अलोप, के ओप। १३. च० १, पं० १ होइ।

[३०७] १. प्र० १ अब। २. प्र० १, तृ० ३ पनिग। ३. प्र० २ नल बिवोग दामावति कीन्हा। ४. प्र० १ तुम्ह का जानि, प्र० २ तुम्ह धनि कहा, द्वि० १ तेहि नित आनि। ५. प्र० १, च० १ कहँ तपइ, द्वि० १ पाछे, द्वि० ४ कहँ तपौं। ६. तृ० १ अति।

[३०८] तृ० १, २ उपजै औटि रंग पुनि सोई। २. प्र० २ तस।

जौं मँजीठ औटै औ पचा[3]। सो रँग जरम न डोलै रँचा[3]।
जरै बिरह जेउँ दीपक बाती। भीतर जरै उपर[4] होइ राती[5]।
जर परास[6] कोइला के भेसू। तब फूलै राता होइ टेसू।

पान सुपारी खैर दुहुँ[7] मेरै[8] करै चक चून।
तब[10] लगि रंग न राचै[9] जब[10] लगि होइ न चून।।

[३०६]

धनिआ का[1] सुरंग का चूना। जेहि तन नेह[2] दगध तेहि दूना।
हौं तुम्ह नेहुँ पियर भा पानू। पेंड़ी हुत[3] सुनि रासि बखानू।
सुनि तुम्हार संसार बड़ौना। जोग लीन्ह तन कीन्ह गड़ौना।
करभँज किंगरी लै बैरागी। नेवती भएउँ[4] बिरह की आगी।
फेरि फेरि तन कीन्ह भुँजौना। औटि रकत रँग हिरदै औना।
सूखि सुपारी भा[5] मन भारा। सिर सरौत जनु करवत सारा।
हाड़ चून भै बिरह जो डहा। सो पै जान दगध इमि सहा।

कै जानै सो बापुरा[6] जेहि दुख अैस सरीर[7]।
रकत पियासे जे हहिं[8] का जानहिं पर पीर।।

[३१०]

जोगिन्ह बहुतै छंद[1] ओराहीं[2]। बुँद सेवातिहि जैस पराहीं[3]।

---

३. द्वि० ४ बहु आँचा, राजा, च० १ बहु आँचा, रचा। ४. तृ० ३ ऊपर जरइ भितर होइ। ५. द्वि० १ साँती। ६. द्वि० १ जौं पहार, तृ० १ जरि बरिकैं। ७. द्वि० ३ तेहिं ८. द्वि० २, तृ० १ फोरि। ९. तृ० ३, च० १ रातै, द्वि० ७ रात तेहिं। १०. प्र० १, द्वि० ४, ५, तृ० १ तौ, जौ (हिंदी मूल)।

[३०९] १. प्र० १ का धनि पान, द्वि० ६ ऐ धनि का, तृ० २ सुनु धनि का, पं० १ अनु धनि का। २. प्र० २ देह, तृ० ३ होइ। ३. प्र० १, २ पेड़ि हुते। ४. प्र० १ नौ तन होइ, तृ० ३ ज्योति न होइ, तृ० १ नेवती होहिं। ५. च० १ धार। ६. प्र० १, २, पं० १ पीर यह, द्वि० २ सो पीरा, द्वि० ४ भौ पीरा। ७. द्वि० १ सो जानै वह पिउरा जेहिं कहि परी सरीर। ८. तृ० १ कतहूँ।

[३१०] १. द्वि० ६ फंद। २. द्वि० ४ सो छल छंद ओराहीं, द्वि० ५, च० १ भलैं छंद औंर आहीं।

परै समुंद्र खार जल ओहीं। परै सीप मुँह मोंती होहीं॥
परै पुहमी पर होइ कचूरू। परै केदली महँ होइ कपूरू॥
परै मेरु पर अंम्रित होई। परै नाग मुख बिख होइ सोई॥
जोगी भँवर न थिर ये दोऊ। केहि आपन भए कहै सो कोऊ॥
एक ठाँउ वै थिर न रहाहीं। भखु[४] लै खेलि अनत कहँ जाहीं॥
होइ गिरिही पुनि होहिं उदासी। अंत काल दुनहूँ बिसवासी॥

तासौं नेह जो दिढ़ करै[५] थिर[६] आछहि[७] सहदेस[८]।
जोगी भँवर भिखारी इन्ह तें दूरि अदेस[९]॥

[३११]

थल थल नग न होइ जेहि जोती[१]। जल जल सीप न उपनै मोंती॥
बन बन बिरिख चँदन नहिं होई। तन तन बिरह न उपजै सोई॥
जेहि उपना सो औंटि मरि[२] गएऊ। जरम निनार न कबहूँ[३] भएऊ॥
जल अंबुज रबि रहै[४] अकासा। प्रीति तो जानहुँ[५] एकहि पासा[६]॥
जोगी भँवर जो थिर न रहाहीं। जेहि खोजहिं तेहि पावहिं नाहीं[७]॥
मैं तुइ पाए[८] आपन जीऊ। छाँड़ि सेवातिहि[९] जाइ न पीऊ॥
भँवर मालती मिलै जौं आई। सो तजि आन फूल कत जाई॥

---

३. तृ० २ हो वाहीं। ४. प्र० २, द्वि० ४, ५, ६, च० १, प० १. रस। ५. द्वि० २ जो थिर रहै। ६. द्वि० २ औ। ७. प्र० १ जो आछहिं, प्र० २ रहहिं जो एक। ८. प्र० २ एक देस। ९. तृ० ३ रहहिं ते देस अदेस, द्वि० ४ दुरि रहहिं आदेस, द्वि० ६ दुरि आहि आदेस, द्वि० ५ दूरहिं रहहिं अदेस, द्वि० ३ दुरहिं ते आदेस।

[३११] १. प्र० १ न कहँ होहिं नहिं जोगी, प्र० २ नगर होहिं तिन्ह जोगी। २. प्र० १, द्वि० ६ मिलि। ३. प्र० २ रकत बहु, द्वि० ४, ५ न कौहू। ४. द्वि० १ तपै, च० १ उवै। ५. द्वि० १ जौ जिय प्रीति तौ। ६. प्र० १, द्वि० ६ जौं पिरीति जानहु एक पासा। ७. प्र० १ जहाँ सो खोजिअ पाइअ नाहीं। ८. प्र० १ जो पावा. द्वि० ७, तृ० ३ तुम्ह पाइ जो। ९. प्र० १ आनन, प्र० २ आपन।

चंपा प्रीति जो बेलि है[१०] दिन दिन आगरि बास ।
गरि गुरि आपु हेराइ जौं मुएहु[११] न छाँड़ै पास ॥

[३१२]

अैसें राजकुँवर नहिं मानौं । खेलु सारि पाँसा तौ जानौं ।
कच्चे बारह बार फिरासी । पक्के तौ फिरि[१] थिर न रहासी ।
रहै न आठ अठारह भाखा । सोरह[२] सतरह रहै सो[३] राखा ।
सतएँ ढरै[४] सो खेलनिहारा[५] । ढारु इग्यारह[६] जासि[७] न मारा ।
तूँ लीन्हे मन आछसि[८] दुवा । औ जुग सारि[९] चहसि पुनि छुवा ।
हौं नव[१०] नेह रचौं[११] तोहि पाहाँ । दसौं दाँउ तोरे हिय माहाँ ।
पुनि[१२] चौपर[१३] खेलौं कै हिया । जो तिरहेल रहै सो तिया ।

जेहि मिलि बिछुरन औ[१४] तपनि अंत तंत तेहि निंत[१५] ।
तेहि मिलि बिछुरन[१६] को सहै बरु बिनु मिलें निचिंत ॥

[३१३]

बोलौं[१] बचन नारि सुनु साँचा । पुरुख क बोल सपत औ बाचा ।
यह मन तोहि अस लावा नारी । दिन तोहि पास और निसि सारी[२]।

---

१०. प्र० २ बरन जो तेहि लहै, द्वि० १ बास जो लेत है, द्वि० ४,च० १प्रीति जो तेल है । ११. प्र० १ तउव,द्वि० १ जरम, द्वि० ७, तृ० ३ तुम्ह पाइ जो ।

[३१२] १. प्र० १ पो पाकी फिर, प्र० २, च० १, पं० १ पके पैंत पर, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३ पाके पर पै, तृ० १ पके तीन पर, द्वि० १ पक्के पौ परि । २. च० १ सन । ३. प्र० २ न । ४. प्र० १ रहै । ५. द्वि० २ खेल सो हाराँ । ६. च० १ अठारह । ७. प्र० २ मरै । ८. प्र० १ खेलसि । ९. प्र० १, २ चारि । १०. द्वि० ३, ५, ६, च० १ तौ । ११. द्वि० १ चहौं । १२. द्वि० १ तौ, द्वि० ४ तब । १३. तृ० ३ जोबर (उर्दू मूल) । १४. च० १ मिलि । १५. प्र० १ अंत ताहि ते निंत, प्र० २ औ तउ पती होये निंत, द्वि० २, ३, ५, तृ० १, २, पं० १ अंत तंत तेहि तंत, च० १ अंत तंत तेहि मिंत । १६. प्र० १, द्वि० २,३,५, तृ० १, च० १ गंजन ।

[३१३] १. प्र० १, तृ० ३ बोलै । २. प्र० १ रैनि औ सारी ।

पौ[3] परि बारह बार मनावौं। सिर सौं खेलि पैंत जिउ लावौं।
मारि[4]सारि सहि[5]हौं[6]अस राँचा[7]। तेहि बिच कोठा बोल न[8]बाँचा।[9]
पाकि गहे पै[10] आस करीता[11]। हौ जीतेहुँ[12] हारा तुम्ह जीता।
मिलि कै जुग नहिं होउँ[13]निनारा। कहाँ बीच दुतिया देनिहारा।
अब जिउ जरम जरम तोहि पासा। किएउँ[14]जोग आएउँ कबिलासा।

जाकर जीउ बसै जेहि सेतें तेहि पुनि ताकरि टेक।
कनक सोहाग न बिछुरै अवटि मिलैं जौ एक ॥[15]

[३१४]

बिहँसी धनि सुनि कै सत[1] बाता। निस्चैं तूँ मोरे रँग राता।
निस्चै भँवर कँवल रस रसा। जो जेहि मन[2]सो तेहि मन[2]बसा।
जब हीरामनि भएउ संदेसी[3]। तोहि निति[4]मँडप गइउँ परदेसी।
तोर रूप देखेउँ सुठि लोना। जनु जोगी तूँ मेलेसि टोना।
सिद्ध गोटिका दिस्टि कमाई। पारैं मेलि रूप बैसाई।
भुगुति[5] देइ कहँ मैं तुहिं डीठा। कवल नयन होइ भँवर बईठा[6]।
नैन पुहुप तूँ अलि भा सोभी। रहा बेधि उड़ि सकेसि[7]न लोभी।[8]

---

3. द्वि० २, तृ० १ पैं, तृ० ३ पाँ। 4. द्वि० ५ परि। 5. च० १ तुहिं। 6. प्र० १ चाहौं। 7. द्वि० ७ साँचा। 8. च० १ तुहिं हौं। 9. प्र० २ हौं अब चौक पंजरी बाँची, तुम्ह बिच काठे अबहि सो काँची, द्वि० ४, ६ भल भाँती मै रचनी राँचे, मारेसि तूहि सबै करि काँचे। 10. तृ० ३ गइउ पिय (उर्दू मूल), द्वि० ४ उठाएउँ, तृ० २, च० १, पं० १ कहैं पैं, द्वि० ६ उठातूँ। 11. द्वि० ४, ६ असि करि प्रीता। 12. द्वि० ६ आछेउँ। 13. प्र० १ होइ। 14. प्र० १, द्वि० ४, ६ चढ़ेउँ। 15. प्र० २ में यह दोहा नहीं हैं।

[३१४] 1. प्र० १ रस, द्वि० ५. तृ० २ सब। 2. प्र० १ महँ। 3. प्र० १ भएउ अदेसी, तृ० ३ भै सहदेसी, द्वि० ७ भौ संदेसा। 4. प्र० १ लगि, द्वि० १ मन। 5. द्विं० २ भीख। 6. तृ० २ चित समाइ होइ चित्र पईठा। 7. प्र० १, तृ० २ तस उठेसि, द्वि० ३, ४, ७, तृ० १, च० १, पं० १ तस उड़ेसि। 8. प्र० २ में पिछले छंद के दोहे के साथ ही इस छंद की भी प्रथम ७ पंक्तियाँ नहीं हैं, किंतु इनके बिना यह नहीं ज्ञात होता कि रत्नसेन की बात का पद्मावती ने किसप्रकार स्वागत किया, इसलिए इन पंक्तियों की अनिवार्यता प्रसंग में प्रकट है।

जाकरि आस होइ असि जा कहँ[९] तेहि पुनि ताकरि आस[१०] ।
भँवर जो डाढ़ा कँवल कहँ कस न पाव रस बास ।।

[३१५]

कवनि मोहनी दहुँ हुति तोहीं । जो तोहि बिथा सो उपनी मोहीं ।
बिनु जल मीन तपी[१] तस जीऊ । चात्रिक भइउँ[२] कहत पिउ[३] पिऊ ।
जरिउँ बिरह जस दीपक बाती । पँथ जोवत भइउँ सीप सेवाती ।
डारि डारि जेउँ कोइल भई । भइउँ चकोरि नींद निसि[४] गई ।
मोरें पेम पेम तोहि भएऊ । राता हेम अगिनि जो[५] तएऊ ।
हीरा दिपै जौं सुरुज उदोती । नाहिं त कित पाहन कहँ[६] जोती ।
रबि परगासें कँवल बिगासा । नाहिं त कित मधुकर कित बासा ।

तासौं कवन अँतरपट[७] जो अस प्रीतम पीउ ।
नेवछावरि गइ[८] आप हौं[९] तन मन जोबन जीउ ।।

[३१६]

कहि सत[१] भाउ भएउ[२] कँठलागू । जनु कंचन मों मिला सोहागू ।[३]
चौरासीं आसन बर[४] जोगी । खट[५]रस बिंदक[६]चतुर सो[७]भोगी ।

---

९. प्र० १ आस होइ जेहि सेंती, प्र० २ जीव बसै जहाँ, तृ० २ आसहोइ अस।
१०. द्वि० ६ पिउ पिउ चातक जेउँ रही मरी छती तेहिं आस ।

[३१५] १. तृ० ३ भएउ। २. द्वि० २ भूल । ३. प्र० १ पुकारत । ४. द्वि० २ तस । ५. प्र० २, द्वि० ४ जेउँ, द्वि० २ जनु । ६. द्वि० ६, पं० १ कित । ७. द्वि० २ तासों अँतर पट काहे । ८. प्र० १ होइ, द्वि० २, ३, ५, तृ० २, ३, पं० १ कै (उर्दू मूल), द्वि० ६, तृ० १ करि । ९. प्र० २, तृ० ३ आधौं (उर्दू मूल), द्वि० १ भई हौं, द्वि० ५ भइऊँ ।

*द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३ में इसके अनंतर तीन छंद अतिरिक्त हैं। (देखिए परिशिष्ट) ।

[३१६) १. द्वि० १. ५ सब । २. द्वि० ७ उभै । ३. प्र० २, च० १ रतनसेन सो कंत सुजानू, षटरस बिंदक सो रति भानू । (यह पंक्ति द्वि० ४, ५, ६ में आये हुए उपर्युक्तअतिरिक्त छंद में भी है) ।

कुसुम माल असि मालति पाई। जनु चंपा गहि डार ओनाई।
करी बेधि[8] जनु भँवर भुलाना[9]। हना राहु अर्जुन के बाना।
कंचन करी चढ़ी[10] नग जोती। बरमा सौं बेधा जनु[11] मोंती।
नारँग जानु कीर नख[12] देई। अधर आँबु[13] रस जानहुँ लेई।
कौतुक[14] केलि करहिं[15] दुख नंसा। कुंदहिं[16] कुरुलहि जनु सर[17] हंसा[18]।

रही बसाइ[19] बासना चोवा चंदन मेद।
जो असि[20] पदुमिनि रावै[21] सो जानै यह भेद॥

[३१७]

चतुर नारि चित अधिक चिहूटै[1]। जहाँ पेम बाँधै किमि छूटै[2]।
किरिरा[3] काम केलि मनुहारी। किरिरा[3] जेहिं नहिं सो न सुनारी[4]।
किरिरा[3] होइ कंत कर तोखू[5]। किरिरा[3] किहें पाव धनि मोखू।
जेहि किरिरा[3] सो सोहाग सोहागी। चंदन जैस स्यामि[6] कँठ लागी।

---

४. प्र० १, द्वि० ४, ७, च० १ आसन पर, तृ० ३ पर आसन, द्वि० ३, पं० १ बर आसन। ५. च० १ सब। ६. द्वि० २ बिंद, द्वि० ५, च० १ रसिक, तृ० २ भोग। ७. द्वि० २, ५ चतुर रस, तृ० ३ रत रस। ८. प्र० १ तस बेधा, द्वि० ७ भौ बेध। ९. द्वि० ३, ७, तृ० १, पं० १ लोभाना। १०. च० १ रँग। ११. प्र० १ गज। १२. द्वि० २ रस, द्वि० ३ मुख। १३. तृ० ३ अंबु (उर्दू मल), द्वि० ७ अधर। १४. प्र० १, द्वि० २, ४, ७ कौतर, द्वि० ५ कुँवरहिं, द्वि० ३ कोंवल, पं० १ केला। १५. प्र० १ काम। १६. द्वि० ७ काँदहिं। १७. प्र० १ जानहु। १८. द्वि० १ मनुहारी, बैठ भँवर कुच नारँग बारी। १९. प्र० १ मधु मंडप जो, प्र० २ मढ़ मंडप जो, द्वि० ७ भइ जो बसाइ। २०. प्र० १ ऐसी। २१. प्र० १ रवै।

*द्वि० ४, ५ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है, द्वि० ६ में वही इस छंद के पूर्व है।

[३१७] १. तृ० ३ चिहूटी, छूटी(उर्दू मूल)। २. तृ० ३ बाढ़ै, पं० १ फाँदै। ३. प्र० २, तृ० ३ किरिला, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, च० १, पं० १ किरिला (या कुरला) द्वि० ७ क्रीड़ा। ४. प्र० १ जहाँ न सोवनहारी, द्वि० ५, तृ० ३, पं० १ चाहि सुनि सोवनारी, द्वि० ७ जेहि नै सुने सुनारी, च० १ जहँ तहँ सो न सुनारी। ५. द्वि० ३, च० १ पोखू। ६. प्र० १ कंठ।

गोदि गेंद कै[7] जानहुँ लई। गेंदहुँ चाहि धनि कोंवरि[8] भई॥
दारिवँ दाख बेल रस चाखा[9]। पिउ के खेल धनि जीवन राखा॥
बैन सोहावनि कोकिल बोली। भएउ बसंत करी मुख खोली॥

पिउ पिउ करत जीभ धनि सूखी बोली चात्रिक भाँति।
परी सो बूँद सीप जनु मोंती हिएँ परी[10] सुख[11] सांति॥

[३१८]

कहौं[1] जूझि जस रावन रामा। सेज बिधंसि[2] बिरह[3] संग्रामा॥
लीन्ह लंक कंचन गढ़ टूटा। कीन्ह सिंगार अहा सब लूटा॥
औ जोबन मैमंत बिधंसा। बिचला बिरह जोव लै नंसा॥
लूटे अंग अंग[4] सब भेसा। छूटी मंग[5] भंग भे[6] केसा॥
कंचुकि चूर चूर भै ताने। टूटे हार मोंति छहराने[7]॥
बारी[8] टाड सलोनी टूटीं। बाँहू कँगन कलाईं[9] फूटीं॥
चंदन अंग छूट तस भेंटी। बेसरि टूटि तिलक गा मेंटी॥

पुहुप सिंगार सँवारि जौं[10] जोबन नवल बसंत।
अरगज जेउँ[11] हिय लाइ कै मरगज[12] कीन्हें कंत॥*

[३१९]

बिनति करै पदुमावति बाला। सो धनि सुराही[1] पीउ पियाला॥

---

७. च० १ पिय। ८. द्वि० ३ कुंडल। ९. तृ० ३ फरा अनचाखा। १०. प्र० १ सो बुंद सीप मुख मोंती भए, द्वि० २ सेवाति बूँद जब सीपी हिए भई, द्वि० ४ सो बुंद सीप मोंती भएँ परी। ११. प्र० २ तसि।

३१८] १. प्र० १, द्वि० ४, ७, तृ० ३ भएउ, द्वि० २ किएउ। २. द्वि० २ बिधाँसी। ३. प्र० १ कीन्ह, तृ० ३ भएउ। ४. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ रंग। ५. तृ० २, च० १ मटक। ६. प्र० १ बिथरि गा, द्वि० ३, च० १ कटक भे। ७. प्र० १, द्वि० ७ छितराने द्वि० १ तृ० ३ छिरिआने। ८. प्र० १ बाहू, द्वि० १ बाजू, द्वि० २, तृ० १ मोरें, तृ० ३ मारीं पं० १ बाँह। ९. द्वि० ५ बलयपुनि। १०. प्र० १ सब, च० १ जेउँ। ११. प्र० १, द्वि० ७ उर कुच सौं। १२. द्वि०७ सर गाज।
* तृ० ३ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं।

[३१९] १. द्वि० १ सोधि सुरा पिउ।

पिउ आएसु माँथे पर लेऊँ। जौं मागै नै नै सिर[2] देऊँ।
पै पिय बचन एक सुनु मोरा[3]। चाखि पियहु मधु[4] थोरइ[5] थोरा[3]।
पेम सुरा सोई पै पिया। लखै न कोइ कि काहूँ दिया।
चुवा[6] दाख मधु[7] सो एक बारा। दोसरि बार होहु बिसँभारा।
एक बार जो पी[8] कै रहा। सुख जेंवन[9] सुख भोजन कहा[10]।
पान फूल रस रंग करीजै। अधर अधर सों चाखन कीजै[11]।

जो तुम्ह चाहहु सो करहु नहि[12] जानहुँ भल मंद।
जो भावै सो होइ मोहि तुम्हहि पै[13] चहौं अनंद॥

[३२०]

सुनु धनि पेम सुरा के पिएँ। मरन जियन डर रहै[1] न हिएँ।
जहँ मद तहाँ कहाँ संभारा[2]। कै सो खुमरिहा[3] कै मँतवारा।
सो पै[4] जान पियै जो कोई। पी[5] न अघाइ जाइ परि[6] सोई।
जा कहँ होइ बार एक लाहा। रहै न ओहि बिनु ओही[7] चाहा।
अरथ[8] दरब सब देइ बहाई[9]। कह सब जाउ न जाउ[10] पियाई।

---

२. प्र० १ जब जब माँगै तब तब, तृ० ३ जो भाँगौं नै नन्ह जिउ, द्वि० ७ जो माँगै तौ तौ सिर। ३. तृ० ३ थोरी, थोरी। ४. तृ० २ मद। ५. तृ० ३ थोरी (उर्दू मूल)। ६. तृ० ३ चोवा (उर्दू मूल)। ७. द्वि० २, तृ० १, २, ३ मद। ८. तृ० ३ लै (उर्दू मूल)। ९. तृ० ३ जीवन (उर्दू मूल)। १०. द्वि० २ लहा, द्वि० ३ अहा। ११. प्र० १ चखने लीजै, द्वि० २ काहे न लीजै, तृ० ३ रसना कीजै, द्वि० ४ चक्खा कीजौ, तृ० १ चखना कीजै। १२. द्वि० ३ नून। १३. द्वि० २ तुम्ह पिउ, द्वि० २, पं० १ तुम्ह जिउ, द्वि० ५ तुम्ह जिय, द्वि० ६ तुम्ह पुनि।

[३२०] १. प्र० १ एकौ। २. द्वि० ७, तृ० ३, च० १ कहाँ संसारा, द्वि० ४ कहाँ निस्तारा, पं० १ अघाइ संसारा। ३. प्र० १ खुमारी, द्वि० १ खुमारा द्वि० ४ घमरहा। ४. तृ० ३ सोई। ५. प्र० २, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३, पं० १ लै। ६. द्वि० ७ बरु। ७. प्र० १ ओहि कै, द्वि० १ तेहि पै, द्वि० ७ जो ओहि, च० १ सो पै। ८. द्वि० ४, ५ अरब। ९. द्वि० २ भुलाई। १०. प्र० १, द्वि० ७ नहिं जाउ, द्वि० २ पै होइ, तृ० ३ हौं जाउ।

रातिहुँ देवस रहै रस[११] भीजा। लाभ न देख[१२] न देखै[१३] छीजा।
भोर होत तब[१४] पलुह सरीरू। पाव खुमरिहा सीतल नीरू।

एक बार भरि देहु पियाला बार बार को माँग।
मुहमद किमि[१५] न पुकारै ऐस दाँउ जेहि[१६] खाँग ॥

[३२१]

भएउ बिहान उठा रबि साईं। ससि पहँ आईं नखत[१] तराईं।
सब[२] निसि सेज मिले[३] ससि सूरू। हार चीर[४] बलया भे चूरू।
सो धनि पान चून भै[५] चोली। रंग रँगीलि निरँग भौ भोली[६]।
जागत रैनि भएउ भिनुसारा। हिय न सँभार[७] सोवति[८] बेकरारा[९]।
अलक भुअंगिनि[१०] हिरदै परी। नारँग ज्यों[११] नागिनि[१२] बिख भरी[१३]।
लरै मुरै हिय हार[१४] लपेटी। सुरसरि जनु कालिंदी भेंटी।
जनु[१५] पयाग अरइल बिच[१६] मिली[१७]। बेनी भइ सो रोमावली[१८]।

---

११. प्र० १ अस। १२. तृ० २ ना ओहि लाभ, च० १ चहै न औरहि। १३. प्र० १ मूल पै छीजा, तृ० ३ देख पै छीजा, द्वि० ४ देखि कै छीजा, तृ० २ न कोइहि छीजा, च० १ ओही रीझा। १४. प्र० १ पुनि। १५. द्वि० ७ जाग। १६. द्वि० २, ३, ६, तृ० ३ क्यों।

[३२१] १. द्वि० २, ३, ६, तृ० २, पं० १ सखी। २. द्वि० २ वह। ३. द्वि० १ मिला जो, द्वि० २, ३, ५, तृ० ३, पं० १ मिला ससि। ४. तृ० ३ हीर, पं० १ छीर। ५. प्र० १ फूल रहि, द्वि० ५ फूल भै। ६. प्र० १ रंग रँगीलो निरंग होइ बोली, द्वि० २, ३, ४, ६, तृ० १, च० १ रंग रँगीली निरंग भै डोली, तृ० ३ रंग निरंग त्रिरंग भै भोली, तृ० २ रंग रँगीली निरंग भै बोली, च० १ रंग रँगीली निरंग होइ बोली। ७. द्वि० २ हिय बेकरार, द्वि० ४ भइ बे सँभार, च० १ पै बेसँभार, पं० १ धनि बेसँभार। ८. द्वि० १ होइ, तृ० ३ सुती, द्वि० ६ रोवति, तृ० २ सोवै। ९. द्वि० १ बे सँभारा। १०. प्र० १, द्वि० ६, ७ सुरंगिनि। ११. प्र० १, द्वि० ४, ७, च० १ छुवै। १२. द्वि० २ नारँग। १३. द्वि० २ मुख धरी। १४. प्र० १ लुरि मुरि हियरैं हार, द्वि० २, ६ सो लट हार जोगीयँ। १५. द्वि० ६ मिलि। १६. द्वि० १ कहँ। १७. द्वि० ६ चली। १८. तृ० ३ सो रोम रोमीली, द्वि० ७ सो रूप रोमावली।

नाभी लाभी पुन्य की[19] कासी कुंड कहाउ।
देवता मरहिं कलपि सिर आपुहि[20] दोख न लावहिं काउ॥

[३२२]

बिहँसि जगावहिं[1] सखी सयानी। सूर उठा[2] उठु पदुमिनि रानी।
सुनत सूर जनु[3] कँवल बिगासा। मधुकर आइ लीन्ह मधुबासा[4]।
जनहुँ माँति बसियानी बसी। अति बिसँभार फूलि जनु अरसी[5]।
नैन कँवल जानहुँ धनि[6] फूले[7]। चितवनि मिरिग सोवत जनु[8] भूले[7]।
भै ससि खीनि गहन असि गही[9]। बिथुरे नखत सेज भरि रही[9]।
तन न[10] सँभार केस[11] औ चोली। चित[12] अचेत मन बाउर[13] भोली।
कँवल माँझ जनु केसरि डीठी। जोबन हुत[14] सो गँवाइ[15] बईठी।

बेलि जो राखी इंद्र कहँ पवनहुँ बास न दीन्ह।
लागेउ आइ भँवर तहँ करी बेधि रस लीन्ह॥

[३२३]

हँसि हँसि[1] पूछहिं सखी सरेखी। जानहुँ कुमुद चंद मुख देखी।
रानी तुम्ह ऐसी सुकुमारा[4]। फूल बास[2] तनु[3] जीउ तुम्हारा[4]।

---

१९. द्वि० २, ४ ते गए, द्वि० ३ भँवर जनु। २०. द्वि० २ सुनि यह, तृ० १ औ तेहि।

[३२२] १. द्वि० ३, ५, तृ० १, ३, पं० १ जगाईं। २. च० १ भोर भयो। ३. प्र० १ भानु नाम सुनि। ४. द्वि० ६ फिरि, च० १ रस। ५. प्र० १ द्वि० २, ७, तृ० १ फूलि आरसी, तृ० ३ भूलि उर ससी, च० १ फूली रसी। ६. प्र० १, द्वि० ७ दह। ७. द्वि० २, तृ० ३, च० १ खोले, भोले। ८. द्वि० १ सेवाती, च० १ चहूँ जनु, द्वि० २ चहूँ दिसि, पं० १ सोवत बन। ९. तृ० ३ गहे, रहे (उर्दू मूल) [१०. द्वि० ६ सिर। ११. प्र० १ चीर। १२. प्र० १ भइ। १३. द्वि० ४ बाली। १४. तृ० ३ हितु (उर्दू मूल)। १५. तृ० ३ सो गवँन।

[३२३] १. प्र० १ हँसि कै। २. तृ० १ पान फूल। ३. द्वि० १ अस, तृ० ३ जनु, च० १ महँ। ४. द्वि० ७, तृ० ३ सुकुमारी, फूल बास तन जीव तुम्हारी, द्वि० ३ सुकुमारी, पान फूल के रहहु अधारी।

सहि न सकहु हिरदै पर हारू। कैसे सहिहु कंत कर भारू।
मुखा कवँल[५] बिगसत दिन राती। सो कुँभिलान सहिहु[६] केहि भाँती।
अधर जो कोंवल[७] सहत न पानू। कैसें सहा लागि[८] मुख भानू।
लंक जो पैग देत मुरि जाई। कैसें रही[९] जो रावन राई।
चंदन चोंप[१०] पवन अस पीऊ। भइउ चित्र सम[११] कस भा जीऊ।

सब[१२] अरगज भा मरगज लोचन पीत[१३] सरोज[१४]।
सत्य कहहु पदुमावति सखीं परीं सब खोज॥

[३२४]

कहौं सखी आपन सति भाऊ। हौं[१] जो कहति कस रावन राऊ।
जहाँ पुहुप अलि[२] देखत सँगू। जिउ डेराइ काँपत सब[३] अंगू।[४]
आजु मरम मैं[५] पावा सोई। जस पियार पिउ और न कोई।
तब लगि डर हा[६] मिला न पीऊ। भान कि दिस्टि छूटि गा[७] सीऊ।
जत[८] खन भान कीन्ह[९] परगासू। कँवल करी मन कीन्ह[९] बिगासू।
हिएँ छोह उपना औ सीऊ[१०]। पिउ न रिसाइ लेउ[११]बरु[१२]जीऊ[१०]।
हुत जो अपार बिरह दुख दोखा। जनहुँ अगस्ति उदधि[१३]जल सोखा।

---

५. प्र० १, द्वि० ७ मुख कँवला, तृ० ३ पलुहा कँवल, द्वि० ५ मुखार कँवल। ६. द्वि० ६, च० १ कहहु। ७. प्र० १ कँवल मुख, तृ० १, २ जो कँवल। ८. च० १ तेहि कैसें राखिहु। ९. प्र० १ सहिहु, तृ० ३ सहीं, पं० १ तनै। १०. द्वि० २ जो तपवन, द्वि० ६ तन जोबन, तृ० २ चीर पवन। १२. द्वि० २, तृ० १, २, च० १, पं० १ सब। १३. प्र० १, २, द्वि० ७ पलक, द्वि० ५ बिब, तृ० ३ तपत, द्वि० २, तृ० २ पियर, च० १ सेत। १४. द्वि० १ बरोज (उरोज)।

[३२४] १. प्र० १ दिन। २. द्वि० १ तहाँ, तृ० १ अन। ३. तृ० ३, च० १ मन, तृ० २ औ। ४. द्वि० ४, ६ काँपौ भँवर पुहुम पर देखें, जनु ससि गहन तैस मोहि लेखें। ५. द्वि० ७ पै। ६. प्र० १ हँसि, द्वि० १ जब, द्वि० ३, ४, तृ० १, २, ३ रहा, द्वि० ५ अहा। ७. तृ० ३ का (उर्दू मूल)। ८. प्र० १, तृ० १ तत। ९. द्वि० ४, ६, ३ लीन्ह मन लीन्ह, द्वि० १ लीन्ह, भै जीव। १०. द्वि० ५ सेवा, जीवा। ११. प्र० १, द्वि० ७ जाइ। १२. द्वि० ५ पर। १३. तृ० ३ समुँद, द्वि० ५, तृ० २, पं० १ अवधि।

हहूँ रंग बहु जानति[14] लहरैं जेति[15] समुंद।
पै पिय की चतुराई[16] सकिउँ[17] न एकौ बुंद॥

[३२५]

कै[1] सिंगार तापहँ कह[2] जाऊँ। ओहि कहँ[3] देखौं ठाँवहि[4] ठाऊँ।
जौं[5] जिउ महँ तौ उहै पियारा। तन महँ सोइ[6] न होइ निरारा।
नैनन्ह माँहि तौ उहै समाना। देखउँ जहाँ न देखउँ[7] आना।
आपुन रस[8] आपुहि पै लेई। अधर सहैं[9] लागें रस देई।
हिया थार कुच कंचन लाड़ू। अगुमन भेंट[10] दीन्ह होइ[11] चाड़ू।
हुलसी लंक लंक सौं[12] लसी[13]। रावन रहसि[14] कसौटी कसी।
जोबन सबै मिला ओहि जाई। हौं रे बीच हुति गई हेराई[15]।

जस किछु दीजै[16] धरै कहँ आपन लीजै[18] सँभारि।
तस सिंगार सब[17] लीन्हेसि मोहि कीन्हेसि ठठियारि॥

[३२६]

अनु री छबीली तोहि छबि लागी। नेत्र[1] गुलाल कंत संग जागी।

---

१४. द्वि० ६ भानति, पं० १ जानतिं अही। १५. प्र० १, २ लहर जो जोति, द्वि० १ लहर जो बुंद, द्वि० ६ लहरैं जेइ। १६. द्वि० ७ के चतुरा पने। १७. द्वि० १ फाबु।

[३२५] १. प्र० १, द्वि० ७, तृ० ३, पं० १ लै। २. प्र० १ हौं, तृ० ३ कै। ३. प्र० १ ताहि सौं, द्वि० २, तृ० २ ओहि कौं, द्वि० ४, ५, ओही, तृ० १ वोहिक। ४. च० १ देउँ हिए महँ। ५. द्वि० २ जिउ। ६. प्र० १ द्वि० २, ७ मन सौं, द्वि० ४ मन सोइ। ७. प्र० १, द्वि० ७ देखउँ जहाँ तहाँ नहिं, द्वि० १ जौं बूझेउँ तौ और न। ८. तृ० ३ आपुहिं रहस। ९. प्र० १ अधर अधर, प्र० २, द्वि० ७ अधर रसहि, द्वि० ४, ६ अधर सहस, द्वि० ५, च० १ अधर समैं, द्वि० ३ अधरन सैं। १०. द्वि० २ अगुमन पंथ, द्वि० ६ लै कै भेंट, तृ० २ अंकन भेंट। ११. प्र० १, द्वि० १ दीन्ह करि, द्वि० ४ दीन्ह कै, च० १ दीन्ह हिय। १२. प्र० १ लंक लंका महँ, द्वि० २ अंक अंक सो, च० १ लंक लंक जनु। १३. प्र० १ द्वि० ३, ७, तृ० १, २, पं० १ बसी। १४. प्र० १ रहा। १५. तृ० २ बिलाई। १६. प्र० १, द्वि० १, ६, ७ दीन्ह, लीन्ह। १७. तृ० ३ रस। १८. प्र० १ थतिआरि, द्वि० ६ बिसँभार, तृ० १ हतहार।

[३२६] १. प्र० १, २ नैन।

चंप सुदरसन भा तोहि सोई। सोन जरद जसि केसरि होई।
पैठ भँवर कुच नारँग बारी। लागे नख उछरे रँग ढारी।
अधर अधर सों भीज तबोरी[२]। अलकाउरि मुरि मुरि गौ मोरी।
रायमुनी तूँ औ रतमुँही। अलि मुख लागि भई फुलचुही।
जैस सिंगार हार सो मिली। मालति ऐसि सदा रहि खिली।
पुनि[३] सिंगार करि अरसि[४] नेवारी[५]। कदम[६] सेवती पियहि पियारी[७]।

कुंद[८] करी जहँवा लगि[९] बिगसै रितु बसंत औ फागु।
फूलहु फरहु सदा सखि[१०] औ सुख सुफल[११] सोहाग॥

[३२७]

कहि यह बात सखीं सब[१] धाईं। चंपावति कहँ जाइ सुनाईं[२]।
आजु निरँग पदुमावति बारी। जीउ न[३] जानहुँ पवन अधारी।
तरकि तरकि गौ चंदन चोला[४]। धरकि धरकि डर[५] उठै न[६] बोला[६]।
अही जो करी[७] करा रस[८] पूरी। चूर चूर होइ गई सो चूरी।
देखहु जाइ जैसि कुँभिलानी। सुनि सोहाग रानी बिहँसानी।
लै सँग सबै पदुमिनी[९] नारी। आइ जहाँ पदुमावति बारी।[१०]
आइ रूप सबहीं सो[११] देखा। सोन बरन होइ रही सो रेखा।

---

२. द्वि० २ पतौरी। ३. च० १ पदुम। ४. द्वि० ४, ५, तृ० ३ रस करा, तृ० १ कर अइसि, तृ० २ कै अइसि। ५. द्वि० १ रंग करी रँगीली, द्वि० २ कर अरसि तारी। ६. द्वि० ६ कदह। ७. द्वि० १ चंप चँबेली, द्वि० २ पैठि पसारी। ८. द्वि० ४, च० १ गोंद, पं० १ लोंद। ९. द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० १, च० १, पं० १ सब, द्वि० १ जसि, तृ० २ होइ। १०. प्र० १ सभ, द्वि० ४, तृ० १ सुख, द्वि० ६, तृ० २ बहुरि। ११. द्वि० १ सुख सकल, द्वि० ७ नित सदा, पं० १ बहु सुफल।

[३२७] १. द्वि० ४, ५, तृ० १, २ उठि, च० १, पं० १ औ। २. च० १ जनाईं। ३. च० १ जीवन न। ४. तृ० ३ चोली, बोली। ५. प्र० १, च० १ जिउ, तृ० ३ वर। ६. द्वि० ३ आवन। ७, तृ० १ गरब। ८. द्वि० ४ करी कँवल रस, द्वि० ७, द्वि० ३ फडरी करी अस, च० १ प्रीति करा रस। ९. तृ० ३ सखी चंपावति, पं० १ चली पदुमिनी। १०. द्वि० १ सब मिलि आईं सखी सयानी, आईं जहाँ पदुमावति रानी। ११. द्वि० ६ सखिन्ह सो, तृ० २ सखी जो।

कुसुम[१२] फूल जस मरदिअ[१३] निरंग[१४] दीखु सब अंग।
चंपावति भै वारनै[१५] चूँबि केस[१६] औ मंग॥

[३२८]

सब रनिवास बैठ चहुँ पासा। ससि मंडर[१] जनु बैठ अकासा।
बोला[२] सब्रहिं[३] बारि[४] कुँभिलानी। करहु सँभार देहु[५] खँडवानी।
कोंवलि करी कँवल[६] रँग भीनी। अति सुकमारि लंक कै[७] खीनी।
चाँद जैस धनि[८] बैठि तरासी[९]। सहस करा होइ सुरज[१०] गरासी[११]।
तेहि की भार गहन अस गही। भै निरंग मुख जोति न रही।
दरब उबारहु अरघ करेहू[१२]। औ लै वारि सन्यासिहि[१३] देहू।
भरि कै थार नखत[१४] गज मोंती। वारने[१५] कीन्ह चाँद कै जोती।

कीन्ह अरगजा मरदन[१६] औ सखि[१७] दीन्ह अन्हान[१८]।
पुनि भै चाँद जो चौदसि[१९] रूप[२०] गएउ छपि भान॥

---

१२. द्वि० ६ केसु। १३. द्वि० ४, ५, तृ० २ जस मेखै, द्वि० ७ जस मन सो हिरदै, द्वि० ३ जस हिरदै। १४. तृ० २ रँग। १५. प्र० १ गइ वारने, च० १ भइ ओरतै। १६. द्वि० ७ लीन्ह।

[३२८] १. द्वि० १, ६ मंडल। २. द्वि० १ बोलीं। ३. प्र० १, द्वि० ७ बोलीं सखिन्ह, तृ० ३ बोला सबहु। ४. प्र० १ करी, द्वि० ६ नारि। ५. द्वि० ४ ५ सिंगार देखि। ६. प्र० १, द्वि० ४, ७, तृ० १ कँवल करी कँवला भीनी, द्वि० २ कँवल करी जो भै रँग भीनी, द्वि० ६ रावन राई जोति भइ खीनी, तृ० २ कँवल करी जो नवला भीनी। ७. प्र० १ लंक ले, द्वि० २ अंक कै। ८. द्वि० २ रबि। ९. प्र० १ बैठ करासी, द्वि० १ राहु गरासी, द्वि० २, ३, ४, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ बैठ कलसी, द्वि० ५ हुत परगासी। १०. द्वि० १ रूप। ११. द्वि० ४, ५ बिगासी, द्वि० २, ७ प्रगासी। १२. प्र० १, द्वि० ४, ६, ७ वारि कछु पुनि करेहू, तृ० १ जो वारहु अरघ करेहू, द्वि० १ वारि कन्या सभ देहू, तृ० ३ वारहु ले अरघ करेहू, तृ० २ वारि कन्या सुठि देहू, पं० १ वारि कै अरघ करेहू, द्वि० २, तृ० ३ वारि कनासिहि देहू, तृ० २, द्वि० ३ वारि गनक तेहि देहू। १३. प्र० १ वारि भिखारिहि। १४. तृ० ३ रतन। १५. द्वि० ४, च० १ बरती। १६. प्र० १ अबटन। १७. द्वि० ४, ५ सुख। १८. प्र० १, द्वि० ७ नहान, तृ० ३ अ स्नान। १९. प्र० १, चतरदसी। २०. प्र० १ देखि द्वि० ६ जो रे।

[३२६]

पटुवन्ह[१] चीर आनि सब छोरे। सारी[२] कंचुकी[३] लहरि पटोरे।
फुँदिआ औरु कसनिआ[४] राती। छाएल पंडु आए[५] गुजराती।
चदनौटा[६] खीरोदक[७] फारी[८]। बाँस पोर झिलमिल की सारी[८]।
चिकवा[९] चीर मेघौना[१०] लोने। मोंति लाग औ छापे सोने।
सुरँग चीर भल सिंघल दीपी। कीन्ह छाप जो धनि वै[११] छीपी।
पेमचा डोरिआ औ[१२] बीदरी[१३]। स्याम सेत पियरी औ हरी।
सातहुँ रंग सो चित्र चितेरी[१४]। भरि कै[१५] डीठि जाहिं नहिं हेरी[१४]।

पुनि अभरन बहु काढ़ा अनबन[१६] भाँति जराउ।
फेरि फेरि निति[१७] पहिरहि जैस जैस[१८] मन भाउ॥

[३३०]

रतनसेनि गौ अपनी सभा[१]। बैठे पाट जहाँ अठखंभा[२]।

---

[३२९] १. तृ० १ पतारन्ह, च० १ पतरन्ह। २. प्र० १, २, द्वि० ६ तारी। ३. प्र० १, २, तृ० १ कुंजर। ४. प्र० १ डोरिया औ कनसिनिआ, द्वि० २, ४, तृ० १ मँडिआ और कसिआ, द्वि० ३ फँदिआ और कलसनिआ, द्वि० ७ मँडिआ औ कनीसिया, तृ० ३ फरिआ और कुसमिया, च० १ मंडिआ औ बसिना बहु। ५. प्र० १ छैल पटोर आप, द्वि० १, ३ छापल पठुवा औ, च० १ छापन बरु आने। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ चट नौटा। ७. च० १ चोखरोदक। ८. प्र० १ सारी, भारी, प्र० २ सारी, फारी, द्वि० २, च० १ भारी, सारी, तृ० २ थारी, सारी। ९. द्वि० १ चंदन, तृ० ३ जगवा (उर्दू मूल)। १०. द्वि० १ कहाँ का, तृ० ३ कल्हौना, द्वि० ५ बखौना। ११. तृ० ३ धनवंती। १२. प्र० १ पेमचा आ जोखनी, तृ० ३ पेम चंडोरी औ, द्वि० १ पेम चँद परिया औ। १३. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २ बंदरी, प्र० २ वेदरी (उर्दू मूल) तृ० ३ पींडुरी (उर्दू मूल)। १४. तृ० ३ चितरै, हेरै (उर्दू मूल)। १५. तृ० ३ फिरि गै (उर्दू मूल)। १६. प्र० १ द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १, तृ० १, पं० १ सन अनबन (हिंदी मूल तुलना, ५४३. २)। १७. द्वि० १, ४, च० १ सब। १८. द्वि० ७ पदुमावति।

[३३०] १. द्वि० २ अपने साथाँ। २. प्र० १ पाट ओठँधि कै खँभा, द्वि० २ पाट जहाँ औ खाँथा, तृ० ३ जाइ जहाँ अठ खँभा, द्वि० ७, ३ पाट छाँह अठखँभा।

आइ मिले चितउर के साथी। सबहीं बिहँसि आइ दिए[3] हाथी।
राजा कर भल मानहिं भाई। जेइ हम कहँ यह भुम्मि[4] देखाई।
जौं हम कहँ आनत न नरेसू। तब हम कहाँ कहाँ यह देसू।
धनि राजा तोर राज बिसेखा। जेहि की रजाउरि सब किछु[5] देखा।
भोग बेलास सबै किछु[6] पावा। कहाँ जीभ तसि[7] अस्तुति आवा[8]।
तहँ तुम्ह आइ अंतरपट साजा। दरसन कहँ न तपावहु[9] राजा।

नैन सिराने भूख गइ देखि तोर मुख आजु[10]।
नौ औतार भए सब काहू[11] औ नौ भा सब साजु॥

[३३१]

हँसि कै राज रजाएसु[1] दीन्हा। मैं दरसन कारन अस[2] कीन्हा।
अपने जोग लागि हौं खेला। भा गुरु आपु कीन्ह तुम्ह चेला।
यहिक[3] मोर पुरुषारथ देखेहु। गुरू चीन्ह कै जोग[4] बिसेखेहु।
जौं तुम्ह तप साधा मोहि लागी। अब जनि हिएँ होहु बैरागी।
जो जेहि लागि सहै तप जोगू। सो तेहि के सँग मानै[5] भोगू।
सोरह सहस पदुमिनीं माँगीं। सबहीं दीन्ह न काहू खाँगीं।
सब क धौरहर सोने साजा[6]। सब अपने अपने[7] घर राजा।

---

३. प्र० १, २ दीन्ह कै, द्वि० २ दीन्ह मैं, द्वि० ४, ५, च० १ कै दीन्ही, द्वि० ७ आइ भग, तृ० २ दीन्ह तेहि। ४. द्वि० १, २, ३, ६, तृ० २, ३ पुहुमि। ५. प्र० १, २ जेहि के राज जगत सब, द्वि० १ जेहि के राज हम सब कुछ, द्वि० २, ४, ५, तृ० २, ३ जेहि की रजाएसु सब कुछ। ६. प्र० १ सुख। ७. तृ० ३ तैं, द्वि० ५, तृ० २ अस, तृ० १ जेहि। ८. द्वि० ५ गावा। ९. द्वि० १ कहँ आवहिं सर, द्वि० ७ कस न देखावहु, द्वि० ३ कतहुँ न पावहिं। १०. च० १ सुखराज। ११. द्वि० ६, च० १ नौ औतार आज भए, तृ० १ नौ औतार भए अब। १२. द्वि० ४, ३ काजु।

[३३१] १. द्वि० १ आएसु। २. प्र० १, २, द्वि० १, ७ अन, द्वि० ४ तप। ३. प्र० १, द्वि० २, ७ यहिकै, प्र० २ ऐह की, तृ० ३ इहँक, द्वि० ४, च० १ अहक, तृ० २ अबहि, द्वि० ३ तेहिक। ४. प्र० १ राज, द्वि० १ रूप। ५. तृ० २ तेहिं सँग मानै रस। ६. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, च० १ सब कर मँदिर सोने कर साजा। ७. द्वि० ३ भा।

हस्ति घोर औ कापर सबहि दीन्ह नौ[८] साजु।
भै गिरहस्त लखपती घर घर मानहिं राजु॥

[३३२]

पदुमावति सब सखीं बोलाईं। चीर पटोर हार[१] पहिराईं।
सीस सबन्हि के सेंदुर पूरा। सीस पूरि सब अंग[२] सेंदूरा।
चंदन अगर चतुरसम[३] भरीं। नएं चार[४] जानहुँ अवतरीं।
जनहु कँवल सँग फूलीं कुईं। कै सो चाँद सँग तरईं उईं।
धनि पदुमावति धनि तोर नाहूँ। जेहि पहिरत[५] पहिरा सब काहूँ।
बारह अभरन सोरह[६] सिंगारा। तोहि सोहइ यह ससि संसारा[७]।
ससि सो कलंकी राहुहि पूजा। तोहि निकलंक न होइ सरि[८] दूजा।

काहूँ बीन गहा[९] कर काहूँ नाद म्रिदंग।
सब दिन अनँद गँवावा[१०] रहस कोड एक[११] संग॥

[३३३]

भै निसि धनि जसि ससि परगसी। राजैं देखि पुहुमि फिरि बसी।
भै कातिकी[१] सरद ससि[२] उवा[३]। बहुरि[४] गँगन रबि चाहै छुवा[३]।

---

८. द्वि० ५ बड़।

[३३२] १. प्र० १ द्वि० ७ आनि। २. द्वि० १ माँग, द्वि० ७ आस, च० १ लाग। ३. द्वि० २ चित्र सन, तृ० ३ चित्र सब। ४. प्र० १ नई चाँद, द्वि० २ तीस चार। ५. द्वि० ४, ५, च० १ अभरन। ६. द्वि० ७ पहिरे। ७. द्वि० ४, ५, च० १ तोहिं सही पै ससि मसियारा, द्वि० २ तोहि सँभार सीस संसारा, तृ० १ तोहि सोह ऐ ससि उजियारा। ८. प्र० १ द्वि० ३, च० १ कोइ सरि द्वि० ७ तोहि सम। ९. प्र० १ बंसि गहा, प्र० २ बेन बंस (उर्दू मूल), द्वि० ७ बीना बंसि। १०. प्र० १, द्वि० ५ बधावरा, द्वि० २ उठावा, द्वि० ७ चाउकर। ११. द्वि० १ सुख।
* प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ७, में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[३३३] १. प्र० २, तृ० ३ भै कातिक, च० १ बहुतै कटक। २. प्र० १ रितु। ३. द्वि० ४, ५ आवा, छावा, द्वि० ७ हुआ, छुआ। ४. द्वि० ६ पलटि।

पुनि[५] धनि धनुक भौंहँ कर फेरी[६]। काम कटाख टँकोर सो हेरी[७]।[८]
जानहुँ नहिं कि[९] पैज पिय खाँचौं। पिता सपथ हौं आजु न बाँचौं।
काल्हि न होइ रहै सह[१०] रामा। आजु करौं रावन[११] संग्रामा।
सेन सिंगार महूँ[१२] है सजा। गज गति चाल अँचर गति धुजा।
नैन समुंद्र खरग नासिका। सरवरि जूझि को मो सौं टिका[१३]।

हौं रानी पदुमावति मैं जीता सुख भोग।
तूँ सरबरि करु तासौं जस[१४] जोगी जेहिं[१५] जोग॥

[३३४]

हौं अस जोगि जान सब कोऊ। बीर सिंगार जिते मैं[१] दोऊ।
उहाँ त समुँह रिपुन दर[२] माहाँ। इहाँ त काम कटक तुव पाहाँ।
उहाँ त कोपि बैरिदर[३] मडौं। इहाँ त अधर अमिअ रस खंडौं।
उहाँ त खरग[४] नरिंदन्ह मारौं। इहाँ त बिरह तुम्हार सँघारौं।
उहाँ त गज पेलौं होइ केहरि[५]। इहाँ त कामिनि करसि हहेहरि[६]।
उहाँ त लूसौं[७] कटक खँधारू[८]। इहाँ त जितौं तुम्हार सिंगारू।

---

५. द्वि० ४, तृ० १, २, ३, पं० १ सुनि। ६. प्र० १, द्वि० ७ धनुक नैन सर फेरी, प्र० २, तृ० १, पं० १ धनुक भौंह गुन फेरी, द्वि० ३ धनुक भौंह खन फेरी, च० १ धनुक भौंह कसि फेरी, द्वि० ६ भौंहन्ह धनुक चढ़ावा। ७. प्र० १ का रात अहेरी, द्वि० ३ कुँवर सो हेरी। ८. द्वि० २ धनि धानुक भौंहैं कस वाना, काम कटाछ टकोर सो ताना। ९. प्र० १ जानहु नैन. प्र० २ न जनहु नैक, तृ० ३ जानहु नाँकि। १०. प्र० १, २ सो, द्वि० २ सरि, तृ० ३ सहि, द्वि० ४ साथ, द्वि० ५ सुख, द्वि० ३ सठ। ११. द्वि० १ बिरह क होइ, तृ० ३ करै रावन। १२. द्वि० ७ समूह, च० १ सबै। १३. द्वि० २, तृ० १ सका, द्वि० ४, ५ जिता। १४. प्र० २, द्वि० ७ रे, द्वि० २ जैस। १५. प्र० १, द्वि० ४, ३ तोहि।

[३३४] १. द्वि० २, ३ जेइँ। २. प्र० १ समूह राय दल, प्र० २ सबूह रैनि दल, द्वि० १ सौहँ आनि रन, द्वि० २, तृ० १, च० १ समूह रयनि दिन, तृ० ३ सौहँ रयनि दल, द्वि० ५, ७ समूह रयनि दल, द्वि० ३ समूह दार दल, द्वि० ४, ६ हन बीर घट। ३. द्वि० ४, ६ तो हय चढ़ि कै माहि। ४. द्वि० ६ कोपि। ५. द्वि० ६ उहाँ त कबहुँ होउ हो केहरि। ६. द्वि० १, ५, च० १ गज गामिनि कर है हरि। ७. प्र० १ लूटौं, प्र० २ खूटौं, द्वि० २ लुहसौं, द्वि० ५ तोसौं, तृ० १ कोसौं, तृ० २ रमौं। ८. द्वि० ६ दरब भँडारू

उहाँ त कुंभस्थल गज नावौं। इहाँ त कुच[९] कलसन्ह कर लावौं[१०]।[११]

परा बीचु धरहरिया[१२] पेम राज कै टेक।
मानहिं भोग छहूँ रितु मिलि दूनौं होइ एक॥

[३३५]

प्रथम बसंत नवल रितु आई। सुरितु[१] चैत बैसाख सोहाई[२]।
चंदन चीर पहिरि धनि अंगा। सेंदुर दीन्ह बिहँसि भरि मंगा।
कुसुम हार औ परिमल बासू। मलयागिरि छिरिका[३] कबिलासू[४]।
सौर सुपेती फूलन्ह डासी। धनि औ कंत[५] मिले सुखबासी।
पिउ[६] सँजोग धनि जोबन बारी। भँवर पुहुप सँग[७] करहिं धमारी।
होइ फागु भलि चाँचरि जोरी। बिरह जराइ दीन्ह[८] जसि होरी।
धनि ससि सियरि तपै पिउ[९] सूरू। नखत सिंगार होहिं सब चूरू।

जेहि घर कंता रितु भली आउ बसंता[१०] नित्त।
सुख बहरावहि[११] देवहरैं[१२] दुक्ख न जानहिं कित्त॥

[३३६]

रितु ग्रीखम कै[१] तपनि न तहाँ। जेठ[२] असाढ़ कंत घर जहाँ।
पहिरें सुरँग चीर धनि झीना। परिमल मेद रहै तन भीना।

---

९. द्वि० ४ गज। १०. प्र० १ कलसन्ह हथ लावौं, द्वि० १ करते मैं लावौं, द्वि० ७ (मैं) हाथ लगावौं। ११. द्वि० ६ (यथा.२) दोहूँ भाँति आज कै साजा, दहौं कटक सों चितवौं राजा। १२. द्वि० ३ करै बीच को धरहरि।

[३३५] १. तृ० ३ सो रितु। २. च० १ जनाई। ३. तृ० ३ पोता। ४. प्र० १, २ चहुँ पासू। ५. प्र० १, २ पुरुष। ६. द्वि० २ वर। ७. प्र० १ रस, प्र० २ सरि, च० १ मिलि। ८. तृ० ३ जरै होखै (भोजपुरी प्रभाव)। ९. प्र० १ सियर तपा भो, द्वि० २ अैस परिउ जस, द्वि० ६ पुरुष दिन सूरू, द्वि० ७ सियर तपै तन, पं० १ भई तपै पिउ। १०. प्र० १ औ बसंत तेहि। ११. द्वि० २ बुलावहिं। १२. प्र० १ सुख पहिरावहिं दिवस निसि, च० १ बेगि फरहिं सुखदेव हरे।

[३३६] १. तृ० ३ गै (उर्दू मूल)। २. पं० १ बैठ।

पदुमावति तन सियर[3] सुबासा। नैंहर राज कंत कर[4] पासा।
अधर[5] तबोर कपूर भिवँसेना। चंदन चरचि लाव नित[6] बेना[7]।
ओबरि[8] जूड़ि तहाँ सोवनारा[9]। अगर पोति सुख नेति औधारा[10]।
सेत बिछावन सौर[11] सुपेती। भोग करहिं निसि[12] दिन सुख सेंती।
भा अनंद सिंघल सब कहूँ[13]। भागिवंत सुखिया रितु छहूँ[14]।
दारिवँ दाख लेहिं[15] रस बेरसहिं[16] आँब सहार[17]।
हरियर तन[18] सुवटा कर[19] जो अस चाखनहार[20]॥

[३३७]

रितु पावस बिरसै पिउ पावा[1]। सावन भादौं अधिक सोहावा[2]।[3]
कोकिल[4] बैन पाँति बग[5] छूटी। धनि निसरी[6] जेउँ बीर बहूटी।
चमकै बिज्जु बरिस जग[7] सोना। दादुर मोर सबद सुठि[8] लोना।
रँग राती[9] पिय सँग निसि[10] जागै। गरजै चमकि चौंकि[11] कँठ लागै।[12]

---

[3]. प्र० २ सितर, पं० १ चीर। [4]. प्र० १, द्वि० ३,४,५, ७, तृ० १, पं० १ कत घर, द्वि० २ तृ० कंत पुनि, च० १ करहिं सुख। [5]. तृ० ३ अगर। [6]. द्वि० ४, च० १ रचि रचि लाव। [7]. प्र० १ तन भीना, प्र० २, द्वि० २, ३ तन बेना। [8]. प्र० १ ओपरि। [9]. द्वि० ५ सुबास सुहाई। [10]. प्र० १, २ सैन सँवारा, तृ० ३ तेन ओहरा, द्वि० ६ नेत सँवारा, द्वि० ४ नित अधारा, द्वि० ७ नीत देहारा, पं० १ नेत अहारा। [11]. तृ० ३ सेज। [12]. प्र० १, द्वि० २, ३, च० १ भोग करहिं दिन दिन, द्वि० ५ भोग बेरास करहिं। [13]. प्र० १, द्वि० ७ सिंवल सब काहू, द्वि० १ सिगरे जग माहीं। [14]. द्वि१ सुखिया सब छाँही, प्र० १, द्वि० ७ सुख रात उछाहू, तृ० २ सुखिया सब नाहूँ। [15]. पं० १ कीन्ह। [16]. द्वि० ३ परसहिं। [17]. द्वि० ४, ५ बेरसहिं आँव छोहार, द्वि० ७ बेरस हिया उर हार, च० १ बेरसहिं आँब सोहार। [18]. द्वि० ७ सो। [19]. प्र० २ सुख ताकर। [20]. प्र० २ बेरसनहार।

[३३७] [1]. प्र० १, २ बिरसै सो पावा, द्वि० १, तृ० २, च० १ परसै पिउ पावा, द्वि० ३ परसै सुख पावा, द्वि० ६ बरसै धन नीरू। [2]. द्वि० ६ गहिर गँभीरू। [3]. इसके अनंतर द्वि० ४ में निम्नलिखित अतिरिक्त पंक्ति है : पदुमावति चाहत रितु पाई, गँगन सुहावा भुम्मि सुहाई। [4]. द्वि० २, ६ चातक। [5]. द्वि० ७ गौ। [6]. द्वि० २ रानी। [7]. प्र० १ जस, द्वि० ४ जल, द्वि० ५ जनु। [8]. प्र० १ अति। [9]. द्वि० १ रकत। [10]. प्र० १, २, द्वि० २,३, तृ० २, पं० १ नित। [11]. द्वि० १ चाहै। [12]. द्वि० ६ में इस पंक्ति के स्थान पर पादटिप्पणी ३ वाली पंक्ति है।

सीतल बुंद ऊँच चौबारा[१३]। हरियर सब देखिअ[१४] संसारा।
मलै समीर बास[१५] सुख बासी। बेइलि फूल[१६] सेज सुख डासी[१७]।[१८]
हरियर भुम्मि[१९] कुसुंभी[२०] चोला। औ पिय संगम[२१] रचा हिंडोला।
पौन झरक्के[२२] हिय हरख[२३] लागै सियरि[२४] बतास[२५]।
धनि जानै यह पौनु है पौनु सो अपनी[२६] आस[२७]॥

[३३८]

आइ सरद रितु अधिक पियारी[१]। नौ[२] कुवार कातिक उजियारी।
पदुमावति भै पूनिवँ कला। चौदह चाँद उर[३] सिंघला।
सोरह करा सिंगार बनावा। नखतन्ह भरे सुरुज ससि पावा[४]।
भा निरभर सब[५] धरनि[६] अकासू। सेज सवारि कीन्ह फुल[७] डासू।
सेत बिछावन औ उजियारी। हँसि हँसि मिलहिं पुरुख औ नारी[८]।[९]
सोने फूल पिरिथिमी फूली। पिउ धनि सौं धनि पिउ सौं भूली।
चखु अंजन दै खजन देखावा। होइ सारस[१०] जोरी पिउ[११] पावा[१२]।
एहि रितु कंता पास जेहि सुख तिन्हके[१३] हिय माँह[१४]।
धनि हँसि लागै पिय गले[१५] धनि गल[१५] पिय कै बाँह[१६]॥

---

१४. तृ० ३ देखी (उर्दू मूल)। १५. तृ० ३ बाल। १६. द्वि० २ तेल फुलेल, द्वि० ३ बेल के फूल, च० १ बेला फूल। १७. प्र० १ भरि राखी, द्वि० ७, तृ० २ भरि डासी। १८. तृ० २ बेइलि चमेलि फूल भरि डासी। १९. द्वि० ६ नित नौ पहिर। २०. प्र० २, च० १ कुसुंभि तन। २१. द्वि० ४ धनि पिय संग, च० १ पिय संग पुनि। २२. प्र० १ झुरकि, द्वि० ४ झकोरै। २३. प्र० १ हरष भो, द्वि० २, ३ हिय हरषै, द्वि० ५, तृ० ३ हिय हिरकै, तृ० १ हिय हरकि, च० १ हिय हरक मुख। २४. प्र० २ सिसिर। २५. प्र० २ सिसिर बतास, द्वि० ६, च० १ सीतल बास। २६. प्र० १ पौनहि आपनि। २७. द्वि० २ बास, तृ० १ पास।

[३३८] १. तृ० ३ पियारा, उजियारा। २. द्वि० १, ७ भरै, द्वि० ४ नाव, द्वि० २, च० १ सो, तृ० १ तौ। ३, तृ० ३ उआ, द्वि० ५ उहै। ४. द्वि० ६, ७ राखा। ५. द्वि० ७ ससि। ६. द्वि० २ पुहुमि। ७. प्र० २ भल। ८. द्वि० २ हँसि हँसि कँठ लागहिं पिउ प्यारी। ९. प्र० १ सेज सुपेती कीन्ह बिछावन, रहस कोड अपने मन भावन। १०. द्वि० १ सारद। ११. द्वि० ४, ५ रस। १२. प्र० १ आवा, पं० ३, ७ रावा। १३. द्वि० २, तृ० १ तहाँ। १४. प्र० २ शाह। १५. प्र० १ गरें, गर। १६. प्र० १ पिय लागै धनि बाँह।

[३३९]

आइ सिसिर[1] रितु तहाँ न सीऊ। अगहन पूस जहाँ घर पीऊ।
धनि औ पिउ महँ सीउ[2] सोहागा। दुहूँक अंग एक मिलि[3] लागा।
मन सौं मन तन सौं तन गहा। हिय सौं हिय बिच हार[4] न रहा।
जानहुँ चंदन लागेउ अंगा[5]। चंदन रहै न पावै संगा[5]।
भोग करहिं सुख राजा रानी। उन्ह लेखें सब सिस्टि जुड़ानी।
जूझै दुहुँ जोबन सौं लागा। बिच हुत सीउ जीउ लै भागा।
दुइ घट मिलि एकै होइ जाहीं। अैस मिलहिं तबहूँ[6] न अघाहीं।

हंसा केलि[7] करहिं जेउँ सरवर[8] कुंदहिं कुरलहिं[9] दोउ।
सीउ पुकारि[9] ठाढ़[10] भा जस चकई क बिछोउ[11]।।

[३४०]

रितु हेवंत[1] संग पीउ न पाला[2]। माघ[3] फागुन सुख[4] सीउ सियाला[2]।

---

[३३९] १. प्र० १, २, द्वि० ७ हेम, द्वि० १ सीउ, तृ० २ सरद। यद्यपि मार्गशीर्ष-पौष मास हेमंत के ही माने गए हैं, किंतु 'हेम' पाठ केवल प्र० १, २, द्वि० ७ में मिलता है, और केवल इन प्रतियों में प्राप्त पाठांतर सर्वत्र अप्रामाणिक ठहरता है, इसलिए यहाँ भी वह अग्राह्य होगा। कवि से भूल होना भी असंभव नहीं माना जा सकता है। २. प्र० १ धनि औ पिउ बिच सीउ, द्वि० ६ धनि कंचन जनु पीव। ३. प्र० १, द्वि० ७ होइ, प्र० २ भै। ४. प्र० १ कछु। ५. प्र० १ संग,। अंगा। ६. प्र० १, द्वि० ७ अैसि मिलहिं पै मिलि, द्वि० ७ औ होर एक मिलहिं। ७. तृ० ३ कोकिल। ८. द्वि० १, २, ३, ५, ६, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ जेउँ। ९. द्वि० ५ कुरल कराहहिं, द्वि० ७ काँपहिं कुरलहिं। १०. प्र० १ पार)। ११. द्वि० २ चकई जैस बिछोव।

[३४०] १. प्र० १, २, द्वि० ७ सिसिर। माघ फाल्गुन मास शिशिर के ही माने गए हैं, किंतु 'सिसिर' पाठ केवल प्र० १, २, द्वि० ७ में मिलता है, और केवल इन प्रतियों में प्राप्त पाठांतर सर्वत्र अप्रामाणिक ठहरते हैं, इसलिए यहाँ पर भी वह अग्राह्य होगा। कवि से भूल होना भी असंभव नहीं माना जा सकता है। २. द्वि० ३, पं० १ संग पिउ प्याला, सियाला, च० १ संग पिउ प्यारा, सियारा। ३. द्वि० ४, ५, पं० १ मानहु। ४. द्वि० ७ सुनि।

सौर सुपेती महँ दिन राती। दगल[५] चीर पहिरहिं बहु भाँती।
घर घर सिंघल होइ सुख भोगू[६]। रहा न कतहूँ दुख कर खोजू[६]।
जहँ धनि पुरुख सीउ नहिं लागा। जानहुँ काग देखि सर[७] भागा।
जाइ इंद्र सौं कीन्ह[८] पुकारा। हौं पदुमावति देस निकारा।
एहि रितु सदा सँग[९] मैं सोवा[१०]। अब दरसन हुत[११] मारि बिछोवा[१०]।[१२]
अब हँसि कै ससि सूरहि भेंटा। अहा जो सीउ बीच हुत मेंटा[१३]।

भएउ इंद्र कर आएसु[१४] प्रस्थावा यह सोइ[१५]।
कबहुँ[१६] काहु कै प्रभुता[१७] कबहुँ काहु कै होइ॥

[३४१]

नागमती चितउर पँथ हेरा। पिउ जो गए फिरि[१] कीन्ह न फेरा।
नागरि नारि काहुँ[२] बस परा। तेइँ बिमोहि मोसौं चितु हरा।
सुवा काल होइ लै गा पीऊ। पिउ नहिं लेत लेत[३] बरु जीऊ।
भएउ नरायन बावन करा। राज करत बलि[४] राजा छरा।
करन बान लीन्हेउ करि छंदू। भर्थरि[५] भएउ छल मिला अनंदू[६]।[७]

---

५. द्वि० २ सुरँग, च० १, पं० १ सकल। ६. तृ० ३ भोगू, श्रो लोगू, द्वि० ७ भोगू, कर रोजू, च० १ रोजू, कर खोजू। ७. द्वि० ७ सीर। ८. द्वि० १ भया, तृ० ३ भई। ९. प्र० २ रंग। १०. द्वि० १ खेला, कीन्ह दुहेला। ११. प्र० १ सों। १२. द्वि० १ जहँ सूरज नहिं कहा पसारू, कौन जिऔ पावै महि मारू। १३. तृ० २ बिच हुत हौं सौं नारि कै मेटा। १४. द्वि० २ परभा (प्रभुता ?)। १५. द्वि० २ भाव पहुँच सब कोई। १६. द्वि० ४, ५, च० १ कौहु। १७. प्र० १ बारी, द्वि० १ भई, तृ० ३ पार भा, द्वि० २, ४, पं १ परभा (प्रभुता ?), द्वि० ५ परिभा, च० १ पर बहु, द्वि० ७ बार होइ।

[३४१] १. तृ० १ जोगी होइ। २. प्र० १ चतुर नारि काहूँ। ३. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १, २ पिउ नहिं जरत जात। ४. द्वि० ५ नल। ५. प्र० १, २, द्वि० १ भारथ, द्वि० २, ३, तृ० १ भरथ, द्वि० ४, ६, ७ भरथहि, च० १ परथहि। ६. प्र० २, तृ० ३ झलमला नंदू, द्वि० १ छलमिला नंदू, द्वि० २, ४, ५ झलमिला अनंदू, तृ० १ झिलमिला आनंदू, च० १, पं० १ छल मिलि अनंदू। ७. द्वि० ६ (यथा . ४) मैं सो अब यह बेरै राखा, सेर पालि सो फल केइ चाखा।

मानत भोग गोपीचँद भोगी। लै उपसवा जलंधर जोगी।
लै कान्हहि भा[8] अकरुर[9] अलोपी। कठिन बिछोउ जिअै किमि गोपी[10]।

सारस जोरी किमि हरी मारि गएउ किन खग्गि[11]।
झुरि झुरि पाँजरि[12] धनि भई बिरह कै लागी अग्गि[13]॥

[३४२]

पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा तस[1] बोलै पिउ पीऊ।
अधिक काम दगधै सो[2] रामा[3]। हरि जिउ लै सो[4] गएउ पिय नामा।
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीज भीजि तन[5] चोली।
सखि हिय हेरि हार मैन मारी[6]। हहरि परान[7] तजै अब नारी[8]।
खिन एक आव पेट महँ स्वाँसा। खिनहि जाइ सब होइ निरासा।
पौनु डोलावहिं सींचहिं चोला। पहरक[9] समुझि नारि मुख बोला[10]।

---

८. द्वि० ४ लै गा कंतहि, द्वि० २ लै केहि भागा, द्वि० ५ लै कै कंतहिं, तृ० २, पं० १ लै कंतहि भा, च० १ लै कतनहि भा, द्वि० ३ लै कतहूँ गा। ९. प्र० १ अंकूर, प्र० २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ७, तृ० १, ३, च० १, पं० १ गरुर। १०. च० १ जोगी। ११. प्र० १, द्वि० ३, तृ० २ किन खाग, तृ० ३ गुन ढाग, द्वि० ७ नहिं खाग, तृ० १ नहिं खग्गि। १२. प्र० १, द्वि० १, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ माजरि। १३. प्र० १ कै लाई आग, द्वि०२ क लगाई आग, तृ० ३ के लागे काग।

[३४२] १. प्र० १, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, ३, च० १ निसि, प्र० २ भै, द्वि० ४ जस। २. प्र० १, २ दहकि तन दगधै, द्वि० ३ काम दुख दहै सो। ३. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, ७, तृ० १, २, ३, पं० १ कामा। ४. द्वि० ४, ५, च० १ लै सुआ। ५. द्वि० ७ सब।
६. प्र० १, द्वि० २, ३, ६, तृ० १ सखि हिय हेरि हार हिएँ मारी, प्र० २ सखी हेरि हारि हियँ मारी, द्वि० ४ सिंघ हिय हेरि हार हियँ मारी, द्वि० ५ सँग हिय हारि रही हो बारी, द्वि० ७ सखी हेरिं हारी ग्रीव मारी, तृ० २ सुखि नारि होइ रही सो नारी. तृ० ३ सखि हिय हेरि हार हरि मारी, च० १ सखिहि हारि रही होइ बारो।
७. द्वि० १ पिउ बिन प्रान, द्वि० ५ हरियर प्रान, द्वि० ७ परिहरि प्रान। ८. प्र० १ तजै हतिआरी, द्वि० ७ जाइ तौ तारी। ९. द्वि० ५, तृ० २ फरकै। १०. प्र० १, २ नारि चख खोला, द्वि० ७ रही चित बोला।

प्रान पयान होत केइँ राखा। को मिलाव[११] चात्रिक कै भाखा[१२]।

आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक।
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक[१३]॥[१४]

[३४३]

पाट महादेइ[१] हिए न हारू। समुझि जीउ[२] चित चेतु सँभारू।
भँवर कँवल सँग होइ न परावा[३]। सँवरि नेह मालति पहँ आवा।
पीउ[४] सेवाति सौं जैस पिरीती। टेकु पियास बाँधु जिय[५] थीती[६]।[७]
धरती जैस गँगन के[८] नेहा। पलटि भरै[९] बरखा रितु मेहा।
पुनि बसंत रितु आव नवेली। सो रस सो मधुकर सो बेली।
जनि अस जीउ करसि तूँ नारी[१०]। दहि तरिवर पुनि उठहिं सँभारी[११]।
दिन दस जल सूखा का[१२] नंसा[१३]। पुनि सोइ सरवर[१४] सोई हंसा[१३]।

मिलहिं जो बिछुरै[१५] साजना गहि गहि[१६] भेंट गहंत[१७]।
तपनि मिरगिसिरा[१८] जे सहहिं[१९] अद्रा ते पलुहंत[२०]॥

---

११. द्वि० ५ को पल आव। १२. द्वि० ४ कोइलि और चातक मुख भाषा, च० १ कोइलि और चातक कै भाषा। १३. द्वि० १ तन पाक, द्वि० ४ जब भाग, द्विं० ६ तब थाक, द्वि० ७ सत्र थाक, द्वि० २, तृ० १, २ तन भाग। १४. तृ० १ में इस छंद की २—९ पंक्तियाँ छूटी हुई हैं।

[३४३] १. प्र० १ बोलहिं सखी, द्वि० ६ पाट महादेत्र, द्वि० ३ पाट न भा देइ। ३. द्वि० ४, ५, ६, तृ० २ मेरावा, द्विं० ३ परावा। ४. प्र० २, द्वि० ४, ५ पपिहा, पं० १ टेकु। ५. प्र० २ मन। ६. द्वि० ४, ५ सीती। ७. च० १ में यह पंक्ति नही है। ८. तृ० ३ की (उर्दू मूल), द्वि० ७ सैं। ९. प्र० १, २ द्वि० ४, ७, ३ फिरैं। १०. प्र० २ तैं बारी। ११. द्वि० २, ३, ५, तृ० १ सँवारी। १२. प्र० १ सर सूखा जल, द्वि० ७ जल सूखि गा। १३. द्विं० ३ गान्हाना, छान्हा, च० १ काँसा, हंसा। १४. द्वि० ५ तरिवर। १५. द्वि० २ नाह जो बिछुरे, द्वि० ४, तृ० १, २, ३, च० १ मिलि जो बिछुरे। १६. प्र० १, द्वि० ७, तृ० २, पं० १ कै कै, द्वि० २ केइँ केइँ, द्वि० ४ केइँ, तृ० १ कै लै। १७. द्वि० २, ३ भेटैं कंत, तृ० १ फेंट बहंत। १८. द्वि० २ मरन करन। १९. द्वि० ७ कीडा जिमि। २०. प्र० २, तृ० १ अद्रा तिमि पलुहंत, द्वि० ७ सहै अवृथा बलवंत।

[३४४]

चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए[1]। सेत धुजा बगु पाँति देखाए[1]।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ[2] लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।
ओनै घटा आई चहुँ फेरी[3]। कंत उबारु मदन हौं घेरी[3]।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मँदिर को छावा।

जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह[4] गर्ब।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्ब॥

[३४५]

सावन बरिस मेह अति पानी[1]। भरनि भरइ[2] हौं बिरह झुरानी।
लागु पुनर्बसु पीउ न देखा। भै बाउरि कहँ कंत सरेखा।
रकत क आँसु परे भुइँ टूटी। रेंगि चली जनु बीर बहूटी।
सखिन्ह रचा पिउ संग हिँडोला। हरियर भुइँ कुसुंभि तन चोला।
हिय हिँडोल जस डोलै मोरा। बिरह झुलावै देइ झँकोरा।
बाट असूझ अथाह गँभीरा। जिउ बाउर भा भवै भँभीरा।
जग जल बूड़ि जहाँ लगि ताकी। मोर नाव खेवक बिनु थाकी।

परबत समुँद अगम बिच बन[3] बेहड़ घन ढंख।
किमि करि भेटौं कंत तोहि ना मोहि पाँव न पंख॥

[३४६]

भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं[1] रैनि[2] अँधियारी।

---

[३४४] १. द्वि० ३, ७ धाई, दिखाई (उर्दू मूल)। २. तृ० ३ धन। ३. द्वि० ७, तृ० ३ फेरे, घेरे (उर्दू मूल)। ४. प्र० १, तृ० २ औ।

[३४५] १. द्वि० २, ४ बानी। २. प्र० १, २ द्वि० ७ भरनि परहि, तृ० ३ भर जोबन। ३. प्र० १ अगम भुइँ बन, द्वि० ७ अगम बन जल थल।

[३४६] १. द्वि० ५ करौं, तृ० २ फरिउँ। २. प्र० २ कस भइ रैनि अधिक।

मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै[3] डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ[4] गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि[5] ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल[6] पूरी। आक जवास[7] भई हौं[8] झूरी।
धनि सूखी भर भादौं माहाँ। अबहूँ आइ न सींचसि नाहाँ।

जल थल भरे अपूरि सब गँगन धरति मिलि एक।
धनि जोबन औगाह महँ दे बूड़त[9] पिय टेक॥

[३४७]

लाग कुआर नीर[1] जग[2] घटा। अबहुँ[3] आउ पिउ[4] परभुमि[5] लटा।
तोहि देखे पिउ[6] पलुहै काया। उतरा चित्त फेरि[7] करु माया।
उए[8] अगस्ति हस्ति घन गाजा। तुरै पलानि चढ़े रन[9] राजा।
चित्रा[10] मिंत मीन घर[11] आवा। कोकिल[12] पीउ पुकारत पावा।
स्वाति बुंद चातिक मुख परे। सीप समुंद्र मोंति लै[13] भरे।
सरवर सँवरि हंस चलि[14] आए। सारस कुरुरहिं खँजन देखाए।
भए अवगास[15] कास बन फूले। कंत न फिरे बिदेसहि भूले।

---

3. प्र० १ होइ धै धै, द्वि० २ भै धै मोहिं, तृ० १ भै दहि दहि, तृ० २ मोहि सिर चढ़ि, द्वि० ३ भै चाहैं। 4. द्वि० ७ राहु। 5. तृ० २ जग। 6. तृ० ३ पिउ, तृ० १ जनु। 7. द्वि० ७ पलास। 8. प्र० १,२ ऐसि भै, द्वि० ६ भई धनि। 9. प्र० १ वै बूड़हु।

[३४७] 1. प्र० १ पुहुमि, प्र० २ जगत। 2. प्र० १, २, द्वि० १, २,३ तृ० ३ जल। 3. प्र० १ अजहुँ। 4. द्वि० १, ६, ७ रे। 5. द्वि० ३, ४, ५ प्रीतम। 6. द्वि० २ फिर। 7. द्वि० ४, ६, ७, तृ० २, च० १ बहुरि। 8. तृ० ३ उई (उर्दू मूल)। 9. प्र० १, २ चढ़े सब, तृ० ३ चले रन। 10. द्वि० १ जियत। 11. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, तृ० १ च० १, पं० १ कर। 12. तृ० ३ चातिक। 13. द्वि० ४, ५, ६, तृ० १ बहु, द्वि० २, तृ० ३ तेहि, च० १, पं० १ सब, प्र० २ होइ। 14. तृ० ३ जल। 15. प्र० १, २ अस्विन मास, द्वि० १, २, ६ भए अकास, तृ० ३ भए बिकास, द्वि० ४, ५ भए निरास, द्वि० ३, ७ भएउ प्रगास, तृ० ३ भए पगास।

बिरह हस्ति तन सालै खाइ करै तन[१६] चूर।
बेगि आइ पिय बाजहु गाजहु[१७] होइ[१८] सदूर॥

[३४८]

कातिक सरद चंद[१] उजियारी[२]। जग सीतल हौं बिरहैं[३] जारी[२]।
चौदह[४] करा कीन्ह[५] परगासू। जनहुँ जरै सब धरति अकासू।
तन मन सेज करै अगिडाहू। सब कहँ चाँद मोहिं होइ[६] राहू।
चहूँ खंड[७] लागै अँधियारा। जौं घर नाहिंन कंत पियारा।
अबहूँ[८] निठुर आव एहिं[९] बारा। परब देवारी होइ[१०] संसारा[११]।
सखि झूमक गावहिं अँग मोरी। हौं झूरौं बिछुरी जेहि जोरी।
जेहि घर पिउ सो[१२] मुनिवरा[१३] पूजा। मो कहँ बिरह सवति दुख दूजा।

सखि मानहिं तेवहार सब गाइ[१४] देवारी खेलि।
हौं का खेलौं कंत बिनु तेहिं रही[१५] छार सिर मेलि॥

[३४९]

अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख सो जाइ किमि काढ़ी।
अब धनि देवस बिरह भा राती। जरै बिरह ज्यों दीपक बाती।
काँपा हिया[१] जनावा सीऊ। तौ पै जाइ होइ सँग[२] पीऊ।

---

१६. प्र० १, २ सत, द्वि० ४, ६, ७, च० १ नित। १७. द्वि० ३ गाजहु बिरहा। १८. द्वि० ७ सिंह, पं० १ होइ के सिंघ।

[३४८] १. द्वि० १ मास रैनि, द्वि० ७ सरद राति। २. द्वि० १, ३, ६, तृ० २, ३ उजियारा, जारा। ३. प्र० १, च० १ हौं बिरहैं, द्वि० ४, ६ मों बिरहिनि। ४. प्र० २, द्वि० २, ३, तृ० १, २ सोरह। ५. द्वि० १, ४, ६ चंद। ६. द्वि० २, ३, ५, ६, पं० १ भएउ मोहि, प्र० २, तृ० १ सो मो कहँ, द्वि० ४ भएउ मोर। ७. तृ० २ दसौ दिसा। ८. प्र० १, २ रे पिउ। ९. प्र० १, द्वि० २, ४, ७, तृ० १, २, ३ एहिं, तृ० १, द्वि० ३ तेहिं। १०. प्र० २ करहि। ११. द्वि० ३ उजियारा। १२. च० १ कंत। १३. प्र० १ जिनवरा, प्र० २ जवरा, द्वि० ३ मनोरथ। १४. तृ० १ गईं। १५. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ६, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ रही, तृ० ३ तेहिं।

[३४९] १. तृ० ३ अंग। २. प्र० १ घर, पं० १ जबु।

घर घर चीर रचा सब काहूँ। मोर रूप रँग[3] लै गा नाहूँ।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै फिरै[4] रँग सोई।
सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा[5]। सुलगि सुलगि दगधै भै छारा[6]।
यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जरम[7] करै[8] भसमंतू।

पिय सौं कहेहु सँदेसरा ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि गई[9] तेहिक धुआँ हम लाग[10]॥

[३५०]

पूस जाड़[1] थरथर तन[2] काँपा। सुरुज जड़ाइ[3] लंक दिसि तापा।
बिरह बाढ़ि भा दारुन सीऊ। कँपि कँपि मरौं लेहि हरि जीऊ[4]।
कंत कहाँ हौं लागौं हियरें[5]। पंथ अपार सूझ नहिं नियरें।
सौर सुपेती आवै[6] जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल[7] बूड़ी।
चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौं निसि बासर[8] बिरह[9] कोकिला।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी[10]।
बिरह सैचान भँवै[11] तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा।

रकत ढरा माँसू गरा[12] हाड़ भए सब संख[13]।
धनि सारस होइ ररि[14] मुई आइ समेटहु पंख[13]॥

---

३. द्वि० ३, ४, ५, च० १, पं० १ सब। ४. तृ० १ भरै भरै। ५. प्र० १, २. द्वि० ३ प्रेम अगिनि बिरहा तन जारा, तृ० ३ सिय अंग बिरहैं हिय जारा, द्वि० १ हिय बजरागि बिरह तेइँ जारा, द्वि० ६ प्रेम अगिनि बिरहिनि तन जारा, द्वि० ७ प्रेम अगिनि जो बिरहा जारा, तृ० १ सियर अगिनि बिरहैं तन जारा, तृ० २ सियर आग बिरहा भइ चारा। ६. द्वि० १ सो जोगी भइ जरै अँगारा। ७. प्र० १ जारि, द्वि० १ जरै। ८. प्र० १, द्वि० ५ करौं। ९. प्र० १, तृ० १, ३ मुई, द्वि० ६ बुझी। १०. तृ० १ हमहि धुवाँ अस।

[३५०] १. द्वि० १ मास। २. तृ० ३ थरहर तन। ३. प्र० १ जाइ। ४. प्र० १, २ न पावौं पीऊ। ५. तृ० ३ हौं लखै हिअरे, द्वि० ७ हैं लागौं निअरे ६. प्र० १, द्वि० १ लागै। ७. द्वि० १ भवा चला। ८. प्र० १, द्वि० १, ६ दिन रात। ९. द्वि० १ भई। १०. द्वि० २ कैसें पिय बिन जीवै पँखी। ११. प्र० १, २ द्वि० ४, च० १ भएउ। १२. प्र० १ का मांसु कर। १३. द्वि० ६, तृ० ३ साँख, पाँख। १४. द्वि० ७ रटि।

[३५१]

लागेउ माँह परै अब[1] पाला। बिरहा काल भएउ जड़काला।
पहल पहल तन रुई[2] जो झाँपै। हहलि हहलि अधिकौ हिय[3] काँपै।
आइ सूर होइ तपु रे नाहाँ[4]। तेहि बिनु जाड़ न छूटै माहाँ[4]।
एहि मास उपजै रस मूलू। तूँ सो भँवर मोर जोबन फूलू।
नैन चुवहिं जस माँहुट[5] नीरू। तेहि जल[6] अंग[7] लाग सर चीरू।
टूटहिं बुंद[8] परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारै झोला।
केहिक सिंगार को पहिर पटोरा। गियँ नहिं हार[9] रही होइ डोरा।

तुम्ह बिनु कंता धनि हरुई[10] तन तिनुवर भा[11] डोल।
तेहि पर बिरह जराइ कै[12] चहै उड़ावा झोल॥

[३५२]

फागुन पवन झँकोरै बहा[1]। चौगुन सीउ जाइ किमि[2] सहा।
तन जस पियर पात भा मोरा। बिरह न रहै पवन होइ[3] झोरा[4]।
तरिवर झरै झरै बन[5] ढाँखा। भइ अनपत्त फूल फर[6] साखा।
करिन्ह बनाफति कीन्ह हुलासू। मो कहँ भा जग दून उदासू।
फाग करहिं[7] सब[8] चाँचरि जोरी। मोहिं जिय[9] लाइ दीन्हि जसि होरी।
जौं पै पियहि जरत अस भावा। जरत मरत मोहि रोस न आवा।

---

[३५१] १. द्वि० ५ हहलि हिया, द्वि० ७ हलहलाइ। २. प्र० २ रूद (हिंदी मूल) ३. द्वि० ५, ६ तन। ४. द्वि० १ नाहूँ, काहूँ, द्वि० ७ नाहा, चाहा। ५. प्र० २ मानहु ठरि। ६. द्वि० १ झल। ७. द्वि० ४ तोहि बिन आगि, द्वि० ५, पं० १ तोहिजल आगि। ८. द्वि० २, ६, तृ० २ टुटि टुटि बुंद, द्वि० ३, ४, ५ टप टप बुंद, द्वि० ७ टुटि टुटिं लोर। ९. तृ० ३ गीय कहार। १०. प्र० २ तूल भै। ११. प्र० १ तन सो तिरिनु भा, द्वि० ३, २, ४ तृ० १, च० १ तन तन बिरहा। १२. द्वि० ७ थारि है।

[३५२] १. द्वि० २, ४, ५, पं० १ महा। २. द्वि० ७ नहिं। ३. द्वि० ७ के। ४. द्वि० ४, ५ तेहि पर बिरह देइ झकझोरा। ५. द्वि० ७, तृ० २ जरै जरै बन, तृ० ३ दिनहि नित। ६. द्वि० १, तृ० ३, च० १ उनंत पिंरम कै, तृ० २ उनपत्ति प्रेम कै, प्र० २, पं० १ अनंत फूल फर, द्वि० ५ उतंत फूल फर, द्वि० ३ अपत फूल फर। ७. द्वि० ४ फागुन रही, द्वि० ७ तृ० २ फाग न करहिं। ८. प्र० १ भल। ९. द्वि० १ कहँ, द्वि० ६ तन।

रातिहु देवस इहै मन मोरें। लागौं कंत छार?[10] जेउँ[11] तोरें।

यह तन जारौं छार[12] कै[13] कहौं कि पवन उड़ाउ।
मकु तेहि मारग होइ[14] परौं कंत धरै जहँ पाउ॥

[३५३]

चैत बसंता होइ धमारी। मोहि लेखें संसार उजारी।
पंचम बिरह पंच सर मारै। रकत रोइ सगरौ बन ढारै।
बूड़ि उठे सब तरिवर पाता। भीज मंजीठ टेसू बन राता।
मौरै आँब फरैं अब लागे। अबहुँ सँवरि घर आउ सभागे।
सहस भाव[1] फूली बनफती। मधुकर फिरे सँवरि मालती।
मो कहँ फूल भए जस काँटे। दिस्टि परत तन लागहिं चाँटे।
भर[2] जोबन एहु[3] नारँग साखा। सोवा[4] बिरह अब जाइ न राखा।

घिरिनि परेवा आव जस आइ परहु पिय टूटि[5]।
नारि पराएँ हाथ है तुम्ह बिनु पाव न छूटि॥

[३५४]

भा बैसाख तपनि अति[1] लागी। चोला[2] चीर चँदन भौ आगी।
सूरुज जरत हिवंचल ताका। बिरह बजागि[3] सौहँ[4] रथ हाँका।
जरत बजागिनि[5] होउ पिय छाँहाँ। आइ बुझाउ अँगारन्ह माहाँ।

---

१०. पं० १ ठार, शेष प्रतियों में 'थार' (हिंदी मूल)। ११. द्वि० ६ जो, तृ० २, च० १ कब। १२. प्र० २ खेह, तृ० १ भसम। १३. प्र० १ चहौं कि यह तन खेह कै। १४. प्र० १, २ उड़ि।

[३५३] १. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ भार। २. तृ० ३ बहु, द्वि० २, ३ फर। ३. द्वि० २, तृ० ३ बहु, तृ० १ तेहिं, तृ० २ औ। ४. द्वि० ७, तृ० ३ सुआ (उर्दू मूल), द्वि० १ सो अब। ५. प्र० १ तुम आवहु पिय टूटि, तृ० २, च० १ बेगि आइ परु टूटि।

[३५४] १. च० १ अब। २. द्वि० ६ जोला, द्वि० ७ चोवा। ३. तृ० ३ बीरह जागि। ४. द्वि० ७ मोरिं। ५. प्र० १ आइ सूर होइ तपु, द्वि० १ जरत बज्रासिनि धूप औ, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० २, ३, च० १, पं० १ जरत बज्रासिनि होउ पिय।

तोहि दरसन होइ सीतल नारी। आइ आगि सों करु फुलवारी।
लागिउँ जरैं[6] जरैं जस भारू। बहुरि जो भूँजसि तजौं न बारू[7]।
सरवर हिया घटत निति[8] जाई। टूक टूक होइ होइ[9] बिहराई।
बिहरत[10] हिया करहु पिय टेका। दिस्टि दवँगरा[11] मेरवहु एका।
कँवल जो बिगसा मानसर छारहि मिलै सुखाई[12]।
अबहुँ बेलि फिरि पलुहै जौं पिय[13] सींचहु आइ॥

[३५५]

जेठ जरै जग बहै[1] लुवारा[2]। उठै बवंडर धिकै पहारा[2]।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा[3]। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ[4] पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि[5] भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि[6] मंदी।
उठै[7] आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं[8] दुख बाँधी[9]।
अधजर[10] भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग[11] होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाँड़न्ह लागा[12]। अबहूँ आउ आवत सुनि[13] भागा[12]।

---

६. तृ० २ हियरा तपै। ७. द्वि० ३ फिरा भूंजिसि तजौं ना वारू। ८. प्र० १, २, द्वि० २, ५, ७, तृ० १, पं० १ अब। ९. प्र० १ टूक टूक होइ हिय, प्र० २ टूक टूक होइ गा, द्वि० १ तर कै हिया जाइ, तृ० ३ तरकि तरकि होइ होइ। १०. तृ० १ फेरहु। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ दूरि करि, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३ भपाकर, तृ० २ तव करा, च० १ दाव कैं, पं० १ दून कै। १२. प्र० १ जल सुखान कुंभिलाइ, प्र० २ जन सूखे कुंभिलाइ तृ० ३ छार भयो कुंभिलाइ, द्वि० ४, ५ बिनु जल गएउ सुखान। १३. प्र० १ कंत जो।

[३५५] १. पं० १ भवहिं। २. प्र० १, द्वि० ७ लुआरी, धिकै पहार्डा, द्वि० ४, तृ० २ लुआरा, परहिं अँगारा। ३. तृ० ३ गाजा। ४. प्र० २ लागै, द्वि० ७ जोरै। ५. द्वि० ३, ५, तृ० १, २ वह। ६. प्र० १ सुठि, द्वि० २ तन, द्वि० ७ अति। ७. तृ० २ जरै। ८. प्र० १, द्वि० ५, ७ जरौं। ९. द्वि० ७ दाधी। १०. तृ० २ न चर। ११. द्वि० १, ४, ७, तृ० २ काल। १२. द्वि० १, २, ६, ७, तृ० ३, पं० १ लागे। १३. प्र० १ उठि भागि सभागा, द्वि० २, ७, तृ० ३ घर आउ सभागे, द्वि० १, ६, पं० १ आवत औ भागे, तृ० २ आवत सुनि भागा, द्वि० ५, ३, च० १ आवत उठि भागें।

परबत समुँद मेघ[१४] ससि दिनअर[१५] सहि न सकहिं यह आगि[१६]।
मुहमद सती सराहिअै जरै जो अस पिय लागि ॥

[३५६]

तपै लाग अब[१] जेठ असाढ़ी[२]। भै मोकहँ यह[३] छाजनि गाढ़ी[२]।
तन तिनुवर भा[४] झूरौं खरी। भै बिरहा आगरि[५] सिर परी।
साँठि नाहिं लगि बात को पूँछा[६]। बिनु जिय भएउ मूँज तन छूँछा[७]।
बंध नाहिं औ कंध न कोई। बाक न आव कहौं केहि रोई।
ररि दूबरि भई[८] टेक बिहूनी। थंभ नाहिं उठि सकै न थूनी।
बरिसहिं नैन चुअहिं घर माहाँ। तुम्ह बिनु कंत न छाजन छाँहाँ[९]।
को रे कहाँ ठाट नव साजा। तुम्ह बिनु कंत न छाजन छाजा।

अबहूँ दिस्टि मया करु छान्हिन तजु घर आउ।
मंदिल उजार होत है नव कै आनि बसाउ ॥

[३५७]

रोइ गँवाएउ बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरिस बरिस बरु जाई। पहर पहर जुग जुग न सिराई।
सो न[१] आउ पिउ रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सो नारी।
साँझ[२] भए झुरि झुरि[३] पँथ हेरा[४]। कौनु सो घरी करै पिउ फेरा[४]।

---

१४. द्वि० ४ मेल। १५. प्र० १ ससि, तृ० ३ ससि मेदिनी। १६. द्वि० ७ जरहिं सो निकसै आगि।

[३५६] १. तृ० १ सुठि, द्वि० ३ यह। २. तृ० ३ असारही, गारही (उर्दू मूल)। ३. प्र० १, द्वि० ६, तृ० २ भै पिय बिन मोहि छाजनि, द्वि० २ भई बिरहिनिहि छाजनि, च० १, पं० १ बिरहिनि कहँ भई। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ कंत नाहिं घर, द्वि० २ तिनु वर भा नित, तृ० २ तन बिनु भा नित। ५. प्र० २ अगार। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ साँठि न गाँठि कहाँ लगि बोलौं। ७. प्र० १ छूँछ मूँछ जस त्रिन तन डोलां, प्र० २ छूँछि मूँज तन तिनु जसि डोलैं, द्वि० ७ छूँछि भई तन त्रिन ज्यों डोलैं। ८. प्र० १ हरि भइ बाउरि, द्वि० १ हौं दूबरि भइ, द्वि० ४, ६ भई दुहेली तृ० १ अरी दूबरि भइ। ९. द्वि० ६ नाहाँ।

[३५७] १. द्वि० ६ अबहुँ न, तृ० १ सौंह, द्वि० ३ सँवरि। २. द्वि० ३ साँच (उर्दू मूल)। ३. तृ० ३ झूठ झूठ। ४. द्वि० २, तृ० २, ३ हेरी. फेरी।

दहि[५] कोइल भै कंत सनेहा। तोला माँस रहा नहिं देहा।
रकत न रहा बिरह[६] तन गरा। रती रती होइ नैनन्हि[७] ढरा।
पाव लागि चेरी धनि हाहा[८]। चूरा नेहु जोरु रे नाहा।
बरिस देवस धनि रोइ कै हारि परी चित झाँखि।
मानुस घर घर पूँछि कै पूँछै निसरी पाँखि॥

[३५८]

भई पुछारि लीन्ह बनबासू। बैरिनि सवति दीन्ह चिल्हवाँसू।
कै[१] खर बान कसै[२] पिय लागा। जौं घर आवै अबहूँ कागा।
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौं कौनु परेवा।
धौरी पंडुक कहु पिय ठाऊँ। जौं चित रोख न दोसर नाऊँ[३]।
जाहि बया गहि[४] पिय कँठ लवा। करे मेराउ सोइ गौरवा।
कोइलि भई पुकारत रही। महरि[५] पुकारि लेहु रे[६] दही।
पियरि तिलोरि[७] आव जलहंसा। बिरहा पैठि[८] हिएँ कत[९] नंसा।
जेहि पंखी कहँ अढ़वौं[१०] कहि सो बिरह कै बात।
सोई पंखि जाइ डहि[११] तरिवर होइ निपात॥

[३५९]

कुहुकि कुहुकि[१] जसि कोइलि रोई। रकत आँसु घुँघुची बन बोई।
पै[२] करमुखी नैन तन[३] राती। को सिराव बिरहा दुख ताती।

---

५. तृ० १ वह। ६. द्वि० ७ माँसु। ७. प्र० १ लोहू। ८. प्र० १, २, पाहाँ, नाहाँ, द्वि० ७ ताहाँ, नाहाँ, तृ० १ हाथाँ, साथाँ।

[३५८] १. प्र० १, २, द्वि० ७ [illegible], द्वि० ६ होइ, तृ० १ गहि। २. द्वि० ४, ६ बिरह, तृ० १ कैस। ३. प्र० २, तृ० २ न दूसर ठाऊँ, द्वि० ७ न डर सिर पाऊँ। ४. प्र० १, २ बाज होइ, द्वि० ४, ७ बया होइ, द्वि० ३, ५ तृ० १, ३, च० १ पिया गहि, द्वि० ७ बया होइ। ५. तृ० २ होइ। ६. प्र० १ द्वि० ७, च० १, पं० १ पिउ। ७. द्वि० २ सरत औंर जल हंसा, द्वि० ५ बटेर तिलौरी हंसा, तृ० २ न सरत नवा जल हंसा। ८. द्वि० ५, तृ० १ पंथ। ९. प्र० १, २ डुक, द्वि० ७ कंतन, तृ० ३ कटक, द्वि० ४ लग, तृ० २ कब। १०. प्र० २, द्वि० ७ कहँ वोर होइ (उर्दू मूल), तृ० ३ कहँ अरहवौं (उर्दू मूल), तृ० १ कहँ ओरही, द्वि० ५ के नियर होइ। ११. प्र० १, २ जरि।

[३५९] १. प्र० १, २ उठा। २. द्वि० ३ पै। ३. प्र० १, २ पुनि, द्वि० ७ मुख।

जहँ जहँ ठाढ़ि होइ बनबासी। तहँ तहँ होइ घुँघुचिन्ह कै रासी।
बुंद बुंद महँ जानहुँ जीऊ। कुंजा गुंजि[४] करहिं पिउ पिऊ।
तेहि दुख डहे[५] परास निपाते। लोहू बूड़ि उठे परभाते[६]।
राते बिंब[७] भए तेहि लोहू। परवर पाक फाट हिय गोहूँ[८]।
देखिअ जहाँ सोइ होइ[९] राता। जहाँ सो रतन कहै को[१०] बाता।

ना पावस[११] ओहि देसरें ना हेवंत बसंत।
ना कोकिल न पपीहरा केहि सुनि आवहि कंत॥

[३६०]

फिरि फिरि रोई न कोई डोला। आधी राति बिंहगम बोला।
तैं फिरि फिरि दाधे सब पाँखी। केहि दुख[१] रैनि न लावसि आँखी।
नागमती कारन कै[२] रोई। का सोवै। जौं कंत बिछोई।
मन चित हुतें न बिसरै[३] भोरें। नैन कजल चखु रहै[४] न मोरें।
कहिसि जाति[५] हौं[६] सिंघल दीपा। तेहि सेवाति कहँ नैना[७] सीपा[८]।
जोगी होइ निसरा सो नाहू। तब हुत[९] कहा सँदेस न काहू।
निति पूछौं सब[१०] जोगी जंगम। कोइ निजु बात न कहै बिहंगम।

चारिउ चक्र[११] उजारि भे सकसि सँदेसा टेकु[१२]।
कहौं बिरह दुख आपन[१३] बैठि सुनहि डँड एकु॥

[३६१]

तासौं दुख कहिए हो बीरा। जेहि सुनि कै लागै पर पीरा।

---

४. प्र० २, द्वि० ३, ४, तृ० ३, च० १ गुंजागुंज, द्वि० २, ५, तृ० १ कूँचाकूँच, द्वि० ७ जुग जुग भजेहु। ५. प्र० १ लेत, प्र० २ देखि। ६. प्र० १, द्वि० ७ होइ राते। ७. द्वि० १ पेम, तृ० ३ बूड़ि। ८. तृ० ३ कोहूँ (उर्दू मूल)। ९. प्र० १ सोइ। १०. तृ० १ कहौं केहि। ११. द्वि० ७ पावक।

[३६०] १. द्वि० ५ गुना। २. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, करुना कै, द्वि० ४, केहि कारन। ३. तृ० ३ बिसरै। ४. तृ० ३ अहा। ५. तृ० १, पं० १ कहि न जाति, च० १ कोइ न जाइ। ६. च० १ तेहि। ७. तृ० १ आपुन। ८. प्र० १ सेवती ताहि नैन भो सीपा। ९. द्वि० ५ हुत। १०. द्वि० १ मैं, तृ० २ उठि। ११. प्र० १, २ दिसा। १२. द्वि० ७ तुम्ह बिनु मोरे लेख। १३. द्वि० ७ आपन जो।

को होइ भीवँ अँगवै[1] परग.हा[2]। को सिंघल पहुँचावै चाहा।
जहाँ सो कंत गए होइ जोगी। हौं किंगरी भै झुरौं बियोगी।
ओहूँ सिंगी पूरै गुरु भेंटा। हौं भै भस्म न आइ समेटा।
कथा जो कहै आइ पिय केरी। पाँवरि[3] होउँ जनम भरि चेरी।
ओहि के गुन सँवरत भै माला। अबहुँ न बहुरा उड़िगा छाला।
बिरह गुरुइ[4] खप्पर[5] कै[6] हिया। पवन अधार रहा होइ[7] जिया[8]।

हाड़ भए[9] झुरि किंगरी नसैं भईं सब ताँति।
रोवँ रोवँ तन धुनि उठै[10] कहेसु[11] बिथा एहि भाँति ॥*

[३६२]

रतनसेनि कै माइ सुरसती। गोपीचंद जसि मैनावती।
आँधरि बूढ़ि सुतहि[1] दुख रोवा। जोबन रतन कहाँ भुँइ टोवा[2]।
जोबन अहा लीन्ह सो[3] काढ़ी। भै बिनु टेक करै को ठाढ़ी।
बिनु जोबन भौ आस पराई। कहाँ सपूत[4] खाँभ होइ आई[5]।
नैनन्ह दिस्टि[6] त[7] दिया बराहीं। घर अँधियार पूत[8] जौं नाहीं।

---

[३६१] १. प्र० १, २ द ंगि, द्वि० २ नगवै, द्वि० ३, ४, ६, तृ० १, ३, पं० १ द ंगवै। २. द्वि० ४ रहा। ३. द्वि० ७ बावरि। ४. द्वि० ४ ग़रदी, द्वि० ३ गुरोइ, तृ० ३ करोइ (उर्दू मूल), द्वि० ७, च० १ करो। ५. द्वि० ७ पीर करोइ जाप। ६. प्र० १ को। ७. प्र० १, द्वि० ६ सोइ, तृ० १ सो। ८. द्वि० १ पिया। ९. तृ० ३ रोईं (उर्दू मूल)। १०. प्र० १ रोवँ रोवँ सो धुनि उठै, द्वि० २ उठै प्रेम धुनि रोम सब, द्वि० ७ रोवँ रोवँ धुनि उठि कहै। ११. द्वि० २ बिरह।

* इसके अनंतर प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३ में एक अतिरिक्त छंद है।

[३६२] १. प्र० १ रोइ, प्र० २, द्वि० ७ करै, द्वि० १ बहुत, द्वि० ४, च० १, पं १ सुठि, द्वि० ५ सुठइ, तृ० २ सो तोहि, द्वि० ३ भई। २. प्र० १, द्वि० ६ च० १ अहा मैं खोवा, द्वि० ४ कहाँ होइ खोवा, तृ० १ कहाँ भुइँ खोवा। ३. प्र० १ सब। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, पं० १ सो पूत, द्वि० ७ सो कंत। ५. द्वि० ५ गएहु यहराई। ६. द्वि० १ माँझ। ७. प्र० १ तहँ, प्र० २, द्वि० ७ तहाँ, द्वि० २, ४, ५, तृ० १, २, च० १ न, तृ० ३ तो। द्वि० ३ कर, पं० १ तेहि। ८. प्र० २ कत, द्वि० ७ रूप।

को रे चलाव[9] सरवन के ठाँऊ। टेक देहि ओहि[10] टेकौं पाऊँ।
तुम्ह सरवन होइ काँवरि सजी[11]। डारि लाइ सो काहे[12] तजी[11]।
सरवन सरवन कै ररि मुई[13] सो काँवरि डारहि[14] लागि।
तुम्ह बिनु पानि न पावै[15] दसरथ लावै[16] आगि॥

[३६३]

लै सो[1] सँदेस बिहंगम चला। उठी[2] आगि बिनसा[3] सिंघला।
बिरह बजागि बीच को ठेघा[4]। धूम जो[5] उठे स्याम भए मेघा।
भरि गा गँगन लूकि तसि छूटी[6]। होइ सब नखत गिरहिं भुइँ टूटी[6]।[7]
जहँ जहँ पुहुमी[8] जरी भा रेहू। बिरह के दगध होइ जनि केहू[9]।
राहु केतु जरि लंका जरी। औ उड़ि चिनगि चाँद महँ परी।
जाइ बिंहगम समुँद डफारा। जरे माँछ पानी भा खारा।
दाघे बन[10] तरिवर[11] जल सीपा। जाइ नियर भा सिंघल दीपा[12]।
समुँद तीर एक तरिवर जाइ बैठ तेहि रूख।
जब लगि कह न सँदेसरा[13] ना ओहि[14] प्यास न भूख॥

---

९. द्वि० ४; च० १ चला। १०. प्र० १, २ मोहि, द्वि० ४,६ जो। ११. द्वि० ७ काँधू, बाँधू। १२. प्र० १ डार लाइ काहे मोहि, तृ० २ कौने डार लाइ सो। १३. प्र० २ अंधरे (उर्दू मूल), द्वि० २ आप ररि। १४. प्र० १ गई जो काँवरि, प्र० २, द्वि० २ मुई सो काँवरि, तृ० ३ तरिवर काँवरि, द्वि० ४, ५, च० १ माता काँवरि, द्वि० ६, ७ सो अब काँवरि, तृ० २ सोई काँवरि, द्वि० ३ बिन रर काँवरि। १५. च० १ को मोहि पानि पियावै, पं० १ तुम्ह बिनु पानि पियै नहिं। १६. प्र० १, २, द्वि० ३, पं० १ लाई।

[३६३] १. प्र० १, २, द्वि० ७ जो। २. प्र० १ लाइ। ३. प्र० २ सब, द्वि० ४, ५ सगरै, द्वि० ७ मन मों, च० १ सिगरी, शेष सभी प्रतियों में 'मनसा'। ४. द्वि० २, ३, ६, तृ० ३ थेधा। ५. तृ० ३ सो। ६. तृ० ३ छूटे, टूटे (उर्दू मूल)। ७. प्र० १ होइ निसरी जनु बीर बहूटी। ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, तृ० २, च० १ भुम्मि। ९. प्र० १, २ भएउ जरि खेह, द्वि० ४ भई जनु खेहू, द्वि० ३ होइ जनु खेहू। १०. द्वि० २ पँथि। ११. द्वि० ४, ५ बीहड, प्र० १ ओखद, द्वि० २, ३, ६, तृ० २, च० १, पं० १ बीरिख। १२. द्वि० १ औ दाभे सब पंखी हंसा, जाइ नियर भा सिंघल देसा। १३. द्वि० २, ४, ५ सँदेसा। १४. द्वि० १, ४ तब लगि।

[३६४]

रतनसेनि बन करत अहेरा। कीन्ह ओहि तरुवर तर फेरा।
सीतल बिरिछ समुँद के तीरा। अति उतंग औ छाँह गँभीरा।
तुरै बाँधि कै बैठु अकेला। औरु जो साथ करैं सब[1] खेला।[2]
देखेसि फरी जो तरुवर साखा। बैठि सुनहिं पाँखिन्ह कैं भाखा।
उन्ह महँ ओहि बिहंगम अहा। नागमती जासौं दुख कहा।
पूँछहिं सबै बिहगम नामा। अहो मींत काहे तुम्ह[3] स्यामा।
कहेसि मींत मासक दुइ भए। जंबू दीप तहाँ[4] हम गए।

नगर एक हम देखा गढ़ चितउर ओहि नाउँ।
सो दुख कहौं कहाँ लगि हम दाधे तेहि ठाउँ[5]॥

[३६५]

जोगी होइ निसरा जो राजा। सून नगर जानहुँ धुँध बाजा।
नागमती है ताकरि रानी। जरि बिरहैं भै कोइलि बानी।
अब लगि जरि होइहि भै छारा[1]। कहि न जाइ बिरहा कै झारा[1]।
हिया फाट वह जबहिं[2] कुहूकी। परे आँसु होइ होइ सब[3] लूकी।
चहुँ खँड[4] छिटकि परी[5] वह आगी। धरती जरत गँगन कहँ लागी।
बिरह दवा अस को रे[6] बुझावा[7]। चहे लागि जरि हियरें[8] धावा।
हौं पुनि तहाँ डहा दव[9] लागा[10]। तन भा स्याम जीव लै भागा।

---

[३६४] १. प्र० १, २ साथी और अहेरा, द्वि० १, च० १, पं० १ साथी और करहिं बन, द्वि० ४ साथी और करहिं सब। २. तृ० १ बैठेउ आइ उतरि तेहि छाहाँ, भा बिसराम हरख हिय माहाँ। ३. प्र० १ भै। ४. प्र० १, २ तृ० २ देस। ५. प्र० १. २ गाउँ।

[३६५] १. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ७, तृ० ३ राखा, भाखा। २. द्वि० २, च० १ जौहि (हिंदी मूल)। ३. द्वि० भै भै, तृ० ३ होइ तहँ। ४. प्र० २, तृ० ३ दिसि। ५. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ छिटकि जरी, द्वि० ४, ५, ७, तृ० १ छिटकी। ६. प्र० १ को जरत। ७. तृ० २ सेरावा। ८. द्वि० ३ सचरे। ९. द्वि० २, ५ दहा बन, च० १, पं० १ जरा दब। १०. प्र० १, २ मो कहँ धुवाँ तहाँ यह लागा, द्वि० ४ हौं पुनि तहाँ सो दाधै लागा।

का तुम्ह हँसहु गरब कै करहु समुँद महँ केलि।
मति[11] ओहि बिरहे बसि परहु दहै अगिनि जल[12] मेलि॥

[३६६]

सुनि चितउर[1] राजैं मन गुना। बिधि सँदेस मैं कासौं[2] सुना।
को तरिवर अस[3] पंखी भेसा[4]। नागमती कर कहै संदेसा।
को तूँ मींत मन चित्त बसेरू। देव कि दानौ पौन पखेरू।
रुद्र ब्रह्म हरि[5] बाचा तोही। सो निजु अंत बात कहु[6] मोही।
कहाँ सो नागमती तुइँ देखी। कहेसु बिरह जस मरन बिसेखी।
हौं राजा सोई भा जोगी। जेहि कारन वह असि बियोगी।
जस तूँ पंखि हौहुँ दिन भरऊँ। चाहौं[7] कबहुँ[8] जाइ उड़ि परऊँ।

पंखि आँखि[9] तेहि मारग लागी दुनहुँ रहाहिं[10]।
कोइ न सँदेसी आवहिं[11] तेहि क सँदेस कहाहिं।

[३६७]

पूँछसि काह सँदेस बियोगू। जोगी भया न जानसि जोगू।
दहिने संख न[1] सिंगी पूरे। बाएँ पूरि बादि[2] दिन झूरे।
तेलि बैल जस बाएँ फिरै। परा भौंर महँ सौंह न तिरै।
तुरी औ नाव दाहिन रथ हाँका। बाए फिरै कोंहार क चाका।

---

११. प्र० १ मकु। १२. द्वि० २ सिर, द्वि० ३ महँ।

[३६६] १. तृ० ३ चितूर (उर्दू मूल)। २. प्र० १ कापहँ, द्वि० ५ कानन। ३. प्र० १, द्वि० ४, ५, च० १ तरिवर पर, प्र० २ तरिवर तर, द्वि० ६ अस आव। ४. द्वि० ५ बेसा। ५. तृ० २ के अतिरिक्त सभी में 'सव' है। ६. प्र० १, २ बात आइ कहु, द्वि० ७ बात कहु तै. तृ० १, ३ बात बात, द्वि० ३ च० पं १ अतिबात कहु। ७. प्र० १, २ चहौं कि। ८. प्र० १, २ अबहिं, शेष में 'कौहु' (हिंदी मूल)। ९. प्र० १ नैन लाग प्र० २ मोहि आँखि, द्वि० ५ पलक आँखि। १०. प्र० १ चितवत दुनहु रहाहिं, द्वि० ३ लागे दिनहिं (उर्दू मूल) रहाहिं, द्वि० ७ लागी उहै रहाहिं द्वि० ७ लागी दिन निसि दुओं रहाहिं। ११. द्वि० ७ संदेसी नहि आव कोइ।

[३६७] १. द्वि० १ तैं नहिं, द्वि० २, तृ० २. ३ सिंगन, द्वि० ५ संवन। २. द्वि० ६ रैनि। ३. द्वि० २ महँ सो नहिं निसरै।

तोहि अस नाहीं[4] पंखि भुलाना। उड़ै[5] रहा आदि[6] जगत महँ[7] जाना।
एक दीप का आवउँ[8] तोरे। सब संसार[9] पाव तर मोरे।
दहिनें फिरै सो अस उँजियारा। जस जग चाँद सुरुज औ तारा।
मुहमद बाईं दिसि तजी एक सरवन एक[10] आँखि।
जब ते दाहिन होइ मिला बोलु पपीहा पाँखि॥

[३६८]

हौं धुव अचल सो दाहिन लावा। फिरि सुमेरु चितउर[1] गढ़ आवा।
देखेउँ तोरे मँदिल घमोई[2]। माता तोरि आँधरि भै रोई।
जस सरवन बिनु अंधी अंधा। तस ररि मुई तोहि चित बंधा।
कहेसि मरौं अब काँवरि देई[3]। सरवन नाहिं पानि को देई।
गई पियास लागि तेहि साथाँ[4]। पानि दिहैं दसरथ के हाथाँ[4]।
पानि न पियै आगि पै चाहा। तोहि अस पूत जरम अस लाहा[5]।
भागीरथी होइ करु फेरा। जाइ सँवारु मरन कै बेरा।
तूँ सपूत मनि ताकरि अस परदेस न लेहि।
अब ताईं मुई[6] होइहि मुएहुँ जाइ गति देहि॥

[३६९]

नागमती दुख बिरह[1] अपारा। धरती सरग जरै तेहि झारा।
नगर कोट घर बाहिर सूना। नौजि होइ घर पुरुख[2] बिहूना।

---

४. द्वि० ४, ५, तृ० ३ नाहिं जो। ५. प्र० १ उड़ि। ६. च० १ आव। ७. तृ० ३ को, द्वि० ६ कहँ, प्र० १, द्वि० २, तृ० १ के। ८. च० १ आएउँ। ९. प्र० १ सातौं दीप। १०. प्र० १ स्रवन बायँ औ, द्वि० १, ६ एक सरवन औ।

३६८] १. द्वि० २ चितुर (उर्दू मूल तुलना० ५८७.१)। २. तृ० ३ तोर मँदिर घर मोई, द्वि० ७ तोर मँदिल घर सोई। ३. प्र० १, द्वि० ४, ५ काँवरि को लेई, प्र० २, द्वि० ७, पं० १ अब काँवरि लेई, द्वि० २, तृ० २, च० १ अब काँवरि सेई। ४. प्र० १ साथा। ५. प्र० १ कै लाहा, द्वि० ७ जग माँहा। ६. प्र० १ जरि।

[३६९] १. तृ० ३ दगध, द्वि० ५, च० १, पं० १ तपइ। २. प्र० १ नौजि होइ घर कंत, द्वि० ६ जो घर नाहीं कंत।

तूँ काँवरू परा बस लोना। भूला जोग छरा जनु[3] टोना।
ओहि तोहि कारन मरि भै बारा[4]। रही नाग होइ पवन अधारा।
कह चील्हन्ह पिय पहँ लै खाहू[5]। माँसु न कया जो[6] रूचैं काहू[7]।
बिरह मँजूर नाग वह नारी। तूँ मँजार करु बेगि गोहारी।
माँसु गरा पाँजर[8] होइ परी। जोगी अबहुँ पहुँचु लै जरी।

देखि बिरह[9] दुख ताकर मैं सो तजा बनबास।
आएँउ भागि[10] समुँद टट[11] तबहुँ[12] न छाँड़ैं[13] पास।।*

[३७०]

अस[1] परजरा[2] बिरह कर कठा[3]। मेघ स्याम भै धुआँ जो उठा।
दाधे राहु केतु गा[4] दाधा। सूरज जरा चाँद जरि[5] आधा।
औ सब नखत तराईं जरहीं। टूटहिं लूक धरनि महँ परहीं।
जरी सो धरती ठाँवहि ठाँवाँ। ढंक परास जरे तेहि ठावाँ।
बिरह साँस[6] तस[7] निकसै[8] झारा। धिकि धिकि[9] परबत होहिं[10] अँगारा।

---

३. प्र० १, तृ० २, च० १ चढ़ा तोहि, प्र० २, द्वि० ५ छरा तस, द्वि० ४ छरा तुहि, तृ० १, द्वि० ३ छरा जस, पं० १ छारा तोहि। ४. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६, तृ० १ मर भै मारा, प्र० २ मर भै मरा, द्वि० ७ भरि कै मरा, च० १ मर भल मारा। ५. द्वि० १ पहँ लै जाहू, द्वि० ४, ५, च० १ लै मो कहँ खाहू, द्वि० ७ लै करि जाहू, तृ० १ मोहिं लै खाहू। ६. पं० १ होइ तौ। ७. तृ० २ जहँवाँ पिय देखै तुम्ह खाहू। ८. प्र० १, २, द्वि० १, २, ५, ७, तृ० १, २, ३, च० १ पं० १ माँजरि, द्वि० ४ माँजहि। ९. तृ० ३ दगध। १०. द्वि० २, तृ० ३ छाँड़ि। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७, पं० १ महँ, द्वि० २ लहि। १२. प्र० २, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २ च० १, पं० १ तउअ। १३. द्वि० ३ पहुँचावै।

[३७०] १. प्र० १, २ सुनि। २. द्वि० ५ पुनि जरा, द्वि० ७ मर जरा। ३. प्र० १, २ कै कथा, द्वि० ४, ५, पं० १ कर गठा, द्वि० २ कर खटा, द्वि० ७ कर काठा। ४. प्र० १ बन, प्र० २ पुनि, द्वि० ७, तृ० ३ का (उर्दू मूल)। ५. प्र० १, तृ० १ भा, पं० १ पुनि। ६. तृ० २ आँच। ७. प्र० १ सँग, च० १ तन। ८. द्वि० २ निसि निसि कै। ९. प्र० १, २ धिकहिं, द्वि० ४, ५ पं० १ दहि दहि, द्वि० २ दग दकि, च० १ जो जरि। १०. द्वि० ७ परै।

भँवर पतंग जरे औ नागा। कोइलि भुँजइल औ सब[11] कागा।
बन पंछी सब जिउ लै उड़े। जल पंछी जरि[12] जल महँ बुड़े।
हँहूँ जरत तहँ निकसा[13] समुँद बुझाएउँ आइ।
समुँदौ जरा खार भा पानी[14] धूम रहा जग[15] छाइ॥

[३७१]

राजैं कहा रे सरग सँदेसी। उतरि आउ मोहि मिलु सहदेसी[1]।
पावँ टेकि[2] तोहि[3] लावौं हियरे। प्रेम सँदेस कहौ होइ नियरे।
कहा बिहंगम जो बनबासी। कित गिरिही तें होइ उदासी।
जेहि तरिवर तर तुम अस कोऊ। कोकिल काग बराबरि दोऊ।
धरती महँ बिख चारा पारा। हारिल जानि पुहुमि[4] परिहरा[5]।
फिरौं बियोगी डारहि डारा। करौं चलै कहँ पंख सँवारा।
जियन की घरी घटत निति जाहीं। साँसहि[6] जिउ है देवसन्ह[7] नाहीं[8]।
जौं लहि फेरि[9] मुकुति है परौं न पिंजर माहँ।
जाउँ बेगि थरि आपनि है जहाँ बिंझ[10] बनाँह॥

[३७२]

कहि सो[1] सँदेस बिहंगम चला। आगि लाइ सगरिउ सिंघला।

---

11. प्र० १ डोमन, प्र० २ औ डोम। 12. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, तृ० १, २ दुख, तृ० ३ सब, द्वि० ५ जलि। 13. द्वि० ७ प्रबत तहाँ हारि कै। 14. प्र० १, द्वि० ६, च० १ खार भा, द्वि० ५, तृ० २ पानि भा खारा। 15. प्र० १ जल।
* द्वि० १ में यह छंद नहीं है।

[३७१] 1. प्र० १, द्वि० ४, ५, ७ परदेसी, तृ० ३ सुभदेसी। 2, द्वि० २ आव पंखि, द्वि० ७ पाव जोरि। 3. प्र० १ कै। 4. प्र० १, द्वि० ४, ७, तृ० १ भुम्मि, प्र० २ भूजि। 5. द्वि० १ हारिल भए जानि भुइँहरा, द्वि० ५, च० १, पं० १ हारिल हिए जानि भुइ हरा, द्वि० ६ सो दुख जानि हारिल भुइँ धरा। 6. द्वि० ४, ६, तृ० २, ३, च० १ साँझहि। 7. प्र० १, २ उसाँसहि, द्वि० २ दिवस है। 8. द्वि० ३ साँस जीव घट पलटि समाई। 9. प्र० १, द्वि० २, तृ० २, च० १ फिरौं, तृ० ३ फेरु, द्वि० ४ फिरइ, द्वि० ५ फेरइ। 10. द्वि० ३, ४, तृ० १, च० १, पं० १ जेहि बीच, तृ० २ जेहि पंथ।

[३७२] 1. द्वि० २ कहि सँदेस सो, द्वि० ४, ५ कहि सँदेस, तृ० ३ कहेसि संदेस, च० १ पं० १ कहि जो संदेस।

घरी एक राजैं गोहरावा। भा अलोप पुनि दिस्टि न आवा।
पंखी नाउँ न देखौं पाँखौ। राजा रोइ फिरा कै साँखौ।
जस हेरत यह पंखि हेराना। दिनेक हमहुँ अस करब पयाना[2]।
जौं लगि प्रान पिंड एक ठाऊँ। एक बेर चितउर गढ़ जाऊँ।
आवा भँवर मँदिल जहँ केवा[3]। जीउ साथ लै गएउ परेवा[4]।
तन सिंघल मन चितउर बसा। जिउ बिसँभर जनु नागिनि डसा[4]।

जेति नारि हँसि पूँछै[5] अमिअ बचन जिमि निंत।
रस उतरा सो[6] चढ़ा बिख ना[7] ओहि चिंत न मिंत॥[8]

[३७३]

बरिस एक तेहि सिंघल रहे। भोग बेरास कीन्ह जस[1] चहे[2]।
भा उदास जिउ सुना सँदेसू। सँवरि चला मन चितउर[3] देसू[4]।
कँवल उदासी देखा[5] भँवरा। थिर न रहै मालति मन[6] सँवरा।
जोगी औ मन पौन परावा। कत ये रहे जौं चित्त उँचावा।
जौं जिय काढ़ि देइ इन्ह कोई। जोगी भँवर न आपन होई।
तजा[7] कँवल मालति हियँ[8] घाली। अब कत थिर[9] आछै अलि आली।
गंध्रपसेनि आए सुनि बारा। कस जिउ भएउ उदास तुम्हारा।[10]

---

२. प्र० १, २ दिन दस गएँ हमार पयाना। ३. प्र० १, २ आवा मँदिर जहाँ रह केवा। ४. द्वि० १ में इन दो पंक्तियों के स्थान पर ३७०.२, ३७०.३ दी हुई हैं। ५. प्र० १, २, द्वि० ४ बात कइ, द्वि० १ बोलै। ६. प्र० १, २ जो। ७. द्वि० २ रस उत्तर कछु आवैं, तृ० १ रस उतरा रस चढ़ा। ८. द्वि० १ में छंद के इस दोहे के दूसरे, तीसरे, चौथे चरणों के स्थान पर अगले दोहे के वे ही चरण हैं।

[३७३] १. प्र० १, २ जत, द्वि० ७ सम। २. पं० १ कहे। ३. द्वि० २ सँवरि चला चितउर गढ़, तृ० ३ सँवरि चला चितउर कर, द्वि० ३, ५, तृ० २ चला सँवरि कै चितउर, च० १, पं० १ चला सँवरि कै आपन। ४. द्वि० ७ भेसू। ५. प्र० १, द्वि० ७ उदास जो देखा, प्र० २ उदास देषु जौं। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ अब। ७. द्वि० ४,५ चला। ८. प्र० १ गियँ। ९. प्र० १, २ अकथ कथा, द्वि० ७ सकती थिर। १०. तृ० २ गंध्रपसेनि आइ सिर नावा, अब कस जीव उदास जनावा।

मैं तुम्हहीं जिउ लावा दै नैनन्ह महँ[११] बास।
जौं तुम्ह होहु उदासी[१२] तौ यह काकर[१३] कबिलास ॥

[३७४]

रतनसेनि बिनवा कर जोरी। अस्तुति जोग जीभ कहँ[१] मोरी।
सहस जीभ जौं होइ गोसाईं। कहि न जाइ अस्तुति जहँ ताईं।
काँचु करा तुम्ह कंचन कीन्हा। तब भा रतन जोति तुम्ह दीन्हा।
गाँग जो निरमल[२] नीर[३] कुलीना। नार मिलें जल होइ[४] न मलीना।
तस हौं अहा मलीनी करा। मिलेउँ आइ तुम्ह भा निरमरा।
मान[५] समुंद मिला होइ सोती[६]। पाप हरा निरमल भै जोती।
तुम्ह मनि आएउँ सिंघल पुरी। तुम्हतें चढ़ेउँ राज औ कुरी।

सात समुँद तुम्ह राजा सरि न पाव कोइ घाट।
सबै आइ सिर नावहिं जहाँ तुम्हारइ[७] पाट ॥

[३७५]

अवसि[१] बिनति एक करौं गोसाईं। तब लगि कया जिऔं[२] जब ताईं।[३]
आवा आजु हमार परेवा। पाती आनि दीन्ह पति देवा।

---

११. प्र० २ दै दै नैनन्ह। १२. प्र० २, द्वि० ७ उदास अब, तृ० १ बतावहु। १३. प्र० १ तौ काकर, प्र० २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, च० १ यह काकर।

[३७४] १. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, तृ० २, च० १ नहिं, द्वि० ७ का। २. प्र० २ निराली। ३. प्र० १, २ तैस, द्वि० ७ गंग। ४. प्र० १ नारा मिले न होइ मलीना, तृ० ३ निरमल जल नहि होइ मलीना, द्वि० ५, तृ० १, २ नार मिलें मत होइ मलीना। ५. प्र० १, २ द्वि० ७ बान, द्वि० २, ४, ५, तृ० २, पं० १ पानि। ६. तृ० ३ मोंती। ७. द्वि० २, ४, ६, तृ० १, पं० १ तुम्हारा, तृ० ३ तुम्हारेउ, द्वि० ७ तोहार अस, तृ० २ तोहारा।

[३७५] १. प्र० १, द्वि० ३ औ, प्र० २, द्वि० ७ ऐसि, द्वि० २, ४, ५, च० १, पं० १ औ सो। २. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ७, तृ० २, च० १, पं० १ जीव। ३. द्वि० १ असि कै बिनती कीन्हि बसीठी, पहिलें करुई पाछें मीठी। (२६९.१)

राज काज औ भुइँ उपराहीं। सतुरु[4] भाइ अस कोइ हित[5] नाहीं।
आपनि आपनि करहिं सो लीका। एकहिं मारि एक चह टीका।
भएउ अमावस नखतन्ह राजू। हम कै चाँद चलावहु आजू।
राज हमार जहाँ चलि आवा। लिखि पठएन्हि अब[6] होइ परावा।
उहाँ नियर ढीली सुलितानू। होइहि भोर उठिहि जौं भानू।

तुम्ह चिरंजिवहु जौं लहि महि गँगन औ जौं लहि हम आउ[7]।
सोस हमार तहाँ निति जहाँ तुम्हारइ[8] पाउ॥

[३७६]

राजसभा सब[1] उठी[2] सँवारी[3]। अनु बिनती राखिअ पति भारी।
भाइन्ह माहँ होइ जनि फूटी। घर के भेद लंक असि[4] टूटी।
बीरौ लाइ न सूखै दीजै। पावै पानि दिस्टि सो कीजै।
अनु राखा[5] तुम्ह दीपक लेसी। पै न रहै पाहुन परदेसी।
जाकर राज जहाँ चलि आवा। उहै देस पै[6] ताकहँ भावा[7]।
हम दुहुँ नैन घालि कै राखहिं। अैसि भाख[8] यहि जीभ न[9] भाखहिं[10]।
देहु देवस सैं कुसल सिधावहिं। दीरघ आउ होइ[11] पुनि[12] आवहिं।

---

४. प्र० १ नियर, तृ० १ सत्त। ५. प्र० २ दूजो, द्वि० २, ५, ६, ३, च० १, पं० १ कोऊ, द्वि० ४, तृ० १ कोई, द्वि० ७, तृ० २ कोई जग। ६. प्र० २ उन्ह। ७. प्र० १, २ तुम्ह चिरँजिवहु तौलहिं जौं लहि गगन महि आउ, तृ० १, २, च० १, पं० १ तुम्ह चिर जौंलहि महि गगन औ हम जौ लहि आउ, द्वि० १ तुम्ह चिर जियहु तौ लगि औ मैं जब तें आउ, द्वि० ६ तुम्ह चिरजीवहु लहि गगन औ जौ लहि हम आउ, द्वि० ७, तृ० ३ तुम्ह चिर जीवहु जौ लहि मही औ हम जौ लहि आउ, द्वि० ३ तुम्ह सिर जो लहि महि गगन औ हम जौ लहि आउ। ८. द्वि० १ ठाकुर कर, द्वि० ७ तोहार हुइ।

[३७६] १. द्वि० ४, तृ० २, पं० १ पुनि। २. द्वि० २ बानैत, तृ० २ बात। ३. तृ० ३ सँभारी। ४. प्र० १ सो। ५. द्वि० ७ राजा। ६. प्र० १ द्वि० ७ पुनि। ७. द्वि० १ अंत दसा पुनि होइ परावा। ८. प्र० १ अैसी भाषा, द्वि० २ वह न रहै, तृ० ३ अैसन जानि, द्वि० ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ अैसि बोलि। ९. द्वि० २ बिनती बहु। १०. द्वि० ७ राखहिं। ११. प्र० २ दीरघ होइ होउ पुनि, च० १ दीरघ होइ बहुरि। १२. प्र० १ तौ, द्वि० ३ फिरि।

सबहिं बिचार परा अस भा गवने कर साज।
सिद्ध गनेस मनावहु बिधि पुरवै सब[13] काज ॥

[३७७]

बिनौ[1] करै पदुमावति नारी[2]। हौं पिय कँवल सो कुंद नेवारी[3]।
मोहि असि कहाँ[4] सो मालति बेली। कदम सेवती चाँप[5] चँबेली।
औ सिंगार हार जस ताका[6]। पुहुप करी अस[7] हिरदै लागा।
हौं सो[8] बसंत करौं[9] निति पूजा। कुसुम गुलाल सुदरसन कूजा।
बकचुन बिनवौं[10] अवसि बिमोही[11]। सुनि बिकाउ[12] तजि[13] जाही जूही।
नागेसरि जौं है मन[14] तोरें। पूजि न सकै बोल सरि[15] मोरें।
होइ सतबरग लीन्ह मैं सरना। आगें कंत करहु जो करना।
केत नारि समुझावै[16] भँवर न काँटे बेध।
कहै मरौं पै[17] चितउर[18] करौं जग्गि[19] असुमेध ॥

[३७८]

गवनचार पदुमावति सुना। उठा धक्कि[1] जिय[2] औ सिर धुना।

---

13. प्र० १, द्वि० ५, ६, तृ० ३ मन। 14. प्र० २ मन।

[३७७] 1. प्र० १ बिनति, प्र० २ बिनै। 2. प्र० १, २, ३, ४, तृ० ३ बारी। 3. प्र० १, २ सुगंध सँवारी, द्वि० ४, ५, ३, च० १, पं० १ सुगंध नेवारो। 4. प्र० १ नाहिं। 5. प्र० १, २, पं० १ कुंद। 6. तृ० ३ माँगा। 7. प्र० १ सब। 8. प्र० १ होइ, प्र० २ हुऐ, तृ० ३ बिकौ, द्वि०३ हौं जो, पं० १ होउँ। 9. तृ० १ करौ। 10. तृ० ३ बिनवै। 11. तृ० २ बकचुन बिनवौ सुनु रे बिमोही, च० १ बकचुन होउँ आव अस मोही। 12. प्र० २ सो ककउर, तृ० २ सो सिंगार। 13. प्र० १, २ जो। 14. प्र० १ चित्त। 15. तृ० ३ मोलसरि। 16. प्र०१ हँसि बात कइ। 17. तृ० २, च० १ जाउँ। 18. प्र० १ गढ़ चितउर, प्र० २ चितउर नगर। 19. प्र० १, २, जाइ, तृ० ३ जाय।

*द्वि० १ में यह छंद नहीं है, केवल इसके दोहे के दूसरे, तीसरे तथा चौथे चरण छंद ३७२ के दोहे के दूसरे, तीसरे, चौथे चरणों के रूप में आए हैं। तृ० ३ में भी यह छंद यहाँ न आकर छंद ३७२ के बाद आता है।

[३७८] 1. प्र० १, द्वि० ५, ७, ३, च० १, पं० १ धसकि, द्वि० २, तृ० १, ३ धरकि। 2. द्वि० ६ मन।

गहबर नैन आए भरि आँसू। छाँड़ब यह सिंघल कबिलासू।
छाँड़िउँ[3] नैहर चलिउँ बिछोई। एहि रे दिवस मैं होतहि रोई।
छाँड़िउँ[3] आपन सखी सहेली। दूरि गवन तजि चलिउँ[3] अकेली।
जहाँ न रहन भएउ निज चालू। होतहि कस न भएउ तहँ[4] कालू।
नैहर आएँ का सुख देखा। जनु होइ गा सपने कर लेखा।
राखत बारि न पिता निछोहा। कत बियाहि कै[5] दीन्ह बिछोहा।

हिएँ आइ दुख[6] बाजा जिउ जानहु गा छेंकि।
मन तिवानि कै[7] रोवै हरि भँडार कर टेकि॥

[३७९]

पुनि पदुमावति[1] सखीं बोलाईं। सुनि कै गवन मिलै सब आईं।
मिलहु सखी हम तहँवाँ जाहीं। जहाँ जाइ फिरि आवन नाहीं।
सात समुंद्र पार वह देसू। कत रे मिलन कत आव[2] सँदेसू।
अगम पंथ परदेस सिधारी। न जनहु[3] कुसल[4] कि बिथा हमारी।
पितैं निछोह किएउ[5] हिय माहाँ। तहाँ को हमहिं राख गहि बाहाँ।
हम तुम्ह एक मिले[6] सँग खेला। अंत[7] बिछोउ आनि केइँ[8] मेला[9]।
तुम्ह असि हितू[10] सँघाति पियारी। जियत जीय नहिं करौं[11] निनारी।

कंत चलाई[12] का करौं आएसु जाइ न मेंटि[13]।
पुनि हम मिलहिं कि ना मिलहिं लेहु सहेलिहु भेंटि॥[14]

---

3. प्र० १, २, द्वि० १ छाँड़ब, चलब। 4. द्वि० ७ लहिँ औ। 5. प्र० १ जियाइ कै कीन्ह, प्र० २, द्वि० ७ जीयन अस दीन्ह, तृ० २ बियाहि दुख दीन्ह। 6. द्वि० ७ अस। 7. प्र० २ करि।

३७९] 1. तृ० ३ सुनि पदुमावति, तृ० २ पदुमावति सब। 2. प्र० १ को कहै, प्र० २ कंत कहै, द्वि० ६ कत आव, द्वि० ७ कर आव। 3. तृ० ३ न जानहु द्वि० ७ न जानी, पं० १ न जनी। 4. प्र० २ सरग, द्वि० ५ केलि। 5. द्वि० १, ६ कीन्ह। 6. प्र० २ मते। 7. द्वि० १ अतक। 8. प्र० १, २, द्वि० २ अैस केइँ, द्वि० ७ कंत के। 9. द्वि० ४, ६ केइँ रे बिछोव आनि बिच मेला। 10. प्र० १, २, द्वि० ४, ७ हती। 11. प्र० २ करति। 12. तृ० ३ चला लै, द्वि० ७ चला जो। 13. प्र० १, द्वि० ७ जेहि अमेट। 14. द्वि० १ में दोहा अगले छंद का है।

[३८०]

धनि रोवत सब रोवहिं सखीं। हम तुम्ह देखि आपु कहँ झखीं।
तुम्ह अैसी जहँ रहै न पाईं। पुनि हम काह[1] जो आहिं पराईं।
आदि पिता जो अहा हमारा। ओह नहिं यह दिन हिएँ[2] बिचारा।
छोह न कीन्ह निछोहैं ओहूँ। गा हम बेंचि लागि एक गोहूँ।
मकु गोहूँ कर हिय बेहराना[3]। पै सो पिता नहिं हिएँ छोहाना।
औ हम देखी सखी सरेखी। एहि नैहर पाहुन के लेखी।
तब तेइँ नैहर नाहिं पै चाहा। जेहि ससुरारि अधिक होइ[4] लाहा।

चलने[5] कहँ हम औतरीं औ[6] चलन सिखा हम[7] आइ।
अब सो चलन चलावै को राखै गहि पाइ ॥[8]

[३८१]

तुम्ह बारी[1] पिय चहुँ चक राजा[2]। गरब किरोध ओहि सब छाजा।
सब फर फूल ओहि कैं[3] साखा। चहै सो चूरै[4] चहै सो राखा[5]।
आएसु लिहें रहेहु निति[6] हाथा। सेवा करेहु लाइ भुइँ माँथा।
बर पीपर सिर ऊभ जो कीन्हा। पाकरि तेहि ते खीन फर दीन्हा।
बँवरि जो पौंड़ि सीस भुइँ लावा। बड़ फर सुभर[7] ओहि पै पावा।
आँब जो फरि कै नवै तराहीं। तब अंब्रित भा सब उपराहीं।
सोइ पियारी पियहि पिरीती। रहै जो सेवा[8] आएसु जीती[9]।

---

[३८०] १. प्र० १, २ कहाँ, द्वि० ७ को। २. प्र० १ कीन्ह। ३. प्र० २ चरराना। ४. प्र० १ सुख, प्र० २ भौ, तृ० २ कुछ। ५. द्वि० ६ जानें। ६. द्वि० ५ औतरीं। ७. प्र० १, द्वि० ४ तहँ, तृ० १ जो' तृ० २ जग, तृ० ३ जहँ। ८. द्वि०१ में दोहा ३८४ छंद का है।

[३८१] १. च० १ रानी। २. प्र० २ जान सरेखा, द्वि० २ हैं जग राजा, द्वि० '१ ४, ५, ६, ७, तृ० ३, पं० १ भो जग राजा, द्वि० ३, तृ० १ यह जग राजा, तृ० २ निह जग राजा, च० १ निह चक राजा। ३. प्र० १ पै। ४. प्र० १ २, द्वि० ४, ७ तोरैं। ५. द्वि० १ सबहि फूल ते सबहिं पिआरी, औ सब फूल माँह उजियारी। ६. प्र० २ तुम्ह। ७. द्वि० ४, तृ० ३ सुकर, द्वि० ५ जगत। ८. तृ० १, ३ पिय के। ९. द्वि० १ सोइ सोहागिनि पीय पियारी, सोइ सुहागिनि पिय पतबारी।

पोथा काढ़ि गवन दिन देखहु कवन देवस दहुँ[10] चाल।
दिसासूर[11] औ चक्र जोगिनी सौहँ न चलिऔ काल॥

[३८२]

आदित सूक पछिउँ दिसि[1] राहू। बिहफै दखिन लंक दिसि डाहू।
सोम सनीचर पुरुब न चालू। मंगर बुद्ध उतर दिसि कालू।
अवसि चला चाहै जौं कोई। ओखद कहौं रोग कहँ सोई[2]।
मंगर चलत मेलु मुख धना। चलिअ सोम देखिअ दरपना।
सूकहि चलत मेलु मुख राई। बिहफै दखिन चलत गुर खाई।
आदित हीं तँबोर[3] मुख मंडिअ। बावभिरंग[4] सनीचर खंडिअ।
बुद्धहिं दधि कै चलिअ भोजना। ओखद यहै और नहिं खोजना।[5]

अब सुनु चक्र जोगिनी ते पुनि[6] थिर न रहाहिं[7]।
तीसौ देवस चंद्रमा[8] आठौ दिसा फिराहिं[9]॥

[३८३]

बारह ओनइस चारि सताइस। जोगिनि पच्छिउँ दिसा गनाइस।
नव सोरह चौबिस औ एका। पुरुब दखिन गौनै कै टेका।
तीन एगारह छबिस अठारह। जोगिनि दक्खिन दिसा बिचारह।
दुइ पचीस सत्रह औ दसा। दक्खिन पछिउँ कोन बिच बसा।
तेइस तीस आठ पंद्रहा। जोगिनि होइ पुरब[1] सामुँहा।[2]

---

१०. प्र० १, २ हैं, द्वि० ५ कहँ। ११. द्वि० ३ दिसासून।

[३८२] १. प्र० २, द्वि० २, तृ० १, च० १ पं० १ ससि, तृ० ३ सुक, द्वि० ६ बस। २. द्वि० २ गति सोई, तृ० ३ गहि (उर्दू मूल) सोई, द्वि० ४, ५ नहिं होई। ३. प्र० १, द्वि० ५ आदित कहँ तँबोर, प्र० २, द्वि० ७ आदित तंबोर, द्वि० १ आदित चलिअ तँबोर, तृ० ३ आदि तँबोर आनि, द्वि० ४, ६, तृ० १, च० १, पं० १ आदित तँबोर मेलि, द्वि० ३ आदित तँबोर लेहि। ४. तृ० ३ मँगरा दीन। ५. तृ० ३ बुद्धहि दधि भोजन कै जाई, ओषधि इहै कहौं गनिकाई। ६. द्वि० ४ भुइँ। ७. प्र० १, २ आठहु दिसा फिराहिं, द्वि० २ बिपला भर न रहाहिं। ८. प्र० १ तीन देवस पुनि चंद्रमा। ९. प्र० १, २ सो पुनि थिर न रहाहिं।

[३८३] १. द्वि० ६ उत्तर। २. तृ० ३ तेइस तीस पंद्रह औ आठ, जोगिनि उत्तर दिसा कहँ जात। (तुलना० ३८३·७)

बीस अठारह तेरह[3] पाँचा। उत्तर पछिउँ[४] कोन तेहि बाँचा।
चौदह बाइस ओनतिस सात। जोगिनि उतर[५] दिसा कहँ[६] जात।

एकइस औ छ चौदह जोगिनि[७] उत्तर पुरुब[८] के कोन।
यह गनि चक्र जोगिनी बाँचहु[९] जौं चाहौ सिधि होन॥

[३८४]

चलहु चलहु भा पिय कर चालू। घरी न देख लेत जिय कालू।
समदि लोग धनि चढ़ी बेवाना। जो दिन डरी सो आइ तुलाना।
रोवहिं मातु पिता औ भाई। कोइ न टेक जौं कंत चलाई।
रोवै सब नैहर सिंघला। लै बजाइ कै राजा चला।
तजा राज रावन का कोऊ। छाँड़ी लंक भभीखन[१] लेऊ[२]।[3]
फिरी सखी भेंटत तजि भीरा[४]। अंत कंत सो भएउ किरीरा।
कोउ काहूँ कर नाहिं नियाना। मया मोह बाँधा अरुझाना।

कंचन कया सो नारि की रहा न तोला माँसु।
कत कसौटी घालि कै चूरा गढ़ै कि हाँसु॥[५]

[३८५]

जौं पहुँचाइ फिरा[१] सब कोऊ। चले साथ गुन औगुन दोऊ।

---

३. प्र० २ चाँद तेरह औ। ४. प्र० १ दखिन। ५. द्वि० ४, ६ पुरुब। ६. प्र० २, द्वि० ६, पं० १ बिच, च० १ निजु। ७. प्र० १, द्वि० ४ जोगिनि, प्र० २, द्वि० ७ चाँद अठाइस, तृ० १, पं० १ चार जोगिनी, च० १ चाँद जोगिनी। ८. द्वि० ७ पछिउँ। ९. प्र० १, द्वि० ६ जोगिनी, तृ० १ जोगिनी बारह।

*इसके अनंतर प्र० १, २, द्वि० २, ६, ७ में तीन तथा द्वि० ४, ५ में चार अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[३८४] १. प्र० १ कोइ अब। २. द्वि० २, तृ० १ देऊ। ३. द्वि० ६ में यह पंक्ति छूट गई हैं, च० १, पं० १ तजा राज नैहर का काजू, छांड़ी लंक भभीखन राजू। ४. प्र० १, २ चली सो सखी अंत तजि भीरा, द्वि० २ बहुरी सखी सहेली भीरा, तृ० ३ फिरि सखि भेंटि तजी भै भीरा, द्वि० ७ बहुरी सबै आइ जत भीर। ५. द्वि० १ में दोहा छंद ३७९ का है।

[३८५] १. प्र० १, २, तृ० २, द्वि० ३ चला, द्वि० २ जो।

औ सँग चला गवन जेत[२] साजा। उहै देइ पारै अस राजा।
डाँड़ी सहस चलीं सँग चेरीं। सबै पदुमिनी सिंघल केरीं।
भल[३] पटवन्ह खरबार[४] सँवारे। लाख चारि एक भरे पेटारे।
रतन पदारथ मानिक मोंती। काढ़ि भँडार दीन्ह रथ जोती।
परिखि सो रतन पारिखन्ह कहा। एक एक नग सिस्टिहि बर लहा।
सहस पाँति तुरियन्ह कै चली। औ सै पाँति हस्ति सिंघली।

लिखै लाख जो लेखा[५] कहै न पारहि जोरि।
अरबुद खरबुद नील सँख औ खँाड[६] पदुम[७] करोरि॥

[३८६]

देखि गवन[१] राजा गरबाना। दिस्टि माहँ कोइ औरु न आना[२]।
जौं मैं होब समुँद के पारा। को मोरि जोरि जगत संसारा[३]।
दरब त गरब लोभ बिख मूरी। दत्त[४] न रहै सत्त होइ दूरी।
दत्त सत्त एइ दूनौ भाई। दत्त न रहै सत्त पुनि जाई।

---

२. प्र० १ कर, द्वि० ४, ५ सब, द्वि० ६, तृ० २, पं० १ जस। ३. द्वि० २ फल, तृ० २ भा, च० १ भरि। ४. द्वि० २ खरवाट। ५. प्र० १, २, द्वि० ३ जो लाखन्ह लेखा, तृ० ३ पार जों लेखा, द्वि० ४, ५ लाग जो लेखा, द्वि० ७ लाख जौ लेखक। ६. प्र० १, च० १ औ बहु, द्वि० १ लाख सो, द्वि० २ सौकँद, तृ० ३ कंदौ, द्वि० ४ औ बहु, द्वि० ६ औ पुनि, द्वि० ७ औ जो, तृ० २ तहँ उठि, द्वि० ३ सौगँद, तृ० १ औ खंडहि, पं० १ औ गंडौ। ७. द्वि० १ कोटिन्ह।

* द्वि० ३, तृ० २, च० १ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)।

३८६] १. द्वि० ४, ५ दरब। २. प्र० २, द्वि० ७ अत धन गोहन ऐस सब साजा। राजा देखि गरब मन गाजा, (तेतौ गौन गोहन धनि साजा—प्र० २) द्वि० २ देखि गवन अस गोहन साजा, भएउ गरब मन बोला राजा। द्वि० ६ एत गवन गोहन धन साजा, राजा देखि गरब मन गाजा। च० १ देखि तेत गोहन धन साजा, राजा देखि गरब मन गाजा। पं० १ देखि गवन गोहन धन साजा; राजा देखि गरब मन गाजा। ३. प्र० २, द्वि० २, तृ० १, पं० १ को मोरे जोगित संसारा, तृ० ३ को मोरी जोरी जुगुति (उर्दू मूल) संसारा, द्वि० ४ को है मोहि जगत संसारा, तृ० २, च० १ को है मोरे जगत संसारा। ४. तृ० ३ दरब।

जहाँ लोभ तहँ पाप सँघाती। संचि कै मरै आन कै थाती।
सिद्धन्ह दरब आगि कै थापा। कोई जरा जारि कोइ तापा।
काहू चाँद काहू भा राहू। काहू अंम्रित बिख भा काहू।

तस फूला मन राजा लोभ पाप अँध कूप।
आइ समुँद्र ठाढ़ भा होइ दानी के रूप ॥*

[३८७]

बोहति भरे[1] चला लै रानी। दान माँगि सत देखै दानी।
लोभ न कीजै दीजै[2] दानू। दानहि पुन्य होइ कल्यानू।
दरबहि दान देइ बिधि कहा। दान मोख होइ दोख न रहा।
दान आहि सब दरब कचूरू। दान लाभ होइ बाँचै मूरू।
दान करै रछ्या मँझ नीराँ। दान खेइ लै लावै तीराँ।
दान करन दै दुइ जग तरा। रावन संचि अगिनि महँ जरा।
दान मेरु[3] बढ़ि[4] लाग अकाराँ। सैंति कुबेर बूड़[5] तेहि भाराँ[6]।[7]

चालिस अंस दरब जहँ एक अंस तहँ मोर।
नाहिं तो जरै कि बूड़ै कै निसि मूसहिं चोर ॥

[३८८]

सुनि सो दान राजैं रिस मानी। केइँ बौराएसु बौरे दानी।
सोई पुरुष दरब जेहि सैंती। दरबहि तें सुनु बातैं एती।
दरब त[1] धरम करम औ राजा[2]। दरब त[1] सुद्धि बुद्धि बल[3] गाजा।[4]
दरब त[1] गरबि करै जो[5] चाहा। दरब त[1] धरती सरग बेसाहा।

---

* प्र० १ में यह छंद नहीं है।

[३८७] १. प्र० १, २, द्वि० ७ भरा, तृ० ३ बोझि। २. प्र० १ करहु देहु कछु प्र० २, द्वि० ७ करहु देहु हम। ३. द्वि० १ मेघ। ४. प्र० १, द्वि० ७ चढ़ि, द्वि० २, ४, ५ बड़, तृ० ३ बिध। ५. प्र० १, २, द्वि० ७ बुड़ा। ६. च० १ मझधाराँ। ७. द्वि० ६ (यथा. ३) सोई पुरुष दरब जेइ सेंती, दरब भएँ पुनि बातैं एती। (३८८-२)

[३८८] १. तृ० १ दरब थैं, तृ० २ दरब तो। २. च० १ सब छाजा। ३. द्वि० १ दल। ४. द्वि० ६ में यह पंक्ति नहीं है। ५. च० १ जत।

दरब त[1] हाथ आव कबिलासू। दरब त[1] आछरि[6] छाँड़ न पासू।
दरब त[1] निरगुन होइ गुनवंता। दरब त[7] कुबुज होइ रुपवंता।
दरब रहै भुइँ दिपै लिलारा। अस मनि दरब देइ को पारा।

कहा समुँद रे लोभी बैरी दरब न झाँपु।
भएउ न काहू आपन मूँदि[8] पेटारे साँपु॥*

[३८६]

आधे[1] समुँद आए सो नाहीं। उठी बाउ आँधी उपराहीं[2]।
लहरैं[3] उठीं समुँद उलथाना। भूला पंथ सरग नियराना।
अदिन आइ जौं पहुँचै काऊ। पाहन उड़ाइ बहै सो बाऊ।[4]
बोहित बहे[5] लंक दिसि[6] ताके[7]। मारग छाँड़ि कुमारग हाँके[7]।[8]
जौं लै भार निबाहि न पारा। सो का गरब करै कनहारा[9]।
दरब भार सँग काहु न उठा। जेइ सैंता तेहि सौं[10] पुनि रूठा।
गहि पखान लै पंखि न उड़ा। मोर मोर जेइँ कीन्ह सो बुड़ा।

दरब जो जानहिं आपन भूलहिं गरब मनाहँ[11]।
जौं[12] रे उठाइ न लै सकं[13] बोरि चले[14] जल माहँ॥

---

६. च० १ सुंदरि। ७. तृ० २ दरब तें। ८. प्र० २, द्वि० १, तृ० ३, च० १ पालि, द्वि० ७ घालि।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर छः अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[३८९] १. द्वि० ७ मध। २. द्वि० २, ३, तृ० १, ३ आँधी उतराही, तृ० २ बोहित उलटाहीं। ३. प्र० २ अैसी। ४. द्वि० १ अदिन आइ एक पूजा आई, पाहन उड़ै कछु कहि नहिं जाई। ५. प्र० १ उड़े। ६. प्र० १, २ द्वि० ७ मग। ७. तृ० २ चले रले। ८. द्वि० ६ बोहित बहे लंक दिसि दिसि जाहीं, जब बहोरि नहिं बहुरहिं नाहीं। ९. प्र० २, द्वि० २, तृ० १ गरब करै कै हारा; द्वि० ७. तृ० ३ गरब करै का हारा; द्वि० ४, ५ गरब करै कन धारा; तृ० २ गरब करै जो हारा; च० १, पं० १ लैइ गरब करि हारा। १०. प्र० १, २, द्विं० ७ च० १ ताही सों। ११. प्र० १ भूलि गरब मन माहँ; प्र० २ भूलहिं गरब मन माँह; द्वि० २ बोलहिं गरब मनाँह, द्वि० ४ मूलहिं गरब न माँह। १२. प्र० १सो। १३. प्र० २ सकहिं। १४. प्र० २ चलहिं।

[३९०]

केवट एक भभीखन केरा। आवा मंछ कर करत अहेरा।
लंका कर राकस अति कारा। आवै चला मेघ अँधियारा।
पाँच मुंड दस बाहैं ताही। डहि भौ स्याम लंक जब डाही।
धुवाँ उठै मुख स्वाँस सँघाता। निकसै आगि कहै जब[1] बाता।
फेकरे मुंड चँवर जनु लाए। निकसि[2] दाँत मुँह बाहिर आए।
देह रीछ कै रीछ डेराई। देखत दिस्टि धाइ जनु खाई।
राते नैन निडेरें[3] आवा। देखि भयावनु सब डर खावा।

धरती पाय सरग सिर जानहुँ सहसराबाहु।
चाँद सुरुज नखतन्ह मह[4] अस दीखा जस राहु॥

[३९१]

बोहित बहे न मानहिं खेवा[1]। राकस देखि हँसा जस देवा।
बहुते दिनन्ह[2] बार भै दूजी। अजगर केरि आइ भख पूजी।
इहै पदुमिनी भभीखन पावा। जानहुँ आजु अजोध्या छावा[3]।
जानहुँ रावन पाई सीता। लंका बसी रमाएन बीता[4]।
मंछ देखि जैसें बग आवा। टोइ टोइ भुइँ पाउ उठावा।
आइ नियर भै कीन्ह जोहारू। पूँछा खेम कुसल बेवहारू।
जो बिस्वास घातिका देवा। बड़ बिस्वास करै कै सेवा।

कहाँ मीत तुम्ह भूलेहु औ जावेहु केहि घाट[5]।
हौं तुम्हार अस सेवक[6] लाइ देउँ तेहि बाट[7]॥

---

[३९०] १. द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, ३, च० १ जो (हिंदी मूल), तृ० २ मुख। २. प्र० १ निसरि। ३. द्वि० २, ३ निडेरत, द्वि० ७ जो टेरें। ४. प्र० १,२, द्वि० ७, तृ० २, च० १, पं० १ औ नखतन्ह, द्वि० २, ३, ५, तृ० १ औ नखत महँ।

[३९१] १. प्र० १, २, द्वि० ७ खेऊ यह भेऊ। २. प्र० २ देवस। ३. प्र० २ आवा। ४. प्र० १, द्वि० ४, ५ ७, च० १ जीता। ५. प्र० १ आइ परेहु केहि बाट, प्र० २ आए जो बहि केहि घाट, द्वि० १ औ भूलि परेहु एहि बाट। ६. प्र० १ जन सेवक, प्र० २ जस सेवक, द्वि० ७ सेवक जस, द्वि० १, तृ० ३ अस खेवक। ७. तृ० ३ घाट।

[३९२]

गाढ़[1] परें जिउ बाउर होई। जो भलि बात कहै भल सोई।
राजैं राकस नियर बोलावा। आगें कीन्ह पंथ जनु पावा।
बहु पसाउ राकस कहँ बोला। बेगि टेकु[2] पुहुमी सब डोला।
तूँ खेवक खेवकन्ह उपराहीं। बोहित[3] तीर लाउ गहि बाँहीं[4]।
तोहि तें तीर[5] घाट जौं पावौं। नवगिरिहीं टोडर[6] पहिरावौं।
कुंडल स्रवन देउँ नग लाई। महरा कै सौंपौं महराई।
तस राकस तोरि पुरवौं आसा। रकसाइँधि कै रहै[7] न बासा।
राजैं बीरा दीन्हेउ[8] जानैं नाहिं बिसवास।
बगु अपने भख कारन भएउ[9] मंछ कर दास॥

[३९३]

राकस कहा गोसाइँ बिनाती। भल सेवक राकस कै जाती।
जहिया लंक डही स्री रामा। सेव न छाँड़ि भएउँ डहि स्यामा।
अबहूँ सेव करहिं सँग लागे। मानुस भूलि होहिं तिन्ह आगे।
सेत बंध जहँ राघौ बाँधा। तहँ लै चढ़ौं भारु मैं काँधा।
पै जब तुरित दान कछु पावौं।[1] तुरित खेइ ओहि[2] बाँध चढ़ावौं[3]।
तुरित जो दान पान हँसि दिया[4]।[5] थोरा दान बहुत पुनि[6] किया[4]।
सेव कराइ जो दीजै दानू। दान नाहिं सेवा बर जानू[7]।

---

[३९२] १. प्र० २, तृ० ३ गारूह (उर्दू मूल) २. च० १, पं० १ बोहित फिरें। ३. च० १ तुरत। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ टेकु बहे जनु जाहीं। ५. प्र० २ बीर। ६. प्र० २ नवग्रीहि टोडर तोहि, द्वि० १ नव गढ़ाइ, द्वि० २ दुहूँ बाँह टोडर, तृ० ३ नव गढ़ टोडर तोहि। ७. प्र० १, २ आव। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ दीन्ह हँसि। ९. द्वि० १, ३, ४, ५, तृ० ३ होइ।

[३९३] १. पं० १ तुरित जो दान पान हँसि पावौं (तुलना० ३९३.६)। २. प्र० १ बोहित खेइ ओहि, प्र० २ बोहित खेइ लै। ३. च० १ लै पार लगावौं। ४. प्र० १ द्वि० २, ४, ५, तृ० २, च० १ पं० १ दीजै. कीजै, प्र० २ दीन्हा, कीन्हा, द्वि० ७ दीआ, कीआ, द्वि० ३, ६ तृ० १, ३ दीजा, कीजा। ५. पं० १ पै अब तुरित दान कछु दीजै। (तुलना० ३९३.५)। ६. प्र० १, २ मान सौं। ७. प्र० १ दानहिं सेवा सो बड़ जानू, च० १ दान न होइ सेवा परवानू।

दिया बुझा[८] सतु ना[९] रहा हुत निरमल जेहि रूप।
बहुँ आँधी उड़ि आइ कै[१०] मारि किया[११] अँध कूप।

[३९४]

जहाँ समुँद मँझधार भँडारू। फिरै पानि पातार दुवारू।
फिरि फिरि पानि ओहि ठाँ भरई। बहुरि न निकसै जो तहँ परई।
ओहि ठाँव महिरावन पुरी। हलका तर जमकातरि[१] जुरी[२]।
ओहि ठाँव महिरावन मारा। परे[३] हाड़ जनु परे पहारा।
परी रीरि[४] जहँ ताकरि पीठी[५]। सेतबंध अस आवै[६] डीठी[७]।
राकस आनि तहाँ कै छरै। बोहित भँवर चक्र महँ परै।
फिरै लाग बोहित अस आई[८]। जनु कुम्हार धरि[९] चाक[१०] फिराई[८]।

राजै कहा रे राकस बौरे[११] जानि बूझि बौरासि।
सेतबंध जहँ देखिअ आगें[१२] कस न तहाँ लै जासि॥

[३९५]

सुनि बाउर राकस तब[१] हँसा। जानहुँ टूटि सरग भुइँ खसा।

---

८. द्वि० ४, ५ दै बाचा। ९. प्र० १, २, द्वि० ७ सत ना रहा। १०. प्र० १ आँधी उठी अदिष्ट की, प्र० २ वहु आँधी अदिष्ट की, द्वि० २ भा अंधा औ पातकी, तृ० ३ बहु आँधी उड़ि पाप्त गहिं, द्वि० ६ वहु आँधी तेहि ताप की, द्वि० ७ वहु आँधी ब्योम कीआ, द्वि० ३, च० १ वहु आँधी उड़ि आई, पं० १ भैं आँधी उड़ि पाप की। ११. द्वि० ३ मारग भा।

[३९४] १. प्र० १, २ द्वि० ७ हाड़ ताकर जम कातर, च० १ कल कातर जम कातर। २. प्र० १ फिरी, प्र० २, द्वि० ४, ७ चुरी। ३. प्र० १, २ दीख। ४. द्वि० ६ देखी रीर, च० १ वहैं रीर। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ७, च० १ तहँ ताकरि पीठी, द्वि० ६, पं० १ परी जहँ पीठी। ६. प्र० १, २ लागै। ७. द्वि० ५ पीठी। ८. प्र० १ आवा, फिरावा, प्र० २ आवा, भँवावा, द्वि० ७ आई भँवाई। ९. प्र० १, २ द्वि० ३, ७, तृ० १, ३ जनहुँ घालि कै, द्वि० २ जनहुँ कुम्हार का। १०. द्वि० २ चक्र। ११. द्वि० १, ६ राकस। १२. प्र० १ वह आगे, प्र० २, द्वि० ४, ५, ७ यह देखिअ, द्वि० १ जहँ देखलाई, द्वि० २, ६ है आगें, च० १ अस देखिअ।

[३९५] १. प्र० १, २, द्वि० ७ सुनि बाउर मन राकस, तृ० २, च० १ सेतुबंध सुनि राकस।

को बाउर तुहुँ बौरे देखा। सो बाउर भख लागि सरेखा[२]।
बाउर पंखि जो रह धरि माँटी[३]। जीभ चढ़ाइ भखै निति चाँटी[४]।[५]
बाउर तुहुँ जो भखै कह आने। तबहुँ न समुझहु पंथ भुलाने।
महिरावन कै रीरि जो परी। कहाँ सो सेतबंध बुधि हरी।
यह सो आहि महिरावन पुरी। जहँवाँ सरग नियर[६] घर[७] दूरी।
अब पछिताहु दरब जस जोरा। करहु सरग चढ़ि हाथ मरोरा।

जबहिं जियत महिरावन लेत जगत कर भार।
जौं रे मुवा लेइ गया न हाड़ौ[८] अस होइ परा पहार॥

[३९६]

बोहित भँवै[१] भवै जस पानी। नाचै राकस आस[२] तुलानी[३]।
बूड़हिं हस्ति घोर मानवा। चहुँ दिस आइ जुरे मँसुखवा।
तेतखन राजपंखि एक आवा। सिखर टूट तस डहन डोलावा।
परा दिस्टि वह राकस खोटा। ताकेसि जैस[४] हस्ति बड़[५] मोंटा।
आइ ओहि राकस पर टूटा। गहि लै उड़ा भंवर जल[६] छूटा[७]।
बोहित टूक टूक सब भए[८]। अस न जाने दहुँ कहँ गए[९]।

---

२. द्वि० ७ तस लागु बिसेखा। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ बाउर पंखि सोउ (प्र० २ सेउ) धर माँटी, द्वि० १, २, ३, ६, तृ० १, ३ बाउर पंखि तेहूँ भखु माँटी। ४. द्वि० ६, ७ भख कहँ जीभ चढ़ावै चाँटी। ५. द्वि० २, ६, तृ० १, ३ में इस पंक्ति के दोनों चरण परस्पर स्थानांतरित हैं। ६. द्वि० ७ मरन जियन। ७. प्र० १, २ मुइँ। ८. प्र० १, द्वि० ४ जौं रे मुवा लै गया नहिं, द्वि० १ मुवा हाड़ नहिं लै सका, द्वि० २, ३, ५ जौ मुवा हाड न लै गा, द्वि० ७ वोह मुत्रा लै हाड नहीं, तृ० १, च० १, पं० १ जौ मुवा हाड न लै सका।

[३९६] १. द्वि० १ सबै। २. द्वि० १, तृ० १ आइ। ३. प्र० १ जौं जौं बोहित लहरैं खाहीं, नाचै राकस भा उपराहीं। प्र० २ जौं जौं बोहित भाँवरि खाहीं, नाचै राकस भा उपराहीं। द्वि० ६ बोहित भँवर परे तेहि आई, नाचै राकस भलि भख पाई। ४. प्र० १, २ जानेसि इहै, द्वि० ६ जानेसि वहै, पं० १ कहेसि कि आहि। ५. प्र० १ कर। ६. द्वि० ७ जनु। ७. प्र० १, २ फूटा। ८. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, च० १ होइ गए। ९. प्र० १, २, द्वि० ७ पल महँ आपु आपु कहँ भए।

भए राजा रानी दुइ पाटा। दूनौ बहे भए दुइ बाटा।
काया जीउ मिलाइ कै कीन्हेसि अनँद उछाहुँ[10]।
लवटि बिछोउ दीन्ह तस[11] कोउ न जानै काहुँ[12] ॥[13]*

[३९७]

मुरुछि परी पदुमावति रानी। कहँ जिउ कहँ पिउ अैस न जानी[1]।
जानु चित्र मूरति गहि[2] लाई। पाटा परी बही तसि जाई।
जनम न पौन सहै सुकुमारा। तेहि सो परा दुख समुँद अपारा।
लखिमिनि मान[3] समुँद कै बेटी। ता कहँ लच्छि भई जेइँ भेंटी।
खेलत अही सहेलिन्ह सेंती। पाटा जाइ लगा तेहि रेती।
कहेसि सहेलिहु देखहु पाटा। मूरति एक लागि एहि[4] घाटा।
जौं देखेन्हि तिरिया[5] है साँसा। फूल मुएउ पै मुई न बासा।
रग जो राती पेम[6] के जानहुँ बीर बहूटि।
आइ बही दधि समुँद महँ[7] पै रग गएउ न छूटि ॥

---

१०. द्वि० २, ४, ५ ६, पं० १ मारि करे दुहु खंड। ११. प्र० १ बिछुरे आपु आपु कहँ पल महँ, प्र० २ बिछुरे आपु आपु कहँ, द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ तन रोवत धरती परा, द्वि० ७ बिछुरे आपु आपु कहँ दोऊ। १२. द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ जीव चला ब्रह्मंड, द्वि० ७ एक पलक एक डंड।
१३. द्वि० ३ धनि औ पीउ मिले हुत जैसे पिंड परान।
एक पलक महँ बिछुरे कोउ न काहूँ जान ॥
* च० १ में यह छंद नहीं है, किंतु जहाज का टूटना राजा और रानी के एक दूसरे से अलग होने के लिए प्रसंग में अनिवार्य है, इसलिए यह छंद भी अनिवार्य है।

[३९७] १. प्र० १ कहाँ जीउ कहँ पीउ सयानी, च० २ कहाँ जीउ कहँ स्वाँस न जानी। २. प्र० २ गहि (उर्दू मूल), द्वि० ७ लिहि, तृ० ३ लै। ३. प्र० १, २ आहि, द्वि० १, ७ नाँव। ४. प्र० १, २ एक लाग बहि, द्वि० ७ एक लागि है, द्वि० २, च० १ आइ लागि है, द्वि० ५ आइ लागि बहि। ५. प्र० १,२ तीवइँ, द्वि० २ तोरही। ६. द्वि० ७ बिरह की, द्वि० ३, तृ० १, च० १ पीय कं। ७. प्र० १ लीन भईदधि समुँद महँ, प्र० २, द्वि० ७ लीन भई दधि उदधि महँ, द्वि० १, ६ तृ० ३ गई बही दधि समुँद कहँ, तृ० १ कहै बही दधि समुँद कहँ।

[३६८]

लखिमिनि लखन बतीसौ लखी। कहेसि न मरै सभाँरहु सखी।
कागर[1] पुतरी जैस सरीरा। पवन उड़ाइ परी माँझ नीरा।
उड़हिं झकोर लहरि जल भीजी। तबहु रूप रँग नाहीं छीजी।
आपु सीस लै बैठी कोरा। पवन डोलावहि सखि चहुँ ओरा।
पहरक समुझि परा तन जीऊ। माँगेसि पानि बोलि कै पीऊ।
पानि पियाइ सखी मुँह धोईं। पदुमिनि जानु कँवल सँग[2] कोईं।
तब लखिमिनि दुख पूँछ पिरौही[3]। तिरिया समुझि बात कहु मोही।

देखि रूप तोर आगर[4] लागि रहा चित[5] मोर।
केहि नगरी[6] कै नागरि[7] काह नाउँ धनि तोर॥

[३६६]

नैन पसारि चेत धनि[1] चेती। देखै काह समुँद कै रेती।
आपन कोउ न देखेसि तहाँ। पूँछेसि को हम को तुम कहाँ।
अहीं जो सखीं कँवल सँग कोईं। सो नाहीं मोहि[2] कहाँ बिछाईं।
कहाँ जगत मनि पीउ पियारा। जौं सुमेरु बिधि गरुअ सँवारा।
ताकरि गरुई प्रीति अपारा। चढ़ी हिएँ[3] जस चढ़[4] पहारा।
रहै न गरुई प्रीति सो झाँपी[5]। कैसै जियौं भार दुख चाँपी[6]।
कँवल करी केइँ चूरी नाहाँ। दीन्ह बहाइ[7] उदधि जल माहाँ।

---

[३९८] १. द्वि० ४, ५ तृ० ३ कागद। २. प्र० २ कै। ३. पिरौही (पिरवही = पीडा ग्रस्ता) किंतु सभी प्रतियों में पाठ 'भरोही' है। ४. द्वि० २ तौ तोरा। ५. प्र० २ जिउ। ६. द्वि० १ वहु नागरि, द्वि० २ कौन नगरि। ७. प्र० १ कै कन्या, प्र० २, द्वि० १, ३, ६, तृ० १ तैं काकरि, द्वि० २ धिय काकरि, पं० १ कै धीय है।

[३९९] १. प्र० १, २, द्वि० १, ७ तृ० ३ पं० १ कै, द्वि० ६ जौ। २. प्र० १, २ रही न सुधि सो, द्वि० ७ सो नहिं देखौं। ३. तृ० ३ चढ़ी (उर्दू मूल) द्वि० ७ चढ़े होइ। ४. तृ० ३ जस परे, द्वि०७ नै चढ़े। ५. प्र० १,२ छपानी, द्वि० ७ समानी। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ कैसे जिऔं जियें बिनु जानी। ७. प्र० १ तोरी बाँह।

आवा पौन बिछोउ का पात[८] परा बेकरार।
तरिवर तजै[९] जो चूरि कै[१०] लागै[११] केहि की डार॥

[४००]

कहेन्हि न जानहिं हम तोर पीऊ। हम तोहि पावा अहा न[१] जीऊ।
पाटा परी आइ तूँ बही। अैसि न जानहिं दहुँ का[२] अही।
तब सो सुधि पदुमावति भई। सूर बिछोह मुरछि मरि गई।
बिनु सिर रकत सुराही ढारी। जनहुँ बकत[३] सिर काटि पबारी।
खिनहिं चेत[४] खिन होइ बेकरारा। भा चंदन बंदन सब छारा।
बाउर होइ परी सो पाटा। देहु बहाइ कंत जेहि घाटा।
को मोहि आगि देइ रचि होरी। जियत जो बिछुरी सारस जोरी।

जेहि सर मारि बिछोहि गा देहिं ओहि सर आगि।
लोग कहै यह सर चढ़ी[५] हौं सौ चढ़ौं पिय लागि॥*

[४०१]

कया[१] उदधि चितवौं पिय पाहाँ। देखौं रतन सो हिरदै माहाँ।
जानु आहि दरपन मोर हिया। तेहि महँ दरस देखावै पिया।
नैन नियर पहुँचत सुठि दूरी। अब तेहि लागि मरौं सुठि झूरी[२]।
पिउ हिरदै महँ भेंट न होई। को रे मिलाव कहौं केहि रोई।
साँस पास नित आवै जाई। सो न सँदेस कहै मोहि आई।

---

८. द्वि० ७ काँपत। ९. तृ० २ पात। १०. प्र० १ तरिवर पात जो छाड़े, द्वि० ७ तरिवर पर जो चूरिकै। ११. द्वि० १ कली सो।

[४००] १. प्र० १ आपन। २. द्वि० ७, च० १ कहाँ की। ३. प्र० २, द्वि० ७ बतक, द्वि० ४, ५ रकत, च० १ बिकट। ४. द्वि० ७ खन बैठै। ५. द्वि० ७ रची।

*द्वि० ४ में इस छंद की अंतिम पंक्ति नहीं है, केवल प्रारंभ की पंक्ति इस छंद की है और शेष सात पंक्तियाँ छंद ३९८ की दुहराई गई हैं।

[४०१] १. प्र० २, द्वि० ७ ग्यान। २. तृ० ३ दूरी।

नैन कौड़िया भै मँड़राहीं। थिरकि मारि लै आवहिं नाहीं[3]।
मन भँवरा ओहि कँवल बसेरी। होइ मराजिया न आनहि[4] हेरी।[5]

साथी आथि निआथि भै[6] सकेसि न साथ[7] निबाहि।
जौं जिउ जारें पिउ मिलै फिटु रे जीय जरि जाहि॥

[४०२]

सती होइ कहँ सीस उघारी। घन महँ बिज्जु घाय[1] जस मारी।
सेंदुर जरै आगि जनु लाई[2]। सिर की आगि सँभारि[3] न जाई।
छूटि माँग सब[4] माँति पुरोई[5]। बारहिं बार गरहिं जनु रोई[5]।
टूटहिं[7] मोंति बिछोहा भरे। सावन बुंद गरहिं[6] जनु ढरे।
भहर भहर[8] करि जोबन[9] करा[10]। जानहुँ कनक अगिनि महँ परा[10]।
अगिनि माँग पै देइ न कोई। पाहन[11]पवन पानि सुनि[12]होई[13]।
कनै लंक टूटी दुख[14] जरी। बिनु रावन केहि बार होइ खरी।

रोवत पंखि बिमोहे जनु कोकिला अरंभ।
जाकरि कनक लता यह बिछुरी[15] कहाँ सो प्रीतम[16]खंभ[17]॥*

---

३. द्वि० २कै आपन माही, तृ० ३ गहि आनथि नाहीं (तृ० १) गहि आवहिं जाही। ४. प्र० १ पावै। ५. द्वि० २ में यह पंक्ति नहीं है। ६. प्र० १, २, द्वि० २, तृ० १ निआथि तैं, द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ निआथ जो, द्वि० ७ निअस्थिर। ७. तृ० ३ सकेसि न ओर, पं० १ संग न साथ।

[४०२] १. प्र० १ जाइ। २. तृ० ३ लागी। ३. प्र० १ बुझाइ। ४. द्वि० १ केस जनु, द्वि० ३ माँग तस। ५. प्र० २ पुरोई, गरै जब रोई, तृ० ३ पुरोए, करहिं जनु रोए (उर्दू मूल), द्वि० ७ पुरोई, जरै जनु सोई। ६. प्र० १, २ गरजि, तृ० ३ करहिं (उर्दू मूल), द्वि० ७ परहिं। ७. प्र० १, २, द्वि० ४, छूटहिं। ८. द्वि० ५ फेर फेर, च० १ पहर पहर। ९. प्र० १, २ अति सुरंग सब जोबन। १०. प्र० प्र० २, कारा, जारा, तृ० ३ बारा, जारा। ११. प्र० २ बाहन। १२. द्वि० १, तृ० १ कर, द्वि० ३ सों। १३. प्र० १, द्वि० ७ कर होई, द्वि० ६, पं० १ होइ रोई। १४. द्वि० ३ हरी। १५. प्र० २, (तृ० १) लता अस बिछुरी। १६. प्र० १ सो प्रीतम कस। १७. तृ० ३ खंड।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[४०३]

लखिमिनि लागि बुझावै जीऊ। ना मरु भगिनि[1] जिऔ[2] तोर पीऊ।
पिउ पानी होइ पौन अधारी। जस हौं[3] तुहूँ समुंद्र कै बारी।
मैं तोहि लागि लेब खटबाटू। खोजब पितैं जहाँ लगि घाटू।
हौं जेहि मिलौं तासु बड़ भागू। राज पाट औ होइ[4] सोहागू।
कै बुझाउ लै मँदिल सिधारी। भई सुसार[5] जेंवै[6] नहिं नारी[7]।
जेहि रे कंत कर होइ बिछोवा। का तेहि भूख नींद का सोवा।
जिउ हमार पिउ लेबे[8] अहा। दरसन देउ लेउ जब चहा।

लखिमिनि जाइ समुँद पहँ बिनई[9] ते[10] सब बातैं चालि।
कहा समुंद्र अहै घट मोरें आनि मिलावौं[11] कालि॥

[४०४]

राजा जाइ तहाँ बहि लागा। जहाँ न कोइ सँदेसी कागा।
तहाँ एक परबत हा[1] डूँगा। जहवाँ सब कपूर औ[2] मूँगा।
तेहि चढ़ि हेरा कोइ न साथा। दरब सैंति कछु लाग न हाथा।
अहा जो रावन रैनि[3] बसेरा[4]। गा हेराइ कोइ मिलै न हेरा[4]।

---

[४०३] [1]. प्र० १ मरु न अभागिनि, द्वि० २ ना करु चेत, द्वि० ४, ७, तृ० २ ना मरु बहिनि, च० १, पं० १ ना मरु पदुमिनि। [2]. च० १, पं० १ मिलहि। [3]. प्र० १, २ जस हौं तस तैं, द्वि० १ अब हौं जैसि। [4]. प्र० १, द्वि० ४, ६, तृ० २, च० १, पं० १ देउँ, द्वि० १ नखत। [5]. प्र० १, द्वि० ४ भइ जेवनार, प्र० २ यह संसार, द्वि० ७ जेहि अधार। [6]. प्र० २ जीवन, द्वि० ७ जीऔं। [7]. च० १ बारी। [8]. द्वि० २ लै कै, तृ० २ के सँग, च० १, पं० १ लीन्हे। [9]. द्वि० १ समुँद ते बिनवै, द्वि० २, तृ० १, ३ जाइ समुँद पहँ बिनती, द्वि० ४, ५, च० १ जाइ समुँद पहँ, पं० १ जाइ समुँद पहँ बिनवै। [10]. द्वि० ४, ५ पै। [11]. प्र० १ देब मैं।

[४०४] [1]. प्र० १ का, प्र० २ कर, तृ० ३ हो, द्वि० ७ हत। [2]. द्वि० ७ जहवाँ उपज कपूर औ मूँगा, पं० १ जहँ कपूर औ आछहिं मूँगा। [3]. प्र० १ राव, द्वि० १, ७ नीर, द्वि० ३, ६, तृ० २ रेर, द्वि० ३ रेरे (उर्द मूल), द्वि० ३, ४, ५, च० १, पं० १ केर। [4]. तृ० २ बिसारा, गा हेराइ तस देखत सारा।

धाह मेलि[५] कै राजा रोवा। केइँ चितउर कर राज बिछोवा।
कहाँ मोर सब दरब भँडारू। कहाँ मोर सब कटक खँधारू।
कहाँ मोर तुरग[६] बालका[७]वली। कहाँ मोर हस्ती[८] सिंघली।

कहँ रानी पदुमावति जीउ बसत तेहि पाँह।
मोर मोर कै खोएउँ[९] भूलेउँ गरब मनाँह[१०] ॥*

[४०५]

चंपा भँवरा कर जो[१] मेरावा। माँगै राजा बेगि न पावा।
पदुमिनि चाह जहाँ सुनि पावौं। परौं आगि औ पानि[२] धसावौं।
टूटौं परबत मेरु पहारा। चढ़ौं सरग औ परौं पतारा।
कहँ अस गुरु पावौं[३] उपदेसी[४]। अगम पंथ को होइ संदेसी[५]।
परेउँ आइ तेहि समुँद अथाहा[६]। जहवाँ वार पार नहिं थाहा[७]।
सीता हरन राम संग्रामा। हनिवँत मिला मिली[८] तब रामा।
मोहि न कोइ केहि बिनवौं रोई। को बर बाँधि गवेंसी होई।

भँवर जो पावा कँवल कहँ मन चिंता[९] बहु केलि[१०]।
आइ परा कोइ हस्ति तहँ चूरि गएउ[११] सब[१२] बेलि[१३] ॥

---

५. द्वि० ४, ५ धाड़ मारि। ६. द्वि० १ मोर सम। ७. प्र० १, २ पादुका, द्वि० २, ४ बाँका, द्वि० १ बालक, तृ० १ बारका, तृ० २ बाँका औ। ८. तृ० १ मोर सब कटक तृ० ३ मोर हस्ती घोर,। ९. द्वि० ७ गरब सौं। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, पं० १ अवगाह, तृ० ३ मन माँह।
*इसके अनंतर प्र० २ में एक छंद अतिरिक्त है। (देखिए परिशिष्ट)

४०५] १. प्र० १, २ कोरे, द्वि० ४ गुर जो, च० १ केर। २. प्र० १ अगिनि महँ सौंह धसावौं, प्र० २ अगिनि औ पानि धसावौं। ३. च० १ सो काह करौं। ४. प्र० १, २ उपदेसा। ५. प्र० १, २ कहै संदेसा, द्वि० २ होइ उपदेसी, तृ० ३ होइ सहदेसी, च० १ होइ अंगवेसी, पं० १ होइ गँवेसी। ६. तृ० २ विधि मोहि आनि समुँद महँ बारा, च० १ बिरह मोहि आनि समुँद तेहि बाहा, पं० १ परेउँ समुद्र आइ अवगाहा। ७. प्र० १, २, द्वि० ३ अवगाहा, द्वि० २ नहिं छाँहाँ, द्वि० ७ जल माहाँ, तृ० १ को काहाँ। ८. द्वि० ४, पं० १ मिला जीता, द्वि० ७ मीत मिला। ९. द्वि० ४ आरत। १०. द्वि० २ मन चिंता बहु खेलि, तृ० ३ मन चिंता बहु मेलि, द्वि० १ बहु आरत बहु आस। ११. प्र० २ लिहेसि। १२. च० १ सो। १३. द्वि० १ भँवर होइ निवछावरि कँवल देइ हँसि बास।

[४०६]

कासुँ पुकारौं का पह जाऊँ। गाढ़ें मीत होइ[1] एहि[2] ठाऊँ।
को यह समुँद मँथै वर बाढ़ा। को मथि रतन पदारथ काढ़ा।
कहाँ सो ब्रह्मा बिस्नु महेसू। कहाँ सो मेरु कहाँ सो सेसू।
को अस साज मेरावै आनी। बासुकि बँध[3] सुमेरु मथानी।
को दधि मथै समुँद[4] जस मँथा[5]। करनी[6] सार न कथनी कथा।
जौं लगि मथै न कोइ दै जीऊ। सूधी अँगुरी न निकरै घीऊ।
लै नग मोर समुँद भा बटा। गाढ परै तौ पै[7] परगटा।

लीलि रहा अब[8] ढील होइ पेट पदारथ मेलि।
को उजियार करै जग[9] झापाँ चाँद उघेलि[10]॥

[४०७]

ऐ गोसाइँ[1] तू सिरजनहारू। तूँ सिरिजा यहु समुँद अपारू[2]।
तूँ जल ऊपर धरती राखे। जगत भार लै भार न भाखे।
तूँ यह गँगन अंतरिख थाँभा। जहाँ न टेक न थून्ही खाँभा।
चाँद सुरुज[3] औ नखतन्ह[4] पाँती। तोरे डर धावहिं दिन राती।
पानी पवन अगिनि औ माँटी। सब की पीठि तोरि है साँटी।
सो अमुरुख बाउर औ अंधा। तोहि छाँड़ि औरहि चित बंधा।
घट घट[5] जगत तोरि है डीठी। मोहिं आपनि[6] कछु सूझ न[7] पीठी।

---

[४०६] १. द्वि० १ करै, द्वि० ३ न कोइ। २. द्वि० १ एक। ३. प्र० २ वैठ, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० १, २ डेढ़, द्वि० १ होइ दधि, तृ० ३ वैह, द्वि० ७ वोहध, (हिंदी मूल)। ४. प्र० २ समुँद मथै। ५. द्वि० १ काह समुंद लाइ मन मथा। ६. तृ० ३ कथनी। ७. द्वि० ७ प्रेम। ८. प्र० १ नग। ९. प्र० १ एहि नगरी, प्र० २ एह सबजग, द्वि० ७ अब। १०. द्वि०७ सब जग झाँपा केलि।

*च० १ में यहाँ से छंद ४२४ तक प्रति खंडित है।

[४०७] १. द्वि० १ ठाकुर। २. तृ० २, पं० १ सरग पतारू। ३. प्र० २ सूर। ४. तृ० १ नखत जो। ५. पं० १ खँड खँड। ६. तृ० १, २ हौं अंधा। ७. प्र० २ सूझै नहिं, तृ० २ जेहि सूझ न।

पौन हुतें भौ पानी पानि हुतें भै आगि।
आगि हुतें भै माँटी गोरख धंधै लागि॥

[४०८]

तूँ जिउ तन मेरवसि दै[1] आऊ। तुँही बिछोवसि करसि मेराऊ।
चौदह भुवन सो तोरें हाथा। जहँ लगि बिछुरे औ एक साथा।
सब कर मरम भेद तोहि पाहाँ। रोम जमावसि टूटै[2] तहाँ[3]।
जानसि सबै अवस्था मोरी। जस बिछुरी सारस कै जोरी।
एक मुए सँग मरै सो दूजी[4]। रहा न जाइ आइ सब पूजी[4]।
झूरत तपत दगधि का मरऊँ। कलपौं सीस बेगि निस्तरऊँ।
मरौं सो लै पदुमावति नाँऊ। तूँ करतार करसि एक ठाँऊ।

दुख जो[5] पिरीतम भेंटि कै[6] सुख जो न सोवै[7] कोइ।
इहै ठाऊँ मन[8] डरपै[9] मिलि न बिछोवा[10] होइ॥

[४०९]

कहि कै उठा समुँद महँ आवा। काढ़ि कटार गरे लै लावा।
कहा समुंद्र पाप अब घटा। बाँभन रूप आइ परगटा।
तिलक दुवादस मस्तक[1] दीन्हे। हाथ कनक बैसाखी लीन्हे।
मुंद्रा[2] कान[3] जनेऊ काँधे। कनक पत्र धोती तर[4] बाँधे।
पायन्ह कनक जराऊ पाऊँ। दीन्ह असीस आइ तेहि ठाऊँ।

---

[४०८] १. द्वि० १ जिउ दै कै कीन्हे, तृ० १ जीवन मेरवसि दै। २. द्वि० ६ आएउँ जावसि। ३. प्र० २ सब कर मरम भेद तोहि पाहाँ, रोम जमा वसि टूटै जहाँ। पं० १ सब कर मरम भेद तैं पावसि, टूटै रोम सो तहाँ जमा-वसि। ४. प्र० २ न दूजा, जो पूजा, द्वि० २ जो दूजा, सब पूजा, द्वि० ४ सो दूंजी, सब पूजी। ५. पं० १ सो। ६. द्वि० १ बिछुरै। ७. द्वि० २ जन सो आव। ८. प्र० २ मोहि, तृ० ३ जिउ। ९. प्र० २ डर है, द्वि० १ मरौं जो। १०. प्र० २ मिलि न बिछुरन।

[४०९] १. प्र० १, २, तृ० १ माथें, तृ० २ सोहै। २. द्वि० २ कुंडल। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ७, तृ० १, २ कनक, द्वि० ६ सवन। ४. प्र० १, द्वि० ७ कटि।

कहु रे कुँवर मोसौं एक बाता। काहे लागि करसि अपघाता।
परिहँसि मरसि[5] कि कौनेहु[6] लाजा[7]। आपन जीउ देसि केहि काजा।

जनि कटार कँठ लावसि समुझि देखु जिउ आपु।
सकति हँकारि[8] जीव जो[9] काढ़ै महा दोख औ पापु॥

[४१०]

को तुम्ह उतर देइ हो[1] पाँड़े। सो बोलै[2] जाकर जिय भाँड़े।
जंबू दीप केर हौं[3] राजा। सो मैं कीन्ह जो करत न छाजा।
सिंघल दीप राज घर बारी। सो मैं जाइ बियाही नारी।
लाख बोहित तेइँ दाइज भरे। नग अमोल औ सब निरमरे।
रतन पदारथ मानिक मोंती[4]। हती न काहु के संपति ओती[5]।
बहल[6] घोर हस्ती सिंघली[7]। औ सँग कुँवर लाख दुइ बली[7]।
तेहि गोहन सिंघल पदुमिनी। एक सों एक चाहि[8] रूपमनी।

पदुमावति संसार रूपमनि[9] कहँ लगि कहौं दुहेल[10]।
एत सब आइ समुँद महँ खोएउँ[11] हौं का जियौं अकेल॥

---

५. द्वि० २ हंस जीव, द्वि० ३ जरत मरसि। ६. प्र० २ सो कवने, द्वि० २ कहि काहें, तृ० ३ कौन केहि द्वि० ३, ५, तृ० १ कहु कौनेहु। ७. द्वि० ६ राजा। ८. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, ३, सकति, द्वि० १ जिअत। ९. प्र० १ कस।

[४१०] १. प्र० २ देइ सो, द्वि० ७, तृ० २ देहु हो। २. तृ० ३ जानै। ३. प्र० १ २, द्वि० १ मैं। ४. द्वि० १ औ गजमोती। ५. द्वि० १ होति न काहु के सपनेहु ओती, तृ० ३ का हति काहु के सपनेहु ओती, द्वि० ६, तृ० १ हनि न काहु के सपनेहु ओती। ६. प्र० १ औ बहु, द्वि० ७, ३ बहुत, पं० १ भल भल। ७. प्र० १ सिंघली, सोरह सहस कुँवर बड़ बली, प्र० २ सिंघली, औ सँग कुँवर लाख दस बली, तृ० ३ सिंघल, एकेक चाहिं सो एक एक भले, (उर्दू मूल) तृ० २ सिंघली, औ सँग कुँवर सहस दस बली। ८. द्वि० २ एक एक सौं अति। ९. प्र० १, २, द्वि० ३, तृ० २, पं० १ संसार मनि, द्वि० १ जग ऊपर, द्वि० ५ संसार रूप, द्वि० ७ संसार पर। १०. द्वि० ५ कहँ लगि कहौं अमेल, तृ० १ पेट पदारथ मेलि। ११. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ आइ गवाएउँ समुँद महँ, द्वि० १, २, तृ० ३ आएउँ आइ गँवाएउ, द्वि० ६ आनि गवाँएउँ समुंद सब।

[४११]

हँसा समुँद होइ उठा[१] अँजोरा। जग जो बूड़[२] सब कहि कहि मोरा।
तोर होत तोहि परत न बेरा। बूझि बिचारि तुँही केहि केरा।
हाथ मरोरि धुनै सिर माँखो। पै तोहि हिएँ न उघरी आँखी।
बहुतन्ह ऐस रोइ सिर मारा। हाथ न रहा झूठ संसारा।
जौं पै जगत होति थिर[३] माया। सैंतत सिद्ध न पावत राया।
बड़ेन्ह जौं न सैंत औ[४] गाड़ा। देखा भार चूँवि कै छाड़ा।
पानी कै पानी महँ[५] गई[६]। जौं तू बचा कुसल सब भई[७]।

जाकर दीन्ह कया जिउ[८] लीन्ह चाह जब भाव।
धन लछिमी सब ताकरि लेइ तौ का पछिताव॥

[४१२]

अनु पाँड़े फुरि कही कहानी[१]। जौं पावौं पदुमावति रानी।
तपि कै[२] पाव उमरि कर[३] फूला[४]। पुनि तेहि खोइ सोइ पँथ भूला।
पुरुख न आपन नारि सराहा। मुएँ गएँ सँवरा पै चाहा।
कहँ असि नारि जगत महँ होई। कहँ अस जिवन मिलन सुख सोई।
कहँ अस रहस भोग अब[५] करना। ऐसे जियन चाहि भल मरना।

---

[४११] १. प्र० १,२ तब भएउ। २. प्र० १, २, द्वि० ७ बूडा। ३. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० ३ फुरि, द्वि० २ भलि। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ बड़ेन्ह जो सैंता नाहीं, द्वि० ४, ५, सिद्धन्ह दरब न सैंता, पं० १ बड़ेन्ह जो दरब न सैंता। ५. तृ० ३ सब। ६. द्वि० १ बान की बान बान महँ, खई। ७. प्र० १, २ ३, द्वि० २,४,५,७, पं० १ तुइँ जो जिया कुसल सब भई, द्वि० १ तुम्ह जिय कुसल तबहि तप भई, द्वि० ५ जौ तू भया कुसल सब भई, तृ० २ तूँ बाँचा तो कुसल सब भई। ८. प्र० १, द्वि० ४ जीउ औ काया, द्वि० ७ ग्वा न जिउ आहै, तृ० १ जो कया महँ।

[४१२] १. प्र० २, द्वि० ६ पुरखन्ह का हानी, द्वि० १ परखहु ना आनी। २. द्वि० १ अइन कै। ३. प्र० १ डूमरि कर, प्र० २, द्वि० १ मरि कै। ४. द्वि० १ मूल। ५. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, पं० १ सुख, तृ० ३ औ (हिंदी उर्दू मल) द्वि० ३ मिलि।

जहँ अस बरै[6] समुँद नग दिया[7]। तहँ किमि जीव आछै[8] मरजिया।[9]
जस एइँ समुँद दीन्ह दुख मोकाँ। दै हत्या झगरौं सिवलोकाँ।

का मैं एहिक नसावा का एइँ सँवरा दाउ।
जाइ सरग पर होइहि एकर मोर नियाउ॥

[४१३]

जौं तूँ मुवा कस रोवसि खरा[1]। न मुवा मरै न रोवै मरा।
जौं मर भया औ छाँड़ेसि माया[2]। बहुरि न करै मरन कै दाया[3]।
जौं मर भया न बूड़ै नीरा। बहत जाइ लागै पै तीरा।
तहूँ एक बाउर मैं भेंटा। जैस राम दसरथ कर बेटा।[4]
ओहू मेहरी कर परा[6] बिछोवा। एहि समुँद्र महँ फिरि फिरि रोवा।[5]
पुनि जौं राम खोइ भा मरा। तब एक अंत[7] भएउ[8] मिलि तरा[9]।
तस मर होहि मूँदु अब आँखी। लावौं तीर टेकु बैसाखी।

बाउर अंध पेम कर लुबुधा[10] सुनत ओहि भा बाट।
निमिखि एक महँ लेइ गा पदुमावति जेहि घाट॥

[४१४]

पदुमावतिहि सोग तस बीता। जस असोग बीरौ तर सीता।
कनक लता दुइ नारँग फरी[1]। तेहि के भार उठि सकै न खरी[1]।

---

६. द्वि० ३, ७ परा, द्वि० २, ४, ५ परै। ७. द्वि० ७ हीआ।
८. प्र० १, २ तहँ किमि जिऔ अैस, द्वि० ७ तेहि क जीअ आछै, द्वि० ५, पं० १ तहँ किमि आछै। ९. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं है।

[४१३] १. प्र० २ खारा, मारा, द्वि० १ मारा, संसारा। २. प्र० २, द्वि० ७ काया। ३. प्र० १ माया। ४. द्वि० १ में यह तथा बाद की पंक्तियाँ नहीं हैं। ५. प्र० २ पुनि जो राम सोई भा मरा, तब एकंत भए मिलि जरा। ६. प्र० १, २, तृ० १ जोई कर परा, द्वि० ४ नारि न कर परा, द्वि० ५ नारि कर परा, द्वि० ३ पुनि परा जो नारि। ७. द्वि० ७ मंत्र। ८. प्र० १ पुनि सो मिलै एक। ९. प्र० १ होइ तरा, पं० १ औ तरा। १०. प्र० १ पेम कर।

[४१४] १. प्र० २, द्वि० ७ धरी, खरी।

तेहि चढ़ि अलक भुअंगिनि डसा[2]। सिर पर रहै हिएँ[3] परगसा[2]।
रही म्रिनाल टेकि दुख दाधी। आधा कँवल भई ससि आधी।
नलिनि खंड दुइ तस करिहाऊँ। रोमावलि बिछोउ कर भाऊ।
रहै टूटि जस कंचन तागू। कहँ पिउ मिलै जो देइ सोहागू।
पान न खंडै करै उपवासू। सूख फूल तन रहा सुबासू[4]।

गँगन धरति जल पूरि चखु[5] बूड़त होइ निसाँसु।
पिउ पिउ चात्रिक ज्यों ररै मरै सेवाति पियासु[6]॥

[४१५]

लखमिनि चंचल नारि[1] परेवा। जेहि सत देखु छरै कै सेवा।
रतनसेनि आवा जेहि घाटा। अगुमन जाइ बैठ तेहि बाटा।
औ भै पदुमावति कै रूपा। कीन्हेसि छाँह जरै जनि[2] धूपा।
देखि सो कँवल भँवर मन धावा[3]। साँस लीन्ह पै बास न पावा[4]।
निरखत आई[5] लखमिनी डीठी। रतनसेनि तब दीन्ही[6] पीठी।
जौं भलि होति लखमिनी नारी। तजि महेस कत होत भिखारी।
पुनि फिरि धनि आगे भै रोई। पुरुख पीठि कस देखि बिछोई।

हौं पदुमावति रानी रतनसेनि तूँ पीउ।
आनि समुँद महँ छाँड़े अब रे देब मैं जीउ॥

---

२. प्र० १, २, पं० १ बसा, कहँ डसा, द्वि० ७ डसा, परगसा द्वि० १ डसी, परगसी, द्वि० २, ३, तृ० १, ३, डसा, परबसा, द्वि० ६ डसा, महँबसा। ३. प्र० १, २, पं० १ सीस चढ़ी मानुस द्वि० ७ सिर परचढ़ी हिए। ४. द्वि० ३, ४, ५, तृ० ३ तन रही न बासू, द्वि० २ तन रहा न माँसू, तृ० १ पै गई न बासू। ५. प्र० १, २, पं० १ दूरि कै, द्वि० ४, ५ बूड़ि गै। ६. प्र० १, २, पं० १ सेवा तिहि आस।

[४१५] १. द्वि० ७ जाति। २. प्र० १ मरै नहिं, प्र० २ मरै जेहि, द्वि० २, ४, ५, तृ० ३, पं० १ जरै जहँ, द्वि० ७ जरै जस, द्वि० ३ जरै नहिं। ३. प्र० १ भँवर मन लावा, द्वि० ४, ५ भँवर होइ धावा, द्वि० ७ भँवर जो आव, तृ० २ भँवर धुनि आवा, तृ० ३ भँवर ज्यों धावा, पं० १ रूप धुनि आवा। ४. द्वि० १, ४ आवा। ५. प्र० १, २ निरखि जो देखा। ६. प्र० १ २, द्वि० २, ७ फिरि दीन्ही, पं० १ बैठा दै।

[४१६]

अनु हौं सोइ भँवर औ भोजू। लेत फिरौं मालति कर खोजू।
मालति नारि[१] भँवर अस पीऊ। कह तोहि बास रहै थिर जीऊ।
तूँ को नारि करसि अस[२] रोई। फूल सोइ पै बास न होई।
हौं ओहि बास जीउ बलि देऊँ। औरु फूल कै बास न लेऊँ।
भँवर जो सब फूलन्ह कर फेरा। बास न लेइ[३] मालतिहि हेरा।
जहाँ पाव मालति कर बासू[४]। वारने[५] जीउ देइ होइ दासू[६]।
कब वह बास पौन पहुँचावै। नव तन होइ पेट जिउ आवै।

भँवर मालतिहि पै चहै काँट न आवै डीठि।
सौंहे भाल छाय हिय[७] पै फिरि देइ न[८] पीठि॥

[४१७]

तब हँसि बोली राजा[१] आऊ[२]। देखेउँ पुरुख तोर सति भाऊ[३]।
निस्चै भँवर मालतिहि आसा[४]। लै गै पदुमावति के पासा।[५]
पीउ पानि[६] कँवला जसि तपा। निकसा सूर समँद महँ[७] छपा[८]।
मैं पावा सो समुँद के घाटा। राजकुँवर मनि दिपै लिलाटा।
दसन दिपहिं जस हीरा जोती। नैन कचोर भरें जनु मोंती[९]।

---

[४१६] १. तृ० ३ नाम। २. प्र० १, २ सुनावसि, द्वि० १ करसि जिय, द्वि० ७ मरसि अस, द्वि० ३ कहसि अस। ३. प्र० १, २, तृ० २, प० १ न पाव। ४. द्वि० ७ भेसू ५. द्वि० २ वर ले, द्वि० ४, ५ वरते, द्वि० ३, तृ० १, २, ३ वरने। ६. प्र० १ हौं तो जीव बलिदास। द्वि० ७ हौं दैउ उदेसी। ७. प्र० १ भाल धाय हिय ऊपर, प्र० २, द्वि० ३ भाल खाइ हिय, तृ० ३ भाल धाय हिय फाटै, द्वि० ७ भले जाइ हिय, पं० १ भाल खाइ जो। ८. प्र० १, पं० १ फिरि कै देइन, द्वि० ४ पै फेरै वहिं, द्वि० ७ बहुरो देइन।

[४१७] १. द्वि० २ लखमी। २. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७, तृ० १, २, पं० १ ठाऊँ। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ७, तृ० १ जहँ मालति चलु तोहि लै जाऊँ। ४. द्वि० २ बासा। ५. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ६, ७, तृ० १ लै सो आइ पदुमावति पासा, पानि पिआव मरत तोहि आसा। ६. प्र० २ पिउ न पानि। ७. प्र० २ चाँद मुइँ, द्वि० १ कँवल महँ, द्वि० २, ६, समुँद जहँ। ८. प्र० १ चाँद मुइँ छपा, तृ० १ चंद महँ छपा। ९. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं है।

भुजा लंक[10] उर[11] केहरि जीता। मूरति कान्ह देख[12] गोपीता।
जस नल तपत दामनहि[13] पूँछा। तस बिनु प्रान पिंड है छूँछा।

जस तूँ पदिक पदारथ[14] तैस रतन तोहि जोग।
मिला भँवर मालति कहँ[15] करहुँ दोउ रस भोग[16]॥

[४१८]

पदिक पदारथ खीन जो होती। सुनतहि रतन चढ़ी[1] मुख जोती।
जानहुँ सुरुज कीन्ह[2] परगासू। दिन बहुरा[3] भा कँवल बिगासू।
कँवल बिहँसि[4] सुरुज मुख दरसा[5]। सूरुज कँवल दिस्टि सों[6] परसा[5]।
लोचन कँवल सिरीमुख[7] सूरू। भए अतियंत[8] दुनहुँ रसमूरू।
मालति देखि भँवर गा भूली। भँवर देखि मालति मन[9] फूली।
डीठा दरसन भए[10] एक पासा। वह ओहि के[11] वह ओहि के[12] बासा।
कंचन डाहि दीन्ह जनु जोऊ। उगवा सुरुज छूटि गा सोऊ।

---

[10]. तृ० ३ कनक। [11]. द्वि० ६ पर। [12]. तृ० ३ छपी, पं० १ पूँछ। [13]. प्र० १, २, द्वि० ७ तलपति दामावति, द्वि० १ न मालति पदमावति, द्वि० २, तृ० १ नल पुनि दामा नहिं। [14]. पं० १,२, द्वि० ७ जसरे पदारथ आहिं तू। [15]. पं० १ सिउँ। [16]. प्र० २, द्वि० ७ करहु दोउ सुख भोग, तृ० ३ दैय दीन्ह सुख भोग, द्वि० ६ करहु दोउ सिलि भोग, पं० १ रहसि मान उठि भोग।

[४१८] [1]. प्र० १ रतन भई, प्र० २ हरन भई। [2]. प्र० १ किरन। [3]. प्र० २ द्वि० ७ दिन बारह, पं० १ दिवस फिरा। [4]. द्वि० ७ बिगास, द्वि० ३ बिगसि। [5]. प्र० १ कँवल परस सूरज कहँ परसा, सूरज कवल आनि सिर धरसा। [6]. द्वि० ६ हँसि। [7]. प्र० १ सरद ससि, प्र० २ सरद मुख, द्वि० १ दसन मुख, द्वि० ७ सरग मुख। [8]. प्र० १, २, द्वि० ७ अस्त, द्वि० १, ३, तृ० ३ अंत, द्वि० २, तृ० १, २, पं० १ अनंत। [9]. द्वि० १ गइ, द्वि० ५, ७ बन, द्वि० ६ महँ पं० १ हसि। [10]. द्वि० ४, तृ० ३ देख दरस भए, द्वि० ७ देखि दरस पुनि को। [11]. प्र० १ सो सो। [12]. द्वि० १ जियन घरी पिउ धनि कहँ नैनन्ह सों रस भेंटि, द्वि० ७ आइ परी धनि नैनन्हि कै राजा सो भेंट।

पाय परी धनि पिय के नैनन्ह सौं रज मेंटि।[१२]
अचरज भएउ सबहि कहँ[१३] ससि कँवलहि[१४] भै भेंट ॥*

[४१९]

ओहि दिन[१] आइ रहे पहुनाई। पुनि भै बिदा समुद सैं[२] जाई।
लखमिनि पदुमावति सैं भेंटी[३]। जो साखा उपनी सो मेंटी[३]।
समदन दीन्ह पान कर बीरा। भरि कै रतन पदारथ हीरा।
और पाँच नग दीन्ह बिसेखे। स्रवन[४] जो[५] सुने नैन नहिं देखे।
एक जो अंम्रित दोसर हंसू। औ सोनहा पंछी कर बंसू।
और दीन्ह सावक सादूरू। दीन्ह परस नग कंचन मूरू।
तरुन[६] तुरंगम दुऔ चढ़ाए। जल मानुस अगुवा सँग लाए।

भेंटि घाट समदन कै फिरे नाइ कै माथ।
जल मानुस तब बहुरे जब आए जग्रनाथ ॥

[४२०]

जगरनाथ जौं देखेन्हि[१] आई। भोजन रींधा हाट बिकाई[२]।
राजैं पदुमावति सौं कहा। साँठ नाठि किछु गाँठि न रहा[३]।
साँठ होइ जासौं स बोला। निसँठा पुरुख पात पर[४] डोला।
साँठें राँक[५] चलै मौराई[६]। निसँठ राउ सब कह बौराई।

---

१३. तृ० ३ के तृ० १, द्वि० ३ मन। १४. प्र०१, द्वि० ६, ७ सूरहि।
*द्वि० ६ के अतिरिक्त सभी प्रतियों में इस छंद के अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। तृ० २ में उसके अनंतर भी पाँच और द्वि० ४, ५, में दो और अतिरिक्त छंद हैं।

[४१९] १. द्वि० ४, ५ दिन दस, द्वि० ३ दिन दुइ। २. प्र० १, द्वि० २, ३, ६, तृ० २ पहँ, प्र० २, द्वि० ७ सौ, द्वि० १, २, ५ सो, पं० १ स्यूँ। ३. प्र० १, २, च० १, प० १ कहँ भेंटा, मेटा, द्वि० ३ सैं भेंटी, मेटी। ४. द्वि० २ सून। ५. प्र० १, २, द्वि० २ न। ६. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५ तृ० १, २, पं० १ तुरत, द्वि० २ तरल, द्वि० ७ तीरन।

[४२०] १. प्र० १ जब पहुँचे, प्र० २ जौं पहुँचे, द्वि० ६ का देखै। २. प्र० १, २, द्वि० ३, ७, तृ० २, पं०१ भात बिकाई, द्वि० ४, ५ भात पकाई। ३. तृ० ३ अहा। ४. प्र० २, तृ० ३ बर, द्वि० ४, ५ ज्यों। ५. द्वि० २ परजा, तृ० २ नीच। ६. प्र० २ सो राई।

साँठें ओद[7] गरब तन फूला। निसँठें बोद[8] बुद्धि बल भूला।
साँठें जाग नींद निसि जाई। निसँठें खिन आवै[9] औंघाई[10]।[11]
साँठें द्रिस्टि जोति होइ नैना। निसँठें हियँ[12] न आव मुख[13] बैना।[11]

साँठें रहै सुधीनता[14] निसठें आगरि[15] भूख।[11]
बिनु गथ पुरुख[16] पतंग ज्यौं ठाठ[17] ठाढ़ पै[18] सूख॥[11]*

[४२१]

पदुमावति बोली सुनु राजा। जीउ गएँ धन कवने काजा।
अहा दरब तब लीन्ह न गाँठी। पुनि कत मिलै लच्छि जौं नाठी।
मुकतें साँबर गाँठि जो करई। सँकरें परे सोइ[1] उपकरई।
जौं तन पंख जाइ जहँ ताका। पैग पहार होइ जौं थाका।
लखिमिनि अहा दीन्ह मोहि[2] बीरा। भरि कै[3] रतन पदारथ हीरा।
काढ़ि एक नग बेगि भँजावा[4]। बहुरी लच्छि फेरि दिनु पावा।

---

७. प्र० १, द्वि० ३, ६, तृ० १, पं० १ आवा, द्वि० ४, ५ आव, प्र० २ राव, द्वि० ३ रोर। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ पुरुष, द्वि० ४ ५, तृ० ३ बोल, द्वि० २, पं० १ बूड़हिं। ९. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, तृ० १, पं० १ खीन होइ, द्वि० २ खिनकि होइ, द्वि० ३, ५ कहाँ होइ। १०. प्र० २ औराई। ११. द्वि० १ में यह पंक्तियाँ नहीं हैं। १२. तृ० २ घट। १३. प्र० १, पं० १ निसठें मुक्ख न आवै बैना। १४. प्र० २, द्वि० २, ६, ७ सुद्ध तन, तृ० ३ सुनिध तन, द्वि० ४, ५, पं० १ सधन तन, तृ० १ सुदय तन, तृ० २ साधना, द्वि० ३ सुद्ध भा। १५. प्र० १, द्वि० ७, पं० १ लागें, प्र० २ लागन। १६. द्वि० ४ बिरिख। १७. द्वि० २ के अतिरिक्त सभी प्रतियों में 'ठाढ़', केवल प्र० २ में 'ठाठ'। १८. प्र० २ भइल पै (पूर्वीय प्रभाव), द्वि० २ साथ पै, द्वि० ७ भी है।

*इस छंद की प्रथम तथा दूसरी अर्द्धालियों के बीच प्र० १, २, द्वि० ७ तथा द्वि० ३ में पूरे दो अतिरिक्त छंदों की पंक्तियाँ हैं। और द्वि० ४, ५ में इस छंदो में से एक छंद अतरिक्त है। (देखिए परशिष्ट)

[४२१] १. प्र० १ सँकरे मुकतें सोइ, प्र० २ द्वि० ३, सँकरी बेर होइ, द्वि० ६ सँकरें बार सोइ, द्वि० १, २, तृ० ३ सँकरे सोइ भलेहँ, द्वि० ४, ५, तृ० २ सांकर पर सोइ। २. प्र० १, २, द्वि० ७ मोहि दीन्ह जो। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ भरा सो। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ हाट पठावा, पं० १ बेगि भुनावा।

दरब भरोस करै जनि कोई। दरब सोइ जो गाँठी होई।

जोरि कटक पुनि राजा[५] घर कहँ कीन्ह पयान।
देवसहि भान अलोपा बासुकि इंद्र सँकान ॥*

[४२२]

चितउर आइ नियर भा राजा। बहुरा जीति इंद्र अस गाजा।[४]
बाजन बाजै होइ अँदोरा। आवहिं हस्ति बहल[१] औ घोरा।[४]
पदुमावति चंडोल बईठी। पुनि गै उलटि सरग सौं डीठी।[४]
यह मन अैंठा[२] रहै न सूधा। बिपति न सँवरै सँपतिहि लुबुधा।[४]
सहस बरिख दुख जरै जो कोई। घरी एक[३] सुख बिसरै सोई।[४]
जोगिन्ह इहै जानि मन मारा। तउव[५] न मुवा यह मन औ पारा।
रहै न बाँधाँ बाँधा जेही। तेलिया मुवा डारु पुनि तेही।

मुहमद यह मन अमर[६] है कहु किमि मारा जाइ।
ग्यान[७] सिला सौं जौं घँसै[८] घँसतहि घँसत[९] बिलाइ ॥[१०]

[४२३]

नागमती कहँ अगम जनावा। गै[१] सो तपनि बरखा रितु आवा।
अही जो मुई नागिनि जसि तचा। जिउ पाएँ तन महँ भै सचा।
सब दुख जनु कँचुली[२] गा छूटी। होइ[३] निसरी जनु बीर बहूटी।

---

५. तृ० ३ सब राजा, द्वि० ६, पं० १ तब राजा, तृ० २ दल अगनित।

* द्वि० १ में यह छंद नहीं है, किंतु प्रसंग में अनिवार्य है, क्योंकि ऊपर रतसेन को 'निसँठा' कहा गया है, और आगे कहा गया है : बाजन बाजै होइ अँदोरा, आवहिं हस्ति बहल औ घोरा' जो बिना पूँजी के असंभव था।

[४२२] १. प्र० १, बहु हस्ती, द्वि० ३, ७ बहुत हस्ति। २. प्र० १, २ अैसा ३. प्र० १, २ तिल भर, द्वि० ३, तृ० ३ खिन एक। ४. द्वि० १ में यह। पंक्तियाँ नहीं हैं। ५. प्र० १ पै। ६. द्वि० १ कठिन है। ७. प्र० २, द्वि० १, ७ कया, द्वि० ४ कहाँ। ८. द्वि० ४, ५ सदासिव आएउ, द्वि० २ सिला सौं पौन गहि, तृ० १ सिला सों तिमि घटै। ९. द्वि० ३, ४, तृ० १, पं० १ घटतहि घटत। १०. प्र० १ में छंद का यह दोहा नहीं है।

४२३] १. तृ० ३ गा, द्वि० ७ गौ। २. प्र० २ कैंचुक। ३. तृ० १ धनि।

जस भुइँ दहि असाढ़ पलुहाई[४]। परहिं बुंद औ सोंध बसाई।
ओहि भाँति पलुही सुख बारी। उठे करिल नव कोंप सँवारी[५]।
हुलसी गँग जस बाढ़ैं लेई। जोबन लाग तरंगैं देई।
काम धनुक सर दै भै ठाढ़ी[६]। भागेउ बिरह रही जिसु डाढ़ी[६]।

पूँछहिं सखी सहेली[७] हिरदै देखि अनंद।
आजु बदन तुव निरमल कहाँ उवा है[८] चंद॥

[४२४]

अब लगि सखी पवन हा ताता[१]। आजु लाग मोहि सीतल गाता[२]।
महि हुलसै[३] जस पावस छाहाँ। तस हुलास उपना जिय माहाँ।
दसौं दाउ कै गा जो दसहरा। पलटा सोइ नाँउँ लै महरा।
अब जोबन गंगा होइ बाढ़ा। औटन घटन मारि सब काढ़ा।
हरियर सब देखौं संसारू। नए चार जानहुँ अवतारू।
भागेउ बिरह करत जो डाहू। भा मुख[४] चांद छूटि गा राहू।
लहकहि[५] नैन बाँह हिय खिला[६]। को दहुँ[७] हितू आइ चह[८] मिला।

कहतहिं बात सखिन्ह सौं तेतखन आवा भाँट।
राजा आइ नियर भा मँदिल बिछावहु पाट॥*

---

४. तृ० १ जनावाई। ५. तृ० ३ सँभारी। ६. प्र० १, २ ठाढ़ा, अहा जेइँ ठाढ़ा, द्वि० २ ठाढ़ी, अही जम गाढ़ी, द्वि० ३, तृ० १ ठाढ़ी, अही जेइँ डाढ़ी, तृ० ३ ठाढ़ी, करत जो डाढ़ी, द्वि० ४, ५ ठाढ़ी, अही जो बाढ़ी, द्वि० ६ ठाढ़ी, अहा जेइँ डाढ़ी, द्वि० ७ ठाढ़ी, आ जो काढ़ी। ७. प्र० २ सहेली सब। ८. प्र० २ सो तुम्ह कहँ ऊगवै।

[४२४] १. प्र० २ हत ताता, द्वि० २ हो ताता, द्वि० ४, ५ आ हाता। २. प्र० १, २, द्वि० ३ सीतल बाता, तृ० ३, पं० १ सीतल राता, द्वि० ७ सिअर बतासा। ३. तृ० ३ हुलसी (उर्दू मूल)। ४. प्र० १ सखि। ५. द्वि० ३ फरकहि। ६. प्र० १ बाँह औ खिला, प्र० २ सो बाहँ आखिला, द्वि० ४, ५ हार हिय खिला, द्वि० ७ बाह औ हिया, तृ० १ भला वह खिला। ७. द्वि० ३, तृ० १ कौनिउ, द्वि० ४, ५ कै। ८. प्र० २, द्वि० ७ अस, द्वि० ४, ५ कै।

* द्वि० १ में यह छंद नहीं है, किंतु प्रसंग में यह अनिवार्य है, क्योंकि इसके बिना पिछले तथा अगले छंदों की शृंखला टूट जाती है।

[४२५]

सुनतहि खन राजा कर[1] नाऊँ। भा अनंद[2] सब ठावँहि ठाऊँ।
पलटा कै पुरखारथ[3] राजा। जस असाढ़ आवै दर साजा।
देखि सो छत्र भई जग छाहाँ। हस्ति मेघ ओनए जग माहाँ।
सैन पूरि आए घन[4] घोरा। रहस चाउ बरिसै चहुँ ओरा।
धरति सरग अब होइ मेरावा। भरिअहि पोखरि ताल तलावा।
लहकि[5] उठा सब भुमिया[6] नामा। ठाँवहि ठाँव दूब अस जामा।
दादुर मोर कोकिला बोले। हते अलोप जीभ सब[7] खोले।
भै असवार परथमै[8] मिलै चले[9] सब भाइ।
नदी अठारह गंडा[10] मिलीं समुँद कहँ जाइ॥*

[४२६]

बाजत गाजत राजा आवा। नगर चहूँ दिसि होइ[1] बधावा।
बिहँसि आइ माता कहँ मिला। जनु रामहि भेंटै[2] कौसिला।
साजे मंदिल बंदनवारा। औ बहु होइ मंगलाचारा[3]।
आवा पदुमावति क बेवानू। नागमती धिकि उठा सो भानू[4]।

---

[४२५] १. प्र० १, २, द्वि० ७ सुनतहिं रतनसेनि कर, तृ० ३ सुनत हर्ष राजा कर। २. द्वि० १ हुलास। ३. द्वि० १, ३, ४, ५, ७, तृ० १, २, ३, च० १, पं० १ जनु बरखा रितु, द्वि० २ जनु पुरखा रितु। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ ओनए घन, द्वि० ६ वन डक्खन। ५. द्वि० १, च० १ कुहुकि। ६. तृ० ३ सब भूमि, द्वि० ४, ५, तृ० १ सब भूमी, द्वि० ६ सब पुहुमी, द्वि० ७ भुमिया जेहिं। ७. प्र० २, द्वि० ७, तृ० १ तिन्ह, प्र० १ ते, द्वि० १ अस। ८. प्र० २ पिरथिमी (उर्दू मूल)। ९. तृ० ३ जाइ। १०. प्र० १, द्वि० ७ गंडा जस, द्वि० ४, ५, ३ खंडा, द्वि० १ अंगा।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर दो अतरिक्त छंद हैं। (देखिए परशिष्ट)।

[४२६] १. द्वि० ५, तृ० ३, च० १, पं० १ बाज, तृ० २ ओझ। २. प्र० १, २ जनहु राम मिला। ३. प्र० २, द्वि० ५, तृ० ३ सो मंगल चारा, तृ० १ जो मंगल चारा। ४. प्र० १ मन भएउ तिवानू, प्र० २ दुख भएउ तिवानू, तृ० २ जरि भा जस भानू, च० १ जरै जस भानू।

जनहुँ छाँह महँ धूप देखाई। तैस झार लागी जौं आई।
सहि नहिं जाइ सौति कै झारा। दोसरे मंदिल दीन्ह उतारा।
भै अहान[५] चहु खंड बखानी। रतनसेनि पदुमावति आनी।

पुहुप सुगंध[६] संसार मनि रूप बखानि न जाइ।
हेम सेत[७] औ गौर गाजना जगत बात फिरि आइ॥*

[४२७]

सब दिन बाजा दान दवाँवाँ[१]। भै निसि नागमती पहँ आवा।
नागमती मुख फेरि बईठी। सौंह न करै पुरुख[२] सौं डीठी।
ग्रीखम जरत छाँड़ि जो जाई। पावस आव कवन मुख लाई।[३]
जबहिं जरै परवत बन[४] लागे। औ तेहि झार पंखि उड़ि भागे।
अब साखा देखिअ औ[५] छाहाँ। कवने रहस पसारिअ बाहाँ[६]।
कोउ नहिं थिरकि[७] बैठ तेहि डारा। कोउ नहिं[८] करै केलि कुरुआरा।
तूँ जोगी होइगा बैरागी। हौं जरि भई छार तोहि लागी।

काह हँससि तूँ मोसौं किए जो और सौं[९] नेहु।
तोहि मुख चमकै बीजुरी मोहि मुख बरसै मेंहु॥

---

५. प्र० १, २ आहन, द्वि० ५, पं० १ आहाँ, द्वि० ७ आन। ६. द्वि० २, तृ० १, पं० १ गंध, तृ० २, च० १ बास। ७. द्वि० १ भीमसेन, तृ० ३ मेहंसत, द्वि० ७ है समेत। ८. द्वि० ४ जगत पात फहराइ, द्वि० ७ फिरी दोहाई, तृ० २ जगत बात चलि, च० १ जगत पाट चलि।

* प्र० १ में इसके अनंतर चार, प्र० २ में दो तथा द्वि० ४, ५, ६, ७ में एक अतिरिक्त छंद हैं।

[४२७] १. द्वि० ४, तृ० २ राजा दान दिवावा। २. द्वि० २ रतन। ३. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ७, तृ० १ सो मुख कवन देखावै आई। ४. प्र० १ प्रीति (उर्दू मूल) बन, तृ० १ परवत तन। ५. प्र० १, २ कत सारवा देखिअ। ६. तृ० ३ बिसारै नाहाँ। ७. प्र० १, २ कौ नहिं रहसि, द्वि० ७, तृ० १ कौनेहि हरषि, द्वि० २ को तहँ थिरकि, द्वि० ४, ५ कौनिउँ थिरकि। ८. द्वि० २, ६ को तहँ, द्वि० ४, ५ कौनिउँ। ९. प्र० १, द्वि० ७, अन सौ द्वि० २ वो सों।

[४२८]

नागमती तूँ पहिलि बियाही। कान्ह[1] पिरीति डही[2] जसि राही[3]।[4]
बहुते दिनन्ह आवै जौं पीऊ। धनि न मिलै धनि पाहन जीऊ[5]।
पाहन लोह पोढ़[6] जग[7] दोऊ। सोउ मिलहिं मन सँवरि बिछोऊ।
भलेहि सेत गंगा जल डीठा। जउँन जो[8] स्याम नीर अति मीठा।
काह भएउ तन दिन दस डहा। जौं बरखा सिर ऊपर अहा।
कोउ केहि पास आस कै हेरा। धनि वह दरस निरास न फेरा।
कंठ लाइ कै नारि मनाई। जरी जो[9] बेलि सींचि पलुहाई।[10]

फरे[11] सहस साखा होइ[12] दारिवँ दाख जँभीर।
सबै पंखि मिलि आइ जोहारे[13] लौटि[14] उहै भै भीर॥*

[४२९]

जौं भा मेरु भएउ[1] रँग राता। नागमती हँसि पूँछी बाता।
कहहु कंत जो बिदेस लोभाने[2]। कसि धनि मिली भोग कस माने।
जौं पदुमावति है[3] सुठि लोनी। मोरे रूप कि[4] सरवरि होनी।
जहाँ राधिका अछरिन्ह माहाँ। चंद्रावलि सरि पूज न छाहाँ[5]।
भँवर पुरुख अस रहै न राखा। तजै दाख महुआ रस चाखा।
तजि नागेसरि फूल सोहावा। कँवल बिसँधे सौं मन लावा।

---

[४२८] १. द्वि० २, ३ कीन्ह, द्वि० ४, ५ कठिन, तृ० १ कहेन्हि। २. प्र० १, २, द्वि० ७ दीन्ही, द्वि० २, ६, तृ० १, पं० १ रहीं। ३. प्र० १ आहीं, द्वि० ४, ५ दाहीं। ४. तृ० २, च० १ पेम पिरीति लै ओर निबाहीं। ५. प्र० १ पिउ न मिलै धनि सो भर जीऊ। ६. प्र० २, तृ० ३ पुर ह (उर्दू मूल)। ७. प्र० १ हैं, द्वि० ४ जो। ८. प्र० १ जमुना, द्वि० १ जउँन न। ९. तृ० २ उकठी। १०. प्र० १, २ में इस अर्द्धाली के दोनों चरणों का क्रम परस्पर परिवर्तित है। ११. तृ० ३ भरी (उर्दू मूल)। १२. द्वि० ४, ५ सहस अठारह साखा। १३. प्र० १ मिलि आए। १४. प्र० १, २ बहुरि, द्वि० १ लपटि।

*च० १ यहाँ से ४५६. ५ तक खंडित है।

[४२९] १. तृ० २ भँवर। २. तृ० ३ परदेस भुलाने, तृ० २ परदेस लोभाने। ३. पं० १ हो। ४. प्र० १ न। ५. तृ० ३ ताहाँ।

जौं नहवाइ भरिअ[६] अरगजा। तबहु गयंद धूरि नहिं तजा[७]।

काह कहौं हौं[८] तोसौं किछौ न तोरे[९] भाउ।
इहाँ बात मुख मोसौं उहाँ जीउ ओहि ठाँउ॥

[४३०]

कही[१] दुख कथा[२] रैनि बिहानी[३]। भोर भएउ[४] जहँ पदुमिनि रानी।
भान देखि ससि बदन मलीनी[५]। कँवल नैन राते तन खीनी।
रैनि नखत गनि कीन्ह बिहानू। बिमल भई जस[६] देखे भानू।
सुरुज हँसा ससि रोई डफारा। टूटि आँसु नखतन्ह कै मारा।
रहै न राखे होइ निसाँसी। तहँवहि जाहि जहाँ निसि बासी।
हौं कै नेहु आनि कुँव[७] मेली[८]। सींचै लाग झुरानी[९] बेली।
भए दु[१०] नैन रहँट की घरी। भरीं ते ढारीं छूँछीं भरीं।

सुभर सरोवर हंस जल[११] घटतहि गएउ बिछोइ।
कँवल प्रीति नहिं परिहरै सूखि पंक बरु होइ॥

[४३१]

पदमावति तूँ जीव पराना[१]। जिय तें जगत पियार न आना।
तूँ जस कँवल बसी हिय माहाँ। हौं होइ अलि बेधा तोहि पाहाँ।

---

६. प्र० २ करै। ७. द्वि० ४, ५, तृ० २ तबहुँ बिसाँयध देहु न तजा, तृ० १ तबहुँ बिसाँयध वहु नहिं तजा, पं० १ तोहि कहु गंध वही नहिं तजा। ८. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ दुख, द्वि० २ मैं। ९. प्र० २ तुम्हहि कछू नहिं।

[४३०] १. द्वि० ३, ४, ५, तृ० १, ३, पं० १ कहि। २. द्वि० १ कष्ट, द्वि० २ कथा जो, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १, ३, पं० १ कस्था। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ कहत दुख सब रैनि सिरानी। ४. प्र० १ आव द्वि० ३, ६, तृ० २, गएउ। ५. प्र० १ मलीना, खीना। ६. द्वि० ३, तृ० २ ससि। ७. प्र० १ कुप, द्वि० ७ कुंड, तृ० १ गिवँ। ८. द्वि० ५ हौं लै आनि इहाँ गियँ मेली। ९. तृ० ३ परानी, द्वि० ७ जरिआनी, द्वि० ३ चिरानी। १०. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २, पं० १ भै दुइ, द्वि० २ भै जो। ११. प्र० २ चरि।

[४३१] १. द्वि० परान पियारी।

मालति करी भँवर जौं पावा। सो तजि आन फूल कित धावा[२]।
अनु हौं सिंघल कै पदुमिनी। सरि न पूज[३] जंबू नागिनी[४]।
हौं सुगंध निरमलि उजियारी। वह बिख भरी डरावनि कारी।
मोरें बास भँवर सँग लागहिं[५]। ओहि देखें मानुस डरि भागहिं।
हौं पूरुख[६] कै चितवौं डीठी। जेहिं के जियँ असि अहौं[७] पईठी[८]।

ऊँचे ठाँव जो बैठै करै न नीचेहुँ संग।
जहाँ सो नागिनि हिरगै काह कहिअ सो अंग[९]॥

[४३२]

पलुही[१] नागमती कै बारी। सोन फूल फूली फुलवारी।
जावँत पंखि अहे सब[२] डहे। ते बहुरे[३] बोलत गहगहे।
सारौ सुवा महरि कोकिला। रहसत आइ पपीहा मिला।
हारिल सबद[४] महोख सो आवा[५]। काग कोराहर करहिं सोहावा[६]।
भोग बेरास कीन्ह अब[७] फेरा। बासहिं रहसहिं[८] करहिं बसेरा।
नाचहिं पंडुक मोर परेवा। निफल न जाइ काहु कै सेवा।
होइ उँजियार बैठि जस तपी। खूसट[९] मुहँ न देखावहिं छपी।

---

२. द्वि० २ पाई, जाई, प्र० २, द्वि० ४, ५, पं० १ पावा, भावा, द्वि० २, ३, तृ० १ पावा, धावा। ३. तृ० ३ पाउ। ४. प्र० १ कोइ रूपमनी, प्र० २ देसी रूपमती, द्वि० १ जंबू रानी, द्वि० ६ चितउर नागिनी। ५. प्र० १ सब आवहिं, तृ० २ सब लागहिं। ६. द्वि० २ बरखा कै, तृ० १, ५, पुरखा कै। ७. तृ० ३ अहै, तृ० १ हिए, तृ० २ रहौं, प्र० २, पं० १ आहि। ८. प्र० १ हिए आइ अस मीठी। ९. प्र० १ करै ओहि अंग, प्र० २ काह कहौ सो अंग, द्वि० २ कारे करै सो अंग, द्वि० ४ का कलि करै सो अंग, द्वि० ५ काल करै सो अंग।

[४३२] १. द्वि० १ आई, पं० १ पनहीं। २. प्र० १, २ बन, द्वि० २, ३, तृ० १ सँग। ३. द्वि० ४, ५ सबै पंखि, तृ० १, २ सब बहुरे। ४. प्र० १ संख, प्र० २, द्वि० १, ६, तृ० ३ सिंधु, द्वि० २, तृ० २ भिंग, तृ० १ सद। ५. द्वि० ४, ५, ६, ३ सोहावा। ६. द्वि० १ चुगावा, द्वि० ५ सोआवा, तृ० २ निरावा। ७. प्र० १, २ बहु, तृ० ३ अति, द्वि० ७ अत, तृ० १ एहँ। ८. प्र० १ बासन्ह रहतहि, तृ० ३ बाहिर रहसहिं। ९. द्वि० १, २, ६, तृ० १, २ खूसर, तृ० ३ खूसी, द्वि० ७ खोसरा, तृ० १ खूलिस।

नागमती सब साथ सहेलीं[१०] अपनी[११] बारी माहँ।
फूल चुनहिं फर चूरहिं रहस कोड सुख[१२] छाँह॥[१३]

[४३३]

जाही जूही तेहिं फुलवारी। देखि रहस सहि[१] सकी न बारी[२]।
दूतिन्ह[३] बात न हिएँ समानी[४]। पदुमावति सौं[५] कहा सो आनी[६]।
नागमती फुलवारी बारी। भँवर मिला रस करी सँवारी।
सखी साथ सब रहसहिं कूदहिं। औ सिंगार हार जनु[७] गूंदहिं।
तहँ[८] जो बिकावरि तुम्ह सो लरना। बकुचुन कहौं लहौं[९] जस करना।
नागमती नागेसरि रानी। कँवल न आछै अपनी बानी[१०]।
जस सेवती गुलाल चँबेली। तैसि एक जनि उहौं अकेली।

अति जो सुदरसन कूजा तब सत बरगहि जोग।
मिला भँवर नागेसरि सेंती[११] दैय[१२] दीन्ह सुख भोग॥*

[४३४]

सुनि[१] पदुमावति रिस न नेवारी[२]। सखी साथ आई तेहि बारी[२]।[३]
दुऔ सवति मिलि पाट बईठीं। हियँ बिरोध मुख बातैं मीठीं।

१०. द्वि० ७ सखी साथ जौ। ११. प्र० २ गईं जो। १२. तृ० १ जाहिं। १३. प्र० १ में दोहा अगले छंद का है।

[४३३] १. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, पं० १ सब सखी, द्वि० १ सखी मैंग, द्वि० ४ रहि सकी। २. प्र० १, २ सखी न पारी, द्वि० १ सहै न पारी, द्वि० ७, ‍ं० १ सखी पियारी। ३. प्र० १, २ एकौ। ४. द्वि० १ समाई। ५. प्र० १, २ नागमती सो, द्वि० १ पदुमावति पहँ। ६. द्वि० १ जाइ जनाई। ७. प्र० १ फल, द्वि० १ जस, द्वि० ४ सब। ८. प्र० २ तिन्ह (उर्दू मूल)। ९. प्र० २ कई चाह। १०. प्र० २ पानी। ११. प्र० १ मालति कहँ, द्वि० नागेसरि। १२. द्वि० ६ हिरदै।
* प्र० १ में दोहा पिछले छंद का है।

[४३४] १. तृ० ३ पुनि। २. प्र० १, २, द्वि० ४, तृ० १ सँभारी, आई तेहि बारी, द्वि० १ महँ आई, बारी तब आई। ३. द्वि० ६ बारी सुफल दिस्टि सब आई, प[दु]मावति हँस बात चलाई।

बारी दिस्टि सुरंग सुठि आई[४]। हँसि पदुमावति बात चलाई।
बारी सुफल आहि तुम्ह रानी। है लाई पै लाइ न जानी।
नागेसरि औ मालति जहाँ। सखदराउ न चाहिअ तहाँ।
अहा जो मधुकर कँवल पिरीती। लागेउ आइ करील[५] की रीती।
जो अँबिली बाँकी हिय माहाँ। तेहि न भाव नाँरग कै छाहाँ।

पहिलें फूल कि दहुँ[६] फर देखिअ हिएँ बिचारि।
आँब होइ जेहि ठाइँ[७] जाँबु[८] लागि रहि[९] आरि[१०]।।

[४३५]

अनु तुम्ह कही[१] नीकि यह सोभा। पै फुल[२] सोइ भँवर जेहि लोभा।
साँवरि जाँबु कस्तुरी चोवा। आँब जो ऊँच[३] तौ हिरदै रोवाँ।
तेहि गुन अस भै जाँबु पियारी। लाई आनि माँझ[४] कै बारी।
जल बाढ़ै ऊभै[५] जो[६] आई। हिय बाँकी अँबिली सिर नाई।
सो कस पराई[७] बारी दूखी[८]। तजै[९] पानि धावहि[१०] मुँह सूखी।
उठै आगि दुइ डार[११] अभेरा। कौनु साथ तेहि[१२] बैरी केरा।
जो देखी नागेसरि बारी। लाग[१३] मरै सब सुग्गा सारी।

---

४. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ सब आई, द्वि० ४ सो आई, द्वि० ५ सो लाई, (हिंदी मूल ?), द्वि० २ तुम्ह लाई, तृ० ३ तसि आई, तृ० २ सब लाई। ५, तृ० ३ करीनि। ६, प्र० १, २, द्वि० ३, ७ होइ। ७. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५ जेहि बारी, द्वि० ७ फर जहँवा। ८. द्वि० ३, ४ चाँप। ९. प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ७, तृ० २ तेहि। १०. द्वि० ४, ६ बारि।

[४३५] १. प्र० १, २ कहा। २. प्र० २, द्वि० २ भल, द्वि० ७ फर। ३. प्र० १ आँच, प्र० २, द्वि० ७ अंबुज, द्वि० १ ऊपर, द्वि० २ आँचहिं, तृ० ३ उपनैं, तृ० १ अवहीं। ४. प्र० १ आँब। ५. द्वि० १ जौं बढ़ि [illegible]ढ़ि ऊभै, प्र० २, द्वि० ४, ७ जल बाढ़ी ऊभी (उर्दू मूल)। ६. प्र० १, २ होइ, तृ० २, पं० १ सो। ७. प्र० १ पारी, प्र० २ परै जो, द्वि० २ राई। ८. तृ० ३, पं० १ रूखी। ९. तृ० १ वहैं। १०. द्वि० ७ आवै, तृ० ३ धावै। ११. प्र० १ दुहुँ आग। १२. प्र० १, द्वि० ६ जेहि, तृ० ३ मोहि। १३. तृ० ३ लागि।

जेहि तरिवर[14] जो बाढ़ै रहै सो[15] अपने ठाउँ।
तजि[16] केसरि औ[17] कुंदहि[18] जाँउन[19] पर अँबराउँ[20]॥

[४३६]

तुम्ह[1] अँबराँउ[2] लीन्ह[3] का चूरी। काहे भई नींबि बिख मूरी।
भई बैरि[4] कत कुटिल[5] कटैली। तेंदू कैथ चाहि बिगसैली।
नारँग दाख न तुम्हरी बारी। देखि मरहिं जहँ[6] सुग्गा सारी।
औ न सदाफर तुरुँज जँभीरा[7]। कटहर बड़हर लौकी खीरा[7]।
कँवल के हिय रोंवा तौ केसरि। तेहिं[8] नहिं सरि पूजै नागेसरि।
जहँ केसरि नहिं[9] उबरै पूँछी। बर पाकरि[10] का बोलहिं छूँछीं।
जो फर देखिअ सोइअ फीका। ताकर काह सराहिअ नीका[11]।

रहु अपनी तैं बारी मों सौं जूझु न बाँझ[12]।
मालति उपम कि पूजै[13] बन कर खूझा खाझ[12]॥

---

१४. प्र० १, २, द्वि० ४, ६, ७, तृ० २, ३ सरवर। १५. प्र० १ न। १६. प्र० १ तेहि। १७. द्वि० ४ नागेसरि। १८. प्र० १, २ कुंद दोउ, द्वि० २, तृ० १ कुंदर, द्वि० ७ कुजल, द्वि० ३ कंजबन। १९. प्र० १ जाहुँ सोपर, प्र० २ जाहि सोपर, द्वि० ४ जाउँ न तेहि। २०. तृ० २ लखराउँ।

[४३६] १. प्र० १ तेहि। २. तृ० २ लखराउँ। ३. द्वि० २ कीन्ह। ४. तृ० ३ पिआरि। ५. द्वि० १, २, ६, तृ० २, द्वि० ३ काँट। ६. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ मरहु का, द्वि० ४ मरहिं जो। ७. प्र० १, २ जँभीरी, लाउ न कटहर बढ़हर खीरी, द्वि० ७ जँभीरी, कटहर बड़हर कहाँ गंभीरी, पं० १ जँभीरा, लागी कटहर बडहर औ खीरा। ८. प्र० २ तबहुँ। ९. प्र० २, द्वि० ५ जहाँ केसरी, द्वि० ४ जहँ कटहर को। १०. द्वि० २, ४, ५ बर पीपर, तृ० ३ बर खाकर, द्वि० ७ बर जा करहिं। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ फीका, गरब जो करसि जानि का नींका, द्वि० ६ खीके, ताकर काह सराहि अनीके, पं० १ फीके, करहु जो ऐस जानि का नीके। १२. द्वि० १ न छाज, बन कर झाँखर खाजु, द्वि० २ न बाजु तेकर खरजा साजु, द्वि० ३ न लाव, बन कर खूझा खाझु। १३. प्र० १ ओपम किमि पावै, प्र० २, द्वि० ७ उपमा किमि पावै, द्वि० २ उपम कि दीजै, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २, पं० १ उपम न पूजै।

[४३७]

कँवल सो कवन सुपारी रोठा। जेहि के हिएँ सहस दुइ कोठा।
रहै न झाँपे आपन गटा। सकति उघेलि चाह परगटा।
कँवल[1] पत्र दारिवँ तोरि चोली। देखसि सूर देसि हँसि[2] खोली।
ऊपर राता भीतर पियरा। जारौं वहै[3] हरदि अस हियरा।
इहाँ भँवर मुख बातन्ह लावसि। उहाँ सुरुज हँसि हँसि तेहि रावसि[4]।
सब निसि तपि तपि मरसि पियासी। भोर भएं पावसि पिय बासी।
सेजवाँ रोइ रोइ जल निसि[5] भरसी। तूँ मोसौं का सरबरि करसी।

सुरुज किरिन तोहि रावै सरवर[6] लहरि न पूज[7]।
करम बिहून[8] ए दूनौ[9] कोउ रे धोबि कोउ भूँज[10]॥*

[४३८]

अनु हौं कँवल सुरुज कै जोरी। जौं पिय आपन तौ का चोरी।
हौं ओहि आपन दरपन[1] लेखौं। करौं सिंगार भोर उठि[2] देखौं।
मोर[3] बिगास ओहिक परगासू। तूँ जरि मरसि निहारि अकासू।

---

[४३७] प्र० १, २ बेल। २. प्र० १, द्वि० ४, ५, ७ हिय। ३. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ बिरहैं भएउ, द्वि० २ पारौं वट, तृ० २ जारौं तारे, पं० १ बारौं बहै। ४. तृ० ३ सुरुज किरिन हँसि हँसि तेहि रावसि, द्वि० ७ सरग सूर भुइँ हँसि हँसि रावसि, तृ० १ सरग सूर हँसि हँसि बहरावसि, तृ० २ उहाँ सुरुज कहँ हँसि हँसि रावसि, द्वि० ३ सुरुजि किरिन हँसि हँसि बहरावसि, पं० १ उहाँ सुरुज पहँ हँसि हँसि रावसि। ५. द्वि० ६, ७ तस। ६. पं० १ सरवन। ७. द्वि० ३ सरोज। ८. प्र० १, द्वि० ७ गुन, बिहून, द्वि० १,२, पं० १ कर बिहून, द्वि० ६, तृ० १,२ कर बिहीन, द्वि० ३ करहिं बहोर, द्वि० ४, ५ भँवर इहाँ। ९. द्वि० २ आछे एह, द्वि० १ दूनौ कौं, द्वि० ४, ५ तोहिं पावै। १०. द्वि० १ अवथी बेगिउ भूँज, द्वि० ४, ५ धूप देह तोरि भूँज, द्वि० ३ कोइ रे धूप कोइ भूँज, पं० १ कोइ सो धूप कोइ भूँज।

* प्र० १ में यह छंद नहीं है किंतु अगले छंद की पाँचवीं पंक्ति में "कँवल के हिरदै महँ जो गटा, हरिहर हार कीन्ह का बटा।" में जो प्रत्युत्तर है, वह इस छंद की पहिली दो पंक्तियों के अभाव में असंगत हो जाता है।

[४३८] १. प्र० १ दरसन। २. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ भोर मुख, द्वि० २ कँवल मुख, द्वि० ७ भँवर मुख। ३. प्र० १ सूर।

हौं ओहि सौं वह मो सौं राता। तिमिर बिलाइ[४] होत परभाता।
कँवल के हिरदै महँ जौं गटा[५]। हरिहर हार कीन्ह का घटा।
आकर देवस ताहि पै भावा। कारि रैनि कत देखै पावा।
तू उँबरी जेहिं भीतर माँखा[६]। चाँटिहि उठे मरन कै पाँखा[६]।
धोबिनि धोवै[७] बिख हरै[८] अंब्रित सौं सरि पाव[९]।
जेहि नागिनि डसु सो मरै लहरि सुरुज[१०] के आव॥

[४३९]

जौं कटहर बड़हर तौ बड़ेरी[१]। तोहि अस नाहिं जो कोका बेरी।
स्यामि जानु[२] मोर तुरुँज जँभीरा। करुई नींबि तौ छाँह गँभीरा।
नरियर[३] दाख ओहि कहँ राखौं। गलि गलि जाउँ[४] नसौंतहिं भाखौं।
तोरे कहें होइ मोर काहा। फर बिनु[५] बिरिख कोइ ढेल न बाहा।
नवै सदा फर सो नित फरई। दारिवँ देखि फाटि हिय मरई।
जैफर लौंग सुपारी हारा। मिरिचि[६] होइ जो सहै न पारा।
हौं सो पान रंग पूज न कोऊ। बिरह जो जरै चून जरि होऊ।
लाजन्ह बूड़ि मरसि नहिं ऊभि उठावसि माँथ।
हौं रानी पिउ राजा तो कह जोगी नाथ॥

[४४०]

हौं पदुमिनी[१] मानसर[२] केवा। भँवर मराल[३] करहिं निति सेवा।

---

४. तृ० ३ तिमिर बिनास, द्वि० ६ तूँ मरि बिलासि, द्वि० ३ तूँ जरि जासि। ५. प्र० १ रोम औ काँटा। ६. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ माँखी, पाँखी, द्वि० २, ७ पाँखा, पाँखा, द्वि० ३ राखा, पाँखा। ७. द्वि० २, पं० १ धूप न होती, द्वि० ५ धूप न देखी, तृ० १ देह न धोई, तृ० ३ धोबिनि धोइ। ८. तृ० २ के अतिरिक्त सभी में 'भरै'। ९. द्वि० ६ सिर सों पाँव, द्वि० ७ सों सदभाव। १०. प्र० १ सुरा कै, द्वि० ७ कूर कै।

[४३९] १. द्वि० २ द्वि० ३ न बड़ेरी, तृ० ३ तौ डेरी, द्वि० ४, ५ बड़ बैरी, द्वि० ७ तौ डेरी. तृ० १ तहि बड़ेरी। २. प्र० १, २, द्वि० ७ सामी जनु, द्वि० १ स्यामी मोर, तृ० ३ स्याम जाँवु, द्वि० २ स्यामि चाँप। ३. तृ० ३ नारँग। ४. प्र० १ काकलि जानि, प्र० २, द्वि० २, ३, ५, तृ० १ गलगल जानिउँ, द्वि० ४,७, पं० १ गलगल जानि। ५. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ७, तृ० १, २ फरे। ६. द्वि० २, तृ० ३ सुरुछि।

[४४०] १. तृ० १ तूँ। २. द्वि० २ आन सर। ३. प्र० १ गुंजार, प्र० २ मलार।

पुजा जोग दैय हौं गढ़ी। मुनि[४] महेस के माँथें चढ़ी।
जानै जगत कँवल कै करी। तोहि अस नाहिं नागिन बिखभरी।
तूँ सब लेसि जगत के नागा। कोइलि भइसि न छाँड़सि कागा[५]।
तूँ भुँजइलि[६] हौं हंसिनि गोरी[७]। मोहि तोहि मोंति[८] पोति कै जोरी[७]।
कंचन करी रतन नग बना[९]। जहाँ[१०] पदारथ[११] सोह[१२] न पना।
तूँ रे राहु हौं ससि उजियारी। दिनहि कि पूजै निसि अँधियारी।

ठाढ़ि होसि जेहि ठाईं[१३] मसि लागै तेहि ठाउँ।
तेहि डर राँध न बैठौं[१४] जनि[१५] साँवरि होइ जाउँ॥

[४४१]

फूलु न[१] कवल भान[२] के उएँ। मैल पानि होइहि जरि[३] छुएँ।
भँवर फिरहिं तोरे[४] नैनाहाँ। लुबुध[५] बिसाँइधि सब तोहि पाहाँ।
मंछ कच्छ दादुर तोहि पासा। बग पंखी निसि बासर बासा[६]।
जो जो पंखि पास तोहिं गए। पानी महँ सो[७] बिसाँइधि भए।
सहस बार जौं धोबै कोई। तबहुँ बिसाँइधि जाइ न धोई।
जौं उजियार चाँद होइ उई। बदन कलंक डोवँ कै छुई।
औ मोहि तोहि निसि दिन कर बीचू। राहु के हाथ चाँद कै मीचू।

---

४. प्र० १, २, द्वि० ४, ७ मनि। ५. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं हैं। ६. द्वि० १ जा जुग, द्वि० ७ भुजंग। ७. द्वि० १, २, ३, ४, ५, तृ० १, २, ३, पं० १ हंस की जोरी। ८. द्वि० ७ सौति। ९. प्र० १, द्वि० ७ बाना, पाना, द्वि० २ पना, पना, तृ० ३ बाना पना। १०. तृ० ३ जहाँ न। ११. द्वि० ७ दानरथ। १२. द्वि० ७ जो तुम्ह। १३. प्र० १, २ ठाहर। १४. द्वि० ७ बौठ काई। १५. प्र० १, द्वि० २, ३, तृ० २ मति, तृ० १ मकु।

[४४१] १. द्वि० ३ फूला, द्वि० ४, ५ फूलहिं, तृ० २, द्वि० ३ फूलइ। २. द्वि० ६ भाव। ३, द्वि० १ होई पै, द्वि० २ होइहि जेहिं, द्वि० ३ होइ जव तोहि। ४. प्र० १, २ भुलाहिं मोरे, पं० १ भिरहिं मोरे। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, तृ० ३, पं० १ लीन्ह, द्वि० ७ तेल, द्वि० ३ गंध। ६. प्र० १ बग कर पाँति रह तुव पासा, प्र० २, द्वि० ३, ४, तृ० १ बग औ पंखि रहहिं निसि बासा, द्वि० २, पं० १ बग औ पंखि रहहिं तुव पासा। ७. प्र० १, २ पनिहा सबै।

काह कहौं ओहि पिय कहँ मोहिं पर धरेसि[८] अँगार।
तेहि के खेल भरोसे[९] तुइँ जीता[१०] मोरि हार।

[४४२]

तोर अकेल[१] जीतेउँ का हारू। मैं जीता जग केर सिंगारू।
बदन जीतेउँ जो ससि[२] उजियारी। बेनी जीतेउँ भुअंगिनि कारी।
लोयन[३] जीतेउँ मिरिग के नैना। कंठ जीतेउँ कोकिल[४] के बैना।
भौंह जीतेउँ अर्जुन धनुधारी। गीवँ जीतेउँ तँवचूर पुछारी।
नासिक जीतेउँ पुहुप तिल सूवा। सूक[६] जीतेउँ बेसरि होइ उवा।[५]
दामिनि[७] जीतेउँ दसन चमकाहीं। अधर रंग रबि जीतेउँ सबाहीं[८]।[५]
केहरि जीति लंक मैं लीन्हा। जीति मराल चाल ओइ दीन्हा।[५]
पुहुप बास[९] मलयागिरि जीतेउँ[१०] परिमल[११] अंग बसाइ।[५]
तूँ नागिनि मोरि आसा[१२] लुबुधी मरसि[१३] कि हरकौं[१४] जाइ॥[५]

[४४३]

का तोहि गरब सिंगार पराएँ। अबहीं लेहिं लूसि[१] सब ठाएँ[२]।

---

८. प्र० १ सिर धरेसि, तृ० ३ पर दरेसि, द्वि० ४ धरसि। ९. तृ० ३ तरो से। १०. प्र० १ तोरि जीता।

[४४२] १. द्वि० २ का तोर केल, तृ० २ तोर खेल। २. प्र० १, २, द्वि० ७ चौदसि। ३. प्र० १, २ बनहि, द्वि० २, ३, ७, तृ० १, पं० १ नैनन्हि, तृ० ३ बदन, द्वि० ४, ५ औ मैं। ४. तृ० ३ सारँग। ५. तृ० ३ में इस छंद की अंतिम पाँच पंक्तियों के स्थान पर छंद ४४४ की अंतिम पांच पंक्तियाँ हैं। ६. पं० १ सुकत। ७. प्र० १, २ दाखि। ८. प्र० १ रबि जोति सबाहीं, द्वि० ७ जीतेउँ सब पाहीं, द्वि० ३ बिद्रुम छपि जाहीं। ९. पं० १ बास लिहा। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ३, पं० १ मलयागिरि। ११. प्र० १, २, द्वि० १, २, ३ तृ० १, २ चंदन, द्वि० ५ निरमल। १२. प्र० १ नागिनि अस, द्वि० १ नागिनि मोहि। १३. प्र० १ कहसि। १४. प्र० २ किहिर कै, द्वि० २ किधर कौं, द्वि० ७ कि हरकै।

[४४३] १. द्वि० १, तृ० ३, पं० १ नवसि, द्वि० ४, ५, लूटि। २. प्र० १, २, द्वि० ४ हौं तोहिं चाहि ऊँचि नागेसरि, निसि दिन हिएं चढ़ावौं केसरि।

हौं साँवरि सलोनि सुभ नैना। सेत चीर मुख चात्रिक[3] बैना[4]।
नासिक खरग फूल धुव तारा। भौहैं धनुक गँगन को पारा।
हीरा दसन सेत औ स्यामा। छपै बिज्जु जौं बिहँसै रामा।
बिद्रुम अधर रंग रस राते[5]। जूड़ अमीं अस रबि परभाते[6]।
चाल गयंद गरब अति भरी[7]। बिसा लंक नागेसरि करी[7]।
साँवरि जहाँ लोनि सुठि[8] नीकी। का गोरी सरबरि कर[9] फीकी।[10]

पुहुप बास हौं पवन अधारी कँवल मोर तरहेल।
जब चाहौं धरि[11]केस ओनावौं[12] तोर मरन मोर खेल॥

[४४४]

पदुमावति सुनि उतर न सही[1]। नागमती नागिनि जिमि[2] गही।
ओइँ ओहि कहँ ओइँ ओहि कहँ गहा। गहा गहनि तस जाइ न कहा।
दुऔ नवल[3] भर जोबन गाजीं। अछरीं जानु अखारें बाजीं।
भा बाँहनि बाँहनि सौं जोरा। हिया हिया सौं बाग न मोरा।
कुच सौं कुच जौं[4] सौंहें आने। नवहिं न नाए टूटहिं ताने।
कुंभ स्थल जेउँ गज[5] मैमंता। दूनौ अल्हर भिरे[6] चौदंता।

---

३. तृ० ३ सारँग। ४. प्र० २ सुठि लोनी, सेत चीर मुख चात्रिक बैनी। द्वि० २ सुठि लोनी, सेत चीर हर रस गज गौनी। तृ० २ मृग नैनी, सेत चीर मुख चात्रिक बैनी। ५. द्वि० २, पं० १ रस पाके। ६. प्र० १, २ जो दामिनि अस रबि नहिं ताते, द्वि० १ चूव अमीं रस और हो ताते, द्वि० २ जो दामिनि अस दिप दिप नहिं ताते, द्वि० ७, पं० १ जो दामिनी अमर बिनु ताके, तृ० १ जूड अमी रबि ऐस न ताते, द्वि० ६ अंम्रित जोर रबि रस थिर ताते, द्वि० ४, ५ जो दामिनि अस रबि महँ ताते, द्वि० ३ जो दामिनि रस रबि नहिं ताते, तृ० २ जूड़ अमी रस रबि परभाते। ७. तृ० ३ भारी, कारी। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ सो। ९. प्र० १, २ कहाँ सो गोरि करै सरि, द्वि० ६ काह सो गोरि लोनि पुनि, द्वि० ७ कहाँ सो गोरि अलोनी। १०. द्वि० २, पं० १ में इस पंक्ति के स्थान पर पादटिप्पणी २ की पंक्ति है। ११. तृ० १ गहि। १२. द्वि० ४ का सरबरि तू करसि जो।

[४४४] १. द्वि० २ कही। २. प्र० २ सिर। ३. प्र० २, तृ० ३ तूल। ४. तृ० १, ३ कुचन्हि सों, तृ० २ कुच भै। ५. तृ० १, २ दुइ। ६. प्र० १, द्वि० १, २, ३, ४, तृ० १, पं० १ अभर भिरे, प्र० २ भरे, भिरे द्वि० ५ अभर पड़े।

देव लोक देखत मुए[7] ठाढ़े। लागे बान हियँ[8] जाहिं न काढ़े।
जानहुँ दीन्ह ठग लाड़ देखि आइ तस मींचु।
रहा न कोइ धरहरिया[9] करै जो दुहुँ महँ बीचु॥

[४४५]

पवन स्रवन[1] राजा के लागा। लरहिं दुऔ[2] पदुमावति नागा[3]।
दूऔ सम[4] साँवरि औ गोरी। मरहिं तो कहँ पावसि[5] असि जोरी।
चलि राजा आवा तेहि बारीं। जरत बुझाईं दूनौ नारीं[6]।
एक बार जिन्ह पिउ मन[7] बूझा। काहे कौं दोसरे सौं जूझा।
असे ग्यान मन जान न कोई[8]। कबहूँ राति कबहुँ दिन होई।
धूप छाँह दुइ पिय[9] के रंगा[10]। दूनौं मिली रहहु एक संगा।
जूझब छाँड़हु बूझहु दोऊ। सेव करहु सेवाँ कछु[11] होऊ।
तुम्ह गंगा जमुना दुइ नारी[12] लिखा मुहम्मद जोग।
सेव करहु मिलि दूनहुँ[13] औ मानहु सुख भोग॥

---

७. प्र० २ सुनहिं सब, द्वि० १ सब देखहिं, द्वि० २ देखत सब, द्वि० ४, तृ० २ देखत हुते, द्वि० ३ देखत जो। ८. प्र० १ बोल बान बिख, प्र० २ बोल बान हिय, तृ० ३ लागे बान तेत। ९. प्र० २ धरहरिआ नहिं कोई।

[४४५] १. प्र० १, २ हीरामनि, द्वि० ५, ७ हीरामनि स्रवन, द्वि० ३ हीरामनि चरन, द्वि० ६, तृ० १, पं० १ पवन सवन। २. द्वि० ५ कहेसि लरहिं। ३. द्वि० ५, ६ पदुमिनि औ नागा। ४. प्र० १, २ दुऔ चतुरि, द्वि० ५ दूनौ सौति। ५. प्र० १, २, द्वि० ७ नहिं पावै, द्वि० २ कहाँ पावसि, तृ० ३ कत पावसि, द्वि० ३, पं० १ कहँ पावहु। ६. प्र० १, २ लरत मरत बरजी दोउ नारी, द्वि० ७ जरी न बुझाइ दीन्ह दौ बारी। ७. तृ० २ सन। ८. प्र० १ मन जाकर होई। ९. द्वि० ५ रंगी। १०. तृ० २ अंगा। ११. तृ० ३ मोख कछु, द्वि० ४, ५ सेवा भल। १२. प्र० १, २, द्वि० ३, तृ० २, पं० १ तुम्ह गंगा वह जमुना, द्वि० १ गंग जमुन तुम्ह दोऊ। १३. द्वि० ७ सेवा करहु रहसि मिलि। १४. प्र० २, द्वि० १, २, पं० १ रस।

* इसके अनंतर प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, तृ० ३ में दो छंद तथा द्वि० ३ में तीन छंद अतिरिक्त हैं।

[४४६]

राघौ चेतनि चेतनि[१] महा[२]। आइ ओरँगि राजा के[३] रहा।
चित चिंता जानै बहु भेऊ। कबि बियास पंडित सहदेऊ।
बरनी आइ राज कै[४] कथा। सिंघल कबि[५] पिंगल सब मथा[६]।
कबि ओहि सुनत सीस पै धुना। स्रवन सों नाद बेद कबि सुना[७]।
दिस्टि सो धर्म पंथ जेहि सूझा। ग्यान सो परमारथ मन[८] बूझा।
जोग सो[९] रहै[१०] समाधि समाना। भोग सो गुनी केर गुन[११] जाना।
बीर सो रिस मारै मन गहा[१२]। सोइ सिंगार पाँच भल कहा[१३]।
बेद भेद जस बररुचि[१४] चित चिंता तस[१५] चेत।
राजा भोज चतुर्दस बिद्या[१६] भा चेतन[१७] सौं हेत[१८] ॥*

[४४७]

घरी अचेत होइ जौ[१] आई। चेतन कर पुनि[२] चेत भुलाई।
भा दिन एक अमावस सोई। राजै कहा दुइज कब होई।
राघौ के मुख निकसा आजू। पँडितन्ह कहा काल्हि बड़ राजू[३]।

---

[४४६] १. प्र० १, २ पंडित। २. द्वि० २ कहा, द्वि० ७ सहा। ३. प्र० १, २ पहँ, द्वि० ६ सों। ४. प्र० १, २ बरनि न जाइ राज। ५. द्वि० ६ महँ। ६. तृ० ३ माया। ७. प्र० १ सुर बना, प्र० २ कबि सुना, द्वि० १ सो गुना, द्वि० २, तृ० १, २, पं० १ कबि गुना। ८. तृ० ३ पीरम अर्थ सो, तृ० १ परिमल अर्थ महँ। ९. प्र० २, द्वि० ४ जो। १०. प्र० १ जुगति, प्र० २ गवहि। ११. प्र० १ भोगी सोइ जो गुनी गुन, प्र० २, द्वि० २, ३, ५ तृ० १ भोगी सुगुनी केर गुन, तृ० २ भोगी सो गहि केर गुन, द्वि० ४ भोगि जो गुनी केर गुन, तृ० ३ भोग जोग नीकें रँग। १२. प्र० १, २ बैरी सारि मारि मन रहा। १३. द्वि० ४, ५, तृ० २ कंत जो चहा, पं० १ जेहि सब भल कहा। १४. प्र० १ बरुचि, तृ० ३ रुचि, तृ० १ बरजहि। १५. प्र० १, २, द्वि० ७ चितहि चेतावै, द्वि० ६, पं० १ तस चेतन तहँ। १६. प्र० १, द्वि० ४,६, पं० १ चतुर्दस। १७. द्वि० १ राजा, द्वि० ३, तृ० ३ राघौ। १८. प्र० १ भेंट।

*प्र० १, २ में इसके अनंतर चार अतिरिक्त छंद हैं।

[४४७] १. तृ० ३ अचेत चेत जौ, तृ० २ एक अचेत चित। २. प्र० १, तृ० १ केरें, द्वि० ३, ४, ६ कर सब, तृ० २ कर गा। ३. प्र० १, २ महराजू, द्वि० २, ३, तृ० २ बड साजू। ४. प्र० १, द्वि० २, पं० १ इन्ह महँ।

राजैं दुहूँ दिसा फिरि देखा। को पंडित बाउर[४] को सरेखा[५]।
पैज टेकि तब पँडितन्ह[६] बोला। झूठा बेद[७] बचन जौं डोला।[८]
राघौं करत जाखिनी पूजा। चहत सो रूप देखावत दूजा।[९]
तेहि बर भए पैज कै कहा। झूठ होइ सो देस न रहा।

राघौ[१०] पूजा जाखिनी[११] दुइज देखावा साँझ[१२]।
पंथ गरंथ न जे चलहिं ते भूलहिं बन माँझ[१२]॥

[४४८]

पंडित कहहिं हम परा न धोखा। यह सो[१]अगस्ति समुँद जेइँ सोखा।
सो दिन गएउ साँझ भौ दूजी। देखिअ दूजि[२] घरी वह[३] पूजी।
पंडितन्ह राजहिं दीन्ह असीसा। अब कसिअइ कंचन औ सीसा।[४]
जौं वह दूजि कालिन्ह कै होती। आजु तीजि देखिअति तसि[५]जोती।
राघौ कान्हि दिस्टि बँध खेला। सभा मोहिं[६] चेटक सिर[७] मेला[८]।
एहि कर गुरू चमारिनि लोना[९]। सिखा काँवरू[१०] पाढ़ित[११] टोना[१२]।
दूजि अमावस महँ जो देखावै। एक दिन राहु चाँद कहँ लावै।

---

५. द्वि० ७ लेखा। ६. प्र० १, २, द्वि २, पं० १ पंडित दीन्ह आसिखा। ७. प्र० १, २ द्वि० २, ४, ५, पं० १ छाडहिं देस, तृ० ३ झूठा सोइ। ८. द्वि० ७ राघौ सो पंड़ित गुन साजा, दिग्रा बाद बोलकर बाजा। द्वि० ६ में यह पंक्ति नहीं है। ९. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, पं० १ तेहि ऊपर राघौ बर खाचा, दुइज आजु तौ पंडित साँचा। १०. द्वि० १ चेतन। ११. द्वि० ६ करत जाखिनी पूजा, द्वि० ७ तइ जर बोलै राघौ। १२. प्र० १, २, पं० १ साँझ, पंडित पंडित न देखइ भएउ बैंर दुहु माँझ। द्वि० ६ साँच, सेहि कहा पंडित सब भूले केत सास्तर बाँच। द्वि० ७ साँझ, सबहु कहा पंडित भूले गनती सास्तर माँझ।

[४४८] १. प्र० १, २, द्वि० २ यह को, द्वि० ५, ७, कौन। २. द्वि० १ आइ। ३. प्र० १, २ जब, द्वि० १ सो। ४. द्वि० ६ में यह पंक्ति नहीं है। ५. प्र० १ देखिअ अति, द्वि० २, ४, ५, पं० १ देखियत ससि। ६. द्वि० ३, ४, ५, तृ० ३ माहँ। ७. द्वि० ४, ५ अस। ८. द्वि० २, पं० १ पँडित न होइ काँवरू चेला। ९. तृ० ३ नोना। १०. द्वि० २, पं० १ सोइ देखावै। ११. प्र० १, २ सो असि पढ़ि देखरावै, द्वि० १ तेहि तें सिखे जाइ यह। १२. पं० १ सोइ दिखावै पाढ़ित टोना।

राज बार अस[13] गुनी न चाहिअ[14] जेहि टोना कर खोज।
एहि छंद[15] ठगबिद्या[16] डहँका राजा[17] भोज ॥*

[४४९]

राघौ बैन जो कंचन रेखा। कसें बान पीतर अस देखा[1]।
अग्याँ भई रिसान नरेसू। मारौं काह निसारौं देसू[2]।
तब चेतन चित चिंता गाजा[3]। पंडित सो जो बेद मति साजा[4]।[5]
कबि सो पेम तंत कबिराजा। झूँठ साच जेहि कहत न साजा।[7]
खोट रतन सेवा[8] फटिकरा। कहँ खर रतन जो दारिद हरा[9]।
चहै लच्छि बाउर कबि सोइ। जेहि सुरसती लच्छि कित[10] होई।
कबिता सँग दारिद मति[11] भंगी। काँटइ कुटिल पुहुप के संगी।

---

[13]. पं० १ राजा। [14]. द्वि० १ जाचक, पं० १ न राखिअ। [15]. प्र० १, २ चेटक, द्वि० ७ भेष, तृ० १ भेद। [16]. पं० १ औ। [17]. द्वि० ७ डँड़का बररुचि, द्वि० ४, ५ छरा हो।

* प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७ में इस छंद की प्रथम पंक्ति के अनंतर आठ तथा, द्वितीय के अनंतर एक, कुल मिलाकर नौ पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं। और इस छंद के अनंतर प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७ में दो छंद अतिरिक्त हैं।

[४४९] [1]. पं० १ राजैं सुना सुनत मन भेखा। दिस्टिबंद तस देखि सुपेखा। [2]. पं० १ राघौ पर काया परबेसू । अग्या भई निकारहु देसू। [3]. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ तब चेतन चेता होइ जागा। (द्वि० ६—गाजा), द्वि० १, ४, ५, तृ० १, २ झूठ बोल थिर रहै न राँचा। [4]. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ लागा, द्वि० १, ४, ५, तृ० १, २ साँचा। [5]. पं० १ पंडित सो जो बेद मत सिखा, कविता सो जो परम पद लिखा। [7]. प्र० १, २, द्वि० ७ कबि वोह परम तंत कबि करना, जेत बरनै छाजै सब बरना। तृ० ३ टेढौ होइ सो मारग साँचा। झूठ बोल थिर रहै न बाचा। द्वि० ३, ६ पंथ जो चलै (सिध होइ चलै —द्वि० ३) सो मारग साँचा, झूठ बोल थिर रहैं न बाचा। द्वि० ४, ५, तृ० २ बेद बचन मुख साँच जो कहा, सो जुग जुग अस्थिर थिर रहा। पं० १ तब हो बोल दुहूं कर साँचा, कुसुम रंग थिर रहै न राँचा। [8]. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ बरना, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १ सोई। [9]. तृ० ३ सो झारिद हरा। [10]. तृ० ३ तेहि। [11]. प्र० २ गति।

कबिता चेला बिधि गुरू[१२] सीप सेवाती बुंद।
तेहि मानुस कै आस का जो मरजिआ समुंद ॥*

[४५०]

यह रे बात पदुमावति सुनी। चला निसरि कै[१] राघौ गुनी।
कै गियान धनि अगम बिचारा। भल न कीन्ह अस गुनी निसारा।
जेइँ जाखिनी पूजि ससि काढ़ी। सुरुज के ठाउँ करै पुनि ठाढ़ी।
कबि कै जीभ खरग हिरवानी। एक दिसि आग दोसर दिसि पानी।
जनि[२] अजगुत काढ़ै मुख भोरें। जस बहुतें अपजस होइ थोरें।
राघौ चेतनि बेगि हँकारा। सुरुज गरह[३] भा लेहु[४] उतारा।
बाँभन जहाँ दक्खिना पावा। सरग जाइ जौं होइ[५] बोलावा।

आवा राघौ चेतनि[६] धौराहर के पास।
अैस न जानै हिरदै[७] बिजुरी बसै अकास ॥

[४५१]

पदुमावति सो झरोखें आई। निहकलंक जसि[१] ससि देखराई।
तेतखन राघौ दीन्ह असीसा। जनहुँ चकोर चंद मुख दीसा।
पहिरें ससि नखतन्ह कै मारा। धरती सरग भएउ उजियारा।
औ पहिरें कर कंगन जोरी। लहै सो एक एक नग नव कोरी।
कंगन काढ़ि सो एक अडारा[३]। काढ़त हार[२] टूटि गौ मारा[३]।

---

१२. तृ० ३ बिच गुरू, द्वि० ६ बिरोध कै, तृ० १, २ बुधि गुरू।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर पाँच तथा द्वि० ३ में एक अतिरिक्त छंद है।

[४५०] १. प्र० २, तृ० १ चला बिछुरि कै, द्वि० २, ४, ५, पं० १ देस निमारा, द्वि० ७ चला बिरस कै, तृ० १ चला बिसुरि कै। २. प्र० २ जेहिं। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ तृ० ३ सुरुज गहन भा, द्वि० ४, ५ सूरज गढ़ तर, तृ० १ सुरज गरह भइ। ४. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ देउँ। ५. तृ० ३ कोइ, तृ० २ जाइ। ६. द्वि० ७ बेगि तहँ। ७. प्र० १, २ जिय महँ।

[४५१] १. द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ जनु, पं० १ होइ। २. द्वि० २ हाथ, द्वि० ३ नारि। ३. प्र० २, द्वि० ६ अडारा, गै मारा, द्वि० १ अडारा, सँग मारा, द्वि० २, पं० १ अडारी, गिय मारी; तृ० ३, अडारी औमारी, द्वि० ४ अडारी, गियँ हारी, द्वि० ५ अडारी, गियँ नारी, द्वि० ७ अडारा, गा मारा, तृ० २ अडारा, गियँ मारा, तृ० ३ अडारा, औवारा।

जानहुँ चाँद टूट लै[४] तारा। छूटेउ सरग[५] काल कर धारा।
जानहुँ सुरुज[६] टूट लै[७] करा[८]। परा चौंधि[९] चित चेतनि हरा।

परा आइ भुइँ कंगन जगत भएउ उजियार।
राघौ मारा बीजुरी बिसँभर कछु न सँभार॥

[४५२]

पदुमावति हँसि दीन्ह झरोखा। अब जो गुनी मरइ मोहिं दोखा।
सखीं सरेखीं[१] देखहिं[२] धाई। चेतन अचेत परा केहि घाई[३]।
चेतन परा न एकौ चेतू। सबन्हि कहा एहि लाग परेतू।
कोइ कह काँप आहि सनिपातू। कोइ कह आहि मिरिगिया बातू।
कोइ कह लाग[४] पवन कर झोला। कैसेहुँ समुझि न राघौ[५] बोला।
पुनि उठारि बैसारिन्हि छाहाँ। पूँछहि कौनि पीर जिय[६] माहाँ।
दहुँ काहू के दरसन हरा। कै एहि धूत भूत छँद छरा।

कै तोहि दीन्ह काहु किछु के रे डसा तूँ साँप।
कहु सचेत होइ चेतन देह तोरि कस काँप॥

[४५३]

भएउ चेत चेतन तब जागा। बकत न आव टकटका लागा[१]।

---

४. द्वि० ५ टूटतै। ५. १ छूट अगस्ति, प्र० २ टूट अँगार, द्वि० ६, पं० १ छूट अकास, द्वि० १ टूटेउ सरग। ६. तृ० २ सरग। ७. द्वि० २ गै। ८. प्र० १, २ द्वि० ४,५,६, पं० १ जानहुँ बीजु टूटि भुइँ परा, द्वि० १ औ जस बीजु टूटि भुइँ परा; तृ० १ जानहु चाँद बीज भुइँ परा। ९. द्वि० १ चौंकि।

[४५२] १. द्वि० ३,४, ५, ७, तृ० १, पं० १ सहेली। २. द्वि० ३, तृ० ३ पूँछैं। ३. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७, द्वि० ३, पं० १ जगावहिं आई, तृ० ३ परा तेहि ठाईं। ४. द्वि० ६, तृ० १ मार। ५. द्वि० १, तृ० २ चेतन। ६. प्र० १, द्वि० १ तोहिं, पं० १ हिय।

[४५३] १. द्वि० १, २, ३, ४, ५, तृ० १, २, ३, पं० १ भएउ चेत चेतन चित चेता, नैन झरोखें जीव सँकेता। यह पाठ इसलिए अप्रामाणिक लगता है, कि प्रथम चरण पुनः ४५६ के प्रथम चरण के रूप में आता है, और दूसरे चरण का 'नैन झरोखे' इस छंद की दूसरी अर्द्धाली के दूसरे चरण में आता है]

पुनि जौं बोला बुधि मति खोवा। नैन झरोखा लाएँ रोवा[२]।
बाउर बहिर सीस पै धुना। आप न कहै पराए न सुना।
जानहुँ लाई काहुँ ठगौरी[३]। खिन पुकार खिन बाँधै पौरी[३]।
हौं रे ठगा एहि चितउर माहाँ। कासौं कहौं जाउँ केहि पाँहा।
यह राजा सुठि बड़ हत्यारा। जेइँ अस ठग राखा उजियारा[४]।
ना कोइ बरज न लाग गोहारी। अस एहि नगर होइ बटवारी।

दिस्टि दिए ठगलाडू[५] अलक[६] फाँस परि गींव।
जहाँ भिखारि न बाँचहि तहाँ बाँच को जीव॥

[४५४]

कत धौराहर आइ झरोखें। लै गै[१] जीव दक्खिना धोखें।
सरग सूर ससि करै अँजोरी[२]। तेहि तें अधिक देउँ केहि जोरी[२]।
ससि सूरहि जौं[३] होति यह जोती। दिन भा रहत रैनि नहिं होती।
सो हँकारि मोहि कंगन[४] दीन्हा। दिस्टि न परै जीव हरि लीन्हा।
नैन भिखारि ढीठ सत[५] छाँड़े। लागे तहाँ बान बिखु[६] गाड़े[७]।
नैनहिं नैन जो बेधि समाने। सीस धुनहिं नहिं निसरहिं[८] ताने।
नवहिं न नाएँ निलज भिखारी। तबहुँ न रहहिं[९] लागि मुख कारी[१०]।

कत करमुखे नैन भए[११] जीव हरा जेहि बाट।
सरवर नीर बिछोह जेउँ तरकि तरकि हिय फाट॥

---

२. पं० १ जनु सो मुवा निसाँसी जागा, धुनि धुनि माथ मलै कर लागा। ३. तृ० ३ बौरी, पं० १ का.ी। ४. पं० १ बटपारा। ५. तृ० ३ दिखाइ ठकलाडू (उर्दू मूल)। ६. द्वि० २ लाग।

[४५४] प्र० १, २, द्वि० ३ पं० १ लौं गै, द्वि० १ लीन्ह, द्वि० ४ लै गएउ। २. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, पं० १ अँजोरा, जोरा। ३. प्र० १ सूरहिं सौं, प्र० २, सोरह जो (उर्दू मूल), द्वि० १ सूरहि जस। ४. द्वि० ३, तृ० २, ३, च० १ दखिना। ५. प्र० १ तस। ६. प्र० १ लागे अैस बानवे, प्र० २, पं० १ लागै तहाँ बान होइ, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २ लागे तहाँ बान हिय, द्वि० ७ लागत बान हिए ते, तृ० १ लागे तहाँ बान जहँ। ७. द्वि० २ नवहिं न नाए नैन भिखारी, तीर न रहहिं लाग बिख भारी। (तुलना० ४५४·७)। ८. तृ० ३ सारहिं। ९. द्वि० ४, ५ तबहूँ बड़े। १०. द्वि० २ थिर न रहहिं ये नैन भिखारी, अगुमन होइ बिख लेहि अहारी। ११. प्र० १, द्वि० ७ नैन तुम्ह, प्र० २ नैन तुम्ह हेरहु, द्वि० १ आए।

[४५५]

सखिन्ह कहा चेतनि बिसँभरा[1]। हिएँ चेतु जिय जासि न मरा[1]।
जौं कोइ पावै आपन माँगा। ना कोइ मरै[2] न काहू[3] खाँगा[4]।
वह पदुमावति आहि अनूपा[5]। बरनि न जाइ काहु के रूपा।
जेइँ चीन्हा[6] सो गुपुत[7] चलि गएऊ। परगट काह[8] जीव बिनु भएऊ।
तुम्ह अस बहुत बिमोहित भए। धुनि धुनि सीस[9] जीव दै गए।
बहुतन्ह दीन्ह नाइ कै गींवा। उतरु न देइ मार पै[10] जीवाँ।
तूँ पुनि मरब होब जरि भुई। अबहुँ उघेलु कान कै रूई।

कोई माँगि मरै नहिं पावै[11] कोइ बिनु माँगा पाउ।
तूँ चेतनि औरहि समुझावहि दहुँ तोहि को[12] समुझाउ॥

[४५६]

भएउ चेत चित[1] चेतनि चेता। बहुरि न आइ सहौं दुख एता।
रोवत आइ परे हम जहाँ। रोवत चले कवन सुख तहाँ।
जहँवाँ रहें साँसौ[2] जिय केरा। कौनु रहनि मकु[3] चलौं सबेरा[4]।
अब यह भीख तहाँ होइ[5] माँगौं। तेत देइ जग[6] जरमि न खाँगौं।
औ अस कंगनु पावौं दूजी। दारिद हरै इंछ मन पूजी।[7]
ढीली नगर आदि तुरुकानू। साहि[8] अलाउद्दीन सुलतानू।
सोन जरै[9] जेहि की[10] टकसारा। बारह बानी परहिं[11] दिनारा।

---

[४५५] १. द्रि० २, ३, ६, तृ० २, बिसँभारा, मारा। २. पं० १ पावै। ३. तृ० २, पं० १ कबहूँ। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ में यह पंक्ति ६ है। ५. तृ० ३ सरूपा। ६. प्र० १, २, देखा। ७. द्वि० ६ गुनत। ८. द्वि० ३ कया, तृ० १ कपट। ९. तृ० ३ माँथ। १० प्र० १ बरु, द्वि० २, ३ कै। ११. प्र० १, २, द्वि० २, पं० १ कोई माँगि न पावै। १२. प्र० १, द्वि० २, ७ तो कहँ को, तृ० ३ तोहिं अब को।

[४५६] प्र० २, द्वि० ३, ७, मन। २. प्र० १, २, द्वि० ७ संसै, द्वि० १, २, ३, तृ० १, ३ साँखौ। ३. प्र० २ बरु, द्वि० ६, तृ० २ बस। ४. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं है। ५. प्र० १ कै, द्वि० २ हौं। ६. प्र० १, २ लेत देइ बरु, द्वि० २ तुरत देइ जग, द्वि० ६ तैस देइ जग, द्वि० ७ तेतौ देइ। ७. च० १ छंद ४२८. १ से यहाँ तक खंडित है। ८. प्र० १ आहि आहि, तृ० २ नगर उबै। ९. प्र० २ जरद। १०. प्र० १ ताकी, प्र० २ ताकरि। ११. प्र० १, २ चलै।

तहाँ जाइ यह कँवल अभासौं[१२] जहाँ अलाउद्दीन।
सुनि के चढ़ै भानु होइ[१३] रतन होइ जल मीन[१४]॥

[४५७]

राघौ चेतन कीन्ह पयाना। ढीली नगर जाइ नियराना।
जाइ साहि के बार[१] पहूँचा। देखा राज जगत पर ऊँचा।
छतिस लाख ओरगन्ह[२]असवारा। बीस[३] सहस हस्ती दरबारा।
जाँवत तपै जगत मह[४] भानू। ताँवत[५] राज करै सुलतानू।
चहूँ खंड के राजा आवहिं। होइ अस मर्द[६]जोहारि न पावहिं।
मन तिवानि कै राघौ झूरा। नहिं उबारु जिय कादर[७] पूरा।
जहाँ झुराहिं दिहैं[८] सिर छाता। तहाँ हमार को चालै बाता।

अरध उरध नहि[९] सूझै लाखन्ह उमरा मीर।
अब खुर खेह जाब मिलि आइ परे तेहि भीर॥

[४५८]

पातसाहि सब जाना[१] बूझा। सरग पतार रैनि दिन सूझा।
जौं राजा अस सजग न होई। काकर राज कहाँ कर कोई।
जगत भार वहि[२] एक सँभारा। तौ थिर रहै सकल संसारा।

---

१२. प्र० १,२, द्वि० २,४, ५, तृ० १, च० १ बखानौं, पं० १ खोलौं', द्वि० १ कँवल उघारौं', द्वि० ३,६ कँवल बिगासौं', तृ० ३ कँवल उभासौं',। १३. द्वि० ६, ७, भानु होइ ताकहँ, पं० १ भानु कौ। १४. प्र० १, २, रतन जो होइ मलीन।

[४५७] १. तृ० ३ दर बार। २. प्र० २, तृ० ३ दरिगह, द्वि० ४, ५ तुरक (या तुरग)। ३. तृ० ३ तीस। ४. प्र० २, द्वि० २ दिन, द्वि० ५, ६, तृ० १, २ पर। ५. द्वि० ५ बहँलगि। ६. प्र० १, २, द्वि० २, ३,४, ५, ६, ७, च० १ ठाढ़ झुराहिं, द्वि० १ होइ अस पुरुख, तृ० १ होइ अस मरो, तृ० २ ठाढ़ जुहार, पं० १ हो अस मौ। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ नहिं पैसार जिउ का डर, द्वि० २ नाहिं अपार जगर डर, तृ० १ नाहिं और बाजीकि डर, च० १ नहिं उबार जिय का डर। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ जहँ झूरहिं दीन्हे। ९. द्वि० ७ तोहिं, तृ० ३ नहिं

[४५८] १. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० १ जानै। २. तृ० ३ जौं, तृ० १ ये।

औ अस ओहिक सिंघासन ऊँचा। सब काहू पर दिस्टि पहूँचा।
सब दिन राज काज सुख भोगी। रैनि फिरै घर घर होइ जोगी।
राँव राँक सब जावँत जाती। सब की चाह लेइ दिन राती।
पंथी परदेसी जेत आवहिं। सब की[3] बात दूत पहुँचावहिं।

यहु रे बात तहँ[4] पहुँची[5] सदा[6] छत्र सुख छाँह।
बाँभन एक बार है[7] कँगन[8] जराऊ बाँह॥

[४५९]

मया[1] साहि मन[2] सुनत भिखारी। परदेसी कहँ पूँछु[3] हकारी।
हम पुनि है जाना परदेसा। कौनु पंथ गवनब केहि भेसा।
ढीली राज चिंत मन गाढ़ी। यह जग जैस दूध महँ साढ़ी।
सैंति बिरोरि[4] छाछि कै[5] फेरा। मथि घिउ लीन्ह महिउ[6] केहि केरा।
एहि ढीली कत होइ होइ गए। कै कै गरब छार सब भए।
तेहि ढीली का रही ढिलाई। साढी गाढि ढीलि जब ताईं[7]।
रावन लंक जारि सब तापा। रहा न जोबन औ तरुनापा।

भीखि भिखारिहि दीजिऔ का बाँभनु का भाँट।
अग्याँ भई हँकारहु[8] धरती धरै लिलाट॥

[४६०]

राघौ चेतनि हुत जो[1] निरासा। तेतखन बेगि बोलावा[2] पासा।

---

3. प्र० १, २, पं० १ खन खन बात, द्वि० ३, ४, तृ० २, च० १ सब की चाह। 4. द्वि० ७ जौं। 5. द्वि० ७, तृ० ३ पहुँचै (उर्दू मूल)। 6. प्र०१ जहाँ। 7. च० १ बार है ठाढा। 8. द्वि०३, तृ० ३ कनक, द्वि० ७ कसन।

[४५९] 1. प्र० १ भएउ, प्र० २ मआ, द्वि० १ किरपा, द्वि० ७ मैआ। 2. द्वि० २ मयावंत भा। 3. द्वि० १, तृ० ३ बेगि। 4. द्वि० १ मरोरि, द्वि० ४, ५ मिलोइ। 5. प्र० १ लीन्ह चहुँ, प्र० २, पं० १ कीन्ह चहुँ, द्वि० ७ आछि जग। 6. द्वि० १, तृ० ३ दही। 7. प्र० १, २ साढी काढि लीन्ह जहँ ताईं, तृ० १ साढी गाढि दूध जब ताईं, तृ० २ सा-ी काढ़ि मनहु जहँ ताईं, द्वि० ३ सारी छाज ढील जब ताईं। 8. द्वि० १ साहकै, द्वि० ४, ५, तृ० ३, च० १ बोलहु।

[४६०] 1. प्र० १ तहाँ, द्वि० १ रहा, द्वि० ७ होत। 2. तृ० १ हँकारा।

सीस नाइ कै दीन्ह[3] असीसा। चमकत[4] नगु कंगनु कर दीसा।
अग्याँ भई सो[5] राघौ[6] पाहाँ। तूँ मंगन कंगन का[7] बाहाँ।
राघौ बहुरि[8] सीस भुइँ धरा। जुग जुग राज भान कै करा।
पदुमिनि सिंघल दीप की रानी। रतनसेनि चितउर गढ़ आनी।
कँवल न सरि पूजै तेहि[9] बासाँ। रूप न पूजै चंद अकासाँ।
जहाँ कँवल ससि सूर न पूजा। केहि सरि देउँ औरु को पूजा।

सो रानी संसार मनि[10] दखिना कंगन दीन्ह।
आछरि रूप देखाइ कै धरि गहनें जिउ[11] लीन्ह॥

[४६१]

सुनि कै उतर साह मन हँसा। जानहुँ बीज चमकि परगसा।
काँच जोग जहँ कंचन पावा। मंगन तेहि सुमेरु चढावा।
नाउँ भिखारि जीभ मुख बाँची। अबहुँ सँभारु[1] बात कहु साँची।
कहँ असि नारि जगत उपराहीं। जेहि की सरिस सूर ससि[2] नाहीं।
जौं पदुमिनि तौ मंदिर मोरें। सातौ दीप जहाँ[3] कर जोरें।
सप्त दीप महँ चुनि चुनि आनी। सो[4] मोरें सोरह सौ रानी।
जौं उन्ह महँ देखसि एक दासी। देखि लोन होइ लोन बेरासी।

चहूँ खंड हौं चक्कवै जस रबि तवै अकास।
जौं पदुमिनि तौ मंदिल मोरें[5] आछरि तौ कबिलास॥

---

3. पं० १ औ देत। 4. तृ० १, ३ चमके, तृ० २ चमका। 5. प्र० १, २, पं० १ पुनि। 6. द्वि० ७ राजा। 7. प्र० १ कस। 8. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ सुना, द्वि० १ पलटि। 9. च० १ सरवरि पूजै। 10. च० १ महँ। 11. प्र० २, तृ० २, ३ हरि गहने जिउ, तृ० १ हरि कें जिउ हरि।

[४६१] प्र० १, २ बहुरि सँभारु, द्वि० ६ अति संभारि, द्वि० ७ भूठ न बोलु, तृ० २ आपु सँभारु। 2. प्र० १, २, द्वि० ४, च० १ सरि ससि सुरुज, द्वि० १ सरिस सूर सो, द्वि० ६ सरि पूजै ससि। 3. प्र० १, २ आहिं द्वि० १ रहहिं। 4. प्र० १, २ तें। 5. प्र० १, २ जौ पदुमिनि तौं मोरें, द्वि० १ पदुमिनि मंदिल मोरें।

* इसके अनंतर प्र० १, २, द्वि० ६, ७ में एक छंद अतिरिक्त है।

[४६२]

तुम्ह बड़ राज छत्रपति भारी। अनु बाँभन हौं आहि भिखारी।
चारिहुँ खंड भीख कहँ बाजा। उदै अस्त तुम्ह अैस न राजा।
धरम राज[1] औ सत कुलि[2] माहाँ। झूठ जो कहै[3] जीभ केहि पाहाँ।
किछु जो चारि[4] सब किछु[5] उपराहीं। सो एहि[6] जंबु[7] दीप महँ नाहीं।
पदुमिनि अंब्रित हंस[8] सदूरू। सिंघल दीप सो भलेहँ अँकूरू[9]।[10]
सातौ दीप देखि हौं आवा। तब राघौ चेतनि कहवावा।
अग्याँ होइ न राखौं धोखा। कहौं सो सब नारिन्ह गुन[11] दोखा[12]।
इहाँ हस्तिनी सिंघिनी औ[13] चित्रिनि बनबास[14]।[15]
कहाँ पदुमिनी पदुमसरि भँवर फिरहिं चहुँ पास॥

[४६३]

पहिलें कहौं हस्तिनी नारी। हस्ती कै परकीरति सारी।
कर औ पाय सुभर गियँ छोटी। उर कै खीनि लंक[1] कै मोटी।
कुंभस्थल गज मैमँत आहीं[2]। गवन गयंद ढाल[3] जनु बाहीं।
दिस्टि न आवै आपन पीऊ। पुरुख पराएँ ऊपर जीऊ।
भोजन बहुत बहुत[4] रति चाऊ। अछवाई सों थोर सुभाऊ[5]।[6]

---

[४६२] १. तृ० १ न्याव। २. द्वि० ३ सत तुम्ह, तृ० ३ सत्र कुल। ३. प्र० १, २ जो बोल। ४. द्वि० ६ जो चार पै, द्वि० ७ हैं जो चार, तृ० २ कहौं चार, तृ० ३ गज जो चार। ५. तृ० ३ जग। ६. द्वि० ६, तृ० ३ चाँरिहु। ७. तृ० २ चहूँ। ८. पं० १ सिंघ। ९. द्वि० ४. ५, च० १, पं० १ भलहि सो मूरू। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ पंखि हंस औ पदुमिनि नारी, सारदूल अंब्रित एइ चारी। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, तृ० २ के। १२. द्वि० १ कहौं तो सबद जाइ सिवलोका। १३. द्वि० ६ कै। १४. प्र० २ अवास। १५. तृ० ३ इहाँ हस्तिनी चित्रिनी औं सिंघिनि बनबास।

[४६३] १. प्र० १ कनक। २. प्र० १, २ कुचमत उपराहीं, द्वि० २ कच अस्त अमाहीं, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३, पं० १ गज उमत अमाहीं, द्वि० ७ उत्तिमता नाहीं, तृ० २ कुच मैमँत आहीं, च० १ गज हस्ति अमाहीं। ४. प्र० १, द्वि० ६ हेत हेत। ५. द्वि० २, ६ अभाऊ, तृ० १, २ अन्हाऊ। ६. द्वि० १ पुरुष पराए ते बहुत सुभाऊ।

मद जस मंद बसाइ पसेरू। औ बिसवास धरैं जस देऊ।
डर औ लाज न एकौ हिएँ। रहै जो राखैं आँकुस दिएँ।

गज गति[७] चलै[८] चहूँ दिसि हेरति[९] लाइ[१०] जगत कहँ चोख[११]।
वह हस्तिनी नारि पहिचानिअ[१२] सब[१३] हस्तिन्ह गुन[१४] दोख[१५]॥

[४६४]

दोसरें कहौं सिंघिनी नारी। करै बहुत बल[१] अलप अहारी।
उर अति[२] सुभर[३] खीन अति लंका। गरब भरी मन धरै[४] न संका।
बहुत रोस चाहै पिय हना। आगें घालि न काहूँ गना।
अपनै अलंकार ओहि भावा। देखि न सकै सिंगार परावा।
मैंाट माँसु रुचि भोजन तासू। औ मुख आव बिसाइधि बासू।
सिंघ कै चाल चलै डग ढीली[५]। रोवाँ बहुत होहि दुहुँ[६] फीली।
दिस्टि तराहीं हेर न[७] आगें। जनु मथवाह[८] रहै सिर[९] लागें।

सेजवाँ मिलत स्यामिहि[१०] लावै उर नख बान।
जे गुन सबै सिंघ के सो सिंघिनि सुलतान॥

---

७. प्र० १ गजपति, द्वि० ७ गजमति। ८. तृ० १ चकित। ९. प्र० १, द्वि० १, ४, ५, ७, पं० १ चहूँ दिसि, प्र० २, तृ० १ चहूँ दिसि चितवति। १०. द्वि० ७ हेरत। ११. द्वि० १ दोख। १२. द्वि० ४, ५ वहैं हस्तिनी नारी लिए, द्वि० १ वह हस्तिनि पहिचानिअ, तृ० २ सोई नारि हस्तिनी। १३. प्र० १, तृ० २ बहु, प्र० २, द्वि० ७ अहै। १४. प्र० १, २, द्वि० ५, ६, ७, तृ० ३, च० १, पं० १ के। १५. द्वि० १ मोख।

[४६४] १. तृ० ३ धरैं। २. द्वि० ६ लावहि सुभर, च० १ औ सब सुभर, द्वि० १ उर अति अबल। ३. तृ० ३ धरे। ४. द्वि० १ करै, द्वि० ६ मन करै। ५. प्र० १ चयन्द (?) गति ढीली। ६. द्वि० १ जाँघ औ। ७. प्र० १, २ देखत, द्वि० ४, ५, तृ० १, २, पं० १ हेरैं, द्वि० ७ हेरत। ८. द्वि० ७ सिरवाह। ९. द्वि० १ थिर। १०. प्र० १, द्वि० ३ सामि कहँ, द्वि० ४ सो स्वामी, द्वि० ७ सामि के ओही, तृ० १, च० १ सामिहि, पं० १ सोवामी। ११. प्र० १, २ नख और बान, तृ० ३ उन नख दान।

[४६५]

तीसरि कहौं चित्रिनी नारी। महा चतुर रस पेम पियारी।
रूप सरूप सिंगार सवाई। आछरि जसि नागरि[1] अछवाई।
रो (न जानै[2] हँसता मुखी। जहँ असि नारि पुरुख सो सुखी[3]।
अपने पिय कै जानै पूजा। एक पुरुख तजि जान न[4] दूजा।
चंद बदन रँग कुमुदिनि[5] गोरी। चाल सोहाइ हंस कै जोरी।
खीर खाँड किछु[6] अलप अहारू[7]। पान फूल सौं बहुत[8] पियारू[7]।
पदुमिनि चाहि घाटि दुइ करा। और सबै ओहि गुन निरमरा।

चित्रिनि जैस कमोद रँग आव न बासना अंग[9]।
पदुमिनि सब चदन अस[10] भँवर फिरहिं तिन्ह संग ॥

[४६६]

चौथें कहौं पदुमिनी नारी। पदुम गंध सो दैय सँवारी।
पदुमिनि जाति पदुम रँग[1] ओहीं[2]। पदुम बास मधुकर सँग होहीं[2]।
ना सुठि लाँबी ना सुठि छोटी। ना सुठि पातरि ना सुठि मोंटी।
सोरह करा अंग होइ[3] बनी[4]। वह सुलतान पदुमिनी गनी[4]।

---

[४६५] १. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, प ० १ जैसि रहैं, द्वि० ७, तृ० ३ जसि ताकरि, तृ० २ जनु आछै, च० १ जसि आछै। २. प्र० १ रोस नाहिनौ। ३. प्र० १, २, द्वि ४, ५, ६, च० १, प ० १ कं बह सुखी, द्वि० १ पुरुख कस दुखो। ४. प्र० १ चित और न, प्र० २, तजि चहै न, द्वि० १ रति न चाहै, द्वि० ४ कै जान न, द्वि० ६, तृ० ३, प ० १ तजि चाहन। ५. प्र० १ कुंभिनि। ६. प्र० १, २, तृ० २ रुचि। ७. द्वि० १ अहारी, रहहिं अधारी। ८. तृ० ३ अधिक। ९. प्र० १, २ औ तेहि वास न अंग, द्वि० ४, तृ० २ और वासना अंग, द्वि० ५ आव बासना अंग, द्वि० ७ औ बासना अनंग, च० १ आव बासना बास तेहि अंग, द्वि० ३, प ० ५ औ गासना न अंग। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ पदुमिनि चंदन बास लगि, द्वि० ४ पदुमिनि वास चंदन जस, तृ० २ कहाँ पदुमिनी पदुम सरि, च० १ कहा पदुमिनी पदुम रस।

[४६६] १. प्र० १, २ गँध। २. प्र० १ ओही सँग सोहीं, द्वि० १ ताहीं, सँग जाही, द्वि० ७ वोहीं, रस लेहीं। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ अंग ओहि, द्वि० ४ रंग होइ, द्वि० ५ रंग हिय। ४. प्र० १, २, बानी, जानी, द्वि० १ बानी, रानी।

दीरघ चारि चारि लहु सोई। सुभर चारि चारि खीन जो होई।
औ ससि बदन रंग सब[५] मोहा[६]। चाल मराल चलत गति सोहा[७]।
खीर न सहै अधिक सुकुवारा। पान फूल के रहै अधारा।

सोरह करा सँपूरन औ सोरहौ सिंगार।
अब तेहि भाँति[८] बरन गुन[९] जस बरनै संसार ॥*

[४६७]

प्रथम केस दीरघ सिर[१] होहीं। औ दीरघ अंगुरी कर सोहीं।
दीरघ नैन तिक्ख तिन्ह देखा। दीरघ गीव कंठ तिरि रेखा[२]।
पुनि लघु दसन होहिं जस हीरा। औ लघु कुच जस उतँग जँभीरा।
लघू लिलाट दुइज परगासू। औ नाभी[३] लघु चंदन[४] बासू।
नासिक खीन खरग कै धारा। खीन लंक जेहि केहरि हारा।
खीन पेट जानहुँ नहिं आँता। खीन अधर बिद्रुम रँग राता।
सुभर कपोल देहिं सुख सोभा। सुभर नितंब देखि मन[५] लोभा।

सुभर बनी भुअडंड कलाई[६] सुभर जाँघ गज चालि।
ये सोरहौ[७] सिंगार बरनि के[८] करहिं देवता लालि ॥

---

५. प्र० १, तृ० १ देखि जग, प्र० २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७, पं० १ देखि सब, तृ० २ अंग जग। ६. द्वि० १ तेहि सोहा। ७. प्र० १ अति सोहा, द्वि० १ सब मोहा। ८. द्वि० ४ अब एहि चार। ९. प्र० १, २, द्वि० ६ च० १, पं० १ बखानौं, द्वि० २, ३, ४, ५, ७, तृ० ३ बरन कौं। १०. द्वि० १ चारि चौंद औ चारि फल पचई ईमां चारि।
सोरह कला संपूरन औ सोरह सिंगार ॥
* प्र० २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[४६७] १. प्र० १ सँग। २. प्र० २ कंठ तर (उर्दू मूल) रेखा, द्वि० कंबु पर लेखा। ३. द्वि० ५ लखी कचनाभी। ४. तृ० ३ चंदन लहु, च० १ आव चंदन। ५. प्र० १ जग, द्वि० ६ मोहि। ६. प्र० १, तृ० १, ३, सुभर भु (अ) डंड कलाई, प्र० २, द्वि० २, ७ भुआ डँड बनो कलाई, द्वि० ६ भुआ डँड हस्त कलाई, द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १, पं० १ सुभर कलाई अति बनी, द्वि० १ सुभर भुजा भु डंड सो। ७. तृ० २ असि कै सोरह, द्वि० ४, ५, च० १ सोरह, प्र० २ ऐ सोरह। ८. प्र० १, सिंगार बरनि सव, द्वि० १ सिंगार सो, तृ० १ सिंगार बरनि ए, तृ० २ सिंगार, पं० १ सिंगारैं।

[४६८]

यह जो पदुमिनि चितउर आनी[1]। कुंदन कया[2] दुवादस बानी।
कुंदन कनक न गंध[3] न बासा। वह सुगंध जनु कँवल बिगासा।
कुंदन कनक कठोर सो अंगा। वह कोवँलि रँग पुहुप सुरंगा[4]।
ओहि छुइ पवन बिरिख जेहि लागा। सोइ मलयागिरि भएउ सभागा।
काह न मूँठि भरी ओहि खेही। असि मूरति कै दैयँ उरेही।
सबै चितेर चित्र कै[5] हारे। ओहिक चित्र कोइ करै[6] न पारे।
कया कपूर हाड़ जनु[7] मोंती। तेहि तें अधिक दीन्ह बिधि जोती।

सूरुज क्रांति करा जसि[8] निरमल नीर[9] सरीर।
सौहँ निरखि नहिं जाइ निहारी[10] नैनन्ह आवै नीर॥*

[४६९]

कत हौं अहा[1] काल कर काढ़ा[2]। जाइ धौराहर वर भौ[3] ठाढ़ा[2]।
कत वह आइ झरोखें झाँकी। नैन कुरंगिनि चितवनि बाँकी।

---

[४६८] १. प्र० २, द्वि० २, च० १, पं० १ चितउर रानी, तृ० २ सिंघल रानी। २. द्वि० १,७ कुंदन कनक, तृ० १ कुंदन कैस, तृ० ३ कनक सुगंध। ३. ६, तृ० २ ताहि नहिं। ४. प्र० १ तिल पुहुप सुरंगा, द्वि० १ मालति के रंगा, द्वि० १ रँग पुहुप सुगंधा। ५. प्र० १, २ लिखि, द्वि० ७ चित। ६. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, पं० १ रूप कोइ लिखै, द्वि० २ चित्र कोइ लिखै। ७. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ सब, च० १ जस। ८. प्र० १ किरिन तें आगरि, प्र० २ क्रांति ते आगरि, द्वि० १ रानी तस करा, द्वि० २ करा तेइं तें निरमल, तृ० ३ करा नित करा जस (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, कराँ जस निरमल, द्वि० ६ क्रांति जस निरमलि, द्वि० ७ कीता का तिक जस, तृ० २ क्रांति जस निरमल, च० १ कराँ नित आवै, पं० १ करा नित आगरि। ९. प्र० १, २, च० १, पं० १ निरमल तैस, द्वि० ६, ७, तृ० ३ निरमल अधिक, द्वि० २ वरनिन जाइ, द्वि० ४, ५ तेहि तें। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ निरखि नहिं जाइ सो, तृ० २ दिष्टि नहिं जाइ निहारी, च० १, पं० १ निहारि न जाइ वांह।
* द्वि० ४, ५, ६ इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

१. तृ० ३ कत मैं गएउँ, च० १ हौं जो अहा। २. तृ० १ काढ़ो, ठाढ़ो। ३. द्वि० १, च० १ भा।

बिहँसी ससि तरईं जनु परीं। कै सो रैनि छूटी फुलझरीं।
चमकि बीज जस भादौं रैनी। जगत दिस्टि[४] भरि रही उड़ैनी।
काम कटाख दिस्टि बिख बसा। नागिनि अलक पलक महँ डसा।
भौंहँ धनुक तिल काजर टोड़ी। वह भै धानुक हौं हियँ[५] ओड़ी[६]।
मारि चली मरतहिं[७] मैं[८] हँसा। पाछें नाग अहा ओइँ[९] डसा।

पाछें आलि काल सो राखा[१०] मंत्र न गारुरि कोइ।
जहाँ मँजूर पीठि ओइँ दीन्हे[११] कासूँ पुकारौं रोइ।।

[४७०]

बेनी छोरि झारु जौं केसा। रैनि होइ जग दीपक लेसा।
सिर हुति सोहरि[१] परहिं भुइँ बारा। सगरे देस होइ[२] अँधियारा।
जानहुँ लोटहिं चढ़े[३] भुवंगा। बेधे बास मलैगिरि संगा[४]।
सगबगाहिं बिख भरे बिसारे। लहरिआहिं लहकहिं अति कारे।
लुरहिं मुरहिं मानहिं जनु केली। नाग चढ़ा मालति की बेली।
लहरैं देइ जानहुँ कालिंदी। फिरि फिरि भँवर भए चित फंदी[५]।
चवँर ढरत आछहिं चहुँ पासा। भवँर न उड़हिं जो लुबुधे बासा।

होइ अँधियार[६] बीजु खन लौकै[७] जबहिं[८] चीर गहि झाँपु।
केस काल ओइ कत मैं देखे सँवरि सँवरि जिय काँपु।।

---

४. प्र० १ जगत रैनि, द्वि० १ जगत दीन्हि, द्वि० २ चमक दिष्टि, च० १ जग तूँ दिस्टि। ५. तृ० १ हौं जिउ, च० १ हिय भै। ६. प्र० १, २ मारेउ बान रहेउ हिय ओड़े। ७. प्र० १ सिर देइ, तृ० १ पाछें, च० १ मरत। ८. द्वि० २, च० १ हौं। ९. प्र० १ रहा मोहिं, द्वि० १ अहा तेइँ, द्वि० ४ अहा हौं। १०. पं० १ सो राखेसि। ११. द्वि० १ मुहमद चूरै पैठी, तृ० २ जहाँ मँजूर बैठि रह।

[४७०] १. द्वि० ४, ५ बिसहर, तृ० १, २ पं० १ सुभरि, द्वि० २, तृ० २ बिथरि। २. द्वि० ४, ५ भएउ। ३. द्वि० ६ अलकैं भेस। ४. प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ७, तृ० २ अंगा। ५. प्र० १ रस भेदी, द्वि० ४ चित बंधी, तृ० १, २ चित भेदी। ६. पं० १ उजियार। ७. प्र० १, २ बीजु खन, प्र० २ बीजु घन चमकैं, द्वि० १ जो लौंकै, द्वि० २ बीजु जस लौकै, द्वि० ४, ७ बीजु घन लौके। ८. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ जौहिं (हिंदी मूल)

[४७१]

कनक माँग[1] जो सेंदुर[2] रेखा। जनु बसंत राता जग देखा।
कै पत्रावलि पाटी पारी। औ रचि चित्र बिचित्र सँवारी।
भएउ उरेह पुहुप सब[3] नामा[4]। जनु बग बगरि रहे[5] घन स्यामा[4]।
जमुँना माँझ सुरसती माँगा। दुहुँ दिसि चित्र तरंगहि गाँगा[6]।
सेंदुर रेख[7] सो ऊपर राती। बीर बहूटिन्ह की जनु पाँती।
बलि देवता भए देखि सेंदूरू। पूजै माँग भोर उठि सूरू।
भोर साँझ रबि होइ जो राता[8]। ओहीं सो सेंदुर राता गाता[9]।

बेनी कारी पुहुप लै निकसी[10] जमुना आइ।
पूजा इंद्र[11] अनद सो सेंदुर सीस चढ़ाइ।।

[४७२]

दुइज लिलाट अधिक मनि करा। सकर देखि माँथ भुइँ धरा।
एहि निति[1] दुइज जगत महँ दीसा[2]। जगत जौहारै देइ असीसा।
ससि होइ छपी[3] न सरबरि छाजै। होइ जो अमावस छपि मन लाजै।[4]

---

[४७१] १. प्र० १, २ द्वि० ७, तृ० १, ३ मानिक माँग, द्वि० १ केसरि माँग, द्वि० २ बाँक माँग, द्वि० ३, पं० १ माँग माँझ, च० १ माँग कहौं। २. द्वि० १ मानिक, तृ० ३ केसरि। ३. प्र० १ जेत, च० १ जो। ४. द्वि० ७ नासा, स्वासा, च० १ रामाँ, स्यामाँ। ५. प्र० १, २ बगपाँति निसरि, द्वि० २ घन बक पकरि रहे, तृ० १, २ जनु बग बिथरि रहे। ६. प्र० १ लागा। ७. तृ० ३ बिखम। ८. द्वि० १ सोस झाँ। ९. प्र० १ रुहिर सो रेख रात होइ गाता, प्र० २ वोही सो रेख रात सब गाता, द्वि० ४, ५, पं० १ वहै देखि राता सब गाता, द्वि० ६ ओही देखि राता भा गाता, तृ० १ सेंदुर वहैं होइ रत गाता, च० १ वोही जोति भै राते गाता, द्वि० १ सेंदुर तेहि महँ तेरे अंगा। १०. प्र० २ निसरी। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ देव, द्वि० ६, तृ० ३, च० १ नंद, द्वि० १ नाद।

[४७२] १. तृ० ३ महँ। २. प्र० १, २ जगत दुइज सत दीसा, द्वि० ७ दुखी जगत सब दीसा। ३. प्र० १, २ होइ बिहसि, द्वि० २ पूनौ भइ, द्वि० ४, ५, पं० १ जो होइ, द्वि० ७ होइ छीन। ४. द्वि० १ ससि कहँ सरबरि छाज न कोई, होइ जो अमावस जाइ छपि सोई।

तिलक सँवारि जो चूनी[५] रची। दुइज माहँ जानहुँ कचपची।
ससि पर[६] करवत[७] सारा राहू। नखतन्ह भरा दीन्ह पर दाहू।
पारस जोति लिलाटहि ओती। दिस्टि जो करै होइ तेहि जोती।
सिरी[८] जो रतन माँग बैसारा। जानहुँ गँगन[९] टूट[१०] निसि[११] तारा।
ससि औ सूर जो निरमल तेहि लिलाट की ओप।
निसि दिन चलहिं न सरबरि पावहिं[१२] तपि तपि[१३] होहिं अलोप॥

[४७३]

भौहैं स्याम धनुक जनु चढ़ा। बेझ करै मानुस कहँ गढ़ा।
चाँद[१] कि मूँठि धनुक तहँ ताना। काजर पनच[२] बरुनि बिख बाना।
जासहुँ फेर छोहाइ न मारे। गिरिवर टरहिं सो भौहँन्ह टारे।
सेत बंध जेइं धनुक बिडारा। उहौ धनुक भौहँन्ह सौं[३] हारा।
हारा धनुक जो बेधा राहू। औरु धनुक कोइ गनै[४] न काहू।
कत सो धनुक मैं भौहँन्हि देखा। लाग बान तेत आव न लेखा।
तेत बानन्ह झाँझर भा हिया। जेहि अस मार सो कैसें जिया।
सोत सोत तन[५] बेधा रोवँ रोवँ सब[६] देह[७]।
नस नस महँ भै सालहिं हाड़ हाड़ भए बेह॥

[४७४]

नैन चतुर[१] वै[२] रूप चितेरे[३]। कवल पत्र पर मधुकर घेरे[३]।

---

५. तृ० ३ चूने (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, पं० १ चंदन, तृ० १ जोती। ६. च० १ सिर। ७. तृ० ३ कीरति। ८. पं० १ सो है। ९. द्वि० ३ नखत। १०. प्र० १ बैठ। ११. तृ० ३ लै। १२. प्र० १, २, पं० १ दौरि न पूजहिं, द्वि० १ चले सो सरबरि, द्वि० ७ चलहिं पाव नहिं। १३. प्र० १, २ पुनि तपि, पं० १ फिरि फिरि।

[४७३] १. तृ० १, २, पं० १ चंद। २. द्वि० २, तृ० २ बीजु, तृ० १, च० १, पं० १ बीच। ३. च० १ उन भौंहन्हि। ४. तृ० २, च० १ कहै (गहै)। ५. प्र० १ सब, द्वि० १ सों। ६. द्वि० २ जेत, तृ० २ पुनि। ७. पं० १ रोवँ रोवँ तन बेधा सोत सोत सब देह।

[४७४] १. प्र० २, तृ० ३ चित्र (उर्दू मूल)। २. प्र० १, २ दुइ, तृ० २ तस। ३. प्र० १, द्वि० २, ३, ५, ६, ७, तृ० २, च० १, पं० १ चितेरे, फेरे, प्र० २, तृ० ३ चितेरा, फेरा।

समुँद तरंग उठहि[४] जनु राते। डोलहिं, तस घूमहिं जनु माँते।
सरद चंद महँ खंजन जोरी। फिरि फिरि लरहिं अहोरि बहोरी।
चपल बिलोल डोल रह लागी। थिर न रहहिं चंचल बैरागी।
निरखि अघाहिं न हत्या हतें। फिरि फिरि स्रवनन्हि लगहिं मतें।
अंग सेत मुख स्याम जो ओहीं। तिरिछ चलहिं खिन सूध न होहीं[६]।[७]
सुर नर गंध्रप लालि[८] कराहीं। उलटे चलहिं सरग कहँ[९] जाहीं।

अस वै नैन चक्र दुइ[१०] भवँर समुँद उलथाहिं।
जनु जिउ घालि हिंडोरैं लै आवहिं लै जाहिं॥

[४७५]

नासिक खरग[१] हरे धनि[२] कीरू। जोग सिंगार जिते औ बीरू।
ससि मुख सौंहँ खरग गहि[३] रामा[४]। रावन सौं चाहै संग्रामा[४]।
दुहूँ समुंद्र रचा जेन्हँ बीरू। सेत बंध बाँधेउ नल नीरू।
तिलक पुहुप अस नासिक तासू। औ सुगंध दीन्हेउ बिधि बासू।
कनक (?)[५] फूल पहिरें उजियारा। जानु सरद ससि[६] सोहिल[७] तारा।

---

४. प्र० १ तरंग लेहिं, द्वि० ४ तरंग उलथहिं। ५. द्वि० ६ सौंह। ६. प्र० १, तिरिछइ चलहिं सौंह नहिं होहीं, पं० १ तिरिछइ चलहिं खन नहिं भवँहीं। ७. द्वि० १ अंग भुवं गिनि अधरन्ह रेखा, उलटि पलटि लाग गिरिं देखा। ८. प्र० १, पं० १ लागि। ९. द्वि० ६, च० १ लै। १०. प्र० २ दुइ जोरे, द्वि० १ चक्कवै, द्वि० ७ के जोरे।

* द्वि० ३ में इसके अनंतर एक अतिरिक्ति छंद है।

[४७५] १. पं० १ बनी। २. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ औ, तृ० १ जनु। ३. प्र० १, २, पं० १ है, द्वि० ३, तृ० १, ३, च० १ लै। ४. द्वि० ६ धारा, संघारा। ५. द्वि० ६ लौंग। शेष समस्त प्रतियों में पाठ 'करना' है, किंतु नासिका के वर्णन में 'करन' नितांत अप्रासंगिक है। इसी प्रकार २९८.४ में नासिका के वर्णन में तीन प्रतियों को छोड़कर शेष समस्त में 'करन फूल नासिक अति सोभा' पाठ है, और एक में 'करनफूल' पाठ के कारण 'नासिका' के स्थान पर 'सरवन' पाठ भी कर लिया गया है। केवल तीन प्रतियों में पाठ 'कनक' है, जो निश्चित रूप से प्रामाणिक माना गया है। उसी प्रकार कदाचित् यहाँ भी 'कनक' के स्थान पर प्रतिलिपिकारों ने 'करन' कर दिया है, और यहाँ तक यह हुआ है कि 'कनक' पाठ एक भी प्रति में शेष नहीं है। ६. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० १ सरद रितु, द्वि० ७ ससि सँग। ७. तृ० १ सीतल।

सोहिल चाहि फूल वह-ऊँचा। धावहिं नखत न जाइ पहूँचा।
न जनौं केइँ फूल वह[8] गढ़ा। बिगसि[9] फूल सब चाहहिं चढ़ा[10]।

अस वह फूल बास कर आकर[11] भा नासिक सनमंध[12]।
जेत फूल ओहि फूलहिं हिरगे[13] ते सब भए[14] सुगंध ॥

[४७६]

अधर सुरंग पान अस खीने[1]। राते रंग अमिअ रस भीने।
आछहिं[2] भीज तँबोर सों राते[3]। जनु गुलाल दीसहिं बिहँसाते।
मानिक अधर दसन नग[4] हेरा। बैन रसाल खाँड[5] मकु[6] मेरा।
काढ़े अधर डाभ सौं चीरी। रुहिर चुवै जौं खंडहि बीरी।
धारे रसहिं[7] रसहिं रस गीले। रकत[8] भरे[9] वै सुरग रँगीले।[10]
जनु परभात रात रबि रेखा[11]। बिगसे बदन कवँल जनु देखा[12]।
अलक भुवंगिनि अध न्ह राखा[13]। गहै जो नागिनि सो रस चाखा[13]।[14]

---

८. प्र० १, २ सोहिल अस। ९. तृ० ३ बिहँसि। १०. तृ० १ मनि महेस के माथें चढ़ा। ११. द्वि० १ बास अस आकर, पं० १ बास कर। १२. द्वि० २, ३, ५, तृ० १, २, नासिका समंद, च० १ नासिक सबंद, तृ० ३ नासिका सुगंध, पं० १ नासिक सनबंध। १३. प्र० १, २ नासिक हिरकहिं, द्वि० ४, ५ फूलहिं, द्वि० ७ हिरकहिं, द्वि० ६, पं० १ हिरके।

[४७६] १. प्र० २, द्वि० ७ अस कीन्हे, तृ० २ रसभीने। २. तृ० ३ छाछहिं। ३. द्वि० १ भयो ओ बोलहिं बाता। ४. द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० ३, च० १ जनु। ५. तृ० २ रसना अमी खाँड, द्वि० ३ बैन रसाल खात। ६. प्र० १, २, तृ० ३ खिन, द्वि० २ केइँ, द्वि० ६, ७ जनु, द्वि० ३, ४, ५, तृ० १ मुख, च० १ गहि। ७. प्र० १, २ ढारे अधर, द्वि० ४, ५ धारे दसन, द्वि० ३ ढरे ते पीक। ८. तृ० १ रुहिर। ९. प्र० १ पैठि, प्र० २ पिअहिं, द्वि० ६, पं० १ बिनहिं। ११. प्र० २, द्वि० २ देखा। १०. द्वि० २ पान मोह तस रहे न पावा, एतहु आछरि रकत लै आवा। १२. प्र० १, २ पेखा। १३. तृ० ३ राखी, चाखी। १४. द्वि० २ कुसुम जो रजन रही मँजीठी, रसन बैन अंब्रित रस मीठी।

अधर धरहि[15] रस[16] पेम का अलक भुअंगिनि बीच।
तब अंब्रित रस पाउ पिउ[17] ओहि[18] नागिनि गहि[19] खींचु[20]॥

[४७७]

दसन स्याम पानन्ह रँग पाके। बिहँसत[1] कवँल भँवर अस[2] ताके।[3]
चमतकार[4] मुख भीतर[5] होई। जस दारिवँ औ[6] स्याम मकोई।[7]
चमकै चौक बिहँसु जौं नारी। बीज चमक जस[8] निसि अँधियारी।
सेत स्याम अस चमकै डीठी। स्याम[9] हीर दुहुँ[10] पाँति बईठी।[11]
केइँ सो गढ़े[12] अस दसन अमोला। मारैं बीज बिहँसि जौं बोला।
रतन भीज रँग मसि भै स्यामा। ओही छाज पदारथ नामा।
कत वह दरस देखि रँग भीने। लै गौ जोति नैन भौ खीने।[13]

दसन जोति होइ नैन पँथ[14] हिरदै[15] माँझ बईठि।
परगट जग अँधियार जनु[16] गुपुत ओहि पै डीठि[17]॥

---

१५. द्वि० १ खीन, द्वि० ४, ५ अधर। १६. प्र० १ अधरन्हि रस जो, द्वि० ४ अधर अधर रस। १७. द्वि० १, ४ पावै, तृ० २ पाव सो। १८. द्वि० १ धार, तृ० १ जो। १९. तृ० ३ कहँ। २०. प्र० १ जब नागिनि कहँ खींच, प्र० २ पियहि नागिनि वोह सीप, द्वि० ७ वोहि नागिनि के बीच।

[४७७] १. द्वि० ४, तृ० १, च० १ विकसत। २. प्र० १ दसन भँवर मन, प्र० २, द्वि० ६, ७ पं० १ कँवल भवँर मैं, द्वि० १ भँवर बीज बर। ३. द्वि० २ दसन जोति तस बरनि न आवा, खन खन बीज चमक दिखरावा। ४. प्र० १ जगमगाहिं, तृ० ३ चमटिकार (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५ अस चमकार, द्वि० ६, पं० १ औ चमकार, तृ० १ चमकाई। ५. द्वि० ६ जो मुख महँ। ६. प्र० १ धन। ७. द्वि० २ हीरा जोहि जोग अति होई। ८. प्र० १, २ छटा जनु। ९. द्वि० ६, पं० १ जानु। १०. प्र० १, द्वि० २ जनु। ११. द्वि० २ मघा कँवल बिकसत वै डीठी। १२. प्र० १, २ रचा। १३. द्वि० २ जस दरपन महँ सूरज रेखा, तेहि तें अधिक दसन की रेखा। १४. प्र० १, २, पं० १ जोति अति निरमलि। १५. द्वि० १, पं० १ वे नैनन्ह। १६. प्र० १ सब, तृ० १ भा। १७. च० १, पं० १ जहँ जहँ नैन पसारौं, तहँ तहँ आवहिं डीठि।

[४७८]

रसना सुनहु[1] जो कह रस वाता। कोकिल बैन सुनत मन राता।[2]
अंब्रित कोंप जीभ जनु लाई। पान फूल असि बात[3] मिठाई[4]।
चात्रिक बैन सुनत होइ साँती। सुनै सो परै पेम मद माँती।
बीरौ सूख पाव जस नीरू। सुनत बैन तस पलुह सरीरू।
बोल सेवाति बुंद जेंउ परहीं[5]। स्रवन सीप मुख[6] मोंती भरहीं।
धनि वह बैन जो प्रान अधारू। भूखे स्रवननि देहिं अहारू[7]।
ओन्ह बैनन्ह कै काहि न आसा। मोहहिं मिरिग बिहँसि[8] भरि स्वाँसा[9]।

कंठ सारदा मोहहिं जीभ सुरसती काह[10]।
इंद्र चंद्र रबि देवता सबै जगत मुख चाह[11]॥

[४७९]

स्रवन सुनहु जो कुंदन सीपी। पहिरें कुंडल सिघल दीपी।
चाँद सुरुज दुहुँ दिसि चमकाहीं। नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं।
खिन खिन करहिं बिज्जु अस काँपे। अंबर मेघ महँ[1] रहहिं नहिं झाँपे।
सूक सनीचर दुहुँ दिसि[2] मतें[3]। होहिं निरार न स्रवनन्हि हुतें[4]।
काँपत रहहिं बोल जौं बैना। स्रवनन्हि जनु लागहिं फिरि नैना[5]।

---

[४७८] १. प्र० १ कहौं। २. द्वि० २ रसना कहौं अमीरस बोला, कोयल बैन रसाल अमोला। ३. द्वि० २ असि खाइ, द्वि० ६, तृ० २ रस वात। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७ तृ० १, पं० १ सुहाई। ५. तृ० ३ बुंद सेवाति समुँद जेउँ परहीं। ६. द्वि० ६ सुख। ७. तृ० ३ अधारू। ८. च० १ मूरख तैसे, पं० १ मिरिग तैस। ९. तृ० ३ थिर बासा, द्वि० ४, ५ तेहि स्वाँसाँ, तृ० १, च० १ भइ स्वाँसा, पं० १ अति स्वाँसा। १०. प्र० १, २ ताहि, च० १ छाँह, पं० १ आहिं। ११. प्र० १, २, च० १, पं० १ सब ओहि बात ओनाहिं।

[४७९] १. प्र० १, २, पं० १ अमर मेघ तर, तृ० ३ अमर मे घर बर, च० १ अमर मेघ अस। २. तृ० ३ स्रवनन्ह, तृ० २ दूतहु। ३. प्र० २, द्वि० ७, पं० १ माते। ४. प्र० १ में दूसरा चरण नहीं लिखा है, प्र० २ होहिं निनार न से तहँ ताते, द्वि० ७ होहिं निनार न स्रवनन्हि तते। ५. प्र० १ स्रवनन्हि जनु लागहिं फिरि सैना, द्वि० २, तृ० १ सुनतहिं जनु लागहिं फिरि नैना, तृ० ७ स्रवनहिं फिरि फिरि लाग जनु नैना, च० १ स्रवनन्हि जनु लागहिं फिरि नैना।

जो जो[६] बात सखिन्ह सौं सुना। दुहुँ दिसि करहिं सीस वै धुना[७]।
खूँट[८] दुहूँ धव तरई[९] खूँटीं। जानहुँ परहिं कचपचीं टूटी।

बेद पुरान ग्रंथ जत सबै[१०] सुनै सिखि[११] लीन्ह।
नाद बिनोद[१२] राग रस बिंदक[१३] स्रवन ओहि बिधि दीन्ह॥

[४८०]

कँवल कपोल ओहि अस छाजे[१]। और न काहु दैयँ[२] अस साजे।[३]
पुहुप पंक रस[४] अमिअ सँवारे। सुरग गेंदु नारँग रतनारे।
पुनि कपोल बाएँ[५] तिल परा। सो तिल बिरह चिनिगि कै करा।
जो तिल देख जाइ डहि[६] सोई। बाईं दिस्टि काहु जनि होई।
जानहुँ भँवर पदुम[७] पर टूटा। जीउ दीन्ह औ दिएहुँ न छूटा।
देखत तिल नैनन्ह गा गाड़ी। और न सूझै सो तिल छाँड़ी।
तेहि पर अलक मंजरी[८] डोला। छुअै सो नागिनि[९] सुरँग कपोला।

रख्या करै मँजूर ओहि[१०] हिरदैं ऊपर[११] लोट[१२]।
केहि जुगुति[१३] कोइ छुइ सकै दुइ परबत की ओट॥

---

६. च० १ ज्यों ज्यों। ७. तृ० २ इंद्र मोह ब्रह्मा सिर धुना।
८. प्र० १ कहत, तृ० ३ जूँठ। ९. प्र० १ धुव तरपहिं, प्र० २ और तरफहिं, द्वि० १ धुव तहाँ, तृ० ३ धुव तोरे। १०. तृ० ३ बैन।
११. तृ० १ आप हत। १२. तृ० ३ नाद बेद, तृ० १ नावहिं वेद।
१३. तृ० १, पं० १ राग रस।

[४८०] १. प्र० १, २ अस छाजे, बिधि साजे, द्वि० ७ विधि साजे, अस छाजे।
२. प्र० १, २ सोभा बदन केरि। ३. द्वि० २ कँवल कपोल अर्म रस छाजै, भोर सौंह रवि दरपन माँजै। ४. द्वि० १, २, तृ० १, २, ३, पं० १ अस। ५. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, तृ० २ बाएँ गाल एक, च० १ बाएँ गाल लाग। ६. प्र० १, द्वि० १, ४, ५, ६ जरि, द्वि० २, तृ० १, २, च० १, पं० १ वहि। ७. प्र० १ पुहुप। ८. प्र० १ भुवंगिनि, प्र० २, द्वि० ७ मँजारी। ९. प्र० १, २ बिख नागिनि होइ, द्वि० ६ बिख नारँग छुअ, द्वि० ७ बिख नागिनि पिय। १०. च० १ दीख मँजूर आइ हिरदै वहि। ११. प्र० १, २ हिरदै नागिनि, द्वि० ७ हियैं लागि बोह, च० १ नागिनि ऊपर। १२. द्वि० ६, च० १ टूट। १३. प्र० २ जोगत (उर्दू मूल)।

[४८१]

गीवँ मंजूर केरि जनु ठाढ़ी। कुंदै[1] फेरि[2] कुँदेरैं काढ़ी।[3]
धन्य[4] गीवँ का बरनौं करा। बाँक तुरंग जानु गहि धरा।
घुरत[5] परेवा गीवँ उँचावा। चहै बोल तवँचूर सुनावा।
गीवँ सुराही कै असि भई। अमिय[6] पियाला[7] कारन नई।[8]
पुनि तिहि ठाउँ[9] परी तिरि रेखा। नैन ठाँव जिउ होइ सो देखा[10]।
सूरुज क्रांति करा[11] निरमली। दीसै[12] पीकि जाति हिय चली।
कंज नार[13] सोहै गिवँ हारा[14]। साजि कवँल तेहि ऊपर धारा।

नागिनि चढ़ी कवँल पर चढ़ि कै बैठ[15] कमंठ।
जो[16] ओहि काल[17] गहि[18] हाथ पसारै सो लागै[19] ओहि कंठ॥

[४८२]

कनक डंड भुज बनीं कलाई। डाँड़ी कँवल[1] फेरि जनु लाई।
चँदन गाभ[2] की भुजा सँवारी। जनु सुमेल[3] कोंवलि पौनारी[4]।

---

[४८१] १. द्वि० ७ मुंद्रा। २. प्र० १ जान। ३. द्वि० २ गीवँ मनो साँचे पर काढ़ी, कुंदेरैं जानौं कै ठाढ़ी। ४. प्र० १, २ पदुमिनि, द्वि० ६ धनि वह। ५. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, च० १ धिरिनि, द्वि० २, तृ० ३ गिरत द्वि० ६ कुरत, द्वि० ७ गुमुक्त। ६. द्वि० ६ नवपँ। ७. प्र० १ पिया के। ८. द्वि० २ में यह पंक्ति नहीं है। ९. प्र० १, २ गियँ माहँ, द्वि० ३ तिय ठाउँ। १०. प्र० १, २ घूँटत पीक लीक अस देखा (१११.६), तृ० २, ३ नैन ठाँव सो होइ जो देखा, द्वि० ७ सहस ठाँव नवै जो देखा। ११. प्र० १ क्रांति ते द्युति, प्र० २ क्रांति द्युति गिव, द्वि० १ के करा ताहि, तृ० ३ करा नित करा (उर्दू मूल) द्वि० ४ किरिनि द्युति गियँ, द्वि० ७ कीति करा, च० १ करौं द्युति गियँ। १२. प्र० १ घूटत। १३. प्र० १, द्वि० २ कुच नारँग। १४. तृ० २, च० १ सोने कै करा। १५, द्वि० ७ पीठि। १६. प्र० १, २ को। १७. तृ० १, २ कवँल। १८. प्र० १, २, द्वि० २, पं० १ कौं। १९. प्र० १ लावे।

[४८२] १. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ६, ७, पं० १ कँदलि। २. द्वि० २, ६, ३ चंदन खाँभ, तृ० २ कँवल गाँभ, पं० १ कँदलि खाँभ। ३. द्वि० ४, ५ सुबेल, तृ० ३ सो मिली। ४. द्वि० १ कवँला रसनारी, तृ० १ करवल पौनारी।

तिन्ह डाँड़िन्ह वह[५] कँवल हथोरी। एक कँवल कै दूनौ जोरी।
सहजहिं जानहुँ मेंहदी रचा। मुकुता लै जनु घुँघुची पचो[६]।
कर पल्लौ जो हथोरिन्ह साथाँ। वै सुठि रकत भरे दुहुँ हाथाँ।
देखत हिए काढ़ि जिउ[७] लेहीं। हिया काढ़ि लै जाहिं[८] न देहीं।[९]
कनक अँगूठी औ नग जरी। वह हत्यारिनि नखतन्ह भरी।

जैसनि भुजा कलाई तेहि बिधि जाइ न भाखि।
कंगन हाथ होइ जहँ तहँ दरपन का साखि॥

[४८३]

हिया थार कुच कनक कचोरा। साजे जनहुँ सिरीफल जोरा।
एक पाट जनु[१] दूनौं राजा। स्याम छत्र दूनहुँ सिर साजा।
जानहुँ लटू दुऔौ एक साथाँ। जग भा लटू चढ़ै नहिं हाथाँ।
पातर पेट आहि जनु पूरी। पान अधार फूल असि कोरौंरी[२]।[३]
रोमावलि ऊपर लट झूमा। जानहुँ दुऔ स्याम औ रूमा।
अलक भुवंगिनि तेहि पर लोटा। हेंगुरि[४] एक खेल दुइ गोटा।
बाँह पगार[५] उठे कुच दोऊ। नाग सरन उन्ह नाव न[६] कोऊ।

कैसेहुँ नवहिं न नाएँ जोबन गरब उठान।
जो पहिलें कर लावै[७] सो पाछें[८] रति[९] मान॥

---

५. तृ० ३ अध, द्वि० ४, ५, ६ सँग। ६. प्र० १, द्वि० २, ६, ३, पं० १, लिहें जानु घुंघुची, च० १ लील तेहि जनु घुंघची। ७. प्र० १ काढ़ि जनु, द्वि० ६ ओरहि। ८. प्र० १ कै लेइ, द्वि० ४. ५ कै जाइ, तृ० १ जिउ लेइ, पं० १ लै लेहिं। ९. द्वि० २ जिउ लेइ कहँ दई निरमई, देखत हिया काढ़ि लै गई।

[४८३] १. तृ० ३ पर। २. द्वि० ४, ५, तृ० ३ गोरी। ३. तृ० २ (यथा. ७) कठिन कठोरें अमीं जो पीऊ. जो भित लै धनि धनी सो जीऊ। ४. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ हियकर। ५. तृ० ३ २ पुकारि, तृ० १ कार, च० १ बकार, पं० १ सिंगार। ६. तृ० १, च० १, पं० १ पाव। ७. प्र० १ उन्ह सों पहिलहिं नवै, प्र० २, द्वि० ६ ७ उन्ह पहिलें नावैं। ८. द्वि० ४, ५ पाचै। ९. तृ० १ रस।

[४८४]

भ्रिंगि लंक जनु माँझ न लागा। दुइ खँड नलिनि माँझ जस[१] तागा।
जब फिरि चली देख मैं पाछें। आछरि इंद्र केरि जस काछें।
उजहि चली जनु भा पछिताऊ। अबहूँ दिस्टि लागि ओहि भाऊ[२]।
ओहि के गवन[३] छपि अछरीं गईं। भइँ अलोप नहिं परगट भईं।
हंस लजाइ समुँद कहँ खेले। लाज गयंद धूरि[४] सिर मेले।
जगत इस्त्रीं देखी महूँ। उदै अस्त असि नारि न कहूँ।
महि मंडल तौ अैस[६] न कोई। ब्रह्ममँडल[७] जौं होइ तो होई।

बरनी नारि तहाँ लगि दिस्टि झरोखें आइ।
औरु जो रही अदिस्टि भै[८] सो कछु बरनि न जाइ॥*

[४८५]

का धनि कहौं जैसि सुकुवारा। फूल[१] के छुएँ जाइ[२] बिकरारा।
पँखुरी लीजहि[३] फूलन्ह सेंती। सो नित डासिअ सेज सुपेती।[४]
फूल समूच रहै जो पावा। ब्याकुलि होइ नींद नहिं आवा।
सहै न खीर खाँड औ घीऊ। पान अधार रहै तन जीऊ।
नसि पानन्ह कै काढ़िअ हेरी। अधरन्ह गड़ै फाँस ओहि केरी।
मकरी क तार ताहि कर चीरू। सो पहिरें छिलि[५] जाइ सरीरू।
पालक पाँव कि[६] आछहिं पाटा[७]। नेत बिछाइअ जौं चल बाटा[८]।

---

[४८४] १. तृ० २ सूर रह। २. प्र० १ टाऊँ। ३. तृ० ३ लाज, द्वि० ७ गवन ते। ४. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० २ छार। ५. तृ० २ मिरित लोक। ६. प्र० १, २ असि तीवहु। ७. प्र० १, २ द्वि० ६, ७ सुर मंडल, द्वि० २ वहि मंडल, तृ० १, द्वि० ३, च० १, पं० १ मृत मंडल, तृ० २ अपर लोक। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ अदिष्ट महँ, अलोप भइ, द्वि० ४, पं० १ अदिष्ट धनि, च० १ अदिष्ट होइ।

* प्र० १, २, द्वि० ३ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[४८५] १. च० १ फूक। २. प्र० २ होइ। ३. प्र० २ लेहिंजो। ४. तृ० २ अतिसुकु बार फूल तन बासू। चरन कवँल अति सुगंध सो बासू। ५. प्र० १, द्वि० १, ६, तृ० २, च० १ छिनि, तृ० ३ छपि। ६. तृ० ३ पाप की, तृ० १ पावसि। ७. पं० १ बात घर हिए। ८. तृ० १, २ जो जल बाटा, पं० १ लोटनक दहिए।

घालि नयन जनु[९] राखिअ पलक, न कीजै ओट।
पेम क लुबुधा पावै[१०] काह सो बड़ का छोट॥

[४८६]

राघौ जौं अनि बरनि सुनाई। सुना साह मुरुछा गति आई।
जनु मूरति वह परगट भई। दरस देखाइ तबहिं[१] छपि गई[२]।
जो जो मँदिल पदुमिनी लेखी। सुनत सो कवँल कुमुद जेउँ देखी।
मालति होइ असि[३] चित्त पईठी[४]। और पुहुप कोइ आव न डीठी।
मन[५] है भवँर भँवै बैरागा। कँवल छाँड़ि चित[६] औरु न लागा।
चाँद के रंग सुरुज जस राता। अब नखतन्ह सौं पूँछ न बाता।
तब अलि अलाउद्दीन जग[७] सूरू। लेउँ नारि[८] चितउर कै चूरू।
जौं वह मालति मानसर अलि न बेलंबै जात।
चितउर महँ[९] जो पदुमिनी फेरि वहै कहु बात[१०]॥*

[४८७]

ऐ जग सूर कहौं तुम्ह पाहाँ। और पाँच नग चितउर माहाँ।[१]
एक हंस है पंखि अमोला। मोंती चुनै पदारथ बोला।

---

९. तृ० १ दुहुँ। १०. पं० १ बाउर।

[४८६] १. द्वि० २, ३, ४, ५ तौहि (हिंदी मूल)। २. प्र० १ जानु छपि गई, द्वि० ६, च० १ जीव लै गई। ३. द्वि० ४, ५, च० १ धनि। ४. प्र० १ हियें पईठी, द्वि० ३ जबहि बईठी। ५. प्र० १, २ मन। ६. द्वि० २ कँवल छाड़ि चित मालति लागा, च० १ मालति बास पास चित लागा। ७. प्र० १, २ द्वि० ७ अलि अला भुजंगम, द्वि० २ अलि अला चन. जग, तृ० ३ अलि आला भूजग, द्वि० ३ अलि अला भान जग, च० १ अलि अलाउदीन जग, पं० १ अलाउ चाहि मग। ८. द्वि० २ ताहि, पं० १ जाइ। ९. तृ० ३ सिंघल की। १०. द्वि० २ कहौ राघौ चेतन अब तेहि चितउर की बात।

*यह छंद तृ० १ में नहीं है, किंतु आगे के छंद का विषय बदला हुआ है, इसलिए पिछले विषय की परिसमाप्ति के लिए यह छंद प्रसंग में आवश्यक है।

[४८७] १. द्वि० १ (यथा . ७) नग अमोल ए अजहीं बाँचौं, मान समुंद दीन्ह वहि पाँचौं।

दोसर नग जेहि अँब्रित बसा[२] । सब बिख[३] हरै जहाँ लगि डसा[२] ।
तीसर पाहन परस पखाना । लोह छुवत होइ कंचन बाना ।[४]
चौथ अहै सादूर अहेरी । जेहिं बन हस्ति धरे सब घेरी ।
पाँचौं है सोनहा लागना । राज पंखि पंखी कर जना ।
हरिन रोझ कोइ बाँच न भागा । जस सैचान तैस उड़ि लागा[५] ।

नग अमोल[६] अस पाँचौं मान[७] समुँद ओहि दीन्ह[८] ।
इसकंदर नहिं पाएउ जौं रे समुँद धँसि लीन्ह[८] ।।*

[४८८]

पान दीन्ह राघौ पहिरावा । दस गज हस्ति घोर सौ पावा ।[१]
औ दोसर कंगन कर जोरी । रतन लागि तेहि[२] तीस करोरी ।[१]
लाख दिनार देवाई[३] जेंवा[४] । दारिद हरा समुद कै सेवा ।[१]
हौं जेहि देवस पदुमिनी पावौं । तोहि राघौ चितउर बैसावौं ।[१]
पहिलें कै पाँचौं नग मँठी । सो नग लेउँ जो कनक अँगूठी ।[१]
सरजा सेर पुरुख बरियारू । ताजन नाग सिंघ असवारू ।[१]
दीन्ह पत्र लिखि बेगि चलावा । चतउर गढ़ राजा पहँ आवा ।[१]

---

२. प्र० १, २ बसा जो नागिनि डसा, द्वि० ४ बसा, जहाँ लगि बसा, तृ० २ नाऊँ, होहिं जेहि नाऊं । ३. द्वि० ६ जस । ४. प्र० १, २ तीसर पाहन परस पखाना, ताब छुवैं होइ द्वादस बाना, द्वि० १ तीसर पारस आहि बखाना, लोह छुअत होइ कंचन बाना । द्वि० ७, तृ० ३ तीसर पाहन परस पखाना, पूज सो कनक दुआदस बाना । द्वि० २ पीतर नग सो परसि होइ लोना, परसे लोह होइ सब सोना । ५. प्र० १, पं० १ देखत उड़ि सचान जस लागा । ६. द्वि० १ अगम मोल । ७. प्र० १, द्वि० ६ भेंट । ८. प्र० २ में यह दोनों पंक्तियाँ नहीं हैं ।

*यह छन्द तृ० १ में नहीं है, किंतु अगले छन्द में अलाउदीन ने कहा है, 'पहिले के पाँचौं नगमूठी', और अन्यत्र कहीं इसके पूर्व उक्त पाँच नगों का कोई उल्लेख नहीं है, इसलिए यह छन्द प्रसंग में आवश्यक है ।

[४८८] १. प्र० २ में ऊपर के दोहे की अंतिम दो पंक्तियों के साथ साथ इस छंद की भी प्रथम सात—अर्थात् कुल एक छंद भर की पंक्तियाँ नहीं हैं, इनके न रहने से प्रसंग खंडित हो जाता है, इसलिए अशुद्धि प्रकट है ।
२. तृ० ३ रतन नग लेहि, द्वि० ५ रतन जो लाग वोहि । ३. प्र० १ अलाउदीन" सो जेंवाइ । ४. तृ० ३ जेंवावा ।

पत्र दीन्ह लै राजहि किरिपा लिखी अनेग।
सिंघल की जो पदुमिनी सो चाहौं यहिं[5] बेगि[6] ॥

[४८९]

सुनि[1] अस लिखा उठा जरि[2] राजा। जानहुँ दैव तरपि घन गाजा।
का मोहि सिंघ देखावसि आई। कहौं तो सारदूर लै[3] खाई।
भलेहँ सो साहि पुहमिपति भारी। माँग न कोइ पुरुख कै नारी।
जौं सो चक्कवै ता कहँ राजू। मँदिर एक[4] कहँ आपन साजू।
आछरि जहाँ इंद्र पै रावा[5]। औरु जो सुनै न देखै पावा।
कंस क राज जिता जौं कोपी[6]। कान्हहि[7] दीन्ह काहुँ कहुँ गोपी[6]।
का मोहि तें अस सूर अँगाराँ। चढ़ौं सरग औ परौं[8] पताराँ।

का तोहि जीव मरावौं सकति आन के दोस[9]।
जो तिस बुझै न समुँद जल[10] सो बुझाइ कत ओस[11] ॥

[४९०]

राजा रिसि न होहि अस[1] राता। सुनि होइ जूड़ न जरि कहु बाता[2]।

---

५. तृ० ३ एहि, तृ० १ तेंहि, तृ० २ अब। ६. प्र० १, २, पठै देउ मोहिं बेगि, द्वि० २ पठै देहु अब बेगि, द्वि० ४, ५, ६. ७, च० १ पठै देहु तेंहि बेगि।

[४८९] १. द्वि० ६ तस। २. च० १ मरि। ३. प्र० १ धै, तृ० ३ लै, च० १ धरि। ४. प्र० २ मंडलीक, च० १ मँदिर आँक। ५. तृ० १ आव। ६. च० १ कोई, कर होई। ७. द्वि० ६, तृ० ३ कान्ह न, च० १ कतहुँ न, पं० १ कंसन। ८. तृ० १ चढ़ै सरग औ चढ़ै, च० १, पं० १ चढै सरग खसि परै। ९. प्र० १ आन कर आस, च० १, आनके आस, च० १ आन के रोस। १० प्र० १ जो तिसो नहि बूझै जल, तृ० ३ जोतिस मुझै न समुँद जल, द्वि० ७ जोतिस बुझे समुँद्र जल, पं० १ जो तिस बुझै न समुँद मः॑, च० १ जो सुनि बिछै न समुद जल। ११. प्र० १ सो बूझ कत अंस, पं० १ सो बुझाइ किमि ओस।

[४९०] १. द्वि० १ सुनत कोह भा, द्वि० ३ तूँ न होहि अस। २. प्र० १, २ सनद होहि जूड़े कहु बाता, तृ० ३ सुनि होइ जूड़ निडर कहु बात, तृ० २ सुनि होइ जूड़ बूझि कहु बाता।

आवा हौं सो[3] मरै कहँ आवा। पातसाहि अस जानि पठावा।
जौं तोहि भार न औरहि लेना। पूँछिहि काल उतर है देना।
पातसाहि कहँ अैस न बोलू। चढ़ै तौ परै जगत महँ डोलू।
सूरहि चढ़त न लागै बारा। धिकै आगि तेहि सरग पतारा।
परबत उड़हिं सूर के फूँके। यह गढ़ छार[4] होइ एक झूँके।
धँसै[5] सुमेरु समुँद का पाटा। भुइँ सम होइ धरै जौं[6] बाटा।[7]

तासौं का बड़ बोलसि बैठि न चितउर खासि।
उपर लेहि[8] चँदेरी का पदुमिनि एक दासि॥

[४९१]

जौं पै घिरिहिनि[1] जाइ घर केरी। का चितउर केहि काज चँदेरी[2]।
जिअँ लेइ[3] घर कारन कोई। सो घर देइ जो जोगी होई।[4]
हौं रनथँभउर नाँह[5] हमीरू। कलपि माँथ जेइं[6] दीन्ह सरीरू।
हौं तौ रतनसेन सक बंधी। राहु बेधि जीती सैरिंधी।
हनिवँत सरिस[7] भारु मैं[8] काँधा। राघौ सरिस[9] समुँद हठि बाँधा।[10]
बिक्रम सरिस[7] कीन्ह जेइँ साका। सिंघल दीप लीन्ह जौं ताका।
ताहि सिंघ कै गहै को मोंछा। जौं अस लिखा होइ नहिं ओछा।[11]

---

3. प्र० १ आएहु इहाँ, द्वि० ४ अनु हौं इहाँ। 4. तृ० ३ आछर। 5. प्र० १, २, द्वि० ७ बहै द्वि० ६ बहै। 6. प्र० २ टरै तस, द्वि० ४ गिरै जेहि। 7. तृ० ३ सेवा करु जो जिअन तोहि फाबी, नाहिं तौ भिरे भाँग होइ जावी। (४९०.७) 8. प्र० १, २ औार जो लेहिं।

४९१] 1. द्वि० १ घरनि। 2. प्र० १ काकर चितउर कहाँ चँदेरी, पं० १ कौ न काज चितउर चंदेरी। 3. द्वि० २, तृ० १ लेइ। 4. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ जिय तौ लेइ घर कारन भोगी, घरनि सो देइ होइ जो जोगी। 5. द्वि० ३ नाहिं। 6. प्र० १ सर, प्र० २ सै,) द्वि० ६ सरि। 7. तृ० ३ सुरस (उर्दू मूल))। 8. प्र० १ जौं। 9. तृ० ३ सूर। 10. तृ० २ हनिवँत सरिस कीन्ह मैं साका। सिंघल दीप लीन्ह जो ताका। 11. प्र० १, २, द्वि० ७ ताहि सिंघ कै गहै को मोंछा। ओछ कहै कोइ होइ न ओछा। पं० १ सरवरि गाइ न काहै पोंछा। जिअत सिंघ कै गहै को मोंछा।

दरब लेइ तौ मानौं[12] सेव करौं गहि पाउ।
चाहै नारि पदुमिनी तौ सिंघल दीपहि जाउ॥

[४९२]

बोलु न राजा आपु जनाई[1]। लीन्ह उदैगिरि लीन्ह[2] छिताई।
सप्त दीप राजा सिर नावहिं। औ सँ चलीं पदुमिनी आवहिं[3]।
जाकरि सेवा करै सँसारा। सिंघल दीप लेत का बारा।
जनि जानसि तूँ गढ़ उपराहीं[4]। ताकर सबै तोर कछु नाहीं।
जेहि दिन आइ गाढ़ कै छेंकै। सरबस लेइ हाथ को टेकै।
सीस न झारु खेह के लागें[5]। सिर पुनि छार[6] होइ देखु आगें[7]।
सेवा करु जो जियनि तोहि फाबी। नाहिं तौ फेरि भाँग[8] होइ जाबी।

जाकरि लीन्हि जियनि पै[9] अगुमन सीस जोहारि।
ताकर कै सब जानै काह पुरुख का नारि॥

[४९३]

तुरुक जाइ[1] कहु मरै न धाई। होइहि इसकंदर कै नाई।
सुनि अंम्रित केदली[2] बन धावा। हाथ न चढ़ा रहा पछितावा।
उड़ि तेहि दीप पतँग[3] होइ परा। अगिनि पहार पाउ दै जरा।
धरती सरग लोह भा ताँबै। जीउ दीन्ह पहुँचब गा[4] लाँबै।

---

[12]. प्र० १ देऊँ, प्र० २, द्वि० ७ देउँ बहु।

[४९२] [1]. तृ० ३, पं० १ बोलु न राजा आपु जिताई, तृ० १ बोला राजा आपु जनाई। [2]. प्र० १ जीति, द्वि० १ आव, द्वि० ३ लेत। [3]. तृ० १ लावहिं। [4]. च० १ तोहि पाहीं। [5]. च० १ पाक न छार कंठ के लागें, पं० १ सीस : छाइ गहन के लागें। [6]. तृ० १ तन। [7]. प्र० १ सो सिर छार होइ सिर आगें, प्र० २, द्वि० ६ सो सिर छार होइ पुनि आगें। [8]. तृ० १ माँक, च० १ माँख। [9]. पं० १ चहै जब।

[४९३] [1]. प्र० १ धाइ। [2]. प्र० १, २, द्वि० २, ४, ६, ७ कजली। [3]. तृ० ३ पनिग। [4]. प्र० १, २, तृ० १ छुठि, द्वि० ४ कर।

यह चितउर गढ़ सोइ पहारू। सूर उठै धिकि[५] होइ अँगारू।
जौं पै इसकँदर सरि[६] कीन्ही। समुँद लेउ धँसि जस वै लीन्ही।
जौं छरि आने जाइ छिताई[७]। तब का भएउ जो मुक्ख जताई[८]।

महूँ समुझि अस अगुमन सँचि राखा गढ़ साजु।
कालिह होइ जेहि अवना सो चढ़ि[९] आवौ आजु॥

[४६४]

सरजा पलटि साहि पहँ आवा। देव न मानै बहुत मनावा[१]।
आगि जो जरा आगि पै सूझा। जरत रहै न बुझाएँ बूझा[२]।
ऐसें पंथ न आवै देऊ। चढ़ै सुलेमा मानै सेऊ।
सुनि कै रिसि[३] राता[४] सुलतानू। जैसे धिकै[५] जेठ कर भानू।
सहसौं करा रोस तस भरा। जेहि दिसि देखै सो दिसि जरा।
हिंदू[६] देव काह बर खाँचा। सरगहुँ[७]अब न आगि सौं[८]बाँचा[९]।
एहि जग आगि जो भरि मुँह लीन्हा। सो सँग आगि दुहूँ जग[१०] कीन्हा।

---

५. प्र० १, २, तृ० २ उठै तपि, द्वि० १ धिकै जरि। ६. प्र० १ अस। ७. प्र० १,२, द्वि० ३,तृ० १ जौ छरि आनेहु जाइ छिताई, तृ० ३ जौ अर आने जाइ छटाई (उर्दू मूल), च० १ जौ छर आगें जाइ खटाई। ८. प्र० १, द्वि० ७ छरका कहइ जो काल जिताई, प्र० २ छरका छरहि जो काल जिताई, द्वि० २ तब का भएउ जो मुक्ख छपाई, द्वि० ४, तृ० २ तबका भएउ सो जीति जिताई, द्वि० ५ तवका भएउ सो चेत चिताई, द्वि० ६ तव छर और धोइ दै जाई, च० १ तबका भएउ सो मुक्ख छुटाई, द्वि० ३, पं० १ तबका भएउ सो कालिह जनाई। ९. प्र० १, २, द्वि० ७ चलि।

[४९४] १. प्र० १ बुझावा। २. प्र० १, द्वि० २ जरतइ रहै बुझाएँ न बूझा। ३. द्वि० ४ अस (उर्दू मूल)। ४. प्र० १ नाना, द्वि० २ लागै, तृ० २ लागा। ५. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० १, २, च० १ जरै, द्वि० २, ४, ५, ७, ३ तपै। ६. प्र० १ झाकौ। ७. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ सरग न। ८. प्र० १ अब न सूर सौं, द्वि० ७ अब न काल सौं, द्वि० ४, ५, तृ० १, २, च० १ आप आगि सौं, द्वि० ३ आप न आगि सौं। ९. द्वि० ६ आँचा। १०. प्र० १ आगि दुहूँ दिसि कीन्हा, द्वि० २ दागि दुहूँ जग दीन्हा, द्वि० ७ आगि एह सँग कीन्हा।

जस रनथँभउर जरि बुझा चितउर परी सो आगि।
एहि रे बुझाएँ ना बुझै जरै दोस[11] की लागि[12] ॥

[४९५]

लिखे पत्र चारिहुँ दिसि धाए। जावँत उमरा बेगि[1] बोलाए।
डंड घाउ भा[2] इंद्र सँकाना। डोला मेरु सेस अँगिराना[3]।
धरती डोली कुरुँम खरभरा। महनारंभ[4] समुँद महँ परा।
साहि बजाइ चढ़ा जग जाना। तीस कोस भा पहिल पयाना।
चितउर सौंहँ बारिगह तानी। जहँ लगि कूच सुना सुलतानी।
उठि सरवान गँगन लहि छाए। जानहुँ राते मेघ देखाए।
जो जहँ तहाँ सूति अस जागा[5]। आइ जोहारि[6] कटक सब लागा।

हस्ति घोर दर परिगह जावँत बेसरा[7] ऊँट।
जहँ तहँ लीन्ह पलानी[8] कटक सरह घटि[9] छूट[10] ॥

[४९६]

चली पंथ परिगह[1] सुरितानी। तीख तुरंग बाँक कैकानी[2]।
पखरैं चली[3] सो पाँतिन्ह पाँती। बरन बरन औ भाँतिन्ह भाँती।

---

११. द्वि० १ कया, द्वि० ४, ५, ७, पं० १ देवस, तृ० १ सुदस, च० १ तोस।
१२. प्र० १, च० १ केहि लागि, तृ० ३ की आगि।
*प्र० १, २ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं।

[४९५] १. तृ० १, ३ मीर। २. प्र० १, २ इंद्र घाउ भा, द्वि० ३ दिनहिं गरह भा, द्वि० ६ डंड घाउ तेहि,। ३. प्र० १, च० १ अकुलाना, प्र० २, द्वि० ७ अकुलाना, द्वि० ४, ५ ओकिलाना। ४. समस्त प्रतियों में कुरुँभ (हिंदी मूल)। ५. प्र० १ मथन अरंभ, प्र० २ मँथनारँभ, द्वि० १, ४, ५, ६ महना मंथ, द्वि० ७ महाँ भार, द्वि० ३ महा अरंभ। ६. तृ० २ ठावँहिं ठावँ सूति अस जागा। ७. तृ० १, ३, पं० १ जुहाइ। ८. तृ० ३ पलानौ। ९. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७ सरह अस, द्वि० १ सरासर, द्वि० २ सरह कत, तृ० १, च० १ सरह खट, द्वि० ३ साहिकर, तृ० २ परी अस, पं० १ साह कब। १०. द्वि० ६ फूट।

[४९६] १. द्वि० ४ सहस बैसक। २. प्र० १, २ कल्यानी, द्वि० ६ कनलानी। ३. द्वि० ४ बखरे चलें।

काले कुमँइत लील सनेबी[४]। खंग कुरंग[५] बोरदुर[६] केबी[७]।
अबलक अबसर[८] अगज[९] सिराजी। चौधर चाल समुँद सब[१०] ताजी।
खुरुमुज नोकिरा जरदा[११] भले। औ अगरान[१२]बोलसिर[१३]चले[१४]।
पँच कल्यान सँजाब बखाने। महि सायर सब चुनि चुनि आने।
मुसुकी औ हिरमिजी इराकी। तुरुकी कहे भोथार बुलाकी[१५]।

सिर औ पोंछि उठाए[१६] चहुँ दिस साँस ओनाहिं।
रोस भरे जस बांउर[१७] पवन तरास[१८] उड़ाहिं।।*

[४६७]

लोहँ सारि हस्ति पहिराए। मेघ घटा जस गरजत आए।
मेघन्ह चाहि अधिक वै कारे। भएउ असूझ देखि अँधियारे।
जनु भादौं निसि आई डीठी। सरग जाइ हिरगै तिन्ह पीठी।
सवा लाख[१] हस्ती[२] जब[३] चला। परबत सरिस[४] चलत[५] जग हला।[६]
कलित[७] गयँद माँते मद आवहिं। भागहिं हस्ति गंध जहँ पावहिं।

---

४. द्वि० ४ सुपेती, तृ० १, २ सनैतो। ५. द्वि० ७ तीख तुरंगा। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ ते बोरर, द्वि० ४ बोजदुर, द्वि० ६ पूर दुर। ७. द्वि० ४ कुपैती, तृ० १, २ कनैती। ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, तृ० १, २ अब रस, द्वि० १ कहसी। ९. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, तृ० १, २, पं० १ कच्छि। १०. प्र० १ फल (भल ?)। ११. प्र० १ खुरमज नोका जरदा, द्वि० १ मुश्की हिरजी और सो, तृ० १ किरमिजी नगरा जरदा। १२. द्वि० ४ रूप करा न, तृ० १ औ करलान। १३. तृ० २ हरे बहु। १४. द्वि० १ सभजा नोकिरा बने। १५. द्वि० १ नलाकी, द्वि० ४ सलाकी, तृ० ३ खुलाकी। १६. प्र० २, द्वि० ७ जो रहहिं उठाए, द्वि० ६ जो रहहिं उँचाए। १७. प्र० १ जौ चौंकहिं, प्र० २, तृ० २ जनु चौंकहिं। १८. प्र० १ कि आस।

* इसके अनंतर द्वि० ३ में एक छंद अतिरिक्त है।

[४६७] १. द्वि० ४, ५ सोरह लाख। २. तृ० ३ परबत। ३. प्र० २ चुनि, द्वि० ६ जनु, तृ० २ सब। ४. प्र० १ सहित, तृ० ३ सुरस, पं० १ सरकि। ५. प्र० १ सकल। ६. तृ० ३ सवा लाख हस्ती दल चला, गिरि पहार डगमग सब हले। ७. प्र० २, द्वि० १, ४, द्वि० ३, च० १, पं० १ चवे, द्वि० २, ७ चलत, द्वि० ७ गलित।

ऊपर जाइ गँगन सब खसा। औ धरती तर गहि[८] धसमसा।
भा भुइँचाल चलत गज गानी। जहँ पौ धरहिं उठै तहँ पानी।

चलत हस्ति जग काँपा चाँपा सेस पतार।
कुरुँम[९] लिहें होत धरती बैठि[१०] गएउ गज[११] भार॥

[४९८]

चले सो उमरा मीर बखाने। का बरनौं[१] जस उन्हके थाने[२]।
खुरासान औ चला हरेऊ। गौर बंगाले[३] रहा न केऊ।
रहा न रूम साम सुलतानू। कासमीर ठट्ठा मुलतानू।
जावँत बीदर तुरुक कि जाती। माँडौ वाले औ[४] गुजराती।
पाटि ओडैसा[५] के सब चले[६]। लै गज हस्ति जहाँ लगि भले[७]।
काँवरू कामता औ पँडुआई। देवगिरि लेत उदैगिरि आई।
चला[८] सो परवत लेत कुमाऊँ। खसिया मगर[९] जहाँ लगि नाऊँ।

हेम[१०] सेत औ गौर गाजना[११] बंग तिलंग सब लेत।
सातौ दीप नवौ खँड[१२] जुरे आइ एक खेत॥[१३]

[४९९]

धनि सुलतान जेहिक संसारू। उहै कटक अस जोरै पारू[१]।

---

८. प्र० १, द्वि० ७ औ सब तर धरती, प्र० २, द्वि० ६ औ तर सब धरती।
९. समस्त प्रतियों में कुरुँभ (हिंदी मूल)। १०. तृ० ३ पीठि। ११. प्र० १ तेहि, द्वि० ७ जग, तृ० ३ कछु,

[४९८] १. तृ० १ जानौं। २. तृ० १, २ बाने। ३. प्र० २ उदै अस्त लहु, द्वि० ६, ७ कुलि बंगाल, च० १ काबुल अरब। ४. प्र० १, २ माड़ौ लेत चले, द्वि० ७ माड़वाली औ। ५. प्र० १, २, द्वि० ७ पटह ओड़ैसा, द्वि० ४, ५ पटना ओड़ैसा, तृ० ३ पाटौ देसा (उर्दू मूल), द्वि० ४ बाहु ओडैसा, तृ० १ बैठा ओडैसा। ६. द्वि० १ आए। ७. द्वि० १ चले सब धाए। ८. प्र० २, द्वि० ७ जुमिला। ९. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ७, तृ० ३, पं० १ नगर। १०. तृ० ३ मेह। ११. द्वि० १ गढ़ गंजन। १२. प्र० १, २ द्वि० २ नवौ खँड पिरथिमी, द्वि० ७ जहाँ लगि। १३. द्वि० ४, ५, ६, च० १।

उदै अस्त जहवाँ लहि दीसै को जानै तेहि नावँ।
सातौ दीप नवौ खँड जुरेआइ एक ठावँ॥

[४९९] १. तृ० ३ संसारा, जुरवै पारा, द्वि० ४, ५ संसारा, जुरै अपारा।

सबै तुरुक सिरताज बखाने। तबल बाज औ बाँधे बाने।
लाखन्ह मीर बहादुर[१] जंगी। जंत्र[२] कमानैं तीर खडंगी[३]।
जेबा खोलि[४] राग सों मढ़े। लेजिम[५] घालि इराकिन्ह चढ़े।
चमकैं पखरैं सारि सँवारीं। दरपन चाहि अधिक उजियारीं।
बरन बरन औ पाँतिहि पाँती। चली सो सैना भाँतिहि भाँती।
बेहर बेहर सब कै बोली। बिधि यह खानि[६] कहाँ सौं खोली।

सात सात जोजन कर एक एक[७] होइ[८] पयान।
आगिल जहाँ पयान होइ पाछिल तहाँ मेलान ॥*

[५००]

डोले गढ़ गढ़पति सब काँपे। जीउ न पेट हाथ हिय चाँपे[१]।
काँपा रनथँभउर डरि[२] डोला। नरवर[३] गएउ झुराइ न[४] बोला।
जूनागढ़ औ चंपानेरी। काँपा माँडौ लेत चँदेरी।
गढ़ गवालियर[५] परी मथानी। औ खंधार[६] मठा होइ पानी।
कालिंजर महँ परा भगाना। भाजि अजैगिर[७] रहा न थाना।
काँपा बाँधौ नर औ प्रानी[८]। डर[९] रोहितास बिजैगिरि मानी[१०]।
काँप उदैगिरि देवगिरि डरा[११]। तब सो छिताई अब केहि[१२] धरा[११]।

---

२. प्र० २, जंबूर, द्वि०, २, ४, ६, च० १, पं० १ चित्र। ३. प्र० १, २ तुफंगी, तृ० ३ खतंगी। ४. च० १ कहीं। ५. तृ० ३, च० १ केजिम। ६. तृ० ३ भैखानि, द्वि० २ मैं कौन। ७. प्र० २ दिन। ८. द्वि० १ कीन्ह, तृ० १ लिखा।

* प्र० १, २ द्वि० ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५००] प्र० १ सूरति वेसूरति होइ सो गई, भरउँच भार न अँगवै दई। २. प्र० १ तीहू नान कर। ३. प्र० २ पवंर। ४. तृ० १ हेराइ। ५. प्र० १ सो। ६. द्वि० ७ खीडारे। ७. प्र० १, २ उदैगिरि, द्वि० २ अजैगढ़, द्वि० ४ औ जैगढ़, द्वि० ३ राजगिरि, पं० १ अजमेर। ८. प्र० १ नौव करोरी, प्र० २ नरौ करोरी, द्वि० १ औ नरपानी, द्वि० ४ नरवर रानी। ९. च० १ गढ़। १०. प्र० १, २ मोरी। ११. प्र० १, २ कहा, अहा, द्वि० २ कहा, चढा। १२. द्वि० ४, तृ० ३, छुटाइ अबहि गहि, तृ० १ छत्र गरब कर।

जावँत गढ़ गढ़पति सब काँपे औ डोले जस पात।
का कहँ बोलि[13] सौहँ भा पातसाहि कर छात ॥[14]*

[५०१]

चितउर गढ़ औ कुंभलनेरै। साजे दूनौ जैस सुमेरै[1]।
दूतन्ह आइ कहा जहँ राजा। चढा तुरुक आवै दर साजा।
सुनि राजैं दौराई पाती। हिंदू नाँव[2] जहाँ लगि जाती।
चितउर हिंदुन्ह कर अस्थानू। सतुरु तुरुक हठि कीन्ह पयानू।
आवा समुँद रहै नहिं बाँधा। मैं[3] होइ मेंड़ भार सिर काँधा।
पुरवहु आइ तुम्हार बड़ाई। नाहिं त[4] सत गौ छाँड़ि पराई[5]।
जौ लगि मेंड़ रहै सुख साखा। टूटे बार जाइ नहिं राखा।

सती जो जिय महँ सतु करै मरत न छाड़ै[6] साथ।
जहँ बीरा तहँ चून है पान सुपारी काथ[7] ॥

[५०२]

करत जो राय साहि कै सेवा। तिन्ह कहँ पुनि[1] अस[2] आउ परेवा।
सब होइ एकहि मतें सिधारै[3]। पातसाहि कहँ आइ जोहारैं।[4]

---

१३. प्र० १, २ काकहँ कोपि, द्वि० १ काकहँ चाँपि। १४. प्र० १
देस देस सब परा भगाना जो जहँ तहँ भै भेट।
औंचक औंचक परे न कोइ चित वहि चहूँ सो चेति।

* प्र० १, २, द्वि० ६, ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५०१] १. प्र० १ जैसलमेरी, प्र० २, द्वि० ७ जैस सुमेरी (उर्दू मूल), तृ० ३ लेत चँदेरी। २. प्र० १, २ राइ। ३. प्र० १, द्वि० ७ सेइ। ४. प्र० १ नातर। ५. द्वि० ४, ५ सब कहँ मारि चढ़ाई, तृ० १, पं० १ सत को मारि छँड़ाई। ६. तृ० ३ चाहै ७. प्र० १ साथ।

[५०२] १. तृ० ३, च० १ तिन्हहू कहँ। २. प्र० १ एके, तृ० ३ निसि, च० १ पुनि। ३. तृ० १ बर द्वारे। ४. द्वि० १ सब मिलि एक मसलहत भाई, पाति साहि कहँ सर की नाई।

सबै तुरुक सिरताज बखाने। तबल बाज औ बाँधे बाने।
लाखन्ह मीर बहादुर जंगी। जंत्र[2] कमानैं तीर खडंगी[3]।
जेबा खोलि[4] राग सौं मढ़े। लेजिम[5] घालि इराकिन्ह चढ़े।
चमकैं पखरैं सारि सँवारीं। दरपन चाहि अधिक उजियारीं।
बरन बरन औ पाँतिहि पाँती। चली सो सैना भाँतिहि भाँती।
बेहर बेहर सब कै बोली। बिधि यह खानि[6] कहाँ सौं खोली।

सात सात जोजन कर एक एक[7] होइ[8] पयान।
आगिल जहाँ पयान होइ पाछिल तहाँ मेलान॥*

[५००]

डोले गढ़ गढ़पति सब काँपे। जीउ न पेट हाथ हिय चाँपे[1]।
काँपा रनथँभउर डरि[2] डोला। नरवर[3] गएउ झुराइ न[4] बोला।
जूनागढ़ औ चंपानेरी। काँपा माँडौ लेत चँदेरी।
गढ़ गवालियर[5] परी मथानी। औ खंधार[6] मठा होइ पानी।
कालिंजर महँ परा भगाना। भाजि अजैगिर[7] रहा न थाना।
काँपा बाँधौ नर औ प्रानी[8]। डर[9] रोहितास बिजैगिरि मानी[10]।
काँप उदैगिरि देवगिरि डरा[11]। तब सो छिताई अब केहि[12] धरा[11]।

---

२. प्र० २, जंबूर, द्वि०, २, ४, ६, च० १, पं० १ चित्र। ३. प्र० १, २ तुफंगी, तृ० ३ खतंगी। ४. च० १ कहौं। ५. तृ० ३, च० १ केजिम। ६. तृ० ३ भैखानि, द्वि० २ मैं कौन। ७. प्र० २ दिन। ८. द्वि० १ कीन्ह, तृ० १ लिखा।

* प्र० १, २ द्वि० ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५००] प्र० १ सूरति वेसूरति होइ सो गई, भरउँच भार न अँगवै दई। २. प्र० १ तोहू नान कर। ३. प्र० २ पवंर। ४. तृ० १ हेराइ। ५. प्र० १ सो। ६. द्वि० ७ खीढारे। ७. प्र० १, २ उदैगिरि, द्वि० २ अजैगढ़, द्वि० ४ औ जैगढ़, द्वि० ३ राजगिरि, पं० १ अजमेर। ८. प्र० १ नौव करोरी, प्र० २ नरौ करोरी, द्वि० १ औ नरपानी, द्वि० ४ नरवर रानी। ९. च० १ गढ़। १०. प्र० १, २ मोरी। ११. प्र० १, २ कहा, अहा, द्वि० २ कहा, चहा। १२. दि० ४, तृ० ३, छुटाइ अबहि गहि, तृ० १ छत्र गरब कर।

जावँत गढ़ गढ़पति सब काँपे औ डोले जस पात।
का कहँ बोलि[13] सौहँ भा पातसाहि कर छात ॥[14]*

[५०१]

चितउर गढ़ औ कुंभलनेरै। साजे दूनौ जैस सुमेरै[1]।
दूतन्ह आइ कहा जहँ राजा। चढा तुरुक आवै दर साजा।
सुनि राजैं दौराई पाती। हिंदू नाँव[2] जहाँ लगि जाती।
चितउर हिंदुन्ह कर अस्थानू। सतुरु तुरुक हठि कीन्ह पयानू।
आवा समुँद रहै नहिं बाँधा। मैं[3] होइ मेंड़ भारु सिर काँधा।
पुरवहु आइ तुम्हार बड़ाई। नाहिं त[4] सत गौ छाँड़ि पराई[5]।
जौ लगि मेंड़ रहै सुख साखा। टूटे बार जाइ नहिं राखा।

सती जो जिय महँ सतु करै मरत न छाड़ै[6] साथ।
जहँ बीरा तहँ चून है पान सुपारी काथ[7] ॥

[५०२]

करत जो राय साहि कै सेवा। तिन्ह कहँ पुनि[1] अस[2] आउ परेवा।
सब होइ एकहि मतें सिधारै[3]। पातसाहि कहँ आइ जोहारै।[4]

---

१३. प्र० १, २ काकहँ कोपि, द्वि० १ काकहँ चाँपि। १४. प्र० १
देस देस सब परा भगाना जो जहँ तहँ भै भेट।
औचक औचक परे न कोइ चित वहिं चहूँ सो चेति।

* प्र० १, २, द्वि० ६, ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५०१] १. प्र० १ जैसलमेरी, प्र० २, द्वि० ७ जैस सुमेरी (उर्दू मूल), तृ० ३ लेत चँदेरी। २. प्र० १, २ राइ। ३. प्र० १, द्वि० ७ सेइ। ४. प्र० १ नातर। ५. द्वि० ४, ५ सब कहँ मारि चढ़ाई, तृ० १, पं० १ सत को मारि छँड़ाई। ६. तृ० ३ चाहै ७. प्र० १ साथ।

[५०२] १. तृ० ३, च० १ तिन्हहू कहँ। २. प्र० १ एके, तृ० ३ निसि, च० १ पुनि। ३. तृ० १ बर द्वारे। ४. द्वि० १ सब मिलि एक मसलरत भाई, पाति माहि कहँ सर की नाई।

चितउर है हिंदुन्ह कै माता। गाढ़ परें तजि जाइ न नाता।
रतनसेनि है[5] जौहर साजा। हिंदुन्ह माँह अहै बड़ राजा।
हिंदुन्ह केर पनिग कर लेखा। दौर[6] परहिं आगि जहँ[7] देखा।
किरिपा करसि त[8] करसि समीरा[9]। नाहिं त हमहिं देहि हँसि बीरा।
हम पुनि जाइ मरहिं ओहि ठाऊँ। मेटि न जाइ लाज कर नाऊँ।[10]

दीन्ह साहि हँसि बीरा आवहिं तीन दिन[11] बीच।
तिन्ह सीतल को राखे जिन्हैं आगि महँ मीच॥

[५०३]

रतनसेनि चितउर महँ[1] साजा। आइ बजाइ पैठ सब राजा।
तोंवर बैस पवाँर जो आए। औ गहिलौत आइ सिर नाए।
खत्री[2] औ पँचबान बघेले। अगरवार चौहान चँदेले।
गहरवार परिहार सो कुरी। मिलन हंस ठकुराई जुरी[3]।
आगे ठाढ़ बजावहिं हाड़ी[4]। पाछें धजा मरन कै काढ़ी।
बाजहि सींग संख औ तूरा। चंदन घेवरें भरें सेंदूरा।
सँचि संग्राम बाँधि सत साका। तजि कै जिवन मरन सब ताका।

गँगन धरति जेइँ टेका का तेहिं गरुअ पहार।
जब लगि जीव कया महँ परै सो अँगवै भार॥*

---

५. च० १ जहँ। ६. द्वि० ७ धाइ। ७. प्र० १ दीपक जहँ, प्र० २ दीपक नहिं। ८. तृ० ३ तौ। ९. प्र० १, २ दया (कृपा-प्र० २) करहु तौ बाँधहु धीरा। १०. तृ० ३ पातिसाहि तू पुहुमि गोसाईं, आजु चित चढ़ा चितउर की नाईं। ११. प्र० १, २ कीन्ह तीन दिन, तृ० ३ दीन तीन दुइ।

[५०३] १. द्वि० १ चितउर गढ़, तृ० ३ जहँ जौहर। २. प्र० २, तृ० ३ छत्री। ३. तृ० १ गहरवार परिहार सो आए, मरत हंस जुरे ठकुराए। ४. तृ० ३ ठाढो।

* प्र० १, २, द्वि० ६ में तीसरी अर्द्धाली के अनंतर आठ, और छटी अर्द्धाली के अनंतर एक, कुलनौ अर्थात् एक छंद की अतिरिक्त पंक्तियाँ हैं। (देखिए परिशिष्ट)

प्र० २ में इस छंद के अनंतर चार अतिरिक्त छंद हैं, जो प्र० १ में छन्द ५११ के अनंतर आते हैं। (देखिए परिशिष्ट)

द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु पिछले छंद में रत्नसेन ने जो निमंत्रण भेजा है उसका क्या प्रभाव हुआ, इसके बताने के लिए प्रसंग में यह छंद आवश्यक है।

[५०४]

गढ़ तस सँचा जो चाहिअ सोई[१] । बरिस बीस[२] लहि खाँग न होई ।[३]
बाँकें चाहि बाँक सुठि[४] कीन्हा । औ सब कोट चित्र कै लीन्हा ।[५]
खंड खंड चौखंडी सँवारीं । धरी बिखम गोलन्ह की नारीं ।
ठाँवहि ठाँव लीन्ह गढ़ बाँटी । बीच न रहा जो सँचरै[६] चाँटी ।
बैठे धानुक कँगुरहि कँगुरा । पुहुमि न आँटी[७] अँगुरहि अँगुरा ।
औ बाँधे गढ़ि गढ़ि मतवारे । फाटै छाति[८] होहिं जिवधारे[९] ।
बिच बिच बुरुज बने[१०] चहुँ फेरी । बाजैं तबल ढोल औ भेरी ।[११]

भा गढ़ गरजि[१२] सुमेरु जेंउ[१३] सरग छुवै पै चाह ।
समुँद[१४] न लेखें लावै गाँग सहस[१५] मकु बाह[१६] ।।*

[५०५]

पातसाहि हठि कीन्ह पयाना । इंद्र फनिंद्र[१] डोलि डर माना ।

---

[५०४] १. प्र० १, द्वि० ४, ५, ३ कोई । २. द्वि० १ साठि, द्वि० ६ तीस । ३. तृ० १, तस गढ़ लाग सँजोवना होई, बत्तिस बरिस लहि खाँग न कोई । ४. प्र० २, द्वि० ४, ५, पं० १ गढ़ । ५. प्र० १, द्वि० १ बाँके पर सुठि बाँककई । औ सब (रातिहि—द्वि० १) कोट चित्र कै लेई । ६. तृ० ३ चढही जो । ७. द्वि० १ बाँटिन आंटै, तृ० १ पुहुमि न उठ्ठी । ८. प्र० १, २ डोलै धरति । ९. द्वि० १ तरै नहिं तारे, तृ० ३ होहिं जौं टारे, पं० १ होहिं जौ दारे । १०. प्र० १ गढ औ, प्र० २ राखे । ११. तृ० १ खंड खँड सीढी भई जो गरेरी, उतरै चढै लोग चहुँ फेरी । (३१·४) १२. द्वि० ३ गरगज । १३. द्वि० २, ३, तृ० ३ भा गढ गरजि सरग जेउँ । १४. तृ० १ गँगन । १५. प्र० १ गँगन सहस, तृ० १ और जो हसि । १६. प्र० २, द्वि० ६ मकु काह, द्वि० ४, ५, पं १ मुख चाह, द्वि० ३, च० १ मुख काह, तृ० ३ मुख बाह ।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु गढ़ की तैयारी का वर्णन प्रसंग में आवश्यक लगता है, इसलिए यह छंद भी प्रसंगोचित है ।

[५०५] १. द्वि० १ ब्रंभ, तृ० ३ ब्रह्मंड ।

नबे[२] लाख असवार सो[३] चढ़ा। जो देखिअ सो लोहैं मढ़ा।[४]
चढहिं पहारन्ह भै गढ़ै लागू। बनखँड खोह न देखहिं[५] आगू।
बीस सहस घुम्मरहिं निसाना। गल गाजहिं बिहरै असमाना।
बैरख ढाल गँगन गा छाई। चला कटक धरती[६] न समाई।
सहस पाँति गज हस्ति चलावा। खसत अकास धँसत भुइँ[७] आवा।
बिरिख उपारि पेंड़ सौं लेहीं। मस्तिक झारि डारि मुँह देहीं।

कोउ काहू न सँभारै होत आव तस चाँप।
धरति आपु कहँ काँपै सरग आपु कहँ काँप ॥*

[५०६]

चलीं कमानैं जिन्ह मुख गोला। आवहिं चलीं धरति सब डोला।
लागे चक्र बज्र के गढ़े। चमकहिं रथ सब सोने मढ़े।
तिन्ह पर बिखम कमानैं धरीं। गाजहिं[१] अस्ट धातु की भरीं[२]।
सौ सौ मन पीअहिं वै दारू। हेरहिं[३] जहाँ सो टूट पहारू।
माँती रहहिं रथन्ह पर परी। सतुरुन्ह कहँ सो होहिं उठि खरी।
लागहि जौं संसार न डोलहिं। होइ भौकंप जीभ जौं खोलहिं।
सहस सहस[४] हस्तिन्ह कै पाँती। खाँचहिं रथ[५] डोलहिं नहिं माँती।

नदी नगर सब पानी[६] जहाँ धरहिं वै पाउ।
ऊँच खाल बन बेहड़ होत बराबरि आउ ॥

---

२. द्वि० ४, ५, च० १ नवे (हिंदी मूल?)। ३. प्र० २, द्वि० ४, ५, ६, ७ जो, तृ० ३ क। ४. पं० १ में यह पंक्ति नहीं है। ५. प्र० १ सूझहि। ६. प्र० १, २ पं० १ कतहूँ। ७. प्र० १, २ धँसत महि, द्वि० २ दिस्टि नहिं।

* तृ० १ में यह छंद नहीं है, किंतु आगे के प्रसंग के लिए और आगे वाले छंद के विषय के लिए यह अनिवार्य है, इसी में बादशाह के प्रयाण का उल्लेख है।

[५०६] १. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७ साँचे, तृ० ३, च० १, पं० १ काँचै। २. द्वि० १ तृ० ३ मढी। ३. प्र० २ भिरहिं। ४. द्वि० १ चली। ५. प्र० १, २, पं० १ जोरे रथन्हि। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ सब पाटिगौ, द्वि० १ सब फाटेउ, तृ० ३ औ पानी।

[५०७]

कहौं सिंगार सो जैसी[१] नारीं । दारू पिअहिं सहज[२] मँतवारी ।
उठै[३] आगि जौं छाँड़हिं स्वाँसा । तेहिं डर कोउ रहै नहिं पासा[४] ।
सेंदुर आगि[५] सीस उपराहीं । पहिया[६] तरिवन झमकत[७] जाहीं ।
कुच गोला दुइ हिरदैं लाए । अंचल धुजा रहहिं छिटकाए ।
रसना गूँगि[८] रहहिं मुख खोले[९] । लंका जरी सो उन्हके बोले[९] ।
अलकैं साँकरि हस्तिन्ह गीवाँ । खाँचत डरहिं मरहिं सुठि जीवा ।[११]
बीर सिंगार दुवौ एक ठाऊँ[१२] । सुतुरु साल गढ़ भंजन नाऊँ[१३] ।

तिलक पलीता तुपक तन[१४] दुहुँ दिसि[१५] अञ्ज[१६] के बान[१७] ।
जहँ हेरहिं तहँ परै भगाना[१८] हँसहिं त[१९] केहि के मान[२०] ॥

---

[५०७] १. द्वि० ५, ६, पं० १ जैसि वै नारीं, द्वि० १ जैसि मतवारीं, द्वि० २ जो जैसी नारी । २. द्वि० ४, ५ जैसि । ३. प्र० १, २, द्वि० १, पं० १ उठहिं, तृ० ३ उड़हि । ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, पं० १ धुवाँ सो लागै जाइ अकासा, द्वि० २ तहँ कोउ और आव नहिं पासा, तृ० १ तेहि डर छाँडि रहै को पासा । ५. प्र० १ माँग, च० १ राक (राग) । ६. द्वि० १ पहिरैं, तृ० १ बिछुआ । ७. द्वि० ४, ५, च० १ चमकत । ८. प्र० १ डोल, प्र० २ गोज़ि, द्वि० १ कोर, द्वि० २ पोल, तृ० ३ कोख, द्वि० ४ लैाग, द्वि० ५, ३ लैाक, द्वि० ६, तृ० १, च० १, पं० १ कूंक, द्वि० ७ गोक, तृ० २ कोक । ९. द्वि० १ बाए, लाए । ११. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ७, तृ० १, च० १, पं० १ अलक जँजीर फेरि गियँ बाँधे, खाँचहिं हस्ती टूटहिं काँधे । १२. द्वि० २ साथा, माथा । १३. प्र० १, २, पं० १ तबहुँ न डोलहिं मारग दूरी, मरहिं भार सिर मेलहिं धूरी । १४. प्र० १, द्वि० ४, ५, ६, पं० १ माथें, प्र० २, द्वि० २, ७, तृ० २, च० १ नैन । १५. तृ० ३, च० १ ओन्ह दिसि, प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ दसन । १६. प्र० १, २ बीज के, द्वि० ७ बीजुरी । १७. द्वि० ३ तान । १८. द्वि० १ जहाँ पाँइ तहँ हेर आना, द्वि० ४ जहँ हेरहिं तहँ मारहिं, द्वि० ६, पं० १ बोलत परै भगाना । १९. द्वि० २ न । २०. द्वि० २, तृ० ३ हठहिं तो केहि के मान, द्वि० ४, ५ चुरकुस करहिं निदान, द्वि० ३ सुनतहि तन कै बान, तृ० २ सुनहिं तो चूरम नान, च० १ हँसहिं तो केहि के बान ।

[५०८]

जेहि जेहि पंथ चली वै आवहिं । आवै जरत[1] आगि तसि लावहिं ।
जरहिं सो परबत लागि अकासा । बन खँड ढंख परास को पासा[2] ।
गैंड[3] गयंद जरे भए कारे । औ बन[4] मिरिग रोझ झौंकारे ।
कोकिल काग नाग औ भँवरा । औरु जो जरहिं[5] तिन्हैं को सँवरा ।
जरा समुंद्र पानि भा खारा । जमुना स्याम भई तेहिं झारा ।
धुआँ जामि[6] अंतरिख भै मेघा । गँगन स्यामु भै भार न[7] थेंघा ।
सूरुज जरा चाँद औ राहू । धरती जरी लंक भा डाहू ।

धरती सरग असूझ भा तबहुँ[8] न आगि बुझाइ[9] ।
अहुठौ बज्र दिन कोई[10] मारा चहै जुझाइ[11] ॥

[५०९]

आवै डोलत सरग पतारू । काँपै धरति न अँगवै भारू[1] ।
टूटहिं[2] परबत मेरु पहारा । होइ होइ चूर उड़हिं[3] होइ[4] छारा[1] ।
सत खँड धरति भई खट खंडा । ऊपर अस्ट भए ब्रह्मंडा ।
इंद्र आइ तेहि खँड होइ छावा । औ[5] सब कटक घोर दौरावा ।

---

[५०८] १. पं १ बरत । २. द्वि० १ जो पासा, तृ० १ को नासा । ३. तृ० ३ गेंद (उर्दू मूल) । ४. द्वि० ५, च० १ आवइँ । ५. द्वि० १ तरै । ६. द्वि० ५, च० १ स्याम । ७. द्वि० ५ धुवाँ जो, च० १ भार को । ८. तृ० ३ नीर, च० १ आवहिं । ९. प्र० १,२ पंथ न आगे सुझाइ, द्वि० १ तबहुँ न आगि बुताइ । १०. प्र० २ आठौं बज्र दुंगवै जोरा, द्वि० ४, ५ अहुठौं बज्र जड़ि देगवै । ११. प्र० १ मारा छपै जुझाइ. द्वि० ४, ५ घूम रहै जग छाइ, द्वि० ७ मारै चहै बुझाइ, च० १ मारा चहै जो जाइ ।

[५०९] १. द्वि० १ में .१ के दूसरे चरण के स्थान पर .२ का दूसरा चरण और इसी प्रकार, .२ के दूसरे चरण के स्थान पर .१ का दूसरा चरण है । २. प्र० १ डोलै । ३. पं० १ तमकि कै चरै जानहुँ । ४. प्र० १, २, द्वि० ३ जसि, द्वि० ७ जो, तृ० १ तेहि । ५. प्र० १, २, द्वि० ५, पं० १ चढ़ि ।

जेहि पँथ चला एरापति[६] हाथी। अबहुँ सो डगर गँगन महँ आथी[७]।
औ जहँ[८] जामि रही वह धूरी। अबहुँ बसी सो हरिचँद पूरी।
गँगन छपान खेह तसि छाई। सूरुज छपा रैनि होइ आई।

इसिकंदर केदली[९] बन गवने[१०] अस[११] होइ गा अँधियार।
हाथ पसार न सूझै[१२] बरै[१३] लागु मसियार॥

[५१०]

दिनहिं राति अस परी अचाका। भा रवि अस्त चंद रथ हाँका।
दिन के पंखि चरत[१] उठि भागे। निसि के निसरि चरै[२] सब लागे।
मँदिलन्ह दीप जगत[३] परगसे। पंथिक चलत[४] बसेरै बसे।
कवँल सँकेता कुमुदिनि फूली। चकई बिछुरि[५] अचक मन[६] भूली।
तैस चलावा कटक[७] अपूरी। अगिलहि पानी पछिलहि धूरी।
महि उजरी सायर सब सूखा। बनखँड रहा न एकौ रूखा।
गिरि[८] पहार पब्बै[९] भे माँटी। हस्ति हेरान तहाँ को चाँटी।

---

६. द्वि० १ जेहि जहि पँथ चलि आवहि। ७. प्र० १, २, प० १ सो पथ गँगन डगर अस आथी, द्वि० ६, ७ सो पव अवहु गँगन महँ आथी। ८. द्वि० ६ तहँ, च० १ चहुँ। ९. द्वि० ५ कजली। १०. द्वि० १ कजली वन जारा, द्वि० ४ कजली गवने, द्वि० ७ जो गए कदली वन, पं० १ जो चला कदली वन। ११. द्वि० ५, च० १ तस। १२. प्र० १ हाथ न सूझै। १३. तृ० १, द्वि० ३ परै।

[५१०] १. तृ० ३ जरत (उर्दू मूल)। २. तृ० ३ जरै (उर्दू मूल)। ३. प्र० १ निसि दीपक, द्वि० २ दीप चंद, तृ० २ जो नित। ४. प्र० १ जाइ, प्र० २, पं० १ पंथ, द्वि० ६ जानु। ५. द्वि० १ अचकि, द्वि० ६ दिनहि। ६. प्र० १, २ अचक्का, द्वि० १ चलत सो, द्वि० २, तृ० २ जगत मन, च० १ जक मन। ७. प्र० २, ५ चला कटक अस चढा। ८. द्वि० ५, च० १ गढ। ९. तृ० ३ पुबै (हिंदी मूल), द्वि० ४, ५ फूटि, तृ० २ सबै, च० १ पटे, द्वि० ३ आए।

जिन्ह जिन्ह के घर[१०] खेह हेराने[११] हेरत[१२] फिरहिं ते खेह।
अब तौ[१३] दिस्टि तबहिं[१४] पै आवहिं[१५] उपजहिं[१६] नए[१७] उरेह[१८] ॥

[५११]

एहि बिधि होत पयान सो[१] आवा। आइ साहि[२] चितउर नियरावा।
राजा राउ[३] देखि सब[४] चढ़ा। आउ कटक सब लोहैं[५] मढ़ा।
चहुँ दिसि दिस्टि परी गज जूहा। स्याम घटा मेघन्ह जग रूहा[६]।
अरध उरध कछु सूझ न आना। खरग लोह[७] घुम्मरहिं निसाना[८]।
बैरख ढाल गँगन भै छाहाँ[९]। रैनि होत आवै दिन माहाँ।
चढ़ि धौरहर देखहिं रानी। धनि तूँ असि जाकर सुलतानी[१०]।
कै धनि रतनसेनि तूँ राजा। जाकहँ बोलि[११] कटक अस साजा।

अंध कूप भा आवै उड़त आव तसि[१२] छार।
ताल तलाव अपूरि गढ़[१३] धूरि[१४] भरी जेंवनार ॥*

---

१०. तृ० ३ खुर। ११. प्र० १, द्वि० ६, ७ खेत उड़ाने, प्र० २ खेहरानि, द्वि० १ खेह भुलाने। १२. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ ढूंढत। १३. द्वि० ५ सो। १४. प्र० २ नाहिं, द्वि० ४, ५, ६, पं० १ तबहि (हिंदी मूल), द्वि० १ तब। १५. पं० १ दिस्टि तबहिं पै आवहिं। १६. द्वि० ३ कीजै। १७. प्र० २ नैन। १८. तृ० १ सँदेह।

[५११] १. प्र० १, २, पं० १ जो। २. तृ० १ पातसाहि। ३. प्र० १ राँक। ४. प्र० १, २ गढ़। ५. प्र० १, २ आइन। ६. प्र० १ जनु मेघ समूहा, द्वि० १ मेघन्हि मोहिं रूहा, द्वि० २, तृ० २ मेघन्ह जग ऊहा, द्वि ७ मेघन्ह गज जूहा। ७. द्वि० १ लौकै खाँड। ८. प्र० १, २ भा अँदोर जब घुमर निसाना। ९. प्र० २, द्वि० ४, ५, च० १ केरि परिछाहीं, माहीं, द्वि० १ तक लाहीं, माहीं। १० द्वि० १ धनि सुलतान कटक जेइँ आनी, तृ० ३ धनि अस्तुति जाकरि सुलतानी। ११. द्वि० २ तुरक। १२. प्र० १ उठै झोल बहु, प्र० २ उड़ै झोल बहु, पं० १ अस उड़ै झोल औ। १३. द्वि० १ पोखरी, द्वि० ४, ५ पोखर, द्वि० ७ अपूरि गा, द्वि० ३ अपूरि घर, च० १ पूरि गढ़। १४. तृ० १, २ आइ।

*प्र० १ में इसके अनन्तर चार अतिरिक्त छन्द हैं, जो प्र० २ में ५०३ के अनन्तर आए हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[५१२]

राजैं कहा कीन्ह सो[1] करना। भएउ असूझ सूझ जस[2] मरना।
जहँ लगि राज साज सब होऊ। तेतखन भएउ सँजोउ सँजोऊ।
बाजे तबल अकूत[3] जुझाऊ। चढ़ा कोपि सब राजा[4] राऊ।
राग सनाहा पहुँची टोपा[5]। लोहैं सार पहिरि[6] सब कोपा।
करहिं तोखार पवन सों रीसा। कंध ऊँच असवार न दीसा।
का बरनौं जस ऊंच तोखारा। दुइ पैरीं[7] पहुँचै[8] असवारा[9]।
बाँधे मौर छाँह[10] सिर सारहिं। भाँजहिं[11] पूँछि चाँवर जनु ढारहिं।

टैआ[12] चँवर बनाए औ घाले गज[13] झाँप[14]।
औ गज गाह सेत तिन्ह बाँधे[15] जो देखै सो[16] काँप[14]॥

[५१३]

राज तुरंगम बरनौं काहा। आने छोरि[1] इंद्र रथ बाहा।
अैस तुरंगम परे न डीठी। धनि असवार रहहिं तिन्ह पीठी।

---

[५१२] १. द्वि० १ जौ, तृ० २ पै। २. द्वि० १, ६ भएउ असूझ सूझ अब, तृ० १ भएउ असूझि जूझ अब, तृ० २ तेहि अब सूरुज बूझि लै। ३. द्वि० २, ३, ४, ५, च० १, पं० १ अकूट। ४. प्र० १ राना। ५. प्र० १ राज सनाह सरे औ टोपा, प्र० २ राज सबाह दस्त सिर टोपा, द्वि० १ रंग सँभारू और सम टोपा, तृ० ३ राज सनाह बाँह जू टोपा, द्वि० २, ३, ४, ५, ६ तृ० १, २, च०१, पं० १ राग सँबाहा पहन चू टोपा। ६. द्वि० १ चढ़े। ७. प्र० १, द्वि० ७ पवरी, प्र० २ पावरी। ८. पं० १ चाढ़ चढ़। ९. द्वि० १ भाँजहिं पँछि मौर तस ढारहिं। १०. प्र० १, द्वि० १ मौर छत्र, च० १ मौन छाँह। ११. द्वि० ६ धावहिं, द्वि ७ धावत। १२. द्वि० ४, ५, ६, पं० १ तैसै, तृ० १ नय्या, च० १ तैस। १३. द्वि० १ सब, द्वि० २ ३, ६, तृ० १, २, जग, द्वि० ४, ५ गल। १४. द्वि० ६ हस्त, नस्ट। १५. प्र० २ सेत तिन्ह, द्वि० ६, च० १, पं० १ सेत कँठ। १६. प्र० २ बाँधे देख सो।

[५१३] १. द्वि० १ जोरि।

जाति बालका[२] समुँद थहाए[३]। माँथे पूँछि गँगन सिर लाए[३]।[४]
बरन बरन पखरे अति लोने। सार[५] सँवारि लिखे सब सोने[६]।
मानिक जरे सिरी[७] औ काँधे। चँवर मेलि[८] चौरासी बाँधे।
लागे रतन पदारथ हीरा। पहिरन देहिं[९] देहिं तिन्ह[१०] बीरा[११]।
चढ़े कुवँर मन[१२] करहिं उछाहू। आगें घालि गनहिं नहिं काहू।

सेंदुर सीस चढ़ाएँ चंदन घेवरें[१३] देह।
सो तन काह[१४] लगाइअ[१५] अंत भरै जो[१६] खेह॥

[५१४]

गज मैमँत पखरे रजबारा[१]। देखिअ जानहुँ मेघ अकारा[२]।
सेत गयंद पीत[३] औ राते। हरे स्याम घूमहिं[४] मद माँते।
चमकहिं दरपन लोहैं सारी। जनु परबत पर परी अंबारी।

---

२. द्वि० १ जोति पलका, द्वि० २, ३ जाति पालका, तृ० ३ जाति भालुका तृ० २ जाति बारका। ३. प्र० १, द्वि० १, ७ न भए, लए, तृ० ३ न भाए, लागे, च० १ निबाहे, लाए। ४. द्वि० ४, ५, पं० १ सेत पूँछि जनु चँवर बनाए। ५. प्र० १ सिरी, प्र० २ सारि (उर्दू मूल), पं० १ चित्र। ६. द्वि० ४, ५ जानहु चित्र सँवारे सोने। (तुलना० ३१.७) ७. द्वि० १ सिर देखिए, द्वि० ४ तिलक जड़े, द्वि० ६ जरे परे। ८. द्वि० ४ चँवर लागि, द्वि० ५ चतुर लागि। ९. प्र० १ भएँ देहिं, प्र० २ बोहन देहिं, द्वि० १ तौ राजें, द्वि० ५ बरनहि देहिं, तृ० १ बीरा देहिं, च० १ परहत बीर। १०. द्वि० १, २, तृ० ३ देहिं हँसि, तृ० ३ देहि तेहिं (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५ दीपक चहुँ। ११. द्वि० ४, ५ फेरा। १२. प्र० १ चढ़े कुँवर सब, तृ० १ राज कुँवर मन। १३. प्र० २, तृ० ३, च० १ खेवरें (उर्दू मूल तुलना० ५२०.८)। १४. प्र० १ कहाँ, तृ० २ मोंति। १५. प्र० १, २, द्वि० ७ काह छपाइअ द्वि० १ कहाँ लुकाइअ, तृ० २, ३ काह लुकाइअ। १६. द्वि० १ परै तेहि द्वि० ४, ५ होइ जों।

[५१४] १. द्वि० १ सो राजा बारा, द्वि० २ पखरें बर जाहीं, तृ० १, पं० १ पखरें उजिआरा। २. प्र० १ मेघ असवारा, प्र० २ मेघ अस कारा, तृ० ३ ढाढ़ पहारा, तृ० १ समुँद अकारा। ३. तृ० ३ पेत (उर्दू मूल)। ४. तृ० ३ झूमहिं।

सिरी मेलि पहिराई सूँडैं[५]। कटक न भाय[७] पाय तर रूँदैं[५]।[६]
सोनैं मेलि सो[८] दाँत सवाँरे। गिरिवर[९] टरहिं सो उन्हकें टारे।
परबत उलटि पुहुमि सब[१०] मारहिं। परैं ज्यों भीर तीर जेउँ[११] टारहिं[१२]।
अस गयंद साजे सिंघली[१३]। गवनत कुरुँम[१४] पीठि कलमली[१३]।[१५]

ऊपर कनक मँजूसा[१६] लाग चँवर औ ढार।
भलइत[१७] बैठ भाल[१८] लै औ बैठे[१९] धनुकार॥

[५१५]

असु दल गज दल[१] दूनौ साजे। औ घन तवल जूझ कहँ[२] बाजे।
माँथें मटुक[३] छत्र सिर[४] साजा। चढ़ा बजाइ इंद्र होइ[५] राजा।
आगें रथ[६] सैना भइ[७] ठाढ़ी। पाछें धजा अचल सो[८] काढ़ी।
चढ़ा बजाइ चढ़ै जस इंदू[९]। देव लोक गोहन सब[१०] हिंदू[११]।[१२]

---

५. तृ० २, ३, च० १ सुंडा, लूंडा, द्वि० ४ सोंटाए, रूँढै, तृ० १, पं० १ सुंडी कुंडी। ६. तृ० २ सिरी सा सुंडी पहिराई, अन बन दिधि बहु भाँति बजाई। ७. प्र० १ कटक सो भई, द्वि० ३ कनक भाय। ८. प्र० १, द्वि० ७ सिरी मेलि सब, प्र० २ मेलिसि सिर्तिनि, द्वि० १ मेलि संग दै, द्वि० २ मेलि सवनै, तृ० १ मेलि निसैं, द्वि० ३ मलि सान दै। ९. प्र० १ तरिवर। १०. द्वि० ४, ५ सो, च० १ सों। ११. प्र० १ परहि सो भीर तीर सिग, प्र० २ परहिं जो फेरि पत्र सेउँ, द्वि० ४, ६ परैं जो भीर तीर अस। १२. प्र० १, २, द्वि० ४, पं० १ झारहिं, द्वि० १ मारा, द्वि० २ डारहिं, तृ० १ सारहिं, द्वि० ३ डारहिं। १३. तृ० ३ सिंघले, कलमले (उर्दू मूल)। १४. समस्त प्रतियों में कुरुँभ (हिंदी मूल)। १५. पं० १ कोला बहुत चाह वै बली। १६. प्र० २ मंजूसा अवारी। १७. द्वि० ४, ५ भलपत, च० १ भौहीं। १८. प्र० २ भाल लै पाछे, तृ० २ तहाँ लैं। १९. प्र० १ पाछ बैठा, प्र० २ औ बैठा, द्वि० ७ औ पाछे।

[५१५] १. द्वि० ४ कँवल दल। २. द्वि० ४, ५ जुझारू, च० १ जूझ के। ३. द्वि० ३ मुकुट। ४. प्र० १, २, द्वि० ७, तृ० २, च० १, पं० १ भल, द्वि० १ ढार। ५. द्वि० ४, ५ अस। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ ओहिं। ७. तृ० ३ सो। ८. द्वि० ४, ५ मरन की। ९. प्र० १, २ जहाँ हनिवंत बैठ होइ इंदू। १०. द्वि० ४, ५ भा। ११. प्र० १ चंदू।

जानहुँ चाँद नखत लै चढ़ा। सुरुज[13] कि कटक रैनि मसि मढ़ा।[12]
जौ लहि सुरुज चाह[14] देख रावा। निकसि चाँद घर[15] बाहेर आवा।
गँगन नखत जस गने न जाहीं। निकसि आइ तस भुइँ न समाहीं।

देखि अनी राजा कै जग[16] होइ गएउ[17] असूझ।
दहुँ कस होइ चलत ही[18] चाँद सुरुज कै[19] जूझ॥

[५१६]

इहाँ[1] राजा[2] असि साज बनाई। उहाँ साहि की भई अवाई।
अगिलै धौरी[2] आगें आई। पाछिल बाछु[3] कोस दस ताँई।
आइ[4] साहि मंडल गढ़[5] बाजा। हस्ती सहस बीस[6] सँग साजा[7]।[8]
ओनै[9] आइ दूनौ दर गाजे। हिंदू तुरुक दुऔ सम[10] बाजे।
दुऔ समुँद दधि[11] उदधि अपारा। दूऔ मेरु खिखिंद[12] पहारा।
कोपि जुझार दुहूँ दिसि मेले। औ हस्ती हस्तिन्ह कहँ[13] पेले।
आँकुस चमकि बीज अस[14] जाहीं[15]। गरजहिं[16] हस्ति मेघ घहराहीं[15]।[17]

---

१२. द्वि० ७ में यह पंक्तियाँ नहीं हैं। १३. द्वि० ३ सरग। १४. द्वि० १ चाँद सुरुज, तृ० ३ सुरुज चाँद। १५. प्र० १, द्वि० १, तृ० २ गढ, प्र० २ गरह (उर्दू मूल ?)। १६. प्र० २ गज। १७. प्र० १ लगै। १८. प्र० १, द्वि० १, ५, ७, च० १, पं० १ चहत है, प्र० २ चढ़ैत ही, द्वि० २ जियत ही। १९. द्वि० २, ४ ५, ६ सौं।

[५१६] १. प्र० १, २ बैठ। २. द्वि० ४, ५, हौडी, च० १ फौजैं। ३. प्र० १, २, द्वि० १, २, ४ पाछु, द्वि० ७ आगु, तृ० २, द्वि० ३ बासु। ४. प्र० १, २, द्वि० ७ आपु। ५. प्र० १ माँडौ गढ, तृ० ३ मंदिल चढि, द्वि० ४, ५ चितउर गढ़। ६. द्वि० ३ एक। ७. द्वि० ३ तन गाजा, द्वि० ४, ५, ६, ३ सँग गाजा। ८. च० १, पं० १ साजे साज साहि तेहि पाछें, हस्ती तीस सहस सँग काछें। ९. द्वि० १ टूटि। १०. प्र० १, २ दर, प० १ बर। ११. प्र० १ औ। १२. द्वि० २, तृ० १ पं० १, कलकंड पहारा, द्वि० ४ खिखिंड अपारा, द्वि० ५, तृ० २ खँड खँड पहारा। १३. प्र० १, २, द्वि० ७, च० १ सौं। १४. प्र० १ बर, द्वि० १, च० १ पर। १५. द्वि० २, ५ बाजहिं, गाजहिं। १६. प्र० २, पं० १ चिकरहिं। १७. द्वि० ६ आकुंस चमकि बीज अस बाजहिं, हस्ती चिघरि मेघ अस गाजहिं।

धरती सरग दुऔ दर[१८] जूहहिं ऊपर जूह।
कोऊ टरै न टारै[१९] दूऔ बज्र समूह ॥

[५१७]

हस्तिन्ह सौं हस्ती हठि[१] गाजहिं[२]। जनु परबत परबत सौं बाजहिं[२]।
गरुअ गयंद न टारे टरहीं। टूटहिं दंत सुंड भुइँ[३] परहीं।
परबत आइ जो परहिं तराहीं। दर[४] महँ चाँपि[५] खेह मिलि जाहीं।
कोइ हस्ती असवारन्ह लेहीं। सुंड समेटि पाय तर देहीं।
कोइ असवार सिंघ होइ मारहिं। हनि मस्तक सिउँ सुंड उतारहिं।
गरब[६] गयंदन्ह गँगन पसीजा। रुहिर जो चुवै धरति सब भीजा।
कोइ मैमंत सँभारहिं नाहीं। तब जानहिं जब सिर गड़ खाँही।

गँगन रुहिर[७] जस बरिसै धरती भीजि[८] बिलाइ[९]।
सिर धर टूटि बिलाहिं तस पानी पंक बिलाइ[१०]॥[११]

[५१८]

अहुठौ बज्र जूझि जस सुना। तेहि तें अधिक होइ चौगुना।
बाजहिं खरग उठै दर[१] आगी। भुइँ जरि चहै सरग कहँ लागी।
चमकै बीज होइ उजियारा। जेहि सिर परै होइ दुइ फारा।

---

१८. प्र० १, २, पं० १ असूझ भा द्वि० ७ दुऔ दर समुख। १९. द्वि० ७ न टारै केहु।

[५१७] १. तृ० ३ उठि। २. द्वि० १ हठि हारा, तें टारा। ३. प्र० १ सुंड महि, द्वि० ४, ५ सुंड गिरि, द्वि० ३ धरनि महँ। ४. द्वि०१ मरि, द्वि० ६, तृ० ३ मैं। ५. तृ० १ दर बिनु होहिं। ६. प्र० १, २ गिरत, द्वि० ६ हरत, द्वि० ७ सिरन। ७. तृ० ३ गँगन धरति, द्वि० ६ सरग रुहिर। ८. प्र० १, २ बहिं जो, द्वि० ३ बीज। ९. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ७, ३ च० १ मिलाइ, तृ० १ मिलाहिं। १०. प्र० १ पंक मिलाइ, द्वि० १ पंक समाहिं, द्वि० ४ न लाइ, द्वि० ५ बेगि मिलाइ। ११. पं० १ सो धर टूटि परहिं जो रुहिर पंक होइ जाइ।

[५१८] १. द्वि० २ दहि, तृ० ३ डग, द्वि० ३ डर।

सैन मेघ अस दुहुँ दिसि गाजै। खरग जो बीच बीज अस[2] बाजै।[3]
बरिसै सेल आँसु होइ काँदौ। जस बरिसै सावन औ भादौं[4]।
टूटहिं कुंत परहिं[5] तरवारी। औ गोला ओला जस भारी।
जूझे बीर लिखौं कहँ ताईं। लै अछरि कबिलास सिधाईं।

स्यामी काज जे जूझे[6] सोइ गए[7] मुख रात।
जो भागे सत छाँड़ि कै[8] मसि मुख चढ़ी[9] परात[10]॥

[५१६]

भा संग्राम न अस भा काऊ। लोहैं दुहुँ दिस भएउ अगाहू[1]।
कंध कबंध पूरि भुइँ परे। रुहिर सलिल होइ सायर भरे।
अनँद बियाह करहिं मँसुखाए। अब भख जरम जरम कहँ[2] पाए।
चौसँठि जोगिनि खप्पर पूरा। बिग[3] जँमुकन्ह[4] घर बाजहिं तूरा[5]।
गीध चील्ह सब माँड़ौ छावहिं। कांग[6] कलोल करहिं औ गावहिं।
आजु साहि हठि अनी बियाही[7]। पाई भुगुति जैस जियँ चाही।
जेन्ह जस माँसू भखा परावा। तस तेन्ह कर लै औरन्ह खावा।

---

२. प्र० १, २, द्वि० ६ सिउँ, द्वि० ७ तस। ३. पं० १ मेघ जेउँ हस्ति हस्ति सिउँ गाजहिं, बीज खरग जस बीच न राखहिं। ४. प्र० १, २ पं० १ ओनै लाग जस सावन भादौं। ५. प्र० १ लव अभरहिं परहिं, द्वि० २, ४, ५ लपटहिं कोपि परहिं, द्वि० ६ लै तहँ कोपि बरथ, तृ० ३ लव टुथ कुंत परहिं, तृ० १ गहि गहि कुंड परहिं, तृ० २ लेखहि कुंत परहिं, द्वि० ३ लपटहिं कुंड परहिं, च० १ टूटहिं कुंड परहिं। ६. द्वि० ७ जीव दप। ७. प्र० १ भा तिन्हका, प्र० २ सो तिन्ह कों, द्वि० ६ तिन्हहिं। ८. द्वि० १ मुहमद जिन्ह सत छाड़ा। ९. प्र० १ लाग। १०. द्वि० ३ न रात।

[५१९] १. प्र० २, द्वि० ५, तृ० १, २ अघाऊ, द्वि० ३ अगाऊ। २. तृ० १ लहि। ३. प्र० १, २ पग। ४. तृ० ३ चमकहिं, द्वि० ७ पंचप, द्वि० ३, जमके। ५. द्वि० ७ बाजै घनतूरा। ६. प्र० १ काल, द्वि० ७ केलि। ७. प्र० १, २ आपु साहि हठि आइ बिआही।

काहूँ साथ[८] न तनुगा[१०] सकति मुऐ पै[११] पोखि।
ओछ पूर तब जानब[१२] जब[१३] भरि[१४] आउब[१५] जोखि[१६]॥

[५२०]

चंद न टरै सूर सौं रोपा[१]। दोसर छत्र सौंहँ कै कोपा[१]।
सुना साहि अस भएउ समूहा। पेले सब हस्तिन्ह के जूहा।
आजु चंद तोहि करौं निपातू। रहै न जग महँ दोसर छातू।
सहस कराँ होइ किरिन पसारा। छपि गा चाँद जहाँ लगि[२] तारा।
दर लोहें दरपन भा आवा। घट घट जानहुँ भानु[३] देखावा।
बहु किरोध कुंताहल[४] धावै। अगिनि पहार जरत जनु आवै।
खरग बीज जस[५] तुरुक उठाएँ[६]। ओड़ न चंद कवल कर पाएँ।

चकमक अनी[७] देखि कै धाइ[८] दिस्टि तसि[९] लागि।
छुई होइ जौं लौहें रुई माँझ उठ आगि[१०]॥

[५२१]

सूरज देखि चाँद मन लाजा। बिगसत बदन कुमुद भा राजा।
चंद बड़ाई[१] भलेहँ निसि पाई। दिन दिनियर सौं कौंनु बड़ाई।

---

८. च० १ हाथ। ९. द्वि० ५ तौ। १०. तृ० ३, च० १ न तिनुका (उर्दू मूल), प० १ चलै का। ११. द्वि० ४, ५ सब। १२. द्वि० १ तोपै मकुन होइ जिअ। १३. समस्त प्रतियों में जौ (हिंदी मूल)। १४. प्र० २ जौं फिरि, द्वि० ५ जौ नहिं। १५. द्वि० ४, ५ आवत। १६. द्वि० ६ आवत चोख, तृ० १ चोखै चोख।

[५२०] १. प्र० १, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, च० १ कोपा, रोपा। २. प्र० १, २, पं० १ छपा सब। ३. प्र० १, द्वि० २ चाँद। ४. द्वि० ५ कटक दल। ५. द्वि० ४, ५ सब। ६. तृ० ३ उठानी। आनौ चंद कँवल के पानी। तृ० २ उठाएँ, ओड़ न चंद कठिन कर धाएँ। ७. तृ० ३, ५ जगमग अनी (उर्दू मूल), द्वि० ६, ७ चमकत अनी, द्वि० ३ जगमग न सब। ८. प्र० १, २ चमकि, तृ० २ अही। ९. द्वि० ४, ५ तेहि। १०. प्र० १, २ रुई माँझ जल आगि. द्वि० ४ माँझ आव तेहि लागि।

[५२१] प्र० १, २, द्वि० ७ बड़ जौ, तृ० ३ बड अै (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, ६, तृ० २ आब, तृ० १ बडव, द्वि० १, च० १, पं० १ बडाव।

अहे जो नखत चंद सँग तपे। सूर की दिस्टि गँगन महँ छपे।
कै चिंता[२] राजा मन बूझा। जेहि सों सरग[३] न धरती[४] जूझा।
गढ़पति उतरि लरै नहिं[५] धाए। हाथ परै गढ़ हाथ पराएँ[६]।
गढ़पति[७] इंद्र गँगन गढ़ राजा। दिवस न निसर रैनि को राजा।
चंद रैनि रह नखतन्ह माँझा। सुरुज न सौंह[८] होइ चह[९] साँझा[१०]।

देखा चंद भोर[११] भा सूरुज के बड़ भाग।
चाँद फिरा भा गढ़पति सुरुज गँगन गढ़[१२] लाग॥

[५२२]

कटक असूझ[१] अलावल साही। आवत कोइ[२] न सँभारै ताही।
उदधि समुँद जेउँ लहरैं देखें[४]। नैन देखि[३] मुँह जाहिं न लेखें[४]।
केत बजावत उतरे घाटी। केत बजाइ गए मिलि माँटी।
केतन्ह नितिहि देइ[५] नव साजा[६]। कबहुँ न साज घटै तस राजा।
लाख जाहिं आवहिं[७] दुइ लाखा। फरहिं झरहिं उपनहिं नौ साखा।
जो आव गढ़ लागै सोई। थिर होइ रहै न पावै कोई।
उमरा मीर अहे जहँ ताईं। सबहू बाँटि अलंगै पाईं।

लागि[८] कटक चारिहुँ दिसि गढ़ सो परा अगिडाहु[९]।
सुरुज गहन भा चाँदहि चाँद भएउ जस राहु॥

---

२. प्र० १, २ गिआन। ३. द्वि० १ गगन साथ। ४. प्र० १ धरति सब। ५. द्वि० १ आइ जौं। ६. प्र० १ न आई। ७. द्वि० १ औ पुनि। ८. प्र० १, २, पं० १ सूरुज सौंहँ। ९. तृ० १ चह। १०. द्वि० ६ साथा। ११. द्वि० १ भरस, तृ० २ दिवस। १२. द्वि० ७ गगनहि।

[५२२] १. द्वि० ३ कटक आव, च० १ आवै कटक। २. पं० १ गरत। ३. द्वि० १ अधिक। ४. तृ० ३ देखी, मुहँ खाहिं न लेखी (उर्दू मूल), तृ० १ देखे, मुख जाहिं परेखे। ५. प्र० १, २ अवर दिए, द्वि० १ छत्र दिए, द्वि० ६, पं० १ अवर दीन्ह। ६. प्र० २ लव बाजा, द्वि० ७ तृ० १ नव बाजा। ७. तृ० ३ औनवहिं। ८. तृ० ३ जाख। ९. प्र० १, पं० १ खँड खँड भा आगि डाहु, प्र० २ खँड खँड भा अवगाहु, तृ० १ आर धउर-धन काहु।

[५२३]

अँथवा दिवस सुरुज भा[1] बासाँ। परी रैनि ससि उवा अकासाँ।
चाँद छत्र दै बैठेउ आई। चहुँ दिसि नखत दीन्ह छिटकाई।
नखत अकासहुँ चढ़े दिपाहीं। टूटहिं लूक परहिं न बुझाहीं।
परहिं सिला[2] जस परै बजागी। पहनहि पाहन बाजि उठ आगी[3]।
गोला परहिं कोल्हु ढुरुकावहिं[4]। चून करत चारिहुँ दिसि आवहिं[4]।
अवनि अँगार[5] दिस्टि[6] झरि लाई। ओला टपकै परै न बुझाई[7]।
तुरुक न मुँह फेरहिं गढ़[8] लागें[9]। एक मरें दोसर होइ आगें[9]।

परहिं बान राजा कें[10] मुख[11] न सकै कोइ काढ़ि।
अनी[12] साहि कै सब निसि रही भोर लहि[13] ठाढ़ि[14]॥

[५२४]

भएउ बिहान[1] भान पुनि चढ़ा। सहसहुँ करा जैस बिधि गढ़ा।
भा ढोवा गढ़ लीन्ह[2] गरेरी[3]। कोपा कटक लाग चहुँ फेरी।
बान करोरि एक मुख छूटहिं। बाजहिं जहाँ फोंक लगि फूटहिं।
नखत गँगन जस देखिअ घने। तस गढ़ फाटहिं[4] बानन्ह हने।

---

[५२३] १. द्वि० १ भएउ जो, तृ० १ अंतहु भा। २. तृ० ३ परै सलिल। ३. प्र० १ उठ दर आगी। ४. प्र० २ ढहराहीं, जाहीं। ५. प्र० २ बरतै अकरा, तृ० ३ ओनै अकास, द्वि० ४, ५ ओनई घटा, द्वि० ७ पलै काल। ६. प्र० १, २ दिस्टि, द्वि० २ सिस्टि, तृ० ३ पस्ट (उर्दू मूल), द्वि० ४,५ बरसि, द्वि० ६ नस्ट, द्वि० ७, ३ त्रिस्टि, तृ० २ मेघ। ७. तृ० १ टुपक परात चढ़ तहँ हवाई। ८. च० १ रन। ९. द्वि० ७ गढ़ लागे मुख फेरहिं, दूसर होइ भीरहिं। १०. द्वि० २ च० १ राजा के सब निसि, द्वि० ६ राजा के चहूँ दिसि। ११. द्वि० २ सिर, द्वि० ५ सनमुख। १२. तृ० ३ औनि, तृ० २ सैनि, च० १ रैनि। १३. द्वि० १ तक। १४. प्र० १, २ रैनि साहि के रोपे रही रैनि सब ठाढ़ि, द्वि० ४ औनि साहि के सब तस रहो भोर लहि ठाढ़ि, पं० १ रतनसेनि के चूके रही रैनि सब ठाढ़ि।

[५२४] १. तृ० ३ भयो बिहान, द्वि० ४ भएउ प्रभात। २. द्वि० १, तृ० ३ लागि। ३. द्वि० १ घेरी। ४. तृ० ३ भाँतिन्ह (उर्दू मूल)।

जानहुँ[५] बेधि साहि कै राखा। गढ़ भा गरुर फुलाएँ पाँखा।
ओरँगा केरि कठिन है जाता। तौ पै लहै होइ मुख राता।
पीठि देहिं नहिं बानन्हि[६] लागे। चाँपत जाहिं पगहिं पग आगे[७]।

चारि पहर दिन बीता[८] गढ़ न टूट तस बाँक।
गरुव होत पै[९] आवै दिन दिन टाँकहि टाँक।

[५२५]

छेंका गढ़ जोरा[१] अस[२] कीन्हा। खसिया मगर[३] सुरंग तेइँ[४] दीन्हा।
गरगज बाँधि कमानैं धरीं। चलहिं एक मुख दारू भरीं[५]।
हबसी रूमी औ जो फिरंगी। बड़ बड़ गुनी औ तिन्ह के संगी।
जिन्ह के गोट[६] जाहिं उपराहीं[७]। जेहि ताकहिं तेहि चूकहिं नाहीं।
अस्ट धातु के गोला छूटहिं। गिरि पहार पब्बै सब[८] फूटहिं[९]।
एक बार सब छूटहिं गोला। गरजै गँगन धरति सब डोला।

---

५. द्वि० ४, ५ बान। ६. प्र० १, २, पं० १ धायन्ह। ७. प्र० १, २, पं० १ पैग पैग चाँपहिं मुइँ आगे, तृ० ३ एक मरै दोसर होइ आगें (५२३. ७), तृ० १ चाँपत जाहिं नपख सँग आगें। ८. प्र० १, २ चारि पहर गढ़ जूझ भा, द्वि० २, ४, ५, ७, पं० १ चारि पहर दिन जूझ भा, तृ० १ चारिउ पहर जूझि कै, द्वि० ३ चारि पहर रन जूझ भा। ९. तृ० १ ढ़।

[५२५] १. द्वि० १, ६, च० १, पं० १ पुरा। २. प्र० १ हठि। ३. द्वि० १ मुँगेर, द्वि० २, ५, तृ० २ मगर, द्वि० ३ मग। ४. द्वि० ५, च० १ पं० १ तहँ। ५. प्र० १, २, द्वि० ५, च० १, पं० १ बजर आगि मुख दारू भरी, द्वि० १, तृ० १ गाजहिं अष्ट धातु की मढ़ी, द्वि० ७ गाजहिं अष्ट धातु की बनी। ६. द्वि० १ उट्ठहिं गोला, द्वि० ५ जिन्ह के जोट। ७. प्र० १, २, पं० १ गोट कोट पर जाहीं, द्वि० १ गोला ऊपर जाहीं, द्वि० ४ जोत जाहिं उपराहीं, तृ० २ सो पै आपु समाही। ८. प्र० १ परबत सब, प्र० २ लागत तेहि, द्वि० १ पानी सम, द्वि० ४, ५, ६, पं० १ चून होइ, तृ० १ पब्बै अस, द्वि० २, ३ पब्बै जनु, तृ० ३ पवै सब, च० १ पट्टी सब। ९. तृ० १, द्वि० ३ टूटहिं।

फूटै कोट फूट जस सीसा। ओदरहिं[10] बुरुज परहिं कौसीसा[11]।

लंका रावट जसि भई डाह परा गढ सोइ।
रावन लिखा जो जरैं कहँ किमि अजरावर[12] होइ॥

[५२६]

राजा केरि लागि रहै[1] ढोई[2]। फूटै जहाँ सँवारहिं सोई[2]।
बाँके पर सुठि बाँक करेई। रातिहि कोट चित्र कै लेई।
गाजै गँगन चढ़े जस मेघा। बरिसहिं बज्र सिला[3] को थेघा।
सौ सौ मन के बरिसहिं गोला। बरिसहिं तुपक तीर जस ओला।
जानहुँ परी सरग हुति गाजा। फाटै धरति आइ जहँ बाजा।
गरगज चूर चूर होइ परहीं। हस्ति घोर मानुस संघरहीं।
सबहिं कहा अब[4] परलौ आवा। धरती सरग जूझ दुहुँ[5] लावा।

अहुठौ बज्र जुरे सनमुख होइ[6] एक दिन कोई[7] लागि।
जगत जरै[8] चारिहुँ दिसि को रे बुझावै आगि॥

[५२७]

तबहूँ राजा हिएँ न हारा। राज[1] पँवरि पर रचा अखारा[2]।
सौंहँ साहि जहँ उतरा आछा। ऊपर[3] नाच अखारा काछा।[4]

---

१०. द्वि० ५ ओडहिं, तृ० १ दौरहिं। ११. द्वि० ५ जाइ सब पीसा, द्वि० ३ परहिं गिरि सीसा। १२. प्र० १ किमि नजरावट तृ० ३ किमि अंचिरावर, द्वि० १ सो किमि ऊजर, तृ० १ किमि करि अजरा, पं० १ किमि करि अजर सो।

[५२६] १. द्वि० ४, ५ गढ, तृ० ३ रहि। २. प्र० धेई, तेइ, तृ० १ थवई, सवई, पं० १ थोई, तोई। ३. द्वि० ४, ५ सलिल। ४. प्र० १, २ काहू कहँ। ५. प्र० १, द्वि० १ जनु, द्वि० ४, ५ नस। ६. प्र० १, पं० १ जुरे जस, प्र० २ जुरे सब, द्वि० ३ जुरे सनमुख। ७. प्र० २, द्वि० ७, तृ० ३ दगवै (उर्दू मूल)। ८. तृ० ३ जुरे (उर्दू मूल), द्वि० ६ जुवै। ९. द्वि० ३, पं० १ तस सब बजर समूह भए कैसहुँ बुझै न आगि।

[५२७] १. द्वि० १ पांच। २. तृ० ३ पँवारा। ३. द्वि० ३ उतरा।

जंत्र पखाउझ आउझ[५] बाजा। सुरमंडल रबाब[६] भल साजा।
बीन पिनाक कुमाइच कहे[८]। बाजि अँबिरती अति[७] गहगहे[८]।
चंग उपंग नाग सुर[९] तूरा[१०]। महुवरि बाज बंसि भल पूरा[१०]।
हुरुक बाज डफ बाज गँभीरा। औ तेहि गोहन[११] झाँझ मँजीरा।
तंत बितंत सुभर[१२] घनतारा[१३]। बाजहिं[१४] सबद होइ झनकारा।

जस[१५] सिंगार मन मोहन[१६] पातर नाँचहिं पाँच।
पातसाहि गढ़ छेंका राजा भूला नाँच॥

[५२८]

बीजानगर केर[१] सब[२] गुनी। करहिं[३] अलाप बुद्धि[४] चौगुनी।
प्रथम राग भैरौ तेन्ह कीन्हा। दोसरें माल कौस पुनि लीन्हा।
पुनि हिंडोल[५] राग तिन्ह गाए। चौथें मेघ मलार सोहाए[६]।
पुनि उन्ह[७] सिरी राग भल किया। दीपक कीन्ह[८] उठा बरि दिया।

---

४. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३, च० १, पं० १ सौंह साहि कै बैठक जहाँ, सनमुख नाच करावै तहाँ। द्वि० ७ सौंह साहि कै सनमुख देखा, सनमुख होइ अखार बिसेखा। द्वि० १. तृ० १ सौंहैं साहि केरि जहँ दीठी, पातर नारि चूर दै पीठी। ५. प्र० १, २ औ जत, द्वि० ४, च० १ आव जो। ६. प्र० १ बाज। ७. तृ० ३ बाजे अंब्रित सो। ८. द्वि० ४, ५, च० १ कही गहगही (कहे, गहगहे)। ९. प्र० १, २ एक सुर, द्वि० १ नाक सुर, द्वि० ३, ४, ५, ६, तृ० २, पं० १ नाद सुर, च० १ ताक सुर, द्वि० ७ नायक कर, तृ० ३ नागसर (उर्दू मूल)। १०. द्वि० १, ४, ५, ६, तृ० २, ३, पं० १ पूरा, तूरा। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ बाजहिं भल। १२. प्र० १, द्वि० ७ सिखर, तृ० ३ सुघिर। १३. तृ० २ करतारा। १४. प्र० १, २, द्वि० ७ पाँचौ। १५. द्वि० ३, ४, ५ जग। १६. तृ० ३ अगमोहन।

[५२८] १. द्वि० ६ सुने। २. प्र० १ बहु, प्र० २ बस, द्वि० ३, ६, पं० १ जस। ३. द्वि० ६ तस। ४. द्वि० १ चारि सम, द्वि० २ बिद्या, द्वि० ३, ६, पं० १ तिन्ह तें। ५. द्वि० १ तौ दुलार। ६. प्र० १, २, द्वि० ३, तृ० २, पं० १ मेघ मलार मेघ बरसाए। ७. द्वि० ५, पं० १ पचएँ। ८. प्र० १ दीपक लीन्ह, द्वि० ४, ५ छठएँ दीपक।

छवउ राग गाएनि भल गुनी। औ गाएनि छत्तीस[9] रागिनी।[10]
ऊपर भईं सो पातर नाँचहिं। तर भै तुरुक कमानैं[11] खाँचहिं।[12]
सरस कंठ भल राग सुनावहिं। सबद देहिं मानहुँ सर लागहिं।[13]

सुनि सुनि सीस धुनहिं सब[14] कर मलि मलि पछिताहिं[15]।
कब हम हाथ चढ़हिं ये पातरि नैनन्ह के दुख जाहिं[15]॥*

[५२९]

पतुरिनि[1] नाँचै दिहें जो पीठी[2]। परिगै सौहँ[3] साहि कै डीठी।[4]
देखत साहि सिंघासन[5] गूजा। कब लगि मिरिग चंद रथ भूँजा[6]।
छाँड़हु बान जाहिं उपराहीं। गरब केर सिर सदा तराहीं।

---

९. द्वि० १ बतिसो, द्वि० २, तृ० १ तीसा। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ छवौ राग ये प्रथमहि गाए, पुनि तीसौ भारजा सुनाए। पं० १ गढ़ पर पंद नाच भलि होई, माठा धोदा (दोहा ?) झुमरा सोई। ११. प्र० १, २ धनुक कर, द्वि० ७ धनुक सर। १२. पं० १ होइ बरबार बंद औ देसी, दिष्टि न कटक काह परदेसी। १३. प्र० १, २ (यथा-२) छवौ राग तस नाचहिं तारा, सगरौ कटक होइ झनकारा। द्वि० ४, ५, तृ० ३, च० १ काढ़ा माठ दोहा झूमरा, तर भै देखहिं मीर औ उमरा। द्वि० ६, ७ (यथा० २) सरस कठ सारंग सुनावहिं, तुरुक सुनहिं जानहुँ सर लागहिं। १४. प्र० १, २ धनुक बान तहँ पहुँचहिं नाहीं, द्वि० २, ३ सुनि सुनि तुरुक धुनहिं सिर, द्वि० ७ धनुक बान तहँ पहुँचहिं। १५. द्वि० ४ कब हम हाथ पर चढ़हिं है के तब यह दुक्ख जाहिं, द्वि० ५ कब हम हाथ चढहिं आइके तब नैनन्ह दुख जाहिं।

१६. च० १, पं० १ पाछे नाच होइ भल नाचत होइ भिनुसार।
बाजे हुरुक तरातर (तुरुकाओ तुर्रा-पं० १) अछेह जस बनिजार॥

* द्वि० १ में इसके अनंतर सात अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें मे एक तृ० १ के अतिरिक्त शेष सभी प्रतियों में भी है।

[५२९] १. द्वि० १ बैरिन, द्वि० ३ पैरिन। २. प्र० १, २, फिर गै नाचि दई तेहि पीठी, द्वि० ७ बरै तार साही सों पीठी, पं० १ पतुरिनि नाच दीन्ह तुइ पीठी। ३. द्वि० १ बैठें, तृ० १ तबहिं। ४. प्र० १, २, द्वि० ६, पं० १ जहँवाँ सींह साहि सौं पीठी, द्वि० ७ बरुनी के राजा सौं पीठी। ५. द्वि० ७ सिंघ अस। ६. प्र० १, २, पं० १ साहि सिंघासन ऊपर गूँजा, देखा चांद सरग भा दूजा।

बोलत बान लाख भा ऊँचा । कोइ सो कोट कोइ पँवरि[७] पहूँचा ।
मलिक जहाँगिर कनउज[८] राजा । ओहि क बान पातरि कहँ बाजा[९] ।
बाजा बान जंघ जस नाँचा[१०] । जिउ गा सरग परा भुइँ साँचा ।[११]
उदसा नाँच नचनिया मारा । रहसे तुरुक बाजि[१२] गए तारा ।[१३]

जो गढ़ साजा लाख दस कोटि[१४] संवारहि[१५] कोट ।
पातसाहि जब चाहै बचहि न कौनिहु ओट[१६] ॥

[५३०]

राजैं पँवरि अकास चलाई[१] । परा बाँध[२] चहुँ फेर अलाई[३] ।
सेतबंध जस राघौ बाँधा । परा फेरु भुइँ भारु न काँधा ।
हनिवँत होइ सब लाग गुहारा । आवहिं[४] चहुँ दिसि केर[५] पहारा ।[६]
सेत फटिक सब लागे गढ़ा[७] । बाँध उठाइ चहूँ[८] गढ़ मढ़ा[९] ।[१०]
खँड ऊपर खँड होहिं पटाऊ । चित्र अनेग अनेग कटाऊ ।[११]

---

७. प्र० १ सरग । ८. द्वि० १ जहाँगीर कनउज का राजा । ९. तृ० ३ लाजा, द्वि० ४ लागा । १०. प्र० १, २ बाजत बान उदसि गा नाँचा, द्वि० ७ तार चूरि जस पातरि नाँचा । ११. तृ० १ पातर नाचि तान जस तूरा, लाग बानि हिरदै महँ पूरा । १२. तृ० १ नाचि । १३. प्र० १, २ (यथा. २), द्वि० ६, पं० १ तबहिं ताल दै बैठी चूरी, देखा साहि भई रिस पूरी । १४. द्वि० १ बहुत । १५. प्र० १, २ उठावहिं । १६. प्र० १, च० १ छपहिं न कौनिउ ओट, द्वि० १ बाँच न कौनिउ ओट, द्वि० २ बचहिं न एकौ ओट, तृ० ३ रहै न एकौ ओट, तृ० २ छपहिं न एकौ ओट, पं० १ रहै न कौनिउ ओट ।

५३०] १. द्वि० १ लवाई । २. द्वि० ७ फाँद । ३. प्र० १ बँधाई, प्र० २ न आई, द्वि० ४, ५ ललाई । ४. प्र० १, पं० १ ढोइ जो, प्र० २ ढोइ ढोइ । ५. प्र० २, पं० १ कीन्ह, द्वि० २, ३, ४, ५ ६, तृ० २, च० १ चले । ६. द्वि० १, तृ० १ चले पखान चहूँ दिसि आवहिं, गढ़ जस कारे करि बैसावहिं । ७. प्र० १ लोहैं मढ़े । ८. प्र० १, २, पं० १ बाँध बाँधि चाहहिं । ९. प्र० २ चढ़ा । १०. द्वि० १, तृ० १ खंड पर खंड होत तस जाहीं, जानहुँ चढ़ा गगन उपराहीं । ११. प्र० १ खंड खंड पर ऊपर भाऊ, चित्र अनेग अनेग कटाऊ; प्र० २, पं० १ खंड पर खंड भाउ पर भाऊ, चित्र अनेक अनेक कटाऊ; तृ० १ खंड पर खंड जो खंड सँवारे, धनुक बान तेहि ऊपर धारे; द्वि० १ में पंक्ति छूटी हुई है ।

सीढ़ी होति जाहिं बहु भाँती। जहाँ चढ़हिं हस्तिन्ह कै पाँती[१२]।
भा गरगज[13]अस कहत न आवा[१४]। जनहुँ[१५]उठाइ गँगन कहं[१६]लावा।[१७]
राहु लाग जस चाँदहि गढ़हि लाग तस बाँध।
सब दर[१८]लीलि ठाढ़ भा[१९] रहा जाइ गढ़[२०] काँध॥

[५३१]

राजसभा सब मतें बईठी। देखि न जाइ मंदि[१] भै डीठी।
उठा बाँध तस सब गढ़ बाँघा। कीजै बेगि भार[२] जस[3] काँधा।
उपजै आगि आगि जौं[४] बोई। अब मत किएँ आन नहिं होई।
भा तेवहार जो चाँचरि जोरी। खेलि फागु अब लाइअ[५] होरी।
समदहु फागु मेलि सिर धूरी। कीन्ह जो साका[६] चाहिअ पूरी[७]।
चंदन अगर मलैगिरि काढ़ा। घर घर कीन्ह सरा रचि ठाढ़ा।
जौहर कहँ साजा रनिवाँसू। जेहि सत हिएँ कहाँ तेहिं आँसू।
पुरुखन्ह खरग सँभारे[८] चंदन खेवरे[९] देह।
मेहरिन्ह सेंदुर मेला[१०] चहहिं भई जरि[११] खेह॥*

---

१२. प्र० १ साखा 'सीढ़ी सिला उँचाई, भाँति भाँति पुनि होइ चढ़ाई, प्र० २, पं० १ लाखन्ह सीढ़िन्ह (साखा सरहन्ह-प्र० २ उर्दू मूल) सिला गढ़ाऊ,भाँति भाँति पुनि होइ चढ़ाऊ। १३. तृ० ३ गढ़गर। १४. प्र० १, २, पं० १ गढ़ मढ़ि कै तस बाँध उठावा। १५. द्वि० ५ चढ़हिं। १६. द्वि० ४, ५ गँगन लै, तृ० २, च० १, पं० १ सरग लै। १७. तृ० १ चित्तर सारी होहिं अनेका, लिखहिं मोकल मेर औ बेका; द्वि० १ चित्रसारि सब होहिं अनेका, देखिअ मेरु सो मोकल बेका। १८. द्वि० ४,५, च० १ धरि। १९. प्र० १ सरब अंग तौ लीलिगा. प्र० २ सरब अंग गा लीलि रह। २०. प्र० २ रहा जाइ कै, द्वि० २ रहा जाइ लै, द्वि० ३ जानै गड़ कै।

[५३१] १. प्र० १ सरग, प्र० २, द्वि० १ मँदिल। २. प्र० १, पं० १ कीजै भार सोई। ३. प्र० २ अब। ४. द्वि० ४, ५ जस। ५. प्र० १, २ दाहब। ६. द्वि० ६, तृ० २, ३ जो अब साधा। ७. च० १ खेलि फाग अब लाइअ धूरी। ८. द्वि० १ सँभारे औ। ९. प्र० २, तृ० ३, च० १ खेवरे (उर्दू मूल तुलना० ५१३.८)। १०. द्वि० ६ पूरा, द्वि० ७ मेलिआ, तृ० २ सारा। ११. द्वि० १ होइ सभ, द्वि० ३ होइ जरि।
*पिछले छंद की अंतिम छः तथा इस छंद की प्रथम तीन—पूरे एक छंद की पंक्तियाँ द्वि० ७ में नहीं हैं; किंतु ये प्रसंग में अनिवार्य हैं, यह प्रकट है।

[५३२]

आठ[1] बरिस गढ़ छेंका अहा[2]। धनि सुलतान कि राजा महा[3]।
आइ साहि अँबराँउ जो लाए। फरे झरे पै गढ़ नहिं पा[4]।[5]
हठि चूरौं[6] तौ जौहर होई। पदुमिनि पाव हिएँ मति[7] सोई।
एहि बिधि ढीलि दीन्ह तब ताँई। ढीली की अरदासैं आई।
पछिउँ हरेव[8] दीन्ह जौ पीठी। सो अब चढ़ा[9] सौहँ कै डीठी।
जिन्ह भुइँ माँथ गगन तिन्ह[10] लागा। थाने उठे आउ सब भागा।
जहाँ[11] साह चितउर गढ[12] छावा। इहाँ देस सब[13] होइ परावा।

जेहि जेहि पंथ न तिनु परत बाढ़े बैरि बबूर।
निसि अँधियारि बिहाइ[14] तब बेगि उठै[15] जब सूर॥

[५३३]

सुना साहि अरदासि जो पढ़ी। चिंता आनि आन कछु[1] चढ़ी।
तब अगुमन मन चिंतै[2] कोई। जो आपन चिंता कछु होई।
मन झूठा जिउ हाथ हराएँ। चिंता एक भए दुइ ठाँए।
गढ़ सौं अरुझि जाइ तब छूटा। होइ मेराउ कि सो गढ़ टूटा।
पाहन कर रिपु[3] पाहन हीरा। बेधौं रतन पान दै बीरा।
सरजा सेंती कहा यह भेऊ। पलटि जाहि अब[4] मानै सेऊ[5]।
कहु तोसौं न पदुमिनी लेऊँ। चूरा कीन्ह छाँड़ि गढ़ देऊँ।

---

[५३२] १. द्वि० १ इगारह। २. तृ० २, द्वि० ३, च० १ रहा। ३. द्वि० ७ सहा। ४. प्र० १ हाथ न आए। ५. पं० १ जबहिं पैस गढ़ घालि सकोचा, आगुमन सोच सोच साहि मन सोचा। ६. प्र० २ तूरौं, द्वि० ५ जूरै। ७. प्र० १, २, तृ० १, प ० १ पदुमिनि हाथ आव (चढ़ै—तृ० १, पं० १) मत, द्वि० १ पदुमिनि पाइ हियें महँ, द्वि० ७ पदुमिनि आइ हीअ महँ। ८. तृ० १ खंड। ९. प्र० १ चला। १०. द्वि० ४, ५ सिर। ११. पं० १ आपु। १२. प्र० १, २ होइ। १३. द्वि० ४, ५ अब। १४. द्वि० ४, ५, च० १ जाइ, द्वि० ३ होइ। १५. प्र० १, २, च० १ चढ़ै।

[५३३] १. प्र० १, द्वि० २, ६, तृ० १, पं० १ जिअँ, प्र० २ जो, द्वि० ४, ५, च० १ चित। २. प्र० १, द्वि० ७ अगुमन चिंतन, द्वि० १, तृ० १, २, च० १, पं० १ आगू मन चिंतै, ३ आगुमन चिंते का। ३. द्वि० ४, ५ करब। ४. द्वि० १ जौं। ५. द्वि० १, तृ० १, २ देऊ।

आपन देस खाहि भा निस्चल[६] औरु चँदेरी लेहि।
समदन समुँद जो कीन्ह तोहि[७] ते पाँचौं नग देहि ॥*

[५३४]

सरजा पलटि सिंघ चढ़ि गाजा। अग्याँ[१] जाइ कही[२] जहँ राजा।
अबहूँ हिएँ समुझु रे राजा। पातसाहि सौं जूझ न छाजा।
जाकरि धरी[३] पिरिथिमी सोई। चहै त मारै[४] औ जिउ देई[५]।
पींजर महँ तूँ कीन्ह परेवा। गढ़पति सो बाँचै कै सेवा।
जब[६] लगि जीभि अहै मुख तोरें। पँवरि[७] उघेलु बिनौ[८] कर जोरें।
पुनि जौं जीभ पकरि जिउ लेई। को खोलै को बोलै देई[९]।
आगें जस हमीर मत मंता। जौं तस करसि तोर भावंता[१०]।

देखु कालि गढ़ टूटिहि राज ओही कर होइ।
करु सेवा सिर नाइ कै घरन घालु बुधि खोइ ॥*

[५३५]

सरजा जस हमीर मन थाका[१]। ओर निबाहेसि आपन साका।
ओहि अस हौं सकबंधी नाहीं। हौं सो भोज बिक्रम उपराहीं[२]।

---

६. प्र० २, तृ० १, पं० १ साहि सत्र, द्वि० १ खाहि तैं। ७. प्र० १, २ द्वि० ७, पं० १ जो दीन्ह तोहि, द्वि० १ नग किए, द्वि० ७ जो दीन्हा।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं।

[५३४] १. द्वि० १ अब। २. प्र० १, ३ लै फ़ुरमान चला। ३. प्र० १, २ गेंगन, तृ० १, ३ करै। ४. द्वि० १ आइ जो चढ़ा मारि। ५. प्र० १, २ दुख देई, द्वि० १ पै लेई, द्वि० ४, ५, तृ० १ जिउलेई। ६. प्र० २ तथा अन्य कुछ प्रतियों में 'जौ' (हिंदी मूल)। ७. द्वि० ५ सँवरि। ८. प्र० १, २ द्वि० ३, ७, पं० १ सेउ तृ० १ बँदि। ९. प्र० १, २ कोलहि कहाँ बोलि जिउ देई, द्वि० १ छाड़ै नहि बोलै जिउ देई। १०. प्र० १, द्वि० ७ भौ अंता, प्र० २ भल अंत., द्वि० ६ भलवंता।

* द्वि० १, तृ० २ इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद हैं।

[५३५] १. प्र० २, द्वि० ४, ५, तृ० ३ ताका। २. प्र० १, २, प० १ हौं ओहि ते आगर सकबंधी, बिक्रम सरिस भोज बर बंधी (सिरि कंथी

बरिस साठि[3] लहि अन्न[4] न खाँगा। पानि पहार चुवै बिनु माँगा।
तेह ऊपर जौं पै गढ़ टूटा। सत सकबंधी केर न छूटा।
सोरह लाख[5] कुँवर हहिं मोरे। परहिं पतिंग जस दीपक अँजोरे।
तेहि[6] दिन चाँचरि चाहौं जोरी। समदौं फागु लाइ कै[7] होरी।
जो दै गिरिहिनि राखत जीऊ। सो कस आहि निपुंसिक[8] पीऊ।[9]

अब हौं जौहर साजि कै कीन्ह चहौं उजियार।
फागु गएँ होरी बुझें[10] कोउ समेंटहु छार॥

[५३६]

अनु राजा[1] सो जरै निआना[2]। पातसाहि कै सेव न[3] माना।
बहुतन्ह अस गढ़ कीन्ह सजौना। अंत भए लंका के रवना!
जेहि दिन ओइँ छेंकी गढ़ घाटी। भएउ अन्न[4] तेहि दिन सब[5] माँटी।
तूँ जानहि जल[6] चुवै पहारू। सो रोवै मन सँवरि सँघारू।
सोतहि सोत औस गढ़ रोवा। कस होइहि जौं होइहि ढोवा[7]।
सँवरि पहार सो ढारै आँसू[7]। पै तोहि सूझ न आपन नासू[8]।
आजु काल्हि चाहै गढ़ टूटा। अबहुँ मानु जौं चाहसि छूटा।

हहिं जो पाँच नग तो सिउँ[9] लै पाँचौं करु भेंट।
मकु सो एक गुन मानै सब औगुन धरि मेंट॥

---

३. द्वि० २, ४, ५, पं० १ सात। ४. प्र० १ साँठ, प्र० २ संच। ५. द्वि० १ सहस। ६. द्वि० ४, ५ नहिं। ७. तृ० ३ मेलि सि. द्वि० ४, ५ मेलि कै। ८. द्वि० ४, ५ नमोसक, तृ० ३ नबंसक (उर्दू मूल), च० १ निपत सक। ९. प्र० १, २, पं० १ जौ एहिं बीच डरै नहिं कोई, देखु कालि धौं काकर होई। (मूल पाठ की पंक्ति इन तीनों प्रतियों में ५३७.५ के स्थान पर है) द्वि० १ (यथा.१) राजै ज्ञान कीन्ह बिचारी, तर सोसर जेहि दीन्ह सँवारी। १०. द्वि० ७ मिटैं।

[५३६] १. प्र० १. २ सरजा। २. द्वि० ४ पयाना। ३. प्र० १, २ कै सेवा। ४. प्र० १, २, पं० १ सँचा होह, तृ० ३ भयो आनि (उर्दू मूल), द्वि० ५ होइ अन्न, तृ० २ होइहि अन्न। ५. द्वि० ४, ५, तृ० १, २, च० १ ओहीं दिन। ६. तृ० ३ यह, द्वि० ७ सलिल। ७. प्र० १ बिछोवा। ८. प्र० १ हकारै माँटी, साँती। ९. द्वि० १, तृ० १ तोरें द्वि० २ तो पहँ।

[५३७]

अनु सरजा को मेंटै पारा। पातसाहिँ बड़ आहि हमारा॥
औगुन मेंटि सकै पुनि सोई। औरु जो कीन्ह चहै सो होई॥
नग पाँचौं औ देउँ भँडारा। इसकंदर सौं बाँचै दारा॥
जौं यह बचन तौ माँथें मोरें। सेवा करौं ठाढ़ कर जोरें।
पै बिनु सपत न अस[१] मन माना। सपत क बोल बचा परवाना।[२]
नाइत[३] माँझ भँवर हति गीवाँ[४]। सरजैं कहा मंद यहु जीवाँ॥
खंभ[५] जो गरुव लेहिं जग[६] भारू। ताकर बोल न टरै पहारू॥

सरजैं सपत कीन्ह छर[७] बैनन्हि मीठै[८] मीठ[९]।
राजा कर मन माना[१०] मानी तुरित[११] बसीठि॥*

[५३८]

हंस कनक[१] पिंजर हुति आना। औ अंब्रित नग परस पखाना॥
औ सोनहा सोने की डाँड़ी। सारदूर रूपे की काँड़ी[२]।
बसिठि दीन्ह[३] सरजा लै आए। पातसाहि पहँ आनि मिलाए॥
ऐ जग सूर पुहुमि उजियारे। बिनती करहिं काग[४] मसि कारे[५]।
बड़ परताप तोर जग तपा। नवौ खंड तोहिं कोइ न छपा॥

---

[५३७] १. द्वि० १, च० १ पै अ सपथ होइ। २. प्र० १, २, पं० १ जौं घरनी दै राखहि ‍पीऊ, सो तौ आहि निबंसक पीऊ। (५३५.७)॥ ३. तृ० ३ ताइत, द्वि० ७ राइत, द्वि० ३ तैं तेहि। ४. प्र० १ केवा। ५. द्वि० २ पुरुख। ६. प्र० १ कीन्हे जग भारू, द्वि० १ लिए सब भारू, तृ० २ लीन्ह सिर भारू। ७. प्र० १, २ जिउ॥ ८. प्र० १, २ बात कही सब, द्वि० ७ मुख बैनन्ह रस। ९. पं० १ नाहीं नैनन दीठ। १०. प्र० २ माना भोरे। ११. तृ० ३ साजे तुरित, द्वि० १ माना बेगि, द्वि० ७ मानत चूक।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर चार अतिरिक्त छंद हैं।

[५३८] १. द्वि० १ हँसा लंक। २. प्र० १, च० १ खाँड़ी, द्वि० ६ डाँडी, तृ० ३ गाडी,। ३. प्र० १, २ राय बसीठ, द्वि० ७ औ बसीठ। ४. द्वि० ३ काल। ५. द्वि० २ मन कारे, तृ० ३ मसिआरे।

कोह छोह दूनौ तोहि पाहाँ। मारसि धूप जियावसि छाहाँ।
जौं मन सुरुज चाँद सौं[6] रूसा। गहन गरासा परा मँजूसा।

भोर होइ जौं लागै उठहिं रोर कै काग[7]।
मसि छूटै सब रैनि[8] के कागा काँय[9] अभाग॥

[५३९]

कै बिनती अग्याँ असि पाई। कागहु सैं आपुहि मसि लाई।
पहिलें धनुक नवै जब लागे। काग न नए[1] देखि सर भागे।
अबहूँ तेहिं सर सौंहँ न होहीं। देखहिं धनुक चलहिं फिरि ओहीं[2]।
तिन्ह कागन्ह कै कौनु बसीठी। जो मुख फेरि चलहिं दै पीठी।
जौं ओहि सर सौं होत[3] संग्रामा। कत बग सेत होत ओइ स्यामा।
करहिं न आपन उज्जर केसा। फिरि फिरि कहहिं पराव सँदेसा।
काग नाग एइ दूनौ बाँके। अपने चलत स्याम भै आँके।

अब कैसेहुँ मसि जाइ न मेंटी[4] भै जो स्याम ओइ अंक।
सहस बार जौं धोवहु तबहुँ[5] गयंदहि पंक[6]॥

[५४०]

अब सेवाँ जौं[1] आइ जोहारै। अबहूँ देखौं सेत कि कारै।
कहहु जाइ जौं साँच न डरना। जहवाँ सरन नाहिं तहँ मरना।

---

६. प्र० १, द्वि० ४, ५, पं० १ जनम न चाँद सूर सौं, द्वि० १ जो मन सँवरि चाँद सौं, द्वि० २ जनम न सँवरि चाँद सौं, तृ० १, च० १ जगम न सूर चाँद मन। ७. प्र० १, २ उठहिं दौरि कै काग, द्वि० ३ रो करहिं सब काग। ८. द्वि० १ निसि। ९. द्वि० ७ कहा।

५३९] १. प्र० १, २ टिकहिं, द्वि० ४ लिए, पं० १ नवै। २. प्र० १, २ फिरि सोही, द्वि० ३ उपराहीं। ३. द्वि० ४ सर ओहिं, द्वि० ५ सर सौंह। ४. प्र० १, २ अब न मोहिं मसि जाइहि। ५. द्वि० ४, ५, च० १ तौहु (हिंदी मूल)। ६. प्र० १ गयँद तजै नहिं पंक, द्वि० २ तबहूँ जाइ न पंक, द्वि० ४, ५, ६, च० १, पं० १ तौहु (हिंदी मूल) न मिटै कलंक।

५४०] १. प्र० १, २ सेवक होइ।

कान्हि आव गढ़ ऊपर भानू। जौं रे[२] धनुक सौहँ हिय बानू[३]।
बसिठन्ह पान मया के पाए। लीन्ह पान राजा पहँ आए।
जस हम भेंट कीन्ह[४] गा कोहू[५]। सेवा महँ पिरीति औ छोहू।
कान्हि साहि गढ़ देखै आवा। सेवा करहु जैस मन[६] भावा।
गुन सों चलै सो बोहित बोझा[७]। जहँवाँ धनुक बान तहँ सोझा।

भा आयसु राजा कर[८] बेगिहि करहु रसोइ।
तस सुसार रस[९]मेरवहु जेहिं रे[१०]प्रीति रस होइ॥

[५४१]

छागर मेंढा[१] बड़ औ छोटे। धरि धरि आने जहँ लगि मोंटे।
हरिन रोझ लगुना बन बसे। चीतर गौन झाँख औ ससे।
तीतर बटई लवा न बाँचे। सारस[२] कूँज[३] पुछारि जो नाँचे।
धरे परेवा पंडुक हेरी। खीहा[४] गडुरू उसर[५] बगेरी।
हारिल चरज आइ बँदि परे। बन कुकुटी जल कुकुटी[६] धरे।
चकवा चकई केंव[७] पिदारे। नकटा लेदी[८] सोन[९] सिलारे।[१०]
मोंट बड़े[११] सब टोइ टोइ धरे। उबरे दुबरे खुरुक न[१२] चरे।

कंठ परी जब छूरी रकत ढरा होइ आँसु।
कै[१३]आपन तन पोखा[१४] भा सो[१५] परावा माँसु॥

---

२. द्वि० ४ जो दै, द्वि० ५, च० १, पं० १ जोवै। ३. तृ० १ मानू। ४. पं० १ लीन्ह। ५. तृ० १ काहू। ६. तृ० ३ जिअ। ७. तृ० १ गुन सों बोहित चलै जिउँ बोझा। ८. द्वि० ४, ५ अस राज घर। ९. द्वि० ६, तृ० १ सब, तृ० २ अस। १०. द्वि० १ जेहि तें।

[५४१] १. द्वि० १ भेंड़ा। २. द्वि० १ हारिल। ३. प्र० १ कुरल। ४. प्र० १ खखहा, प्र० २ खगहा। ५. प्र० १, २, द्वि० ३ और, द्वि० ४ उतर। ६. प्र० १ जल के सब, प्र० २ जल केकढ़ा। ७. द्वि० ४, ५ केप। ८. च० १ कोंदी। ९. द्वि० २ लोन, तृ० ३ सवन। १०. प्र० १, च० २ चकया केंवा लेंदी, नकटा कौंधा सोन सलेंदी, प्र० २ चकई चकवा केंवा लेंदी, करे मीन बडड़े जल भेंदी। ११. प्र० २ मोंट बरि, तृ० ३ मोंट मोंट। १२. प्र० १ खुरुक ते, पं० १ खरिकन्ह। १३. द्वि० २, ३ जेइँ, तृ० ३ कै, द्वि० ४, ५ कत, तृ० १ केइँ। १४. द्वि० ७ पोषिआ। १५. प्र० १ मच्छि, प्र० २ भरिब सो, द्वि० १ खाहिं, द्वि० २ खासो।

[५४२]

धरे मंछ पढ़िना औ रोहू। धीमर मारत करै न[1] छोहू।
संध सुगंध[2] धरे जल बाढ़े। टेंगनि[3] मोइ टोइ[4] सब काढ़े।
सिंगी[5] मँगुरी बीनि सब[6] धरे। नरिया[7] भोथ[8] बाँब[9] बंगरे[10]।
मारे चरक चाल्ह परहाँसी[11]। जल तजि कहाँ जाइ जल[12] बासी[13]।
मन होइ मीन चरा मुख चारा। परा जाल दुख को निरुवारा।
माँटी खाइ मंछ नहिं बाँचे। बाँचहि का जो भोग सुख राँचे[14]।
मारै कहँ सब अस कै पाले। को उबरा एहि सरवर घाले।

एहि दुख कंठ सारि कै अगुमन[15] रकत न राखा देह।
पंथ[16] भुलाइ आइ जल बाझे[17] झूठे जगत सनेह[18]॥

[५४३]

देखत गोहूँ कर हिय फाटा। आने तहाँ होब जहँ आटा।

---

[५४२] १. द्वि० १, ४, ५, तृ० ३ धीमर धरत करै नहि। २. प्र० १ सनद सिलंध, प्र० २ सनदहिं सनद, द्वि० १, ७ सिंध सिलंध, तृ० ३ संध सेंध। ३. द्वि० १ टेंगर, द्वि० २ सपकी, तृ० १ नवधी। ४. प्र० १ धोइ, प्र० २ ढोइ। ५. पं० १ और संग। ६. प्र० १ जो। ७. प्र० १, २ नैनी, द्वि० ४ तरया, द्वि० ५ तरपा। ८. द्वि० ४, ५ बहुत, द्वि० ७ कटवा। ९. प्र० १ बाँक, द्वि० ५ भाँति। १०. द्वि० २ टेकरे, च० १ कँकरे। ११. प्र० १, द्वि० ७ मरे सो चनका चेल्हा पिआसी, प्र० २ मारै चनगा चाल्हि परिआसी। १२. द्वि० ५ जल तासी, तृ० ३ बन बासी। १३. द्वि० १ जगत जिआ कहँ जल मो मासी। १४. द्वि० ६, तृ० १ पाँचे। १५. प्र० १ एहि दुख कंठ सारि कै, द्वि० १ एहि दुख कंठ जारि कै, पं० १ कंठ सारि कै अगुमन। १६. प्र० २, द्वि० ५ तबहुँ। १७. प्र० १ आइ जल, द्वि० ४ आइ जल पाछे। १८. द्वि० ३, तृ० ३ झूठी मया सनेह।

*यह छंद तृ० २ में नहीं है, किंतु यह छंद प्रसंग में आवश्यक है, क्योंकि एक तो आगे मांस के बाद मछलियाँ पकाने का वर्णन हुआ है, और दूसरे इस छंद की ५—९ पूर्ण रूप से जायसी की विचारधारा और उनकी अध्यात्मवाद-प्रमुख प्रवृत्ति की पंक्तियाँ हैं।

सब पीसे जब पहिलेहिं धोए। कापर छानि माँड़ि भल पोए[1]।
करिल चढ़े[2] तहँ पाकहिं पूरीं[3]। मूँठिहि[4] माँह रहहिं सौ चूरीं[5]।
जानहुँ सेत पीत[6] ऊजरी। लैनू चाहि अधिक कोंवरी।
मुख मेलत खिन जाहिं बिलाई[7]। सहस सवाद पाव जो खाई।
लुचुई पोइ घीय सो भेईं। पाछें चहीं[8] खाँड सों जेईं।
पूरि[9] सोहारी करी[10] घिउ चुवा। छुवत बिलाहिं[11] डरन्ह को[12] छुवा।

कही न जाइ मिठाई कहति मीठि सुठि बात।
जेंवत[13] नाहिं अघाइ कोइ[14] हिय बरु[15] जाइ सिरात॥

[५४४]

सींझहिं[1] चाउर बरनि न जाहीं। बरन बरन सब सुगँध बसाहीं।
रायभोग औ काजर रानी। झिनवा रौदा[2] दाउद खानी।
कपुरकांत लेंजुरि[3] रितुसारी। मधुकर ढेला जीरा सारी[4]।
घिरतकाँदौ[5] औ कुँवर[6] बेरासू। रामरासि[7] आवै अति बासू।
कहिअ सो सोंधे लाँबे[8] बाँके[9]। सगुनी बेगरी[10] पद्मिनी पाके[11]।

---

[५४३] १. द्वि० ४, ५ होए। २. द्वि० ७ चुइ। ३. प्र० २ धुरीं। ४. प्र० २, द्वि० १, २ हाथहिं। ५. प्र० १ होहिं सो चूरी, द्वि० ४, ५, तृ० ३ रहहिं सौ जोरी। ६. तृ० ३ पेत (उर्दू मूल)। ७. द्वि० ५ मिलाई। ८. प्र० १, २ जानु। ९. प्र० १, २ पुआ। १०. प्र० १ महँ, तृ० ३ करे (उर्दू मूल), तृ० २ कर, द्वि० ३ कचोर। ११. पं० १ हाथ। १२. तृ० १ जो। १३. द्वि० १ देखत। १४. प्र० २ नाहिं अघाइ कोइ, तृ० ३ जाइ अघाइ कोइ, द्वि० ४ जाइ अघाइ न कोई, च० १ अघाइ न कोई, पं० १ नाहिं अघाई। १५. तृ० २, च० १ हियोरे।

[५४४] १. प्र० १, द्वि० २, ४, ५ रींधहिं, द्वि० १ रींधे, प्र० २, द्वि० ३ रीझहिं, तृ० १, २, पं० १ रीझे। २. प्र० १ झिनवाँ दूधा, प्र० २ झिनवाँ रुदवा, द्वि० ७ छेउअन छुआ, च० १ पुनि झिनवाँ औ। ३. द्वि० ४, ५ कजरी। ४. प्र० १ मधुकर जीरा देहुला भारी। ५. च० १ सो सुख दास। ६. प्र० १, २ कवँल। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ राम सारि, द्वि० १ राय नाँद, द्वि० ४, ५, ६ राम दासि। ८. द्वि० ४, ५, तृ० २ लाँची, तृ० १ लांजन, द्वि० ३ लायची, च० १ लाँजी। ९. प्र० २ काटी देहुला जीरा बाँके। १०. द्वि० २, च० १, पं० १ देव जीरा औ। ११. प्र० २ सोन खरिका बाजा देवा नागा, जगरनाथ भोग सब लागा।

गड़हन जड़हन बड़हन मिला । औ संसार तिलक खँडचिला[12] ।
रायहंस औ हंसा भौंरी[13] । रूपमाँजरि केतुकी बिकौरी[14] ।

सोरह सहस बरन अस सुगँध बासना छूटि ।
मधुकर[16] पुहप सो[17] परिहरे[18] आइ परे सब[19] टूटि ॥

[५४५]

निरमल[1] माँसु अनूप पखारा[2] । तिन्ह के अब बरनौं परकारा ।
कटवाँ बटवाँ[3] मिला सबासू । सीझा अनबन[4] भाँति गरासू ।
बहुते सोंधे घिरित बघारा[5] । औ तहँ कुंकुहँ पीसि उतारा[5] ।
सेंधा लोन परा सब हाँड़ी । काटे कंद मूर कै आँड़ी ।
सोवा सौंफ उतारी धना[6] । तेहि ते अधिक आव[7] बासना ।
पानि उतारा टाँकहिं टाँका[8] । घिरित परेह रहा तस पाका[9] ।
औरु कीन्ह[10] माँसुन्ह के खंडा । लाग चुरै[11] सो[12] बड़ बड़ हंडा ।

छागर बहुत समूँचे[13] धरे सरागन्हि भूँजि ।
जो अस जेंवन जेंवै उठै सिंघ अस[14] गूँजि ॥

---

१२. तृ० १ खँड तिला । १३. तृ० १ गौरी । १४. द्वि० १ कातक कौरी, द्वि० ४, ५ औ गन गौरी । १५. प्र० २ धानी देहुला अकर अजाना, कहा कहा मासु बरनौं धाना । १६. तृ० ३ मधुन्ह । १७. प्र० १ २, द्वि० ७, तृ० २, पं० १ पुहुप जो, द्वि० १ ते सब, द्वि० २ पुहुप । १८. द्वि० १ रीझेउ, द्वि० ४, ५ आनि के । १९. तृ० ३ तेहि ।

[५४५] १. प्र० १, २ कोमल, द्वि० २, च० १, पं० १ परिमल । २. प्र० १, २ द्वि० ७, बघारा, च० १, पं० १ सँवारा । ३. तृ० ३ पटवा (उर्दू मूल), तृ० १ सोवाँ । ४. द्वि० ४ अनुभग, च० १ उत्तिम, द्वि० ५ में अनवन (हिंदी मूल तुलना० ३२८-९) । ५. प्र० १, २ बहुते सोंधे घिउ महँ तरे, कस्तुरी केसरि पीसि उतारे, द्वि० ६ बहुते सोंधे घिरित बघारा, अब तिन्ह के बरनौं परकारा, द्वि० ३ घिरित बघारि मेलि बिसवारा, औ तहँ लौंगहिं पीसि उतारा । ६. द्वि० ४, ५ धनियाँ । ७. प्र० १ बसाइ । ८. प्रायः समस्त प्रतियों में 'ताकहि ताका' है, जो निरर्थक है । ९. तृ० १ राखा । १०. द्वि० ४, ५ लीन्ह । ११. द्वि० ४, ५, च० १ चढ़े । १२. तृ० ३ सब । १३. द्वि० ७ समूचे पुनि । १४. तृ० १ और ।

[५४६]

भूँजि समोसा घिय महँ काढ़े। लौंग मिरिचि तिन्ह महँ सब डाढ़े।
औरु जो माँसु अनूप सो बाँटा। भे फर[1] फूल आँब औ भाँटा।
नारँग दारिवँ तुरुँज जँभीरा। औ हिंदुआना[2] बालबाँ[3] खीरा।
कटहर बड़हर तेउ सँवारे। नरियर दाख खजूर छोहारे।
औ जावँत खजेहजा होहीं। जो जेहि बरन[4] सवाद[5] सो ओहीं।
सिरिका भेइ काढ़ि ते[6] आने। कँवल जो कीन्ह रहहिं बिगसाने[7]।[8]
कीन्ह मसौरा[9] धनि सो[10] रसोई। जो किछु सबहि माँसु हुतें[11] होई।

बारी आइ पुकारै[12] लिहें सबै[13] फर छूँछ।
सब रस लीन्ह रसोईं[14] अब मो कहँ[15] को पूँछ ॥*

[५४७]

काटे मंछ मेलि दधि[1] धोए। औ पखारि चहुँ बार[2] निचोए।
करुए तेल कीन्ह बसिवारू। मेंथी कर तेहि[3] दीन्ह धुँगारू।
जुगुति जुगुति[4] सब मंछ बघारे। आँब चीरि[5] तेहि माहँ उतारे।
ऊपर तेहिं तहँ[6] चटपट राखा। सो रस परस पाव जो चाखा।

---

[५४६] १. तृ० ३ जैफर। २, प्र० १ दांसे और जो, प्र० २ औ डेड़सा पुनि। ३. द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० २ वालम, तृ० ३ बाँका। ४. द्वि० १ तेहि तें अधिक। ५. तृ० १ कीन्ह तेहि। ६. द्वि० ४, ५ गाढ़ जनु। ७. प्र० १ रहहिं कुंभिलाने। ८. च० १ (यथा. २) जो मांसू सो नासू मिला, ते कबाब कै ऊपर तला। ९. च० १ मेवरा। १०. प्र० १ सुपछ, प्र० २ सीभि। ११ प्र० १, २ कहा मांसु तें। १२. द्वि० ७ पुकारै तहँ। १३. प्र० १, २, द्वि० ८, च० १ हाथ लिहें, द्वि० ३ कीन्ह सबै। १४. प्र० २ रसोइ धरि। १५. तृ० १ हमहिं, च० १ सो कतहुँ।

* पं० १ में इस छंद की सातवीं पंक्ति के बाद से लेकर छंद ५४९ की सातवीं पंक्ति तक का अंश नहीं है। अशुद्धि प्रकट है।

[५४७] १. प्र० १ मेलि धनि, द्वि० १ घालि दधि, द्वि० ४, ५ मेलि दूध। २. प्र० १ जेहि चार, प्र० २, द्वि० ७ चौवार, च० १ जल बारि। ३. तृ० ३ मीठे कर तेहि (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५ मीठे घिरित सों, च० १ मीठे केरे। ४. प्र० १ जतन जतन, द्वि० १ जुगुति सहित। ५. प्र० १, २ आँबचूर, द्वि० ७ आँब मेलि। ६. द्वि० १, ४ औ परेह तेहि, तृ० ३ औ परेह तहँ।

भाँति भाँति तिन्ह खँडरा तरे। अंडा[7] तरि तरि बेहर[8] धरे।
घिउ टाटक महँ सोधि सेरावा। पंखि बघारि[9] कीन्ह अरदावा[10]।
कुंकुहँ परा कपूर बसाई। लौंग मिरिच्चि तेहि ऊपर लाई।

घिरित परेह[11] रहा तस हाथ पहुँचा लहि बूड़[12]।
बूढ़ खाइ तौ होइ नवजोबन[13] सौ मेहरी लै ऊड़[14]॥*

[५४८]

भाँति भाँति सीझी तरकारी। कइउ भाँति कुम्हड़ा कै फारी।
भै भूँजी लौआ[1] परवती। रैता कहँ काटे कै रती[2]।
चुक्क लाइ कै रींधे भाँटा। अरुई कहँ भल अरिहन बाँटा[3]।
तोरई चिचिंडा डिंडसी तरे। जीर धुँगारि कलै सब[4] धरे।
परवर कुँदुरू भूँजे ठाढ़े। बहुते घियँ चुरुचुर कै[5] काढ़े।
करुई काढ़ि[6] करैला काटे। आदी मेलि तरे किए खाटे।
रींधे ठाढ़ सेंब[7] के फारा। छौंकि साग पुनि सोंधि उतारा[8]।

---

७. तृ० ३ खँडरा। ८. द्वि० ७ बाहर। ९. प्र० १ नख बरारि, प्र० २ नख बघारि, च० १ अनेक बखान। १०. द्वि० ६ अरिहन लाखा। ११. द्वि० ७ प्रेव। १२. द्वि० ७ डूब। १३. तृ० ३ खाइ होइ नौ जोबन, द्वि० ३, ४, च० १ खाइ नौ जोबन। १४. प्र० १ होइ कंठ कै जूड़, प्र० २ जोबन मेहरी बूड़, द्वि० १, च० १ सौ मेहरी कै ऊड़, तृ० ३ मेहरि मेहरि कौ ऊड़, तृ० १ सबै मेहरि लै ऊड़, तृ० २ जो नवे बरस का ऊड़, द्वि० ३ होइ सो मेहरि कहँ ऊड़।

* यह छंद पं० १ में नहीं है। किंतु ऊपर छंद ५४२ में मछलियों के पकड़े जाने का उल्लेख हुआ है, इस लिए यह छंद प्रसंगोचित लगता है।

[५४८] १. द्वि० १, ४, ५ लौका। २. प्र० १,२ रैतू कीन्ह काटि रति रती ३. प्र० १,२ आँटा। ४. प्र० १ तारझँति, प्र० २ ठारि झँपि, द्वि० ४, ५, मेलि सब। ५. प्र० १ महँ चुनि चुनि (हिंदी मूल) ६. प्र० १, २ करुए आनि, तृ० ३ अरुई काढ़ि। ७. तृ० ३ सेंक, द्वि० ४ सेप, द्वि० ५ सेब। ८. प्र० १, २ साग छ सात रींधि कै धरा।

सीझी सब तरकारी भा जेंवन सब[९] ऊँच।
दहुँ जेंवत का रूचै[१०] केहि पर दिस्टि पहूँच ॥*

[५४९]

घिरित कराहन्हि बेहर धरा[१]। भाँति भाँति सब पाकहिं बरा।
एकहि आदि मिरिच सिउँ पीठे[२]। औरु जो दूध[३] खाँड सो मीठे[४]।
भई मुँगौछी[४] मिरिचैं परीं। कीन्ह मुंगौरा[५] औ गुरवरी[६]।
भई मेंथौरी सिरिका परा। सोंठि लाइ कै खिरिसा धरा।
मीठ[७] महिउ[८] औ जीरा लावा। भीजि बरी[९] जनु लैनू ब्रावा।
खँडुई कीन्ह अंबचुर तेहिं परा। लौंग लाइची सिउँ[१०] खडि धरा[११]।[१२]
कढ़ी सँवारी औ डुभुकौरी[१३]। औ खँडवानी लाइ बरौरी।[१४]

पान लाइ कै रिंकवछ छौंके[१५] हींगु मिरिच औ आद।
एक[१६] कठहँडी जेंवत सत्तरि[१७] सहस[१८] सवाद ॥

[५५०]

तहरी पाकि लोनि[१] औ गरी। परी चिरौंजी औ खुरुहुरी[२]।

---

९. च० १ सुठि। १०. तृ० ३ जोवत का रूचै, द्वि० ४, ५ का रूचै सारि कहँ।

* यह छंद पं० १ में नहीं है, किंतु और सब व्यंजनो के साथ तरकारियों का वर्णन प्रसंगोचित लगता है।

[५४९] १. द्वि० ३ भरि भरि परा, द्वि० ६ बेगर परा। २. प्र० १, २, द्वि० ७ डीठे, मीठे, तृ० ३ पीठा, मीठी (उर्दू मूल)। ३. तृ० ३ दही। ४. प्र० १ भई फुलौरी, द्वि० ७ भई मुँगौरी, च० १ मुँगछी भीतर। ५. प्र० १ कीन्हि मुँगौछी, द्वि० ७ कान्ह मुँगौरा। ६. प्र० १ कोंवरी, प्र० २ कोरवरी, द्वि० ३ खँडबरी, च० १ कुछ वरी। ७. तृ० ३ माँठा। ८. द्वि० ३ दहिउ। ९. द्वि० ४, ५ वरा। १०. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० १, ३ सों। ११. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ बरा, तृ० १ धरा। १२. द्वि० ६ सोंटि लाइ कै खिरिसा धरा (५४९.४)। १३. द्वि० ४, ५ और फुलौरी। १४. द्वि० १ में . ६ के प्रथम चरण के साथ . ७ का दूसरा चरण तथा . ७ के प्रथम चरण के साथ . ६ का दूसरा चरण है। १५. प्र० १, च० १ रिकवछ, प्र० २ रिकवछ कीन्हे। १६. द्वि० ५ बक। १७. प्र० १, २ पाइअ, द्वि० २, ४, ५ पावै, द्वि० ६ सत्रह, तृ० १ सत्रह। १८. द्वि० ६ सत्त।

[५५०] १. प्र० १, २ लौंग औ गरी, द्वि० ४, ५ बोन औ गरी, द्वि० ७ लोनी गुरी। २. तृ० ३ खुर झुरी।

घिरित भूँजि कै पाका पेठा। औ भा अंब्रित गुरँब[3] मरेठा।[4]
चुंबक लोहड़ा[5] औटा खोवा। भा हलुवा घिउ करै निचोवा।
सिखरन सोंधि छनाई गाढ़ी। जामा दूध दहिउ सिउँ[6] साढ़ी।
और दहिउ के मोरँड बाँधे। औ संधान बहुत तिन्ह[7] साँधे।
भै जो मिठाई कही[8] न जाई। मुख मेलत खिनु जाइ बिलाई।
मोंतिलड्डु छाल और[9] मुरकुरी[10]। माँठ पेराक बुँद ढुरहुरी[11]।

फेनी पापर भूँजे भए अनेग परकार।
भै जाउरि[12] पछियाउरि[13] सीझा सब जेंवनार॥

[५५१]

जति परकार रसोइँ बखानी। तब भइ जब[1] पानी सौं सानी।
पानी मूल परेखौ कोई। पानी बिना सवाद न होई।
अंब्रित पानि न अंब्रित आना। पानी सों घट रहै पराना।
पानि दूध मह[2] पानी घीऊ। पानि घटैं घट रहै न जीऊ।
पानी माहँ समानी[3] जोती। पानिहिं उपजै मानिक[4] मोंती।
पानी सब महँ निरमरि करा। पानि जो छुवै[5] होइ[6] निरमरा[7]।

---

३. प्र० १ और अंब्रित करि करै, प्र० २ और अंब्रित गर गरी, तृ० २, पं० १ औ भा अंब्रित गरै। ४. च० १ अँबरस कीन्ह जो पाका पेंठा, जानहु अंब्रित करहि कर पैठा। ५. प्र० २ चक मक लोहडा औटा, द्वि० ६ आनि लोडहा, च० १ चुंबक हंडा। ६. प्र० १ अस, प्र० २, जस, तृ० ३ कै। ७. प्र० १ बहु अनबन, प्र० २ अनबन विधि, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७ च० १ बहु भाँतिन्ह। ८. तृ० ३ कहैं (उर्दू मूल)। ९. तृ० ३ मोति लडु जहँलड औ, द्वि० ४, ५, च० १, पं० १ मोटिला छाल और, द्वि० २, ६, तृ० २ मोटिला छटिला औ, तृ० १ मोटिला छद और। १०. प्र० १ बाँधे औ कोवरे, प्र० २ भीन मुरकुरी, तृ० ३ औ मु कोरी। ११. प्र० १ बूँद ढूँढि ढूँढि बरे, तृ० ३ पेराक जो बुंद ढढोरी, द्वि० ४, ५ पेराकैं और बुंदौरी। १२. द्वि० ४, ५, तृ० ३ चाउर। १३. प्र० २ बधि-आउरि, द्वि० ४, ५ भजिआउरि।

[५५१] १. द्वि० ४, ५, ६, तृ० १ सब। २. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, च० १ सों, तृ० २ औ। ३. द्वि० १ महँ सों निरालि। ४. प्र० १ निरमल। ५. प्र० १, २ कछू। ६. द्वि० ४ सोइ। ७. च० १ पानिहि पानि जो होइ निरमरा, पं० १ पानिहिं सों जो होइ निरमरा।

सो पानी मन[८] गरब न करई। सीस नाइ खाले कहँ ढरई।

मुहमद नीर[९] गँभीर जो सोनै[१०] मिलै समुँद।
भर ते भारी होइ रहे छूछे बाजहिं दुंद॥*

[५५२]

सीझि रसोई भएउ बिहानू। गढ़ देखै गवने[१] सुलतानू।
कवँल सहाइ सूर सँग लीन्हा। राघौ चेतनि आगें कीन्हा।
तेतखन आइ बेवान पहूँचा। मन सों अधिक गँगन सौं ऊँचा[२]।
उघरी पँवरि चला सुलतानू। जानहुँ चला गँगन कहँ भानू।
पँवरि सात सातौ खँड बाँकी। सातौ गढ़ि[३] काढ़ी दै[४] टाँकी[५]।
जानु उरेह[६] काटि सब काढ़ीं। चित्र मूरति[७] जनु बिनवहिं ठाढ़ीं।
आजु पँवरि मुख भा निरमरा। जौं सुलतान आइ पगु धरा।

लख लख बैठ[८] पँवरिया जिन्ह सों नवहिं करोरि।
तिन्ह सब[९] पँवरिं उघारी[१०] ठाढ भए कर जोरि॥

[५५३]

सातहुँ पँवरिन्ह कनक केवारा। सातहुँ पर बाजहिं घरियारा।
सातहुँ रंग सो सातहुँ पवँरी। तब तहँ चढ़ै फिरै सत[१]भँवरी।

---

८. प्र० १। २ निरमलि पानि सो। ९. द्वि० १ पानि। १०. द्वि० ४, ५ जो सोते, द्वि० ६, तृ० १ जे तेते, च० १ जे सो ते।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है।

[५५२] १. तृ० २ आवै, पं० १ आवा। २. प० १ मन तें चाहि अधिक सों ऊँचा। ३. पं० १ खंड। ४. प्र० १, २ काढ़ि एक, द्वि० ७ लाइ कै. पं० १ गढी हैं। ५. प्र० २, द्वि० ४, ५ नाकी। ६. तृ० २, जावँत जीव। ७. च० १, पं० १ मूरतहँ। ८. द्वि० १ सहसन्ह बैट, तृ० ३ लाखन्ह बैठ, तृ० १ लाखन्ह लाख। ९. तृ० ३ तिन्ह सो (हिंदी मूल), द्वि० ६ ते सत, च० १, पं० १ ते सेइँ। १०. प्र० १, २, द्वि० १ उघारि कै, द्वि० ६ होइ राखा कै, प० १ राखा रहहिं।

[५५३] १. प्र० १ अस, द्वि० ४, ५ नर।

खँड खँड साजी पालक[2] पीढ़ी। जानहु[3] इंद्र लोक की सीढ़ी।
चंदन बिरिख सुहाई[4] छाँहाँ। अंब्रित कुंड भरे तेहि माहाँ।[5]
फरे खजेहजा दारिवँ दाखा। जो ओहि पंथ जाइ सो चाखा।[6]
सोने क छात[7] सिंघासन[8] साजा। पैठत पँवरि मिला लै[9] राजा।
चढ़ा साहि चितउर गढ़[10] देखा। सब संसार पाँव तर लेखा।

साहि जबहिं[11] गढ़ देखा[12] कहा देखि कै साजु[13]।
कहिअ राज[14] फुर[15] ताकर सरग करै जो[16] राजु॥

[५५४]

चढ़ि[1] गढ़ ऊपर बसगति[2] देखी। इंद्रपुरी[3] सो जानु बिसेखी[4]।
ताल तलाव सरोवर भरे। औ अँबराउँ चहूँ दिसि फरे।
कुँवा बावरी भाँतिन्ह भाँती[5]। मढ़ मंडप तहँ भे चहुँ पाँती[6]।
राय राँक घर घर सुख[7] चाऊ। कनक मँदिल नग कीन्ह[8] जराऊ।
निसि दिन बाजहिं मंदिर[9] तूरा। रहस कोड सब लोग[10] सेदूरा।

---

२. प्र० १ पलँग औ, प्र० २ पालकी, द्वि० १ पलका। ३. प्र० १, २, पं० १ लागीं। ४. प्र० १ सोहावन, तृ० ३ सो होई। ५. तृ० २ पँवरि भाव जस रहा उँचावा, तिस भाव मोहि बरनि न आवा। ६. तृ० २ सो देखत छवि आहि न ठाऊ, बहुत भाँति सब ऊँच उँचाऊ। ७. तृ० २ रतन जड़ाव। ८. द्वि० १ इंद्रासन। ९. प्र० १ चला लै। १०. द्वि० ४, ५ चढि। ११. द्वि० २, ३ जौहि (हिंदी मूल) द्वि० ४, ५ गगन। १२. प्र० १, २, द्वि० ४, च० १, पं० १ देखा साहि गगन गढ। १३. द्वि० १, औ देखा सब साजु, द्वि० २, ३, तृ० १, २, चढा देखि कै साज, द्वि० ४, ५, च० १, पं० १ इंद्र लोक के साज। १४. प्र० १ जिअन। १५. तृ० २, द्वि० ३ थिर १६. प्र० १, २, तृ० १ अस।

[५५४] १. द्वि० ७ पुनि। २अ. द्वि० ४, ५ संगति। ३. द्वि० ७ कंचन पुरी। ४. प्र० १, २, पं० १ पुनि देखा गढ ऊपर बसा, धनि राजा जाकरि अस देखा। ५. प्र० १ कुंवा बावरी पाँतिहि पाँती, द्वि० १ कूप देख तहँ भाँति भाँती। ६. प्र० १ तहँ भाँतिहि भाँती, प्र० २ साजे चहुँ पाँती, तृ० २, पं० १ तहँ पातिहि पाती। ७. प्र० १ सब। ८. प्र० १, २, पं० १ लाग। ९. प्र० १, २ मादरी १०. प्र० १, २ मरे, द्वि० १, ७ माँग।

रतन पदारथ नग जो बखाने। खोरिन्ह[११] महँ देखिअ[१२] छिरिआने[१३]।[१४]
मँदिल मँदिल फुलवारी बारी। बार बार बहँ[१५] चित्तरसारी[१६]।[१७]

पाँसा सारि कुँवर सब खेलहिं[१८] स्रवनन्ह गीत ओनाहिं[१९]।
चैन चाउ तस देखा जनु गढ़ छेंका नाहिं॥*

[५५५]

देखत साहि कीन्ह तहँ फेरा। जहाँ मँदिल पदुमावति केरा।
आस पास सरवर[१] चहुँ पासाँ। माँझ मँदिल जनु लाग[२] अकासाँ।
कनक सँवारि नगन्हि सब जरा। गँगन चाँद जनु नखतन्ह भरा।
सरवर चहुँ दिसि पुरइनि फूली। देखा वारि[३] रहा मन भूली।
कुँअर लाख दुइ बार अगोरे। दुहुँ दिसि पँवरि[४] ठाढ़ कर जोरे।
सारदूर दुहुँ दिसि गढ़ि काढ़े। गल गाजहिं[५] जानहुँ रिसि बाढ़े[६]।
जावँत कहिऔ चित्र कटाऊ। तावँत पँवरिन्ह लाग जराऊ।

साहि मँदिल अस देखा जनु कबिलास अनूप।
जाकर अस धौराहर सो रानी केहि रूप॥

[५५६]

नाँघत[१] पँवरि गए खँड साता। सोनै[२] पुहुमि बिछावन राता।

---

११. द्वि० ३ पँवरिन्ह। १२. प्र० १ खोरिन्ह माँह रहहिं, द्वि० ७ खोरि खोरि दीसहिं। १३. प्र० १, २, द्वि० ७ छितराने, च० १ छहराने। १४. तृ० २ में चंदन बिरिख सुहाई छाँहाँ, अंब्रित कुंड भरे तेहि माहाँ (५५३.४) १५. प्र० १, पं० १ सब। १६. द्वि० ४ चित्र सँवारी। १७. तृ० २ फरे खजोहजा दारिखँ दाखा, जो ओहि पंथ जाइ सो चाखा। (५५३.५) १८. पं० १ खेल सब। १९. प्र० १ चित चिंता नसिं ताहि।

* तृ० २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५५५] १. प्र० १ पुरइनि, द्वि० १ सागर। २. तृ० २ अति ऊँच। ३. तृ० ३ बागि, तृ० १ साहि। ४. तृ० १ बिनव। ५. द्वि० ७ डरहिं गयंद। ६. प्र० १ जानहुँ सिर चढ़े, तृ० ३ जानहुँ सिर ठाढ़े, द्वि० ३, ४, ५, च० १ जानहुँ रिस ठाढ़े, तृ० २ गहवर तहँ ठाढ़े, पं० १ जानहुँ ते ठाढ़े।

[५५६] १. द्वि० १ देखत। २. द्वि० ४, ५ सनई।

आँगन साहि ठाढ़ भा आई। मँदिल छाँह अति सीतलि पाई[3]।
चहूँ पास फुलवारी बारी। माँझ सिंघासन धरा सँवारी।
जनु बसंत फूला सब सोने। हँसहि फूल बिगसहिं[4] फर लोने।
जहाँ सो ठाँउ दिस्टि महँ आवा। दरपन भा दरसन देखरावा।
तहाँ पाट राखा सुलतानी। बैठ साहि मन जहाँ सो रानी।
कँवल सुभाइ[5] सूर सौं हँसा। सूर क मन[6] सो चाँद पहँ[7] बसा।

सो पै जान पेम[8] रस हिरदैं पेम अँकूर।
चंद्र जो बसै चकोर चित नैनन्ह आव न सूर॥

[५५७]

रानी धौराहर उपराहीं[1]। गरबन्ह दिस्टि न करहि तराहीं।
सखीं सहेलीं साथ बईठी। तपै सूर ससि आव न[2] डीठी।
राजा सेव करै कर जोरें। आजु साहि घर आवा मोरें।
नट नाटक पतुरिनि[3] औ बाजा। आनि अखार सबै तहँ साजा।
पेम क लुबुध बहिर औ अंधा। नाच कोड जानहुँ सब धंधा।
जानहुँ काठ नचावै कोई। जो जियँ नाँच[6] न परगट होई[5]।
परगट कह राजा सौं बाता। गुपुत पेम पदुमावति राता।

गीत नाद[6] जस धंधा[7] धिकै[8] बिरह कै आँच।
मन की डोरि लागि तेहि ठाँई[9] जहाँ सो गहि गुन खाँच[10]॥

---

३. प्र० १, २, च० १, पं० १ चित भा चित्र देखि औ।नाई, दरपन रूप पुहुमि चिकनाई। ४. तृ० ३ भरि। ५. तृ० ३ सहाय। ६. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ जीउ, द्वि० १ दीठ। ७. प्र० १, २ महँ, द्वि० ६ सो, द्वि० ३ अहँ। ८. प्र० १ नेह, तृ० ३ नैन।

५५७] १. तृ० ३ ऊपर जाहीं, द्वि० ७ पर आहीं। २. तृ० १ परै न। ३. तृ० ३ पैरीन्ही। ४. प्र० १, २, पं० १ भाव। ५. द्वि० १ न उपनै सोई, द्वि० ३ निरत कत होई। ६. द्वि० १ कबित नाच, पं० १ नाँच नाद। ७. प्र० २, द्वि० १ सब धंधा, द्वि० ७ सब धंध जस, पं० १ नहिं भावै। ८. तृ० २ जरै। ९. द्वि० १ तन महँ डोरी लाइकै, द्वि० २, पं० १ मन की डोरि लागि तहँ, तृ० १, च० १ मन की डोरि लागि जहँ। १०. प्र० १, २, द्वि० ७, च० १ चहँ सो गुन गहि खाँच (प्र०२—पाँच), द्वि० १ चाहै केहि गुन खाँच, द्वि० २ जहँ जेहि कत गहि खंच, तृ० १ चहै सो कब गहि खाँच, तृ० २ जहाँ सो गहि कै खाँच, पं० १ ठाइं प्रेम गहि खाँच।

[५५८]

गोरा बादिल राजा पाहाँ। राउत दुवौ दुवौ जनु बाहाँ।
आइ स्रवन राजा के लागे। मूँसि न जाहिं[1] पुरुख जौं जागे।
बाचा परखि[2] तुरुक हम बूझा। परगट मेरु[3] गुपुत छर सूझा।
तुम्ह न करहु तुरुकन्ह सौं मेरू। छर पै करहिं अंत के फेरू।
बैरी कठिन कुटिल जस काँटा। ओहि मकोइ रहि[4] चूरिहि[5] आँटा।
सतुरु कोटि जौं पाइअ गोटी। मीठे खाँड जेंवाइअ रोटी।
हम सो ओछ कै पावा छातू। मूल गए सँग रहै न पातू।

इहौ किस्न बलि बार जस[6] कीन्ह चाह छर बाँध।
हम बिचार अस आवै[7] मेरहि[8] दीज न काँध॥

[५५९]

सुनि[1] राजा हियँ[2] बात न भाई[3]। जहाँ मेरु तहँ अस नहिं भाई[4]।[5]
मंदहि भल[6] जो करै भलु सोई[7]। अंतहु भला भले कर होई।
सतुरु जौं बिख दै चाहै मारा। दीजै लोन जानु बिख सारा।
बिख दीन्हे बिखधर होइ खाई। लोन देखि[8] होइ लोन बिलाई।
मारें खरग खरग कर लेई। मारै लोन नाइ सिर देई।

---

[५५८] १. प्र० १, २ मूसहिं चोर, द्वि० ७ सूझ न जाहि, तृ० २ मूस न कोइ, पं० १ चोरहि मूस। २. तृ० ३ बाचा हरख, तृ० ३ बाजा हुरुक (उर्दू मूल), च० १ बाजा खरग। ३. तृ० १ हेत। ४. प्र० २ दहि मकोइ रह, द्वि० १ सो मकोइ दहिं, तृ० ३ सो मकोइ नहिं, द्वि० ३ ७, देइ अकोर रह, तृ० १, च० १ रह मकोइ रह, पं० १ रह मकोइ जिमि। ५. प्र० १, २ जो रह, द्वि० ३, ७ जहां नहि, तृ० २ रहै तो, पं० १ दुरिमन। ६. द्वि० ४, ५ येह सो किसुन बलि राजा जस, पं० १ जस र किसुन बलि बाँधा (७. प्र० २ तस येह चाह कीन्ह मन आने, पं० १ तस येह चाह कीन्ह। ८. प्र० १, २, च० १ बैरिहि।

[५५९] १. द्वि० २ मन। २. प्र० १, २, पं० १ राजहि येह। ३. प्र० १ आही। ४. प्र० १ छर तहाँ न चाही। ५. द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है। ६. प्र० १, २ मँद कर भल, द्वि० १ पांच किहें, तृ० १ सब कहि भल। ७. द्वि० १ जौं पै भल होई। ८. प्र० १, २ दिएँ।

कौरवँ बिख जौं पंडवन्ह दीन्हा। अंतहुँ दाँउ पंडवन्ह लीन्हा।
जो छर करै ओहि छर बाजा। जैसें सिंघ[9] मंजूसा साजा।[10]

राजैं लोनु सुनावा[11] लाग दुहूँ जस लोन।
आए कोंहाइ मँदिल कहँ सिंघ जानु औगौन[12]॥[13]

[५६०]

राजा कें सोरह सै दासीं। तिन्ह महँ चुनि[1] काढ़ीं चौरासीं।
बरन बरन सारीं पहिराईं। निकसि मँदिल हुतें सेवाँ[2] आईं।
जनु निसरीं सब बीर बहूटीं। रायमुनी पिंजर हुति छूटीं।
सबै प्रथम[3] जोबन सौं सोहीं। नैंन बान[4] औ सारँग भौंहीं।
मारहिं धनुक फेरि सर ओहीं। पनघट घाट[5] ढंग[6] जित[7] होहीं।
काम कटाख रहैं चित हरनी। एक एक तें आगरि बरनी।[8]
जानहुँ इंद्र लोक तें काढ़ीं। पाँतिन्ह पाँति भईं सब ठाढ़ीं।

साहि पूँछ राघौ कहँ सर तीखे नैनाहँ।[9]
तैं जो पदुमिनी बरनी कहु सो कवन इन्ह माहँ॥

[५६१]

दीरघ आउ पुहुमिपति भारी। इन्ह मह नाहिं पदुमिनी नारी।
यह फुलवारि सो ओहि की दासी। कहँ वह केत[1] भँवर सँग बासी।

---

९. प्र० १,२ कुंभ। १०. पं० १ छर कहि लीन्ह जो सिंघ मंजूसा, आमहि भरै दई तस रूसा। ११. प्र० २ सुनाव जब। १२. द्वि० २ आगौन। १३. द्वि० १ आए रिसाइ दुवौ जन सिंघ जनु कौनु।

[५६०] १. प्र० १ गुनि। २. प्र० १ निकसि मँदिर हुतें बाहर, च० १ कै सिंगार सेवाँ सब। ३. प्र० १, २ समागम। ४. तृ० १ बाँक। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ७, तृ० १, २, च० १, पं० १ बिनु गह घाट। ६. द्वि० २ धानुक, तृ० ३ धनुक (उर्दू मूल)। ७. प्र० १ फिरि, प्र० २, द्वि० २ जब, तृ० ३ सर, द्वि० ६ सब। ८. द्वि ६ में यह पंक्ति नहीं है। ९. प्र० १ ससहर नखत सो नाहिं, द्वि० २ सबै सखी नैनाहँ, तृ० ३ सरित खेलै नाहिं।

[५६१] १. द्वि० १, तृ० १ सो फूल।

वह सो पदारथ एइ सब मोंती। कहँ वह दीप पतँग[2] जेहि जोती।
ये सब तरईं सेव कराहीं। कहँ वह ससि[3] देखत छपि जाहीं[4]।
जौ लहि सूर कि दिस्टि अकासू। तब लगि ससि न करै परगासू।
सुनि कै साह दिस्टि तर नावा[5]। हम पाहुन एक मँदिल परावा[6]।[7]
पाहुन ऊपर हेरै नाहीं। हना राहु अरजुन परिछाहीं[8]।

तपै बीज जस धरती सूख बिरह कै घाय।
कब सुदिस्टि कै[9] बरिसै[10] तन तरिवर होइ जाय॥

[५६२]

सेव करहिं दासी चहुँ पासाँ। अछरीं जानु इंद्र कविलासाँ।
कोइ लोटा कोंपर[1] लै आईं। साहि सभा सब[2] हाथ धोवाईं।[3]
कोइ आगें पनवार बिछावहिं। कोइ जेंवन सब लै लै आवहिं।
कोई माँडि जाहिं धरि जोरी। कोई[4] भात परोसहिं पूरी।
कोई लै लै आवहिं थारा। कोइ परसहिं बावन परकारा।[5]
पहिरि जो चीर परोसै[6] आवहिं। दोसरैं औरु बरन देखरावहिं।[7]
बरन बरन पहिरहिं हर फेरा[8]। आव कुंड जस अछरिन्ह केरा[8]।

पुनि सँधान बहु आनहिं परसहिं बूकहिं बूक।
करै सँवार[9] गोसाईं जहाँ परै किछु[10] चूक॥

---

[2]. तृ० ३ पतिंग। [3]. तृ० १ दीप। [4]. द्वि० १ में यह पंक्ति नहीं है। [5]. द्वि० ४ नाहीं। [6]. तृ० १ मंदिर आवा। [7]. द्वि० १ सुनि कै साहि दिस्टि तर नाई, तीवै लागि तैस भिख खाई। [8]. द्वि० १ कहाँ सो हिए देखि छपि जाहीं। [9]. प्र० १ होइ, प्र० २, ७ धन। [10]. तृ० २ परसै।

[५६२] [1]. द्वि० ६ कोपी। [2]. तृ० २ साहि सभा लै, तृ० ३ साहि सभा होइ, पं० १ आनि साहि कै। [3]. द्वि० ३ (यथा. ६) चाँद के रंग फिरहिं सब आई, फटिक माँझ जनु देखिअ लाइ। च० १ कोइ लोटा कोइ गेडुवा झारी, साहि सभा सब हाथ पखारी। (मूल की तुलना कीजिए ५६४. ५ से) [4]. द्वि० ३ औ। [5]. पं० १ पुनि आए नेवन लै खारा, भाँति भाँति आए परकारा। [6]. च० १ एक बेर। [7]. प्र० १, २, तृ० १, पं० १ जाहिं परोसि बहुरि जौ आवहिं, आन बसन पहिरे देखरावहिं, च० १ पहिरि जो चीर एक बेर आवहिं, दोसर और चीर पहिरावहिं। [8]. तृ० १ फेरी, न जानौं कतक चीर ओन्ह केरी। [9]. च० १ सुसार। [10]. तृ० १, २ परी होइ जहँ।

[५६३]

जानहुँ नखत रहहिं[1] रबि सेवाँ[2]। बिनु ससि सूरहि भाव न जेंवाँ।
सब परकार फिरा हर फेरें। हेरा बहुत न पावा हेरें।
परी असूझ सबै तरकारी। लोनी बिना लोन सब खारी।
मंछ छुत्रै आवहिं कर काँटे जहाँ कँवल तहँ हाथ न आँटे।
मन लागेउ तेहि कँवल की डंडी। भावै नहिं एकौ कठहंडी।
सो जेंवन नहिं जाकर भूखा। तेइ बिनु[3] लाग[4] जानु सब रूखा।
अनभावत चाखै बैरागा। पच अंम्रित जानहुँ[5] बिख लागा।

बैठि सिंघासन गूँजै सिंघ चरै नरिं घास।
जौं लहि मिरिग[6] न पावै भोजन गनै[7] उपास।।

[५६४]

पानि लिहें दासीं चहुँ ओरा। अंम्रित बानी भरें कचोरा।
पानी देहिं कपूर क[1] बासा। पियै न पानी दरस पियासा[2]।
दरसन पानि देइ तौ जीयौं। बिनु रसना नैनन्ह सौं पीयौं।
पीउ[3] सेवाती बुंदहि अघा[4]। कौनु काज जौं बरिसै मघा।
पुनि लोटा कोंपर[5] लै आई। कै निरास अब हाथ धोवाई।[6]
हाथ जो धोवै बिरह करोरा। सवरि सँवरि मन हाथ मिरोरा।
बिधि मिलाउ जासौं मन लागा। जोरि न तोरु पेम कर तागा।

---

[५६३] १. तृ० ३ करहिं रबि, द्वि० ६, तृ० २, च० १ रहहिं सब। २. पं० १ नखत फिरहिं चारिहु दिसि सेवा। ३. द्वि० २, तृ० १, २ तीवन (हिंदी मूल), पं० १ तेहि बिनु। ४. तृ० ३ लाख। ५. प्र० १, २ पाँचौ अंम्रित जनु। ६. प्र० १, २ गजहि, पं० १ हेत। ७. प्र० १, २ तब लगि करै, तृ० २ भोजन करै।

[५६४] १. तृ० १, ३, च० १ कै, द्वि० २, तृ० २ का। २. प्र० १, २, च० १, पं० १ पिअै नाहिं दरसन क पिआसा, द्वि० ४, ५ सो तेहि पिअै दरस कर प्यासा। ३. द्वि० ४, ५ पपिहा। ४. प्र० १ जौं पै स्वाति बुंद नहिं अधा, द्वि० ४, ५ पपिहा बुंद सेवातिहि अघा। ५. प्र० १, २ झारी कोंपर, पं० १ गेंडुवा चौंसत। ६. तुलना कीजिए ५६२.२ से।

हाथ धोइ जस बैठेउ ऊभि लीन्ह तस साँस।
सँवरा सोई गोसाईं देहि निरासहि आस॥

[५६५]

भै जेवनार फिरा[1] खँडवानी। फिरा अरगजा कुंकुहँ बानी।
नग अमोल सौ थारा भरे। राजैं सेवा आनि कै धरे।
बिनती कीन्ह घालि गियँ पागा। ऐ जग सूर सीउ[2] मोहि लागा।
औगुन भरा काँप यह[3] जीऊ। जहाँ भान रहं तहै न सीऊ।
चारिहुँ खंड भान अस तपा। जेहि की दिस्टि रैनि मसि छपा[4]।
कँवल भान देखे पै हँसा। औ भानहि चाहै परगसा।
औ भानहि असि[5] निरमरि करा। दरस जो पाव सोइ निरमरा।

रतन स्यामि तहँ[6] रैनि मसि[7] ऐ[8] रबि तिमिर[9] संघार।
करु सुदिस्टि औ किरिपा देवस देहि उजियार॥

[५६६]

सुनि बिनती बिहँसा[1] सुलतानू। सहसहुँ करा दिपै[2] जस भानू।
अनु राजा तूँ साँच जड़ावा। भै सुदिस्टि सो[3] सीउ छड़ावा।
भान की सेवा जाकर जीऊ। तेहि मसि कहाँ कहाँ तेहि सीउ।
खाहि देस आपन करु सेवा। औरु देउँ माँडौ तोहिं देवा।
लीक प्रवान पुरुख कर बोला। धुव सुमेरु तेहि उपरैं डोला।
बहुरि पसाउ[4] दीन्ह जग सूरू। लाभ देखाइ लीन्ह चह मूरू।

---

[५६५] १. प्र० १, २ फिरी। २. तृ० १, २ धोख। ३. प्र० १, २ मोर, तृ० १ तेहि। ४. प्र० १ पारसरूप दरस देइ छपा। ५. पं० १ जगत भान कै। ६. तृ० ३ स्याम तेहि (उर्दू मूल)। ७. पं० १ है निसि मसि। ८. प्र० १ तैं। ९. द्वि० १ बीती मैं, तृ० ३ रबि मरत।

[५६६] १. तृ० ३, च० १ आया। २. द्वि० २ सहस करा दिपा, तृ० ३ सहसहु करा हँसा, तृ० १ देखा आजु तपा, द्वि० ३ सहसहुँ करा तपै। ३. प्र० १ अब, प्र० २ जो। ४. तृ० ३ फेरि बसाउ, तृ० १, पं० १ बहुरि बसाउ, तृ० २ बहुत बसाउ, च० १ बहु बौसाउ।

हँसि हँसि बोलै[५] टेकै काँधा। प्रीति भुलाइ चहै छरि बाँधा।[६]

मया बोलि बहुत कै पान साहि हँसि दीन्ह।
पहिलें रतन हाथ कै चहै पदारथ लीन्ह॥

[५६७]

मया सूर परसन[१] भा राजा[२]। साहि खेल सँतरज कर साजा।
राजा है जौ लहि सिर[३] घामू। हम तुम्ह घरिक करहिं बिसरामू।[४]
दरपन साहि पैंत[५] तहँ[६] लावा। देखौं जबहिं[७] झरोखें आवा।
खेलहिं दुवौ साहि औ राजा। साहि क रुख दरपन रह साजा।
पेम क लुबुध पयादें पाऊँ[१०]। चलै सौंहँ ताकै कोनहाऊँ[१०]।
घोरा दै फरजी बँदि लावा। जेहि[११] मोहरा रुख चहै सो पावा।
राजा फील देइ सह माँगा। सह दै साहि फरजी दिग खाँगा[१२]।

फीलहि फील[१३] ढुकावा भए दुवौ[१४] चौ दंत[१५]।
राजा चहै बुरुद भा साहि चहै सह मंत[१५]॥

[५६८]

सूर देखि ओइ तरईं दासीं[१]। जहँ ससि तहाँ जाइ परगासीं[१]।

---

५. प्र० १ राजहिं, प्र० २, द्वि० ७ बातन्ह। ६. पं० १ तौ बहि मरत तुन्हार न काँधा, बिधि काँधें हा सब गा बाँधा।

[५६७] १. द्वि० २, ४, ५, च० १ परस। २. प्र० १, २, तृ० १, पं० १ एक दिसि आपु दोसर दिसि राजा, द्वि० ४, ५ माया मोह परस भा राजा। ३. द्वि० ७ अबहिं आहि जरि। ४. प्र० १, २, पं० १ बैठे आइ धौराहर छाहाँ, साह क जिय पदुमावति पाहाँ। ५. द्वि० २ बिकट (?), तृ० २ नियर। ६. द्वि० ३ महँ। ७. द्वि० ४, ५, ६, च० १ जौहि (हिंदी मूल), द्वि० १ अबहुँ। ८. प्र० १, २, तृ० १, पं० १ रचा खेल दरपन धरि आगें, रही सुदिस्टि धौरहर लागें। ९. प्र० १, २, पं० १ मकु धनि झाँकै आइ झरोखें, दरस होइ सतरंज के धोखें। १०. द्वि० ४, ५ कहँ ठाऊँ, कोनहाऊँ, तृ० १ न पावै मानू, भानू। ११. तृ० ३ जेह (उर्दू मूल)। १२. द्वि० ४, ५ सभह दै चाह मारै रथ खाँगा, तृ० १, च० १ सह दै चाह परै रू खाँगा, द्वि० १ सभ दै साहि फरजि दै खाँगा, द्वि० ६ सह दै माहि तुरी दै खाँगा। १३. द्वि० १, ४, तृ० १, च० १ पेलि। १४. प्र० २ जूझ, पं० १ चहूँ। १५. तृ० १ चौदाँत, भा माँत।

[५६८] १. प्र० १ तरईं सब हँसी, परगसीं।

सुना जो हम ढीली सुलतानू। देखा आजु तपै जस भानू।
ऊँच छत्र[2] ताकर जग माँहाँ। जग जो छाँह सब ओहि की छाँहाँ।
बैठि सिंघासन गरबन्ह गूँजा। एक छत्र चारिहुँ खँड[3] भूँजा।
सौहँ न निरखि जाइ ओहि पाहीं। सबै नवहिं कै दिस्टि तराहीं।
मनि माँथें ओहि रूप न दूजा। सब रुपवंत करहिं ओहि पूजा।
हम अस कसा कसौटी आरसि। तहूँ देखु कंचन[4] कस[5] पारस[6]।

पातसाहि ढीली कर कत चितउर महँ आव।
देखि लेहि पदुमावति हियँ[7] न रहै पछिताव॥

[५६९]

बिगसि[1] जो कुमुद कहै[2] ससि ठाँऊ। बिगसा कँवल सुनत रबि नाऊँ[3]।
भै निसि ससि[4] धौराहर चढ़ी। सोरह[5] करा जैसि बिधि गढ़ी।
बिहँसि झरोखें आइ सरेखी। निरखि साहि दरपन महँ देखी।
होतहि दरस परस भा लोना। धरती सरग भएउ सब[6] सोना।
रुख माँगत रुख तासौं भएऊ। भा सह माँत खेल मिटि गएऊ।[7]
राजा भेदु न जानै झाँपा। भै बिख नारि[8] पवन बिनु[9] काँपा।[10]
राघौ कहा कि लाग सुपारी। लै पौढावहु सेज सँवारी।

रैनि बिहानी भोर भा उठा सूर तब[11] जागि।
जौं देखै ससि नाहीं रही करा चित लागि॥

---

२. प्र० १ छात। ३. प्र० १, २ चक, द्वि० ६, च० १ दिसि। ४. द्वि० २ चाँद। ५. प्र० १ अस। ६. प्र० १ असा, परसा, प्र० २ अरसा, परसा, द्वि० १ कसा, परगसी। ७. द्वि० ४, ५, तृ० २ जियँ।

[५६९] १. तृ० २ बिहँसि। २. द्वि० १ भई ससि जानूँ, द्वि० ५ गहै ससि ठाऊँ। ३. द्वि० १ बिगसा सूर सुना ससि नाऊँ। ४. प्र० १, २ ससि समान। ५. प्र० १, २ षोडस। ६. प्र० १, २ जस। ७. प्र० १, २ तृ० १, पं० १ भा रुख दाव जो मुहरा भेंटा, भा सब भात खेल सब मेंटा। ८. तृ० २ भा मुख बान (या बिख बान?), पं० १ भा मुखरात, द्वि० ४, ५ भा बिख नारि। ९. द्वि० २, तृ० १ तन, तृ० ३, च० १ बर, द्वि० ७ मुख, द्वि० ३ हिय, पं० १ जस। १०. द्वि० ६ कस मुरझान साहि कस काँपा, पं० १ भा मुखरात कँवल अस काँपा। ११. द्वि० ६, तृ० ३ पनि।

[५७०]

भोजन पेम सो जान जो जेंवा। भँवर न तजै[1] बास रस केवा।
दरस देखाइ जाइ ससि छपी। उठा भान जस जोगी तपी।
राघौ चेतनि साहि पहँ गएऊ। सूरुज देख[2] कँवल बिख[3] भएऊ।
छत्रपती मन कहाँ पहूँचा। छत्र तुम्हार गँगन पर[4] ऊँचा।
पाट[5] तुम्हार देवतन्ह पीठी। सरग पतार रैनि दिन डीठी।
छोह त पलुहै उकठा रूखा। कोह त महि सायर सब सूखा।
सकल जगत तुम्ह नावै माँथा। सब की जियनि तुम्हारे हाथा।

दिन न नैन[6] तुम्ह लावहु रैनि बिहावहु[7] जागि।
अब निचिंत अस सोए[8] काहे बेलँब असि[9] लागि॥

[५७१]

देखि एक कौकुत[1] हौं रहा। अहा अंतरपट पै नहिं अहा।
सरवर एक देख मैं सोई। अहा पानि पै पानि न होई।
सरग आइ धरती महँ छावा। अहा धरति पै धरति न आवा।
तेहि महँ है[2] पुनि मंडप[3] ऊँचा। करहि अहा पै कर न पहूँचा।
तेहि मंदिल[4] मूरति मैं देखी। बिनु तन बिनु जिय जियै बिसेखी[5]।[6]
चाँद सँपूरन जन होइ तपी। पारस रूप दरस दै छपी।
अब जहँ छत्र दिसै[7] जिउ तहाँ। भान[8] अमावस पावै कहाँ।[9]

---

[५७०] १ प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ७, तृ० २ रचै, द्वि० ३ रहै। २. प्र० १, देखा साहि। ३. प्र० १ मन, तृ० ३, च० १ मुख, द्वि० ७ सुख। ४. प्र० १ गँगन तें, द्वि० १ जगत तें, द्वि० ३, ६, ७, तृ० २, च० १, पं० १ जगत पर। ५. प्र० १ परत। ६. तृ० ३ नैनन्ह। ७. द्वि० ४, ५ भानु वहि। ८. द्वि० ७ सोइ गए, द्वि० ३ होइ सोवै, पं० १ का सोवहु। ९. तृ० ३ अति।

[५७१] १. द्वि० १, ३, ४, ५ कौतुक। २. द्वि० १ देखौं ससि, द्वि० ४, ५ तेहि महँ एक। ३. द्वि० ४, ५, ६, च० १ मँदिर। ४. द्वि० ४, ५ मंडप। ५. प्र० १, २, द्वि० ३, ७ सरेखी। ६. द्वि० २ बिनु तन बिनु मन मन बिनु देखी। ७. प्र० २, द्वि० ७ चतुरदसी, तृ० ३ छत्र बसै, तृ० १ चतुरदसी, च० १ चित्र बसै। ८. तृ० १ या जो। ९. द्वि० १ जब तें जीव दरस भै ताही, जानु अमावस पावै नाहीं।

बिगसा कँवल सरग निसि[१०] जनहुँ लौकि गा[११] बीजु।
यहौ राहु भा भानहि[१२] राघौ मनहि[१३] पतीजु ॥

[५७२]

अति बिचित्र देखेउँ सो ठाढ़ी[१]। चित कै चित्र लीन्ह जिय काढ़ी[१]।
सिंघ की लंक कुंभस्थल जोरू। अंकुस नाग महावत मोरू।
तेहि ऊपर भा कँवल बिगासू। फिरि अलि लीन्ह पुहुप रस[२] बासू[३]।
दुहुँ खंजन बिच बैठेउ सुवा। दुइज क चाँद धनुक लै उवा[४]।
मिरिग देखाइ गवन फिरि किया। ससि भा नाग सुरुज भा दिया।
सुठि[५] ऊँचे देखत औचका। दिस्टि पहुँचि कर पहुँचि न सका।
भुजा बिहूनि[६] दिस्टि कत भई। गहि न सके देखत वह गई।

राघौ आघौ होत जौं[७] कत आछत जियँ साध[८]।
ओहि बिनु आघ[९] बाघ बर[१०] सकै त लै[११] अपराध ॥

[५७३]

राघौ सुनत सीस भुइँ धरा। जुग जुग राज भान कै करा।
ओहि करा औ रूप बिसेखी। निस्चै तुम्ह पदुमावति देखी।
केहरि लंक कुँभस्थल हिया। गीवँ मंजूर अलक रबि दिया।
कँवल बदन औ बास समीरू। खंजन नैन नासिका कीरू।

---

१०. द्वि० १ सरग पर, द्वि० ६ सरग सर, तृ० २ सुरुज तस। ११. तृ० ३, च० १ लागि गा, द्वि० ४, ५ लौगि का, द्वि० ७ लागी। १२. प्र० १, मनौ राहु भा भानहि, प्र० २, द्वि० ७, पं० १ भौ राहु भा भानुहि, द्वि० २ और डाह भा सूरुज, तृ० ३ मरनौ डाह भा राज।, द्वि० १, तृ० १ भौंर डाह भा मानुहि, च० १ भौंर डाह भा राजहि, तृ० २ राहु भेद भा भानुहि।

[५७२] १. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ नारी, कहौं कहाँ मन बूझि हियारी। २. प्र० १, २, पं० १ मधु, द्वि० १ कै। ३. द्वि० ७ दूज चाँद जनु कीन्ह प्रगासू। ४. द्वि० १ दुआदस चाँद चाँद भै उठा। ५. तृ० ३ उठि। ६. द्वि० ४, ५, च० १ पहुँचा भएउँ। ७. द्वि० ४, ५ हेरत जो गएउँ। ८. द्वि० ४, ५ हिएँ समाध। ९. द्वि० ४, ५ वहि तन राधि। १०. द्वि० ४, ५ भा, द्वि० ३, च० १ पर। ११. प्र० १, २, द्वि० १, ७ तेलै, द्वि० ४, ५ नकै।

भौंह धनुक[1] ससि दुइज लिलाटू। सब रानिन्ह ऊपर वह पाटू।
सोई मिरिग देखाइ जो गएऊ। बेनी नाग दिया चित भएऊ।
दरपन महँ देखी परिछाँहीं। सो मूरति जेहि तन जिय नाहीं[2]।

सबहि सिंगार बनी धनि[3] अब[4] सोई मत कीज।
अलक जो लगुने अधर कें[5] सो गहि कै रस लीज॥

[५७४]

मत भा[1] माँगा बेगि[2] बेवानू। चला सूर सँवरा अस्थानू।
चलन पंथ राखा जो पाऊ[3]। कहाँ रहन थिर कहाँ बटाऊ[4]।
पंथिक कहाँ कहाँ सुस्ताई। पथ चलें पै पंथ सिराई।
छर कीजै बर जहाँ न आँटा। लीजै फूल टारि कै काँटा।
बहुत मया सुनि राजा फूला। चला साथ पहुँचावै भूला।
साहि हेतु राजा सौं बाँधा। बातन्ह लाइ लीन्ह गहि काँधा।
घिउ मधु सानि दीन्ह रस सोई[5]। जो मुख मीठ पेट बिख होई[6]।

अमिअ बचन औ माया[7] को न मुएउ रस भीजि।
सतुरु मरै जौं अंब्रित कत ताकहँ बिख दीजि॥*

[५७३] १. प्र० १, २ बदन। २. प्र० १, पं० १ सो बिनु तन मूरति जियँ नाहीं, द्वि० ५ सो मूरति भीतर जिउ नाहीं, तृ० १ सो मूरति देखी तुम्ह नाहीं। ३. प्र० १, २ बरनि धनि, द्वि० २ वह धनि, द्वि० ३ पुनि सोई। ४. द्वि० २ कै। ५. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ अलक सो लटकै अधर पर, द्वि० २ अलक जो आगें अधर के, तृ० २ अंक जो लिखे लिलाट के।

[५७४] १. द्वि० २ मया मंत्र, तृ० ३ मन भा, द्वि० ७ सत भा। २. द्वि० २ जो। ३. प्र० १, द्वि० ७ जेइँ राखा पाऊ। ४. प्र० १ कहाँ रहै थिर चलत बटाऊ, द्वि० १ कत रहना जो भए बटाऊ, तृ० ३ कहाँ रहा न थिर कहाँ बटाऊ, तृ० २ कहाँ रहन थिर जहाँ बटाऊ, पं० १ कहाँ रहन थिर रहै न बटाऊ। ५. प्र० १, २ दिएँ रस होई। ६. प्र० १, २ सोई। ७. द्वि० १ सुनि राजा। ८. प्र० १ बिन खाइ अकत कीजि, तृ० ३ तौ काहें बिखि दीजि।

* प्र० १, २ द्वि० ३, ४, ५, ६, ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[५७५]

एहि जग बहुत नदी जल जूड़ा। कौन पार भा को नहिं बूड़ा।
को न[1] अंध भा आँखि न देखा। को न भएउ डिठियार सरेखा।
राजा कहँ बियाधि भै माया। तजि कबिलास परे भुइँ पाया।
जेहि कारन गढ़ कीन्ह अगूठी। कत छाँड़ै जौं आवै मूँठी।
सतुरुहि कोउ पाव जौं बाँधी। छाँड़ि आपु कहँ करै बियाधी।
चारा मेलि धरा जस माछूँ। जल हुँति निकसि सकत मुव काछूँ।
मंत्रन्ह नाग पेटारें मूँदा। बाँधा मिरिग पैगु नहिं खूँदा।

राजा धरा आनि कै औ पहिरावा लोह।
औस लोह सो पहिरै जो चेत[5]स्यामि[6]कहँ दोह[7]॥

[५७६]

पायन्ह गाढ़ीं बेरीं परीं। साँकरि गींव हाथ हथकरीं।
औ धरि बाँधि मँजूसा मेला। अस सतुरुहु जनि होइ[1] दुहेला।
सुनि चितउर महँ परा भगाना[2]। देस देस चारिहुँ खँड जाना।
आजु नराएन फिर जग खूँदा। आजु सिंघ मंजूसा मूँदा।
आजु खसे रावन दस माँथा। आजु कान्ह कारी फन[3] नाथा।
आजु परान कंससेनि ढीला[4]। आजु मीन संखासुर[5] लीला।
आजु परे पंडौ बँदि माहाँ। आजु दुसासन उपरी[6] बाहाँ।

---

[५७५] १. द्वि० ४, ५ कौन। २. तृ० १ आगन। ३. द्वि० ४, ५ कौन। ४. च० १ औस लोह। ५. प्र० १ होइ, द्वि० १ जो चेत, तृ० ३ चित्त, तृ० ७ चितव, द्वि० ३ चित। ६. तृ० २ साहि। ७. प्र० १ साहि का द्रोह।

[५७६] १. द्वि० ३ परै। २. द्वि० ४, ५ दखाना। ३. प्र० १, २ कर, द्वि० ७ पुनि। ४. द्वि० ३ संकट जिउ ढीला, द्वि० ४, ५ कंस कर ढीला, तृ० २ कंसासुर (ढीला), द्वि० ३ कंसासुर ढीला। ५. तृ० १, तृ० ३, च० १, पं० १ सिंघासन। ६. द्वि० १, ४, ५, तृ० १ उतरी।

आजु धरा बलि राजा[७] मेला बाँधि पतार।
आजु सूर दिन अँथवा[८] भा चितउर अँधियार[९] ॥*

[५७७]

देव सुलेमाँ की बँदि परा। जहँ लगि देव सबहि सत हरा।
साहि लीन्ह गहि कीन्ह पयाना। जो जहँ सतुरु सो तहाँ बिलाना।
खुरासान औ डरा हरेऊ। काँपा बिदर[१] धरा अस देऊ।
बिंधि[२] उदैगिरि धवलागिरी। काँपी सिस्टि[३] दोहाई फिरी।
उवा सूर भै सामुहँ करा। पाला[४] फूटि[५] पानि होइ ढरा।
डंडवै डाँड़ दीन्ह जहँ ताईं। आइ सो डँडवत कीन्ह सबाईं।
दुंदि छाँड़ि सब सरगहि गई। पुहुमि जो डोली सो अस्थिर भई।

पातसाहि ढीली महँ आइ बैठ सुख पाट।
जिन्ह जिन्ह सीस उठाए[६] धरती धरे[७] लिलाट ॥

[५७८]

हबसी बंदिवान जियबधा। तेहि सौंपा राजा अगिदधा[१]।
पानि पवन कहँ आस करेई। सो जिय बधिक साँस नहिं देई[२]।
माँगत पानि आगि लै धावा। मोंगरहूँ एक आइ सिर लावा।
पानि पवन तैं पिया सो पिया। अब[३] को आनि देइ पापिया[४]।[५]
तब चितउर जिय अहा न तोरें। पातसाहि है सिर पर मोरें।

---

७. द्वि० ७ आजु जो राजा बली छरा। ८. द्वि० ७ आजु राज मथुरा गवाँ। ९. द्वि० ७ भादौं कुल अँधियार।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर पाँच और द्वि० ७ में एक अतिरिक्त छंद है।

[५७७] १. प्र० १ देव। २. तृ० ३ बंधि (उर्दू मूल)। ३. प्र० १, २ च० १, पं० १ चारिहु खंड, द्वि० ७ काँपी दिस्टि। ४. द्वि० १, तृ० ३ पाल। ५. प्र० १ टूट। ६. तृ० ३ जहँ जहँ सीस उठावा। ७. प्र० १, २, द्वि० ७ तिन्ह भुइँ धरा।

[५७८] १. प्र० १, द्वि० १, ३ जिय बाँधा, अगि दाधा; द्वि० २ हिय बाँधे, लै दाढ़े; द्वि० ७ जो बाँधा, अगि दाधा। २. प्र० १ बाँधि उसास न लेई। ३. द्वि० २ आगि। ४. द्वि० ४, ५ पानिया। ५. प्र०. १, २ अब को देइ इहाँ जिउलिया, द्वि० १ अब को आनि देइ को पिया।

जबहिं हँकारहि है उठि चलना। सो कत करौं होइ कर मलना[६]।
करौं सो मीत गाढ़ि बंदि जहाँ। पानि पवन पहुँचावै तहाँ।

जल अंजुलि महँ सोवा[७] समुँद न सँवरा[८] जागि।
अब धरि काढ़ा मंछ जेउँ पानी माँगत आगि॥

[५७९]

पुनि चलि दुइ जन पूँछै[१] आये। ओहि सुठि दगध आइ देखराए।
तूँ मरपुरी न कबहुँ देखी। हाड़ जो बिथुरै देखि न लेखी[२]।
जाने नहिं कि होब अस महूँ। खोजें खोज न पाउब कहूँ।
अब हम उतर देहि रे देवा। कवने गरब न माने सेवा।
तोहि अस केत गाढ़ि खनि मूँदे। बहुरि न निकसि बार कै खूँदे।
जो जस हँसै सो तैसै रोवा। खेलि हाँसि एहि भुँइ पै सोवा।
तस अपने मुँह काढ़े धुवाँ। चाहसि परा[३] नरक के कुँवा।

जरसि मरसि अब बाँधा तैस लाग तोहि दोख।
अबहूँ मानु[४] पदुमिनी जौं चाहसि भा[५] मोख॥

[५८०]

पूँछेन्हि बहुत न बोला राजा। लीन्हेसि चूपि[१] मींचु मन साजा[२]।

---

६. प्र० १ होइ सिर मरना, द्वि० ७ होइ कित मिलना। ७. प्र० १, २, द्वि० ७ सूखिगा, द्वि० ३ सँवरा। ८. प्र० २ समुंद न विसूरा, द्वि० ६ समुँद न सूझा, द्वि० ३ सोइ समुँद महँ।

[५७९] १. पं० १ देखै। २. प्र० १ उट्ठहि देखि आपु केहिं लेखे, प्र० २, च० १, पं० १ ओन्हहीं देखि आपु नहिं लेखे, द्वि० १ तसनै सरके आपुहि लेखा, द्वि० ६ हाड़ जो बिसरे देखि न लेखा, तृ० १ जैस वै सरै न आएहु लेखी। ३. प्र० १, २ मेलेसि तोहि, च० १, पं० १ मेलेसि आनि। ४. तृ० ३, च० १, तृ० १, २, पं० १ माँगु। ५. प्र० १ जिय, प्र० २, द्वि० ३, गति, पं० १ कत।

[५८०] १. द्वि० ४, ५ जैस, च० १ मौन। २. प्र० १, २, पं० १ पूँछा बहुत न राजा बोला, दीन्ह केवार न कैसेहुँ खोला।

खनिगड़ ओबरी महँ लै[3] राखा। निति उठि दगध होहिं नौ[4] लाखा।
ठाँउ सो साँकर औ अँधियारा। दोसरि करवट लेइ[5] न पारा।
बीछी साँप आनि तहँ मेले। बाँका आनि छुवावहिं हेले।
दहकहिं[6] सँडसी[7] छूटहिं नारी। राति देवस दुख गंजन[8] भारी।
जो दुख कठिन न सहा पहारू। सो अँगवा मानुस सिर भारू।
जो सिर परै सरै सो सहैं। कछु न बसाइ काहु के[9] कहैं।

दुख जारै दुख भूँजै दुख खोवै[10] सब लाज।
गाजहि चाहि गरुव[11] दुख दुखी जान जेहि[12] बाज॥

[५८१]

पदुमावति बिनु कंत दुहेली। बिनु जल कँवल सूखि जसि[1] बेली।
गाढ़ि प्रीति पिय मो सों[2] लाए। ढीली जाइ निचिंत[3] होइ छाए।
कोइ न बहुरा निबहुर[4] देसू। केहि पूछौं को कहै सँदेसू।
जो गौनै सो तहाँ कर होई। जो आवै कछु जान न सोई।
अगम पंथ पिय तहाँ सिधावा। जो रे जाइ सो बहुरि न आवा।
कुँआ ढार जल[5] जैस बिछोवा। डोल भरें नैनन्ह तस[6] रोवा।
लेजुरि भई नाँह बिनु तोही। कुवाँ परी धरि[7] काढ़हु मोही।

नैन डोल भरि ढारै हिएँ न आगि बुझाइ।
घरी घरी जिउ बहुरै[8] घरी घरी जिउ जाइ॥

---

३. प्र० १ खनि गाड़ा ओबरी, द्वि० ६ खनि गड़वा लै तेहि महँ, द्वि० १ खनि गड़ आचर महँ, द्वि० २ खनि गढ़ औ खनि ऊपर, द्वि० ४ खनि गड़ आचर तहँ लै, द्वि० ५ खनि गड़ बाचर तहँ लै। ४. तृ० ३ मौ। ५. तृ० ३ देइ। ६. द्वि० ४ धरहिं, द्वि० ५ धरहिं, तृ० ३ धरा तेहि,। ७. प्र० १ संस डसि, तृ० ३ सँडासी, च० १ सँडालैं। ८. च० १ खजन। ९. द्वि० ४, ५ सों। १०. तृ० ३ होइ, द्वि० ७ जो भै। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ अधिक। १२. तृ० ३ दुख।

[५८१] १. प्र० १, २ सर। २. प्र० १ सँग न। ३. प्र० १, २ अनचित, द्वि० १ निहचै। ४. द्वि० ४, ५ पनहर, प्र० ४ नैहर। ५. द्वि० २ रहा जल, तृ० ३ डोल जल, द्वि० ७ पानि हो। ६. द्वि० ४, ५, च० १ धनि। ७. प्र० १, २ कुआँ पानि गहि, द्वि० ७ कुआँ परी गहि, तृ० १ च० १ कुआँ परी को। ८. प्र० १, २, द्वि० १, ६, ७ घरी जो बहुरै बरिस कर (पुरुष पर द्वि० १), द्वि० ४, ५ घरी घरी जिउ आवै।

[५८२]

नीर गँभीर कहाँ हो पिया। तुम बिनु फाट सरोवर हिया।
गएहु हेराइ बिरह के[1] हाथा। चलत सरोवर लीन्ह[2] न साथा।
चरत जो पंछि केलि कै नीरा। नीर घटै कोउ आव न तीरा।
कँवल सूख पँखुरी बिहरानी। कन कन होइ मिलि[3] छार उड़ानी।
बिरह रेति[4] कंचन तनु लावा। चून चून कै खेह मिलावा।
कनक जो कन कन होइ बिहराई। पिय पै छार[5] समेंटैं आई।
बिरह पवन यह छार सरीरू। छारहु आनि मिला बहु नीरू।

अबहुँ मया कै आइ जियावहु[6] बिथुरी[7] छार समेंटि।
नव अवतार होइ नइ काया दरस तुम्हारें भेंटि॥

[५८३]

नैन सीप[1] मोंतिन्ह भरि[2] आँसू। टुटि टुटि परहिं करै तन नाँसू[3]।
पदिक पदारथ पदुमिनि नारी। पिय बनु भै कौड़ी बर बारी।
सँग लै गएउ रतन सब जोती। कंचन कया काँचु भै पोती[4]।
बूड़ति हौं दुख उदधि गँभीरा। तुम्ह बिनु कंत लाव को तीरा।
हिएँ बिरह होइ चढ़ा पहारू। जल जोबन सहि सकै न भारू।
जल महँ अगिनि सो जान[5] बिछूना। पाहन जरै होइ जरि[6] चना।
कवने जतन कंत तुम्ह पावौं। आजु आगि[7] हौं जरत बुझावौं[8]।

---

[५८२] १. प्र० १, २ परेहु केहि। २. प्र० १, २ गइउँ। ३. प्र० १ गलि गुलि गई सो, प्र० २ गलि गुलि होइ मिलि, द्वि० ४, ५ गलि गुलि कै मिलि, च० १ गरि गरि होइ मिलि। ४. द्वि० १ हेत, तृ० ३ रैनि। ५. प्र० १ पिउ तेहि पार, प्र० २ पीउ न पार, द्वि० २, च० १ पिउ पै पार। ६. द्वि० १ आवहु आइ मया करि, तृ० ३ अबहुँ दिष्टि कै आइ जियावहु, द्वि० ३ अबहुँ जियावहु मया कै। ७. तृ० ३ बिहरी।

[५८३] १. च० १ समुँद। २. द्वि० ४ तस, द्वि० ५ जस। ३. च० १ नित नित परहिं करै तन माँसू। ४. तृ० ३ मोती। ५. तृ० ३ न जान, द्वि० ७ सो जैस। ६. द्वि० ४, ५ सब। ७. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ६, च० १, पं० १ अजर जरम होइ, द्वि० ७ अमर जरत हो। ८. द्वि० १ अजर जरत कै आगि बुझावौं, द्वि० २ जौ जर जरम सो आजु नसावौं।

कवन खंड हौं हेरौं[9] कहाँ मिलहु[10] हो नाहँ।
हेरें कतहुँ न पावौं बसहु तौ[11] हिरदै माहँ ॥*

[५८४]

कुंभलनेरि राय देवपालू। राजा केर सतुरु हिय सालू।
ओइँ पुनि[1] सुना कि राजा बाँधा। पाछिल बैर सँवरि छर साँधा।
सतुरु साल तब नेवरै सोई। जौ घर आव सतुरु कै[2] जोई।
दूती एक बिरिध ओहि ठाऊँ। बाँभनि जाति कमोदिनि नाऊँ।
ओहि हँकारि कै बीरा दीन्हा। तोरे बर मैं बर जिय कीन्हा।
तूँ कुमुदिनी कँवल के नियरे। सरग जो चाँद बसै तुव हियरे।
चितउर महँ जो पदुमिनि रानी। कर बर छर सो देहि मोहिं आनी।

रूप जगत मनि मोहनि[3] औ पदुमावति नाउँ।
कोटि दरब तोहि देहूँ[4] आनि करसि एक ठाउँ।।

[५८५]

कुमुदिनि कहा देखु मैं सो हौं। मानुस काह देवता मोहौं।
जस काँवरू चमारी लोना[1]। को न छरा पाढ़ित औ टोना।
बिसहर। नाँचहि पाढ़ित मारें। औ धरि मूँदहिं घालि पेटारें।
बिरिख चलै पाढ़ित की बोला। नदी उलटि बह परबत डोला।
पाढ़ित हरै पँडित मति गहिरे। औरु को अंध गूँग औ बहिरे।

---

९. प्र० १, २ को गुर अगुआ होइ सखि, द्वि० ६ हेरौं कहाँ होइ तुम्ह कहँ, द्वि० ७ खोजौं कंत कहाँ तुम्ह। १०. द्वि० ४, ५ बंदि। ११. प्र० १, २, द्वि० १, तृ० २ सो।
* प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, (तृ० १) में इसके अनंतर तीन अतिरिक्त छंद हैं, किंतु इनमें से प्रथम प्र० १ में यथा २अ आता है।

[५८४] १. द्वि० ४, ५, च० १ पै। २. तृ० ३ आवै रिपु कै। ३. प्र० १, २ मनि आगरि, द्वि० १, ३ तृ० १ संसार मनि, द्वि० २, ६, पं० १ मानिक हिअ, द्वि० ७ मानिक हिअ सो। ४. द्वि० ६ देत तोहि, द्वि० ७ देव तोहिं, (तृ० १), तृ० ३ आपौं।

[५८५] १. तृ० २, ३ नोना, द्वि० ६ टोना।

पाढ़ित औसि[२] देवतन्ह लागा। मानुस का पाढ़ित हुति भागा।
पाढ़ित कै सुठि काढ़त बानी[३]। कहाँ जाइ पदुमावति रानी।

दूती बहुत पैज[४] कै बोली पाढ़ित[५] बोल।
जाकर सत्त[६] सुमेरु है[७] लागै जगत न डोल॥

[५८६]

दूती दूत पकवान जो साँधे। मोंतिलडु कीन्ह खिरौरा बाँधे।
माँठ पेराक फेनी औ पापर। भरे बोझ[१] दूती के कापर।
लै पूरी भरि डाल अछूती। चितउर चली पैज कै दूती।
बिरिध बएस जो बाँधै पाऊ[२]। कहाँ सो जोबन का बेवसाऊ।
तन बुढ़ाइ मन बूढ़ न होई। बल न रहा लालच जिय सोई।
कहाँ सो रूप देखि जग राता। कहाँ सो गरब हस्ति जस माँता[३]।
कहाँ सो तीख नैंन तन[४] ठाढ़ा। सब मारि जोबन पुनि[५] काढ़ा।

मुहमद बिरिध जो नै चलै काह चलै[६] भुइँ टोइ।
जोबन रतन हेरान है[७] मकु[८] धरती महँ होइ॥*

[५८७]

आइ कमोदिनि चितउर[१] चढ़ी। जोहन मोहन पाढ़ित पढी।
पूँछि लीन्ह रनिवाँस बरोठा। पैठि पँवरि[२] भीतर जहँ[३] कोठा।

---

२. प्र० १,२, द्वि० २,६ औस। ३. तृ० ३ गाढ़ी सुठि बानी। ४. प्र० १, २ गरब, तृ० ३ पएस। ५. प्र० १, २ तेहिं पढ़िता के। ६. तृ० ३ सत्र। ७. द्वि० १ बिधि राखै सुमेरु सम।

[५८६] १. १. प्र० २, द्वि० ६ पहि केसि पूजि, द्वि० २, तृ० २, च० १ पहिरे पूजि, द्वि० ७ पहिरेसि फेरि। २. तृ० ३ बाऊ, द्वि० ७ जाऊ। ३. तृ० १ गाता। ४. तृ० ३ बिनु (उर्दू मूल)। ५. प्र० २, द्वि० २ नैन पुनि, द्वि० ३ हिएँ तन। ६. द्वि० १, तृ० ३ जानि। ७. द्वि० ६, ७ जो, तृ० २ दै। ८. द्वि० ३ मत।
* प्र० १ में यह छंद नहीं है, किंतु आगे दूती ने पद्मावती के आगे पकवान खोल कर रखे हैं, इसलिए यह छंद प्रासंगिक है।

[५८७] १. तृ० ३ चितुर (उर्दू मूल तुलना० ३६७.१)। २. द्वि० ७ महल। ३. प्र० १, २ उर, द्वि० १ भौ, द्वि० ४, ५ बहु, च० १ भइ, पं० १ बर।

जहँ पदुमावति ससि उजियारी। लै दूती पकवान उतारी।
बाँह पसारि धाइ कै भेंटी। चीन्है नहिं राजा कै बेटी।
हौं बाँभनि जेहि कुमुदिनि नाँऊ। हम तुम्ह उपनी एकहि ठाँऊ।
नाँउ पिता कर दूबे बेनी। सदा पुरोहित गंध्रप सेनी।
तुम्ह बारी तब सिंघल दीपाँ। लीन्हें दूध[४] पिआइउँ छीपाँ[५]।

ठाउँ कीन्ह मैं दोसर[६] कुंभलनेरिहि[७] आइ।
सुनि तुम्ह कहँ चितउर महँ कहिउँ कि भेंटौं जाइ॥

[५८८]

सुनि निस्चै नैहर कै कोई। गरें लागि पदुमावति रोई।
नैन गँगन रबि बिनु अँधियारे। ससि मुख आँसु टूट जनु तारे।
जग अँधियार गहन[१] दिन परा। कब लगि ससि नखतन्ह निसि भरा[२]।
माइ बाप कत जनमी बारी। दइउ तुहूँ न जन्मतहि मारी[३]।
कत बियाहि[४] दुख दीन्ह दुहेला। चितउर पठै[५] कंत बँदि मेला।
अब एक जीवन बादि जो मरना[६]। भएउ पहार जरम दुख मरना।
निसरि न जाइ निलज यह जीऊ। देखौं मंदिल सून बँदि[७] पीऊ।

कुहुँकि जो रोई ससि नखत नैनन्ह रात चकोर।
अबहूँ बोलहिं तेहि कहुँकि[८] कोकिल चातिक[९] मोर॥

[५८९]

कुमुदिनि कठ लागि सुठि रोई। पुनि लै रोग बारि मुख धोई।

---

४. द्वि० २ सो दीप। ५. द्वि० २, ३, ४, ५, ६, पं० १ सीपाँ।
६. प्र० १ अगुमन। ७. द्वि० ७ सिंघल दीपहि।

[५८८] १. तृ० ३ रैनि, द्वि० ३ कठिन। २. प्र० १ ससि मुख नख तन्हभरा, प्र० २ ससि नखतन्ह बिसभरा, द्वि० ७ ससि नखतन्ह मसि भरा। ३. प्र० १, २ जनमत कस न गई तू मारी (नारी प्र० २), द्वि० २ गइउँ गात नकाइ न मारी, द्वि० ३, ४, तृ० १ च० १ गइउँ तुईं नाहीं रत मारी, तृ० २ गइउँ तूर किन जन्मत मारी, पं० १ तबही गइउँ न जनमत मारी। ४. तृ० १ बिआध। ५. तृ० ३ बैठि। ६. प्र० १ बादि भम मरना, च० १ चाहि भल मरना। ७. प्र० १ नहिं, द्वि० ७ बिनु। ८. तृ० ३ बोल तिन्ह कुहुक। ९. द्वि० १ लै चात्रिक कै।

तूँ ससि रूप जगत उजियारी। मुख न झाँपु निसि होइ अँधियारी।
सुनि[1] चकोर कोकिल दुख दुखी। घुँघुची भुई नैन कर मुखी।
केतौ धाइ मरै कोइ बाटा। सो पै पाव जो लिखा लिलाटा।
जो पै लिखा आन नहिं होई। कत धावै कत रोवै कोई।
कत कोइ इंछ कर औ पूजा[2]। जो बिधि लिखा सो होइ न दूजा।
जेत कमोदिनि बैन करेई। तस पदमावति स्रवन न देई।[3]

सेंदुर चीर मैल तस[4] सूखि रहे सब[5] फूल।[6]
जेहिं[7] सिंगार[8] पिउ तजि गा[9] जरम न बहुरे मूल[10]॥[11]*

[५९०]

पुनि[1] पकवान उघारे दूती। पदुमावति नहिं छुवै[2] अछूती।
मोहिं अपने पिय[3] केर खंभारू। पान फूल कस[4] होइ अहारू[5]।
मो कहँ फूल भए जस काँटे। बाँटि देहु जेहि चाहहु बाँटे[6]।
रतन छुए जिन्ह हाथन्ह सेंती। औरु न छुऔं सो हाथ सँकेती।
ओहि के[7] रँग तस[8] हाथ मँजीठी। मुकुता लेउँ तौ[9] घुँघुची डीठी।
नैन करमुखे राती[10] काया। मोंति होहिं घुँघुची जेहि छाया।
अस कर ओछ[11] नैन हत्यारे। देखत गा पिउ गहै न पारे।

---

[५८९] १. प्र० १ ससि। २. प्र० १, पं० १ कत कै मरै इंछ कै पूजा। ३. द्वि० ४ तसि पदुमावति उतर न देई, द्वि० ७ में यह पंक्ति नहीं है। ४. प्र० १ चीर तँबोल सा, च० १ सीस मेलि तस। ५. द्वि० ४ सब भूल, द्वि० ५ तस भूल, द्वि० ३, ६, च० १ सिर फूल। ६. द्वि० ७ सेंदुर चीर मैल तस सिर कर करहिं सिंगार। ७. द्वि० ४ जनु, द्वि० ३, ६ पुनि जहँ। ८. द्वि० १ सौं दार। ९. प्र० १ लैगा। १०. द्वि० ४ फूल। ११. द्वि० ७ भोग मानि ले दिन दस करु जोबन तन सार।
* यह छंद प्र० २ में नहीं है, किन्तु पिछले छंद में पदमावती रोई है, उसकी सांत्वना के लिए यह छंद आवश्यक लगता है।

[५९०] १. द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ तब, द्वि० १ जब। २. द्वि० ७ तिन्ह कहै। ३. तृ० ३ जिय। ४. तृ० ३ सक। ५. तृ० १ अधारू। ६. प्र० १, द्वि० २, पं० १ दिस्टि परत लागहिं जनु चाँटे। ७. द्वि० ४, ५ दमकि। ८. प्र० १, द्वि० ४, ५, च० १, पं० १ भए हाथ, द्वि० १ जस आहि। ९. द्वि० ४, ५ यह। १०. तृ० ३ राते (उर्दू मूल)। ११. प्र० १, द्वि० ६ कर मुखे, च० १ कर ऊँच।

का तेहि[१२] छुग्रौं पकावन[१३] गुर करुवा घिउ रूख।
जेहि मिलि होत सवाद रस लै सो गएउ सब[१४] भूख॥*

[५६१]

कुमुदिनि रही कँवल के पासा। बैरी सुरुज चाँद की आसा।
दिन कुँभिलानि रहै भै चोरू[१]। रैनि बिगसि बातन्ह कर भोरू[१]।
कत[२] तूँ बारि रहसि कुँभिलानी। सूखि बेलि जस पाव न पानी।
अबहीं कँवल करी तूँ बारी। कोंवलि बएस उठत पौनारी।
बैरिनि[३] तोरि मैलि औ रूखी। सरवर माँझ रहसि कत[४] सूखी।
पान[५] बेलि बिधि[६] कया जमाई। सींचत रहै तबहिं पलुहाई।
करु सिंगार सुख फूल तँबोरा[७]। बैठु सिंघासन झूलु हिंडोरा[८]।

हार चीर तन[९] पहिरहि सिर कर करहि सँभार।[१०]
भोग मानि ले दिन दस जोबन के पैसार[११]॥[१२]*

---

१२. द्वि० १ कस रे, द्वि० ४, ५ का तोर। १३. प्र० १, द्वि० ७ का पकवान छुग्रौं इन्ह हाथन्हि। १४. प्र० १, द्वि० १, ४, ५ पिउ गएउ सो।

* यह छंद प्र० २ में नहीं है, किन्तु ऊपर दूती के पकवान लाने का उल्लेख है, इसलिए यह छंद प्रसंगोचित है। पं० १ में यह छंद ५९१ के बाद आता है।

[५५१] १. प्र० १ चोरू, बिकसत रैनि बास रस भोरू, तृ० ३ ओरू (उर्दू मूल) रैनि बिगसि बातन्ह कर भोरू। २. प्र० १, च० १ तस, द्वि० १, २, ४, तृ० २, पं० १ कस। ३. द्वि० ४ बैनी, तृ० १ प्रीति, द्वि० ३ चीरू। ४. प्र० १, द्वि० २, ४, ६, ७ कस। ५. तृ० ३ पाप। ६. तृ० ३ जस। ७. द्वि० १ सुख खंडि तमोरा, तृ० ३, सुख फूल पटोरा, द्वि० ६ सुख सुगुत तँमोरा, पं० १ सुख पहिरि पटोरा। ८. द्वि० ७ (यथा. ५) कस रे बारि रहसि कुंभिलानी, सूखी बेलि जस पानि बिलानी। ९. द्वि० २ लै, द्वि० ३, ६, तृ० २, पं० १ नित। १०. द्वि० ७ मैलि चीर नित पहिरहु सूखि रहहु जसि बेलि। तृ० २ चीर हार नित पहिरहु राग रंग सुख स्वाद। ११. द्वि० ४, ५ गए न बार। १२. द्वि० ७ जेहि सिंगार पिउ तजि गा जनम न बहुरै भूजि। तृ० २ भोग मानि लै दस दिन जोबन के परसाद।

* प्र० २ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे आनेवाले यौवन-संबंधी वाद-विवाद के लिए इस छंद की भूमिका आवश्यक है। पं० १ में यह छंद ५९१ के बाद आता है।

[५९२]

बिहँसि[1] जो कुमुदिनि जोबन कहा। कवल जो बिगसा संपुट गहा।
कुमुदिनि कहु जोबन तेहि पाहाँ। जो आछहि पिय का सुख छाँहाँ।
जाकर छतिवनु बाहर[2] छावा। सो उजार घर को रे बसावा।
अहा जो राजा रैनि[3] अँजोरा[4]।[5] केहि क सिंघासन केहि क हिंडोरा[4]।[6]
को पालक सोवै को[7] माढ़ी। सोवनिहार परा बँदि गाढ़ी।
जेहि दिन गा घर[8] भा अँधियारा। सब सिंगार लै साथ सिधारा।
कया बेलि तब जानौं जामी। सींचनिहार आव घर स्यामी।

तब लगि रहौं मूरि असि जब लहि आव सो कंत।
यहै फूल यह सेंदुर[9] नव होइ उठै बसंत॥*

[५९३]

जनि तूँ बारि करसि अस जीऊ। जौ लहि[1] जोबन तौ लहि[2] पीऊ।
पुरुख सिंघ आपन केहि केरा। एक खाइ[3] दोसरेह मुँह[4] हेरा।
जोबन जल दिन दिन जस घटा। भँवर छपाइ हंस परगटा।
सुभर सरोवर जौ लहि[5] नीरा। बहु आदर पंछी बहु तीरा।

---

[५९२] १. द्वि० ६ भल। २. द्वि० ४, ५ छत्र सो बाहर, द्वि० ६ पिउ बाहर होइ। ३. प्र० १, द्वि० ७, तृ० १ राजा दइउ, द्वि० १ राज सो दइअ, द्वि० ४, ५, पं० १ राजा रतन। ४. द्वि० २ उजारा, भँडारा, द्वि० ७ अछोरा, हिंडोरा। ५. तृ० २ अहा जो रावन रैनि बसेरा। (४०४.४) ६. प्र० १, द्वि० ३, पं० १ केहिक सिंगार के पहिर पटोरा, तृ० २ पिय बिन राज पाट केहि केरा, च० १ का सिंगार को झूल हिंडोरा। ७. द्वि० ४ पौढ़ा है, द्वि० ५ पौढ़े को। ८. द्वि० ४, ५ चहुँ दिसि यह घर। ९. प्र० १ यहै फूल यह जौवन, द्वि० १ यहई सूझा नहिं मखि, द्वि० ७ यहै फूल यह सेंदुर मेला।

* प्र० २ में यह छंद नहीं है, किंतु आगे जो यौवन-संबंधी वाद-विवाद है, उसके लिए पद्मावती के उत्तर की यह भूमिका आवश्यक है।

[५९३] १. तृ० ३ जब लगि। २. द्वि० १ तौ लगि(हिंदी मूल), तृ० ३ तब लगि। ३. द्वि० १ आपन खाइ, द्वि० ७ एक छाड़ि। ४. प्र० १ दोसर दस, प्र० २, द्वि० ६ दोसरे कहँ, द्वि० १, परावा, द्वि० २, च० १ दोसर सो, द्वि० ७ दोसरे पहँ, पं० १ दोसर सिउँ। ५. तृ० ३ जब लगि।

नीर घटें पुनि[६] पूँछ न कोई। बेरसि जो लीज हाथ रह सोई।
जब लगि कालिंदिरी[७] बेरासी[८]। पुनि सुरसरि होइ समुँद गरासी[८]।
जोबन भँवर फूल तन तोरा। बिरिध[९] पोंछ[१०] जस हाथ मरोरा।

क्रिस्न जो जोबन करत तन मया गुनत[११] नहिं साथ[१२]।
छरिकै जाइहिं बान लै धनुक छाँड़ि[१३] तोहि[१४] हाथ[१५]॥*

[५६४]

कित पावसि पुनि[१] जोबन राता। मैमंत चढ़ा स्याम सिर छाता।
जोबन बिना बिरिध होइ नाऊँ। बिनु जोबन थाकसि[२] सब ठाऊँ।
जोबन हेरत मिलै न हेरा। तेहि बन[३] जाइहिं करिहि न[४] फेरा।
हहिं जो केस नग भँवर जो बसा[५]। पुनि बग होहिं जगत सब हँसा[५]।
सेंबर सेइ न चित करु[६] सुवा। पुनि पछितासि अंत होइ भुवा।
रूप तोर जग ऊपर लोना। यह जोबन पाहुन जग होना[७]।
भोग बेरास केरि यह बेरा। मानि लेहि पुनि[८] को केहि केरा[९]।

---

६. तृ० ३, च० १ तब। ७. प्र० १ न परासा, प्र० २, द्वि० ४, ५, तृ० १, च० १ होइ बेरासी, द्वि० १ होइ निरासी, द्वि० २ होइ तरासी, द्वि० ६ जोबन आसी, तृ० ३ तरासी। ८. द्वि० ४, ५, तृ० १ परासी। ९. पं० १ बोध। १०. प्र० १, २ मूँछ। ११. प्र० १ माइ कंत, प्र० २ भाइ कोटि, द्वि० २, च० १, पं० १ मया गुनत, तृ० ३ मया कोंप, द्वि० १, ७, च० १ मया कोटि। १२. प्र० १ तेहि सथ्थ, हथ्थ; प्र० २, तृ० ३, च० १, पं० १ तेहि साथ, हाथ; द्वि० २ बहु साथ, हाथ। १३. प्र० १, २, पं० १ रहै। १४. द्वि० ५ तुइ, च० १ तोर।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर नौ तथा, द्वि० ४, ५, ६, में उनमें से एक छंद अतिरिक्त है।

[५९४] १. तृ० ३ बिनु, पं० १ तन। २. प्र० १, २, द्वि० ७ थाकइ, द्वि० २ ताकसि। ३. द्वि० ३ पुनि। ४. प्र० १, २ फिरहि न। ५. प्र० १ सुबासा, हाँसा; प्र० २, द्वि० ७ गुभंसा, हंसा; द्वि० १ आरसा, हँसा, पं० १ बसा, परिहँसा। ६. प्र० १ सेव निचिंत होइ, द्वि० ७ सेवै चित दै, पं० १ भूलि न करु चित। ७. प्र० १, २, द्वि० १, ३, ६, तृ० १, पं० १ चलि होना, द्वि० ४, ५ जलि होना। ८. तृ० ३ अब। ९. द्वि० ७ तेहि बन जाइहि करिहि न फेरा।

उठत कोंप तरिवर जस तस जोबन तोहि रात।
तौ[10] लहि रंग लेहि रचि पुनि सो पियर ओइ[11] पात ॥*

[५९५]

कुमुदिनि बैन सुनाए जरे[1]। पदुमिनि हिय अँगार जस परे[2]।
रँग[3] ताकर हौं जारौं रचा[4]। आपन तजि जो पराएँ लचा[4]।
दोसर करै जाइ दुइ बाटा। राजा दुइ न होहिं एक पाटा।
जेहि जियँ पेम प्रीत दिन[5] होई। सुख सोहाग सौं निबहा[6] सोई।
जोबन जाउ जाउ सो भँवरा। पिय की प्रीति सो जाइ न सँवरा।
एहि जग जौं पिय करिहि न फेरा। ओहि जग मिलिहि सो दिन दिन मेरा।
जोबन मोर रतन जहँ पीऊ। बलि सौंपौं[7] यह जोबन जीऊ।
भरथ बिछोउ पिंगला[8] आहि करत जिय दीन्ह[9]।
हौं बिसारि जौं जियति हौं[10] यहै दोस बहु कीन्ह[11] ॥*

---

१०. तृ० ३ जौं। ११. प्र० २ जस, द्वि० ४, ५ हो।

* च० १ में यह छंद नहीं है, किंतु छंद ५९५ में पदमावती ने 'रंग रचना' का जो उत्तर दिया है, वह कुमुदिनी के कथन में इस छंद की अंतिम पंक्ति में ही आता है, इसलिए यह छंद प्रसंग में आवश्यक है।

[५९५] १. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० २ सुनत हिय जरी। २. प्र० १, २, द्वि० ४, तृ० २ आगि आस परी, द्वि० ५, ७ आगि जनु परी। ३. द्वि० १ माँग। ४. प्र० १, २, द्वि० १ काँचा, राँचा। ५. प्र० १, २ जेहि के जिय पिरीति डर, द्वि० १ जेहि सों जिय पिरीत नहिं, द्वि० २ जेहि के जिय पिरीत बहु, द्वि० ६ जेहि जिय पिय कै प्रीति दिढ, द्वि० ७ जेहि के जिय पिय कै डर, तृ० ३ जेहि के जीय प्रीति पै। ६. द्वि० ४, ५ बैठा। ७. तृ० १ सो नाउँ। ८. द्वि० ४, ५ भरथरि बिछोह पिंगला, द्वि० १ भरथ बिछोही पिंगला, द्वि० ७ भरथहरी बिछोह जब। ९. द्वि० ७ पिंगला कत जिउ दीन्ह। १०. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, तृ० २, पं० १ हौं पापिनि (हौं पिया—द्वि० २, बिन पिया—पं० १) जो जिअति हौं, द्वि० १, मैं बिसारि जौ जीय तेउ, तृ० ३ हौं बिसारि जौं छतिवन, द्वि० ६, तृ० १ हौं पिय बाज जो जिअति हौं, द्वि० ७ हौं पापिनि किमि जिव धरौं। ११. प्र० १, २, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, पं० १ इहै दोख मैं कीन्ह, द्वि० १ इहैं दोसर कीन्ह, द्वि० ७ दोस ताहि का दीन्ह।

* च० १ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे के छंद में कुमुदिनी का वचन है, इसलिए उसके पूर्व पद्मावती का वचन जैसा इस छंद में है, होना चाहिए।

[५९६]

पदुमावति सो कर्वनि रसोई। जेहि परकार न दोसर होई।
रस दोसर जेहि जीभ बईठा। सो पै जान रस खट्टा मीठा।
भवर बास बहु फूलन्ह लेई। फूल बास बहु भँवरन्ह देई।
तैं रस परस न दोसर पावा। तिन्ह जाना जिन्ह लीन्ह परावा।
एक चुरू रस[1] भरै न हिया। जौ लहि नहिं भरि[2] दोसर पिया[3]।
तोर जोबन जस समुँद हिलोरा। देखि देखि जिउ बूड़ै मोरा।
दिन क[4] ओर नहिं पाइअ बैसे[5]। जरम ओर तुइँ पाउब कैसें।

देखि धनुक तोर नैना मोहि लागहिं बिख बान।
बिहँसि कँवल जौं मानै भँवर मिलावौं आनि॥*

[५९७]

कुमुदिनि तूँ बैरिनि नहिं धाई। मुँह मसि बोलि चढ़ावै[1] आई।
निरमल जगत नीर कस नामा। जौं मसि परै सोउ होइ स्यामा।
जहँवाँ धरम पाप तहँ[2] दीसा। कनक[3] सोहाग माँझ जस सीसा।
जो मसि परी[3] भई ससि[4] कारी। सो मसि लाइ देसि मोहि गारी।
कापर महँ न छूट मसि अंकू। सो मोहि लाए अैस[5] कलंकू।

[५९६] प्र० १ एक जो लै रस, प्र० २ एक चोलि रस, द्वि० १ एक अँजुली जल, द्वि० २ एक अंजलि रस, तृ० ३ एक जो दरस, द्वि० ६ एक चुलू जल, द्वि० ७ एक अंजलि जस, तृ० १ एक फूल रस, द्वि० ३ एक कचोर रस। २. प्र० १, २ फल, द्वि० ४, ५ फिर। ३. प्र० १, २ हीया। ४. द्वि० ५ रंग, द्वि० ६ एक। ५. द्वि० १ जैसें, तृ० ३ अैसें।

* च० १ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे के छंद में इस छंद में आए हुए 'भँवर मिलावौं आनि' का उत्तर है, इसलिए यह भी प्रसंग में आवश्यक है।

[५९७] १. प्र० १, २, द्वि० १, ६, तृ० १, २, पं० १ सुनावसि। २. प्र० १, २, पं० १ मसि, द्वि० १, ४ नहिं, द्वि० ३ तस। ३. द्वि० ३ बरन। ४. तृ० ३ मसि। ५. प्र० १, पं० १ सो मसि कैसें छूट कलंकू, द्वि० १ सो मसि लाए होसि कलंकू, द्वि० २ सो मसि लावसि देसि कलंकू, द्वि० ३, ४, ५, तृ० २, सो मसि लाइ मोहि देसि कलंकू, द्वि० ७ सो मसि लाइ मोहि दीन्ह कलंकू।

स्यामि भँवर मोर[6] सूरज करा। औरु जो भँवर स्याम मसि भरा।
कँवल भँवर रबि देखै आँखी[8]। चंदन बास न बैठै माँखी।

स्यामि समुँद मोर निरमल[9] रतनसेनि जग सेनि।
दोसर सरि जो कहावै तस बिलाइ जस[10] फेनि ॥*

[५९८]

पदुमिनि बिनु[1] मसि बोलु न बैना। सो मसि चित्र[2] दुहूँ तोर नैना[3]।
मसि सिंगार काजर सब[4] बोला। मसि क बुंद तिल सोह कपोला।
लोना सोइ जहाँ मसि रेखा। मसि पुतरिन्ह[5] निरमल जग[6] देखा।[7]
जो मसि घालि नैन दुहुँ लीन्ही। सो मसि बेहर जाइ न कीन्ही।
मसि मुंद्रा दुहुँ कुच उपराहीं। मसि भँवरा जस कँवल बसाहीं[8]।
मसि केसन्हि मसि भौंहँ[9] उरेही।[10] मसि बिनु दसन[11] सोभ नहिं देही।
सो कस सेत जहाँ मसि नाहीं। सो कस पिंड न जेहि परिछाहीं।

अस देवपाल राउ मसि[12] छत्र धरा सिर फेरि।
चितउर राज बिसरि गा[13] गइउँ जो कुंभलनेरि ॥

[५९९]

सुनि देवपाल जो कुंभलनेरी। कँवल जो नैन भँवर धनि फेरी।

---

६. तृ० ३ मोर भँवर जस। ७. प्र० १, २, पं० १ और न भाव भँवर।
८. प्र० १, २, पं० १ दोसर भँवर न देखौं आँखी। ९. द्वि० १ स्यामि भँवर मोर निरमल। १०. प्र० २ से' बिलाइ होइ।

* च० १में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे के छंद में इस छंद के 'मसि' को लेकर कुमुदिनी ने उत्तर दिया है, इस लिए यह छंद प्रसंग में आवश्यक है।

[५९८] १. द्वि० ४, ५ पुनि। २. द्वि० ४, ५ देखु, तृ० १ भँवर, तृ० २ दसम। ३. तृ० २ सोह मुख बैना। ४. तृ० ३ मसि। ५. पं० १ सोभा। ६. द्वि० ७ नैनन्हि महँ। ७. प्र० १, २ मसि सोभा कै तेहु जग देखा, मसि कोटी (गौनी—प्र० २) रोमावलि रेखा। ८. प्र० १, २, द्वि० ७ चढ़ि कँवल भुलाहीं, द्वि० २ जस कँवल सवाहीं, द्वि० ३ चढ़ि कँवल भँवाहीं, द्वि० ४, ५, च० १ जस कँवल भँवाहीं। ९. द्वि० ७ नैन। १०. प्र० १,२ पं० १ मसि भौहैं जेउँ धनुक उरेहीं। ११. द्वि० १ बदन, तृ० ३ दरस। १२. द्वि० ४, ५ तस। १३. द्वि० ५, तृ० ३, पं० १ निसरि का (उर्दू मूल)।

मोरे पिय[1] क सतुरु देवपालू। सो कत पूज सिंघ सरि भालू।
दोख भरा तन चेतनि[2] कैसा[3]। तेहि क संदेस सुनावहि बेसा[3]।
सोन नदी अस मोर पिय गरुवा। पाहन होइ परै जौं हरुवा।
जेहि ऊपर अस गरुवा पीऊ। सो कस डोल डोलाएँ जीऊ।
फेरत नैन चेरि सौं[4] छूटीं[5]। भै कूटनि कुटनी[6] तसि कूटी।
कान नाक काटे मसि लाई[7]। बहु रिसि काढ़ि दुवार नँघाई[8]।

मुहमद गरुए जो बिधि गढ़े[9] का कोई तिन्ह फूँक।
जिन्हके भार जगत थिर उड़हिं न पवन के झूँक॥

[६००]

रानी धरमसार पुनि[1] साजा। बंदि मोख जेहिं[2] पावै राजा।
जौंवत परदेसी चलि आवा। अन्न दान[3] पय पानि[4] पियावा।
जोगी जती आव जेत कंथी। पूँछै पियहि जान कोइ पंथी।
देत जो दान बाँह भइ ऊँची। जाइ साहि पहँ बात पहूँची।
पातर एक हुती जोगि सुवाँगी[5]। साहि अखारें हुति ओहि माँगी।
जोगिनि भेस बियोगिनि कीन्हा। सिंगी सबद मूल तँतु लीन्हा।
पदुमिनि कहँ पठई कै[6] जोगिनि। बेगि आनु कै बिरह[7] बियोगिनि।

---

[५९९] १. प्र० १ पति। २. प्र० २ तन जेतना, द्वि० १ तन जिय तै, तृ० ३ तन चेरटन, द्वि० ५ जिय तज, द्वि० ७ आकर नस, तृ० २ चित चेत। ३. द्वि० १, २, ४, ५ किया, पिया, तृ० २ अँदेसा, बेसा। ४. द्वि० ७ सब। ५. तृ० ३ टूटीं। ६. द्वि० १, तृ० ३ लुटनी (उर्दू मूल)। ७. द्वि० १ नाक काटि मसि दीन्हि लगाई। द्वि० १ बिहसि दीन्ह दुआर नँघाई, तृ० ३ बिहि असि (उर्दू मूल ?) काढ़ि दुआर नँघाई। ९. द्वि० ४, ५ लिखे।

[६००] १. प्र० १, २ एक। २. प्र० १, २ सकु, द्वि० १ तेहि। ३. प्र० १, २ अन्न दीन्ह। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ७, पं० १ औ, द्वि० ६ सो। ५. प्र० १, २ जो हुती सँयोगी, तृ० ३ हुती जोगि सुबानी, द्वि० ७ भौ जोगिनि स्वाँगी। ६. प्र० १, २ पं० १ पास जाइ रे, द्वि० ६, ७, च० १ पहँ पठई कै। ७. प्र० १, २, पं० १ झुरि सो रे।

चतुर कला[८] मन मोहनि परकाया परवेस।
आइ चढ़ी[९] चितउर गढ़ होइ जोगिनि के भेस।*

[६०१]

माँगत राजबार चलि आई। भीतर चेरिन्ह बात जनाई।
जोगिनि एक बार है कोई। माँगै जैस बियोगिनि होई।
अबहिं नवल जोबन तप[१] लीन्हे। फारि पटोरा[२] कंथा कीन्हे।
बिरह भभूति जटा बैरागी। छाला काँध जाप कँठ[३] लागी।
मुंद्रा स्रवन डँड न[४] थिर जीऊ। तन तिरसूल अधारी पीऊ।
छात न छाँह[५] धूप जस मरई। पायन पाँवरि भूँभुरि जरई।
सिंगी सबद धधाँरी करा। जरै सो ठाँउ पाँउ जहँ[६] धरा।

किंगरी गहें बियोग बजावै बारहि[७] बार सुनाव।
नैन चक्र[८] चारिहुँ दिसि हेरैं[९] दहुँ दरसन कब[१०] पाव॥

[६०२]

सुनि पदुमावति मँदिल बोलाई। पूँछी कवन देस सौं[१] आई।
तरुनि बैस तुम्ह छाज[२] न जोगू। केहि कारन अस कीन्ह बियोगू।
कहेसि बिरह दुख जान न कोई। बिरहिनि जान बिरह जेहि होई।
कंत हमार गए परदेसा। तेहि कारन हम जोगिनि भेसा।
काकर जिउ जोबन औ देहा। जौं पिय गएउ भएउ सब खेहा।

---

८. प्र० २ करा। ९. प्र० २ सची. द्वि० १ परी।

* प्र० १ में इसके अनंतर आठ अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से तीन प्र० २ में भी यहीं हैं, किंतु शेष पाँच अगले छंद के बाद हैं।

[६०१] १. तृ० ३ तँत (उर्दू मूल)। २. तृ० ३ पटोर जो। ३. प्र० १, २, काँध कंठ जप लागी, द्वि० १ छाँह भभूत सुहागी। ४. तृ० ३ डंड, द्वि० ४, ५ नहीं। ५. तृ० ३ छाता छाँह। ६. द्वि० ४, ५ जहाँ पग। ७. द्वि० ७ बारम बार। ८. तृ० ३ चत्र। ९. प्र० १, द्वि० १ दिसि दिसि चितवै, द्वि० ३ दिसि फेरै। १०. प्र० २, पं० १ कहँ।

[६०२] १. द्वि० ४, ५, तृ० २, च० १ हुत। २. तृ० ३ फाब।

फारि पटोर कीन्ह मैं कंथा। जहँ पिउ मिलै लेहुँ सो[3] पंथा।
फिरा करौं चहुँ चक्र[४] पुकारा। जटा परीं को सीस सँभारा।

हिरदै भीतर पिउ बसै मिलै न[५] पूछौं काहि।
सून जगत सब लागै[६] पिय[७] बिनु किछौ न आहि।

[६०३]

स्रवन छेदि मुंद्रा मैं[१] मेले[२]। सबद ओनाउँ[3] कहौं दहुँ खेले।
तेहि बियोग सिंगी नित पूरौं। बार बार होइ किंगरी झूरौं।
को मोहिं लै पिउ के डँड[४] लावै। परम अधारी[५] बात जनावै।
पाँवरि टूटि चलत गा[६] छाला। मन न मरै तन जोबन बाला।
गइँउ पयाग[७] मिला नहिं पीऊ। करवत लीन्ह[८] दीन्ह बलि जीऊ।
जाइ बनारसि जारिउँ कया[९]। पारिउँ पिंड निबहुरे गया[१०]।
जगरनाथ जगरन कै आई। पुनि दुवारिका जाइ अन्हाई[११]।

जाइ केदार दाग तन कीन्हेउ[१२] तहँ न[१३] मिला[१४] तन आँकि।
ढूँढ़ि अजोध्या सब फिरिउँ[१५] सरग दुवारी झाँकि॥*

---

3. तृ० ३ लीन्ह (उर्दू मूल)। ४. प्र० १, २, द्वि० २, तृ० १ पुकारा, सिर को निरुवारा, पं० १ पुकारौं, सिउ सिर पर डारौं। ५. तृ० ३ तौं। ६. द्वि० ७ जग मोहि। ७. द्वि० १ तेहि, द्वि० ५, ६ वहि।

[६०३] १. द्वि० ४, ५ मैंन मुंदरा। २. प्र० १, द्वि० ७ मेला, मेला। 3. च० १ सोवै नहिं। ४. द्वि० ४, ५ कंठ। ५. तृ० ३ पिरम धँधारी। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ चलत पग, तृ० ३ परत गा। ७. प्र० १, २ गया तहँ। ८. द्वि० २, तृ० २ लिएउँ, तृ० ३ कीन्ह। ९. तृ० ३ हिया। १०. द्वि० १, ६ न बहुरा कया (काया—द्वि० १) तृ० ३ न बहुरे पिया, च० १ न पाइउँ गया,। ११. प्र० १, २ बहुरि द्वारिका, द्वि० ७ पुरी द्वारिका, तृ० ३ पुनि सो द्वारिका। १२. द्वि० १ हिए, द्वि० ३ दीन्हेउँ। १३. द्वि० २, पं० १ तेहि न, द्वि० ६, ७ तौन, तृ० १ तबहुँ न, तृ० ३ सोन। १४. तृ० २ दीन्हेउँ तेहि बिन। १५. द्वि० १ अजोध्या आइउँ, च० १, पं० १ अवध फिरि आइउँ।

* प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है।

[६०४]

बन बन सब हेरेउँ बनखंडा।[1] जल जैल नदी अठारह गंडा।
चौंसठि तिर्थ कीन्ह सब ठाँऊ। लेत फिरौं ओहि पिय कर नाऊँ।
ढीली सब हेरेउँ तुरुकानू। औ सुलतान केर बँदिवानू।
रतनसेनि देखेउँ बँदि माहाँ। जरै धूप खिन पाव न छाहाँ।
का सो भोग[2] जेहि अंत न केऊ[3]। एहि दुख लिहें भई[4] सुखदेऊ।
सब राजा बाँधे औ दागे[6]। जोगिनि जानि राजा पाँ लागे।
ढीली नाउँ न जानहि ढीली। सुठि बँदि गाढ़ न निकसै कीली।

देखि दगध दुख ताकर अबहूँ कया[7] न जीउ[8]।
सो धनि जियत[9] किमि आछै[10] जेहिक असि बँदि पीउ॥

[६०५]

पदुमावति जौं सुना बँदि पीऊ। परा अगिनि मह जानहुँ[1] घीऊ।
दौरि पायँ जोगिनि के परी। उठी आगि जोगिनि पुनि जरी।
पाय देइ दुइ नैनन्ह लावौं। लै चलु तहाँ कंत जहँ पावौं।
जिन्ह नैनन्ह देखा तैं पीऊ। सो मोहि देखाउ देउँ बलि जीऊ।
सत औ धरम देउँ सब तोही। पिय की बात कही जेंइ[2] मोही।

---

[६०४] १. प्र० १, २ नौ खंड। २. प्र०१, २ का तेहि भोग, द्वि० १ का सो भोजन, तृ० ३ गा सो भोग, च० १ का सो फूल। ३. प्र० १, २ जेहि अंत न खेवा, द्वि० १ किहेउ न आँटा, द्वि० ७ जेहि अंत न मोखू। ४. तृ० ३ लेन भए (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५, तृ० २ लै सो गएउ, द्वि० ६ लिएँ भइउँ, द्वि० ३ जाइ भए। ५. प्र० १, २ जेहि दख लेन भई महिदेवा, द्वि० १ सो दुख देखि भएउ सुठि जाँता, द्वि० ७ का सो भोग जेहि कया न पोखू। ६. तृ० ३ दांगे। ७. प्र० १, २ अजहूँ गएउ, द्वि० ७ अबहु गँवावा। ८. पं० १ जौ तहँवा पिउ पउतिउँ हेरत देतिउँ जीउ। ९. प्र० १, २ सो राँकिनि, द्वि० ४, ५, तृ० २, पं० १ सो धनि कैसे, द्वि० ७, तृ० १ सो दहुँ जियन। १०. द्वि० ४, ५, तृ० २, पं० १ दहुँ जिऐ, तृ० ३ किमि ओछे।

[६०५] १. प्र० १, २ परा हुतासन महँ जनु, द्वि० ७ परा अगिनि महँ जैसे। २. प्र० १ आइ कहि, प्र० २, द्वि० २ कहसि तैं।

तूँ मोरि गुरू तोरि हौं चेली। भूली फिरत पंथ जेइँ मेली[3]।
डंड एक माया करु मोरें। जोगिनि होउँ चलौं सँग तोरें।

सखिन्ह कहा पदुमावति रानी[4] करहु न परगट भेस[5]।
जोगी सोइ गुपुत मन जोगवै[6] लै गुरु कर[7] उपदेस॥

[६०६]

भीखि लेहि जोगिनि फिर माँगू। कंत न पाइअ किए सँवागू।
एइ बिधि जोग बियोग जो सहा। जैसें पिउ राखै तिमि रहा।
गिरिही महँ भै[1] रहै उदासा[2]। अंचल खप्पर सिंगी स्वाँसा[2]।
रहै पेम मन अरुझा लटा। बिरह धँधारि परहिं सिर[3] जटा।
नैन चक्र हेरै[4] पिय पंथा। कया जो कापर[5] सोई कंथा।
छाला पुहुमि गँगन सिर छाता। रंग रकत रह हिरदै राता।
मन माला फेरत तंत ओहीं। पाँचौं भूत भसम तन[6] होहीं।

कुंडल सो जो सुनै पिय बैना पाँवरि पाय परेहु।
डँड एक जाहु[7] गोरा बादिल पहँ[8] जाइ अधारी लेहु[9]॥

[६०७]

सखिन्ह बुझाई दगधि अपारा। गै गोरा बादिल के बारा।

---

३. प्र० १ कंत बँदि मेली। ४. प्र० १, २ पदुमावति, पं०१ तुम्ह रानी। ५. प्र० २ रानी करहु नट भेस। ६. प्र० १, पं० १ मन, द्वि० ७ मन जानै। ७. प्र० १ जोगवै करि, द्वि० ६ लैकै गुरु, द्वि० ७ जो गुरु कर, पं० १ पै कर गुरु।

[६०६] १. प्र० १, २ तन गिरही महँ, द्वि० ७ कपरन्ह महँ भै, च० १ घरही महँ भै। २. प्र० १, २, द्वि० ७ उदासा, अंजुरी खप्पर सिंगी स्वासा, द्वि० २, तृ० ३ उदासी, आँचल सिंगी मुख स्वाँसी। ३. (तृ० १), पं० १ धँधारी झलकै, च० १ धधाइ परहि सिर, तृ० ३ धँधोर परहिं सिर। ४. द्वि० १ हेरहु पिय, तृ० ३ हेरत पिय, द्वि० ४, ५ लावै लै, च० १ लावै पिय। ५. द्वि० ७ ध्यान औ खप्पर। ६. प्र० १ जरि, द्वि० २ सँग, द्वि० ६ तब। ७. प्र० १ चलि, प्र० २ चलहि, द्वि० ६ चाहि। ८. प्र० १ गढ़। ९. द्वि० १ काढ़हु अधारी देहु।

कँवल चरन भुइं जरम न धरे। जात तहाँ लगि छाला परे।
निसरि आए सुनि छत्री दोऊ। तस काँपे जस काँप न कोऊ।
केस छोरि चरनन्ह रज झारे। कहाँ पाउ पदुमावति धारे।
राखा आनि पाट सोनवानी। बिरह बियोग न बैठी रानी।
चँवरधारि होइ[1] चँवर डोलावहिं। माथें छाहँ[2] रजायसु पावहिं।
उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार न आवै[3] रानी।

का अस कीन्ह कस्ट जिय जो तुम्ह करत न छाज।
अग्याँ होइ बेगि कै[4] जीव तुम्हारे काज॥

[६०८]

कहै रोइ पदुमावति बाता। नैनन्ह रकत देखि जग राता।
उलथि समुँद जस मानिक भरे। रोई रुहिर आँसु तस ढरे।
रतन के रंग नैन पै[1] वारौं। रती रती कै लोहू ढारौं।
कँवलन्ह ऊपर भवर उड़ावौं। सूरज जहाँ तहाँ लै लावौं।
हिय कै हरद बदन के लोहू। जिउ बलि देउँ सो सँवरि बिछोहू।
परहिं[2] आँसु सावन जस नीरू। हरियर भुइँ कुसुंभि तन चीरू[3]।
चढ़े भुवंग लुरहिं लट केसा। भै रोवत जोगिनि[4] के भेसा।

बीर बहूटी होइ चली तबहूँ रहहिं न आँसु[5]।
नैनन्हि पंथ[6] न सूझै लागेउ भादवँ मासु॥*

---

[६०७] १. द्वि० ४, ५ चँवर ढार होइ, तृ० ३ चँवर ढारि वै। २. प्र० १, -, द्वि० २, (तृ० १), पं० १ छात, द्वि० ४, ५ छाय। ३. प्र० १, २, तृ० २, पं० १ आव किमि, द्वि० ३ जो आवै। ४. प्र० १, द्वि० ४, ६, (तृ० १), तृ० २, पं० १ सो, प्र० २ तुम्ह आपहु, द्वि० १ तस, द्वि० २ किन्ह।

[६०८] १. प्र० १ जीव बलि, प्र० २ नैन भइ, द्वि० ७ नैन येह। २. तृ० ३ बिरह। ३. तृ० ३ तेहि जल अंग लाग सर चीरू। ४. प्र० १ मालति ५. द्वि० ७ राखें रहहिं न मासु। ६. तृ० -, च० १ पंथहि पंथ, तृ० ३ नैनन्हि नीर।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर ती. अतिरिक्त छंद हैं।

[६०९]

तुम्ह गोरा बादिल खँभ दोऊ। जस भारथ तुम्ह[1] औरु न कोऊ।
दुख बिरिखा अब रहै न राखा। मूल पतार सरग भइ[2] साखा।
छाया रही सकल महि पूरी। बिरह बेलि होइ बाढ़ि खजूरी।
तेहि दुख केत[3] बिरिख बन[4] बाढ़े। सीस उघारें रोवहिं ठाढ़े।
पुहुमी पूरि सायर दुख पाटा। कौड़ी भई बिहरि[5] हिय फाटा।
बिहरा हिए[6] खजूरि क बिया। बिहरै नहिं यह[7] पाहन हिया।
पिय जहँ बंदि जोगिनि होइ धावौं[8]। हौं होइ बंदि पियहि मोकरावौं।

सूरज गहन गरासा कवँल न बैठ पाट।
महूँ पंथ तेहि गवनब कंत गए जेहि बाट॥

[६१०]

गोरा बादिल दुवौ पसीजे। रोवत रुहिर सीस पाँ[1] भीजे।
हम राजा सौं इहै कोहाने। तुम्ह न मिलहु धरि येहु[2] तुरुकाने[3]।
जो मत सुनि हम आइ कोंहाई। सो निआन हम माँथें आई।
जब लगि जियहिं[4] न ताकहिं दोहू। स्यामि जिअें[5] कस जोगिनि होहू[6]।
उऔ अगस्ति हस्ति घन[7] गाजा। नीर घटा घर[8] आइहि राजा।

---

[६०९] १. प्र० १ जैस भार तुम्ह, प्र० २, द्वि० ६, च० १ जस भा रन तुम्ह, द्वि० १ जस भारथ तम, द्वि० ४ अस रन भारथ, द्वि० ५ अस रन भारथ तुम्ह। २. प्र० १ मूल रहीं तो उड़ैनी, तृ० ३ मूल पतार सरग भुई। ३. प्र० १, २, द्वि० १, ४, ५, ६, च० १ लेत, तृ० ३ तैल, द्वि० ७ दहै, तृ० २, द्वि० ३ लपटि। ४. प्र० १ बिरिख बर, (?) पलास तें। ५. प्र० १ बिरहिनि। ६. प्र० १ बिरहा हिया, तृ० ३ बिरहा हिएँ। ७. प्र० १, २, पं० १ तबहुँ न बिहरा। ८. प्र० २ जोगिनि होउँ कंत कहँ पावौं।

[६१०] १. प्र० १ आँसु तन, प्र० २, पं० १ बूड़ि तनु, द्वि० १ सीस तस, द्वि० ४, ५ सीस लहि, द्वि० ३ सीस पाग। २. प्र० १ धर पै, द्वि० ४ धरे, च० १ ध पहँ, पं० १ धरिए। ३. द्वि० २ सुलताने। ४. द्वि० ४, ५ भागहिं। ५. प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ६, तृ० २ जियत, द्वि० ४, ५, तृ० ३ जीव, तृ० १ काज। ६. द्वि० ४, ५ कत जोगिनि होहू, च० १ कस जोगिनि रोहू। ७. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, तृ० १, च० १ अब, तृ० २ पुनि। ८. प्र० १, २ पं० १ अब।

का[९] बरखा अगस्ति की डीठी। परै पलानि तुरंगम[१०] पीठी।
बेधौं राहु छड़ावौं सूरू[११]। रहै न दुख कर मूल अँकूरू।

वह सूरज तुम्ह ससि सरद[१२] आनि मिलावहिं सोइ।
तस दुख महँ सुख उपनै रैनि[१३] माँझ दिन होइ॥

[६११]

लेहु[१] पान बादिल औ गोरा। केहि लै देउँ उपमा तुम्ह जोरा[२]।
तुम्ह सावँत नहिं सरबरि कोऊ। तुम्ह अंगद हनिवँत सम[३] दोऊ।
तुम्ह बलबीर[४] जाज[५] जगदेऊ। तुम्ह मुस्टिक[६] औ मालकँडेऊ[७]।
तुम्ह अरजुन औ भीम भुआरा। तुम्ह नल नील मेंड़ देनिहारा।
तुम्ह टारन[८] भारन जग जाने। तुम्ह सो परसु[९] औ करन बखाने।
तुम्ह मोरे बादिल औ गोरा। काकर मुख हेरौं बदिछोरा।
जस हनिवँत राघौ बँदि छोरी। तस तुम्ह छोरि मिलावहु जोरी।

जैसें जरत लखा ग्रिहँ[१०] साहस कीन्हेउ[११] भीवँ।
जरत खंभ तस काढ़हु[१२] कै पुरुखारथ जीवँ॥*

---

९. द्वि० १ गौ, द्वि० ३ गह, द्वि० ४, ५, तृ० ३ गा, तृ० २ जाइ। १०. तृ० ३ तुरँकी। ११. प्र० १, २, पं० १ बेधा राहु छूट अब (जस—प्र० १) सूरू। १२. द्वि० १, ४, ५ बदन, च० १ कँवल। १३. द्वि० ७ जस रैनि।

[६११] १. प्र० १ लीन्ह। २. प्र० १ ओरा। ३. प्र० १ बर, द्वि० ७ सरि। ४. तृ० ३ नल नील। ५. प्र० १, २ जाजा, द्वि० १ बाजा, द्वि० ४, ५ जजा, च० १ चाच, पं० १ छाज। ६. तृ० ३ मस्तिक (उर्दू मूल), द्वि० ४ संकर, द्वि० ५ सं.ा। ७. प्र० १, २, पं० १ गँगेऊ। ८. प्र० १ जारन, तृ० ३, च० १ तारन (उर्दू मूल)। ९. तृ० ३ सोप रस (उर्दू मूल), तृ० १ सापरस। १०. प्र० २, तृ० ३ लखा गिरि, द्वि० ४, ५ लखा घर, च० १ लाख गृह। ११. तृ० ३ कीन्ही। १२. तृ० ३ काढ़ेन्ह (उर्दू मूल)।

* प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७ में इसके अनंतर एक छंद अतिरिक्त है, और तृ० २ में इस छंद की तीसरी और चौथी पंक्तियों के बीच में तीन अन्य छंदों की अतिरिक्त पंक्तियाँ हैं।

[६१२]

गोरा बादिल बीरा[*] लीन्हा। जस अंगद हनिवँत बर कीन्हा।[1]
साजि[2] सिंहासन तानहिं छातू। तुम्ह माँथें जुग जुग[3] अहिबातू।
कवँल चरन भुइँ धरत दुखावहु[4]। चढ़हु सुखासन[5] मँदिल सिधावहु[6]।
सुनि सूरज कवँलहिं जिय जागा। केसरि बरन बोल[7] हियँ लागा।
जनु निसि महँ रबि[8] दीन्ह देखाई। भा उदोत मसि[9] गई बिलाई[10]।
चढ़ि सो सिंघासन झमकत चली। जानहुँ दुइज चाँद निरमली।
औ सँग सखी कमोद तराईं। ढारत चवर[11] मँदिल लै[12] आईं।

देखि सो दुइज सिंघासन संकर धरा लिलाट।
कवँल चरन पदुमावति[13] लै बैसारेन्हि पाट॥

[६१३]

बादिल केरि जसोवै माया। आइ गहे बादिल के पाया।
बादिल राय मोर तूँ बारा। का जानसि कस होइ जुझारा।
पातसाहि पुहुमीपति राजा। सनमुख होइ न हमीरहिं छाजा।
छत्तिस लाख तुरै जेहिं[1] छाजहिं[2]। बीस[3] सहस हस्ती दर गाजहिं[2]।
जबहिं[4] आइ जुरिहै वह ठटा। देखत जैस गगन घन[5] घटा[6]।

---

[६१२] १. द्वि० ६ में (यथा० ७) आइ पद्मन घर सुख सौं तब आईं, उहै रात नित जतता आईं। २. तृ० १ छात। ३. प्र० १, २ आनहिं। ४. द्वि० ७ धरि दुख पावहु। ५. द्वि० ४, ५, तृ० ३ सिंघासन। ६. प्र० १, २. पं० १ साजि सिंघासन आगें आनें, कँवल चरन धरि भुइँ कुँभिलाने। ७. प्र० १, २ फूल, द्वि० ४ पोन। ८. द्वि० ४, ५ अब। ९. द्वि० १ भादौं मसि नसि, तृ० २ भा उदोत निसि। १०. प्र० १ गई हेराई, तृ० ३ गैसि बिलाई। ११. प्र० २ कमल। १२. प्र० २ कहँ। १३. प्र० १, २, द्वि० २ गहि हाथहि, द्वि० ६ कै हाथहि, द्वि० ७ धरि हाथन्हि, च० १ लै हाथहि।

[६१३] १. प्र० १, २ तुरै दर, पं० १ नर बाजा। २. द्वि० १, पं० १ साजा, गाजा; द्वि० २, ६ साजहिं, गाजहिं। ३. द्वि० ७ बीस। ४. प्रायः समस्त प्रतियों में 'जौहि' (हिंदी मूल)। ५. द्वि० ३ महँ। ६. प्र० १, २ देखत गगन मेघ अस फाटा (बाटा—प्र० २)।

चमकहिं खरग सो बीज समाना[७]। गल गाजहिं घुम्मरहिं[८] निसाना[९]।
बरिसहिं सेल बान घन घोरा। धीरज धीर[१०] न बाँधहिं तोरा।

जहाँ दलपती दलमलहिं तहाँ तोर का जोग[११]।
आजु गवन तोर आवै मंदिल मानु सुख भोग[१२] ॥*

[६१४]

मता न जानसि बालक[१] आदी। हौं बादिला सिंघ रनबादी[२]।
सुनि गज जूह अधिक जिउ[३] तपा। सिंघ की जाति रहै नहिं छपा।
तब गाजन गलगाज सिंघेला[४]। सौहँ साहि सौं जुरौं अकेला।
अंगद कोपि[५] पाँव जस[६] राखा। टेकौं कटक छतीसौ लाखा।
को मोहि सौहँ होइ मैमंता। फारौं कुंभ[७] उचारौं दंता।
जादौं[८] स्याम सँकरे[९] जस टारा[१०]। बल हरि[११] जस जुरजोधन मारा।
हनिवँत सरिस[१२] जंघ बर जोरौं। धँसौं समुंद्र स्यामि बँदि छोरौं।[१३]

---

७. तृ० ३ बीज जस माना। ८. प्र० १, २ बूमि रहहिं गल गाजि, द्वि० २ घुमरि उठहिं गल गाजि। ९. तृ० २ फेरहिं असमाना। १०. प्र० १ जीउ। ११. प्र० १, द्वि० ४, ५, च० १, काज। १२. प्र० १ करहु सुख राज, द्वि० १, पं० १ भानु रस भोग, द्वि० ४, ५, च० १ मानु सुख राज।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु आगे बादल और उसकी पत्नी का संवाद है, इस प्रति में वह भी अधूरा है, इसलिए द्वि० ७ में यह अंश छूटा हुआ ज्ञात होता है।

[६१४] १. तृ० ३ बादिल। २. तृ० ३ अस बादी। ३. प्र० १ सो। ४. प्र० १ सुखेला, पं० १ बछेला। ५. तृ० ३ रोपि। ६. तृ० १ तुम। ७. प्र० १, २ पेलौं कुंभ, द्वि० १ फारौं कंठ, तृ० ३ मारौं कुंभ, द्वि० ४, ५ फारौं सुंड। ८. द्वि० ४, ५ जरौं, च० १ जदौं। ९. प्र० १, २ संकट। १०. तृ० ३ जस तारा (उर्दू मूल), द्वि० ४ पर टारा, च० १ जस मारा। ११. द्वि० १ बलि जस जुरि। १२. तृ० ३ सुरस (उर्दू मूल)। १३. प्र० १, २ पं० १ हनिवंत जस राखौ बंदि छोरी, धँसौ समुंद करौं तस जोरी (पोरी प्र० २)।

जौं तुम्ह मात जसोवै कान्ह[14] न जानहु बार।
जहँ[15] राजा बलि बाँधा छोरौं[16] पैठि[17] पतार॥*

[६१५]

बादिल गवन जूझि कहँ साजा। तैसेहिं गवन आइ घर बाजा[1]।
लिहें साथ[2] गवने कर चारू। चंद्र बदनि रचि कीन्ह सिंगारू।
माँग मोंति भरि सेंदुर पूरा। बैठ मँजूर बाँक तस जूरा।[3]
भौंहैं धनुक टँकोरि परीखे। काजर नैन[4] मार सर तीखे।
घालि कचपची टीका सजा। तिलक जो देख ठाउँ जिउ तजा।
मनि कुंडल डोलहिं दुइ स्रवना। सीस धुनहिं सुनि सुनि पिय[5] गवना।
नागिनि अलक झलक उर[6] हारू। भएउ सिंगार कंत बिनु भारू[7]।

गवन जो आई पिय रवनि[8] पिय गवने परदेस।
सखी बुझावौं किमि अनल बुझै सो कहु उपदेस॥*

[६१६]

मानि गवन जस[1] घूँघट काढ़ी[2]। बिनवै आइ नारि भै ठाढ़ी[2]।

---

१४. द्वि० ४, ५ मोहि। १५. प्र० १, २ जस। १६. प्र० २ काढ़ौं। १७. द्वि० २, ६ आइ।

* द्वि० ७ में यह छंद भी नहीं है, किंतु ऊपर छंद ६१३ में दिए हुए का कारणों से यह छंद भी प्रतिलिपि करने में छूटा हुआ ज्ञात होता है।

[६१५] १. प्र० १, २ जा दिन बादिल चलै सिधावा, ओही दिवस गौंना गढ़ आवा। २. प्र० १ का बरनौं, प्र० २, द्वि० ६ का देखौं, द्वि० १ लिहें हाथ, तृ० ३ किहें साथ, तृ० १ किहें साज। ३. प्र० १, २, पं० १ माँगि मोति भरि सेंदुर पूरा, जनु मँजूर बाँका तस जूरा। (तमचूरा—प्र० १); तृ० २ माँगि मोति सिर सेंदुर सारा। जस मँजूर तस जूड़ सँवारा। ४. प्र० १, द्वि० १ पनच (तुलना. ६१९.४)। ५. द्वि० १ पियका सुनि, द्वि० ३ सुनि सुनि वै। ६. द्वि० २ रुर, च० १ औ। ७. प्र० १ छारू। ८. द्वि० १ पिय मिलन, द्वि० ४, ५ पँवरि महँ।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किन्तु आगे प्रसंग के लिए यह आवश्यक लगता है।

[६१६] १. प्र० १, तृ० २, च० १, पं० १ सो, प्र० २ सैं। २. तृ० ३ काँध, ठाढ़े।

तीखे हेरि चीर गहि ओढ़ा। कंत न हेर कीन्ह जिय पोढ़ा।
तब धनि बिहँसि कीन्ह चखु[3] डीठी। बादिल तबहिं दीन्ह फिरि पीठी।
मुख फिराइ[4] मन उपनी[5] रीसा। चलत न तिरिया कर मुख दीसा।
भा मन फीक[6] नारि के लेखें। कस पिय[7] पीठि दीन्हि मोहिं[8] देखें।
मकु पिय दिस्टि समानेउ चालू। हुलसा पीठि कढ़ावै[9] सालू।[10]
कुच तूँबी अब पीठि गड़ोवौं[11]। कहेसि जो हूक काढ़ि रस धोवौं।[12]

रहौं लजाइ तौ पिय चलै कहौं तो मोहि कह ढीठि[13]।
ठाढ़ि तिवानी का करौं दूभर दुवौ बसीठि॥*

[६१७]

मान किहें जौ पियहि न पावौं। तजौं मान कर जोरि मनावौं।[1]
कर हुँति कंत जाइ जेहि[2] लाजा। घूँघट लाज आव[3] केहि काजा।
तब धनि बिहसि कहा[4] गहि[5] फेंटा। नारि जो बिनवै कंत न[6] मेंटा[7]।
आजु गवन हौं आई नाहाँ। तुम्ह न कंत गवनहु रन माहाँ।
गवन आव धनि मिलन की ताईं। कवन गवन जौ गवनै साईं।

---

३. प्र० १, २ सौंह किए, द्वि० २, द्वि० ३ कीन्ह जो। ४. प्र० १, पं० १ दिस्टि फिरत, प्र० २ दिस्टि परत। ५. तृ० २ बोला कै। ६. प्र० १, २, तृ० १, २ भंग, द्वि० २ भीक, द्वि० ४, ५, तृ० ३ भीख। ७. प्र० १, २ तुम्ह। ८. प्र० १ हम। ९. द्वि० २, ३ चालू। १०. प्र० १, २ तौ मुख पोंछि (मोंछ—प्र० २) जीव पर खेलौं, स्यामि काज इंद्रासन पेलौं। (६१८. ६) ११. द्वि० १ कुचमच जोइ बैठि को देवौं। १२. प्र० १, २ पुरुष का बोल रहै नहिं पाछू, दसन गयंद गीव नहिं काछू। (६१८. ७)। १३. तृ० ३ गहौं (उर्दू मूल) तो मोहि कह ढीठ, द्वि० ६ विथा कहौं तौ ढीठ।

* द्वि० ७ में यह छंद भी नहीं है, किंतु इसके बिना अगले छंद की संगति नहीं रह जाती है, इसलिए यह आवश्यक है। प्र० १, २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है। (देखिए परिशिष्ट)

[६१७] १. प्र० १, २ ठाढ़ि ठाढि मन कीन्ह तेवानू, जौं पिय पीठि भाव असमानू। पं० १, ठाढ़ि ठाढि मन कीन्ह गियानू, जै पिय जाइ न भावै आनू। २. प्र० १, २, च० १, पं० १ जौपै (कै जौ—प्र० २) जाइ मान औ। ३. प्र० १, २, पं० १ लाज मान आवै। ४. तृ० ३ गहा (उर्दू मूल)। ५. प्र० १, २, पं० १ घूँघट छाड़ि गहा धनि। ६. पं० १ बादिल तबहि कंत नहिं। ७. प्र० १ भेंटा।

धनि न नैन भरि देखा पीऊ। पिय न मिला धनि सौं[८] भरि जीऊ।
तहँ सब आस भरा हिय केवा। भँवर न तजै बास रस लेवा।[९]
पायन्ह धरै लिलाट धनि बिनति सुनहु हो राय।
अलक परी फँदवारि होइ[१०] कैसेहुँ तजै न पाय[११]॥

[६१८]

छाँड़ु फेंट धनि बादिल कहा। पुरुख गवन धनि फेंट न गहा।
जौं तूँ गवन आइ गजगामी। गवन मोर जहँवाँ मोर[१] स्वामी।
जब लगि राजा छूटि न आवा। भावै[२] बीर सिंगारु न भावा[३]।
तिरिया पुहुमि खरग कै चेरी। जीतै खरग होइ तेहि केरी।
जेहिं कर खरग मूठि[४] तेहिं[५] गाढ़ी। जहाँ[६] न आँड न[७] मोंछ न दाढ़ी[८]।
तब मुख मोंछ जीव पर खेलौं। स्वामि काज इंद्रासन पेलौं[९]।
पुरुख बोलि कै टरै न पाछू। दसन गयंद गीव नहिं काछू[१०]।[११]
तूँ अबला धनि मुगुध बुधि जानै जाननिहार।[१२]
जहँ पुरुखन्ह कहँ[१३] बीर रस भाव न तहाँ[१४] सिंगार॥

धनि कहँ। ९. प्र० १, २, पं० १ (यथा . २) तजौं लाज कर जोरि मनावौं, करौं ढिठाइ पीठि जौं (पिअ—प्र० २, पं १) पावौं, द्वि० १ तेहि सब आस भरी तुहि पीऊ, भँवर न मुरै बास रस केऊ, द्वि० १ तोहि सब आस फिरा ही केवा, भँवर न तजै बास रस लेवा। १०. प्र० १, द्वि० ७ फँदवारी। ११. तृ० २ लजाइ।

[६१८] १. प्र० १ है, द्वि० १ कोइ। २. प्र० १, २ तजि मोहि, तृ० २ तौ लहि। ३. च० १ परावा। ४. प्र० १ मींच। ५. द्वि० ७ गहि। ६. द्वि० ४, ५ तहाँ। ७. प्र० १ निदान, प्र० २ इनदान, तृ० ३ अंड। ८. द्वि० ७ मोंछ औ दाढ़ी। ९. प्र० १ जीव पर खेलौं। १०. द्वि० २ गयंद के होहिं न पाछू, तृ० ३ गयंद न उपजै पाछू। ११. प्र० १, २ आजु करौं रन भारथ सोई, अस रन करौं करै नहिं कोई। १२. प्र० १, २, पं० १ तीवै अबला मुगध मंति (तू सो अबला करहि बुधि—प्र० २, पं० १) अजहुँ समुझि पगु धारि। द्वि० १ तूँ अबला धनि कुमुदिनि जानसि जीत न हार। द्वि० २, ७, तृ० २ तूँ अबला धनि मुगुध बुधि जान जो जाननिहार (जूझन हार द्वि० २, तृ० २), द्वि० ४, ५, तृ० ३ तुइं अबला धनि कुमुध बुधि (कुबुध बुधि—द्वि० ३) जान जो जूझनिहार। १३. प्र० १, २, तृ० २ जहँ पूरुष भा, द्वि० १ जहाँ पुरुष तहँ, द्वि० २ जहाँ पुरुष औ, द्वि० ४, ५, तृ० २ जिन्ह पुरुष हिय, द्वि० ६ जहँ पुरुखन्ह हिय, पं० १ पुरुष जो भा‌ै। १४. द्वि० ४, ५ तिन्हहिं।

[६१९]

जौं तुम्ह जूझि चहौ पिय बाजा[1]। किहें सिंगार जूझि मैं साजा[2]।
जोबन आइ सौहँ होइ रोपा[3]। पखरा बिरह काम दल कोपा।
भएउ बीर रस[4] सेंदुर माँगा। राता रुहिर खरग जस नाँगा[5]।
भौंहैं धनुक नैन सर साँधे। काजर पनच बरुनि बिख बाँधे।
दै कटाख सो सान सँवारे। औ नख[6] सेल भाल अनियारे।
अलक फाँस गियँ मेलि[7] असूझा[8]। अधर अधर सौं चाहैं जूझा।
कुंभस्थल दुइ कुच मैमंता। पेलौं सौहँ सँभारहु कंता।

कोपि सँवारहु बिरह दल[9] टूटि होइ दुइ आध।
पहिलें मोहि संग्राम कै करहु जूझ[10] कै साध॥

[६२०]

कैसेहुँ कंत[1] फिरै नहिं फेरें। आगि परी चित उर धनि केरें।[2]
उठे सो धूम नैन करुआने। जबहीं आँसु रोइ बेहराने[3]।
भीजे हार चीर हिय चोली[4]। रही अछूत कंत नहिं खोली[4]।[5]

---

[६१९] प्र० १ कंत जीउ रन गाढा, प्र० २, पं० १ कंत जियहि रन बाजा, द्वि० २,४, ६, तृ० १, च० १ चहौं जूझ पै बाजा, तृ० ३ जूझि चहौं पिय काजा, तृ० २ चहौं जूझ पै राजा। [2]. प्र० १ तुम्ह किय साहस मैं सत बाँधा। [3]. प्र० १, २ रन रोपा, तृ० ३ होइ कोपा, द्वि० ७ मैं रोपा। [4]. प्र० १, २, पं० १ खरग उठि। [5]. प्र० १, २ रुहिर भरा लागै सब आँगा, पं० १ रही बिथुरि अलकैं जस आँगा। [6]. तृ० ३ उर नख, द्वि० ४, ५ औ मुख। [7]. द्वि० १ घालि। [8]. प्र० १ अरुझा। [9]. प्र० १ बरुनि रन, प्र० २ बिरह रन, द्वि० १ बिरह, तृ० ३ पर दल, द्वि० ७ बिरह तल, च० १ बिरह बल। [10]. प्र० २ जूध, तृ० ३ जुध्द, तृ० १ झूझ।

[६२०] [1]. द्वि० ७ मता। [2]. प्र० २, पं० १ एकौ कंतन मानै नाहीं, परी आगि धनि चितउर माहीं। [3]. प्र० १, द्वि० ७ चुवहिं आँसु रोवहि बिहसाने, प्र० २ हिय दौलाइ कंत बिहराने, द्वि० १, तृ० १, च० १ लागे परै आँसु बिहराने (द्वि०-१ झरि आने), तृ० २ चुवहिं आँसु जस सावन पानी, पं० १ ए दौं लागि कंठ बेहराने। [4]. तृ० ३ चोले, खोले (उर्दू मूल)। [5]. प्र० २, पं० १ चले आँसु धनि बहुरि न बोली, भीजेउ हार चीर उर मेली।

धनि न नैन भरि देखा पीऊ। पिय न मिला धनि सौं[8] भरि जीऊ।
तहँ सब आस भरा हिय केवा। भँवर न तजै बास रस लेवा।[9]
पायन्ह धरै लिलाट धनि बिनति सुनहु हो राय।
अलक परी फँदवारि होइ[10] कैसेहुँ तजै न पाय[11]॥

[६१८]

छाँड़ु फेंट धनि बादिल कहा। पुरुख गवन धनि फेंट न गहा।
जौं तूँ गवन आइ गजगामी। गवन मोर जहँवाँ मोर[1] स्यामी।
जब लगि राजा छूटि न आवा। भावै[2] बीर सिंगारु न भावा[3]।
तिरिया पुहुमि खरग कै चेरी। जीतै खरग होइ तेहि केरी।
जेहिं कर खरग मूठि[4] तेहिं[5] गाढ़ी। जहाँ[6] न आँड न[7] मोंछ न दाढ़ी[8]।
तब मुख मोंछ जीव पर खेलौं। स्यामि काज इंद्रासन पेलौं[9]।
पुरुख बोलि कै टरै न पाछू। दसन गयंद गीव नहिं काछू[10]।[11]
तूँ अबला धनि मुगुध बुधि जानै जाननिहार।[12]
जहँ पुरुखन्ह कहँ[13] बीर रस भाव न तहाँ[14] सिंगार॥

धनि कहँ। ९. प्र० १, २, पं० १ (यथा . २) तजौं लाज कर जोरि मनावौं, करौं ढिठाइ पीठि जौं (पिअ—प्र० २, पं १) पावौं, द्वि० १ तेहि सब आस भरी तुहि पीऊ, भँवर न मुरै बास रस केऊ, द्वि० १ तोहि सब आस फिरा ही केवा, भँवर न तजै बास रस लेवा। १०. प्र० १, द्वि० ७ फँदवारी। ११. तृ० २ लजाइ।

[६१८] १. प्र० १ है, द्वि० १ कोइ। २. प्र० १, २ तजि मोहि, तृ० २ तौ लहि। ३. च० १ परावा। ४. प्र० १ मींच। ५. द्वि० ७ गहि। ६. द्वि० ४, ५ तहाँ। ७. प्र० १ निदान, प्र० २ इनदान, तृ० ३ अंड। ८. द्वि० ७ मोंछ औ दाढी। ९. प्र० १ जीव पर खेलौं। १०. द्वि० २ गयंद के होहिं न पाछू, तृ० ३ गयंद न उपजै पाछू। ११. प्र० १, २ आजु करौं रन भारथ सोई, अस रन करौं करै नहिं कोई। १२. प्र० १, २, पं० १ तीवै अबला मुगध मंति (तू सो अबला करहि बुधि—प्र० २, पं० १) अजहुँ समुझि पगु धारि। द्वि० १ तूँ अबला धनि कुमुदिनि जानसि जीत न हार। द्वि० २, ७, तृ० २ तूँ अबला धनि मुगुध बुधि जान जो जाननिहार (जूझन हार द्वि० २, तृ० २), द्वि० ३, ५, तृ० ३ तुइं अबला धनि कुसुध बुधि (कुबुध बुधि—द्वि० ३) जान जो जूझनिहार। १३. प्र० १, २, तृ० २ जहँ पूरुष भा, द्वि० १ जहाँ पुरुष तहँ, द्वि० २ जहाँ पुरुष औ, द्वि० ४, ५, तृ० २ जिन्ह पुरुष हिय, द्वि० ६ जहँ पुरुखन्ह हिय, पं० १ पुरुष जो भा। १४. द्वि० ४, ५ तिनहिं।

[६१९]

जौं तुम्ह जूझि चहौ पिय बाजा[1]। किहैं सिंगार जूझि मैं साजा[2]।
जोबन आइ सौहँ होइ रोपा[3]। पखरा बिरह काम दल कोपा।
भएउ बीर रस[4] सेंदुर माँगा। राता रुहिर खरग जस नाँगा[5]।
भौंहैं धनुक नैन सर साँधे। काजर पनच बरुनि बिख बाँधे।
दै कटाख सो सान सँवारे। औ नख[6] सेल भाल अनियारे।
अलक फाँस गियँ मेलि[7] असूझा[8]। अधर अधर सौं चाहै जूझा।
कुंभस्थल दुइ कुच मैमंता। पेलौं सौहँ सँभारहु कंता।

कोपि सँघारहु बिरह दल[9] टूटि होइ दुइ आध।
पहिलें मोहि संग्राम कै करहु जूझ[10] कै साध॥

[६२०]

कैसेहुँ कंत[1] फिरै नहिं फेरें। आगि परी चित उर धनि केरें।[2]
उठे सो धूम नैन करुआने। जबहीं आँसु रोइ बेहराने[3]।
भीजे हार चीर हिय चोली[4]। रही अछूत कंत नहिं खोली[4]।[5]

---

[६१९] प्र० १ कंत जीउ रन गाढा, प्र० २, पं० १ कंत जियहि रन बाजा, द्वि० २,४, ६, तृ० १, च० १ चहौं जूझ पै बाजा, तृ० ३ जूझि चहौं पिय काजा, तृ० २ चहौं जूझ पै राजा। २. प्र० १ तुम्ह किए साहस मैं सत बाँधा। ३. प्र० १, २ रन रोपा, तृ० ३ होइ कोपा, द्वि० ७ मैं रोपा। ४. प्र० १, २, पं० १ खरग उठि। ५. प्र० १, २ रुहिर भरा लागै सब आँगा, पं० १ रही बिथुरि अलकैं जस आँगा। ६. तृ० ३ उर नख, द्वि० ४, ५ औ मुख। ७. द्वि० १ घालि। ८. प्र० १ अरुझा। ९. प्र० १ बरुनि रन, प्र० २ बिरह रन, द्वि० १ बिरह, तृ० ३ पर दल, द्वि० ७ बिरह तल, च० १ बिरह थल। १०. प्र० २ जूध, त० ३ जुध्य, तृ० १ झूझ।

[६२०] १. द्वि० ७ मता। २. प्र० २, पं० १ एकौ कंतन मानै नाहौं, परी आगि धनि चितउर माहाँ। ३. प्र० १, द्वि० ७ चुवहिं आँसु रोवहिं बिहसाने, प्र० २ हिय दौलाइ कंत बिहराने, द्वि० १, तृ० १, च० १ लागे परै आँसु बिहराने (द्वि० १ झरि आने), तृ० २ चुवहिं आँसु जस सावन पानी, पं० १ ए दौं लागि कंठ बेहराने। ४. तृ० ३ चोले, खोले (उर्दू मूल)। ५. प्र० २, पं० १ चलै आँसु धनि बहुरि न बोली, भींजेउ हार चीर उर मेली।

भीजी[५] अलक चुई कटि मंडन[६]। भीजे भँवर कँवल सिर फुंदन[७]।
चुइ चुइ काजर आँचर भीजा। तबहुँ न पिय कर रोवँ[८] पसीजा[९]।
छाँड़ि[१०] चला हिरदै दै डाहू[११]। निठुर नाहँ आपन नहिं काहू।[१२]
सबै सिंगार भीज भुइँ चुवा। छार मिलाइ[१३] कंत नहिं छुवा।[१४]

रोएँ कंत न बहुरै तेहि[१५] रोएँ का काज[१६]।
कंत धरा मन जूझ रन[१७] धनि साजे सब साज[१८]॥[१९]

[६२१]

मँते बैठ बादिल औ गोरा। सो मत कीज परै नहिं भोरा।
पुरुख न करहिं नारि मति काँची। जस नौसाबैं[१] कीन्ह न बाँची।
हाथ चढ़ा इसिकंदर बरी[२]। सकति छाँड़ि कै भै[३] बँदि परी[२]।
सजग जो नाहिं काह बर काँधा। बधिक हुते[४] हस्ती गा[५] बाँधा।

---

६. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ भीजै अलक चुवै गति मंदे, तृ० ३ भीजै लाग चुए नहिं मंडन, द्वि० ५ भीजै लाग चुवै कटि मंडन, तृ० २ भीजे अलक चुए कुच मंडन। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ कँवल रस बंदे। ८. द्वि० ६ निठुर नाह कै सेहु न, द्वि० ३ तबहुँ न पिय कर दिष्टि। ९. पं० १ निठुर नाह तौहू न पसीजा। १०. तृ० ३ चलहि। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ चला बिछोहि हिए दै डाहू। १२. प्र० २, पं० १ जो तुम्ह कत जूझ अब साधा, तुम्ह किए साका मैं सत बाँधा। १३. प्र० १, २, द्वि० ७ मिला जौ। १४. प्र० २, पं० १ रन चढ़ि जीति दर्जन घर आवहु, लाज होइ जो पीठि दिखावहु। १५. तृ० २ धनि। १६. प्र० २, पं० १ तुम्ह लै गे रन साहस मोहँ दै माँग सिंदूर। १७. तृ० २ कहँ। १८. द्वि० १ साजे सत साज, द्वि० २, ५, तृ० २, ३, च० १ साजे सब साज, तृ० १ साजे सत लाज, तृ० ३ तौ होवै सिरसाज। १९. प्र० १, देहु पँवारे हे सखी मंदिल बाजहि आज, प्र० २, पं० १ देहु पँवारे हे सखी बाजै मंदिर तूर, द्वि० ६ दुहुँ पँवा हिं यहि सँदिर सँवरि धरे मन साज, द्वि० ७ देहु बधावा हे सखी मंदिल बाजहि आज।

[६२१] १. प्र० २, द्वि० २, ५, तृ० १, नौसाबाँ, द्वि० ७ नौ सावैं, द्वि० १ नौ सभै, तृ० ३ नौ साव, द्वि० ४ नौसामाँ। २, प्र० २, द्वि० ५, ७, तृ० १, च० १, पं० १ बैरी, पैरी। ३. प्र० १, द्वि० २, ६, तृ० १ पहिरी, प्र० २ परी। ४. तृ० २ बुधि कहिए, तृ० ३ बुधि कहिअ। ५. प्र० १, २, पं० १ सुबुधि सिआर सिंघ कहँ मारा, कुबुधि जो सिंघ कूप परि हारा।

देवन्ह चलि आई असि आँटी। सुजन कँचन दुर्जन भा माँटी[६]।
कंचन जुरै[७] भए दस खंडा। फुटि न मिलै माँटी[८] कर भंडा।
जस तुरुकन्ह[९] राजहिं[१०] छर साजा[११]। तस हम साजि[१२] छड़ावहिं राजा।

पूरुख तहाँ करै छर जहँ बर कीन्हें[१३] न आँट।
जहाँ फूल तहाँ फूल होइ[१४] जहाँ काँट तहाँ काँट[१५] ॥*

[६२२]

सोरह सौ[१] चंडोल सँवारे। कुँवर सँजोइल कै बैसारे।
साजा पदुमावति क बेवानू। बैठ लोहार न जानै भानू।
रचि[२] बेवान तस साजि[३] सँवारा। चहुँ दिसि चँवर[४] करहिं[५] सब ढारा।
साजि सबै चंडोल चलाए। सुरँग ओढ़ाइ मोंति तिन्ह लाए।
भै सँग गोरा बादिल बली। कहत चले[६] पदुमावति चली।
हीरा रतन पदारथ झूलहिं। देखि बेवान देवता भूलहिं।
सोरह सै[७] सँग चलीं सहेलीं। कँवल न रहा और को बेली।

रानी चली छड़ावै राजहि[८] आपु होइ तेहि ओल।
बत्तिस[९] सहस सँग तुरिअ खिंचावहि[१०] सोरह सै[११] चंडोल ॥

---

६. च० १ में उपर्युक्त पादटिप्पणी ५ का पाठ। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ मिलै। ८. द्वि० ५. ६, तृ० १ छरि। ९. तृ० ३ बर कीन्ह। १०. द्वि० ७ हम सौं। ११. तृ० २ साँधा, बाँधा। १२. द्वि० १, ७ छर साजि, द्वि० ६ चह साजि, तृ० १ हम छाज। १३. द्वि० २ पुरुष नहिं, द्वि० ७ परसान्हि। १४. द्वि० ४, पं० १ है, द्वि० ६ लीजै। १५. द्वि० ७ हाथ गारि कै काँटा।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[६२२] १. प्र० १, द्वि० ३ ६, ७, सहस, तृ० ३ सौ। २. तृ० २ जनु, पं० १ राज। ३. प्र० १, २, च० १ सिर छात, द्वि० २ औ छात, द्वि० ६ ससि छात, द्वि० ७ ससि छत्र। ४. तृ० १ नखत। ५. प्र० १ धारि, प्र० २ ढारि। ६. तृ० ३ चात, तृ० ३, च० १ जाहिं। ७. प्र० १. २, द्वि० १, ३ ६, ७ सहस। ८. तृ० २, पं० १ छड़ावै। ९. द्वि० १ सोरह, द्वि० ४, ५ तीसि, तृ० ३ निसि, च० १ तीनि। १०. प्र० १, २ तुरिअ भा, द्वि० २ तुरिअ जानौं, द्वि० ७ कुछ जानौ, तृ० २ सँग तराईं, द्वि० ३ तुरिअ चलाए, द्वि० ७ तुरै सँग, पं० १ तुरिअ खिचाऊ। ११. द्वि० १, ३, ६ ७, सहस।

[६२३]

राजा बंदि[1] जेहि कै सौंपना। गा गोरा तापहँ[2] अगुमना।
टका लाख दस[3] दीन्ह अँकोरा। बिनती कीन्ह पाय गहि गोरा।
बिनवहु पातसाहि पहँ जाई। अब रानी पदमावति आई।
बिनै करै आई हौं ढीली। चितउर की मो सिउँ है कीली।[4]
एक घरी जौं अग्याँ पावौं। राजहिं सौंपि मँदिल कहँ[5] आवौं।
बिनवहु पातसाहि के आगें। एक बात दीजै मोहिं माँगें[6]।
हते रखवार आगें सुलतानी। देखि अँकोर भए जस पानी।

लीन्ह अँकोर हाथ जेइँ जाकर[7] जीव दीन्ह तेहि हाँथ[8]।
जो वहु कहै[9] सरै सो कीन्हे[10] कनउड़ झार न माँथ[11]॥

[६२४]

लभ पाप कै नदी अँकोरा। सत्तु[1] न रहै हाथ जस बोरा।
जहँ अँकोर तहँ नेगिन्ह राजू। ठाकुर केर बिनासहिं काजू।
भा जिउ घिउ रखवारन्ह केरा। दरब लोभ चंडोल न हेरा।
जाइ साहि आगें सिर नावा। ऐ जग सूर चाँद चलि आवा।

---

[६२३] १. द्वि० ३ हुत। २. प्र० १, द्वि० ६ बादल। ३. प्र० १, २ एक। ४. प्र० १, २, पं० १ बिनती करै भाँत सो केती, चितउर कै कुंजी मोहि सौंती ; द्वि० ३ बिनती करै कर जोरे खरी, लै सौंपौं राजहि एक धरी (६२४. ७); द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ बिनती करै जहाँ पै पुँजी, सब भँडार कै मो सिउ कुंजी। (तुलना० ६२४ . ६)। ५. तृ० २ सब महँ। ६. प्र० १, २, पं० १ दरब भँडार जहाँ लगि साजा, मोरे हाथ दीन्ह सब राजा ; द्वि० १, २, तृ० १, च० १ तजा कोह भा छोह बुझावा, पातिसाहि सों बिनवै धावा ; द्वि० ४, ५, पादटिप्पणी ४ में दिया हुआ द्वि० ३, ६, ७, तृ० २ का पाठ ; द्वि० ३, तृ० ३ बिनवहु बात साहिकें आगें, अब सो थाति आवै सँग लागें। ७. प्र० १ जेइँ, द्वि० ७ जिन्ह। ८. प्र० १, २, पं० १ दीन्ह हाथ तेहि नाथ। ९. तृ० २ चहै। १०. प्र० १, २, च० १, पं० १ जहाँ चलावै तहँ चलै, तृ० ३ जो बहु कहै चहै सो कीन्हे, द्वि० ६ जो वहु कहै सरै सो, द्वि० ७ जो वह करै कहै सो कीन्हे, तृ० २ जो वह कहै करै सो। ११. प्र० १, २ फेरे फिरै न माँथ, द्वि० ६, च० १ कहौ फिरे नहिं माँथ, तृ० १, २ कबहुँ न फेरै माथ।

[६२४] १. तृ० ३ सतुरु।

औ जावँत[२] सँग[३] नखत तराई। सोरह सै[४] चंडोल सो आईं।
चितउर जेति राज कै पूँजी। लै सो आई पदुमावति कूँजी[५]।
बिनति करै कर जोरें खरी। लै सौंपौं राजहिं[६] एक घरी।[७]

इहाँ उहाँ के स्वामी[८] दुहूँ जगत मोहि[९] आस।
पहिलें दरस देखावहु तौ आवौं[१०] कबिलास॥

[६२५]

अग्याँ भई जाउ एक घरी। छूँछि जो घरी फेरि बिधि[१] भरी।
चलि बेवान राजा पहँ आवा। सँग चंडोल जगत गा[२] छावा[३]।
पदुमावति मिस हुत जो लोहारू। निकसि काटि बँदि कीन्ह जोहारू।
उठेउ कोपि[४] जब छूटेउ[५] राजा। चढ़ा तुरंग सिंघ अस गाजा।
गोरा बादिल खाँडा काढ़े। निकसि कुँवर चढ़ि चढ़ि भए ठाढ़े।
तीख तुरंग गँगन सिर लागा। केहु जुगुति को टेकै बागा।
जौं जिउ ऊपर खरग सँभारा। मरनिहार सो सहसन्हि मारा।

भई पुकार साहि सौं[६] ससियर[७] नखत सो नाहिं।
छर कै गहन गरासा[८] गहन गरासे जाहिं॥

---

२. प्र० १, २ लीन्हे, द्वि० ७ आईं। ३. द्वि० १, ५ सा। ४. प्र० १, द्वि० १, ६, ७ सहस। ५. प्र० १, २, पं० १ पदुमावति लीन्हे सब कुंजी, द्वि० १ कुंजी सो आई हमतें पुंजी, तृ० ३ हाथ सो पदुमावति के कुंजी। ६. द्वि० ६, ७ पावौं। ७. पं० १ बिनति करै बहु भाँति बड़ाई, राजहिं सौंपि मँदिर चह आई। ८. द्वि० १ राजा, द्वि० ६ स्वामि तुम्ह, पं० १ सुल मोहि। ९. प्र० १ तोरि, तृ० २ कै। १०. प्र० १, २ पठवहु।

[६२५] तृ० ३ निधि। २. प्र० १, २, द्वि० ५, ७, तृ० २ सब। ३. पं० १ चलि बेवान गा राजा ठाईं, झाँपि रहे चंडोल सवाईं। ४. द्वि० २ गरबि, द्वि० ४ काँपि। ५. प्र० १, २ छूटत खिन। ६. प्र० २, द्वि० ७, च० १ साहि पहँ, द्वि० २ राजा सौं, द्वि० ५ सूर सौं। ७. तृ० १ ससि औ। ८. प्र० १ नखत जो परगसे, प्र० २, तृ० १, च० १ गरह जो परिगसे, द्वि० ६ गढ़ जो परसे, पं० १ गरह जो परगसे।

[६२६]

लै राजहिं चितउर कहँ चले। छूटेउ मिरिग सिंघ कलमले।
चढ़ा साहि चढ़ि लागि गोहारी। कटक असूझ[1] पारि जग कारी।
फिरि बादिल गोरा सौं कहा। गहन छूट पुनि जाइहि गहा।
चहुँ दिसि आइ अलोपत भानू। अब यह गोइ इहै मैदानू।
तूँ अब राजहिं लै चलु गोरा। हौं अब उलटि जुरौं भा जोरा।
दहुँ चौगान तुरुक कस खेला। होइ खेलार रन[2] जुरौं अकेला।
तब पावौं बादिल अस नाऊँ। जीति मैदान गोइ लै जाँऊ।

आजु खरग चौगान गहि करौं सीस रन[3] गोइ।
खेलौं सौहँ साहि सौं[4] हाल जगत महँ होइ॥*

[६२७]

तब अंकम[1] दै गोरा मिला। तूँ राजहिं लै चलु बादिला।
पिता मरै[2] जो सारैं साथैं। मींचु न देइ पूत के माँथैं।[3]
मैं अब आउ भरी औ भूँजी। का पछिताँउ[4] आइ जौं[5] पूजी।
बहुतन्ह मारि मरौं जौं जूझी। ताकहँ जनि रोवहु मन बूझी।
कुँवर सहस सँग[6] गोरैं लीन्हें। औरु बीर सँग बादिल दीन्हें।
गोरहि समदि बादिला गाजा। चला लीन्ह आगें[7] कै राजा।

---

[६२६] १. द्वि० ४, ५, च० १ परी। २. प्र० १, द्वि० १, २, ६, तृ० २ चहौं खेलार रन, तृ० ३ होइ खेलार रन। ३. प्र० २, द्वि० ७, (तृ० १) रिपु। ४. द्वि० ७ पहँ, तृ० ३ के।
* प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) में इसके अनतर छः अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६२७] १. द्वि० १ अंकम भरि, द्वि० ५, च० १, पं० १ अगौन दै, द्वि० ७ हाँक दै, (तृ० १) सो अंक दै, तृ० २ अगवन होइ। २. प्र० १, २ मिलै। ३. द्वि० ६, तृ० २ पिता बरोक मरै जो लिए, आपन मींचु भएउ तेहि दिए; (तृ० १) पूत जो वार मरै का लिए, आपन मीचु भएउ तेहि दिए। ४. द्वि० ७ गा पछिताव, च० १ कहा चलिउँ घर। ५. प्र० १, २ आइ जब, तृ० ३ आइ अब, द्वि० ४, ६, (तृ० १), पं० १ आइ जौ, च० १ होइ गइ। ६. प्र० १, २ द्वि० ७ दस, द्वि० १ एक। ७. प्र० १ अगवन।

गोरा उलटि खेत भा ठाढ़ा। पुरखन्ह देखि चाउ मन बाढ़ा।

आउ कटक सुलतानी[८] गँगन छपा मसि माँझ।
परत आव जग कारी[९] होत[१०] आव दिन साँझ॥*

[६२८]

होइ मैदान परी अब गोई। खेल हाल दहुँ काकरि होई।
जोबन तुरै चढ़ी सो रानी। चली जीति अति खेल सयानी।
लट[१] चौगान गोइ[२] कुच साजी। हिय मैदान चली लै बाजी।
हाल सो करै[३] गोइ लै बाढ़ा[४]। कूरी दुहूँ[५] बीच कै काढ़ा[६]।
भए पहार दुवौ वै कूरी। दिस्टि नियर पहुँचत सुठि दूरी।
ठाढ़ बान अस जानहुँ दोऊ। सालहिं हिए कि[७] काढ़ै कोऊ।
सालहिं तेहि न जासु हियँ[८] ठाढ़े[९]। सालहिं तासु चहै ओन्ह[१०] काढ़े।

मुहमद खेल पिरेम का खरी[११] कठिन चौगान।
सीस न दीजै गोइ जौं हाल न होइ मैदान[१२]॥

[६२९]

फिरि आगें गोरैं तब हाँका। खेलौं आजु करौं रन साका।
हौं खेलौं धौलागिरि गोरा। टरौं न टारा बाग न मोरा।

---

८. प्र० १, २ साहिकर, द्वि० ६, ७ सुलतान कर। ९. द्वि० १ जस कारी, द्वि० ७ जस करिआ। १०. प्र० १, पं० १ फिरत।

*तृ० २ में इस छंद की .४, .५, .६, .७ को बीच-बीच में रखते हुए, दो छंदों की अतिरिक्त पंक्तियाँ आई हैं।

[६२८] १. प्र० १ चित, प्र० २ नट, द्वि० ४, ५ कटि। २. प्र० १, २, द्वि० ७ हाल। ३. प्र० १ जो चंपक, प्र० २, द्वि० ७ सो चिबुक। ४. द्वि० ७ कुठ ठाढा। ५. प्र० २ कुऑरि से दुइँ, तृ० २ लैके कोई। ६. द्वि० ५ ठाढ़ा। ७. प्र० १, २, द्वि० ५, ६, पं० १ न। ८. प्र० १ ताहि जाहिअ, प्र० २ ताहि न जाहिअ। ९. प्र० २ काढ़े, च० १ बाढ़े। १०. च० १ दुहुँ। ११. प्र० १, २ धनि रे। १२. द्वि० ३, तृ० २, च० १, पं० १ निदान।

सोहिल जैस इंद्र[१] उपराहीं। मेघ घटा मोहि[२] देखि बिलाहीं।
सहसौं सीसु[३] सेस सरि[४] लेखौं। सहसौं नैन इंद्र भा देखौं।
चारिउ भुजा चतुर्भुज आजू। कंस न रहा और को राजू।
हौं होइ भीवँ आजु रन[५] गाजा। पाछें घालि दुंगवै राजा।
होइ हनिवँत जमकातरि ढाहौं। आजु स्वामि सँकेरें निरबाहौं।

होइ नल नील आजु हौं देउँ समुँद महँ[६] मेंड़।
कटक साहि कर टेकौं होइ सुमेरु रन[७] बेंड़॥*

[६३०]

ओनै[१] घटा चहुँ दिसि तसि आई[२]। चमकहिं खरग[३] बान झरि लाई[४]।
डोलहिं नाहिं देव जस आदी। पहुँचे तुरुक बाद कहँ बादी।
हाथन्ह गहे खरग हिरवानी[५]। चमकहिं सेल बीज की बानी।
सजे बान जानहुँ ओइ गाजा[६]। बासुकि डरै सीस जनि बाजा।
नेजा उठा डरा मन इंदू। आइ न बाज[७] जानि कै[८] हिंदू।

---

[६२९] १. प्र० १, २, द्वि० ७ बाँध, द्वि० १ बाँधा, द्वि० ६ नीर। २. तृ० ३ मुख। ३. द्वि० १ सहस सिर, द्वि० ३ सहस सहस। ४. प्र० १, २, द्वि० १ संकर बर, द्वि० २, ७ संकर सम, द्वि० ३, ४, पं० १ संकर सरि, तृ० २ एक सरि। ५. प० १, २ सो अरजुन। ६. प्र० २, द्वि० २, ३, तृ० १, च० १, पं० १ कहँ। ७. प्र० १ सामुहँ रन, प्र० २ सुमेर ईन, तृ० ३ सुमेरु न।

* प्र० २ में इसके अनतर दो अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से प्र० १ में एक यहाँ पर और एक छंद ५१३ के अनंतर है, द्वि० ३, ६, ७ में एक ही छंद अतिरिक्त है, और वह उपर्युक्त दो में से है।

[६३०] १. द्वि० ६ आइ बल। २. द्वि० १ आई चहुँ फेरा, द्वि० ४, ५, ६ चहूँ दिसि आई, तृ० २ मेघ झरि लाई, द्वि० ३, पं० १ चहुँ दिस घिरि आई। ३. द्वि० ४, ५ छूटहिं बान। ४. प्र० २ बान जस लाई, द्वि० १ होइ खन घेरा, द्वि० ४, ५ मेघ झरि लाई। ५. पं० १ सिंग बानी। ६. द्वि० २ पहुँच बान जानहु बै गाजा, तृ० ३ साजे मान जानहु ओइ गाजा, द्वि० ४, ५ साजे बान जत आवै गाजा, (तृ० १) साजे खरग हाथ सों गाजा, तृ० २ सजे मान आवै जम काजा, च० १ सजे बाहँ जानहु दुइ काजा, पं० १ सजे मान जानहु दै गाजा। ७. द्वि० ४, ५, च० १ पाछ। ८. प्र० १ तुरुक सौं।

गोरैं साथ लीन्ह सब[९] साथी। जनु मैमंत सुंड बिनु[१०] हाथी।
सब मिलि पहिलि[११] उठौनी कीन्ही[१२]। आवत अनी[१३] हाँकि सब लीन्ही[१२]।

रुंड मुंड सब[१४] टूटहिं[१५] सिउँ[१६] बकतर[१७] औ कुंडि[१८]।
तुरिअ होहिं बिनु काँधे हस्ति होहिं बिनु सुंडि॥

[६३१]

ओनवत आव[१] सैन सुलतानी। जानहुँ पुरवाई[२] अति बानी।
लोहैं सैन सूझ सब कारी[३]। तिल एक कतहुँ न सूझ[४] उघारी।
खरग पोलाद निरँग[५] सब काढ़े। हरे बिज्जु अस चमकहिं ठाढ़े।
कनक बानि[६] गजबेलि सो नाँगी[७]। जानहुँ काल करहिं जिउ माँगी[७]।
जनु जमकात करहिं[८] सब भवाँ[९]। जिउ लै चहहिं सरग उपसवाँ[९]।
सेल साँप जनु चाहहिं डसा। लेहिं काढ़ि जिउ मुख बिख बसा।
तिन्ह सामुहँ गोरा रन कोपा। अंगद सरिस[१०] पाउ रन[११] रोपा।

---

९. प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) लीन्ह सहस दस, द्वि० १ आपन लीन्हा। १०. द्वि० ७ मुँडइल। ११. द्वि० ३ एक। १२. प्र० १ किया, सब लिया, (तृ० १) सिर लीन्ही, द्वि० ५ सत लीन्ही, तृ० २ तिन दीन्ही। १३. द्वि० ४ आइ, द्वि० ७ कटक। १४. द्वि० ७ महि, तृ० ३ अति, पं० १ अब। १५. द्वि० १ पारेउ। १६. द्वि० ३, ६, तृ० २ सैं। १७. प्र० १, २ चाकतरा, द्वि० ६, तृ० १ पाखर। १८. च० १ लुंडि।

[६३१] १. द्वि० ६ दीख। २. तृ० ३ परौ आन (उदू' मूल), द्वि० १ परत आव, द्वि० ६, च० १ परलौ आव। ३. प्र० १ जूझ अविकारी, प्र० २ सूझ अविकारी, द्वि० १, ६ जूझि अतिकारी, पं० १ जूझ सबकारी। ४. प्र० १ दीख, पं० १ होहिं। ५. द्वि० ४, ५ तुरुक, च० १ खरग। ६. प्र० १, २ निगवानी, द्वि० ४, ५ पीलवान, (तृ० १) अगुन आनि, तृ० ३ लिंगवानि, तृ० २ भगवानी, द्वि० ३ कटक वान (हिंदी-उदू' मूल)। ७. प्र० १ ताके, बाँके, तृ० ३ बाढ़ी, काढं, द्वि० ४, ५ (तृ० १) बाँकी, माँगी। ८. प्र० १, २ काट, द्वि० ७ काढि। ९. तृ० ३ भावाँ, सरग उपसावाँ; द्वि० ७ भँवावा, सरग उड़ावा। १०. तृ० ३ आइ। ११. द्वि० १, ३, ६, ७, मुहँ।

सुपुरुस[१२] भागि न जानै भएँ भीर भुइँ[१३] लेइ।
असि बर गहें दुहूँ कर[१४] स्यामि काज जिउ देइ॥

[६३२]

भै बगमेल सेल घन घोरा। औ गज पेल अकेल सो गोरा।
सहस कुँवर सहसहुँ[१] सत बाँधा। भार पहार[२] जूझि कहँ काँधा[३]।
लागे मरै गोरा के आगें। बाग न मुरै घाव मुख लागें।
जैस पतंग आगि धँसि लेहीं। एक मुएँ दोसर जिउ देहीं।
टूटहिं सीस अधर धर मारे। लोटहिं कंध कबंध निनारे।
कोई परहिं[४] रुहिर होइ राते। कोइ घायल घूमहिं जस माँते।
कोइ खुर खेह गए[५] भरि[६] भोगी। भसम चढ़ाइ परे जनु जोगी।

घरी एक[७] भा[८] भारथ भा असवारन्ह मेल।
जूझि कुँवर सब बीते[९] गोरा रहा अकेल॥

[६३३]

गोरैं देख साथ सब जूझा। आपन काल नियर भा बूझा।
कोपि सिंघ सामुहँ रन मेला। लाखन्ह सौं नहिं मुरै[१] अकेला।
लई हाँकि हस्तिन्ह कै ठटा[२]। जैसें सिंघ बिडारै घटा[२]।

---

१२. प्र० १ सब रस, द्वि० १ अस नौ। १३. प्र० १ भीर परे भुइँ लेइ, द्वि० १ भय छाडै भुइँ लेइ, द्वि० २, ६ फेरि फेरि भुइँ लेइ, तृ० ३, पं० १ भएँ भरि भर लेइ, द्वि० ४, ५ भुइँ जो फिर फिर लेइ। १४. प्र० १ गहें जोन फिर ताकर, द्वि० ४, ५ सूर गहें दुइँ कर, द्वि० ६ अस्व गहें जो दुहूँ कर।

[६३२] १. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ दसो सहस कुँवरन्ह। २. प्र० १ २ भा परिहार, द्वि० १ फिरि फिरि भए, पं० १ भएउ अपार। ३. द्वि० ७ साधा। ४. तृ० ३ खुर खेह। ५. द्वि० ४, ५ कोइ घर खेह कीन्ह। ६. प्र० १, द्वि० ७ मिलि, द्वि० ४, ५, (तृ० १) होइ। ७. प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) पहर तीनि, द्वि० ६ पहर एक। ८. द्वि० १ भौ। ९. प्र० १, २ द्वि० ६ बीति गए, द्वि० ४, ५ बैठे।

[६३३] १. तृ० ३ बरै (उर्दू मूल। २. प्र० १, २ ठटा, जैसे सिंघ बिडारे ठाटा, तृ० ३ ठाटा, जैसे सिंघ बिडारै गज घाटा, पं० १ ठटा, जैसे पवन बिडारै घटा।

जेहि सिर देइ कोपि कर वारू। सिउँ[3] घोरा[4] टूटै असवारू।
टूटहिं[5] कंध कबंध निनारे[6]। माँठ मँजीठि जानु रन ढारे[6]।
खेलि फागु सेंदुर छिरियावै[7]। चाँचरि खेलि आगि रन धावै[7]।
हस्ती घोर आइ जो ढूका। उठै देह तिन्ह रुहिर भभूका।

भै अग्याँ सुलतानी वेगि करहु एहि हाथ।
रतन जात है आगें लिए पदारथ साथ।।

[६३४]

सबहि कटक मिलि गोरा छेंका। कुंजल[1] सिंघ जाइ नहिं टेका।
जेहिं दिसि उठै सोइ जनु खावा[2]। पलटि सिंघ तेहिं ठायँन्ह[3] आवा।
तुरुक बोलावहिं बोलहिं बाहाँ। गोरैं मींचु धरा मन[4] माहाँ।
मुए पुनि[5] जूझि जाज जगदेऊ। जियत न रहा जगत महँ केऊ।
जनि जानहु गोरा सो अकेला। सिंघ की मोंछ हाथ को मेला।
सिंघ जियत नहिं आपु धरावा। मुएँ पार[6] कोई घिसियावा।
करै सिंघ हठि सौंही डीठी। जब लगि जिअै देइ नहिं पीठी।

---

3. द्वि० ७, तृ० ३ सौं। 4. द्वि० ७, तृ० ३, च० १, पं० १ रन वोरै। 5. तृ० ३ लोटहिं (उर्दू मूल)। 6. प्र० १, २ सेल कि भभकि उठै असरारा, ढारा; द्वि० १ लोटहिं घायल खाँड सँवारे, ढारे; द्वि० ४, ५ टूट कध सिर परैहिं निरारे, ढारे; द्वि० ६ टूटहिंकंध कबंध निरारे, ढारे; द्वि० ३ लोटहिं रुंड मुंड धरि डारे, ढारे; तृ० २ वै वायल दीसहिं अनियारे, ढारे; पं० १ कंध कबंध दोस रतनारे, ढारे; द्वि० ७ सरौन की भभकि उठै असराहीं, ढरहीं; 7. प्र० १ छहरावै, रन ढावै; प्र० २, द्वि० ४, ५, (तृ० १), तृ० २. च० १, पं० १ छिरिकावै, रन लावै; द्वि० ७ छिरकावहिं, जनु लावहिं।

[६३४] 1. द्वि० ४, ५ गूँजत। 2. प्र० २ जेहं दिसि उठहि सोइ दिसि खावा, द्वि० ७ जेहि दिसि हेरै सोइ जनु खावा, तृ० ३ चहुँ (उर्दू मूल) दिस उठै होइ जनु खावा। 3. प्र० २, द्वि० ७, तृ० २ ठाहर, तृ० ३ ठाएन्ह (उर्दू मूल) 4. तृ० २ रन। 5. द्वि० २ वोइ पुनि, द्वि० ५ सोइ बिन। 6. द्वि० ४, ५, तृ० ३ बार, द्वि० २ पाज, तृ० २ पाछ।

रतनसेनि तुम्ह[७] बाँधा[८] मसि गोरा के गात।
जब लगि रुहिर[९] न धोवौं तब लगि होउँ[१०] न रात॥

[६३५]

सरजा बीर[१] सिंघ चढ़ि गाजा। आइ सौहँ गोरा के बाजा।
पहलवान सो बखाना बली। मदति मीर हमजा औ अली।
मदति अयूब सीस चढ़ि[२] कोपे। राम लखन जिन्ह नाउँ अलोपे।
औ ताया[३] सालार सो आए[४]। जिन्ह कौरौ पंडौ बँदि पाए।
लिंधउर[५] देव धरा जिन्ह[६] आदी[७]। और को माल[८] बादि कहँ बादी[९]।
पहुँचा आइ सिंघ असवारू। जहाँ सिंघ गोरा बरियारू।
मारेसि साँगि पेट महँ धंसी। काढ़ेसि हुमुकि आँति भुइँ खसी।

भाँट कहा धनि गोरा तू भोरा रन राउ।
आँति सैंति करि काँधे[९] तुरै देत है पाउ॥

[६३६]

कहेसि अंत[१] अब भा भुइ परना। अंत सो तंत खेह सिर भरना।
कहि कै गरजि सिंघ अस धावा। सरजा सारदूर पहँ आवा[२]।
सरजैं कीन्ह साँगि सौं घाऊ। परा खरग जनु परा निहाऊ।
बज्र साँगि औ बज्र के डाँडा। उठी आगि सिर बाजत[३] खाँडा।

---

७. प्र० १, २, द्वि० ७ नहिं, द्वि० ४, ५, च० १ जहिं। ८. प्र० २, द्वि० ७ बाँधिया। ९. प्र० १, २ तोहि। १०. तृ० २ होइ।

[६३५] १. तृ० ३, च० १ सेर। २. प्र० १, २ जो आइ सीस चढ़ि, द्वि० १ आइ बंसि करि तृ० ३ आइ ऊब (उर्दू मूल) सीस चढ़ि। ३. प्र० १, तैसेहि, तृ० ३ तैआ, द्वि० ७ तेहि मियाँ। ४. प्र० २ जो धाए। ५. द्वि० ६ इंधौर, द्वि० ३ गंध्रप, च० १ किन्धौर। ६. प्र० १, चढ़ा जो, प्र० २ चढ़ा जेहिं। ७. द्वि० ४, ५ आवै, पावै। ८. द्वि० २ और को देव, द्वि० ७ पहुँचे तुरुक. द्वि० ३ और गोपाल, च० १ औ को कुवँर। ९. प्र० २ कर बाँधे, पं० १ काँधे पर।

[६३६] १. प्र० २, द्वि० ७ खसी आँति। २. द्वि० १ में यह चरण नहीं है। ३. प्र० १, द्वि० ३ बाजत तस, प्र० २ सित बाजत, द्वि० २ भा चालिस, तृ० ३ सरजा जित (उर्दू मूल), द्वि० ४, ५ तस बाजा।

जानहुँ बजर बजर सौं बाजा। सबहीं कहा परी अब गाजा।
दोसर खरग कुंडि पर दीन्हा। सरजै धरि ओड़न पर लीन्हा।
तीसर[4] खरग कंध पर लावा[5]। काँध गुरुज हत घाव न आवा[5]।

अस गोरैं हठि मारा[6] उठी बजर की आगि।
कोइ न नियरें आवै सिंघ सदूरहि लागि।।

[६३७]

तब सरजा गरजा[1] बरिवंडा। जानहुँ सेर केर[2] भुअडंडा।
–पि गुरुज मेलेसि[3] तस बाजा। जनहुँ परी परबत[4] सिर[5]गाजा।
ठर टूट टूट सिर तासू। सिउँ[6] सुमेरु जनु टूट अकासू।
ाकि[7] उठा सब सरग पतारू। फिरि गै डीठि भवाँ संसारू[8]।
परलौं सबहूँ अस जाना। काढ़ा खरग सरग नियराना।
तस मारेसि सिउँ[9] घोरैं काटा। धरती काढ़ि सेस फन फाटा।[10]
अति जौं सिंघ बरिअ होइ आई[11]। सारदूर से कवनि बड़ाई।

गोरा परा खेत महँ सिर पहुँचावा बान।[13]
बादिल लै गा राजहिं[14] लै[15] चितउर नियरान[16] ।।*

---

४. प्र० १ दोसर। ५. तृ० २ मारा, काँध गुरुज सौं दिएँ उतारा ६. प्र० १ मारी, प्र० २, द्वि० ७ मारिआ।

[६३७] १. द्वि० ४, ५, तृ० २ कोपा। २. प्र० २, द्वि० १, ४, ५, तृ० १, च० १, पं० १ जानु सुदूर केर, द्वि० ६ जनु सो सादूर। ३. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ मारेसि। ४. प्र० १, २, द्वि० १ (तृ० १), च० १, पं० १ तरपि, द्वि० ४, ५ तुरत। ५. प्र० १, २ रन, (तृ० १), च० १, पं० १ कै। ६. द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ सैं। ७. तृ० ३ भरमि। ८. प्र० १, २ भया अँधियारू, द्वि० ४, ५, ६, च० १, पं० १ फिरा संसारू। ९. द्वि० ४, ५, ६, तृ० ३ सैं। १०. तृ० २ जब गोरा कहँ लोहँ धरा, औ तर तोरन सो भा खरा। ११. प्र० १ होइ बरिआई। १२. तृ० २ खरग पोंछि कै तब बर पारा, नमस्कार कै सरग सिधारा। १३. द्वि० १, (तृ० १), च० १ कै भारथ कुरु खेत। १४. द्वि० १, (तृ० १), च० १ बादिला आवा बाद सिउँ। १५. प्र० १ गढ़, द्वि० ३ गै। १६. द्वि० १ (तृ० १), च० १ चितउर राजहि लेत।

* यह छंद द्वि० ७ में नहीं है, किंतु स्पष्ट ही प्रसंग के लिए अनिवार्य है। प्र० १, २, (तृ० १), द्वि० ३ में इसके अनंतर एक छंद, और तृ० २ में उससे भिन्न तीन छंद अतिरिक्त हैं।

[६३८]

पदुमावति मन अही जो झूरी[1]। सुनत सरोवर हिय गा पूरी[1]।
अद्रा महँ हुलास जस होई। सुख सोहाग आदर भा[2] सोई।
नलिनि[3] निवंदी[4] लीन्ह[5] अँकूरू। उठा कँवल उगवा सुनि सूरू।
पुरइनि पूरि सँवारे[6] पाता। पुनि बिधि आनि धरा सिर छाता।
लागे उहै होइ जस भोरा। रैनि गई दिन कीन्ह बहोरा।
अस्तु अस्तु सनि भा किलकिला। आगें मिलै कटक सब चला।
देखि चाँद अंसि पदुमिनि रानी। सखी कमोद सबै बिगसानी।[7]

गहन छूट दिनकर कर[8] ससि सौं होइ मेराउ।
मँदिल सिंघासन साजा[9] बाजा नगर बधाउ ॥*

[६३९]

बिहँसि चंद दै[1] माँग सेंदूरा। आरति करै चली जहँ सूरा।
औ गोहने सब सखीं तराईं। चितउर की रानी जहँ ताईं।
जनु बसंत रितु फूली छूटी। कै सावन महँ[2] बीरबहूटी।
भा अनंद बाजा पँच[3]तूरा। जगत रात होइ चला सेंदूरा।
राजा जनहुँ सूर[4] परगासा। पदुमावति मुख कँवल बिगासा।
कँवल पाय सूरुज के परा। सूरुज कँवल आनि सिर धरा।
दुंद मृदंग मुर ढोलक[5] बाजे। इंद्र सबद सो सबद सुनि लाजे[6]।

सेंदुर फूल तँबोर सिउँ सखी सहेलीं साथ।
धनि पूजै पिय पाय दुइ पिय पूजै धनि माथ ॥

---

[६३८] १. प्र० १, २ जरी, भरी। २. प्र० १ सें निबही। ३. द्वि० ४, ५ नैन। ४. प्र० १ निकसि जस, प्र० २ निकसि कै, द्वि० ४, ५ जो कुमुदिनि। ५. तृ० १ कीन्ह। ६. प्र० १, २ सारोवर। ७. प्र० १, २. तृ० ३, पं० १ दिनकर गहन सो कीन्ह पयाना, निसि कर गहन आइ नियराना। (तुलना ६३८.८)। ८. तृ० ३ गा दिनकर। ९. प्र० २ साजधर, द्वि० ६ साजि वहि।

* द्वि० ७ में यह छंद नहीं है, किंतु प्रसंग में इसकी अनिवार्यता प्रकट है।

[६३९] १. च० १ औ। २. द्वि० ३ कै रातो जनु। ३. प्र० १ साब। ४. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ देखि कंत जस रबि। ५. द्वि० ४, ५ अति मृदंग मंदिर बहु। ६. प्र० १, २ इंद्र के सबद सुनै सब लागै, द्वि० २, ३, ६, च० १ इंद्र के सबद सबद सुनि लाजे, तृ० ३ इंद्र सबद सो सब सुनि लागे।

[६४०]

पूजा कवनि देउँ तुम्ह राजा। सबै तुम्हार आव मोहि लाजा।
तन मन जोबन आरति करेऊँ। जीउ काढ़ि नेवछावरि देऊँ।
पंथ पूरि कै दिस्टि बिछावौं। तुम्ह पगु धरहु नैन[1] हौं लावौं।
पाय बुहारत[2] पलक न मारौं। बरुनिन्ह सेंति चरन रज झारौं।
हिया सो मँदिल तुम्हारै[3] नाहाँ। नैनन्हि पँथ आवहु[4] तेहि[5] माहाँ।
बैठहु पाट छत्र नव फेरी। तुम्हरें गरब गरुइ हौं चेरी।
तुम्ह जियँ हौं तन जौं अति मया[6]। कहै जो जीउ करै सो कया।

जौं सूरुज सिर ऊपर आवा तब सो कँवल सुख छात[7]।[8]
नाहिं तौ भरे[9] सरोवर सूखै पुरइनि पात[10] ॥[11]

[६४१]

परसि पाय राजा के रानी। पुनि आरति बादिल कहँ आनी।
पूजे बादिल के भुअडंडा। तुरिअ के पाउ दाबि कर खंडा।
यह गज गवन गरब सिउँ[1] मोरा। तुम्ह राखा[2] बादिल औ गोरा।
सेंदुर तिलक जो आँकुस अहा। तुम्ह माँथें राखा तब रहा।
काज रतन[3] तुम्ह जिय[4] पर खेला। तुम्ह जिउ आनि मँजूसा मेला।

---

[६४०] १. द्वि० ४, ५ सीस। २. द्वि० ४, ५ राखत पाय। ३. प्र० १ सुभाव सो तुम्हरै, प्र० २ समदि जो तुम्हरैं। ४. च० १ नैनन्हि पँथ पँथ। ५. प्र० १, २ द्वि० ७ मोहि। ६. प्र० १ में तन जिय माया, द्वि० ४, ५ (तृ० १) जौं लहि मया, द्वि० ६ जोरब तहँ मया। ७. प्र० १ सिर छाप, प्र० २, द्वि० ५, ६, पं० १ सिर छात। ८. द्वि० २, ३, च० १ तुम्ह बिनु हौं कछु नाहीं जौ तुम्ह तौ सिर छात। ९. प्र० २ बहुरे, द्वि० ४ फरे, द्वि० ७ बिछुरी। १०. प्र० १,२ साजहिं पुरइनि पात, द्वि० ७ पुरइनि होत निपात। ११. द्वि० २, ३, च० १ तुम्ह करहु सुदिष्टि पिय तौ मोहि होइ अहिबात।

* प्र० १, २ में इसके अनंतर तीन अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से एक यहाँ है, और दो अगले छंद के अनंतर हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६४१] १. प्र० १, २, द्वि० ४, ५ सौं, द्वि० १ जो, द्वि० ४ सब, द्वि० ७ ते। २. प्र० १, २ राजा। ३. प्र० १, २ काँछि मेलि, द्वि० २, च० १ काज मेलि, द्वि० ४, ५, (तृ० १) काज स्यामि, द्वि० ३ काज रतन, तृ० ३ काँछि रैनि, पं० १ काज मोर। ४. द्वि० २ सिर।

राखेउ छात चँवर औ ढारा। राखेउ छुद्रघंट झनकारा।
तुम्ह हनिवँत होइ धुजा बईठे। तब चितउर पिय आइ पईठे।

पुनि गज हस्ति चढ़ावा नेत बिछावा बाट।
बाजत गाजत राजा आइ बैठ सुख पाट[५]।।*

[६४२]

निसि[१] राजैं रानी कँठ लाई। पिय मरजिया नारि ज्यौं[२] पाई।
रँग कै[३] राजैं दुख अगुसारा[४]। जियत जीव नहिं करौं[५] निनारा।
कठिन बंदि लै तुरुकन्ह गहा[६]। जौं सँवरौं जिय पेट न रहा।
खनि गड़ ओबरी[७] महँ लै मेला[८]। साँकर औ[९] अँधियार दुहेला।
राँध न तहँवाँ दोसर कोई। न जनौं[१०] पवन पानि कस होई।
खिन खिन जीव सँडासिन्ह[११] आँका। आवहिं डोंब छुवावहिं बाँका।
बीछी साँप रहहिं निति पासा। भोजन सोइ डसहिं[१२] हर स्वाँसा।

आस तुम्हारे मिलन की रहा जीव तब[१३] पेट[१४]।
नाहिं तो होत निरास जौं[१५] कत जीवन[१६] कत भेंट।।

---

५. प्र० १, २, द्वि० ७ बाजत गाजत सुक्ख सौं आनि बैठ सुख पिउ पाट। द्वि० २, ३, ६ बाजत गाजत आइ मँदिर महँ आइ बैठ सुख छात। द्वि० ४, च० १, पं० १ बाजत गाजत राजा आइ बैठ सुख पाट।

* प्र० १, २, द्वि० ६, (तृ० १) में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छन्द है।

[६४२] १. द्वि० २, पं० १ सुनि, द्वि० ३, ४, ५, च० १ तस। २. प्र० १, २, पं० १ जिउ। ३. प्र० १ रँगक्क जो, तृ० ३ रँग लै, द्वि० ४ संगे, द्वि० ५ अलग लै, च० १ लै सँग, प० १ सुनि कै। ४. प्र० १ अनुसारा। ५. प्र० १, २, द्वि० २, ३ ६, ७ रहौं। ६. प्र० १, द्वि० ७ तुरकन्ह कै (मोहि-द्वि० ७) अहा। ७. द्वि० २ औजर, द्वि० ५ ऊपर, द्वि० ३ ताचुर। ८. प्र० १, २ लै खनि गाड़ा (कै गड़—प्र० २) ओबरी मेला। ९. प्र० १ आत, (तृ० १) ठाँव। १०. द्वि० ४ भोजन। ११. प्र० १, २, द्वि० ७, पं० १ करहिं संडासन्हि आँका। १२. प्र० १ भोजन करहिं डसहिं, द्वि० १ भजिय सोइ रहै। १३. द्वि० ४, ५ तब सो रहा जिउ, तृ० ३ रहा जीव तौ। १४. प्र० १, द्वि० ७ सँवरि रहा जिउ भेंटि (पेटि-द्वि० ७)। १५. प्र० १, द्वि० ५, पं० १ निरास जिउ, द्वि० ४ निनार जिउ, द्वि० ७ बिछोह जौं, (तृ० १) निरास हो, तृ० ३ निनार ज्यों। १६ द्वि० १ रे मिलन।

[६४३]

तुम्ह पिय भँवर[1] परी अति बेरा[2]। अब दुख सुनहु कँवल[3] धनि केरा।
छाँड़ि गएहु सरवर महँ मोहीं। सरवर सूखि गएउ बिनु तोहीं।
केलि जो करत हंस[4] उड़ि गएऊ। दिनअर[5] मीत[6] सो बैरी भएऊ।
गईं भीर तजि पुरइनि पाता। मुइउँ धूप सिर रहा न छाता।
भइउँ मीन तन[7] तलफै लागा। बिरहा[8] आइ बैठ होइ कागा।
काग चोंच तस साल न नाहाँ[9]। जसि बँदि तोरि साल हिय माहाँ।
कहेउँ काग अब लै तहँ जाही। जहँवाँ पिउ देखै मोहि[10] खाही।

काग निखिद्ध गीध अस[11] का मारहिं हौं मंदि[12]।
एहि पछताएँ सुठि मुइउँ[13] गइउँ न पिय सँग बंदि॥

[६४४]

तेहि ऊपर का कहौं जो मारी। बिखम पहार परा दुख भारी।
दूति एक देवपाल पठाई। बाँभनि भेस[1] छरै मोहिं आई।
कहै तोरि हौं आदि सहेली। चलु लै जाउँ भँवर जहँ बेली[2]।
तब मैं ग्यान कीन्ह सतु बाँधा। ओहि के बोल लागु बिख साँधा।

---

[६४३] १. द्वि० ४, ५ पिउ आइ, द्वि० ६ पुनि प्रान। २. प्र० १ आपन परे सो बेरा, द्वि० ४ आइ परे अस बेरा, च० १, पं० १ आनि परी असि पीरा। ३. प्र० १ कुँवर। ४. प्र० १, द्वि० ७ पंखी, द्वि० १ भँवर। ५. द्वि० १ हित औ। ६. द्वि० २ सुनअत, तृ० ३ भेंट, द्वि० ४, ५ निपट। ७. प्र० १ जलि, द्वि० १ तजि। ८. तृ० ३ बधै। ९. प्र० १, २ काग जों चित्त साल गुन नाहाँ। १०. तृ० ३ तूँ। ११. प्र० १ काग निन्द्र अभाय कह, प्र० २ काग निन्द्र बिष भरत है, द्वि० १ जग निखिद्ध अस लाए। १२. प्र० १, २ तहँवाँ मुइउँ न मंदि, द्वि० १ का जानि अति मंदि, द्वि० ४, ५ का मारहिं बहु मंदि, द्वि० ७ तिन्हहु भई मैं मंदि, द्वि० ६, पं० १ तौ हुन मुइउँ अति मंदि, द्वि० ३ का नारी हौं मंदि, प० १ का मारहि सुठि मंदि। १३. प्र० १ एह पछितावा जिय रहा, प्र० २ एहि पछिताव पै रहिउ गइ, द्वि० ७ एह पछितावा करौं निति, च० १, पं० १ एहि पछिताएँ पै मुइउँ।

[६४४] १. प्र० १, द्वि० ७ रूप। २. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ चलु तोहिं लै मेरवौं पिय बेली (खेली-द्वि० ६)।

कहेउँ कँवल नहिं करै अहेरा। जौं है भँवर करिहि सै[3] फेरा।
पाँच भूत आतमा नेवारेउँ। बारहिं बार फिरत मन मारेउँ।
औ समुझाएउँ आपन हियरा। कंत न दूरि अहै सुठि नियरा।

बास फूल घिउ छीर[4] जस निरमल नीर मँठाहँ[5]।
तस कि घटै घट पूरुख[6] ज्यों रे अगिनि कठाहँ[7]॥

[६४५]

सुनि देवपाल राव कर चालू। राजहि कठिन परा जिय सालू।
दादुर पुनि सो कँवल कहँ[1] पेखा। गादुर मुख न सूर कर देखा।
अपने रँग जस नाँच मँजूरु। तेहि सरि साध करै तँवचूरु।
जब लहि आइ तुरुक गढ़ बाजा। तब लगि धरि आनौं तौ राजा।
नींद न लीन्ह रैनि सब जागा। होत बिहान जाइ गढ़ लागा।
कुंभलनेरि अगम गढ़[2] बाँका[3]। बिखम पंथ चढ़ि[4] जाइ न झाँका।
राजहि तहाँ गएउ लै कालू। होइ सामुँह रोपा देवपालू।

दुवौ लरै[5] होइ सनमुख[6] लोहें भएउ असूझ।
सतुरु जूझि तब निबरै एक दुहूँ महँ जूझ॥*

---

3. प्र० १, २, द्वि० ६ पै। 4. प्र० १, २ फूल बास मधु खीर, द्वि० १ खीर खाँड. मधुबास। 5. प्र० १ निरमल सबै मंठाह, प्र० २, द्वि० ७ निरमल मंठाह, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० २, च० १, पं० १ नीर मिलाइ मथाहिं। 6. प्र० २ तस निघटत घट पूरक, (तृ० १) तस निघटत तन ना भखहि, तृ० २, ३ तस निघटत घट पौरुष, द्वि० ४, ५ तस निघटा घट सब, च० १ तैस नखत घट पौरुष, पं० १ तैस निपर घट पूरुष। 7. द्वि० ४, ५ अगिन कहँ खाइ, पं० १ रागिन कंठाहिं।

* प्र० १, २, द्वि० ७ में इसके अनंतर बारह अतिरिक्त छंद हैं, जिनमें से नौ द्वि० ६ में और दस (तृ० १) में भी हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६४५] 1. द्वि० ४, ५ मुख। 2. प्र० १, (तृ० १) सुठि, द्वि० १ बन। 3. द्वि० १ घाटी, चाँटी। 4. प्र० १, २ केहुँ, द्वि० ६ कोइ, तृ० ३ गढ़। 5. तृ० ३ औनि, तृ० २ सूर। 6. तृ० २ रन सौंख होइ।
* प्र० १,२, द्वि० ६,७ में इसके अनंतर दो अतिरिक्त छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)

[६४६]

चढ़ि[1] देवपाल राउ[2] रन गाजा। मोहि तोहि जूझि एकौझा राजा।
मेलेसि साँगि आइ बिख भरी। मेंटि न जाइ काल की घरी।
आइ नाभि तर साँगि बईठी। नाभि बेधि निकसी जहँ पीठी[3]।
चला मारि तब राजैं मारा। कंध टूट धर परा[4] निनारा।
सीस[5] काटि कै पैरैं[6] बाँधा। पावा दाउँ बैर जस साँधा।
जियत फिरा[7] आइउँ बलु हरा। माँझ बाट होइ लोहैं धरा।
कारी घाउ जाइ नहिं डोला। गही जीभ जम कहैं[8] को बोला[9]।

सुद्धि बुद्धि सब बिसरी बाट परी मँझ बाट।
हस्ति घोर को काकर घर आना कै खाट[10] ॥*

[६४७]

तेहि दिन साँस पेट महँ रही। जौं लगि दसा[1] जियन की रही।
काल आइ देखराई साँटी। उठि जिउ चला[2] छाँड़ि कै माँटी।
काकर लोग कुटुँब घरबारू[3]। काकर अरथ दरब संसारू[3]।
ओहि घरी सब भएउ परावा। आपन सोइ जो बेरसा[4] खावा।

---

[६४६] १. द्वि० ४, ५ जौं। २. पं० १ आइ। ३. प्र० १, २, द्वि० ७ मूनैं जाइ हिरकी जहँ पीठी, पं० १ निकसत पीठि परी नहिं डीठी। ४. प्र० १, २, ३, द्वि० ४, ५, तृ० ३, च० १ भएउ। ५. द्वि० ३ मूँड। ६. प्र० १ पौरिन्ह, प्र० २ पौरै, द्वि० ७ पैरी। ७. द्वि० ३ जैस भोरा। ८. द्वि० २, ३, ४, ५ रही जीभ जम गही, द्वि० ६ रही जीभ मुख कहै। ९. द्वि० १ जस जाइ न बोला, च० १ मुख जाइ न बोला, पं० १ मुख कहै को बोला। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ हस्ति घोर सब बिसरा घर आँगन कर घाट।

* प्र० १, २ द्वि० ६ (तृ० १) में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[६४७] १. प्र० १, २, द्वि० ६, ७ घरी। २. प्र० १ उठा सो जीउ। ३. प्र० १ केहि केरा, केहि खेरा, प्र० २ केहि केरा, घर खेरा, द्वि० १, ६, ७, पं० १ परिवारा, संसारा, तृ० ३ घर चारु, संसारू। ४. द्वि० ४, ५, ६, च० १ परसा।

दीपक प्रीति पतंग जेउँ जनम निबाह करेउँ।
नेवछावरि चहुँ पास होइ कंठ लागि जिउ देउँ ॥*

[६४९]

नागमती पदुमावति रानीं। दुवौ महासत सती[1] बखानीं।
दुवौ आइ[2] चढ़ि खाट[3] बईठीं। औ सिवलोक परा तिन्ह डीठीं।
बैठौ कोइ राज औ पाटा। अंत सबै बैठिहि एहि खाटा।
चंदन अगर काढ़ि सर साजा। औ गति देइ चले लै राजा।
बाजन बाजहिं होइ अकूता। दूऔ कंत लै चाहहिं सूता।
एक जो बाजा भएउ बियाहू। अब दोसरें होइ ओर[4] निबाहू।
जियत जो जरहिं कंत की आसा। मुँए रहसि बैठहिं एक पासा।

आजु सूर दिन अँथवा आजु रैनि ससि बूड़ि।
आजु बाँचि जिय दीजिअ आजु आगि हम[5] जूड़ि ॥*

[६५०]

सर रचि दान पुन्नि बहु कीन्हा[1]। सात बार फिरि भाँवरि दीन्हा।
एक भँवरि भै जो रे बियाहीं। अब दोसरि दै गोहन जाहीं।
लै सर ऊपर खाट बिछाई[2]। पंढ़ीं दुवौ कंत कँठ[3] लाई।
जियत कंत तुम्ह हम कँठ लाईं। मुए कंठ नहिं छाँड़हिं साँईं।
औ जौ गाँठि कंत तुम्ह[4] जोरी। आदि अंत दिन्हि[5] जाइ न छोरी।

---

* प्र १, २, द्वि० ६, ७, में यहाँ एक अतिरिक्त छंद है, जो (तृ० १) में ६४६ के अनंतर है।

[६४९] १. प्र० १ सरिस, प्र० २ सरी। २. द्वि० ५ सवति। ३. प्र० १, २ पाट। ४. तृ० ३ दोसरें बाजन जनम, तृ० २ दोसरे बाजन भएउ। ५. तृ० ३ मुइँ, तृ० १, द्वि० ३ एह, च० १ मइ।

* द्वि० ७ में इसके अनंतर एक अतिरिक्त छंद है।

[६५०] १. द्वि० १ आगि चहूँ दिसि दीन्हा। २. प्र० १, २ खाँची छाई। ३. द्वि० ४, ५ गियँ। ४. प्र० १, २, पं० १ सों, द्वि० ७ सँग। ५. प्र० १, २, द्वि० ६, ७, च० १, पं० १ अब सो अंत लहि, द्वि० २, ३ आदि अंत सो, द्वि० १ आदि अंत तक, द्वि० ४, ५, तृ० १ आदि अंत लहि।

एहि जग काह जो आथि निआथी। हम तुम्ह नाहँ दुहूँ जग साथी।
लागीं कंठ आगि दै होरीं। छार भईं जरि अंग न मोरीं।[६]
रातीं पिय के नेह[७] गइँ[८] सरग[९] भएउ रतनार।
जो रे उवा सो अँथवा रहा न कोइ संसार ॥*

[६५१]

ओइ सहगवन[१] भईं जब ताईं[२]। पातसाहि गढ़ छेंका आई।
तब लगि सो औसर होइ बीता। भए अलोप राम औ सीता।
आइ साहि सब सुना[३] अखारा। होइ गा राति देवस जो बारा।
छार उठाइ लीन्हि एक[४] मूँठी। दीन्हि उड़ाइ[५] पिरिथमी झूठी।
जौ लगि ऊपर छार न परई। तब लगि नाहिं जो तिस्ना मरई।
सगरैं कटक उठाईं माँटी। पुल बाँधा जहँ जहँ गढ़ घाटी।
भा ढोवा भा जूझि असूझा[६]। बादिल आइ पँवरि होइ[७] जूझा।[८]
जौंहर भईं इस्तिरी पुरुख भए[९] संग्राम।
पातसाहि गढ़ चूरा चितउर भा इसलाम ॥*

---

६. तृ० २ में यहाँ निम्नलिखित दोहा और भी है :
जो ठाँवर यस तुमहि दे सो हम देहू निदान।
ठाँवर कै ठाँवर देई भाजत देइ परान ॥
७. द्वि० १ पेम। ८. तृ० ३ कै (उर्दू मल)। ९. द्वि० १ जगत।

* प्र० १ में इसके अनंतर तीन छंद अतिरिक्त है, जिनमें से एक प्र० २, द्वि० ७, (तृ० १) में भी है।

[६५१] १. द्वि० १ सहगामिनि। २. प्र० १ सँग साईं, प्र० २ सहत गई, द्वि० २, ४ जत जाई, पं० १ सँग जाई। ३. प्र० १, २ अब गुना, द्वि० १, ६ तब सुना, तृ० ३ सब गुना, द्वि० ४, ५, पं० १ जो सुना। ४. प्र० १, २ द्वि० ७ भरि। ५. प्र० १, २ द्वि० ७, पं० १ काहु न आपन। ६. प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) जूझे कुँवर अनगिनत असूझा। ७. द्वि० ४, ५ पर। ८. प्र० २ पेम पवित्र केरि यह माँटी, पेमहि लागि पीठि महँ साँटी। ९. प्र० १, २ पुरुखन्हि भा।

* इस छंद की सातवीं तथा आठवीं पंक्तियों के बीच प्र० १, २ (तृ० १) में ग्यारह अतिरिक्त छंदों की पंक्तियाँ आती है। द्वि० ४, ५, (तृ० १) में एक भिन्न अतिरिक्त छंद इस छंद के अनंतर है, जो कुछ प्रतियों में छंद १३३ के अनंतर आया है।

[६५२]

मुहमद यहि कबि जोरि सुनावा। सुना जौं पेम पीर गा पावा[1]।
जोरी लाइ रकत कै लेई[2]। गाढ़ी प्रीति नैन[3] जल भेई[4]।
औ मन जानि कबित[5] अस कीन्हा। मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा।
कहाँ सो रतनसेनि अस राजा। कहाँ सुवा असि बुधि[6] उपराजा।
कहाँ अलाउदीन सुलतानू। कहँ राघौ जेइँ कीन्ह वखानू।
कहँ सुरूप पदुमावति रानी। कोइ न रहा जग रही कहानी[7]।
धनि सो पुरुख जस[8] कीरति जासू। फूल मरै पै[9] मरै न वासू।

केइँ न जगत जस बेंचा[10] केइँ न लीन्ह जस[11] मोल।
जो यह पढ़ै[12] कहानी हम सँवरै[13] दुइ बोल[14]॥*

[६५३]

मुहमद बिरिध बएस अब भई[1]। जोबन हुत सो अवस्था[2] गई[1]।
बल जो गएउ[3] कै खीन सरीरू। दिस्टि गई नैनन्ह दै नीरू।
दसन गए कै तुचा[4] कपोला। बैन गए दै अनरुचि बोला।

---

[६५२] १. यह पंक्ति च० १ एक में नहीं है। २. तृ० ३ जो रजाइ कंत के लेई, द्वि० ४, ५ जोरे लाइ कंत लै गए, द्वि० ७ जो जिअ लाइ नजर कै लेई। ३. द्वि० ४, ५ प्रेम प्रीति नैनन्ह, च० १ काँटहिं प्रीति...। ४. तृ० ३ सेई, द्वि० ४, ५, भए। ५. द्वि० ४, ५ गीत। ६. प्र० १, २, द्वि० ७ पेम, द्वि० १ सुबुद्धि, तृ० ३ जेइँ बुधि। ७. प्र० १ कहां सो नागमती सिर खानी, प्र० २ कहाँ सो नागमती जो कहानी, द्वि० ७ वहाँ नागमती जग रही कहानी। ८. प्र० १, २, द्वि० ४, ५, पं० १ सोई जस, द्वि० १ सो पुरुख जेहि, द्वि० ६, (तृ० १) सो रे जग, द्वि० ७ सोइ जग। ९. प्र० १, २ धनि फूल जेहिं। १०. प्र० २, द्वि० ७ बेंचिआ। ११. द्वि० २, तृ० ३ जस, द्वि० ३ अस। १२. प्र० २ सुनै। १३. द्वि० १ समुझै। १४. द्वि० ७ में यह पंक्ति नही है।
* प्र० १, २ में इनके अनंतर चार छंद अतिरिक्त हैं, जिनमें से तीन (तृ० १) में यहाँ पर और एक छंद ६५१ के अनंतर हैं।

[६५३] १. प्र० १ येह आई, भाई, प्र० २ अब आई, भाई, तृ० ३ जौं भई, गई, तृ० २ असि भई, गई। २. द्वि० २ अबिरथा। ३. द्वि० १ दत्त सो गवा। ४. प्र० १, २ कै छाड़ि, द्वि० ३, ७, पं० १ भा खीन।

बुद्धि[५] गई हिरदै बौराई। गरब गएउ तरहुँड़ सिर नाई।
सरवन गए ऊँच है[६] सुना। गारौ[७] गएउ सीस भा[८] धुना।
भँवर गएउ केसन्ह[९] दै भुवा। जोबन गएउ जियत जनु मुवा[१०]।
तब लगि जीवन जोबन साथाँ[११]। पुनि सो मींचु[१२] पराए हाथाँ।

बिरिध जो सीस डोलावै[१३] सीस धुनै तेहि रीस[१४]।
बूढ़ आढे[१५] होहु तुम्ह केइँ यह दीन्ह असीस॥*

---

५. तृ० ३ मति। ६. प्र० १, २ तब, पं० १ कै। ७. द्वि० ४ स्याही। ८. प्र० १, २ तब, द्वि० ७, (तृ० १) पै, द्वि० ३ दै। ९. द्वि० ४ कीन्ह। १०. प्र० १, २, द्वि० ७ बिनु जोबन जिअतै जनु मुवा, द्वि० ४, च० १ जोबन गएउ जिअत लै जुवा। ११. प्र० १, २, द्वि० ७ का जीवन जोबन नहिं साथा। १२. प्र० १, २, द्वि० ७ औ भैउ नाइ (आस -द्वि० ७)। १३. च० १ मुहँमद बिधि जो काँपै। १४. प्र० १, २ कहा जानि कै रीस, पं० १ जानत हौ केहि रीस। १५. प्र० १ आउहि, द्वि० ६ आउ पै।

* प्र० १, २, (तृ० १) में इसके अनंतर तीन छंद अतिरिक्त हैं, जिनमें से दो द्वि० ७ में भी हैं।

परिशिष्ट

'पद्मावत' के प्रक्षिप्त छंद

[२२अ]

द्वि० १—

मानिक एक पाएउँ उजियारा। सैयद असरफ पीर पियारा।
धुंध धूम देखौं कलि माहाँ। कहत धूप धुर नावत छाहाँ।
जायस नगर मोर अस्थानू। नगर क नाउँ अवध अस गाऊँ।
तहवाँ दिवस दस पठाएँ आएउँ। भा वैराग बहुत दुख पाएउँ।
सुख भा सोच एक सँग मानेउँ। वहि बिनु जीवन मरन कै जानेउँ।
जहवाँ देखौं तहवाँ सोई। और न आव दृष्टि तर कोई।
सभै जगत दरपन कर लेखा। आपन दरसन आपुहिं देखा।

अपने कौतुक कारन मेलि पसारसि हाथ।
मलिक मुहम्मद पंथी होइ निसरे तेहि बाट॥

[५५अ]

शुक्ल, ग्रियर्सन—

एक दिवस पदमावति रानी। हीरामनि तइँ कहा सयानी।
सुनु हीरामनि कहौं बुझाई। दिन दिन मदन सतावै आई।
पिता हमार न चालै बाता। त्रासहि बोलि सकहि नहिं माता।
देस देस के बर मोहिं आवहिं। पिता हमार न आँखि लगावहिं।
जोबन मोर भएउ जस गंगा। देह देह हम लाग अनंगा।
हीरामनि तब कहा बुझाई। बिधि कर लिखा मेंटि नहिं जाई।
अग्याँ देउ देखौं फिरि देसा। तोहि जोग बर मिलै नरेसा।

जौ लगि मैं फिरि आवौं मन चित धरहु निवारि।
सुनत रहा कोइ दुरजन राजहि कहा बिचारि॥

[६०अ]

द्वि० ३, तृ० १, २, ३ च० १, —

मिलहिं रहसि सब चढ़हिं हिंडोरी। झूलि लेहिं सुख बारी भोरी।
झूलि लेहु नैहर जब ताईं। फिरि नहिं झूलन देइहि साईं।
पुनि सासुर लेइ राखिहि तहाँ। नैहर चाह न पाउब जहाँ।
कित यह धूप कहाँ यह छाहाँ। रहब सखी बिनु मंदिर माहाँ।
गुन पूछिहि औ लाइहि दोखू। कौन उतर पाउब तहँ मोखू।
सासु ननँद के भौंह सिकोरे। रहब सँकोचि दुवौ कर जोरे।
कित यह रहसि जो आउब करना। ससुरेइ अंत जनम दुख भरना।

कित नैहर पुनि आउब कित ससुरे यह खेल।
आपु आपु कहँ होइहि परब पंखि जस डेल।

[६०अ[१]]

प्र० १, २—

सुनि सासुर पदुमावति डरी। जल बिनु सूख कँवल ज्यों करी।
अब लगु सखी स्रवन नहिं सुना। डरपा जिउ हियरे महँ गुना।
हा हा करौं सखी हौं चेरी। कहु फिरि बात सखी पिउ केरी।
अगसरि जाव कि दूसर संगा। सुभर पंथ की आहि कुरंगा।
वोहि दीप सखि आहिं कि दूजा। एक सूरज की दूसर सुरुजा।
कैसा नगर कैस बसगीती। कहु अब तहाँ कैसि है रीती।
चख गहि बरें धरकु सो हिया। देइ मान तरहेलै तिया।

कस रे मिलन कस आदर कैस नग्र कर लोग।
कैस कंत वहु पंथ कस कैस मिलै सुख भोग॥

[६०अ[२]]

प्र० १, २—

कहा सखी खेलत सँग अही। अब सु बात पदुमावति कही।
जस नैहर सासुर है काहाँ। जरन झुरन आहै निजु ताहाँ।
सेवा सो सासुर बड़ काजू। जौ सो सुकंत तौ सदा सोहागू।
सेवा सासु ननँद बस करई। सेवा मान सवति कर हरई।

संजम सौं निसि भै भलि होई। देवर जो जिउ बोलु न कोई।
सुजन परारा होइहि अजाना। नैहर होइहि रैनि सयाना।
कहा तुम्हार नीक हम सखो। फुरि फुरि भर वन देखब आँखी।

कहाँ खेल कहाँ सरवर कहाँ सखी कहँ रानि।
सखी बुझावहि आपु पर समुझि सो सबै तिवानि।।

[६१अ]

तृ० २—

चोली चीर छोरि कै धरीं। देखि स्वभाव छपीं आछरीं।
औ जत अभरन पहिरें अहा। काढ़ि तितठाँव परन को कहा(?)।
दिपै लिलाट दीप मुख वारा। पाछें लाग फिर अँधियारा।
सरब चंद्रमुख जोति सरूपा। खंजन नैन सो दीख अनूपा।
बदन जोति पटतर नहिं दूजे। पूनिउ ससि सरि होइ न पूजे।
जग उजियार कीन्ह बिधि जोती। मुख औ बान... ... (?)।
ससि देखे सर कँवल लजाई। देखि अँजोर कुमुद बिकसाई।

जगमग जोति अपूरब भा मूरत बहु ठायँ।
जहँ जहँ दरस परस भा तहँ भा रूप सुहान।

[६१ आ]

तृ० २—

मरदन औ तन सो बिधि साजै। सीस पखारन बिधि उपराजे।
कै मंजन तन सो बिधि जो मिला। बिमल कथा कपूर निर्मला।
बिमल सुगंधि महा सुख रासी। औ माती बहु फूल न पाती।
सीठी (?) लाइ केस जब मले। अष्टौ कुली नाग कलमले।
सु कहब का (?) सो कुछ सो अलगा। दहकत दुसह स्याम सो लगा।
एक घरी जनु उपरैं सारी। एक घरी जनु भितरैं हारी।
चंदन खस खस केवड़ा हरे। जहँ लग सुगंधि आनि सब धरे।

महा भूप रस कुसुम औ बहु बहु रंग सँवारि।
चीर चारु औ अभरन अगर धरा तहँ चारि।।

[६४ अ]

प्र० १, २---

जेहिं कर सीप चढ़ा सो हंसा। घोंघी सेवार पाव सो नसा।
पदुमिनि सभहिं सखिन्ह सैं पूछा। केहि सरि लाभ फिरा को छूछा।
हेरि हार सब करन्ह तो आना। जो जहाँ आहि सो तहाँ भुलाना।
काहु न सूझा सरवर ताला। जिन्ह बिख बिथा आइ उर साला।
मुरुछि परी पदुमावति रानी। सखी जगाव मेलि मुख पानी।
मुरछहिं सखी नारि कर टोई। ब्याधि सोइ जेहि ओखद न होई।
नग अमोल हरवा मह अहा। चंपावति पूछै का कहा।

रोवै रानि पदुमावति हार हरा एहि ठाँउ।
सबै सखी रहु मान सौं हौं बिगुचो एहि गाउं॥

[६४ आ]

प्र० १, २---

बोलैं सखी सबै एक बानी। जो दुख तुम्हैं हमैं सो रानी।
तुम्ह रोई गंध्रप की बारी। हम कुँवरिन्हि केहि माहिं बिचारी।
छाँड़ि भोकार रानि सब झँखी। मानत नाहिं बुझावत सखी।
सब मिलि कहहिं एइ समुँद रोवावा। कोइ रोवै कोइ करै बुझावा।
तुम्ह जानहु जेहि हमरहि हारा। तोहि सौं हमैं होइ दुख भारा।
सब मिलि कै कर जोरि पुकारा। देहि हार अब समुँद हमारा।
सबै खेल अब भा फुर खेला। सुख सनेह हम दुख कर मेला।

कहाँ जाउं कापहँ कहौं हार समुद मोर लीन्ह।
हेरि कँवल जल मीन पहँ का जानौं का कीन्ह॥

[८७ अ]

तृ० २ में छंद ८७ की अतिरिक्त पंक्तियाँ---

कै अहेर राजा घर आए। बाजन बाजत सबद सुहाए।
दिन बितीत निसि आइ तुलानी। मुख बिहँसत आई तहँ रानी।
आसन भयौ सो उठि कै आनी। नीद परै कछु कहै कहानी।
रुहिर चुवै जो जो कह बैना। रकत आइ भरि मोरै नैना।

और जो कहसि सो कहै न आवा । बिक्रम कुठार हनै जसु लावा ।
महूँ अचकि जकि रहीं अबोली । रकत सेज भीजी तन चोली ।
बूझै नाह औसि जो कहा । अस मुख वचन कहौ को सहा ।
अगिनि सुनाइ कहै मुख बाता । जर जर रह्यो भयौ हिय बाता ।

[६० अ]

तृ० २—

मैं रिसि सुवा सो मारै कहा । पै जेहि बिधि राखै सो रहा ।
कै गियान मन अगम बिचारा । जेहि पूजै नहिं चाहिय मारा ।
मैं सयान कस होउं अवानी । यह दुख मारैं औस कहानी ।
तूँ तिरिया मति हीन पियारी । यह परवत पर रिस न सँभारी ।
यह दिन सँवरि सुवा मैं राखा । तजहु सोच चित कै अभिलाखा ।
धाएँ आनि सुवा सो दीन्हा । रहसि भरी रानी सो लीन्हा ।
गएउ भूलि(?)दुख दुंद जो अहा । दुख के अंत सुक्ख है कहा ।

सावधान जग होइ जो सदा सुखी सो होइ ।
बिन बूझे जो काज कर अंत दुखी होइ सोइ ॥

[११८ अ]

प्र० १, २, द्वि० ७—

बारह अभरन कहौं बिचारी । औ षोडसौ सिंगार सिंगारी ।
सेत चारि सोहै अति स्यामा । राते चारि सोह अति रामा ।
माँग सेत लोचन नख चौका । देखि जो चौक कौंध जनु लौका ।
कच चख भौंह श्याम कुच सीसा । छाधा (?) काम उपमा तनु ईसा ।
नैन दसन कर तरवा राता । राते सबै जग जेहि के नाता ।
एह अभरन औ कहौं सिंगारा । जेहिं तन भान सिरे कर तारा ।
नासिका अधर पल्लव कटि खीनी । गाल कसाई सुभर कटि छीनी ।

जंघ सुभर छबि सुभरता सौ नहिं सीत न कार ।
पुनि गति सील सुभाउ तें एह षोडस सिंगार ॥

[१२५ अ]

द्वि० ४, ५—

हिंदू मीत बहुत समुझावा । मान न राजा गवन भुलावा ।

ऊँचे पेम पीर घिर आई। परबोधक होइ अधिक सुहाई।
अमृत बात कहत बिख जाना। पेम को बचन मीठ कै माना।
जो वह बिखइ मारि कै खाई। पूछौ ताही पेम मलाई।
पूछौ बात भरथरिहिं जाई। अमरित राज तज्यौ बिख खाई।
औ महेस बड़ सिद्ध कहावा। उनहूँ बिखै कंठ पै लावा।
होत आव रबि किरन निकासा। हनुमंत होइ देइ को आसा।

तुम सब सिद्धि मनावहु होइ गनेस सुधि लेहु।
चेला की न चलावै मिलै गुरू जहँ भेउ॥

[१३३अ]

प्र० १, द्वि० ४, ५, (तृ० १)—

मैं एहि अरथ पंडितन्ह बूझा। कहा कि हम्ह किछु और न सूझा।
चौदह भुवन जो तर उपराहीं। ते सब मानुख के घट माहीं।
तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल बुधि पदुमिनि चीन्हा।
गुरू सुवा जेइ पंथ देखावा। बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।
नागमती यह दुनिया धंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा।
राघव दूत सोइ सैतानू। माया अलाउद्दीं सुलतानू।
पेम कथा एहि भाँति बिचारहु। बूझि लेहु जो बूझै पारहु।

तुरकी अरबी हिंदुई भाषा जेती आहिं।
जेहि महँ मारग पेम कर सबै सराहैं ताहि॥

प्र० १ में यह छंद यथा १३३ अ है; द्वि० ४ में यह छंद दो बार आया है, एक बार यथा २७४ आ, और दूसरी बार यथा ६५१ अ; अंतर यह है कि २७४ आ में छंद की प्रथम दो पंक्तियाँ नहीं हैं, उनके स्थान पर यथा पाँचवीं और सातवीं निम्नलिखित पंक्तियाँ हैं :

मैं यह जानि लिखा अस कीन्हा। बूझै सोइ जु आपन चीन्हा।
आपनि जीभि औ आपनि बोली। मूरख मारै बोली ठोली।

और छंद की सातवीं पंक्ति के स्थान पर २७४ आ में छठवीं पंक्ति का पाठ इस प्रकार है :

प्रेम कथा एहि भाँति बनाई। मूरख कहहिं कहानी गाई।

(तृ० १) तथा द्वि० ५ में यह छंद एक बार यथा ६५१ अ आया है।

[१४८ अ]

द्वि० १, ४, ५, ६, (किंतु द्वि० १, ६ में यह यथा १४६अ है)—

बात कहत भइ देस गोहारी। कउनिहु चाल्ह समुद महँ मारी।
हस्ती सिस्टि लाइ हठ कीला। दौड़ि आइ एक चाल्हा लीला।
केवट लोग लाख हुत बली। फिरै न चाल्ह जिवन कलकली।
बोहिथ सहस जानहु चहुँ ओरा। होइ कलोल जानु तरु बोरा।
सुनि कै आप चढ़ा सैं राजा। औ सब देस लोक मिलि बाजा।
भाल बाँस खाँडे बहु परहीं। जानु पखाल बाज कै चढ़हीं।
चारा लील सो माछर भाजी। कहाँ जाइ जो जाकर खाजी।

माछर कर बिख हिरदैं बहु साँधी बिख बान।
सबहिन पहुँचि कै मारा चाल्हहिं बचे परान॥

[१४८ आ]

द्वि० १, ४, ५, ६, (किंतु द्वि० १, ६ में यह यथा १४६ आ है)—

जस धौलागिरि परबत होई। तिहीं भाँति उतिरान्यौ सोई।
सबहिं देस मिलि तीरि न आना। लीन्ह कुल्हाड़ी लोग जहाना।
जनु परबत पर लागहिं चाँटी। लै लै माँसु रही सब काटी।
पाँजर परी कोस दस मंडे। पाँजर कसि जस सेत बिरंडै।
नैन सो जान कोट कै पँवरी। कत अस गई फिरी तहँ भँवरी।
रतनसेनि सो सुनि कै कहैं। अस अस मच्छ समुँद महँ अहैं।
राजा तू चाहहु तहँ गवना। होउ संजोग बहुरि नहिं अवना।

तुम्ह राजा औ गुरू हम सेवक अरु चेर।
कीन्ह चहैं सब आएसु अब गवने तहँ फेर॥

[१५६ अ]

प्र० १, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, २, ३, पं० १; (किंतु प्र० १ में यह यथा १४६ अ है)—

राजैं दीन्ह कटक कर बीरा। सुपुरुस होहु धरहु मन धीरा।

ठाकुर जेहि क सूर भा कोई। कटक सूर पुनि आपुहि होई।
जौ लहि सती न जिउ सत बाँधा। तौ लहि देइ कहाँर न काँधा।
पेम समुद महँ बाँधी बेरा। यह सब समुद बूँद जेहि केरा।
ना हौं सरग क चाहौं राजू। न मोहि नरक सेंति किछु काजू।
चाहौं ओहि कर दरसन पावा। जेइ मोहि आनि पेम पथ लावा।
काठहि काह गाढ़ का ढीला। बूड़ न समुद मगर नहिं लीला।

कान समुद धँसि लीन्हेसि भा पाछे सब कोइ।
कोइ काहू न सँभारै आपनि आपनि होइ॥

[१५८अ]

द्वि० ३—

राजहिं दिस्टि पंथ नभ देखे। भइ पाथर सब मोरे लेखे।
का लै करौं पर नर भारा। तब का कीन्ह जब लीन्ह भँडारा।
कछु नहिं हाथ लाग जो छाँड़ा। ठावहिं ठाउँ रहा सब गाड़ा।
सिद्ध पुरुष सब जासौं भागे। जिय न सकैं तिहि हाथ न लागे।
अस्थिर होइ भाग सो खाँचा। पंथी लै पथ जीवन बाँचा।
सातौ परबत गए का हाथा। सातौं गुरू दुहूँ जग साथा।
कँवल लागि भँवरा जस गिरहीं। मकु जिय जाइ बेगि नहिं हरहीं।

धन औ दरब मोर पदमावत हौं बेधा जेहि पेम।
सातौं समुद देउँ नेवछावरि मिलौं तौ जब तब पेम॥

[१६३अ]

प्र० १, २, द्वि० ३ ५, ७,—

नीचे सँग नित होइ निचाई। जैसे बकु मराल की नाई।
नीच न कबहूँ जिय महँ राखिअ। नीच संग कबहूँ नहिं लाइअ।
नीच न कबहूँ होइ भलाई। नीचे सौ पुनि पुनि मंदाई।
नीच न कबहूँ आवै काजा। नीचे रहै न एकौ लाजा।
नीचे सौं निति होइ निचाई। नीच निबाह न ऊँच मिताई।
नीचे संग न कबहूँ कीजे। नीचे पंथ पाउँ नहिं दीजे।
नीचे नहिं कीजै ब्यौहारू। नीचे काहि न दीजै भारू।

होइ ऊँच नहिं कबहूँ जेहि नीचे मन भाउ।
नीच लै ऊँच बिनासै नीच संग लागि न साउ॥

[१६८अ]

तृ० ३ —

जब जनमी पदमावति रानी। ता दिन गनकु कहा मन जानी।
जंबू दीप देस एक अहा। पदुमावति कर तहाँ देस हा।
एक दिन धाई बात चलावा। लरकाईं जिउ गहबरि आवा।
जौ रतिपति ज्यौं राति समाना। सिंभु निसिंभु दोउ उठे अमाना।
सँवरत सो निसि बासर जाई। भवन छपा सो किछु न सुहाई।
बिरह बिथा अति ब्याकुल बारी। हरि हित लेपन भाव न सारी।
जलसुत सीतल देह चढ़ाई। अधिक बिरह तनु लाग दहाई।

बनिता बैठि जु सुमिरै हरि भँडार कर देइ।
सुरुज चाँद सखि कब मिलैं जो रति पति करेइ॥

[१८०अ]

प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, च० १, पं० १ —

सुना जो अस धनि जारी कया। तन भा साँच हिएँ भै मया।
देखौं जाइ जरै कस भानू। कंचन जरे अधिक होइ बानू।
अब जौं मरै वह पेम बियोगी। हत्या मोहिं जेहि कारन जोगी।
सुनि कै रतन पदारथ राता। हीरामन सौं कह यह बाता।
जौं वह जोगि सभारै छाला। पाइहि भुगुति देउँ जयमाला।
आव बसंत कुसल जौं पावौं। पूजा मिस मंडप कहँ धावौं।
गुरु के बैन फूल हौं गाँथे। देखौं नैन चढ़ावैं माथे।

कवँल भँवर तुम्ह बरना मैं माना पुनि सोइ।
चाँद सूर कहँ चाहिअ जौं रे सूर वह होइ॥

[१८५अ]

प्र० १, २, द्वि० १, २, ४, ५, ६, तृ० ३ —

रँगरेजिन बहु राती सारी। चली चोखि सो नाइन बारी।

ठँठेरिनि चलीं बहु ठाठर कीन्हे। चलीं अहीरिनि काजर दीन्हें।
गूजरि चलीं गोरस कै माती। तँबोलिन चलीं रंग बहु राती।
चलीं लोहारिनि पैनै नैना। भाँटिनि चली मधुर मुख बैना।
गंधिनि चलीं सुगंधि लगाए। छीपिनि छीपइँ चीर रँगाए।
मालिनि चलीं फूल लै गाँथे। तेलिनि चलीं फुलाएल माँथे।
कै सिंगार बहु बेसवा चलीं। जहँ लगि मूदीं बिगसीं कलीं।

नटिनी डोमिनि ढोलिनि सहनाइनि भेरिकारि।
निरतत तंत बिनोद सौं बिहँसत खेलत नारि॥

[२३१अ]

यह अतिरिक्त छंद तृ० ३ में यथा २३१ अ, द्वि० ३, ६ में यथा २३२ अ तथा द्वि० ५ में यथा २३३ है—

रहौं गगन महँ बार बियोगी। चाहै भोग सो रावल जोगी।
मागै सीस देउँ कर जोरौं। आरा देइ अंग नहिं मोरौं।
जेहि महँ मोहि वह अधिक सुहावै। जो जिउ लेइ माख नहिं आवै।
पास जौ राखै हौं परिछाईं। सेवा जोग जगत हौं नाईं।
तजि वह नाउँ न जानउँ दूजा। कबहुँ जो मिलै इंछ(?)मन पूजा।
अपने जिउ पर लोभ न मोहीं। पेम द्वार होइ मागउँ ओही।
दरसन लागि तपौं औ जरौं। खन खन बरिस बरिस ज्यों तरौं।

ओहि दरसन कहँ जोवौं दीपक जैस पतंग।
कटि कटि मासु जो मारौं मरत न मोरौं अंग॥

[२३८अ]

प्र० १, द्वि० ५—

यहै बात गढ़ परचहिं चहै। कोई कहै किछु अन कहै।
देखन पौन छतीसौं धावा। कोइ देखै कोइ सीस डोलावा।
तब लग यह गढ़ हता अछूता। भवा निदान आइ गढ़ दूता।
देखि लोग गढ़ करहिं बुझावा। यह गढ़ जीउ अनेकन्ह लावा।
यह सिंघल घर घर सुख साजा। दुख की बात न जानै राजा।
जोग जुगुति किछु है न समानी। अब चख भरे ढरा सब पानी।

पकरि काल अब तहँ लै आवा। अब तुम्हार जिउ रहै न पावा।[1]

काहू जियन भयौ गढ़ भीतर काहूँ भयौ अन्याउ।
पाँव फिरौ गढ़ पाछू अबहुँ सुना नहिं राउ॥

[२३८आ]

प्र० १, द्वि० ५—

बोला रतन सुनहु सिंघली। सिद्ध न और बिधाता बली।
जिन वह करिया बूढ़हिं टेंका। सत्तर पीर भए गढ़ एका।[2]
वर सनमानौं एक हर केरा। रन बन माँद रहा चहुँ फेरा।
छन एक माँह करै दुख भंगा। राज छँड़ाइ करै भिखमंगा।
जो कोई आपन कै कै गहै। ओहि कै डीठ सबै पर रहै।
जब कोई चाहै तब नहिं खोटा। ताहि मिलै जौ पीछें टेक।
तिन सों कोई करै सरबली। सो जग ऊपर जग सब कली।

कोउ काहू अभिमान जनि नैन हियहिं कै देखि।
गिरै रोवँ जौ माँगई निरखि परै अपलेख॥

[२६२अ]

प्र० १, द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३ (किंतु तृ० १ में यथा २६१ अ है)—

जोगिन्ह जबहिं गाढ़ अस परा। महादेव कर आसन टरा।
वै हँसि पारबती सौं कहा। जानहुँ सूर गहन अन गहा।
आजु चढ़े गढ़ ऊपर तपा। राजै गहा सूर तब छपा।
जग देखैगा कौतुक आजू। कीन्ह तपा मारै कहँ साजू।
पारबती सुनि पायन्हँ परी। चलि महेस देखहिं एहि घरी।
भेस भाँट भाँटिनि कर कीन्हा। औ हनुवंत बीर सँग लीन्हा।
आए गुपुत होइ देखन लागी। वह मूरति कस सती सभागी।

कटक असूझ देखि कै राजा गरब करेइ।
दैउ क दसा न देखइ दहुँ का कहँ जय देइ॥

---

[1] प्र० १ में इस पंक्ति का पहला चरण है : 'कै सो काल जोगी तुम्ह आए, दूसरा चरण लिखने से रह गया है।

[2] प्र० १ में दूसरा चरण है। 'होइ सहाय सो आइ सकेला।' इसी प्रकार शेष नीचे की पंक्तियों में भी पाठ भेद है।

[२६२आ]

द्वि० २, ३, ४, ५—

अस लव लीन्ह रहा होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा।
मन समाधि तासौं धुनि लागी। जेहि दरसन कारन बैरागी।
रहा समाइ रूप औ नाऊँ। और न सूझ बार जहँ जाऊँ।
औ महेस कहँ करौं अदेसू। जेइ यह पंथ दीन्ह उपदेसू।
पारबती पुनि सत्य सराहा। औ फिरि मुख महेस कर चाहा।
हिय महेस जौ कहै महेसी। कित सिर नावहिं ए परदेसी।
मरतहु लीन्ह तुम्हारहि नाऊँ। तुम्ह चित किए रहे एहि ठाऊँ।

मारत ही परदेसी राखि लेहु एहि बीर।
कोइ काहू कर नाहीं जो होइ चलै न तीर॥

[२६२इ]

द्वि० ३, ४, ५—

लै सो सँदेस सुवा गयो तहाँ। सूली देन गए लै जहाँ।
देखि रतन हीरामनि रोवा। राजा जिउ लोगन्ह हठि खोवा।
देखि रुदन हीरामनि केरा। रोवहिं सब राजा मुख हेरा।
माँगहिं सब बिधिना सौं रोई। कै उपकार छड़ावै कोई।
कहि सँदेस सब बिपति सुनाई। बिकल बहुत किछु कहा न जाई।
काढ़ि प्रान बैठी लेइ हाथा। मरै तौ मरौं जिऔं एक साथा।
सुनि सँदेस राजा तब हँसा। प्रान प्रान घट घट महँ बसा।

सुअटा भाँट दसौंधी भए जिउ पर एक ठाँउ।
चलि सो जाइ अब देख तहँ जहँ बैठा रह राव।

[२६२अ१]

तृ० १—

गौरैं फुनि ईसर सन कहा। मरतहु परै जियत डर रहा।
ओहि के पंथ भएउ जिउ खोई। निस्चै न जानहुँ ओहि कस होई।
भावै जीउ सूरी दै लेई। भावै राज पाट कोइ देई।

छंद की शेष अर्द्धालियाँ २६२ की ४, ५, ६, तथा ७ हैं और दोहा २६२ आ का है, केवल द्वि० ४ में यह समस्त शेष पंक्तियाँ २६२ आ की इन्हीं संख्याओं की पंक्तियाँ हैं ।

[२६४अ]

द्वि० ३ –

भै अग्यां को भाट अभाऊ। बाएँ हाथ दीन्ह बरम्हाऊ।
को मोहिं जोग होइ जग पारा। जासौं हेरौं जाइ पतारा।
सुर नर गन गंध्रप रिषि देवा। सब जग जीति करहिं नित सेवा।
तेहि बिनु जीव जंत जत अहहीं। माथ नाइ मुख अस्तुति कहहीं।
परगट गुपुत जहाँ लगि होई। सीस नाइ सौंपै सब कोई।
रन बन जीव जंतु जो रहहीं। परस पाइ सेवा सब करहीं।

तासों को सरबरि करे अरे अरे झूँठे भाँट।
छार होहिं सब तपसी जो छूटहिं गज पाँति ॥

[२६४आ]

द्वि० २, ३ –

राजा रिसहिं सुनी नहिं बाता। अति रिस भरा कोह भा राता।
सूरी खड़ी कीन्ह लै कहाँ। आठौं बज्र खड़े जुरि जहाँ।
अन बाजहिं बाजन बहु भाँती। राजा हिय न होइ सुख साँती।
मारै मार करहिं सब कोई। गंध्रपसेन आगि रन बोई।
कहा न मानै अति रिसि भरा। जेहिं दिसि हेर सोई दिसि जरा।
बिनवहिं सबहि सो मंत्री महा। गंध्रपसेन सुनै नहिं कहा
छत्री बीर सकल रन रोपी। टेरहिं ढेर बीर रन कोपी।

काहू कहा न मानहि राजा राजहिं अति रिसि कीन्ह।
धरि मारहु सब जोगी राइ रजाएसु दीन्ह ॥

[२६४इ]

द्वि० २ –

ईसर भाँट भेस अस भाखा। हनुमत बीर रहै नहिं राखा।

लीन्ह चूरि वै ततखन सूरी। धरि मेलेसि मानहुँ मुख मूरी।
औ तस भौर लँगूर* नचावा। जहँ बाझा तहँ खोज न पावा।
तस रन रूप पाव के मारे। बहे लाग रन रुहिर पनारे।
मुँह सौं मुँह तस भा रन जोरा। हय सो हय जुरे बाग न मोरा।
पुरुख पुरुख सौं भै तस मारी। खरग धनुख भै मारि बजाई।
सेल साँगि औ चलहिं जु गोला। बरसै बान पनग जिमि ओला।

भए सहाइ देवता रन खन जाहिर कीन्ह।
देखि रौन जोगिन्ह कर राजहिं परा असूझ (?)॥

[२६७ई]

द्वि० १—

ब्रह्मा बिस्नु एक मति भए। रतनसेनि कहँ देखै गए।
देखि रतन कहँ भए दयाला। भइ दयाल तो कंचन जाला।
यहि बालक के कोइ न साथा। भवा अकेल चहा संघाता।
तौ ब्रम्है उठि बिनती कीन्हा। महादेव तो भाखा लीन्हा।
तोहिं राजै बड़ अजुगति कीन्हा। यहि बालक कहँ मारै कीन्हा।
है कोइ चूरै यह सूरी। चूरि चारि धरि डालै दूरी।
तब हनिवँत उठि अग्याँ सारी। धरि हिलाइ कै डारि उपारी।

धरि मेरवै अस ओंठेसि टूक टाक धरि कीन्ह।
सब सिंघल नृप मिलि कै दूखन सबौ कहँ दीन्ह॥

[२६४३]

द्वि० १—

दाधै दूखै कहूँ ते आवा। जहँ मारत एकंत छोड़ावा।
मारि मारि कै कीजत धावा। आस पास सब मिलि के आवा।
देखै बरम्हा और गोबिंदा। देखैं देवता महा नरिंदा।
देखै बासुकि फनपति राजा। कै धनि रतनसेनि का साजा।
कै धनि वै पदुमावति रानी। जेहि के कारन मीचु तुलानी।
सब मिलि आइ कै छेंका कैसें। सिव बढ़ि मंडल छवै जैसें।
बचन एक जो सीव चलावा। बिस्नु कटक काहे कहँ आवा।

सिव हरसाइ सबहि तें कहा मारहु रन साज।
मारि मेरावहु माँटी देहु रतन कह राज॥

[२६४ऊ]

द्वि० १—

कोह भए रिस राते बैना। ब्रम्हा बिस्नु की आई सैना।
सिरी क्रिस्न तिरसूल सँभारा। बिस्नु फाँस लीन्ह तेहि बारा।
महादेव चक्कर तब लीन्हा। महादेव तेज तीनौ लीन्हा।
मारि राज सब लिहेउ अँजोरी। पैज होति है झूठी मोरी।
तीनौ सूर उठे तपि कया। अहुठ बज्र पड़ि देखौं जिया।
सँवरै मदादेव कै जोगी। भए सँजोइल किस्न सो भोगी।
किस्न उतारि कँवच पहिनाई। छका कटक राजा कहँ आई।

मारि मेरावहु माँटी करहु बेगि सो आन।
हमते रन कस बाँधै हम कहँ खंडन आन॥

[२६४ए]

द्वि० १—

जबहीं किरसन सेना साजा। महादेव कर डँवरू बाजा।
छत्र धारि सिर छत्र बनावा। जूझा रन सनाह पहिनावा।
तरपहिं नारद अगमन जानी। यहि गली सबकी मींच तुलानी।
चहै एक देखौं मन बिचारी। दहुँ कस होति अहै महा मारी।
जौं हम मारे कहँ बड़ आए। वहिकें अधिक होइ कड़ वाए।
वै माँनुख मारें का लाजा। हम भाजै सब होइ अकाजा।
सकल कोट सब काहूँ हँसा। ब्रम्हा बिस्नु सब भाजे अंसा।

छाडि देहु सब धंधा मैं धरम न औसी भाँति।
पैंठे भाँट बराभन करैं जगत कर साँति॥

[२६४ऐ]

द्वि० १—

जाइ भाँट आगे सिर नावा। बाएं हाथ देइ बर भावा।
धनि लैं गंध्रपसे न सुर घाती। बोलै भाँट सब अनवन बाती।

महाराज राजन्ह मैं सीसा। जगत भवैं देइ तोहि असीसा।
जस जग करैं बड़ाई तोरी। तैसन समुझु बात तैं मोरी।
बरम्हा बिस्नु सिव पठवा मोही। बरजहिं राजा तेवैं तोही।
तुम्ह गढ़ बारी सबैं सनाथा। भवा अकेल छाँड़ा सँग साथा।
आपु हितैं जनि बात बिगारहु। औ जनि बालक जोगी मारहु।

जौं जानसि तू भीख देइ आवा बार अतीत।
जीव निठुर केर अहार भा परे गयंद की सीत॥

[२६८अ]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० ३ तथा ग (किंतु द्वि० ३ में यह छंद यथा २१३ के अ आया है)—

ततखन बस महेस मन लाजा। भाँट गिरा होइ बिनवा राजा।
गंध्रपसेन तू राजा महा। हौं महेस मूरति सुनु कहा।
जौं पै बात होइ भलि आगे। कहा चहिय का भा रिस लागे।
राज कुँवर यह होइ न जोगी। सुनि पदमावति भएउ बियोगी।
जम्बूदीप राजघर बेटा। जो है लिखा सो जाइ न मेटा।
तुम्हरहि सुआ जाइ ओहि आना। औ जेहि कर बर कै तेइ माना।
पुनि यह बात सुनी सिवलोका। करसि बियाह धरम है तोका।

माँगै भीख खपर लेइ मुए न छाँड़ै बार।
बूझहु कनक कचोरी भीखि देहु नहिं मार॥

[२६८आ]

द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३, ग—

ओहट होहु रे भाँट भिखारी। का तू देत मोहिं अस गारी।
को मोहि जोग जगत होइ पारा। जा सहुँ हेरौं जाइ पतारा।
जोगी जती आव जो कोई। सुनतहिं भासमान भा सोई।
भीखि लेहिं फिरि माँगहि आगे। ए सब रैनि रहे गढ़ लागे।
जस हींछा चाहौं तिन्ह दीन्हा। नाहिं बेधि सूरी जिउ लीन्हा।
जेहि अस साध होइ जिउ खोवा। सो पतंग दीपक तस रोवा।
सुर नर मुनि सब गंध्रप देवा। तेहि को गनै करहिं नित सेवा।

मो सौं को सरबरि करै सुनु रे झूठे भाँट।
छार होइ जो चालौं निजु हस्तिन कर ठाट॥

[२६८ इ]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३ तथा ग—

जोगी धरि मेले सब पाछे। औरै माल आइ रन काछे।
मंत्रिन्ह कहा सुनहु हो राजा। देखहु अब जोगिन्ह कर काजा।
हम जो कहा तुम्ह करहु न जूझू। होत आव दर जगत असूझू।
खिन इक महँ झुरमुट होइ बीता। दर महँ चढ़ि जो रहै सो जीता।
कै धीरज राजा तब कोपा। अंगद आइ पाँव रन रोपा।
हस्ति पाँच जो अगमन धाए। तिन्ह अंगद धरि सूँड़ फिराए।
दीन्ह उड़ाइ सरग कहँ गए। लौटि न फिरे तहँहि के भए।

देखत रहे अचंभौ जोगी हस्ती बहुरि न आय।
जोगिन्ह कर अस जूझब भूमि न लागत पाय॥

[२६८ई]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३ तथा ग—

कहहिं बात जोगी हम पाए। खिनक माहँ चाहत हहिं धाए।
जौ लहि धावहिं अस कै खेलहु। हस्तिन्ह केर जूह सब पेलहु।
जस गज पेलि होहिं रन आगे। तस बगमेल करहु सँग लागे।
हस्ति क जूह धाय अगुसारी। हनुवँत तबै लँगूर पसारी।
जैसे सेन बीच रन धाई। सबै लपेटि लँगूर चलाई।
बहुतक टूट भए नौ खंडा। बहुतक जाइ परे बरम्हंडा।
बहुतक भँवत सोह अंतरीखा। रहे सो लाख भए ते लीखा।

बहुतक परे सँमुद महँ परत न पावा खोज।
जहाँ गरब तहँ पीरा जहाँ हसी तहँ रोज॥

[२६८उ]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, तृ० १, ३ तथा ग—

पुनि आगे का देखै राजा। ईसर केर घंट रन बाजा।

सुना संख जो बिस्नू पूरा। आगे हनुवँत केर लँगूरा।
लीन्हे फिरहि लोक बरम्हंडा। सरग पतार लाइ मृदमंडा।
बलि बासुकि औ इंद्र नरिंदू। राहु नखत सूरुज औ चंदू।
जावँत दानव राच्छस पुरे। आठौ बज्र आइ रन जुरे।
जेहि कर गरब करत हुत राजा। सो सब फिरि बैरी होइ साजा।
जहवाँ महादेव रन खड़ा। सीस नाइ नृप पायँन्ह परा।

केहि कारन रिस कीजिए हौं सेवक औ चेर।
जेहि चाहिय तेहि दीजिय बारि गोसाइँ केर॥

[२६८अ¹]

द्वि० २—

राजा कोह भवा अति ताता। अति रिस भरे सुनै नहिं बाता।
अस जरि उठा जूड़ नहिं होई। जरत आगि महँ पैठि न कोई।
गरब भरा जिउ महँ अस गाढ़ा। मन महँ फूल सरग लहुँ बाढ़ा।
रिस रिस सीव भएउ बहु भाँती। मोर बाज होइ नहिं साँती।
राजा कहा न काहु का रहा। मारु मारु पुनि और न कहा।
जोगी जानि धरा अभिमानू। राजमद थिर रहा न ग्यानू।
मोरे देह करौ अपनाई। खरग खनहिं सब संग सहाई।

रिसि नरेस मन अस भरा दीन्ह बहुत सो कान।
रही कर लौं नग तेहि पुनि हिरदै सबौ सुहान (?)॥

[२७४ अ]

द्वि० २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० ३ ग—

बोल गोसाईं कर मन माना। काह सो जुगुति उतर कहँ आना।
माना बोल हरख जिउ बाढ़ा। औ बरोक भा टीका काढ़ा।
दूवौ मिले मनावा भला। सुपुरुख आपु आपु कहँ चला।
लीन्ह उतारि जाहि हित जोगू। औ तप करै सो पावै भोगू।
वह मन चित जो एकै अहा। मारै लीन्ह न दूसर कहा।
जो अस कोई जिउ पर छेवा। देवता आइ करहिं निति सेवा।
दिन दस जीवन जो दुख देखा। भा जुग जुग सुख जाइ न लेखा।

रतनसेनि संग बरनौं पदमावति का बियाह।
मंदिर बेग सँवारा मादर तूर उछाह ॥

[२७४ आ]

द्वि० २ में छंद २७४ नहीं है, उसके स्थान पर उपर्युक्त २७४ अ है, जिसके पूर्व निम्नलिखित दो अर्द्धालियाँ हैं :

देखि तौ राजा मन बिहँसाना। राज कुँवरि निश्चै करि माना।
महादेव सौं बिनती कीन्ही। लीजै बार जेही जेहि दीन्हीं।

और बीच में यथाक्रम निम्नलिखित दोहा है :

औस सीस तप अरथ जिउ पेम नेम चित लाइ।
अंत तंत सो अनमिल साहस सिद्ध सहाइ ॥

और निम्नलिखित पाँच अर्द्धालियाँ हैं :

मन चित रहै समाधि समाई। मन पहुँचै भल सो लै खाई।
मारि कै अमर होइ निजि सोई। काल जाहिं वह काल न होई।
अस रस पेम अमी लै पिया। जुग जुग अमर जु मारि कै जिया।
दुख मारग जु जाइ कोइ कोई। दुख के अंत सु फल सुख होई।
जेहि दिन कहँ इंछा मन लावा। पेम प्रसाद सोई दिन पावा।

इस प्रकार नौ अतिरिक्त पंक्तियाँ बढ़ा कर एक अतिरिक्त छंद २७४ आ की पूर्ति की गई है।

[२८४ अ]

प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

जेंवन आवा बीन न बाजा। बिनु बाजन नहिं जेवैं राजा।
सब कुँवरन्ह पुनि खैचा हाथू। ठाकुर जेवँ तौ जेंवैं साथू।
बिनय करहिं पंडित बिद्वाना। काहे नाहिं जेवहिं जजमाना।
यह कबिलास इंद्र कर बासू। जहाँ न अन्न न माछरि माँसू।
पान फूल आसी सब कोई। तुम्ह कारन यह कीन्ह रसोई।
भूख तौ जनु अमृत है सूखा। धूप तौ सीयर नींबी रूखा।
नींद तौ भुइँ जनु सेज सपेती। छाँटहु का चतुराई एती।

कौन काज केहि कारन बिकल भएउ जजमान।
होइ रजाएसु सोई बेगि देहिं हम आन॥

[२८४आ]

प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

तुम्ह पंडित जानहु सब भेदू। पहिले नाद भएउ तब बेदू।
आदि पिता जो बिधि औतारा। नाद संग जिउ ग्यान सँचारा।
सो तुम बरजि नीक का कीन्हा। जेंवन संग भोग बिधि दीन्हा।
नैन रसन नासिक दुइ स्रवना। इन्ह चारहु संग जेंवै अवना।
जेंवन देखा नैन सिराने। जीभहि स्वाद भुगुति रस जाने।
नासिक सबै बासना पाई। स्रवनहिं काह कहत पहुनाई।
तेहि कर होइ नाद सौं पोखा। तब चारिहु कर होइ सँतोखा।

औ सो सुनहिं सबद एक जाहि परा किछु सूझि।
पंडित नाद सुनै कहँ बरजेहु तुम का बूझि॥

[२८४इ]

प्र० १, द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

राजा उतरु सुनहु अब सोई। महि डोलै जौं बेद न होई।
नाद बेद मद पैड़ जो चारी। काया महँ ते लेहु बिचारी।
नाद हिए मन उपनै काया। जहँ मद तहाँ पैड़ नहिं छाया।
होइ उनमद जूझा सो करै। जो न बेद आँकुस सिर धरै।
जोगी होइ नाद सो सुना। जेहि सुनि काय जरै चौगुना।
कया जो परम तंत मन लावा। घूम माति सुनि और न भावा।
गए जो धरम पंथ होइ राजा। तिन कर पुनि जो सुनै तो छाजा।

जस मद पिए घूम कोइ नाद सुने पै घूम।
तेहि ते बरजे नीक है चढ़े रहसि कै दूम॥

[२८७अ]

द्वि० २—

सुनि गध्रप राजा के बैना। अत सुख भा जत जाना (?)।
उन्ह पुनि सुनि बिनती उन्ह केरी। भएउ ... ...।

देस पुहुमि अपने मन जेती। रतनसेन कहँ दीन्हीं तेती।
आधा राजपाट उन्ह दिया। बहुत भाँति संतोखन किया।
हम घर कुल दीपक नहिं अहा। तुम्ह पाएउँ जस मन चित चहा।
गंध्रपसेन बहुत सुख पावा। रतनसेन सुख कहत न आवा।
उनहिं जीव संतोख तब भएऊ। बिसमै दुंद छूटि सब गएऊ।

अस सो आस कै कोई गंध्रपसेनि नरेस।
देखि रतन सुख सपने गा दुख दुंद अदेस॥

[२८८ अ]

द्वि० ३, ५, ६, तृ० ३—

चेरि सहस दुइ पाईं भली। धनि गोहने धौराहर चली।
सात खंड साजा उपराहीं। रानो लै लौकावति जाहीं।
खंड खंड कौतुक देखरावहिं। औ राजा कहँ बातन्ह लावहिं।
पहिल खंड नौ देखइ राजा। फटिक पखान कनक सब साजा।
जस दरपन महँ दीखै देहा। तैस साज सब कीन्ह उरेहा।
साउज पंखि जो कीन्ह चतेरे। औ पारिध जनु लाग अहेरे।
औ जावँत सब त्रिभुवन लिखा। जनु सब ठाढ़ देहिं आसिखा।

देखि बखानै राजा भीवँसेन का राज।
धन्नि चक्कवै राजा जेइँ रे मँदिर अस साज॥

[२८८ आ]

द्वि० २, ३, ५, ६, तृ० ३—

दोसर खंड सब भूप सँवारा। साजे चाँद सुरुज औ तारा।
तीसर खंड सो कनक जड़ाऊ। नग जो लाग अस दीख न काऊ।
चौथ खंड मनि मानिक जरे। देखि अनूप पाप सब हरे।
पाँचव हीरा ईंटि गढ़ावा। औ सब लाग कपूर गिलावा।
छठएँ लाग रतन गजमोंती। होइ उजियार जगत तेहि जोती।
जगर मगर सब खंभै करहीं। निसि सब जनहुँ दिया अस बरहीं।
तहाँ न दीपक औ मसियारा। सब नग जोति होइ उजियारा।

अस उजियार होइ किछु चाँद सुरुज नहिं बार।
जो ओहिं आवा अँजोरे सो देखै उजियार॥

[२८६अ]

प्र० १—

औसी सेज साजि तेहि जोगी। बैठि दुवहु मानहुँ रस भोगी।
धनि सो सेज धनि सोवनिहारी। भई हुलास देखि जो बारी।
रतन पदारथ दीख अँजोरी। चाँद सूर दोइ कला अँजोरी।
इंद्र राज औ छत्तर पावा। आज सिंगार होइ सब आवा।
देखि सखीं सब देखत हारा। एक एक मुख काम की धारा।
जो आवा औसे घर नए। पुनि उठि चला आन के भए।
ना कहुँ का मूठा मन दौरा। जो दौरावै सो मन बौरा।

रचि चेटक चितसारी बहुतहिं भाँति बनाव।
चेतक भए तेहि सोवते चेत नैन भए पाव (?)॥

[२८६अ[1]]

द्वि० ३—

प्रथम खंड का बरनौं भावा। इंद्रलोक अस दिस्टि देखावा।
धनि थँवई औ धनि सुतहारा। जिनि यह खंड रचा उजियारा।
औ बहु भाँतिन भएउ गिलावा। मन मानिक औ रतन जड़ावा।
मंद भाव का देखै राजा। बहुत पखान कनक जरि साजा।
भाँति भाँति कर लिखा अहेरा। चित जग साउज भार चितेरा।
औ जित नाच अखारा होई। ताल मृदंग भाव सब होई।

जित गुन मंदिर धौरहर सब साजे बिधि साज।
रसना बरनि बरन कत रहै मोहि तेहि लाज॥

[२९३अ]

द्वि० ४, ६, ख—

का पूँछहु तुम धातु निछोही। जो गुरु कीन्ह अँतरपट ओही।
सिधि गुटिका अब मो सँग कहा। भएउँ राँग सत हिएँ न रहा।

सो न रूप जासौं दुख खोलौं। गएउ भरोस तहाँ का बोलौं।
जहँ लोना बिरवा कै जाती। कहि कै सँदेस आन को पाती।
कै जो पार हरतार करीजै। गंधक देखि अबहिं जिउ दीजै।
तुम्ह जोरा कै सूर मयंकू। पुनि बिछोह सो लीन्ह कलंकू।
जो एहि घरी मिलावै मोही। सीस देउँ बलिहारी ओही।

होइ अबरक इँगुर भया फेरि अगिनि महँ दीन्ह।
काया पीतर होइ कनक जौ तुम्ह चाहहु कीन्ह॥

[३१५अ]

द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

हँसि पदुमावति मानी बाता। निहचै तू मोरे मद माता।
तूँ राजा दुहुँ कुल उजियारा। अस कै चरचिउँ मरम तुम्हारा।
पै तूँ जंबूदीप बसेरा। किमि जानेसि कस सिंघल मेरा।
किमि जानेसि सो मानसर केवा। सुनि सो भौंर भा जिउ पर छेवा।
ना तुइँ सुनी न कबहूँ दीठी। कैस चित्र होइ चितहि पईठी।
जौ लहि अगिनि करै नहिं भेदू। तौ लहि औटि चुवै नहिं मेदू।
कहँ संकर तोहि ऐस लखावा। मिला अलख अस पेम चखावा।

जेहि कर सत्य सँघाती तेहि कर डर सोइ मेंट।
सो सत कहु कैसै भा दुवौ भाँति जो भेंट॥

[३१५आ]

द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

सत्य कहौं सुनु पदुमावती। जहँ सत पुरुख तहाँ सुरसती।
पाएउँ सुवा कही वह बाता। भा निहचै देखत मुख राता।
रूप तुम्हार सुनेउँ अस नीका। ना जेहि चढ़ा काहु कहँ टीका।
चित्र किएउँ पुनि लेइ लेइ नाऊँ। नैनहिं लागि हिए भा ठाऊँ।
हौं भा साँच सुनत ओहि घड़ी। तुम होइ रूप आइ चित चढ़ी।
हौं भा काठ मुरति मन मारे। चहै जो करु सब हाथ तुम्हारे।
तुम्ह जो डोलाइहु तबहीं डोला। मौन साँस जौं दीन्ह तौ बोला।

को सोवै को जागै अस हौं गएउँ बिमोहि।
परगट गुपुत न दूसर जहँ देखौं तहँ तोहिं॥

[३१५इ]

द्वि० २, ४, ५, ६, तृ० ३—

बिहँसी धनि सुनि कै सत भाऊ। हौं रामा तू रावन राऊ।
रहा जो भौंर कँवल की आसा। कस न भोग मानै रस बासा।
जस सत कहा कुँवर तूँ मोहीं। तस मन मोर लाग पुनि तोही।
जब हुँत कहि गा पंखि सँदेसी। सुनिउँ कि आवा है परदेसी।
तब हुँत तुम्ह बिन रहै न जीऊ। चातकि भइउँ कहत पिउ पीऊ।
भइउँ चकोरि सो पंथ निहारी। समुँद सीप जस नैन पसारी।
भइउँ बिरह दहि कोइल कारी। डारि डारि जिमि कूकि पुकारी।

कौन सो दिन जब पिउ मिलै यह मन राता जासु।
वह दुख देखै मोर सब हौं दुख देखौं तासु॥

[३१६अ]

द्वि० ४, ५, ६ (किंतु द्वि० ६ में यह छंद ३१६ के पूर्व आता है)—

रतनसेन सो कंत सुजानी। षट रस पंडित सोरह बानी।
तस होइ मिले पुरुष औ गोरी। जसि बिछुरी सारस जोरी।
रची सारि दूनौ एक पासा। होइ जुग जुग धावहिं कै लासा।
पिय धनि गही दीन्ह गलबाहीं। धनि बिछुरी लागी उर माहीं।
ते छकि नव रस केलि करेहीं। चोका लाइ अधर रस लेहीं।
धनि नौ सात सात औ पाँचा। पूरुख दस तेरह किमि बाँचा।
लीन्ह बिधाँसि बिरह धनि साजा। औ सब रचन जीत हुत राजा।

जनहुँ औटि कै मिलि गए तस दूनौ भए एक।
कंचन कसत कसौटी हाथ न कोऊ टेक॥

[३१८अ]

तृ० ३—

पदुमावति कह सुनहू राजा। कैसे तुमहि हिए रँग राता।

सुवा बचन बिरहा तब लागा। रहै न प्रान प्रेम तन जागा।
राज पाट है गै तजि नारी। तुव दरसन कहँ भएउँ भिखारी।
सोरह सहस कुँवर सँग आथी। जोग पंथ निसरे होइ साथी।
चलेउँ मनसि सिंघल दीप देसा। बचन हिरामनि के उपदेसा।
आइ देखा तहँ समुँद अपारू। बोहित चढ़े सँवरि करतारू।
आइ परे मानसर माहाँ। देखि धवल तन भएउ उछाहाँ।
सुअैं कहा अब देखाहु राजा। महादेव कर मंडप साजा।

गुर उपदेस चढेउँ गढ़ राजैं पकरेउ झारि।
सूरी देत तहँ बाँचेउँ तुव सुमिरन सुनु नारि॥

[३१८आ]

तृ० ३—

अब सुनु रतन बात तैं मोरी। भएउ अगाह हृदय यह तोरी।
केहु कहा जोगी सब मारे। सुनत हंस तब चला निनारे।
सर रचि जरै तबै मैं चाहा। सखिन्ह धाइ पकरी मोरि बाहाँ।
वोहि मोहि कबहुँ न दरसन भएऊ। मोरि निति मैं दुख कैसे सहेऊ।
अब हौं सखी जरौं वोहि लागी। पेम प्रीति मोहि तन महँ जागी।
अब जौं वोहि लागि जिउ देऊँ। रहि कल दोसरे क नाउँ न लेऊँ।
पिय मोर जाइ इंद्रासन साजा। लै अपछरा भुँजैहहिं राजा।

रहि निमित्त सुनु बालम अर्ध उर्ध मोर जीय।
मंदिल झरोखे मारग जोवौं कोस देस कहँ पीय॥

[३३२अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ७—

पदुमावति कह सुनहु सहेली। हौं सो कँवल तुम कुमुद चमेली।
कलस मानि हौं तेहि दिन आई। पूजा चलहु चढ़ावहिं जाई।
मँझ पदमावति कर जो बेवानू। जनु परभात परै लखि भानू।
आस पास बाजत चौडोला। दुंदुभि झाँझ तूर डफ ढोला।
एक संग सब सोंधैं भरीं। देव दुवार उतरि भइ खरीं।
अपने हाथ देव नहवावा। कलस सहस एक घिरित भरावा।

पोता मँडप अगर औ चंदन। देव भरा अरगज औ बंदन।

कै प्रनाम आगे भईं बिनय कीन्ह बहु भाँति।
रानी कहा चलहु घर सखी होति है राति॥

[३६१अ]

प्र० १, २, द्वि० १, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० १, २, ३ —

पदुमावति सौं कहेउ बिहंगम। कंत लोभाइ रहे जेहि संगम।
तू घर घरनि भई पिउ हरता। मोहि तन दीन्हेसि जप औ बरता।
रावट कनक सो तोकहँ भएऊ। रावट लंक मोहि कै गएऊ।
तोहि चैन सुख मिलै सरीरा। मो कहँ हिए दुंद दुख पूरा।
हमहुँ बियाहीं सँग ओहि पीऊ। आपुहि पाइ जानु पर जीऊ।
अबहुँ मया करु करु जिउ फेरा। मोहि जियाउ कंत देइ मेरा।
मोहिं भोग सौं काज न बारी। सौंहि दीठि कै चाहनहारी।

सवति न होसि तू बैरिनि मोर कंत जेहि हाथ।
आनि मिलाउ एक बेर तोर पायँ मोर हाथ॥

[३८३ अ]

द्वि० ४, ५ —

परिवा नौमी पुरुब न भाएँ। दूइजि दसमी उतर अदाएँ।
तीज एकादसि अगनिउ मारैं। चौथि दुवादसि नैंरित वारैं।
पाँचईं तेरसि दखिन रमेसरी। छठि चौदसि पच्छिउँ परमेसरी।
सतमी पूनिउँ बायब आछी। अठइँ अमावस ईसन लाछी।
तिथि नछत्र पुनि बार कहीजै। सुदिन साधि प्रस्थान धरीजै।
सगुन दुघरिया लगन साधना। भद्रा औ दिकसूल बाँचना।
चक्र जोगिनी गनै जो जानै। पर बर जीति लच्छि घर आनै।

सुख समाधि आनंद घर कीन्ह पयाना पीउ।
थरथराइ तन काँपै धरकि धरकि उठ जीउ॥

[३८३आ]

प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७ —

मेख सिंघ धन पूरुब बसै। बिरिख मकर कन्या जम दिसै।

मिथुन तुला औ कुंभ पछाहाँ। करक मीन बिरिछिक उतराहाँ।
गवन करै कहँ उगरै कोई। सनमुख सोम लाभ बहु होई।
दहिन चंद्रमा सुख सरबदा। बाएँ चंद न दुख आपदा।
अदित होइ उत्तर कहँ कालू। सोम काल बायब नहिं चालू।
भौम काल पच्छिउँ बुध निरिता। गुरु दक्खिन औ सुक अगनउता।
पूरब काल सनीचर बसै। पीठि काल देइ चलै त हँसै।

धन नछत्र औ चंद्रमा औ तारा बल सोइ।
समय एक दिन गवनै लछिमी केतिक होइ॥

[३८३इ]

प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७—

पहिले चाँद पुरुब दिसि तारा। दूजे बसै इसान बिचारा।
तीजे उतर औ चौथे बायब। पँचएँ पच्छिउँ दिसा गनाएब।
छठएँ नैरित दक्खिन सतएँ। बसै जाइ अगिनिउ सो अठएँ।
नवएँ चंद सो पृथिवी बासा। दसएँ चंद जो रहै अकासा।
ग्यरहें चंद पुरुब फिरि जाई। बहु कलेस सौं दिवस बिहाई।
असुनी भरनी खेती भली। मृगसिर मूल पुनरबस बली।
पुख्य ज्येस्ठा हस्त अनुराधा। जो सुख चाहै पूजै साधा।

तिथि नछत्र औ बार एक अस्ट सात खंड भाग।
आदि अंत बुध सो एहि दुख सुख अंकम लाग॥

[३८३ई]

प्र० १, २, द्वि० २, ४, ५, ६, ७—

परिवा छट्ठि एकादसि नंदा। दुइजि सत्तमी द्वादसि मंदा।
तीजि अस्टिमी तेरसि जया। चौथि चतुरदसि नवमी रखया।
पूरन पूनिउँ दसमी पाँचै। सुक्रै नंदै बुध भए नाँचै।
अदिति सौं हस्त नखत सिधि लहिए। बीफै पुख्य स्रवन ससि कहिए।
भरनि रेवती बुध अनुराधा। भए अमावस रोहिनि साधा।
राहु चंद्र भू संपति आए। चांद गहन तब लाग सजाए।
सनि रिकता कुज अज्ञा लीजै। सिद्धि जोग गुरु परिवा कीजै।

छठे नछत्र होइ रबि ओही अमावस होइ।
बीचहि परिवा जौं मिलै सुरुज गहनतब होइ॥

[३८५अ]

द्वि० ३, तृ० २, च० १—

चले कुँवर चितउर के साथी। औ जत गवनचार के आथी।
औ हीरामनि साथ परेवा। तहँ पहुँचाइ चले भलि सेवा।
औ सब रातिन्ह केर बेवाना। भा सब काहूँ चितउर जाना।
दल कर खेह छिपा रबि सारा। नैन न सूझइ हाथ पसारा।
जे सब कुँवर देस के अहे। और जु सिंघल दीप के रहे।
अगनित कटक चला बल साजी। बड़ परताप चौवड़िया बाजी।
दल पर दल चित गनत न आवा। अैस कटक दल साजि चलावा।

गवन कीन्ह चितउर कहँ रतनसेनि जगराइ।
सोरह सहस कुँवर सिउँ हीरामनि सुखदाइ॥

[३८८अ]

प्र० १, २—

राजकुँवर रानी औ सुवा। बेगर बेगर चाहैं तहँ हुवा।
गरब गाँठि मन साह न खोला। लहर खाहि औ सत नहिं डोला।
उठत आउ अब लहरि अपारा। भाँति भाँति ज्यौं चला पहारा।
लहरि अचक्केहुँ जानहुँ आगी। काहूँ हिए चँदन असि लागी।
काहूँ जानु अमी मुख सारा। काहूँ जनु बिख सुरा सँचारा।
घरी घरी जो अगम न जाई। जानहुँ काल नियर भा आई।
नैन पसारि हेरु जौं राजा। सरग पताल एक सँग साजा।

नैनन्ह पँथ जो भूलि गा अगुमन भा अँधियार।
हेरि हेरि सब भूँखहिं दुख महं गुरू अधार॥

[३८८आ]

प्र० १, २—

समुँद कहा सुनु मुरुख अग्याना। जेहि गथ नाहिं का करौ पयाना।

एह समुँद कर अैस सुभाऊ। दै कै देइ बोहित महँ पाऊँ।
अजहूँ समुझु मुगुध मन माहाँ। काल कुरुद्ध होइहि सो ताहाँ।
तबहुँ न समुझु जबहिं सिर आई। लहरि उपर सैं लहरैं खाई।
सबै रेनु होइ जाइहि कहाँ। खोजे खोज न पाइब तहाँ।
चक्रित भए कुँवर जल देखी। धरनि गगन जल संग बिसेखी।
देखि सो लहर भरे चख पानी। कहहिं सबै अब आइ तुलानी।

लहरि असूझ देख तस जैसैं साज सुमेर।
चहुँ दिसि जनु घन घोरैं कहि न जाइ तस घेर॥

[३८८इ]

प्र० १, २—

हीरामनि परगट ओहि ठाँईं। होइहि सरग ससि राहु कि नाईं।
ओहि का अंस भार जौं कोई। एक संग एनतालिस खोई।
पुनि सिर धुने न आइहि हाथा। आदि अंत जनु रहा न साथा।
सब पख फेरि रहहिं ओहि ठाईं। लै जाइहि आपन की नाईं।
अमी काढ़ि माखन रस लेई। तुम्ह निचोइ सरि मौन करेई।
पुनि न समाइ आइ घट पवना। फिरहिं न फिरि राजा इसौ गौना।
एह रे समुद है बिप्र हमारा। बोहित नाउ इहै कड़हारा।

जो रे आइ सूखे महँ जल निकुंज घट होइ।
जिन्ह रे ठगा जिअ जगत महँ भेष धरे है सोइ॥

[३८८ई]

प्र० १, २—

हीरामनि जब बहुत बुझावा। तेइँ जनु भाँग धतूरा खावा।
काहे न जानत आपु समाना। गएउ ग्यान तेहिं भाँति तिवाना।
रानी कहा सुनहु हो नाहू। एहि जल होत चहत तन दाहू।
कोस कोस की लहरैं आवहिं। पवन सो पानी अधिक ते धावहिं।
झंखहि कुँवर सो करहिं तिवाना। तुम्ह राजा मन माहँ भुलाना।
इहै मंत्र रावन अस हरा। इहै मंत्र लंकेस्वर छरा।
इहै मंत्र आसावरि मारी। इहै मंत्र छरा कुबेर भँडारी।

सोइ मंत्र तुम्ह राजा भूले समुँद महँ आइ।
जैसे सीस माछी धुनै कर मींजै पछिताइ॥

[३८८उ]

प्र० १, २—

अजहुँ समुझु बौरे अभिमानी। बट महँ निकट आइ सँग तानी।
सुनु राजा तैं समुँद क कहा। तुम्ह पहँ कछू न राखा रहा।
जैसें भूँजि करि खेतहिं बोवा। मोर मोर कहि चाहत खोवा।
तासौं का कीजै सरबरी। जासौं सोच चाव घर घरी।
बाट घाट महँ है सब ठाऊँ। ताकी रहनि सुबासित गाऊँ।
कै आपन जानहु मन माहीं। ताही कर एह तोर किछु नाहीं।
सो तुम्ह सौं सब लेइ सँभारी। तुम्हहि करिहिं घरि माहँ भिखारी।

हिएँ समुझु तैं राजा साहु समुँद तैं चोर।
आपुन करिहि सो सारिहि हिए तुहैं कहे का मोर॥

[३८८ऊ]

प्र० १, २—

राजैं कहा दान देउ देवा। जब सो चलै समुद महँ खेवा।
उभरे बोहित सुनि सो दानू। रतनसेन मन करहि तिवानू।
एक एक गय दरब मैं जोरा। तेसि सो समुँद कह चाहत मोरा।
सो मोहिं देत नाहिं बनि आवा। रहै पाहनहि होइ परावा।
देउँ सो दान पार जौं जाऊँ। जौं रे सुनौं चितउर करनाऊँ।
केइ रे समुद स्वामी बौरावा। राज दान सत मंगे पावा।

दान देइ ब्यापारी परजा जेहि भौ भीर।
हौं रे आहि हित गंध्रप राज समुँद लहु तीर॥

[४०२अ]

प्र० १, २—

रोवै पदुमावति गहि केसा। कहाँ रहे बसि रूप नरेसा।
कहाँ हीरामनि पंडित मोरा। चाँद सुरुज जेहि जग महँ जोरा।
अहि अहार तन मन दुख फसा। सिंघल रहे न चितउर बसा।

माँझ बाट कै केइ गुन काटा। भइउँ अथाह देखि पिउ बाटा।
फिरै केस भेस मुख लावै। भई बेहाल लाल नहिं पावै।
अनचिन्ह सभै न आपन कोई। प्रात साँझ निस बासर होई।
कौन करै एहि ठाउँ गोहारा। लाज पियहि जेहि ऊपर भारा।

थाके रसन अधर रँग स्रवन कनक के फूल।
थके भुजा बलयौ कर ब्यापित भौ तन सूल॥

[४०४अ]

प्र० २—

परा आइ अब कूप अँधारा। सूझि न परै गगन औ तारा।
चहूँ ओर चित चक्रित भएऊ। जनु सिव लै रावन हरि गएऊ।
अहि अहार नैना जल पीऔं। पदुमावति बिन कैसे जीऔं।
कहाँ पावै करवत जिव पेलौं। सीस उतारि समुद महँ मेलौं।
कहाँ हीरामनि पंडित आथी। बिछुरे सबै कुँवर पँच साथी।
गए अमोल नग देखत पाँचा। तब गुन कीन्ह समत मैं काँचा।
गए सो मेघ उमर सिर छाता। पाटन कनक जराव की हाता।

गए ते अरथ दरब सब केहि कर गरब मैं कीन्ह।
अब पछिताउ होइ जिउ कौन मंत्र मैं कीन्ह॥

[४१८अ]

प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ७, तृ० १, २, ३, च० १,
पं० १—

जनि काहू कर होइ बिछोऊ। जस वै मिले मिलै सब कोऊ।
पदुमावति जौ पावा पीऊ। जनु मरजियहिं परा तन जीऊ।
कै नेवछावरि तन मन वारी। पायन्ह परी घालि गिउ जारी।
नव अवतार दीन्ह बिधि आजू। रही छार भइ मानुख साजू।
राजा रोव घालि गियँ पागा। पदुमावति के पायन्ह लागा।
तन जिउ महँ बिधि दीन्ह बिछोऊ। अस न करै तौ चीन्ह न कोऊ।
सोईं मारि छार कै मेटा। सोइ जियाइ करावै भेंटा।

मुहमद मीत जौं मन बसै बिधि मिलाव ओहि आनि।
संपति बिपति पुरुख कहँ काह लाभ का हानि॥

[४१८आ]

तृ० २—

लछिमी पदुमावति पहँ धाई। भइ सुसार जेंवहिं चलि जाई।
औ समुंद्र चलि पार सो आवा। रतनसेनि कहँ आइ बुलावा।
चलहु बेगि भइ सिद्धि रसोईं। भुगुति न तजै जिऔ जौं कोई।
जौं न होइ कहुँ जिऔ सो खाई। आदि अंत लहि चलै सो धाई।
राजा सुनि उठि जहवाँ चलै। पदुमावती हाथ तब मलै।
अस बूझै सब लोग खवाई। हम तुम्ह दोउ जिव जेंवहिं जाई।
भाय बंद औ सखा सहेली। सब पर प्रेम जनहुँ अकेली।

तुम्ह सुजान औ पंडित दस औ चार निधान।
मैं मुगुध बुधि औ जिय दई देह (?)अलप ग्याँन॥

[४८३]

तृ० २—

जौं बिधि जगत राखि दिन चारी। सँग साथ सो करै न यारी।
हिलि मिलि सब जस जिउ तब रहे। सुत बित सकल साथि न रहे।
मैं तिरिया बुधि अलप बखानी। तुमहिं पुरुख बहु बुद्धि कहानी(?)।
बूझि ग्याँन गुन देखौ आपू। कहँ लगि बहुरहिं यह बड़ पापू।
जे मुख बोल सुनत कहँ ताईं। मरन भला जीवन ते साईं।
जो लेइगा सब साथ न प्यारा। हम बाँचे धिग जिवन हमारा।
सब क साथ बिधि राखहु होई। बिनु सँग जिवन मरन भल सोई।

(दोहे की पंक्तियाँ प्रति में नहीं हैं)

[४१८?]

तृ० २—

लछिमिनि बहुत जतन समुझाई। काहु कहे मोहि मुवा न जाई।
तब पदुमावति बिनती कीन्हें। जग मो हार परा हम चीन्हें।
सब सँग आनि समुँद महँ खोवा। सभनि जाइ हम संग बिछोवा।

जिनि सँग हम निति खेल धमारी। औ जस जगत अंत संसारी।
तिन्ह बिनु अब हम जिया न जाई। जिवन्ह कैस बिनु संग सहाई।
मया करहु जो हम कहँ मारा। जिसु कंथा जहँ वह संसारा।
यहैं करहु जो हम निस्तारा। जेहिं रे मरहु कै जौहर बारा।
एतना बोल देहिं हम माँगे। सूरुज आइ जरावहिं आगे।

(दोहे की पंक्तियाँ प्रति में नहीं हैं)

[४१८ उ]

द्वि० ४, ५, तृ० २—

लछिमी सौं पद्मावति कहा। तुम्ह प्रसाद पाएउँ जो चहा।
जौं सब खोइ जाहिं हम दोऊ। जो देखै भल कहै न कोऊ।
जें सब कुँवर आए हम साथी। औ जत हस्ति घोड़ औ आथी।
जौं पावैं सुख जीवन भोगू। नाहिं त मरन मरन दुख रोगू।
तब लछिमी गइ पिता के ठाऊँ। जो एहि कर सब बूड़ सो पाऊँ।
तब सो जरी अमृत लै आवा। जो मरे हुत तिन्ह छिरकि जियावा।
एक एक कै दीन्ह सो आनी। भा सँतोख मन राजा रानी।

आइ मिले सब साथी हिलि मिलि करहिं अनंद।
भई प्राप्त सुख संपति गएउ छूटि दुख द्वंद॥

[४१८ ऊ]

द्वि० ४, ५, तृ० २—

और दीन्ह बहु रतन पखाना। सोन रूप तौ मनहिं न आना।
जे बहु मोल पदारथ नाऊँ। का तिन्ह बरनि कहौं तुम ठाऊँ।
तिन्ह कर रूप भाव को कहै। एक एक नग दीप जो लहै।
तीर फार बहु मोल जो अहे। तेइ सब नग चुनि चुनि कै गहे।
जौ एक रतन भँजावै कोई। करै सोइ जो मन महँ होई।
दरब गरब मन गएउ भुलाई। हम सम लच्छ मनहिं नहिं आई।
लघु दीरघ जो दरब बखाना। जो जेहि चहिय सोइ तेइ माना।

बड़ औ छोट दोउ सम स्वामि काज जो सोइ।
जो चाहिय जेहि काज कहँ ओहि काज सो होइ॥

[४२०अ, आ]

४२० की प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के बीच में प्र० १, २, द्वि० ३, ७ में पूरे दो छंदों की पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं, जिनमें से दूसरा छंद (४२० आ) द्वि० ४, ५ में भी ४२० के अनन्तर आया है :

कोटि एक दिन लागैं भोगू। जेवैं कुरी छतीसौ लोगू।
सीझहिं बहु बिंजन परकारा। लाखन जेंवन बहुत अपारा।
पहिले भोग गोसाइँ चढ़ावहिं। तेहि पाछें तप जप सब पावहिं।
भरि कै थाल कंचन लै धरहीं। दै पट बाहर अस्तुति करहीं।
जल घरिका सब बाहिर आवहिं। पैठहिं पंडित चार उठावहिं।
जो जन गा सो भोजन पावहिं। सो जेवहिं पढ़ि सीस चरहावहिं।

और बिकाइ जो हाँड़िन्ह ऊंच नीच सब लेइ।
भाँति न केहु काहु के फोरें टूंक होइ तेइ॥

कुँवरन्ह जो बहि घाटन्ह लागे। बहु बेकरार मुए जनु जागे।
बिकल अचेत चेत नहिं नेकौ। संग सखा नहिं देखौं एकौ।
कहाँ अहे हम आए कहाँ। नहिं जा नहिं लौ जाइहि जहाँ।
जेहि क हम अदिस्टि कै अपनी। लाइ भाग बिधि दीन्हीं जपनी।
जेन्ह के संग पदुमिनी बाँची। बहुत अनंद ते फिरि फिरि नाची।
सब सँग मिले आइ जगनाथा। सबन्ह आइ ओन्ह नावा माथा।
अति दुख आइ मिले तहँ राजा। मोइ तें गएउ न एकौ काजा।

सोइ हीरामनि रतन रबि सोइ पदुमावति लाल।
सोइ कुँवर सोइ पदुमिनी सोइ प्रेम प्रतिपाल॥

साठैं जबै और बहु घाता। निसठें मुक्ख न आवै बाता।

[४२५अ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह छंद ४२६ के अनन्तर आया है)—

जिऔ तौ दरब मिलै नौ लाखा। औ तरिवर उपनै नौ साखा।
जिऔं तौ सोइ सखा सोइ ठाऊँ। पुनि सो गाउँ सोइ पुनि नाऊँ।

जिऔ तौ तुरी अनेकन्ह हाथी। सब बिछुरेइ बिछुरे भइ साथी।
जिऔ तौ फिरि नैनन्ह जग देखा। दुरजन सुरजन सबै बिसेखा।
जिऔ तौ स्रवनन्ह सुनै सँवादा। फिरि बिछुराइ मिलावै राधा।
जिऔ तौ क्रीडा दुख सुख भावा। जिऔ तौ इंद्र अपछरा पावा।
जिऔ तौं रतन पदारथ पावा। जिऔ तौ चितउर फिरि गृह आवा।

जिऔ तौ देखु सिव मंडप सिघल दीप पहार।
जिऔ तौ लीन्ह जो ससुँद सब जिऔ तौ सब संभार॥

[४२५आ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह छंद यथा ४२६ के अनन्तर आया है)—

जिय बिनु रावनु लंका जारी। जिय बिनु कहा कुबेर भँडारी।
जिय बिनु भूईं आहि सब माटी। बिनु जिय को देखै गरूह घाटी।
बिनु जिय हिया गुनन को गुना। बिनु जीयहिं स्रवनन नहिं सुना।
बिनु जिय पाँचौं बेगर होई। बेगर भए समेटौ कोई।
बिनु जिय भँवर कँवल नहिं जाना। बिनु जिय छारहिं छार समाना।
बिनु जिय जोबन भए पराए। गए हेराइ न खोजन पाए।
जिय एहि जग होइहि परवाना। जिय बिनु सो जानहुँ घतियाना।

कहि कै सबै बुझावहिं सैन सखा अरु बीर।
बिनु जिय काटौ कोटि सिर होइ न एकौ पीर॥

[४२६अ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७—

बैठ सिंघासन लोग जोहारा। निधनी निरगुन दरब बोहारा।
अगनित दान निछावरि कीन्हा। मँगतन्ह दान बहुत कै दीन्हा।
लेइ कै हस्ति महाउत मिले। तुलसी लेइ उपरोहित चले।
बेटा भाइ कुँवर जत आवहिं। हँसि हँसि राजा कंठ लगावहिं।
नेगी गए मिले अरकाना। पँवरिहिं बाजे घुरुरि निसाना।
मिले कुँवर कापर पहिराए। देइ दरब तिन्ह घरहि पठाए।
सबकै दसा फिरी पुनि दुनी। दान डाँक सबही जग सुनी।

बाजैं पाँच सबद नित सिद्धि बखानहिं भाँट।
छतिस कूरि खट दरसन आइ जुरे ओहि पाट॥

[४२६आ]

प्र० १, २—

रतनसेनि गढ़ महँ पगु धारा। दिन दस यह गढ़ रहा परारा।
दिन दस देस देसंतर गएऊ। पुनि एह मंदिर आपन भएऊ।
एह गढ़ आहा जैसे सपना। पुनि सँभारि लीन्हा आवना।
चित्त कूर कहा रहत एहि भाँती। बासर भूख न निद्रा राती।
भा दरसन अब रूप मुरारी। पै सत बार जो कीन्ह जोहारी।
एह मंदिर सो सिंघल धावा। कहेउ कि होइ जनि मँदिल परावा।
देखेउँ आगुन समुद पहारा। साहु दान लै पार उतारा।

जोग तैं पाएउ भोग मैं पित चितउर नहिं भोर।
मंदिल पै सो दान दै दिएहि होइ दुख थोर॥

[४४५अ]

प्रति प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७—

अस कहि दुवो नारि समुझाईं। बिहँसत हिए चाँपि कँठ लाई।
लेइ दोउ संग मँदिर महँ आए। सोन पलँग जहँ रहे बिछाए।
सीझी पाँच अमृत जेवनारा। औ भोजन छप्पन परकारा।
हुलसीं सरस रुजहजा खाई। भोग करत बिहँसीं रहसाई।
सोन मँदिर नगमति कहँ दीन्हा। रूप मँदिर पदमावति लीन्हा।
मंदिर रतन रतन के खंभा। बैठा राज जोहारै सभा।
सभा सो सबै सुभर मन कहा। सोई अस जो गुरु भल कहा।

बहु सुगंध बहु भोग सुख कुरलहिं केलि कराहिं।
दुहुँ सौं केलि नित मानै रहस अनँद दिन जाहिं॥

[४४५आ]

द्वि० ३—

नाग पदम नागरि दुइ नारी। बरनी दूनउँ परम पियारी।
पदम नाग पदम अंग सुभाएँ। चँदन मलैगिरि अंग लगाएँ

पदम पदारथ पदिक नवेलों। कारी सैन बनी अलबेलीं।
गोरी साँवरि नवल सलोनी। कोकिल चातक कंठ बिलोनी।
लिखी मुहम्मद दूनौ नारीं। रतनसेन की परम पियारीं।
जस दुख देख जगत महँ लोगू। तस तेहि के रँग मानै भोगू।
छह रितु बारह मास गँवाना। पदम नाग कर आरस माना।

चंदन चीर चारु औ चोवा परिमल मेद सुगंध।
पुहुप बास रस माहँ भरि जोबन सीस सुबंध॥

[४४५इ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७—

जाएउ नागमती नगसेनिहिं। ऊँच भाग ऊँचै दिन रैनिहिं।
कँवलसेनि पदमावति जाएउ। जानहुँ चांद धरति महँ आएउ।
पंडित बहु बुधिवंत बोलाए। रासि बरग औ गरह गनाए।
कहेन्हि बड़े दोउ राजा होहीं। ऐसे पूत होहिं सब तोहीं।
नवौ खंड के राजन्ह जाहीं। औ किछु दुंद होइ दल माहीं।
खोलि भँडारहिं दान देवावा। दुखी सुखी करि मान बढ़ावा।
जाचक लोग गुनी जन आए। औ अनंद के बाज बधाए।

बहु किछु पावा जोतिसिन्ह औ देइ चले असीस।
पुत्र कलत्र कुटुंब सब जियहिं कोटि बरीस॥

[४४६अ]

प्र० १, २—

जुरी सभा तहँ अनबन भाँती। बैठि कुँवर सब पाँती पाँती।
कोइ चतुराई सारि सौ खेलहिं। औ डम ठारि आपु तर हेलहिं।
कोइ पंडित पढ़ि बेद सुनावहिं। औ कंचन बहु भाव देखावहिं।
अब इन्ह बेगु गुनी कर ठाटा। सुनि सो सबद रटन हिय फाटा।
गुनी न छाडत कोइ नटसारा। जौ रे होत अस्थिर दरबारा।
ना एक डाक गुनी सँग पावा। अपनी अपनी भाँति सुनावा।
सोइ पियार जो अधिकौ नवई। नवै सो पाव भाव सो भवई।

भाव सो मिलै जो साजन सखा भाव भरम गौ ताहि।
अन रे भाव भरम रहै जनु रे बाउर एहि आहि॥

[४४६आ]

प्र० १, २—

अकथ कथा जे कह सब कोई। सब की चाह चलावै सोई।
करहिं सो अपनी आपनि बाता। जेहि जस पहुँच बकसै सो ताका।
बकहिं सो पंडित बेद सुबेदा। गुपुत बाल बकु जो ओहि भेदा।
कहहिं जोगि सब आपन जोगू। कहहि राउ जो मानहिं भोगू।
औ वैसे आपन गुन कहा। धन जो कहैं अब कोउ न रहा।
जो सब रहे ओही दरबारा। सब काहू कहँ कीन्ह जोहारा।
फिरी दिस्टि सब के उपराहीं। उन्ह चख ओट रहा कोइ नाहीं।

आजु राउ होइ बैठे सुनहि कथा गुन ग्याँन।
सोइ सबद सरवन भै अंब्रित जो उनके मन मान॥

[४४६इ]

प्र० १, २—

तब पंडित पढ़ि बेद सुनावै। अगम एक चाहत जो आवै।
होइहिं उपद्रौ चितउर माहाँ। जस घर भेद लंक ग्रहि डाहा।
कहै न कोइ एहि चितउर मेरा। रतनसेनि चितउर केहि केरा।
बेद उछेद न सुनै कहानी। औ चितउर भूला हौ रानी।
भूला स्वाद रंग औ नादा। औ भूले जिन्ह सूझ न आगा।
भूला कटक देखि हम हाथी। औ जानी आपन है साथी।
औ तेहि ऊँच देखि गढ़ भूला। जैसें सुवा सेंवर के फूला।

भूला रहै जो गरब तें सुनै न आपु समान।
ऊँचा चितउर देखि करि जियहिं कीन्ह अभिमान॥

[४४६ई]

प्र० १, २—

बाँभन एक बसै ओहि गाऊँ। अहा गुपुत परगट भा नाऊँ।
कीन्ह बाद तेन्ह राघौं सेती। भई बात गइ राजा सेती।
बाँभन चेतनि सौं भै बादा। राजा मुख हेरै तब लागा।

बाँभन पूँछै वेद गरंथा। चित चेतनि औ दधि मंथा (?)।
सँवरि सुरसती मनहिं मनावै। वाक वाद नीछ आ दे पावै (?)।
कहइ एक एक अस मुख बोला। पंडित कहहिं बेद अब डोला।
देखहिं पत्रा करहिं तिवाना। बेद मंत्र बुधि सबै हेराना।

कह बाँभन सुनु चेतन बाद कीन्ह तुम्ह आजु।
को निबटावइ बीच होइ अहा अधिक होइ बाजु॥

[४४७ अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७, में ४४७'१ के अनन्तर आठ तथा ४४७'२ के अनन्तर एक। कुल निम्नलिखित नौ पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं—

राजा एह तौ साँच न होई। अस तौ दिस्टि बंध पै होई।
वह तो सात कोस लहु चाँदू। आगे होइ होहिं तौ बाँदू।
पवन पाव जो तुरै पलानहु। चहूँ ओर असवार धवावहु।
चहूँ ओर असवार धवाए। एक निमिख महँ देखत आए।
कहेन्हि आइ सत आहि नरेखा। आगे सकल अमावस देखा।
राजैं कहा कालि निजु जानब। देखि चाँद तबहीं पहिचानब।

फुर औ झूठ तब जानब दिस्टि परै जब चाँद।
कालि साँझ यह निपटिहि को ठाकुर को बाँद॥

दुइज क चाँद छीन सब चीन्हा। झूठा झूठ फूर फुर कीन्हा।

[४४८अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७—

राघौ जो रे बात यह सुनी। राजा पहँ आएउ बड़ गुनी।
कहेसि निकट परलौ अति आवा। बेद गरंथ मों अस देखावा।
सब कहँ बड़ संदेह जिउ लागा। राजा सत्त दत्त नित खाँगा।
भएउ सो देवस सबहिं देखरावा। पानी पानी देस सब छावा।
बाढ़त आइ गरह तर होइ बाजा। देखन चढ़ा मँदिल पर राजा।
बूड़हिं लोग मँदिल घहराहीं। बूड़हिं छजा छपर उतिराहीं।
बूड़हिं मँदिल मडप औ देवा। बूड़हिं तपा जपा जो सेवा।

बूड़हिं बालक औ मेहरि नर बूड़े बहे जाहिं।
बुड़हिं एक एक उछरहिं मुँह बाएँ घिघियाहिं॥

[४४८आ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७—

बूड़हिं एक उठावहिं बाँही। बूड़हिं आपु अवर लपटाहीं।
बूड़हिं हय फरकत सिर काढ़े। बूड़हिं गै जनु गिरिवर ठाढ़।
बूड़हिं पसु सब गोते खाहीं। बूड़हिं पंखी सोर कराहीं।
बूड़हिं कोट बुरुज घहराने। बूड़हिं कुँवर राउ औ राने।
बूड़ नगर सब जलहर छावा। राघौ औस भगल देखरावा।
मंदिलौ आइ लीन्ह जब पानी। राजै सत्त मीचु तब जानी।
एक नाव दुइ खेवट आए। राजै देखि चढ़न्ह कहँ धाए।

राजै चढ़ै न दीन्हेउ चढ़ पंडित लिहे बीर।
राघौ औस दिस्टि बँध खेला बहुरि न देखा नीर॥

[४४६अ]

प्र० १, २—

दुखी पै सत जिय करहिं न लोभा। पै सो होइ तेहि और न सोभा।
जौं पतंग सनमुख जिउ देई। सौंह जरै कर बदन हिलेई।
जौं सेवा कीजै एहि भाँती। तौ पति मिलै होइ जौ साँती।
अग्याँकारि आहि जौ कोई। सेवा पियार यार नहिं कोई।
जा कहँ माँथ जाइ कै दीजै। तासौं सरबरि काहे को कीजै।
जौ सरवरि राघौ जिय कीन्हा। चितउर तजा दिली चित दीन्हा।
पति रिसान रिसि भै सब कोई। सबै बिरुझ आपन नहिं होई।

तासौं सरबरि का करै जेहि सेवा नित आस।
जौ रिसाइ सेवक सौं ठाकुर तौ अस छाड़ै पास॥

[४४६आ]

प्र० १, २—

कह राजा सुनि राघौ चेतनि। सबै नीक दोख तोहि एतनि।

दीन्ह मंत्र तुम कौने ग्याँना। कै तिवान मन मोहनी जाना।
तुम्ह जाना की अस्थिर मही। सभै कोई कह वाकी अही।
पिउ ठाकुर भँवरा औ जोगी। अहुठ कीन्ह सेवा सो भोगी।
तो पहँ आहि जाखिनी देबी। चढ़ि दुइ नाव कीन्ह अस भेबी।
जेइ दुइ बाट घाट महँ ताका। मरनहिं वार पार सो थाका।
अंतरीछ अनाएहु ससी। पै अलोप पै छिन नहिं बसी।

तुम्ह छर कीन्ह जो मोसन आनि उआएहु जोन्हि।
चेटक छआ जो छिनहिं की भएउ होन्हि सो होन्हि॥

[४४६इ]

प्र० १, २—

सुनु राजा तैं बात जो कही। मोहि जिय लागि अनी भै रही।
सेवक जोगी पंथ क भँवरा। यह नहिं रह थिर जौ चित सँवरा।
आजु लीन्ह एहि ठाउँ बिसराऊँ। कालि जो बसब कालि के गाऊँ।
जौं जानै अस्थिर मग होई। काहे आइ चलै फिरि कोई।
काहे आपन कै यह जग जाना। सभै जाइ मन माहँ भुलाना।
मैं अब चलौं अलादिन पाहाँ। जेहि की छया जगत सब माहाँ।
जो रहि मंत्र ऊँच दुइ बाता। दहुँ केहि पंथ चलौं मैं साता।

चेतनि चितउर उबिठा चलत निमिख नहिं हेर।
जौ लागै संसार तेहि रहै न कवनौ फेर॥

[४४६ई]

प्र० १, २—

रतनसेनि बहु भाँति बुझावा। चेतनि चला चेटक जनु लावा।
जो चितउर नहिं आपन देसा। तेहि ढिल्ली कत होइ बिसेखा।
एहि निदरि छरु नहिं सुलतानू। राइ रान कर आहि न मानू।
आपन और परार नहिं देखा। सेवा कै मानू पुनि लेखा।
जहाँ नीर खीर न जाइ सँभारी। तहाँ चलहु तुम्ह जहाँ भिखारी।
तेहि दरबार गुनी बहु गुनी। आसा लाई अही बेगुनी।
वह रुपवंत जो चतुर सयाना। आपुहि अरथ गरंथ समाना।

आपुहि छत्र सँवारि सिर आपुहि करै निछात।
गुन गंध्रप सुर मुनि नर रहा न काहू दाप॥

[४४९उ]

प्र० १, २—

सुन राजा मैं आपु न चेतनि। करहि न साहि बात सुनु एतनि।
सेवा सवाई करौं मैं रूहौं। संजम अधर रसन पति महौं।
लंक नैन गिय लाइ बुझावौं। औ रसना सौं साहि मनावौं।
जेहि की आहि चहुँ खंड दोहाई। तेहि सेवत कत होइ दुखाई।
तौ चेतनि चतुराई सौं खेलौं। ढारि सुसारि आपु तर हेलौं।
राजा रिपु रावन होइ आवै। लंक भभीछन राज दियावै।
जौ ऊधौ अगुआई किया। हरि रानी दासहिं लै दिया।

होइ अंगद सिर रोपिहैं हनुवँते मारे हाँक।
जौं रावन होइ आगिमों हाँक दिए सब थाँक॥

[४४९अ[1]]

द्वि० ३—

दुइ नहिं होइ एक ठाहर माहाँ। दिन औ रात घाम औ छाहाँ।
ग्याँन गरब दुइ एक न होहीं। सब नैना एक रूप न मोहीं।
बिद्या बुद्धि औ गति औ रागू। केत नाव औ कष्ट सभागू।
दान खरग जोगी औ भोगी। सोग असोग रंग औ रोगी।
मूरति सूरति करत बखानू। औ तिन कर नित ग्रंथ बयानू।
सूर होइ संग्रामहिं तपा। कूर रमैया रामहिं जपा।
मौन भएउ गिरहस्थ उदासी। जोगी जंगम तपा संन्यासी।

कोई दास कोइ ठाकुर कोई नरक कबिलास।
चेत चेत चित चेतनि मन नहिं करै उदास॥

[४६१अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७—

आए समय अलाउदीं साही। देखन महल के भीतर नाहीं।

भीतर महल जो राघौ आए। आदर कै सबहिन बैसाए।
आपुहिं सब देखरावहिं बनी। और को है हमतें रुपमनी।
राघौ कह बहु देहि अकोरा। कहहि कि कहिअइ हजरि(?) ओरा।
अपने पर सब राखहि धोखा। भाव देखावहिं गावहिं चोखा।
चेतनि चीकैं सबनि निहारी। कोउ न देखौं पदुमिनि नारी।
चरन टेकि कै गोचरा साही। अनु अपरूप सब बरनि न जाहीं।

चित्रिनि सिंखिनि हस्तिनी बहु कटाछ बहु भाइ।
एक साहि घर नाहिं पदुमिनी जेहि मुख कँवल बसाइ॥

[४६६अ]

प्र० २—

बिहँसा नाम सुनत पदुमिनी। अब वह बात फेरि कहु गुनी।
केहि रे बात सो देस निकारा। कैसे आइ ढिली पगु धारा।
कैसे चितउर सें तुम्ह आवा। रतनसेन किमि भवा परावा।
केहि रे भाँति कहु पदुमिनि नारी। जस चखु लागि तैसि कहु बारी।
सोइ भाँति तुम बरनहु रूपा। वह सो छाँहि कोइ मरै न धूपा।
जनि आगे ओहि के कोइ परै। ककपि कंठ बरु आपुहिं मरै।
बरनौं तासु अलावलि दीना। आहै नाद बेद सुर बीना।

सुघर सुरति कीन्ही सुफलि अब जो देउँ सरि केहि।
औ सो रुकमिनि जनकसुत सरि सो काहि मैं देहि॥

[४६८ अ]

द्वि० ४, ५, ६—

ससि मुख जबहिं कहै किछु बाता। उठत ओठ सूरुज जस राता।
दसन दसन सौं किरिनि जो फूटहिं। सब जग जनहुँ फुलझरी छूटहिं।
जानहुँ ससि महँ बीजु देखावा। चौंधि परै किछु कहै न आवा।
कौंधत अह जस भादौं रैनी। साम रैनि जनु चलै उडैनी।
जनु बसंत रितु कोकिल बोली। सरस सुनाइ मारि सर डोली।
ओहि सिर सेस नाग जौ हरा। जाइ सरनि बेनी होइ परा।
जनु अंम्रित होइ बचन बिगासा। कँवल जो बास बास धनि पासा।

सबै मनहि हरि जाइ मरि जो देखै तस चार।
पहिले सो दुख बरनि कै बरनौं ओहिक सिंगार॥

[४७४ अ]

द्वि० ३—

बरुनी तिरिछि बेझ जग कीन्हा। औ बिख बाँधि सान धरि दीन्हा।
बरुनी सोभ कहाँ लगि सोभहिं। जेइँ देखा सो सुर नर मोहहिं।
अरजुन बान बनावरि बरनी। खंजन रूप सोह सो तरनी।
नाविक बान ताहि तैं पेखे। झाँझर करै जीव तेहि देखे।
कंटक बरुनि औ तँग वै भौंहीं। बहुरि जाहिं निरखत सो सोहीं।
बरुनी बान देखि जनु नैना। दुरै एकाँव कटाछ कै सैना।
बरुनी बरनि काह लै लावौं। दुइ जग सरबरि काहु न पावौं।

बरुनी बान भा पार वहि जग बेधा तेहि बान।
जोवहु करेजन फाँस जिमि जबहिं बरुनि कत जान॥

[४८४ अ]

प्र० १, २, द्वि० ३—

रंग पुहुप जो पदुम सरि कहाँ। कंठ सो साल रहै जल महाँ।
को रंग पाव तासु सरि कोई। जा कहँ दिस्टि फेरु जर सोई।
वह रंग देखि सबै रँग जरा। रूप देखाइ बहुरि सो छरा।
बान सबै ओहि पहँ रँग राते। छुटैं काह जनु लाग बिसाते।
नौज परै ओहि आगे कोई। सनमुख सो जिय जियँ न कोई।
केउ काल लागे रह रुहा। एकहिं बार न धाव सामुँहा।
आपुहिं बान आपुहिं धनुधारी। आपुहि काल काल किहु कारी।

सबै सेन सनमुख गहै औ सो सिस्टि अनसिस्टि।
नव अवतार सो आहि नर जो रे फिरै ओहि दिस्टि॥

[४६४ अ]

प्र० १, २—

अलादीन चित चितउर हेरा। कब रे आइ गढ़ ऊपर फेरा।

अब मोहिं चाह पदुमिनी केरी। हम कहैं हमै रतन कहै मेरी।
गढ़ अगूढ़ नहिं जाइहि हेरा। पँवरि एक घाटी बहु फेरा।
सो गढ़ करौं फाग कै धूरी। तौ साँचा साहि अलावलि पूरी।
चौंकि चौंकि निसि दीन लगावहिं। पाँति पाँति सेवक सब भागहिं।
बाजा तबल जाग सब कोई। भै पुकारि चौकी भलि होई।
गहि करनाइ सब्द भल साजा। बाजन कोटि एक सँग बाजा।

भै चौकी निसि बीती भोर उठे सब जागि।
सही साहिने माँगी और हाजिरी त्यागि॥

[४६४आ]

प्र० १, २—

साहि सुजान सजन हँकराए। सुनत सबद नेबी सब धाए।
आवहु बैसि मंत्र अब जोरहिं। कै सुमंत्र अब चितउर तोरहिं।
कोइ कहै गढ़ है अति बाँकी। लेहु गढ़ाइ कर दुहमुँह (?) टाँकी।
कोइ कह सर औ कुअँड कुलेहू (?)। सन्मुख चलहु पीठि जनि देहू।
कोइ कहै इमि भाँति न पावहु। करतब चढ़ै सीस जो लावहु।
सबै मंत्र मंत्री अरथावहिं। स्रवन टेरि लै राव सुनावहिं।
पलौ कलम गम गहि भरि स्यामा। लिखिस पढ़ेसि चातुर गुन ग्याँना।

चढ़े आइ अब कागद छतिस कुरी सब जाति।
कोई आउ सबेरे कोहू माझ भइ राति॥

[४६६अ]

द्वि० ३—

पातसाहि जब ठोक निसाना। सपत दीप महँ परा भगाना।
दर मिर चेत सो छार कुडानी (?)। अंबर उठे भए चहत पानी।
कला औ परभा केहरि हरी (?)। चले चाल सो एक पातरी।
और पलंग चित्र रतनारी। कारे कान्हहि पाव पखारी।
कटि लै मीर चले बहु पाँती। पाखर पाखर सो आँती (?)।
अस कै पखरे और धरानी। बरनत कोउ बरनि नहिं जाई।
जहँ बस परे जगत सब अहे। साँवाकरन (?) कोटि सिर गहे।

सीतलि बानी आहि रस अलप अहार न रोस।
तरपहिं महिं मै बाजिगन तारहिं ए सब दोस ॥

[४६६अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७—

रूमी हबसी और फिरंगी। हलबिजार अरबी औ जंगी।
चोन मचीन खुतन औ खीता। चले बँगाली बोलत मीता।
भक्खर खग्गर चले हजारी। काबुल रोहन रहा पहारी।
खानदेस औ बोजानगरा। मारवार हठि आवै लगरा।
बदखसान बगदादी जर्दी। थार कोच जहाँ लगि हंदी।
उतर देस सब चला भोवंतू। दक्खिन देस जहाँ लहि अंतू।
पछिम जहाँ लगि साएर नीरू। पूरब जहँ लगि उगवै सीरू।

सेस कलमलै महि हलै परबत होइ मसिवान।
सायर सूख अलोप रबि अलादीन के पयान ॥

[४६६अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७—

सुरति बेसूरति होइ (सो) गई। भरउँच भार न अँगवै दई।
काँपि तिहूनगिरि तिनबर डोला। नरवर गएउ भुराइ न बोला।
राइसेन ईडर डरि काँपी। आबू पूँछि जंघ महँ झाँपी।
ताकर चरन चरनाठि कुमाऊँ। मडराइल मडराइ उड़ाऊँ।
गिरि गिरिनैर काँप थरहरी। बैरागर असेरी भरहरी।
धौरागढ़ ठट्ठा डर माना। छीदागढ़ लंबेग भुलाना।
डरा जयानू गिरिवर हाले। नरवर वै भूवा कलमले।

देस देस सभ परा भगाना जो जहाँ तहँ भैभीत।
भौचकि औचकि पर चकवे चितवहिं चहुँ सोधि (?) ॥

[५०३ अ]

प्र० १,२, द्वि० ६ में ५०३.२ के बाद आठ नई पंक्तियाँ और ५०३.६ के बाद एक नई पंक्ति बढ़ा कर एक छंद अतिरिक्त कर दिया गया है—

रघुबंसी जादव सूरबंसी। औ निकुंभ कासिव सोमबंसी।

रैकवार जनवार धधारे। खतिसआर जो महा करारे।
बंड़गूजर बिसेन औ धाकर। सेंगर सुरकी जगत उजागर।
मदवरि आमंडलिक अखीची। खरबन्ह दान जूझि नहिं नीची।

एकक देस के ठाकुर कुरी न कोऊ नीच।
बोलहि बिरद दसौंधी खेल भई जनु मीच।।

बाछिल औ बजगोती आए। पोंड पुरिर जो सुनि के धाए।
बुंदेले गौरह भिलवारे। महि दुवार कटि आरज धारे।
अहवड जैन कछवाहे मिले। और नैर कठिहरिया भले।

[५०३आ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ५११ अ है)—

रचे सु चारि खंभ नहिं डोलहिं। थाके रसन कहा अब बोलहिं।
थाके स्रवन सबद का होई। कोटि धमकि जो ठोकै कोई।
थाके अधर दसन के रँगा। थाके पान सुपारी संगा।
(?) सो भोजन कापर पागा। छिन महँ सीस बैठ चह कागा।
बेगर बेगर आपन होई। चरत चलत नहिं टेकै कोई।
भाव माहँ जो भा अनभावा। मात पिता सब भवा परावा।
औ न कोइ काहू कहँ पूछा। सबै अहा चलते भा छूँछा।

तजा सो अर्थ दर्ब सब औ सो सखा सुख पाठ।
भौ सँग माटी आगि जल लै सूतौ अब काठ।।

[५०३ इ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ५११ आ है)—

कहा नाग पदुमावति रानी। काहे जरन मरन तूँ ठानी।
तुम्ह चितउर ते सिंघल लीन्हा। फिरि पयान चितउर कहँ कीन्हा।
औदधि उदधि न तुम सौं बाँचा। लीन्ह जो रतन माँगि नग पाँचा।
जब दुइ बाट घाट महँ भए। कहु रानी कहु राजा भए।
सुख निसरा दुख भरा सरीरा। तब नहिं जरेहु अहा घट पीरा।
जब रे जाइ त्रिन चहूँ पनावा। केइँ रे लाव केइँ जरत बुझावा।

जब सिंघल महँ कुँवरन्ह छेका। कस नहिं किहेहु जरनि की टेका।
का राजा तुम्ह सर रचा कहहु कहाँ सो लागि।
(एह जो) छोड़हु उठहु सिलह सर जरि रहहु साहि की आगि॥

[५०३ ई]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ५११ इ है)—

एहि जिउ कठिन छुटै नहिं आँका। छाड़ा जरन मरन घर ताका।
रतनसेनि पोड़िहार बोलावा। लै सँग गढ़ ऊपर कहँ आवा।
दीन्ह हाँक अब मारहु घेऊ। लै अस चढ़हु असुर जस देऊ।
ठाँवहिं ठावँ अब लागै टाँकी। कोइ भरि खाँच चढ़ावहिं भाठी।
फूटा कोट ओट सब करहीं। तापर छीनि कँगूरा धरहीं।
कोइ कर जोरि फिरत कर राना। हम सहि ठाँव आहि दिन मरना।
बाँधि सवात सूत सौं ताका। जहाँ होइ टेट निहुरि सो ताका।

चहूँ ओर सूत सँचरे टेकि आपु सो आपु।
दिन बीते निसि आइहै सब कहँ मारा थापु॥

[५०३ उ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ५११ ई है)—

भएउ बिहान कमानैं आईं। भाँति भाँति की आनि चढ़ाईं।
परी हाँक कोटवार पुकारा। आपु आपु महँ रह हुसियारा।
है सिर ऊपर अलादीन छावा। जाइ हँकार करै सो धावा।
जौं चूरै ताकै मन माहाँ। एह चितउर राखै को काहाँ।
कठिन आहि तिनकर दरबारा। जो बदि परै न छूटै पारा।
तुरुक रहा दुइ अगुवा सोई। उन्ह सौं सर्क कहै का कोई।
इहि सब ऊपर तुरुक सो दारुना। जबहिं हँकार साहि तब मारुना।

सुनि कै चौंकि परा है रतनसेन सो राउ।
पहरन्हि जाइ बुझावा औ ते बात सुनाउ॥

[५२८ अ]

द्वि० १—

बेड़िनि निरित करै बहु बानी। देखै रतनसेनि सुर ग्यानी।

अबरन बरन सो बेड़िनि भली। सुरस कंठ तब गावत चली।
थेई थेई इजारन्ह सुर कीन्हे। सीस धुनहि सँग केऊ सुनै।
जस नारद जग दीसै लागैं। करहिं बिनौ दखिन के आगें।
प्रात काल भैरव कै राजा। तेहि पर देव गंधार सो साजा।
तौ पुनि काफी टोड़ी गाई। सुनत साह तौ गा मुरछाई।
सारँग गावहिं सुराग नान्हें। सुरँग देखि हिएँ दुख जान्हें।

हिएँ माहँ सुख होइ तब पदुमावति हरि लेहि।
तेहि पर बेड़िनि नाच कै अधिक हिएँ दुख देहि॥

[५२८आ]

द्वि० १—

साह सँभारि कमानैं गईं। करहिं मोहल्ला आपन सही।
सबहि साह केर रहु बारहिं। हनि बल तें सीध करि मारहिं।
गैबर जाहिं सँसाहत करहीं(?)। भएउ निकंद लाइ कोट सँघारहिं।
पार खाना दीख जहाँ लागी। अधिक होइ ऊपर कहँ भागी।
सनई पँवर भाल जो पैठी। तब रन दरहि हिएँ जनु बैठी।
एक बेर सब केऊ छूटहिं। जस भौ जीत पतंग पर टूटहिं।
मेर न तबहिं टेर कै ऊँची। कोइ सो कोई पँवरि पहूँची।

कोइ पहुँच पँवरी तक कोइ दरवाजै पास।
नायक कै मन अनँद भा पातर के मन हुलास॥

[५२८इ]

द्वि० १—

ऊपर राजा करै हुलासा। तर भै साह सो होइ उदासा।
देखि उदास जहाँगीर लाजा। समुझावै कहँ जाइहि राजा।
काहें साह दुक्ख जिय धरहू। हिएँ अनंद हरख नहिं करहू।
नायक मारौं मन मों कीन्हा। चाँप कमान हाथ कै लीन्हा।
लकत (?) देखि निरित मन लावा। कै गियान उपदेस देखावा।
मुख राजा के सन्मुख कीन्हा। पीठ तरेह साह के दीन्हा।
नाचक लगियन जहाँ देखावा। बेड़िनि नाच ताहि डसि आवा।

नाँचत पातर देखेउ नायक देइ देखाइ।
चौतर तरपहि साह के मुख राजहि मन लाइ॥

[५२८ई]

द्वि० १—

देखि साह मन झुरवै लागा। बाव हमार देहि अस भागा।
जौं उदास जिउ साह क देखा। ओसी बात अपने मन लेखा।
सखत कमान चोंप जौं लीन्हा। औ तब साह तें अग्याँ लीन्हा।
गहि मारौं गहि ढाहौं आजू। करौं निकँट जत ओहि कर राजू।
साहि कहा नायक कहँ मारू। मोरे जय कर परिहँस टारू।
नहि कमान कर तीर सँभारा। तबहिं रिसाइ ताकि कै मारा।
नायक ठाढ़ कहाँ रहु पाना। छूटत बान हिएँ न समाना।

जो गढ़ साज लाख दस कोटि सूर महँ कोटि।
पातसाहि जब चाहै रहै न एकौ ओट॥

[५२८उ]

प्र० १, २, द्वि० १, २, ३, ४, ५, ६, ७, तृ० २, ३, च० १, पं० १—

छइउ राग नाँची पातुरिनी। पुनि लीन्हेसि तिन्ह कै रागिनी।
औ कल्यान कान्हरा होई। राग बिहाग केदारा सोई।
परभाती होइ उठै बँगाला। आसावरी राग गुनमाला।
धनासरी औ सूहा कीन्हा। भएउ बिलावलु मारू लीन्हा।
रामकली नट गौरी गाई। धुनि खम्माच सो राग सुनाई।
साम गूजरी पुनि भल भाई। सारँग औ बिभास मुहँ आई।
पुरबी सिंधी देस बरारी। टोड़ी गौड़ सौं भई निरारी।

सबै राग औ रागिनी सुरै अलापति ऊँच।
तहाँ तीर कहँ पहुँचै दिस्टि जहाँ न पहूँच॥

[५२८ऊ]

द्वि० १—

दुख कर मानत दुख मन लावा। जब नायक तत कारन आवा।

अतहर न दुख ओ ताता थेई। देस दिखाइ जीव हरि लेई।
जब नायक देखा वै देसू। तबहि साहि तब होइ कलेसू।
भा कलेस मुख गएउ सुखाई। तबही साह गएउ मुरछाई।
दहिना बावँ सोझ कै राजा। देखत साहि मुरछि कै लाजा।
पानि लेइ ततखन तूलाना। पानि पियावा हिरदै जुड़ाना।
निकसी आँखिहि जोति अपारा। मलिक जहाँगिर तब हुंकारा।

आए मलिक जहाँगिर कीन्हा आइ सलाम।
देखि साहिं मन दुख धरे लागा करै कलाम॥

[५२८ए]

द्वि० १—

जौं कलाम कर बचन सुनावा। सुनत साहि जिव खेह आवा।
पाँव दहिन पूजहि कै हेरा। है कोइ ऐसा दोसत मेरा।
जौं कोइ यह नायक मारै आजू। देउँ चँदेरी चितउर आजू।
मीरन्ह केर मजालिस भई। जेहि के महँ सूरा अस कही।
कनियर तार नहिं सो तरई। समुहें घाव खाइ सो मरई।
सब मिलि एक मसूरत कीन्हा। हाथ कमान चोंप कै लीन्हा।
सभारा साह बदा सो दहिने। कूंद की गेंद चूरी मनी (?)।

बड़ा घनी जब संभारा तबहि झूठ और न कोइ।
तबहि तेज कि मैं सवरौं सूझा था जग होइ॥

[५२९अ]

द्वि० १—

साहि जो बेड़िनि देखत लाजा। ओके मन मह सब कै हाजा।
बैठे राय राँक सब जुरी। जनहुँ बैठ इंद्रासन पुरी।
राना राव औ गजपति जेते। रन लिखार करु मन महँ बैठे।
अरन नतर राजा की मही। जत दुख रहै तत सब बही।
गोरा बादिल महानरेसू। बनहि देखा जेहि राय कलेसू।
काहें नृपति दुक्ख मन माहाँ। फूल बदन नहिं देखौं कान्हाँ।
तुम्ह गोरा बादिल मोर भाई। को तुरकन्ह तें करै लराई।

को तुरकन्ह तें रन करै को जिव खोवै आज।
को अस आहि महाबली को रे करै रन साज॥

[५२६ आ]

द्वि० १—

को मेटै दुख बात हमारी। बिनवौं बिरंचि देव मुरारी।
को मलेछ तें जोरै अनी। को रे कहावै रन का धनी।
बादिल बात जो मन महँ भाई। राजा करै लाग बड़ाई।
का मैं राव दुक्ख जेहि धरसी। महा अनंद हरख तेहि करसी।
जैसें तुरकन्ह बेड़िनि मारा। तैसें सेवक अहौं तुम्हारा।
दै अग्यौं कि मारौं बाना। सो मोहि देइ दिखाइ निसाना।
बादिल कहा राजै सनकारौं। छत्र धरें ताकर कर मारौं।

छत्र धरें छत्र धारी ताहि मारौं बलवंड।
सुनु बादिल मन हरखा बदवा कहै कमंद॥

[५२९ इ]

द्वि० १—

गहि कमान निरखा तो बादिला। मरा बीर जुझार सो आदिला।
भो नग लाइ के खाँजी जेहीं। छूट बान बादिल कर तेहीं।
लाग बान तब कर उधिराना। देखत बान साहि तब ताना।
ओके मन महँ तुरुक जुझारा। सन बंध तब सब संहारा।
अवन हाथ गढ़ आवै कबहीं। बिनवा जाइ सारि ते सबहीं।
कै मढ़ छाड़तु कै गढ़ लाहौं। कै तौ मरन तहाँ गढ़ माहौं।
सेर तुरुक तो बिनती कीन्हा। दगा किए महँ मसूरत कीन्हा।

दया कीन्ह जब राजा तब पै आवै हाथ।
नाहीं तो हथ लागें टूटत इन कहँ माँथ॥

[५३३ अ]

प्र० १, २—

भोग कीन्ह मानेहु सुख साँती। अब नग देहु आहि जनु पाती।

हरजै सुना स्रवन गति बाता। भएउ सँजोग चलेउ जहँ राता।
लीन्ह सो समत साहि कर काना। घरी धरी तब कीन्ह पयाना।
दुइ जो पयान कीन्ह ओहि ठाऊँ। तिसरे जाइ पहूँचे गाऊँ।
तब राजा मन माहँ सकाना। दहुँ कस बनै रतन पहँ जाना।
अनचिन्ह सबै कोउ नहिं साथा। दहुँ कस बनै रतन पहँ जाना(?)।
औ भै कीन्ह मनहिं चख भेरी। जहाँ साहि औ राजा केरी।

गवा देवस अब आउ निसि बिसरावा ओहि ठाँव।
पैसत पवरि अचेत भौ भूलि परे एहि गाउ॥

[५३३आ]

प्र० १, २—

सरजा सबद साहि कर लावा। रहै कहाँ जो सीस उठावा।
भई चाह चितउर की हाटा। जहँ नग कनक जराव की पाटा।
ब्याकुल भई छतीसौ जाती। आजु साहि की आई पाती।
जौं भल होइ तौं राजा काँधौं। लै पाती सिर ऊपर बाँधौं।
जो चाहै सो अग्याँ करै। लै नग रतन आगे कै धरै।
करहु मान जनि चितउर देखी। होइ सिस्टि पुनि रैनि बिसेखी।
कोट वोट नहिं काहुहि आवा। जौं रे साहि सैना सौं गाहा।

खोजत खोज न पाउब जेउँ रे छुआ की छाँह।
सपने की सी संपति नैन खोलैहइ काँह॥

[५३४अ]

द्वि० १, तृ० २—

अनु सरजा तू कहा हमारा। जानहि लोक लाज ब्यौहारा।
दान मान सुमिरत संसारा। माँग न कोइ पुरुख कै दारा।
जो घरनी दै कै घर राखा। पुरुख न कहिय निपुंसक भाखा।
जावत सेव कहिअ सेवकाई। तावत करौं माँथ भुइँ लाई।
अरथ दरब औ हस्ति तोखारा। रतन पदारथ देहुँ भँडारा।
देस कोस औ राज दोहाई। जो माँगौ सो देउँ सवाई।
औ कर जोरे नेवा सारौं। पै एक घरनी देइ न पारौं।

जहँ लगि लच्छि परापति राज साज ब्यौहार।
सब पायन्हँ तर बारौं जो रे अरथ भँडार॥

[५३७अ]

प्र० १, २—

सुनि सो बात राजा मन भावा। कहिन्हि जाइ अब सेवौं पावा।
औ कर जोरि मनावौं ओही। देइ मुकुति चितउर जिय मोही।
सुनु बसीठ साहि कर ओरा। चितउरिया बिनवौं कर जोरा।
औ जौं चलब तुम्हारे साथा। सभै जात जिउ लेउँ मैं हाथा।
औ घर सेवा करब अहारा। सब छाँड़ब यह कटक भँडारा।
चितउर माहँ कीन्ह मैं सेवा। रतन अंध दिठियार हो देवा।
जेहि सब सेव करै दिन राती। मैं कुसेव बिनवौं केहि भाँती।

जौं रे रहौं तौ बनै नहिं चलौं सभै मोहिं दोख।
कहा आइ रानीन्ह सौं करहु बिदा मोहिं चोख॥

[५३७आ]

प्र० १, २—

जौं तुम्ह चले साइँ पहँ देवा। अब हम लाइ काहि कै सेवा।
जौं पिय जीय तौ आपन होई। सभै तुम्हार मोर नहिं कोई।
बिनवै पदुमावति सुनु नाहा। अब कस चले अलादिन पाहाँ।
तब न जाइ गिय नाइ जोहारा। अब कस चले मिलन बेवहारा।
नहिं जानै जिय अंत मेराऊ। आए साहि कस भए बटाऊ।
औ न कीन्ह मन माहँ बिचारा। हिए जान सभ आहि हमारा।
सोइ सेवा पिउ जिउ रह हाथा। रहन पदुमावति नागरि साथा।

तब न मिले जिय केत तुम्ह को हसि सरि बहु छोह।
बिख ब्यापित भौ चितउर होइ मिलन कस नोह॥

[५३७इ]

प्र० १, २—

पदुमावति मन माहँ बिचारा। जौं सरजा तौ साह हमारा।

नील कँधामरी माँगिन्ह बेगी। झारि साल पहिराइह नेबी।
रतन कीन्ह बिनती कर जोरी। तुम्ह सौं प्रगट और सौं चोरी।
औ सो अंत सो जानै अनुमाना। तासों कौन रहै अभिमाना।
उठि कर जोरि बिनय तब कीन्हा। तुम्ह ते साहिं अलादिन चीन्हा।
टारि अमी परगट भौ बाता। अस्तुति जोग कहा है राता।
नर नरिंद कहा मोहिं सरि होई। ओहि सर कौन कहा वै कोई।

सेवा संजम मोहिअहि सुनु सरजा समुझाइ।
आवै घरी जौं मिलन की देखौं साहि के पाइ॥

[५३७ई]

प्र० १, २ —

सरजैं कहा रतन नग लाऊ। जेहि कारन मोहि साह पठाऊ।
देहु नगर तन करौं लै भेंटा। जौं चाहहु गढ़ चितउर टेका।
जौं न देहु माँगे नग पाँचा। रतन सो कहा पदारथ बाँचा।
अब मोहिं देहु करे फिरि धरौं। लै के आगे साहि के धरौं।
देहु चलौं हमही बिलवाई। रहा आइ चितउर गढ़ आई।
अब जौं घरी चलन की आवै। कैसे रहै कोइ कोटि मनावै।
सरजैं कहा घरी सो आई। चलन डगा अब फेरि न जाई।

बाजत बल आदल माँ फिरी साहि की आँच।
सरजा मानि गरम सो माँगि लीन्ह नग पाँच॥

[५५१अ]

प्र० १, २, —

मुख सोंधिया जो रोठ सोपारी। सो सरौते कीन्ह दुइ फारी।
लै चीरहि सो बास बसाई। लौंग लाल सौं मुख बिहराई।
अनबन भाँति साजु सो गुआ। औ बिमोद सब वेहर हुआ।
दान परान पयान कराई। रुहिर रंग अधरन्ह जे भराई।
मसी कपूर अगर की साजी। रसन रदन होइ रही बिराजी।
चोवा सो चतुरानन साजा। औ सँग तेल फुलेल बिराजा।
जूकहिं बूक बुका छिरिरावहिं। आपु हेराइ तौ दरसन पावहिं।

समैं सँभारि संजुत करै रतन साहि जिय लागि।
जो रुचि करै तौ सरै सब नातरु कसै बेलागि॥

[५५४अ]

तृ० २—

रतन पदारथ नग जो बखाने। जिन्ह महँ ते देखे छहराने।
मँदिर मँदिर फुलवारी बारी। पुरुख नारि सँग खेल कुँवारी।
बरन बरन जस ठाउँ देखावा। जनु बैकुंठ अैस दर पावा।
एक निरखि बहरावन लागे। देखहु मोहीं पुरुख सभागे।
मनु इंछा जो चितमन होई। बिधि प्रसाद धनि पावै सोई।
रहस कोड महँ दिवस पराई। भोग भुगुति तस देहिं बहाई।
दुख औ हुद न जानै कोई। इंद्रलोक जस देखा सोई।

भोग भुगुति सुख सपनै दुखी न कोइ तेहि दीस।
मन निचित भल तेहि भा जो सिरजा जगदीस॥

[५७४अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ४, ५, ६, ७—

चाँद घरहिं जो सूरज आवा। होइ अलोप अमावस छावा।
पूँछहिं नखत मलीन सो मोती। सोरह कला न एकौ जोती।
चाँद क गहन अगाह जनावा। राज भूल गहि साहि चलावा।
पहिली पँवरि नाँघि जौ आवा। ठाढ़ होइ राजहिं पहिरावा।
सौ तुखार तेइस गज पावा। दुंदुभि औ चौघड़ा दियावा।
दूजी पँवरि दीन्ह असवारा। तीजि पँवरि नग दीन्ह अपारा।
चौथि पँवरि देइ दरब करोरी। पँचईं दुइ हीरा कै जोरी।

छठईं पँवरि देइ माडौ सतईं दीन्हि चँदेरि।
सात पँवरि नाँघत नृपहिं लेइगा बाँधि गरेरि॥

[५७६अ]

प्र० १, २—

आजु गनत सहदेव सौं चूका। आजु कान्ह जल महँ भै लूका।

आजु गँगेउ जूझि भुइँ परा। आजु राज जिरजोधन टरा।
आजु दयंत कुँवर छरि हरा। आजु कबीर दुदिस्टिल धरा।
आजु लखन कहँ सकती लागा। आजु प्रान दसरथ हरि त्यागा।
आजु सत्त सौं हरिचँद हारा। आजु जुदा कीन्हा दुइ फारा।
आजु भीम राकस गहि लीला। आजु इंद्र इंद्रासन ढीला।
आजु पंडौ भजि गए पतारा। आजु कुर्म छाँड़ेउ महिभारा।

आजु महा परलौ भौ दिग दिग डोल पहार।
आजु सूर दिन अथवा भा चितउर अँधकार॥

[५७६आ]

प्र० १, २—

आजु छाँड़ि चितउर अन्हसाथा। आजु जो परे पराए हाथा।
आजु लिखा मोकहँ बंदिसारा। आजु कीन्ह मैं आहि अहारा।
बिस्नु गोबिंद महेस मनावौं। सीस धुनौं पै दरस न पावौं।
रतनागिरि बिनवौं कर जोरे। काटइ बंदि कृपाल निहोरे।
जिय जोबन धन तुम सौं पावा। अब मो सन का होहु परावा।
तुम्हहीं नरक नेवारन साईं। तुम्ह पति जीउ मैं दास गोसाईं।
जल थल आहि भँवर अरु देसू। ताहि सबै घट सबहिं नरेसू।

का मानुस का पंखी का सावक का मीन।
सब घट भीतर पैठि कै दीन्ही लिखि भाषा भीन॥

[५७६इ]

प्र० १, २—

अतना कहत नींद जब आई। सपन रूप देखेउ अरसाई।
पुरिख एक अचरिजु जो देखा। परगट रूप न जाइ निरेखा।
जिन्ह भोजन अभिमान क खावा। खात अमी पुनि भा पछितावा।
अजहूँ समुझु रे हिरदै माहाँ। जैसे भृंग भाग घट पाहाँ।
जिन्ह निहचै बाँधा उन्ह बेरा। बिन गुन पार जे करैं सबेरा।
तब भरमाइ जो नैंन उघारे। जनु गग ठगन्हि ठगौरी भारे।
भरम भूलि कै जीभ उघेला। अब बँदि आनि कहाँ तैं मेला।

जनि बसि काहू के कोइ परै दास होइ की राज ।
हरै धरै जो भाव ओहि रहै न ओसौं लाज ।।

[५७६ई]

प्र० १, २—

भएउ काल अभिमान थँभाऊ । मित्र भया जनु संग बटाऊ ।
कासौं कहौं जो आहि अपाना । जो देखौं संग सबै बेगाना ।
कोउ नहिं मोहिं छिन एक बोलावौं । पैग पैग पै लागु चलावौं ।
सुख संगति सो भएउ परावा । दुख जिय सँग बँदिहार चलावा ।
दुख कर मिथ्या नेह कनीरू (?) । सो पीछै दुख होइ सरीरू ।
इन्ह दुखनै मोर ओर निबाहा । सब सँग दीन्ह जबै मैं चाहा ।
मैं मलया दुख भएउँ भुवंगा । गहु लपटाइ न छाड़ै संगा ।

दुख सुख की है ओबरी पथिक बसे जे आइ ।
मुहमद दोऊ एक सँग औ हँसि चले रोआइ ।।

[५७६उ]

प्र० १, २—

पुनि सो राउ बोला ओहि ठाएँ । तुम जो प्रीति परापति लाएँ ।
तब तुम्ह सुख आपन कै जाना । अब तुम्ह सौं काहे बेगराना ।
निहचै जानहु संग सुभाऊ । भा दुइ मारग केर बटाऊ ।
जाना तुम्ह जो अस्थिर राजू । घटत न घटै अमर यह साजू ।
कनक पहार जे लंका पुरी । सुनि तेहि ढाहि मेराएउँ धूरी ।
सुत संजम तिन्ह आपु सँभारा । पुनि ओहि ठाउँ ओही कड़हारा ।
गीव देइ गोचरै दै हाथा । अगमन धाइ मिलै पै साथा ।

तासौं गहर न कीजिए जासौं है निति काज ।
सबै दास ओहि आएसु जाकर अस्थिर राज ।।

[५८३अ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, (तृ० १)—

पदुमावती पीव रट लागी । निसि दिन तपै मच्छ जिमि आगी ।

भँवर भुजंग कहाँ हो पिया। हौं हरका तुम कान न किया।
भूलि न जाहि कँवल के पाहाँ। बाँधत बिलम न लागै नाहाँ।
कहाँ सो सूर पास हौं जाऊँ। बाँधा भौंर छोरि कै लाऊँ।
कहाँ जाउँ को कहै संदेसा। जाउँ सो तहँ जोगिनि के भेसा।
फारि पटोरहिं पहिरौं कंथा। जो मोहि कोइ देखावै पंथा।
वह पथ पलकन्ह जाइ बोहारौं। सीस चरन कै तहाँ सिधारौं।

को गुरु अगुवा होइ सखि मोहिं लावै पथ माहँ।
तन मन धन बलि बलि करौं जो रे मिलावै नाहँ॥

[५८३आ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, (तृ० १)—

कै कै कारन रोवै बाला। जनु टूटहिं मोतिन्ह कै माला।
रोवति भई न सांस सँभारा। नैन चुवहिं जस ओरति धारा।
जाकर रतन परै परहाथा। सो अनाथ किमि जीवै नाथा।
पाँच रतन ओहि रतनहिं लागे। बेगि आउ पिय रतन सभागे।
रही न जोति नैन भए खीने। स्रवन न सुनौं बैन तुम्ह लीने।
रसनहिं रस नहिं एकौ भावा। नासिक और बास नहिं आवा।
तचि तचि तुम्ह बिनु अंग मोहि लागे। पाँचौ दगधि बिरह अब जागे।

बिरह सो जारि भसम कै चहै उड़ावा खेह।
आइ जो धनि पिय मेरवै करि सो देइ नइ देह॥

[५८३इ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७, (तृ० १)—

पिय बिनु ब्याकुल बिलपै नागा। बिरहा तपनि साम भइ कागा।
पवन पानि कहँ सीतल पीऊ। जेहि देखे पलुहै तन जीऊ।
कहँ सो बास मलयागिरि नाहाँ। जेहि कल परति देति गलबाहाँ।
पदुमिनि ठगिनी भइ कित साथा। जेहि तें रतन परा पर हाथा।
होइ बसंत आवहु पिय केसरि। देखे फिर फूलै नागेसरि।
तुम्ह बिन नाह रहै हिय तचा। अब नहिं बिरह गरुड़ सौं बचा।
अब अँधियार परा मसि लागी। तुम्ह बिनु कौन बुझावै आगी।

नैन स्रवन रस रसना सबै खीन भए नाँह।
कौन सो दिन जेहि भेंटि कै आइ करै सुख छाँह॥

[५६३अ]

प्र० १, २—

आछहु का रोवहु पदमिनी। सो रोवै जो होइ बिरहिनी।
पिता तोहार गंध्रप उजियारा। सिंघल दीप जान संसारा।
तुम्ह पदुमावति तिन्ह कै बारी। जेउँ निसि माहँ चाँद उजियारी।
बजा तोर दुख देसहिं देसा। तब मैं भई मलीनी भेसा।
सुसुकि सुसुकि अधिकै सो रोवै। टोटक सौं कुमुदिनि मुख धोवै।
समुझि रोव पदमावति बारी। सो दुख कोइल भुअंगिनि कारी।
अब न रोउ बहुतै तैं रोई। अंजन बदन जात है धोई।

देखि तोहार बदन भै मोर रतन रतनार।
जल पलौं(?) गहि धोउ मुख कपट राइ बेउपार॥

[५६३आ]

प्र० १, २—

कुमुदिनि कहा रानि सुनु चौना। जिय तुम्हार देखे मोहिं चौना।
नैन चलहि जनु ओरी धारा। अधिक देखाइ गई बेकरारा।
उरध साँस लै लै चख फेरै। रानी भूलि लागु मुख हेरै।
जस दुख मोहिं किय और न काहू। तैं कहु धाइ कवन दुख धाई।
केहि कारन चितउर बिख बोवा। जहाँ आइ तोर कंत बिछोवा।
तोर दुख कुँवरि कहौं केहि भाँती। भूख न देवस नींद नहिं राती।
तुम्ह तौ नींद सोवहु एक छिना। मोहि जुग बीतै होइ बिहीना।

भुख हरी निद्रा गई तन नहिं चीर सँभार।
अलक अरुझि चख स्याम गै जौं बिसतर बिस झार॥

[५६३इ]

प्र० १, २—

कै तौ हित आपन जे होई। औ घट को दुख बाँट न कोई।

सुनु रे धाइ तैं बहुत बुझावा। जारे पर तू मोहिं जरावा।
भोग भुगुति जिय सबै बिसारा। पिउ गुमान जे कीन्ह निनारा।
भा बटपार अलावलि दीना। सुख सोहाग मान जो छीना।
ढारि आफवित (?) सायर भरा। दारुन साहि कंत मोर हरा।
उन्ह सौं धाइ कहै को पारा। सब उमरन्ह ऊपर बरियारा।
अवर जो लिए जाइ उन्ह पाहाँ। उन बिन लिए आहि को काहाँ।

सबै आस ओहि साँइ का बाउर कहैं को भोर।
लेत न लागै बार तेहि का रे बहुत का थोर॥

[५६३ई]

प्र० १, २—

चौंकि उठी सुनि कुंभलनेरी। जनु ठग ठगन्ह ठगौरी मेरी।
सुख कुंभल देवपाल है तेरै। चितउर नग है रतन अभोरै।
का भावै मोहिं कुंभलनेरी। मोहि चितउर रतनागिरि केरी।
जा दिन मिलै आइ मोहि राऊ। ता दिन करौं अनंद बधाऊ।
जौं न होति रखवारि निसंखी। कैसे भेग मिलत मोहिं पंखी।
हिएँ सपथि मोहिं गध्रप केरी। मरौं मरनि होइ कंत कि चेरी।
सौं पापी तैं चंपावति रानी। पंथ देखाव अहा हीरामनि।

नैनन राखौं कुँजलहि अंडहि आगि बुझाइ।
ता दिन पलक करार चख मेरौं कंत के पाइ॥

[५६३ उ]

प्र० १, २—

का रानी रोवहु मन माहाँ। मेरवहुँ भँवर सदा जेहि छाहाँ।
चितउर महँ जो बसैं बटपारा। कुंभलनेर झाँकि को पारा।
जैसा सिंघल दीप तुम्हारा। तैसे कुंभल साजु देवपारा।
राखा खोरि सो अनबन भाँती। सुरँग घरवान लगे भहुँ पाँती।
कोट बरनि नहिं जाइ अपारा। मेरु कनक बिधि आपु सँवारा।
सुचैन पुरी आहि सब जोगा। घर घर कामिनि मानहिं भोगा।
जो ओहि ठाँउ पाव बिस्रामा। बहुरि न आइ मरै सो धामा।

जनु हरिचंद पुरी सोउ गरहीं (?) सब हाट।
कनक लेहिं नग बेचा रहहिं बिछाए पाट॥

[५६३ऊ]

प्र० १, २—

का कुमुदिनि तुम्ह पाट सुनावहु। जाहि भोरौ जेहि भोरए पावहु।
यह देवपाल कहा मोहिं छाजा। रतनसेनि मोर दुहुँ जग राजा।
पदुमावति मन महँ बिहँसानी। पिव देवपाल तुम कुमुदिनि रानी।
सुनु भावै बिख वाका दूजा। जेहि जो तेहि आन न पूजा।
सो पिव धरहु अनत कर धावौं। जौघर नाहिं तौ अनत न पावौं।
अब मोहि पिउ के परनि है भरना। आगे करहु धाइ जो करना।
रतन लीन्ह चितउर लेइ देवा। तबहुँ न तजौं मैं ताकी सेवा।

स्रम जल सूखा हेरत मगु प्रति रे देवस निसि भोर।
नैन सिराने हेरत सखि भूली चंद चकोर॥

[५६३ए]

प्र० १, २—

सुनसि कुँवरि जौ कहा हमारा। देखेउँ सात जो पिता तुम्हारा।
गंध्रपसेनि चँपावति रानी। जेन्ह घर महँ सिंघल सब जानी।
ब्याह कीन्ह जो गवनउ सारा। मही समद तोर चाह सँवारा।
राखु राउ मोर गंधप राऊ। तुम्ह पदुमावति अहहु बटाऊ।
यह चितउर देखउँ मैं तोरा। कुंभलनेरिहिं न पूजै जोरा।
जस लंकापुर रावन राजा। सो देवपाल कुँवर बिधि साजा।
हौं कुमुदिनि जो तुम्हरी धाई। करु मन भंग कि राखु बड़ाई।

गुन गंधप मोर जानै कुंभलनेर देवपाल।
चितउर हरा जो चतुर तो पदुमावति केदार॥

[५६३ऐ]

प्र० १, २—

का कुमुदिनि सुख चैन सुनावहि। बिना नाह मोहिं कछू न भावहि।

जौ रे पाप घट आपु संचारै। सुकृत धर्म कंत सौं हारै।
पलक न मार पलक भारि कंता। बैठे ढाल होइ ढील न संता।
बहुत डेराउँ धाइ मैं राती। मोहिं सौं पाइ गए बिन पाती।
सुनहु धाइ हिय डरहिं डराऊँ। कहाँ तुम्हार हैं। कैसे द्राऊँ।
अब एह बार लेइ अपना। मोहि करिहै निसि केर सपना।
तोरे कहैं हौं जे कंत हि भावै। बिना नाह को औगुन लावै।

मोहि भाहि डरपी अघी जेहि लाएउ जिय साथ।
राखै मान कि करै भँग हौं बिकानि ओहि हाथ॥

[५९३ ओ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६ (प्र० १, २, द्वि० ६ में यह छंद यथा ५९५ अ है)—

जौं पिउ रतनसेन मोर राजा। बिन जिउ जोबन कौने काजा।
जौं पै जिउ तौ जोबन कहे। बिन जिउ जोबन काह सो अहे।
जौं जिउ तौ यह जोबन भला। आपन जैस करैं निरमला।
कुल कर पुरुख सिंघ जेहि खेरा। तेहि थर कैस सियार बसेरा।
हिया फार कूकुर तेहि केरा। सिंघहि तजि सियार मुख हेरा।
जोबन नीर घटे का घटा। सत्त के बर जौ हिय नहिं फटा।
सघन मेघ होइ साम बरीसहिं। जोबन नव तरवर होइ दीसहिं।

राबन पाप जो जिउ धरा दुवौ जगत मुह कार।
राम सत्त जो मन धरा ताहि छरै को पार॥

[६०० अ]

प्र० १, २—

चढ़ी धाइ गढ़ चितउर सोई। खूँदत पँवरि तहाँ सो रोई।
आँसू चला रकत कै धारा। चोली भीजि भई रतनारा।
चकित भए नगर सब कोई। पैसत नग्र जो निकसैं कोई।
कहु जोगिनि तैं बिथा अपानी। माँगे दान देत है रानी।
खोए मुद्रा कि कनक जराऊ। खोएहु अधारी हेरत न पाऊ।

गए चकित चित फिरत न भावा। कै उडि आन काहू उपसावा।
थिर नहिं रहति उमगि भरि पानी। कहु जोगिनि काहे बौरानी।

के रे खसेउ कछु कर तें के रे बिथा किछु होइ।
भँवर भाव का जीय महँ पँवरि देत पग रोइ॥

[६००आ]

प्र० १, २—

अस दुख मोहि कीन्ह अँग दाहू। होइ रिपु कोटि धरै जनि ताहू।
हिरदै आगि नैन जल साँती। तेहि तें फिरौं जोगिनि भै राती।
जिय बरु जात जात जनि नाहाँ। कापहँ हेरौं जाउँ केहि पाहाँ।
पथिक न पावौं मिलै सँदेसा। का भा लाए आए सभेसा।
नाहिं भूख बासर निसि हरी। औ बिनु साँस साँच हौं खरी।
रोवत लीन भै अंग अँगारा। ऊभि पवन ते उहि भइ छारा।
जौं रे नाँह नहिं चितउर पावौं। एह तनु डाहि मैं खेह उड़ावौं।

जोगिनि नग्र पईसी लाए पिउ मग नैन।
जौं चातिक रट लागि थिर नाहिं करहिं ते बैन॥

[६००इ]

प्र० १, २—

सुनि सो बैन कोई नहिं सोवै। मानुस भूलि पंखि सब रोवै।
रोदन सुनि भा नगर अँदोरा एकै तुही कै पाँडुक बोला।
सद सुनि रोदन करै वह कागा। मरुदुम पहर पहर निसि जागा।
आपु उहाई जाग कोकिला। फिरा बौर पै स्याम न मिला।
ईंगुर रूप कीन्ह चख आँसू। हाड़ कंकोरि कीन्ह तनु माँसू।
ऊपर रात भितर तन स्यामा। खोरि खोरि मोहि डाहै कामा।
जेहि रे आगि तरिवर त्रिन जरई। सोई आगि मोरे सिर परई।

जरौं मरौं दुख पिय त्रिन अधिक चहै तन डाहि।
भै परचंड डाह तन टंक न होति भथाहि(?)॥

[६००ई]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१ अ है)—

सखी एक पदुमावति पाहाँ। तेइँ रे चाह पहुँचाई ताहाँ।
स्याम भँवर कहाँ मालति हेरा। अलिन्ह कीन्ह मालति पर फेरा।
जिवै नाहिं बिनु दरसन पाए। चंद चकोर दिस्टि जौ लाए।
एक सब्द सब तंत बजावै। सबै बजाइ आपु पुनि गावै।
गुपुत रहै कोइ देख न बाजा। अस रे ठाट कहि काहू साजा।
पाँच बार एक तंतुहिं लागे। एक सब्द पाँचौं उठि जागें।
लै लौकारि जो सरनि सराई। पाँच सब्द समागी गाई।

सबै तार एक ठाट महँ औ लाग किर जोटि।
सब संवाद स्रवन सब मोहै फिरि थिर गोटि॥

[६०० उ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१ आ है)—

पदुमावति जो सखिन्ह सों कहा। जोगिनि माँगि लेउ जो चहा।
कहहु जाहि धरमसाले नामा। जहँ सब अतिथि करैं बिसरामा।
पूँछहु जाति भाँति बेवहारा। कहा सो अबहिं कहाँ पगु धारा।
काहे बिरह भभूति चढ़ाई। कहु सखि जोगिनि केइ बौराई।
केहि कारन एह लाए भेसू। पूँछहि फिरि फिरि कहु उपदेसू।
कै गँवारि पिव सेव न जानी। कै गिरि हीन दसा सु रिसानी।
की एहि खोरि कि नाह गँवारा। जेहि ते निकसि लाइ मुख छारा।

कौन रूप कै संजम केइ एह देस निकार।
जाइ कहहु जोगिनि तें फिरि ग्रिह जाइ सँभार॥

[६००ऊ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१इ है) —

की रे केस सेंदुर भरि माँगा। बदन जो छार चढ़ाए अंगा।
बिहँसत दसन सो भा चमकारा। लौक खसी जौ बीज अपारा।
चख सोभित जनु अंबुज बारी। निसि भै जाग नैन रतनारी।

बास मलैगिरि तासु सवाई। ऐस सरूप आछरि अछवाई।
ध्यान तासु जनु जंगम जती। देखत जैसि जनकजा सती।
मुख कूँ भांड जो तासु सँवारी। सो जोगिनि अरु जनु धनु पारी।
दिस्टि समाधि लाए पिउ पाहीं। जनु पिउ बसै तासु के काहा।

हेरत फिरै सवाँग किए वैसे तासु कहा पीउ।
भोजन नीद सिथिल की लागि रहै बक जोउ॥

[६००ए]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१ई है)—

देखा जोगिनि चितउर चारी। दहुँ कैसी पदुमावति वारी।
औ तेहि भई मनहिं महँ संका। रही तवाइ टेकि करि लंका।
जलहर नैन जो पलक करारा। चल्हक मीन चमकै मद धारा।
चलु जल नैन कपोलन्ह भीजा। छीजा तासु स्याम जेहि रीझा।
अब जोगिनि जिअ अ:इ मझारू। कहिसि जाउ पदुमावति बारू।
खनहिं चलै खन जिअ भै होई। खनहिं अपोठ खनहि मरि रोई।
समुझि साहि की बचा कहानी। कैस फिरै जिजु पदुमिनि रानी।

लाइ छार मुख रात तन सरुझि चली जिअ सोइ।
दरसनि देखौं जाइ अब घलि बुझाइ जिअ रोइ॥

[६००ऐ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० २ में यह यथा ६०१उ है)—

जोगिनि कहा मँदिल महँ जाऊं। जहँ सुनौ पदुमावति ठाऊँ।
मिलौं रहस कै रंग बढ़ाई। करौं सुढ़ार लक गिव लाई।
परसौं तासु नैन भरि पानी। करौं आपु बसि पदुमिनि रानी।
एक बार जौ दरसन पावौं। समुझि तासु कर जोरि मनावौं।
फेरि फेरि मुख भसम चढ़ावौं। पिय समाद चहुँ ओर सुनावौं।
जापि बिभूतिहिं भसम चढ़ावौं। धै समाधि आगे पगु नावौं।
छार लाइ मुख बस्तर रंगा। पीय जिलाइ जगत मैं मगा।

हेरेउ भुवनि निकुंज धुव औ पंछी सब पाहँ।
होइ मोर गुर चितउर जौं रे मिलावे नाह॥

[६०३अ]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७,—

गउ मुख हरिद्वार फिरि कीन्हिउँ। नगरकोट कटि रसना दीन्हिउँ।
ढूढ़िउँ बालनाथ कर टीला। मथुरा मथिउँ न सो पिउ मीला।
सुरुज कुंड महँ जारिउँ देहा। बद्री मिला न जासौं नेहा।
रामकुंड गोमति गुरुद्वारू। दाहिन कीन्ह कैं बारू।
सेतुबंध कैलास सुमेरू। गइउँ अलकपुर जहाँ कुबेरू।
बरम्हावरत ब्रम्हालति परसी। बेनी संगम सीझिउँ करसी।
नीमखार मिसरिख कुरुछेता। गोरखनाथ अस्थान समेता।

पटना पुरुब सो घर घर हाँड़ि फिरिउँ संसार।
हेरत कहूँ न पिउ मिला ना कोइ मिलवनहार॥

[६०८अ]

प्र० १, २—

रोइ रोइ उपमा देइ सो रानी। बादिल त्रिनसौं किहौ धरानी।
दिस्टि तासु लागी भुइँ माहाँ। खवद टेरि पदुमावति पाहाँ।
जनि रोबहु रानी दुख भरी। अगिनि आँसु जरिहै सब करी।
तब लगि है रोदन पुनि पाहाँ। जब लहि मिलै न बिछुरे नाहाँ।
हम सब होइ बुझावहिं जीऊ। रोइ सोहाइ न पावहि पीऊ।
जौं सुदिस्टि करिहै करतारा। आवत तेहि न लागै बारा।
जौ सो घरी मिलन की होई। कोढ़ि लेक कोइ रहै न सोई।

कोटि ओट जो होइ तेहि औ दधि बुंद पहार।
किरपावंत क्रिपाल होइ आवत ताहि न बार॥

[६०८आ]

प्र० १, २—

क्रिपा सुनत पौढ़ा जिय रानी। नैन सूख जिमि सोहिल पानी।
धनि दयाल जिन्ह अमर डोलाई। सो दयाल हरि बंदि पठाई।
धनि दयाल बलि राजा छरा। धनि दयाल लंका सो जरा।

धनि दयाल दधि मथी मथानी। ऐसि बिलोइ खार किहु पानी।
किहे तुरुक कीन्ही दुइ जाती। और घर सै कत दूत बराती।
उन्ह ही रतन राउ बनि आवा। उन्ह ही साहि सिर छत्र टरावा।
उन्ह दयाल की बात निरारी। आप अनाह सौ करै कियारी।

भै असतुति पदुमावति सुमिरन कै मनमाल।
चख अंबुधि ठरकाइ कहँ रतन मिलावै दयाल॥

[६०८इ]

प्र० १, २—

सुनि दयाल सब सखि बिहँसाती। लै आँचर पोछे चखि पानी।
उन्ह का भार दोइ को ३.रू। उन्ह लेखे जग त्रिन जस हरू।
रहै गुपुत परगट सब ठाँईं। का देखौ कोइ रूप गोसाईं।
बरनि न जाइ सुंदरता तासू। पदुमिनि रुकमिनि सो जग दासू।
चंद्रकला सो दरसन पावौ। द्रौपदी रबि दिस्टि न आवौं।
ओहि कै रूप कोइ लखै न पारै। ससिहर मसियर त्यौं जिउ सारै।
अरु जेह ओर गहै कर वारू। पलकहिं बार पलक कर बारू।

उनही जनक हराइ कै फेरि मिलावहि स्याम।
उहै अजोध्या लंकपुर बसि रावन भै राम॥

[६११अ, आ, इ]

तृ० २ में छंद ६११.३ और '४ के बीच निम्नलिखित सत्ताइस पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं—

हम सेवक तुम्ह दोइ गुसाईं। असतुति कौन करौं कहँ ताईं।
जिनि कछु चिंत करहु मन माहीं। जगमग राज साज सुख छांहीं।
हम जस भीम पाइ कै छारा। तुम्ह परसाद बिधि कीन्ह पहारा।
होइ कुसल बलि आवहिं सोई। जिहिं आवहि राजा सुख होई।

तुम्ह जिय जौ लहि सेस औ धुवहू अचल अडोल।
माथे छत्र सोहाग का बिहँसि चेरि कल्लोल॥

उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार आव जौ रानी।*
हम ,सेवक कै जानहिं सेवा। सेवा लागि जीव पर खेवा।
यह जिउ नेवछावरि पहिं रानी। जुग जुग जगत राज रजधानी।
भाग सोहाग सदा सुख होई। तोहि सरि होइ न पारै कोई।
सीता राम राज तप भारी। अब सो हाव भाव संसारी।
हम सेवक सेवा कै जाना। सेवा सभै परापति माना।
आयसु अैस सीस पर सारा। तुम्ह पायन्ह तर माँथ हमारा।

जुग जुग आव नाथ तुम्ह राज साज सुख भेव।
महाराज घर आवहिं तुम्ह स्वारथ हम सेव॥

पदुमावति असतुति कहि कहा। बोलहु बोल बचन जस चहा।
तुम कहँ दाहिन होइ बिधाता। आवहु जियत होइ मुख राता।
तुही पुरुख पुरुखारथ पूरे। महाबीर रनधीरन सूरे।
जो परकाज लागि कोउ धावा। तेहि काजहिं बिधि आपु पुरावा।
परसुख लागि दुक्ख जो सहा। तेहि दुख अंत सुक्ख धन लहा।
साहस सौं लच्छन सिधि होई। साहस करत न बहुरै कोई।
साहस करत अहो मोहि ताईं। सिधि अब तुमहीं देउ गुसाईं।

साहस जहाँ सिद्धि तहँ लच्छन देखहु बूझि।
परकाजी पर स्वारथी अमर भए रन जूझि॥

गोरा बादिल दूनउ बीरा। पदुमावति करि कै मनधीरा।
मन सुख जो नहिं दौल (?) चढ़ाई। बिधि प्रसाद घर आवै साईं।
सुनि साईं कर नाम सुहावा। पदुमावति जानहुँ जिउ पावा।

[६११अ[1]]

प्र० १, २, द्वि० ४, ५, ६, ७—

राम लखन तुम्ह दैत सँघारा। तुमहीं घर बलभद्र भुवारा।
तुमहीं द्रोन और गंगेऊ। तुम्ह लेखौं जैसे सहदेऊ।
तुम्हीं जुधिष्ठिर औ दुरजोधन। तुमहिं नील नल दोउ संबोधन।

---

*यह पंक्ति अन्य प्रतियों में ६०७.७ है, और वहाँ पर तृ० २ में भी है।

परसुराम राघव तुम जोधा। तुम्ह परतिज्ञा ते हिय बोधा।
तुमहि सत्रुहन भरत कुमारा। तुमहिं क्रस्न चानूर सँघारा।
तुम परदुम्न औ अनिरुध दोऊ। तुम अभिमन्यु बोल सब कोऊ।
तुम्ह सरि पूज न बिक्रम साके। तुम हमीर हरिचँद सत आँके।

जस अति संकट पंडवन्ह भएउ भीवँ बँदिछोर।
तस परबस पिउ काढ़हु राखि लेहु भ्रम भोर॥

[६१६अ]

प्र० १, २—

कैसेहु कंत फिरै नहिं फेरे। चितउर आगि परी धनि केरे।
उठे सु धूम नैन करुवाने। चुवहिं आँसु रोवहि बिहँसाने।
भीजै हार चीर औ चोली। रही अछूति कंत नहिं खोली।
भीजहिं अलक चुवहिं गति मंदे। भीजहिं भँवर कँवल रस फंदे।
चुइ चुइ काजर आँचर भीजा। निठुर नाह कैसेउ न पसीजा।
सबै सिंगार भीजि भुइँ चुवा। छार मिला जौ कंत न छुवा।
चला बिछोइ हिए दै डाहू। निठुर नाह आपन नहिं काहू।

रोए कंत न बहुरै तेहि रोए का काजु।
दुहूँ पवाँरे हे सखी मँदिर बाजै आजु॥

[६२१अ]

प्र० १, २—

कोपि चला नगसेन कुमारू। भीमहु चाहि बीर बरियारू।
कँवलसेन गढ़ ऊपर राखे। रहै न मनुहारनि पै राखे।
बिनि बिनि कुँवर लीन्ह बरिवंडा। सूर बीर अति बल परचंडा।
औ सब कटक कँवल सँग राखा। मूल रहै तौ उपजै साखा।
बत्तिस सहस कुँवर चलबली। जनु उमड़े मैमंत सिंघली।
चढ़ि चंडोल कुँवर छुइ बैसे। प्रति चौडोल तुरै दुइ तैसे।
काज की बेर सिंघ अस गाजहिं। सौ सौ तुरुक सौं एक एक बाजहिं।

जैसे प्रसेद महँ भीजे पदुमावति के चीर।
तेते बान महँ लीन्हे भौंर न छाँड़हिं भीर॥

[६२६अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

राजा अगमन दीन्ह चलाई। बादल ठाढ़ खेत भा जाई।
पहुँचे मलिक पीर औ बेगा। नेज बाज औ नाँगी तेगा।
भैया बैठ साँगि कर गहे। चमकहिं खरग माहँ बहबहे।
परी चोट तह बाँसा सारू। बाजहिं दुंद भयावन मारू।
बोलहिं बिरिद दसौंधी भाँटा। जुरे आइ हस्तिन्ह के ठाटा।
बादल कटक फूट तस पारा। बिचलि चला कोइ बाँधनवारा।
साहि पछारै आपुहिं खरा। जाइ न पावै हिंदू धरा।

उमरा खान जाइ जब पहुँचहिं बादल देइ चलाइ।
तब रिसि सौं बगमेल होइ दीन्हेहु साहि धँसाइ॥

[६२६आ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

बादल पलटि सिंघ होइ गूँजा। भाजि चले हस्तिन्ह के पूँजा।
अगुमन रिसि सौं पहुँचेउ साही। बादल तमकि साँगि सिर बाही।
ठाठर टूटि सीस महँ फूटी। साहि तेग बादिल सब छूटी।
मलिक जहाँगीर अति बलबीरू। सवा सेर कर जाकर तीरू।
मलिक जहाँगिरि बिचि होइ आरा। बादल खरग मलिक सिर झारा।
मलिक गुरुझि सों बादिल मारा। मलिक बार वोढन सो टारा।
बादिल कीन्ह कटारी घाऊ। मलिक झूमि पकरी करिहाऊ।

दोउ झुटियाउझ करि लरे परे धरनि बहु बीर।
बादिल मार्‌यौ मलिक जब झोंकरी परि तब मीर॥

[६२६इ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

बादिल मलिक जहाँगिरि मारा। परी भीर आपुहि पटतारा।
सिंघ की नाईं बादल घेरा। बाट भई दल की चहुँ ओरा।
अब फेर बादिल बल दूना। राउत गनिअ चाउ जब दूना।

ओड़न खरग छीन कर गहा। जेहि मुख धावै कोइ न रहा।
सूर सहस दस कुँवर के संगा। दौरि परे जस दीप पतंगा।
जेउँ सरवर महँ बूँद अमाहीं। अैस अनि महँ कुँवर समाहीं।
जस सरदूल देखि गज जूहा। धावहि साहि अनि सामूहा।

रुंड मुंड मंडित महि गज जूझे असरार।
कर कर सौ अरुझाने धर धर सौं सिरमार॥

[६२६६]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

हटि नगसेनि सो बादिल छोड़ावा। तुरै आनि धरि बाँह चढ़ावा।
गल गाजे तब दूनउ बीरा। अब जानब को बादिल भीरा।
माहि क सूत सो अति बरवंडा। मुहमद साह धरी भुजदंडा।
गुरु जहगीर कुँवर कहँ मारा। टूटि कमर तूरिय तेहि धारा।
गिरतेहि कुँवर हना हठ साँगी। निकसि जेब फूटी दुइ आँगी।
खैंचत साँगि हाथ रह डांड़ा। कुँवर तमकि तब काटेउ फाँड़ा।
मुहमद साहि तेग असि बाही। वोढ़न फूटि टूटि सिर राही।

कुँवर हनेउ तूरिय तब जनु चारिउ हने पाउ।
गिरो साहि सुत रन महँ तब जो कहानेउ राउ॥

[६२६७]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

आपु साहि सरजहि लै आवा। सरजैं मुहमद साहि छँड़ावा।
परी मारि अति कठिन अपारा। गरजहि सूर सूरहिं परचारा।
टूटहिं धार उठहि बहु कीका। सलिता चली स्रौन अस बीका।
ठाउँ ठाउँ सब दल भगि रहा। घूमहि धाइ धरनि गहि रहा।
एक तें सीस मीच सो मारहिं। एक ते गहि गहि धरनि पछारहिं।
एकते खरग कंठ महँ देहीं। काटहिं माथ हाथ कै लेहीं।
एक ते उठहिं गिरहिं बिकरारा। एक ते रोस गहैं कर छारा

एक ते धावहिं रुंड मुंड बिनु उठहिं कमंध असूझ।
है गै नर मिलि एक हुए मासु परे नहिं बूझ॥

[६२६ङ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

एक ते धावहिं लटकहिं आँतैं। एक ते बिहवल बकतहिं बातैं।
एक ते काँख गहे सिर धावहिं। एक ते दुइ फरकतहिं जोवावहिं(?)।
एक ते टूटि टेकि गहि बैठहिं। एक ते मारु मारु कै पैठहिं।
एक ते बैठे बिधुन सरीरा। एक ते स्रौन चुवहिं जनु नीरा।
एक ते लोटहिं महा भएवना। एक ते गाजहिं भादौं सवना।
एक ते झूम जानू मदमाते। एक ते परे रुहिर रँग राते।
एक ते सीस हँसहिं ठटराई। एक ते परहिं अपछरा आई।

तौ लहि निबहा राजा दिस्टि पए नहिं घोर(?)।
बादिल कुँवर लीन्ह आगे कै जाइ मिला जहँ गोर॥

[६२७ अ आ]

तृ० २ में ६२७ ४,'५,'६,'७ को बीच-बीच में रखते हुए दो छंदों की अतिरिक्त पंक्तियाँ इस प्रकार आती हैं—

हठि कै बादल चहै न चला। तब गोरा सिर धुनि कर मला।
मैं पदुमिनि सौं बोलि जो कहा। मैं आनब राजा जहं कहा।
मरनौ जूझि परौं एक ठाऊँ। जाइ बचन तौ रहै न जाऊँ।
गोरहिं समदि बादलि गाजा। चला लीन्ह आगे कै राजा।

बादलि तब राजहिं लै कै भा चितउर के बाट।
गोरा गाजि ठाँवँ नहिं सो मैदान सुहात॥

कुँवर सहस सब गोरा लीन्हे। और बीर बादिल सँग दीन्हे।
गोरा उलटि खेत रन माँडा। जस नायक रन रावत माँडा।
भा परबत सम ठाढ़ सो गाढ़ा। रन कहँ देखि चाउ चित बाढ़ा।
फिरे कुँवर मन किए उछाहू। आगे कहाँ गनै नहिं काहू।
बाँधि हिए सत साता पूरी। खेलि फाग रन चाँचरि जोरी।
लाख लेखि वह कीन्ह सुराई। एक मतैं भै कुँवर सहाई।
धनि गोरा धनि रावत महा। जा जानहिं जगदेव सौं कहा।

धनि धनि कुँवर सूर सब सुगंधे रन राव (?)।
होइ सनमुख भे ठाढ़े बेगि आइ दोउ पाव॥

चहुँ दिसि आवा टूटत भानू। अब एहि गोइ भई मैदानू।
भा भुइँचाल चलत सुलतानू। धनि जेइ इनके सब तुरकानू।
दल बादिल अस चला अपूरी। परबत टूटि मिलहिं सब धूरी।
कोई कह फेर कोई डर भाखा। धाएउ कटक छतीसौ लाखा।
धनि गोरा औ कुवर सहाई। जिहिं टेके एहि अनी सहाई।
भई दुहुँ कटक सनमुख दीठी। गौन न चहै हार कै पीठी।
गहि कैं धनुप बान तस मारा। रहे लपकि दूनौ तेहि पारा।

[६२६अ]

प्र० १, २, द्वि० ३, ६, ७—

आजु अँगद होइ रोपौं पाऊँ। बंदि हौं ताहि छड़ैहै ठाऊँ।
आजु दुसहस बाहु बल बाढ़ा। होइ धू अचल खेत महिं ठाढ़ा।
आजु हनुमत होइ मारौं हाँका। रसना सेर सहज जनु ताका।
आजु होइ लंकेसर दस सीसा। मारि साहि कौं घालौं कीसा।
आजु होइ साका बिक्रमजीता। जीतौं साहि अलावदि कीता।
आजु होइ अरजुन भीम भुवाला। भारत माहँ करौं सिव माला।
आजु सुमेर होइ रन कोपौं। उमड़ा समुँद अगस्त होइ रोपौं।

गोरा भौंरा रन चक्कवै रन दूलह मोहिं नाम।
आनि बियाहौं दल दलौं सीस सामि के काम॥

[६२६आ]

प्र० २ (किंतु यह प्र० १ में यथा ५१३ अ है)—

देखि कटक नहिं जाइ अपारा। धाए बीर सो कारि जुझारा।
पूरौं चितउर लंक कि नाईं। साका भभीखन राज भवाई।
रावन रतन राम कै खेलौं। सैना सहित समूह होइ पेलौं।
समुद बाँधि परबत पर लीन्हे। नैन लागि यह चितउर दीन्हे।
अब हौं अलादीन क्यौं टरौं। पदुमिनि सनि सैरिंध्री करौं।

रतन राहु अब सौंह न मोरौं। अलादीन होइ धनुख टकोरौं।
सेना सहित राम होइ धावौं। लंक हेत चित बिलम न लावौं।

इंद्रजीत कहँ लच्छन हौं रावन कहँ राम।
भए भभीखन चेतनि का पावै बिसराम॥

[६३७अ]

तृ० २—

देखत साहि भयो पछितावा। अैस पुरुख कस मारि नसावा।
पुनि सुलतान आयसु सुनि कीन्हा। औ सब कहँ बीरा अस दीन्हा।
जैसे जाइ न पावै राजा। तुरुक रिसाइ पाछि नहिं बाजा।
औ जित कुँवर जियत हैं आछे। ठाढ़ भए बादिल के पाछे।
भा परलौ अस सबहीं जाना। काढ़ा खरग सरग तर आना।
जो जासौ होइ सनमुख भिरा। होइ बगमेल जूझ सो गिरा।
ठाठरि फूटि टूट सिर तासू। जनु सुमेर सौं टूट अकासू।

जाइ न पावै राजा औ बादिल रन राव।
बेगि दुवौ हथियावहु जैसे करत रहाव॥

[६३७आ]

तृ० २—

औ राने जे करहिं तराहीं (?)। ते मोपै तस जाइ न कहीं।
साका कटक टेकि भै ठाढ़े। भै पहार भार लै गाढ़े।
है भै सेन जो कटक भलाई। जिमि सैयद मेदिनि अधिकाई।
जो चह होइ तस खेल न आवा। हिंदू तुरुक जो चह तस लावा।
बाढ़ ते उतरि आनि जो आए। बाजहिं सोइ चले अगवाए।
बादिल लै राजहिं गढ़ बाजा। चितउर गढ़ सो बिचित्र(?)सम साजा।
खरग नवहिं दौवानि दिखानी। परहिं बान जिमि बरसै पानी।

हिंदू तुरुक सु बाजे सनमुख फिरे बिचारि।
लै आयौ बादल घर राजहिं खरग सँभारि॥

[६३७इ]

तृ० २—

बरनौं कोटि गाढ़ गढ़ भारी। बज्रसिला गढ़ लागि केवारी।
अस गढ़ सिरिजा सिरजनहारा। कब उतंग तस बाढ़ पहारा।
अगम बाँक गढ़ घेरि सो खाईं। जाकर बहुत घेर गहराई।
चहुँ दिसि खोह परी तस बाँकी। काँपै जीव जाइ नहिं झाँकी।
जो तह परै न निकसै पारा। गढ़ कोट जम ठाढ़ पहारा।
तस बिधि बाहन जोरि निरावा। जिसु आए जुरि करहिं बनावा।
अति उतंग साजे परवाजे। दो केवार सब बज्र के साजे।

तस गढ़ गाढ़ा साजि कै रचे बुरुज तेहि ठाउँ।
राज बुरुज का बरनौ जस उत्तिम ओहि ठाउँ॥

[६३७अ[1]]

प्र० १, २, द्वि० ३, (तृ० १)—

चले प्रान गोरा गिरु बाटा। उतरि तुरिय ते धा जो भाटा।
दलपति राउ भांट कर नाऊँ। जैनराव जाना मव ठाऊँ।
धरि गोरा कोरा कै लीन्हा। बिरद बोलि बह अस्तुति कीन्हा।
तुरुक कहै गोरा सिर याटा। मारौं ताहि सीस लहु फाटा।
कोई चाहै पावन छाहाँ। दल की पति राखी रन माहाँ।
जेहि क सामि सरजा अस जूझै। तेहि कहँ जियन कौन बिधि जूझै।
अखतियार सरजा क खवासू। एकै तेग गनै रन तासू।

दब दबाइ दलपति कहँ दौरे लटपटाइ रहे खेत।
सामि काज जूझे दोउ कै राता मुख सेत॥

[६४०अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

नागमती अँग माइ न खरी। आइ पाइँ लपटाइ कै परी।
तुमते हम लाखन्ह बर लहा। कनकोई कौड़ी आठ न कहा।
लाख टके कर जो अस होई। बिनु गथ हाथ लेइ नहिं कोई।

बहुरे नैन देखि भै जोती। पानिप बहुरि चढ़ी नग ओती।
बहुरे श्रवन सुनत मधु बैना। बहुरे चाइ चित्त सुख चैना।
बहुरी नीम भूख रस रसा। कुँजरा जगत जानु फिरि बसा।
बहुरे प्रान बास जिमि पावा। बहुरि तुचा पिउ जिउ घट आवा।

अंग अंग सब बहुरा बहुरि भएउ औतार।
तखन्ह सौं (?) माजि कै नैनन्ह ते न उतार।

[६४०आ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

बादिल गिरिह दुंदुभी बाजा। प्रानमती कर खोडस साजा।
मंगल बिरद बरनि कत जाई। हस्ती चढ़े आइ ग्रिह माई।
नेवछावरि काजा सो माता। पहिराए पहिरन सब राता।
कुटुँब सो आइ मिले रहसाता। अंदर कै बैसे बिहँसाता।
अंब्रित पाँच मेले बहु दीन्हा। जो जेहि तेहि क मान तस कीन्हा।
मँदिर सेज बहु भाँति सँवारी। पौढ़े जाइ जहाँ चित सारी।
प्रानमती आरति लै आई। प्रानौ चाहि अधिक जिउ भाई।

गही बाँह बैसारि सेज पर सगढ़ अलिंगन देइ।
अलक भुवंगिनि कर गही अधर अमी रस लेइ॥

[६४०इ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) —

बादिल आपु कुँवर भुज पूजा। जै जै भुज पुनि बिक्रम दूजा।
जै जै भुज नमसेनि कुमारा। जिन्ह भुज छतिसौ लाख बिदारा।
जिन्ह भुज गज सूँडा फल पेला। जिन्ह भुज बीर परिग काहि मेला।
जिन्ह भुज सँकट छोड़ावा मोहीं। जिन्ह भुज रहे सिंघ रन कोही।
जिन्ह भुज भरत अंग वा कोपी। जिन्ह भुज जाँघ अँगद होइ रोपी।
जिन्ह भुज अँग नित सैन सँवारा। जिन्ह भुज मुहमद साहि पछारा।
जिन्ह भुज साहि अलावलि मोरा। जिन्ह भुज चितउर राज बहोरा।

ते भुजराज गले लै वा भेटे हिरदै लाइ।
कँवलसेनि गहि उर लपटाए आइ गहे जनु पाइ॥

[६४१अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

खँडित कपोल दसन रस लेई। सुरति माँग वह सुरति न देई।
कंदै हंस मान कर करुना। नवै न नाए जोबन तरुना।
रही समाइ गले जनु माला। महा चतुर बल अति रस बाला।
लागे नख कुच मंत उभस्थल। जेहि डर छपे आइ तजि असथल।
दुऔ औनि सनमुख होइ रचीं। नाभिहि नाभि लाइ जनु मचीं।
रहै लपटाइ गात जनु एकै। दूसर निरखि जाइ नहिं सकै।
परी सो स्वाति बूंद पिव बरसा। तन पलुहा नौतन जग दरसा।

गौने गौनि जो पिउ गए साल रहे हिय बीच।
चुंबक चुँबन सुरति सौं काढ़ि अमी रस सींच ॥

[६४४अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

इहाँ की धार हनै देवपालू। बाँधौं बलिहि जो बैठ पतालू।
जौ समुंद राखै देइ हाथी। लै आवौं कारी जिमि नाथी।
जौ भगि जाइ इंद्र के पीछे। जीतौं सहित ऐरापति पीछे।
जो इंद्र सहस तो नैन देखावो। फोरौं नैन जाइ कहं पावौं।
सहस बाहु होइ सहसौं भुजा। बाँधौं कहाँ जाइ भजि दूजा।
जौ निसियर होइ दरस सिर धरौ। काटौं रुंड मुंड भुइँ परौ।
अहुठ बज्र होइ बरिसै सारू। होइ अगस्त सोखौं देवपालू।

बरखा जाइ सरद रितु लागै तुरियन्ह परै पलानि।
उवै अगस्त जु जल सुखै सुखै पवन औ पानि ॥

[६४४आ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

गौन सुदिन पदुमावति पासा। नागमतिहिं पिय केर पियासा।
भइ निसि नागमती पहँ आए। नागमति स्वाति बूँद जनु पाए।
बिहँसहिं सम आलिंगन देहीं। पान्हि खँडि अधरन रस लेहीं।

खिनक हँसहि हँसि कै कँठ लागा। खिनु करि हँसी सबन्हि सुख लागा।
दुख कहि उरध साँस मन मागहिं। सामी पास न कबहूँ खाँगहिं।
अति आनंद हितु कै पिय बरसा। तनु पलुहा नौतन जग दरसा।
नव जोबन फिरि नइ होइ काया। खोवा रतन फेरि कै पाया।

सब निसिं रंग रहस महँ करवट भएउ बिहान।
प्रात उठहिं असनान कहँ कर बीरा मुख पान॥

[६४४इ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

पान खात बिहँसत गौ सभा। बैठे रतन मँदिर अठखँभा।
दहिनि भुजा नगसेन कुमारू। बाँईं कँवलसेन बरियारू।
दहिने तेहि ते राउ बादिला। कँवल ते गोरा सुत साहिमला।
भैया बेटा बैठि ओरगाना। उँचगर बिरिद बोल ओहि बाना।
इंद्र सोस भो देखि लजाई। चाँद के निकट तरई सब आईं।
तुरिय जो दै दै सब पहिराए। दस गुन ओरग बगुराए।
बादिल कहँ चौधरिया दीन्हा। औ गोरा सुत कहँ बहु कीन्हा।

दान दीन्ह अगनित अस राँक रहा नहिं देस।
दिस दिन गीत निरत ते भाव आन नहिं भेस॥

[६४४ई]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

एक पहर निसि निरित करावा। सभा बहोरि मँदिर पहँ आवा।
देखि मँदिर पदुमावति केरा। परगट गुपुत जासो मन मेरा।
चित से ध्यान टरै नहिं कैसेहु। चलत खरेहु पुनि बोलत बैसेहु।
तन मन धन पदुमावति जीऊ। जियन के ठौर जानि पिउ पीऊ।
एक बिनती औ पीउ परारा। उतरि सेज सो कीन्ह जोहारा।
कर गहि सेज बैठि लै किया। मुख मोरे कहँ छाँडौ पिया।
बिहँसत गाढ़ अलिगंन कीन्हा। मान छूट पर पिय कहँ लीन्हा।

अधर अधर सो उर उरते कटि नाभिहिं नाभि।
चोप चिहुटि अस होइ मिले जो समुझि परै नहिं काभि॥

[६४४उ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

पिय के समिप पावस रितु आई। घटा गरजि तरपी अति भाई।
स्याम घटा मों बग की पाँती। पहिरे कुसुंभी सोभ रँग राती।
कबहूँ हँसहि कंत अँग मोरा। अति सोहाग बोलहिं पिव कोरा।
कबहुँ सेज पर बैठहिं जाई। करहिं भरनि तेहि लाग सोहाई।
परत बूँद लागत कस नीके। फूल झरी खेलत जस जीके।
रचि चंदन कहि सेज नचावहि। सुरस बिभास मलार ते गावहि।
रीझै घन बरसत असुवाती। नर परवीन की कौन गनाती।

मेह बरिस बिख धारा दीपक बरहिं छँछार।
मिलत सुरति रति बाढ़ै बैसक करहिं अपार॥

[६४४ऊ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

प्रीतम पासु मास जड़ काला। नवल नेह नित जोबन बाला।
हेम के भेस जनम लिय कामी। सबही सोभ भई असि बामी।
पियहिं पेम मा बालहिं बाला। चयन अधर चख केर पियाला।
जेवहिं पाँच अंम्रित बहु भाँती। पान खाहिं जागहिं सब राती।
खाहिं सुगंध सुबास लगावहिं। सुनहिं नाद और नितं करावहिं।
सारि सेज फूलन सौं साजहिं। लटपटात सो अधिक बिराजहिं।
गात ते अंतर छिनौ न भावै। अंकमालि कै लागि जगावै।

देखब सुनब कहब रस तन मन रही न गत्ति।
भजि पदुमावति रतन भो रतन सो पदुमावत्ति॥

[६४४ए]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

रतन साथ आवौ धुपकाला। अंग अरगजा परम रसाला।
सीतल मँदिर अनूपम बासा। सेत सेज सौं पालक डासा।
सीतल राठा कठै अरु सारँग। बिना हाथ को रहे न नारंग।

रबि ढलिके सीतल अति छाहीं। करहिं कलोल बैठि परछांहीं।
खलहल लेहि लाल औ लाला। खोलि कै पहिरहिं फूलन माला।
पिय तिन तोरि नौलासी दीन्हीं। नारि बूँदि गेंदिरस लीन्हीं।
तैसि निरमली निसि उजियारी। आलिंगहिं फिरि फिरि पिउ नारी।

परम चतुर दोउ परम सुख परम हेतु हितु पीउ।
निति समीप औ हँसि मिलनि पावहिं धनि धनि जीउ॥

[६४४ ऐ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

राजहिं अति देखत नित भावा। साँझ होइ तौ निर्त करावा।
औसर पाँच नाच नित होई। नतवत सा भूला सब कोई।
तंति बेतंति घन सिखर बजावहिं। छंद प्रबंध धुरंधर गावहिं।
मंठ सरमंठ गीत झनकारहिं। धुरपरु संकर मति औ मारहिं।
षडज रिखभ गंधार जु धमा। धैवत अरु निषाद सुर पँचमा।
नाभि ग्राम तिय कंठ कपाली। एक ताली कठताल अठताली।
सोरह सहस नाद होइ तहाँ। आडव षाडव सपूरन जहाँ।

तउ बाला औ सुरगंध गावै पोत सुदेसी चाल।
नाचहिं तब तिर पाउर थिरकि लेहि मन छाल॥

[६४४ओ]

प्र० १, २, द्वि० ७—

पुरुस नाच नाचहि अति बाँका। नेम मैं होई थिर मन थाका।
ससिहर कला सिंगार बनि अंगा। भूषन भान कला दुपरंगा।
कछनी जटित जराउ जगमगी। रति औ तासु उपमा तरगी (?)।
नखसिख सोभैं केरि सँवारी। मधुलितु बास तजो फुलवारी।
नाचहिं नाच बाज गहगहा। देवता ठगि रहे मानुस कहा।
कँवल जानि कुच ऊपर बैसै। बाँधा बास बेधि कर तैसै।
मुख मोती कर चक्र भवाँवहिं। सीस कलस पग नाचत आवहिं।

जस जस सीस चढ़ावहिं याकुल ब्याकुल होइ।
साँस साधि ढहि पौन धरि धरि पटिकिम्ह सोइ॥

[६४४ औ]

प्र० १, २, द्वि० ७—

गति रीझे जहँ नाच महँ भला। सो सब करहिं अनूपम कला।
परस परी औ चित औड़िया। आड़िय अड़बर नाच पौड़िया।
भैरोचंद नालिचंद नाचहिं। अधर अंग जानहु धरि टाँचहिं।
राधा कान्ह पुलक छंद लावहिं। अधर नारि नाटे सुभ गावहिं।
कटरी गुन संगीत हत जेते। ते गावहिं नाचहिं थातेते।
सुरंग निरित ध्यान जे तहहीं। ताल ध्याइ सब्द सब कहहीं।
उपजहिं तान रंग रंगरंगा। नाचत अति झनखात सुरंगा।

अस औसर निति देखौं मन मोहन बहु भेख।
नायक जैस नचावहिं तस तस नाचहिं सेख॥

[६४४ अं]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

पदुमावति सो रंग रस मानै। नागमती सु प्रीति बहु ठानै।
पदुमावति कह मैं सब कीना। नागमती कह रंग हम भीना।
जो जैसेहिं सो तैसेहिं मिला। कबहूँ मौन रहै रस खिला।
पुरुष सो बानि पानि अस होई। जेहि रँग मिलै ताहि रँग होई।
राउ राँक कोउ दुखी न देखिय। धरमराज सबही कर लेखिय।
बहुत देवस सुख भूँजेन्हि राजू। नेगी सब चलावै काजू।
कोड निरित सुख खेल सब भावा। दुख की बात न कोइ सुनावा।

जस दुख देखि साहि बनि बिधि सुख दीन्ह अपार।
जेहि कारन कोइ ध्यावै सो पुरवै करतार॥

[६४४ अः]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

बिधिना सत्रु न सिरजै काऊ। सत्रु न छाड़ै आपन डाऊ।
रतन क सत्रु मह्रा देवपालू। मिटै न कबहुँ सत्रु हिय सालू।
दूती साह पठाए बेगी। जाइ साहि लै गुदरहु नेगी।

चितउर चहूँ ओर असि बाँकी। पूरुब ओर ताकि मैनाकी।
तेहि नाकी चढ़ि रतन सँहारौं। साहि के काज पाइ प्रति पारौं।
पदुमिनि पकरि देउँ तौ साँचा। बरम्हा बिस्नु सीव ही बाँचा।
दूनउ कुँवर जियत धरि देऊँ। बादिल सहित प्रतिंगा लेऊँ।

आई साह गढ़ छेकहु बिलम न लावहु नेक।
सैं रनिवास पदुमिनी चितउर तोरि देउँ दँड एक॥

[६४५अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७,(तृ० १)—

सुभट सुभट सौं महि परचारै। कमनैतहँ कमनैत हँकारै।
साँगि साँगि सौं उठै ठंठारी। खाँडहिं खाँड होइ झनकारी।
कमनैतहँ कमनैत बिदारैं। छुरी छुरी सौं एक एक मारे।
गुरिझ गुरिझ सौं लागै बाजा। जानहुँ तरपि परै रन गाजा।
सिर सिर सौं पर ठेलिक ठेला। बीर बीर सौं पेली क पेला।
सुँडाहल सुंडाहल पेलहिं। गहहिं जाहि ताहि गहि मेलहिं।
कंध कमंध गिरै असरारा। सलिता स्रौन बही जु अपारा।

भएउ महा भारत रन परेउ सुहृद सो बीर।
गीध कराल सियार सब वहि बहि लागहिं तीर॥

[६४५आ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १)—

महा मसान भयावन परा। स्रौन क सरवर लोथिन भरा।
हा थितिपाल (?) भुजा पवनारू। कया सूखि उलथहिं जेहि भारू।
पुरइन कीच कँवल भौ सीसा। अवध चमंक मंछ बहु दीसा।
लोथिन्ह मगर गोह उतिराहीं। रथ बोहिथ जनु भौंर भवाँहीं।
केस सेवार आँत बहु नारा। प्रात के घर बहु पहुप पसारा।
जंबुक खेलहिं चभका चूभा। परहिं भूत लोथिन्ह पर ऊभा।
बोल मसान सो उठै अँदोरा। मारु मारु सुनिए चहुँ ओरा।

भैरो भूत असनान करि रुद्र बजावहिं घंट।
चरनोदक जोगिनि पियहिं पूजा कंटक कंट॥

[६४६अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, (तृ० १)—

नैन उघारि कुँवर हँकराए। दुनौ कुँवर छाती लै लाए।
बादिल और साहिमल बोले। राम नाम लै जीभ उघेले।
आए सब नेगी हँकराए। भैया बेटा ओरगान बोलाए।
कँवलसेनि कहँ टीका दीन्हा। भार सबै नगसेन सु लीन्हा।
तुम्ह नगसेन पिता के ठाऊँ। मोहि गए रहिहौ एक भाऊँ।
राज सरज सो सौंपौ बादिला। किहेहु नेति जस कीन्ह आदिला।
भरि भरि नैन सबै कँठ लावा। दिया पान बाहर बहुरावा।

बोले सब रनिवासै दुऔ रानी कँठ लाइ।
सोइ करहु रहै जस जैसे हम तुम्ह साथहिं जाइ॥

[६४७अ]

प्र० २—

नागमती पदुमावति कहा। तुम्ह सो सब पावा जो चहा।
तुम्ह सामी परदेस सिधारू। अब हम कौन जु करैं बिचारू।
जौ तुम्ह तौ हम भाव सिंगारा। तुम्ह बिनु सब अलँकार भै छारा।
जौ राजा तुम्ह कह अस बानी। बिना सँग जीऔं क्यूँ धनी।
नागमती रोदन अनुसारा। घर घर नगर भएउ झनकारा।
रोवै मालिनि गाँथै फूला। बरइन होइ अधिक तन सूला।
रोदन करहिं आइ सब चेरी। अब एहि मँदिल करै को फेरी।

रोवैं सबै जु नारी घर घर भा झनकार।
झरैं सबै लै फूल सो कहहु कहै को पार॥

[६४७आ]

प्र० १, २ : (किंतु प्र० १ में यह यथा ६५० आ है)—

सब राजा मिलि आइ पुछारी। निस्चै यह राजा जे सिधारी।
आवहिं जाहिं सब बोध कराहीं। रानी अंध बहिर भै जानी।
यह जग ऐसा आहि बिहूना। जैसे मिलै पानि महँ चूना।

कोइ आपन जग कहै न कोई। जौ बिसाल कर मानिक होई।
पानी क बूँद अैस परिवारा। रतन करहि बाहर तेहि बारा।
कागज पानी जैसे मेराए। गा हेराइ खोजत केहि पाए।
निस्चै एहि जग सिद्धन तजा। दिस्टि फिरी पै आइ न भजा।

कोइ आवहिं कोइ जाहिं फिरि भौभँग नैन चढ़ाइ।
आए बोधै ताहि कहँ चले आपु समझाइ॥

[६४७इ]

प्र० १, २ (किंतु प्र० १ में यह यथा ६५० इ है)—

सब रानिन्ह जनु राहु गरासा। अरु झूमरि रोवहिं एक पासा।
भरि भरि कूक रुहिर छिहरावैं। एक आपु सँग पाँच नचावैं।
आप आपु महँ पाँचौं रोई। ई नायक हम पाँच बिछोई।
हम पाहुन इन लेखे जाना। भोर भए सो कीन्ह पयाना।
बहुत बुझाइ बुझावहिं रानी। पदुमावति भइ गूँगि देवानी।
भोजन निंद्रा तासु क हरा। ह्वै गै साँच जे नर कै करा।
रतन छड़ा रतनारि रिमाहा (?)। पीय पदारथ पावौं कहा।

भएउ जनक रिपु रावन चितउर सो देवपाल।
छया जाइ चित होइ रिपु भएउ रतन कहँ काल॥

[६४७अ[१]]

द्वि० १, तृ० १—

आजु सीस की टरि गइ रती। आजु नागमति होइहि सती।
आजु सो उर बन जग अँधियारा। आजु कँवल उकठैं भै छारा।
आजु इंद्र इंद्रासन खसा। आजु सूर कैलासहिं बसा।
आजु चतुर्भुज चकता करौं (?)। आजु चलाए सदना सरौं (?)।
आजु चला बहु ठाहर छाँड़ा। आजु समुंद्र भएउ जल गाढ़ा।
आजु सुमेर डोल भा हाला। आजु तयार होइ धौ काला।
आजु गगन जनु चाहै फटा। आजु पतन औ होइहि कटा।

आजु महा परलौ भा आजु जगत जनु मेंट।
आजु रतन धरती पर परा आजु भइ भेंट॥

[६४८ अ]

प्र० १, २, द्वि० ६, ७, (तृ० १) : किंतु (तृ० १) में यद छंद यथा ६५० अ है—

परे जु कुँवर सहस सँग जूझी। चली सती किछु परै न बूझी।
खुले मूँड बहु सेंदुर सीसा। पहिरन रात सबै जग दीसा।
सेंदुर भरे अलक जनु नागिनि। सेस के मुए होइ सहगामिनि।
कजरी माँझि परी जनु आगी। कै सुमेर दिवारि जनु लागी।
दुंद मृदंग झाँझ बहु बाजहिं। नाचत चलहिं ते अधिक बिराजहिं।
कै जु रतन जोगी होइ चला। सब सिर मारि रोइ कर मला।
प्रीति बचा प्रति सिर पहुँचावौं। ओहू जनम सामी कँठ लावौं।

आस पास (जो ?) सर रचे भा झर चौ सुर नाथ(?)।
मुहमद जन्मे एक सग मरत गमेउ लै साथ॥

[६५० अ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १) : (प्र० १ में दो छंद यहाँ और अतिरिक्त हैं, किंतु वे ऊपर के छंद ६४७ आ, इ हैं)—

जरी जु पिउ के रँग रस राती। जेउँ जेउँ झार लाग तेउँ राती।
राते जोगी जती संन्यासी। राते पुहुप ओप बनबासी।
राते कुसुम मँजीठ महावर। राते नैन पेम रँग बाउर।
राते एँगुर सेंदुर रोई। राते हेम हंस की जोई।
राते मेघ भानु मंसूरू। राते रायमुनी तमचूरू।
राते ठौर कंठ जहँ ताईं। राती बीर बहूटि सुहाईं।
राते धनुख और बनसपती। राते बिंब प्रेम की पाती।

राते केस हरदि मिलि चूना पीक परेवा नैन।
राते अस्व सिंघली हाथी गेरू रीझहिं मैन॥

[६५१ अ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

माटी धूरि ठौर भौ कटक सबै बौरान।
जेहि देखि असेहि (?) नठा गाठ साहि सुलतान॥

माटी इहै जगत बौरावा। माटी इहैं परम पद पावा।
माटी इहै जोति परगटी। माटी इहै लागि सब ठटी।
माटी इहै हंस सौं खेला। माटी इहै॰ जु चेटक मेला।
माटी इहै रूप रँग पावा। माटी इहै जु अलख लखावा।
माटी इहै दहूँ जग राजा। माटी इहै जु करत न छाजा।
माटी इहै रचा सो रचा। माटी इहै नचाव सो नचा।
माटी इहै पेम पै लहा। माटी इहै कहाउ सो कहा।

[६५१आ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

माटी आपु आपु माटी होइ रहा सो पावै जोति।
माटी निकट निरंतरि माटी आन न होति॥

साहिमल्ल राजहिं लै जाही। हौं बादिल गढ़ छाँड़ौं नाहीं।
चांदपाल सुत सब परिवारा। तोहहिं भार नगसेन कुमारा।
रामपाल देवपाल क बेटा। आइ साह पहँ लोग समेटा।
कबहूँ अँसु न पैहहु पारी। जाइ लेहु कुंभल गढ़ मारी।
उतरि कै दौरि जाइ गढ़ घेरा। भएउ सार बाजा चहुँ फेरा।
चढ़ा साहिमल लै नगसेनी। रानिन्ह चली साजि कै सेनी।
पूत सपूत गने ते साँचे। टाटक बैर लिए रिपु नाचे।

[६५१इ]

प्र० १, २, द्वि० ७ (तृ० १)—

रैनि टूटि जौहर भा जूझा सुत सिसुपाल।
हस्ति घोर गढ़ पावा औ पावा धनपाल॥

ढोवा कीन्ह साहि गढ़ छेंका। धनि बादिल सँमुहा होइ टेका।
अबला बली अलावलि साही। सहसा बादिल गनै न ताही।
खोली पँवरि जुझाऊ बाजहिं। हाँकहिं बीर सिंघ जनु गाजहिं।
लरहिं निसंक सामि के काजा। टाहत (?) सुभट दोहाई राजा।
बरसै आगि कोट चहुँ फेरा। जरि भस्मंत होइ जहँ हेरा।
मतवारे अस गिरि ढहराहीं। कचरे जाहिं सो थिर न रहाहीं।

जूझहिं तुरुक करहिं गोहराऊ। चाँपत जाहिं पगहिं पग पाऊ॥

[६५१ई]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

गढ़ समुंद औ सार को बूड़ लहरि अपार।
निकसहिं धाइ समाहिं फिरि बोरहिं लोहैं धार॥

चपरि साह ढोवा कै देखा। जूझा कटक बहुत अनलेखा॥
आपुहिं साह अलंगै बाँटी। चहूँ ओर गढ़ घेरा घाटी।
लागे रहहिं खान औ बीरा। बाजै सार परै जहँ भीरा॥
सबहिं माँग करकच कर साजा। कोपा कटक धरी मन लाजा।
सिगरी रैन सो गरगज बाँधहिं। होत बिहान कमानै साधहिं।
गोलन्ह मारि देइँ ओहि ढाही। किलकिलाइ औ खीझै साही।
रात दिवस बाजत रह सारू। रहै सो जिहि राखै करतारू।

[६५१ उ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

बाजैं दुंद भयावन होइ महा रन मार।
धनि ओहि सूर सराहिए जो अँगवै अस भार॥

खानजहाँ सरजा कर बेटा। लोह लंगर सिरमौर अमेंटा।
जहाँगीर कर अजमत खानू। रन महँ तपै जेठ कर भानू।
महमद साह केर वह जोद्घ। लागे जाइ बिखम गढ़ पोद्घ।
भीमसेन नेगी जेहि ओरा। तिन्ह सो बिखम परा कै जोरा।
करहिं टूक दुइ तुपक की चोटा। लोटहिं तुरुक जो करहिं खसोटा।
सब दिन साहि फिरै चहुँ हेरा। चाँपि लीन्ह चितउर गढ़ घेरा।
लाग कटक गढ़ आव न आँटी। जस लपटाइ जाइ गुर चाँटी।

[६५१ ऊ]

प्र० १, २, द्वि० ७ (तृ० १)—

भा गरगज जस अजगर ठाढ़ भएउ सिर काढ़ि।
भएउ कोट पर खलभलि लील चाह गढ़ बाढ़ि॥

बादिल भीमसेन हँकराए। बेटा भैया सबन्हि बोलाए।
बरिस देवस लगि हम गढ़ राखा। भा गढ़ बिचल भार जस राखा।
ठाहर ठाहर जौहर साजहिं। करहिं भगति रामहिं अवराधहिं।
प्रानमती बादिल के काना। तजि पतिबरता भाउ न आना।
होत अग्याँ तेहिं जौहर सजा। चंदन अगर मलय अरगजा।
सरजा जौहर चाँचरि जोरी। फागु खेलि कै लावहिं होरी।
ऐसन दाउ बहुरि कब पाउब। बहुरि कि एहि जग खेलै आउब।

[६५१ए]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

पुरखन खरग सँभारा मेहरिन माँझ अवास।
खेलहिं महा अनंद सों रानी ओहि रनिवास॥

बाजहिं ढोल मृदंग पखाउज। बाजहिं डफ सुरमंडल आउझ।
बाजहिं बंस उपंग किनारी। बाजहिं जंत्र पिनाक बिसारी।
बाजहिं ताँब झाँझ झनकारा। दुंद भेरि करताल औ थारा।
बाजहिं सहनाई बाँसुरी। गावहिं कोकिल कंठ जा सुरी।
अति सुंदर खोडस रस बाला। भीगी पहिरे सोंधै माला।
छिटकहिं कुसुम उड़ावहिं बूका। चाँचरि गढ़ मों चहुँ दिसि कूका।
नारि पुरुख गलबाहाँ जोटी। सहजेहिं माते लोटहिं लोटी।

[६५१ऐ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

खेलहिं सबै अनंद सौं रात मात कै भेस।
गाइ नाचि गढ़ समहिया रहहिं सो जगत अदेस॥

एक मासु लगि चाँचरि पारी। सब कोइ खेलहिं आपनि पारी।
कोई पुरुख जूझि कै आवहिं। सोइ आइ खेलहिं औ गावहिं।
सोई आइ बजावहिं सारू। सोई आइ देखहिं झनकारू।
सोइ उहाँ ढाहि अरि आवन। सोई आइ देख मन भावन।

बरत एकादसि जब जब कीन्हा। खेलत हँसत दान बहु दीन्हा।
कै असनान दंडवत पूजा। बाजे सबद संख गढ़ गूँजा।
पुरुख कै चरन माथँ लै धरहीं। कूदहिं जाहिं माझ सर परहीं।

[६५१ओ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

अगिनि परी चितउर महँ जौहर भा पछिराति।
खोलि दीन्ह दरवाजा भा ढोवा परभाति॥

चढ़ि गजराज साहि गज पेला। सूझ न गगन सरग सौं खेला।
बादिल गढ़ बाहेर होइ लीन्हा। भीमसेन मुख ऊपर दीन्हा।
जेहि कहँ धरि आगे कै लेहीं। खिनु एक लरहिं पीठि पुनि देहीं।
भारत गए जाहिं जहँ ताईं। चले चिकारि गज सूँड छिपाई।
बादिल ऊपर मुरवै पीठी। भई साह सौं समुँही दीठी।
साहि ताकि कै आपुन धावा। बीचहिं महिमा साह उठावा।
भई कारि अस कठिन अपारा। मेरु पहार जाइ नहिं टारा।

[६५१औ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

भएउ बहुत संग्राम भयावन भई बहुत उरझेरि।
कै कलबल बहु बाढ़े जाइ लीन्ह गढ़ फेरि॥

जातहिं जाइ हने सब घोड़ा। आपुन साह कीन्ह पग जोरा।
कोइ न काहू पाछे परहीं। लरहिं साथ पुनि सँग एक मरहीं।
साहि क सैन निकट गढ़ बाजा। काहू पहँ न चपै दरवाजा।
हुकुम भया छाँड़हु सब घोड़ा। चढ़ि गरगज कूदहु चहुँ ओरा।
कूदा खान जहाँ बर बीरा। कूदा अजमति खाँ रनधीरा।
कूदा महमद साहि बरिबंडा। भीमसैन सों बाजा खंडा।
भीमसेन भै कीचक मारू। भीमसेन अँगएउ बर भारू।

[६५१अ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)–

भएउ जूझि बादिल सौं पँवरहि ढहा न जाइ।
तुरुक पैठ घर भीतर लीन्ह मँदिर तब आइ॥

दौरहिं जिधरि ओकर(?) सिर काढ़े। परि भरहरि कोइ रहे न ठाढ़े।
महा मल्ल टोडर बादिला। भएउ जुद्ध जस हमजा आदिला।
अलह अलह होइ रामहिं रामा। कहि दौरहिं जूझहिं संग्रामा।
तुरुक मारि दीन्हा गढ़ बाहर। परी लोथ कोइ रहै न ठाहर।
भीमसेन जूझा जहँ बाँका। परा कुँवर सहसा केतु चाँका(?)।
धनि बादला मींचु अस काँधी। साहि सैन सो परा सो आँधी।
जूझे कुँवर अगनित असूझा। बादिल जहाँ पँवरि होइ जूझा।

[६५२अ]

प्र० १, २, (तृ० १): किंतु (तृ० १) में यह छंद यथा ६५१अ है —

पाछे जूझि मुए सब संगी। जस सों लागि सीतल आँगी।
जस कहँ प्रान देत नहि. बारा। जस कहँ जाइ समुंदहिं पारा।
जस कहँ दुख सहै सो भानू। जस कहँ करिय करिय तप दानू।
जस कह सहै सो नीका लागा। जस कहँ प्रान दुख जो भागा।
जस कहँ साथ मीत संसारा। जस कहँ धरम उतारै पारा।
जस कहँ नेम धरम जो करै। जस कहँ कबहिं जोहरां परै।
जस कहँ मन मानुस देहिं तापा। जस कहँ राम नाम मन जापा।

जस चमकहिं देहिं तारन निस्छल अचल सँभार।
जस सों प्रभु जग राखा जस सों कर संसार॥

[६५२आ]

प्र० १, २, (तृ० १)–

जस जग महँ जेहि कर सो भला। कहाँ सकबँधी गोरा बादिला।
कहाँ सो राम औ सीता सती। कहाँ त्रिनैन कहाँ गिरजती।
कहँ लोरिक कहाँ चाँदा मैना। कहँ अनिरुध ऊखा कहरौना।

कहाँ सो राजकुँवरि मिरगावति। कहँ राजा नल कहाँ दमावति।
कहाँ भर्तहरि कहाँ सो पिगँली। कहाँ सो रावन कहाँ चंद्रावली।
कहाँ सो अरजुन कहाँ द्रौपदी। कहाँ सो रावन कहाँ मँदोदरी।
कहाँ सो बलि हू,कहाँ चंपावति। कहाँ माधौनल कहाँ दमावति।

कहाँ जुधिष्ठिर धरमवत कहाँ प्रान अंगारमति।
कहाँ जुरजोधन मानमति कहँ बिक्रम सपनावति।।

[६५२इ]

प्र० १, २, (तृ० १)—

तरुनापै सम रतन न आना। जेहि बिनु राँक बिरुद होइ बाना।
कहाँ केस नग बिसहर कारे। देखत जगत माहँ हत्यारे।
कहाँ अस नैन तीख अनियारे। पैग न चलत सैन सर मारे।
कहाँ सो भौंह धनुख जेहिं तानहिं। बरछे रहैं बहुत हठ मानहिं।
कहाँ अमिय पान अधर सो सूखा। कहाँ सो अंमृत हरं जु दूखा।
कहाँ सु दसन बीजु कै पाँती। कहाँ सो गाढ़ अलिगन राती।
कहाँ कपोल भोल आरसी। कहाँ सो बदन सुधारस बासी।

मंडरीक कुच अबला बली लिए काम की लूटि।
उरहु न गाढ़ अलिंग ते मत निसरै हिय फूटि।।

[६५२ई]

प्र० १, २, (तृ० १)—

कहँ कुच तीख अनी अलि पीना। कहाँ नितंब बिसा कटि छीना।
कहँ गजचाल चलत गरगती। कहँ जोबन उनमद मदमती।
कहँ कोकिल कँठ बचन रसाला। कहाँ कटाछ सो बिहसन बाला।
कहँवा कनक लता सो लागू। कहाँ लिलाट दिपै मनि भागू।
कहँ मन गरब सो रूप निरासा। कहँ चतुराई मन चित बासा।
कहाँ छत्र दीसै पर पाया। कहाँ दुवादस खोडस भाया।
कहँ जोबन जस सुरधुनि धारा। बढ़त घटत कछु लागि न बारा।

मुहमद जैसा नगर बसि होइ उजार रह खीन्ह।
तस तरुनापै तन तजा जुरा जो खाखरि कीन्ह ॥

[६५३ अ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

तुम्ह करुनामै दीम दयाला। आप पवनपति अति प्रतिपाला।
आएसु भएउ परम निधि भारी। देखौं तोहि जेहि माह चिन्हारी।
अरस कहै मैं आहि अजीमा। मोहि छाँड़ि किहि देइ करीमा।
कर सीवै से जिय महँ करी। तेहि गुमान अभिमत चित धरी।
जौ न समाउ होत असमाना। तेहि के ऊपर जानि गुमाना।
एहि बरती कछु मन महँ आना। उतर देइ चुकी (?) चित केहि माना।
बेचारगी चहूँ दिसि भाई। जौ मसु रतन खिलाफत पाई।

पंचरसी कर सलपटा मानुस लीन्हौ दौरि।
पान पुहुप सिर राखौं जौ अग्यां होइ तोरि ॥

[६५३आ]

प्र० १, २, द्वि० ७, (तृ० १)—

ऐ जगदीस जगत गुरु मेरे। मुहमद चरन गहै दृढ़ तेरे
ऐ पूरब प्रभु तू पै पूरे। मानुस कौन बात कहँ झरै।
ऐ सकती सकता सब बिधी। मारि नरेस दीन्ह रँक सिधी।
ईसुर ईसुर तै पै ईसा। दानी तू जग मंगन कैसा।
अंतरजामी घट तू माहाँ। ऐ नटवर सब तोही छाहाँ।
ऐ करतार तुही करतारा। तु ही करै भवसागर पारा।
ऐ दयाल किरपाल गोसाईं। अपराधिन्ह तू बकसहि साईं।

चिरघिन पापी अपकारी मोहिं आस सब ठाँउँ।
नित हाँकै जस काँट महँ मुख आवै तोर नाउँ ॥

[६५३इ]

प्र० १, २, (तृ० १)—

रे किंचित अपराधी देवा। होइ प्रसन्न मानहि मोरि सेवां।

कर जोरे भुइँ लाए सीसा। राति दिवस मागौं जगदीसा।
जियतहिं मुएँ आस बिधि तोरी। तू बिरद रसना लागी मोरी।
जियतहिं मुएँ लेत ओहि नामू। खुदा एक मुहमद मोर कामू।
यह जो कछु मोसों कहवावा। मैं न कहा तुम सों सब पावा।
कद के महमद होत कबूलू। जौ लहि जगत सो तौ लहि मूलू।
कलमा कहतै तजौं परानू। मुख राता कै चलौं निदानू।
मुहमद मुहमद सरनि गहि डिगहि न मन ते सोइ।
बिधि किरपा कीनिहु जुगुति जौ मन महँ सो होइ॥

अ ख रा व ट

[१]

गगन हुता नहिं महि हुती हुते चंद नहिं सूर।
अैसेइ अंधकूप महँ रचा मुहम्मद नूर॥

साईं केरा नावँ हिया पूर काया भरी।
मुहमद रहा न ठाँव दूसर कोइ न समाइ अब॥

आदिहु तें जो आदि गोसाईं। जेइँ सब खेल रचा दुनियाईं।
जस खेलेसि तस जाइ न कहा। चौदह भुवन पूरि सब रहा।
एक अकेल न दूसर जाती। उपजे सहस अठारह भाँती।
जौ वै आनि जोति निरमई। दीन्हेसि ग्याँन समुझि मोहिं भई।
औ उन्ह आनि बार मुख खोला। भइ मुख जीभ बोल मैं बोला।
वै सब किछु करता किछु नाहीं। जैसे चले मेघ परछाहीं।
परगट गुपुत बिचारि सो बूझा। सो तजि दूसर और न सूझा।

कहौं सो ग्याँन ककहरा सब आखर महँ लेखि।
पंडित पढ़ि अखरावटी टूटा जोरेहु देखि॥

हुता जो सुन्न-म-सुन्न नाँव ठावँ ना सुर सबद।
तहाँ पाप नहिं पुन्नि मुहमद आपुहि आपु महँ॥

[२]

आपु अलख पहिले हुत जहाँ। नाँव न ठाँव न मूरति तहाँ।

पूर पुरान पाप नहिं पुन्नू। गुपुत ते गुपुत सुन्न ते सुन्नू।
अलख अकेल सबद नहिं भाँती। सूरुज चाँद देवस नहिं राती।
आखर सुर नहिं बोल अकारा। अकथ कथा का कहौं बिचारा।
किछु कहिए तौ किछु नहिं आखौं। पै किछु मुहँ महँ किछु हिय राखौं।
बिना उरेह अरंभ बखाना। हुता आपु महँ आपु समाना।
आस न बास न मानुस अंडा। भए चौखंड जो ऐस पखंडा।

सरग न धरति न खंभमय बरम्ह न बिसुन महेस।
बजर बीज बीरो अस ओहि न रंग न भेस॥

तब भा पुनि अंकूर सिरजा दीपक निरमला।
रचा मुहम्मद नूर जगत रहा उजियार होइ॥

[३]

ऐस जो ठाकुर किय एक दाऊँ। पहिले रचा मुहम्मद नाऊँ।
तेहि के प्रीति बीज अस जामा। भए दुइ बिरिछ सेत औ सामा।
होतै बिरवा भए दुइ पाता। पिता सरग औ धरती माता।
सूरुज चाँद देवस औ राती। एकहि दूसर भएउ सघाती।
चलि सो लिखनी भइ दुइ फारा। बिरिछ एक ऊपनी दुइ डारा।
भेटेन्हि जाइ पुन्नि औ पापू। दुख औ सुख आनँद संतापू।
औ तब भए नरक बैकूँठू। भल औ मंद साँच औ झूठू।

नूर मुहम्मद देखि तौ भा हुलास मन सोइ।
पुनि इबलीस सँचारेउ डरत रहै सब कोइ॥

हुता जो एकहि संग हौं तुम्ह काहे बीछुरा।
अब जिउ उठै तरंग मुहमद कहा न जाइ किछु॥

[४]

जौ उतपति उपराजै चहा। आपनि प्रभुता आपु सौं कहा।
रहा जो एक जल गुपुत समुंदा। बरसा सहस अठारह बुंदा।
सोई अंस घट घट मेला। औ सोइ बरन बरन होइ खेला।
भए आपु औ कहा गोसाईं। सिर नावहु सगरिउ दुनियाईं।
आने फूल भाँति बहु फूले। बास बेधि कौतुक सब भूले।

जिया जंतु सब अस्तुति कीन्हा। भा संतोख सबै मिलि चीन्हा।
तुम्ह करता बड़ सिरजन हारा। हरता धरता सब संसारा।

भरा भँडार गुपुत तहँ जहाँ छाँह* नहिं धूप।
पुनि अनबन परकार सौं खेला परगट रूप॥

परै प्रेम के झेल पिउ सहुँ धनि मुख सो करै।
जो सिर सेंती खेल मुहमद खेल सो प्रेम रस॥

[५]

एक चाक सब पिंडा चढ़ै। भाँति भाँति के भाँड़ा गढ़ै
जबहीं जगत किएउ सब साजा। आदि चहेउ आदम उपराजा।
पहिलेइँ रचे चारि अढ़वायक। भए सब अढ़वैयन के नायक।
भइ आयसु चारिहु के नाऊँ। चारि बस्तु मेरवहु एक ठाऊँ।
तिन्ह चारिहु कै मँदिर सँवारा। पाँच भूत तेहि महँ पैसारा।
आपु आपु महँ अरुझी माया। अैस न जानै दहुँ केहि काया।
नव द्वारा राखे मँझियारा। दसवँ मूँदि कै दिएउ केवारा।

रकत माँसु भरि पूरि हिय पाँच भूत कै संग।
प्रेम देस तेहि ऊपर बाज रूप औ रंग॥

रहेउ न दुइ महँ बीचु बालक जैसे गरभ महँ।
जग लेइ आई मीचु मुहमद रोएउ बिछुरि कै॥

[६]

उहँईं कीन्हेउ पिंड उरेहा। भइ सँजूत आदम कै देहा।
भइ आयसु यह जग भा दूजा। सब मिलि नवहु करहु एहि पूजा।
परगट सुना सबद सिर नावा। नारद कह बिधि गुपुत देखावा।
तू सेवक है मोर निनारा। दसइँ पँवरि होसि रखवारा।
भइ आयसु जब वह सुनि पावा। उठा गरब कै सीस नवावा।
धरिमिहि धरि पापी जेहि कीन्हा। लाइ संग आदम के दीन्हा।
उठि नारद जिउ आइ सँचारा। आइ छींक उठि दीन्ह केवारा।

आदम हौवा कहँ सृजा लेइ घाला कैलास।
पुनि तहँवाँ ते काढ़ा नारद के बिसवास॥

आदि किएउ आदेस सुन्नहिं तें अस्थूल भए।
आपु करै सब भेस मुहमद चादर ओट जेउँ ॥

[७]

का-करतार चहिय अस कीन्हा। आपन दोख आन सिर दीन्हा।
खाएनि गोहूँ कुमति भुलाने। परे आइ जग महँ पछिताने।
छोड़ि जमाल जलालहि रोवा। कौन ठाँव तें दैउ बिछोवा।
अंधकूप सगरउँ संसारू। कहाँ सो पुरुख कहाँ मेहरारू।
रैनि छ मास तैसि झरि लाई। रोइ रोइ आँसू नदी बहाई।
पुनि माया करता के भई। भा भिनुसार रैनि हटि गई।
सूरुज उए कँवल दल फूले। दूवौ मिले पंथ कर भूले।

तिन्ह संतति उपराजा भाँतिन्ह भाँति कुलीन।
हिंदू तुरुक दुवौ भए अपने अपने दीन ॥

बुंदहि समुँद समान यह अचरज कासौं कहौं।
जो हेरा सो हेरान मुहमद आपुहि आपु महँ ॥

[८]

खा-खेलार जस है दुइ करा। उहै रूप आदम अवतरा।
दूहूँ भाँति तस सिरिजा काया। भए दुइ हाथ भए दुइ पाया।
भए दुइ नयन स्रवन दुइ भाँती। भए दुइ अधर दसन दुइ पाँती।
माथ सरग धर धरती भएऊ। मिलि तिन्ह जग दूसर होइ गएऊ।
माटी माँसु रकत भा नीरू। नसैं नदीं हिय समुँद गंभीरू।
रीढ़ सुमेरु कीन्ह तेहि केरा। हाड़ पहार जुरे चहुँ फेरा।
बार बिरिछ रोवाँ खर जामा। सूत सूत निसरे तन चामा।

सातौं दीप नवौं खंड आठौं दिसा जो आहिं।
जो बरम्हंड सौ पिंड है हेरत अंत न जाहिं ॥

आगि बाउ जल धूरि चारि मेरइ भाँड़ा गढ़ा।
आपु रहा भरि पूरि मुहमद आपुहि आपु महँ ॥

[९]

गा- गौरहु अब सुनहु गियानी। कहौ ग्याँन संसार बखानी।
नासिक पुल सरात पथ चला। तेहि कर भौहैं हैं दुइ पला।
चाँद सुरुज दूनौ सुर चलहीं। सेत लिलार नखत झलमलहीं।
जागत दिन निसि सोवत माँझा। हरख भोर बिसमय होइ साँझा।
सुख बैकुंठ भुगुति औरु भोगू। दुख है नरक जो उपजै रोगू।
बरखा रुदन गरज अति कोहू। बिजुरी हँसी हिवंचल छोहू।
घरी पहर बेहर हर साँसा। बीतै छओ ऋतु बारह मासा।

जुग जुग बीतै पलहि पल अवधि घटति निति जाइ।
मीचु नियर जब आवै जानहुँ परलय आइ॥

जेहि घर ठग हैं पाँच नवौ बार चहुँदिसि फिरहिं॥
सो घर केहि मिस बाँच मुहमद जौ निसि जागिए॥

[१०]

घा- घट जगत बराबर जाना। जेहि महँ धरती सरग समाना।
माथ ऊँच मक्का बन ठाऊँ। हिया मदीना नबी के नाऊँ।
सरवन आँखि नाक मुख चारी। चारिहु सेवक लेहु बिचारी।
भावै चारि फिरिस्ते जानहु। भावै चारि यार पहिचानहु।
भावै चारिहु मुरसिद कहऊ। भावै चारि किताबैं पढ़ऊ।
भावै चारि इमाम जे आगे। भावै चारि खंभ जे लागे।
भावै चारिहु जुग मति पूरी। भावै आगि बाउ जल धूरी।

नाभि कँवल तर नारद लिए पाँच कोटवार।
नवौ दुवारि फिरैं निति दसईं कर रखवार॥

पवनहु ते मन चाँड़ मन तें आसु उतावला।
कतहूँ मेड़ न डाँड़ मुहमद बहु बिस्तार सो॥

[११]

ना- नारद तस पाहरू काया। चारा मेलि फाँद जग माया।
नाद बेद औ भूत सँचारा। सब अरुझाइ रहा संसारा।
आपु निपट निरमल होइ रहा। एकहु बार जाइ नहिं गहा।

जस चौदह खँड तैस सरीरा। जहँवै दुख है तहँवै पीरा।
जौन देस महँ सँवरै जहँवाँ। तौन देस सो जानहु तहँवाँ।
देखहु मन हिरदय बसि रहा। खन महँ जाइ जहाँ कोइ चहा।
सोवत अंत अंत महँ डोलै। जब बोलै तब घट महँ बोलै।

तन तुरंग पर मनुआ मन मस्तक पर आसु।
सोई आसु बोलावई अनहद बाजा पासु॥

देखहु कौतुक आइ रूख समाना बीज महँ।
आपुहि खोदि जमाइ मुहमद सो फल चाखई॥

[१२]

चा- चरित्र जौ चाहहु देखा। बूझहु बिधिना कर अलेखा।
पवन चाहि मन बहुत उताइल। तेहि तें परम आसु सुठि पाइल।
मन एक खंड न पहुँचै पावै। आसु भुवन चौदह फिरि आवै।
भा जेहि ग्याँन हिए सो बूझै। जो धर ध्यान न मन तेहि रूझै।
पुतरी महँ जो बिंदि एक कारी। देखै जगत सो पट बिस्तारी।
हेरत दिस्टि उघरि तसि आई। निरखि सुन्न महँ सुन्न समाई।
पेम समुँद सो अति अवगाहा। बूड़ै जगत न पावै थाहा।

जबहिं नींद चख आवै उपजि उठै संसार।
जागत ऐस न जानै दहुँ सो कौन भँडार॥

सुन्न समुँद चख माँहि जल जैसी लहरैं उठहिं।
उठि उठि मिटि मिटि जाहिं मुहमद खोज न पाइए॥

[१३]

छा- छाया जस बुंद अलोपू। ओठईं सौं आनि रहा करि गोपू।
सोइ चित्त सौं मनुवाँ जागै। ओहि मिलि कौतुक खेलै लागै।
देखि पिंड कहँ बोली बोलै। अब मोहिं बिनु कस नैन न खोलै।
परम हंस तेहि ऊपर देई। सोऽहं सोऽहं साँसै लेई।
तन सराय मम जानहु दीया। आसु तेल दम बाती कीया।
दीपक महँ बिधि जोति समानी। आपुहि बरै बाति निरबानी।
निघटे तेल झूरि भइ बाती। गा दीपक बुझि अँधियरि राती।

गा सो प्रान परेवा कै पींजर तन छूँछ।
मुए पिंड कस फूलै चेला गुरु सन पूँछ॥

बिगरि गए सब नावँ हाथ पाँव मुँह सीस धर।
तोर नावँ केहि ठावँ मुहमद सोइ बिचारिए॥

[१४]

जा- जानहु अस तन महँ भेदू। जैसे रहै अंड महँ मेदू।
बिरिछ एक लागीं दुइ डारा। एकहिं ते नाना परकारा।
मातु के रकत पिता के बिंदू। उपने दुवौ तुरुक औ हिंदू।
रकत हुतें तन भए चौरंगा। बिंदु हुतें जिउ पाँचौ संगा।
जस ये चारिउ धरति बिलाहीं। तस वै पाँचौ सरगहि जाहीं।
फूलै पवन पानि सब गरई। अगिनि जारि तन माटी करई।
जस वै सरग के मारग माहाँ। तस ये धरति देखि चित चाहा।

जस तन तस यह धरती जस मन तैस अकास।
परमहंस तेहि मानस जैसि फूल मँह बास॥

तन दरपन कहँ साजु दरसन देखा जौ चहै।
मन सौं लीजिय माँजि मुहमद निरमल होइ दिया॥

[१५]

झा- झाँखर तन महँ मन भूलै। काँटन्ह माँझ फूल जनु फूलै।
देखेउ परमहंस परछाहीं। नयन जोति सो बिछुरति नाहीं।
जगमग जल महँ दीखै जैसे। नाहिं मिला नहिं बेहरा तैसे।
जस दरपन महँ दरसन देखा। हिय निरमल तेहि महँ जग देखा।
तेहि संग लागीं पाँचौ छाया। काम कोह तिस्ना मद माया।
चख महँ नियर निहारत दूरी। सब घट माँह रहा भरिपूरी।
पवन न उड़ै न भीजै पानी। अगिनि जरै जस निरमल बानी।

दूध माँझ जस घीउ है समुँद माहँ जस मोति।
नैन मींजि जौ देखहु चमकि उठै तस जोति॥

एकहि ते दुइ होइ दुइ सौं राज न चलि सकै।
बीचु तें आपुहि खोइ मुहमद एकै होइ रहु॥

[१६]

ना-नगरी काया बिधि कीन्हा। जेइ खोजा पावा तेइ चीन्हा।
तन महँ जोग भोग औ रोगू। सूझि परे संसार सँजोगू।
रामपुरी औ कीन्ह कुकरमा। मौन लाइ सोधै अस्तर माँ।
पै सुठि अगम पंथ बड़ बाँका। तस मारग जस सुई क नाका।
बाँक चढ़ाव सात खँड ऊँचा। चारि बसेरे जाइ पहूँचा।
जस सुमेरु पर अमृत मूरी। देखत नियर चढ़त बड़ि दूरी।
नाँघि हिवंचल जो तहँ जाई। अमृत मूरि पाइ सो खाई।

एहि बाट पर नारद बैठ कटक कै साज।
जो ओहि पेलि पईठै करै दुवौ जग राज॥

हौं कहतै भए ओट पियै खंड मो सौं किएउ।
भए बहु फाटक कोट मुहमद अब कैसे मिलहिं॥

[१७]

टा-टुक झाँकहु सातौ खंडा। खंडै खंड लखहु बरम्हंडा।
पहिल खंड जो सनीचर नाऊँ। लखि न अँटकु पौरी महँ ठाऊँ।
दूसर खंड ब्रिहस्पति तहवाँ। काम दुवार भोग घर जहँवाँ।
तीसर खंड जो मंगल जानहु। नाभि कमल महँ ओहि अस्थानहु।
चौथ खंड जो आदित अहई। बाईं दिसि अस्तन महँ रहई।
पाँचवें खंड सुक्र उपराहीं। कंठ माहँ औ जीभ तराहीं।
छठएँ खंड बुद्ध कर बासा। दुइ भौहन्ह के बीच निवासा।

सातवें सोम कपार महँ कहा सो दसवँ दुवार।
जो वह पँवरि उघारै सो बड़ सिद्ध अपार॥

जौ न होत अवतार कहाँ कुटुम परिवार सब।
झूँठ सबै संसार मुहमद चित्त न लाइए॥

[१८]

ठा-ठाकुर बड़ आप गुसाईं। जेइ सिरजा जग अपनिहि नाईं।
आपुहि आपु जौ देखै चहा। आपनि प्रभुता आपु सौं कहा।
सबै जगत दरपन कै लेखा। आपुहिं दरपन आपुहि देखा।

अपुहि बन औ आपु पखेरू। आपुहि सौजा आपु अहेरू।
आपुहि पुहुप फूलि बन फूले। आपुहि भँवर बास रस भूले।
आपुहि फल आपुहि रखवारा। आपुहि सो रस चाखनहारा।
आपुहि घट घट महँ मुख चाहै। आपुहि आपन रूप सराहै।

आपुहि कागद आपु मसि आपुहि लेखनहार।
आपुहि लिखनी आखर आपुहि पँडित अपार॥

केहु नहिं लागिहि साथ जब गौनब कैलास महँ।
चलब झारि दोउ हाथ मुहमद यह जग छोड़ि कै॥

[१६]

डा-डरपहु मन सरगहि खोई। जेहि पाछे पछिताव न होई।
गरब करै जौ हौं हौं करई। बैरी सोइ गोसाइँ क अहई।
जो जानै निहचय है मरना। तेहि कहँ मोर तोर का करना।
नैन बैन सरवन बिधि दीन्हा। हाथ पाँव सब सेवक कीन्हा।
जेहि के राज भोग सुख करई। लेइ सवाद जगत जस चहई।
सो सब पूँछिहि मैं जो दीन्हा। तैं ओहि कर कस अवगुन कीन्हा।
कौन उतर का करब बहाना। बोवै बबुर लवै कित धाना।

कै किछु लेइ न सकत तब नितिहि अवधि नियराइ।
सो दिन आइ जो पहुँचै पुनि किछु कीन्ह न जाइ॥

जेइ न चिन्हारी कीन्ह यह जिउ जौ लहि पिंड महँ।
पुनि किछु परै न चीन्हि मुहमद यह जग धुंध होइ॥

[२०]

ढा-ढारै जो रकत पसेऊ। सो जानै एहि बात क भेऊ।
जेहि कर ठाकुर पहरै जागै। सो सेवक कस सोवै लागै!
जो सेवक सोवै चित देई। तेहि ठाकुर नहिं मया करेई।
जेइ अवतरि उन्ह कहँ नहिं चीन्हा। तेइ यह जनम अँबिरथा कीन्हा।
मूँदे नैन जगत महँ अवना। अंधधुंध तैसै पै गवना।
लइ किछु स्वाद जागि नहिं पावा। भरा मास तेइ सोइ गँवावा।
रहै नींद दुख भरम लपेटा। आइ फिरै तिन्ह कतहुँ न भेंटा।

धावत बीते रैनि दिन परम सनेही साथ।
तेहि पर भएउ बिहान जब रोइ रोइ मींजै हाथ ॥

लछिमी सत कै चेरि लाल करै बहु मुख चहै।
दीठि न देखै फेरि मुहमद राता प्रेम जो ॥

[२१]

ना-निसता जो आपु न भएऊ। सो एहि रसहि मारि बिख किएऊ।
यह संसार झूठ थिर नाहीं। उठहिं मेघ जेउँ जाइ बिलाहीं।
जो एहि रस के बाएँ भएऊ। तेहि कहँ रस बिख भर होइ गएऊ।
तेइ सब तजा अरथ बेवहारू। औ घर बार कुटुम परिवारू।
खीर खाँड़ तेहि मीठ न लागै। उहै बार होइ भिच्छा माँगै।
जस जस नियर होइ वह देखै। तस तस जगत हिया महँ लेखै।
पुहुमी देखि न लावै दीठी। हेरै नवै न आपनि पीठी।

छोड़ि देहु सब धंधा काढ़ि जगत सौं हाथ।
घर माया कर छोड़ि कै धरु काया कर साथ ॥

साँई के भँडारु बहु मानिक मुकता भरे।
मन चोरहि पैसारु मुहमद तौ किछु पाइए ॥

[२२]

ता-तप साधहु एक पथ लागे। करहु सेव दिन रात सभागे।
ओहि मन लावहु रहै न ऊठा। छोड़हु झगरा यह जग झूठा।
जब हँकार ठाकुर कर आइहि। एक घरी जिउ रहै न पाइहि।
ऋतु बसंत सब खेल धमारी। दगला अस तन चढ़ब अटारी।
सोइ सोहागिनि जाहि सोहागू। कंत मिलै जो खेलै फागू।
कै सिंगार सिर सेंदुर मेलै। सबहि आइ मिलि चाँचरि खेलै।
औ जो रहै गरब कै गोरी। चढ़ै दुहाग जरै जस होरी।

खेलि लेहु जस खेलना ऊख आगि देइ लाइ।
झूमरि खेलहु झूमि कै पूजि मनोरा गाइ ॥

कहाँ ते उपने आइ सुधि बुधि हिरदय उपजिए।
पुनि कहँ जाहिं समाइ मुहमद सो खँड खोजिए ॥

[२३]

था- थापहु बहु ग्यान बिचारू। जेहि महँ सब समाइ संसारू।
जैसी अहै परथिमी सगरी। तैसिहि जानहु काया नगरी।
तन महँ पीर औ बेदन पूरी। तन महँ बैद औ ओखद मूरी।
तन मह बिख औ अमृत बसई। जानै सो जो कसौटी कसई।
का भा पढ़े गुने ओ लिखे। करनी साध किए औ सिखे।
आपुहि खोइ ओहि जो पावा। सो बीरौ मनु लाइ जमावा।
जो ओहि हेरत जाइ हेराई। सो पावै अमृत फल खाई।

आपुहि खोए पिउ मिलै पिउ खोए सब जाइ।
देखहु बूझि बिचार मन लेहु न हेरि हेराइ॥

कठु है पिउ कर खोज जो पावा सो मरजिया।
तहँ नहिं हँसी न रोज मुहमद ऐसै ठाँव वह॥

[२४]

दा-दाया जाकहँ गुरु करई। सो सिख पंथ समुझि पग धरई।
सात खंड औ चारि निसेनी। अगम चढ़ाव पंथ तिरबेनी।
तौ वह चढ़ै जौ गुरू चढ़ावै। पाँव न डगै अधिक बल पावै।
जो बरु सकति भगति भा चेला। होइ खेलार खेल बहु खेला।
जो अपने बल चढ़ि कै नाँघा। सो खसि परा टूटि गइ जाँघा।
नारद दौरि सग तेहि मिला। लेइ तेहि साथ कुमारग चला।
तेली बैल जो निसि दिन फिरई। एका परग न सो अगुसरई।

सोइ सोधु लागा रहै जेहि चलि आगे जाइ।
नतु फिरि पाछे आवई मारग चलि न सिराइ॥

सुनि हस्ती कर नावँ अधरन्ह टोवा धाइ कै।
जेइ टोवा जेहि ठावँ मुहमद सो तैसै कहा॥

[२५]

धा-धावहु तेहि मारग लागे। जेहि निस्तार होइ सब आगे।
बिधिना के मारग हैं तेते। सरग नखत तन रोवाँ जेते।
जेइ हेरा तेइ तहँवै पावा। भा संतोख समुझि मन गावा।

तेहि महँ पंथ कहौं भल गाई। जेहि दूनौ जग छाज बड़ाई।
सो बड़ पंथ मुहम्मद केरा। है निरमल कैलास बसेरा।
लिखि पुरान बिधि पठवा साँचा। भा परवान दुवौ जग बाँचा।
सुनत ताहि नारद उठि भागे। छूटै पाप पुन्नि सुनि लागै।

वह मारग जो पावै सो पहुँचै भव पार।
जो भूला होइ अनतहि तेहि लूटा बटवार।

साईं केरा बार जो थिर देखै औ सुनै।
नइ नइ करै जोहार मुहमद निति उठि पाँच बेर॥

[२६]

ना-नमाज है दीन क थूनी। पढ़ै नमाज सोइ बड़ गूनी।
कही सरीयत चिसती पीरू। उधरित असरफ औ जहँगीरू।
तेहि के नाव चढ़ा हौं धाई। देखि समुद जल जिउ न डेराई।
जेहि के ऐसन सेवक भला। जाइ उतरि निरभय सो चला।
राह हकीकत परै न चूकी। पैठि मारफत मार बुड़ूकी।
ढूँढ़ि उठै लेइ मानिक मोती। जाइ समाइ जोति महँ जोती।
जेहि कहँ उन्ह अस नाव चढ़ावा। कर गहि तीर खेइ लेइ आवा।

साँची राह सरीअत जेहि बिसवास न होइ।
पाँव राखि तेहि सीढ़ी निभरम पहुँचै सोइ।

जेइ पावा गुरु मीठ सो सुख मारग महँ चलै।
सुख अनंद भा डीठ मुहमद साथी पोढ़ जेहि॥

[२७]

पा-पाएउँ गुरु मोहदी मीठा। मिला पंथ सो दरसन दीठा।
नावँ पियार सेख बुरहानू। नगर कालपी हुत गुरु थानू।
औ तिन्ह दरस गोसाईं पावा। अलहदाद गुरु पंथ लखावा।
अलहदाद गुरु सिद्ध नवेला। सैयद मुहमद के वै चेला।
सैयद मुहमद दीनहि साँचा। दानियाल सिख दीन्ह सबाचा।
जुग जुग अमर सो हजरत ख्वाजे। हजरत नबी रसूल नेवाजे।
दानियाल तहँ परगट कीन्हा। हजरत ख्वाज खिजिर पथ दीन्हा।

खड़ग दीन्ह उन्ह जाइ कहँ देखि डरै इबलीस।
नावँ सुनत सो भागै धुनै ओट होइ सीस॥
देखि समुँद महँ सीप बिनु बूड़े पावै नहीं।
होइ पतंग जलदीप मुहमद तेहि धँसि लीजिए॥

[२८]

फा-फल मीठ जो गुरु हुँत पावैं। सो बीरौ मन लाइ जमावै।
जो पखारि तन आपन राखै। निसि दिन जागै सो फल चाखै।
चित फूलै जस फूलै ऊखा। तजि के दोउ नींद औ भूखा।
चिंता रहै ऊख पहँ सारू। भूमि कुल्हाड़ी करै प्रहारू।
तन कोल्हू मन कातर फेरै। पाँचौ भूत आतमहि पेरै।
जैसे भाठी तप दिन राती। जग धंधा जारै जस बाती।
आपुहि पेरि उड़ावै खोई। तब रस औट पाकि गुड़ होई।

अस कै रस औटावहु जामत गुड़ होइ जाइ।
गुड़ तें खाँड़ मीठि भइ सब परकार मिठाइ॥
धूप रहै जग छाइ चहूँ खँड संसार महँ।
पुनि कहँ जाइ समाइ मुहमद सो खँड खोजिए॥

[२६]

बा-बिनु जिउ तन अस अँधियारा। जौं नहिं होत नयन उजियारा।
मसि क बुंद जो नैनन्ह माहीं। सोई प्रेम अंस परिछाहीं।
ओहि जोति सौं परखौ हीरा। ओहिं सौं निरमल सकल सरीरा।
उहै जोति नैनन्ह महँ आवै। चमकि उठै जस बीजु दिखावै।
मग ओहि सगरे जाहिं बिचारू। साँकर मुँह तेहि बड़ बिस्तारू।
जहँवाँ किछु नहिं है सत करा। जहाँ छूँछ तहँ वह रस भरा।
निरमल जोति बरनि नहिं जाई। निरखि सुन्न महँ सुन्न समाई।

माटी तें जल निरमल जल तें निरमल बाउ।
बाउहिं तें सुठि निरमल सुनु यह जाकर भाउ॥
इहै जगत कै पुन्नि यह जप तप सत साधना।
जानि परै जेहि सुन्न मुहमद सोई सिद्ध भा॥

[३०]

भा-भल सोइ जो सुन्नहि जानै। सुन्नहि तें सब जग पहिचानै।
सुन्नहि तें है सुन्न उपाती। सुन्नहिं ते उपजै बहु भाँती।
सुन्नहिं माँझ इन्द्र बरम्हंडा। सुन्नहि ते टीके नवखंडा।
सुन्नहिं ते उपजे सब कोई। पुनि बिलाइ सब सुन्नहि होई।
सुन्नहि सात सरग उपराहीं। सुन्नहि सातौ धरति तराहीं।
सुन्नहि ठाट लाग सब एका। जीवहि लाग पिंड सगरे का।
सुन्नम सुन्नम सब उतिराई। सुन्नहि महँ सब रहै समाई।

सुन्नहि महँ मन रूख जस काया महँ जीउ।
काठी माँझ आगि जस दूध माहँ जस घीउ॥

जावँन एकहि बूँद जामै देखहु छीर सब।
मुहमद मोति समुंद काढ़हु मथन अरंभ कै॥

[३१]

मा-मन मथन करै तन खीरू। दुहै सोइ जो आपु अहीरू।
पाँचौ भूत आतमहि मारै। दरब गरब करसी कै जारै।
मन माठा सम अस के धोवै। तन खैला तेहि माहँ बिलोवै।
जपहु बुद्धि कै दुइ सन फेरहु। दही चूर अस हिया अभेरहु।
पछवाँ कढुई कैसन फेरहु। ओहि जोति महँ जोति अभेरहु।
जस अंतरपट साढ़ी फूटै। निरमल होइ मया सब छूटै।
माखन मूल उठै लेइ जोती। समुँद माँह जस उलथै मोती।

जस घिउ होइ जराइ कै तस जिउ निरमल होइ।
महै महेरा दूर करि भोग करै सुख सोइ॥

हिया कँवल जस फूल जिउ तेहि महँ जस बासना।
तन तजि मन महँ भूल मुहमद तब पहिचानिए॥

[३२]

जा- जानहु जिउ बसै सो तहँवाँ। रहै कँवल हिय संपुट जहँवाँ।
दीपक जैसे बरत हिय आरे। सब घर उजियर तेहि उजियारे।

तेहि महँ अंस समानेउ आई। सुन्न सहज मिलि आवै जाई।
जहाँ उठै धुनि आउंकारा। अनहद सबद होइ झनकारा।
तेहि महँ जोति अनूपम भाँती। दीपक एक बरै दुइ बाती।
एक जो परगट होइ उजियारा। दूसर गुपुत सो दसवँ दुवारा।
मन जस टेम प्रेम जस दीया। आसु तेल दम बाती किया।

तहँवा जिउ जस भँवरा फिरा करै चहुँ पास।
मींचु पवन जब पहुँचै लेइ फिरै सो बास॥

सुनहु बचन यह मोर दीपक जस आरे बरै।
सब घर होइ अँजोर मुहमद तस जिउ हीय महँ॥

[३३]

रा-रातहु अब तेहि के रँगा। बेगि लागु प्रीतम के संगा।
अरध उरध अस है दुइ हीया। परगट गुपुत बरै जस दीया।
परगट मया मोह जस लावै। गुपुत सुदरसन आप लखावै।
अस दरगाह जाइ नहिं पैठा। नारद पँवरि कटक लेइ बैठा।
ताकहँ मंत्र एक है साँचा। जो वह पढ़ै जाइ सो बाँचा।
पंडित पढ़ै सो लेइ लेइ नाऊँ। नारद छाँडि देइ सो ठाऊँ।
जेकरे हाथ होइ वह कूँजी। खोलि केवार लेइ सो पूँजी।

उघरै नैन हिया कर आछे दरसन रात।
देखै भुवन सो चौदहौ औ जानै सब बात॥

कंत पियारे भेंट देखै तूलम तूल होइ।
भए बयस दुइ हेंठ मुहमद निति सरबर करै॥

[३४]

ला-लखई सोई लखि आवा। जो एहि मारग आपु गँवावा।
पीउ सुनत धुनि आपु बिसारै। चित्त लखै तन खोइ अडारै।
हौं हौं करब अडारहु खोई। परगट गुपुत रहा भरि सोई।
बाहर भीतर सोइ समाना। कौतुक सपना सो निजु जाना।
सोइ देखै औ सोई गुनई। सोई सब मधुरी धुनि सुनई।
सोई करै कीन्ह जो चहई। सोइ जानि बूझि चुप रहई।

सोई घट घट होइ रस लेई। सोइ पूँछै सोइ ऊतर देई।
सोई साजै अंतर पट खेलै आपु अकेल।
वह भूला जग सेती जग भूला ओहि खेल॥
जौ लगि सुनै न मींचु तौ लगि मारै जियत जिउ।
कोई हुतेउ न बीचु मुहमद एकै होइ रहै॥

[३५]

वा वह रूप न जाइ बखानी। अगम अगोचर अकथ कहानी।
छंदहि छंद भएउ सो बंदा। छन एक माहँ हँसी रोवंदा।
बारे खेल तरुन वह सोवा। लउटी वृढ़ लेइ पुनि रोवा।
सो सब रंग गोसाईं केरा। भा निरमल कैलास बसेरा।
सो परगट महं आइ भुलावै। गुपुत में आपन दरस देखावै।
तुम अनु गुपुत मते तस सेऊ। ऐसन सेउ न जानै केऊ।
आपु मरे बिनु सरग न छुवा। आँधर कहहि चाँद कहँ उवा।
पानी महँ जस बुल्ला तस यह जग उतिराइ।
एकहि आवत देखिए एक है जात बिलाइ॥
दीन्ह रतन बिधि चारि नैन बैन सरवन्न मुख।
पुनि जब मेटहि मारि मुहमद तब पछिताब मैं॥

[३६]

सा-साँसा जौ लहि दिन चारी। ठाकुर से करि लेहु चिन्हारी।
अंध न रहहु होहु डिठियारा। चीन्हि लेहु जो तोहि सँवारा।
पहिले सो जो ठाकुर कीजिय। ऐसे जियन मरन नरिं छीजिय।
छाँड़हु घिउ औ मछरी माँसू। सूखे भोजन करहु गरासू।
दूध माँसु घिउ करु न अहारू। रोटी सानि करहु फरहारू।
एहि बिधि काम घटावहु काया। काम क्रोध तिस्ना मद माया।
तब बैठहु बज्रासन मारी। गहि सुखमना पिंगला नारी।
प्रेत तंतु तस लाग रहु करहु ध्यान चित बाँधि।
पारधि जैस अहेर कहँ लाग रहै सर साधि॥

अपने कौतुक लागि उपजाएन्हि बहु भाँति कै।
चीन्हि लेहु सो जागि मुहमद सोइ न खोइए।।

[३७]

खा-खेलहु खेलहु ओहि भेंटा। पुनि का खेलहु खेल समेटा।
कठिन खेल औ मारग सँकरा। बहुतन्ह खाइ फिरे सिर टकरा।
मरन खेल देखा सो हँसा। होइ पतंग दीपक महँ धँसा।
तन पतंग कै भिरिंग कै नाईं। सिद्ध होइ सो जुग जुग ताईं।
बिनु जिउ दिए न पावै कोई। जो मरजिया अमर भा सोई।
नीम जो जामै चंदन पासा। चंदन बेधि होइ तेहि बासा।
पावँन्ह जाइ बली सन टेका। जौ लहि जिउ तन तौ लहि भेका।

अस जानै है सब महँ औ सब भावहि सोइ।
हौं कोहाँर कर माटी जो चाहै सो होइ।।
सिद्ध पदारथ तीनि बुद्धि पाँव औ सिर कया।
पुनि लेइहि सब छीनि मुहमद तब पछिताब मैं।।

[३८]

सा-साहस जाकर जग पूरी। सो पावा वह अमृत मूरी।
कहौं मंत्र जो आपनि पूँजी। खोलु केवारा ताला कूँजी।
साठि बरिस जो लपई झपई। छन एक गुपुत जाप जो जपई।
जानहु दुवौ बराबर सेवा। ऐसन चलै मुहमदी खेवा।
करनी करै जो पूजै आसा। सँवरे नावँ जो लेइ लेइ साँसा।
काठी धँसत उठै जस आगी। दरसन देखि उठै तस जागी।
जस सरवर महँ पंकज देखा। हिय के आँखि दरस सब लेखा।

जासु कया दरपन कै देखु आप मुँह आप।
आपुइ आपु जाइ मिलु जहँ नहिं पुन्नि न पाप।।
मनुवाँ चंचल ढाँप बरजे अहथिर ना रहै।
पाल पेटारे साँप मुहमद तेहि बिधि राखिए।।

[३९]

हा-हिय ऐसन बरजे रहई। बूड़ि न जाइ बूड़ अति अहई।

सोइ हिरदय कै सीढ़ी चढ़ई। जिमि लोहार घन दरपन गढ़ई।
चिनगि जोति करसी तें भागै। परम तंतु परचावै लागै।
पाँच भूत लोहा गति लावै। दुहूँ साँस भाठी सुलगावै।
कया ताइ केकरि दरं (?) करई। प्रेम के सँड़सी पोढ़ कै धरई।
हनि हथेव हिय दरपन साजै। छोलनी जाप लिहे तन माँजै।
तिल तिल दिस्टि जोति सहुँ ठानै। साँस चढ़ाइ कै ऊपर आनै।

तौ निरमल मुख देखै जोग होइ तेहि ऊप।
होइ डिठियार सो देखै अंधन के अँधकूप॥

जेकर पास अनफाँस कहु हिय फिकिर सँभारि कै।
कहत रहै हर साँस मुहमद निरमल होइ तब॥

[४०]

खा-खेलन औ खेल पसारा। कठिन खेल औ खेलन हारा।
आपुहि आपुहि चाह देखावा। आदम रूप भेस धरि आवा।
अलिफ एक अल्ला बड़ सोई। दाल दीन दुनिया सब कोई।
मीम मुहम्मद प्रीति पियारा। तिनि आखर यह अरथ बिचारा।
मुख बिधि अपने हाथ उरेहा। दुइ जग साजि सँवारा देहा।
कै दरपन अस रचा बिसेखा। आपन दरस आप महँ देखा।
जो यह खोज आप महँ कीन्हा। तेइ आपुहि खोजा सब चीन्हा।

भागि किया दुइ मारग पाप पुन्नि दुइ ठाँव।
दहिने सो सुठि दाहिने बायें सो सुठि बावँ॥

भा अपूर सब ठावँ गुड़िला मोम सँवारि कै।
राखा आदम नाव मुहमद सब आदम कहै॥

[४१]

औ उन्ह नावँ सीखि जौ पावा। अलख नावँ लेइ सिद्ध कहावा।
अनहद ते भा आदम दूजा। आप नगर करवावै पूजा।
घट घट महँ होइ निति सब ठाऊँ। लाग पुकारै आपन नाऊँ।
अनहद सुन्न रहै सँग लागे। कबहुँ न बिसरे सोए जागे।
लिखि पुरान महँ कहा बिसेखी। मोहिं नहिं देखहु मैं तुम्ह देखी।

तू तस साइँ न मोहिं बिसारसि। तू सेवा जीतै नहिं हारसि।
अस निरमल जस दरपन आगे। निसि दिन तोरि दिस्टि मोहि लागे।

पुहुप बास जस हिरदय रहा नैन भरिपूरि।
नियरे से सुठि नीयरे ओहट से सुठि दूरि॥

दुवौ दिस्टि टक लाइ दरपन जौ देखा चहै।
दरपन जाइ देखाइ मुहमद तौ मुख देखिये॥

[४२]

छा-छाँड़हु कलंक जेहि नाहीं। केहुन बराबरि तेहि परछाहीं।
सूरुज तपै परै अति घामू। लागे गहन गलत होइ सामू।
ससि कलंक का पटतर दीन्हा। घटै गढ़ै औ गहनै लीन्हा।
आगि बुझाइ जौ पानी परई। पानि सूख माटी सब सरई।
सब जाइहि जो जग महँ होई। सदा सरबदा अहथिर सोई।
निहकलंक निरमल सब अंगा। अस नाहीं केहु रूप न रंगा।
जो जानै सो भेद न कहई। मन महँ जानि बूझि चुप रहई।

मति ठाकुर कै सुनि कै कहै जो हिय मझियार।
बहुरि न मत तासौं करै ठाकुर दूजी बार॥

गगरी सहस पचास जौ कोउ पानी भरि धरै।
सुरुज दिपै अकास मुहमद सब महँ देखिए॥

[४३]

ना-नारद तव रोइ पुकारा। एक जोलाहैं सौं मैं हारा।
प्रेम तंतु नित ताना तनई। जप तप साधि सैकरा भरई।
दरब गरब सब देइ बिथारी। गनि साथी सब लेहि सँभारी।
पाँच भूत माँड़ी गनि मलई। ओहि सौं मोर न एकौ चलई।
बिधि कहँ सँवरि साज सो साजै। लेइ लेइ नावँ कूँच सौं माँजै।
मन मुरी देइ सब अंग मारै। तन सों बिनै दोउ कर जारै।
सूत सूत सो कया मँजाई। सीझा काम बिनत सिधि पाई।

राउर आगे का कहै जो सँवरै मन लाइ।
तेहि राजा निति सँवरै पूँछै धरम बोलाइ॥

तेहि मुख लावा लूक समुझाए समुझै नहीं।
परै खरी तेहि चूक मुहमद जेइ जाना नहीं॥

[४४]

मन सौं देइ कढ़नी दुइ गाढ़ी। गाढ़े छीर रहै होइ साढ़ी।
ना ओहि लेखे राति न दिना। करगह बैठि साट सो बिना।
खरिका लाइ करै तन घीसू। नियर न होइ डर इबलीसू।
भरै साँस जब नाठै नरी। निसरै छूँछी पैठे भरी।
लाइ लाइ कै नरी चढ़ाई। इलालिलाह कै ढारि चलाई।
चित डोलै नहिं खूटी ढरई। पल पल पेखि आग अनुसरई।
सीधे मारग पहुँचौ जाई। जा एहि भाँति कर सिधि पाई।

चलै साँस तेहि मारग जेहि से तारन होइ।
धरै पाँव तेहि सीढ़ी तुरतै पहुँचै सोइ॥

दरपन बालक हाथ मुख देखे दूसर गए।
तस भा दुइ एक साथ मुहमद एकै जानिए॥

[४५]

कहा मुहम्मद प्रेम कहानी। सुनि सो ग्याँनी भए धियानी।
चेलै समुझि गुरू सौं पूछा। देखहु निरखि भरा औ छूँछा।
दुहूँ रूप है एक अकेला। औ अनवन परकार सौं खेला।
औ भा चहै दुवौ मिलि एका। को सिख देइ काहि को टेका।
कैसे आपु बीच सो मेटै। कैसे आप हेराइ सो भेंटै।
जौ लहि आपु न जीयत मरई। हसै दूरि सौं बात न करई।
तेहि कर रूप बदन सब देखौ। उहै घरी महँ भाँति बिसेखौ।

सो तौ आपु हेरान है तन मन जीवन खोइ।
चेला पूछै गुरू कहँ तेहि कस अगरे होइ॥

मन अहथिर कै टेकु दूसर कहना छाँड़ि दे।
आदि अंत जो एक मुहमद कहु दूसर कहाँ॥

[४६]

सुनु चेला उत्तर गुरु कहई। एक होइ सो लाखन लहई।

अहथिर कै जो पिंडा छाँड़ै। औ लेइ कै धरती महँ गाड़ै।
काह कहौं जस तू परिछाहीं। जौ पै किछु आपन बस नाहीं।
जो बाहर सो अंत समाना। सो जानै जो ओहि पहिचाना।
तू हेरै भीतर सौं मिंता। सोइ करै जेहि लहै न चिंता।
अस मन बूझि छाँड़ु को तोरा। होहु समान करहु मति मोरा।
दुइ हुँत चलै न राज न रैयत। तब वेइ सीख जो होइ मग अँयत।

अस मन बूझहु अब तुम करता है सो एक।
सोइ सूरत सोइ मूरत सुनै गुरू सौं टेक॥

नवरस गुरु पहँ भीज गुरु परसाद सो पिउ मिलै।
जामि उठै सो बीज मुहमद सोई सहस बुँद॥

[४७]

माया जरि अस आपुहि खोई। रहै न पाप मैलि गइ धोई।
गौ दूसर भा सुन्नहि सुन्नू। कहँ कर पाप कहाँ कर पुन्नू।
आपुहि गुरू आपु भा चेला। आपुहि सब औ आपु अकेला।
अहै सो जोगी अहै सो भोगी। अहै सो निरमल अहै सो रोगी।
अहै सो कडुआ अहै सो मीठा। अहै सो आमिल अहै सो सीठा।
वै आपुहि कहँ सब महँ मेला। रहै सो सब महँ खेलै खेला।
उहै दोउ मिलि एकै भएऊ। बात करत दूसर होइ गएऊ।

जो किछु है सो है सब ओहि बिनु नाहिंन कोइ।
जो मन चाहा सो किया जो चाहै सो होइ॥

एक से दूसर नाहिं बाहर भीतर बूझि ले।
खाँड़ा दुइ न समाहिं मुहमद एक मियान महँ॥

[४८]

पूछौं गुरू बात एक तोहीं। हिया सोच एक उपजा मोहीं।
तोहि अस कतहुँ न मोहिं अस कोई। जो किछु है सो ठहरा सोई।
तस देखा मैं यह संसारा। जस सब भाँड़ा गढ़ै कोहाँरा।
काहू माँझ खाँड़ भरि धरई। काहू माँझ जो गोबर भरई।
वह सब किछु कैसे कै कहई। आपु बिचारि बूझि चुप रहई।

मानुस तौ नीके सँग लागै। देखि घिनाइ त उठि कै भागै।
सीझ चाम सब काहू भावा। देखि सरा सो नियर न आवा।

पुनि साईं सब जग रमै औ निरमल सब चाहि।
जेहि न मैलि किछु लागै लावा जाइ न लाहि॥

जोगि उदासी दास तिन्हहिं न दुख औ सुख हिया।
घर हीं माहँ उदास मुहमद सोइ सराहिए॥

[४९]

सुनु चेला जस सब संसारू। ओही भाँति तुम किया बिचारू।
जौं जिउ कया तौ दुख सौं भीजा। पाप के ओट पुन्नि सब छीजा।
जस सुरुज उअ देख अकासू। सब जग पुन्नि उहै परगासू।
भल औ मंद जहाँ लगि होई। सब पर धूप रहै पुनि सोई।
मंदे पर वह दिस्टि जो परई। ताकर मैलि नैन सौं ढरई।
अस वह निरमल धरति अकासा। जैसे मिला फूल महँ बासा।
सबै ठाँव औ सब परकारा। ना वह मिला न रहै निनारा।

ओहि जोति परछाहीं नवौ खंड उजियार।
सुरुज चाँद कं जोती उदित अहै संसार॥

जेहि कै जोति सरूप चाँद सुरुज तारा भए।
तेहि कर रूप अनूप मुहमद बरनि न जाइ किछु॥

[५०]

चेलै समुझि गुरु सौं पूछा। धरती सरग बीच सब छूँछा।
कीन्ह न थूनी भीति न पाखा। केहि बिधि टेकि गगन यह राखा।
कहाँ से आइ मेघ बरिसावैं। सेत साम सब होइ कै धावैं।
पानी भरैं समुंद्रहि जाई। कहाँ से उतरैं बरसि बिलाई।
पानी माँझ उठै बजरागी। कहाँ से लौकि बीजु भुइँ लागी।
कहवाँ सूर चंद औ तारा। लागि अकास करहिं उजियारा।
सूरुज उठै बिहानहि आई। पुनि सो अथै कहाँ कहँ जाई।

काहे चंद घटत है काहे सूरुज पूर।
काहे होइ अमावस काहे लागै मूर॥

जस किछु माया मोह तैसै मेघा पवन जल।
बिजुरी जैसे कोह मुहमद तहाँ समाइ यह॥

[५१]

सुनु चेला एहि जग कर अबना। सब बाहर भीतर है पवना।
सुन्न सहित बिधि पवनहि भरा। तहाँ आप होइ निरमल करा।
पवनहि महँ जो आप समाना। सब भा बरन ज्यों आप समाना।
जैसे डोलाए बेना डोलै। पवन सबद होइ किछहु न बोलै।
पवनहि मिला मेघ जल भरई। पवनहि मिला बुंद भुइँ परई।
पवनहि माहँ जो बुल्ला होई। पवनहि फुटै जाइ मिलि सोई।
पवनहि पवन अंत होइ जाई। पवनहि तन कहँ छार मिलाई।

जिया जंतु जत सिरिजा सब महँ पवन सो पूरि।
पवनहि पवन जाइ मिलि आगि बाउ जल धूरि॥

निति जो आयसु होइ साईं जो अग्याँ करै।
पवन परेवा सोइ मुहमद बिधि राखै हरी॥

[५२]

बड़ करतार जिवन कर राजा। पवन बिना किछु करत न छाजा।
तेहि पवन सौं बिजुरी साजा। ओहि मेघ परबत उपराजा।
उहै मेघ सौं निकरि देखावै। उहै माँझ पुनि जाइ छपावै।
उहै चलावै चहूँ दिसि सोई। जस जस पावँ धरै जो कोई।
जहाँ चलावै तहवाँ चलई। जस जस नावै तस तस नवई।
बहुरि न आवै छिटकत झाँपै। तेहि मेव सँग खन खन काँपै।
जस पिउ सेवा चूके रूठै। परै गाज पुहुमी तपि कूटै।

अगिनि पानि औ माटी पवन फूल कर मूल।
उहई सिरिजन कीन्हा मारि कीन्ह अस्थूल॥

देखु गुरू मन चीन्ह कहाँ जाइ खोजत रहै।
जामि परै परबीन मुहमद तेहि सुधि पाइए॥

[५३]

चेला चरचत गुरु गुन गावा। खोजत पूछि परम रस पावा।

गुरु बिचारि चेला जेहि चीन्हा। उत्तर कहत भरम लेइ लीन्हा।
जगमग देख उहै उजियारा। तीनि लोक लहि किरिन पसारा।
ओहि ना बरन न जाति अजाती। चंदन सुरुज दिवस ना राती।
कथा न अहै अकथ भा रहई। बिना बिचार समुझि का परई।
सोऽहं सोऽहं बसि जो करई। जो बूझै सो धीरज धरई।
कहै प्रेम कै बरनि कहानी। जो बूझै सो सिद्ध गियानी।

माटी कर तन भाँड़ा माटी महँ नव खंड।
जो केहु खेलै माटि महँ माटी प्रेम प्रचंड॥

गलि सरि माटी होइ लिखने हारा बापुरा।
जौ न मिटावै कोइ लिखा रहै बहुतै दिना॥

———

परिशिष्ट

श्री गोपालचंद्र सिंह की प्रति के पाठांतर

छंद-संख्याएँ वर्गाकार कोष्टकों में दी हुई हैं । शेष संख्याएँ पंक्तियों और उनके अंशों की है। प्रत्येक पंक्ति दो अंशों में विभाजित है—पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध; उसी के अनुसार पंक्ति-संख्या देने के अनंतर-१ तथा-२ की संख्याएँ दी हुई हैं । प्रत्येक अंश में उल्लिखित पाठांतर किस स्थान पर आता है, यह बताने के लिए यदि वह अंश के प्रारंभ से ही नहीं आता है, उतने शब्दों के लिए विंदु दे दिए गए हैं जितने शब्द उसके पूर्व उक्त अंश में आते हैं। और यदि पाठांतर प्रारंभ में आता है, तो उक्त अंश में उसके बाद आने वाले शब्दों की संख्या के अनुसार विंदु दिए गए हैं।

[१] १,२ पंक्तियों में आने वाला दोहा नहीं है। ३-२ हियें···। ५-१···आपु । ५-२···कीन्ह । ६-१ तस·····। ६-१··जस । ७-१···साथी। ८-१··आना तौ हौं आवा। ८-१···मैं गावा। ९-१ औ वैं बचन बार जब·। १०-१ तीसरा शब्द नहीं है। १०-१··कीना। १०-२.चलत । १२-१कहै ग्यान के आखर। १२-२··मन। १३-२ जोग्हु टूटत·। १४-१ हतेउ··।

[२] १-१ पहला शब्द नहीं है। १-१···तहां। १-२····जहां। २-१ पूरा पूरन···। ३-१ अन भाँती। ४-१····हँकारा। ५-१·····अहा। ५-२··माँझकुन्छ होइ रहा। ७-१ अंसन बंस···। ७-२ बाजहिं खंड अँस पाखंडा। ८-१··धरती करंभ नहि। ९-१ पांच···। ९-२ जाना मैं····। १०-१··बीज ।

[३] १-१ अैसे को रातो भा टाऊँ। २-२··बरन। ५-१ भइ·····। ५-१···रोइ। ६-१ मेंटि न····। ८-२ भर निचिंत जिय छोइ । ९-२··तहँ कोइ। १०-२ हौं तूँ कहँ तें बीछुरे। ११-१·बिच ।

[४] १-१ औ··। १-१·· जो इच्छे। १-२·होइ सो। २-१ हतेउ·····। ४-१ भा आएसु हौं सब का·। ५-१ कहाँ····। ५-१·· भाँतिन्ह। ६-१··मिलि। ६-१····कीन्ही। ६-२ भर आयसु सबही नहि चीन्ही। ७-१ तूँ साँचा···। ७-२ करता हरता··। ८-१···हुत। ९-१· अनौन (हिंदी मूल)। १०-२ पिउ मुकतें धनि संकरे। ११-२··खिलार सों। १०,११ छंद ६ का सोरठा इस छंद में दिया हुआ है।

[५] २-१ जौहों (हिंदी मूल)। २-१··लीन्ह। २-२ जे सब अहवै कीन्हे·। ४-१

भा···। ५-१···सँवारहु । ५-२ और पाँचौ भीतर बैठारहु । ६-२··· को । ७-१ नव दुवार खोलहि· । ७-२···दीन्ह । ८-२··वै । ९-२··बिन । १०-१ हतेउ न···। १०-२ · जेउँ हुत । १०,११ छंद ४ का सोरठा इसमें दिया हुआ है।

[६] ३-२·· तौ । ४-१··हसि । ५-२·· कोहि । ५-१····पापसि । ५-२····न नापसि । ६-१ धरमिहिं महँ धरि पापी· । ६-२ लाइ सँधात पाप··। ७-१ उहा नाम जिउ किया·। ७-२··वै सँभारा । ८-१ आदम बरजि जो आपन बरजै । ९-१ तहाँ हुतै पुनि· । १०,११ छंद ५ का सोरठा इसमें दिया हुआ है।

[७] १-१ का करता चाहै·· । १-२ असकै···। २-२···जी । ३-१··जलालन रोए। ३-२·· हुत देव बिछोए । ३ अ (अतिरिक्त पंक्ति) अस दूनौ धरि मंदिल पियारे । पूरुब पच्छिम हुवे निनारे । ६-१···कार । ६-२··· मसि । ७-१··· फल । ८-१ तिनहीं सिरिट । १०,११ 'सोरठा' शीर्षक है, किंतु उसकी पंक्तियाँ नहीं हैं ।

[८] १-१··तास । २-१···सिरिजी । ४-१ मथि···। ५-२····सरीरू । ७-१····जामैं । ७-२ सोत सोत निकसै अस नामैं । ९-२ हेरें खोहइ न जाइ । ११-२ मुहमद नाउँ न ठाउँ जेहि ।

[९] १-१ गा गाँव सब सबहिं बखानू । १-२ कहौं गियान सुनौ दै कानू । २-२ निखरी भौहैंन कर··। ३-२ सोत लिलाट··। ५-२··· सेहि । ६-२··औनइ । ६-२ हंसी बीज हेवँत डर छोहू । ७-१·· बैठहि । ७-२ बसैं····, ८-१·· हेरहि । ८-२ जैसें··। ९-१··जौ पहुँची । ९-२ निनारी मानौ··। १०-१·· नर कर । १०-२ नव बातैं । ११-१··लौपै ।

[१०] १-१···नाहि बड़ । २-१··बड़ । २-२···गाऊँ । ३-१···पुनि । ४-२··कौन । ६-१ तथा ६-२ परस्पर स्थानांतरित हैं । ७-भावै नारी दसा घर । ८-२ लिहैं··। १०-२··अंस । ११-१ खेलहु मैंड पिण्ड पिंड ।

[११] १-१···पाहन । २-१ बुंद मद बेद । ३-२·बरन । ३-२···कथा । ४-२··नहँवाँ बहु । ६-१···जस । ६-२····कान । ७-१···भा । ७-२·· जो रे बुझावै । ८-२··· अंस । ९-२ सोहँ सोहँ बोलै । ९-२··बंस । ११-१·लोक मिलाइ ११-२· तौ फर ।

[१२] १-१···चाहसि । १-२···बँभेखा । २-२ अंस । ३-१··· जो । ३-१ अंस····। ४-१ असि गियान हियें जेहँ बूझा । ४-२ तेहँ धरि ध्यान नैन सब सूझा । ५ पुतरिन्ह मांझ जो बिंदिका का रे । अगम नाहि वह बड़ बिस्तारा । ६-१··ओछहि कस जाई । ६-२ सरग आइ तेहि माहँ । ७-१ पुनि जल सदुँद जो । ८-१ जौहि ("हिंदी मूल) । ८-१···लागी । ११-१·· मिलि मिलि ।

[१३] १-१··अस पिंड। १-२ उठै अनहद कै बर कोपू। २-१ सोवै चिंता··। २-२ वहई घट मिलि··। ३-२····जीभ। ४-१ परम अंस तहँ उत्तर। ४-२·· अंस जो। ५-१ तन सरवा मन··। ५-२ अंस····। ५-२····हिया। ६-१·· बड़ि। ६-२ पानि अपानि बानि··। ८-१ औ ग···। ९-१ को बोलै। १०-१·बेहर बेहर··

[१४] २-२ एक हुतें नहिं होइ नियारा। ३-१ मता·····। ३-२ सिरिजे····। ४-१·· भा तन जेहि अंगा। ४-२···भा जेहि। ५ तन चारिउ सिउँ धरति बिलाई। जिउ पाँचौ सिउँ सरग चलाई। ६-१ भूला····। ६-१····कोई। ५-२ ६-२·चारि पुनि माटी होई। ७ जस ये चारौ धरति बिलाहीं। तस वै पाँचौ सरग समाहीं। ८-१···है। ९-१ परम अंस तेहि महँ। १०-१ तन आरसि कर। १०-२···चहसि। ११-१·लै तेहि। ११-२···तब।

[१५] २-१·परम अंस। २-२···बिछुरी। ३-१·झिलमिल अंतरिख तैसे। ३-२···· जैसे। ४-१··कर दरसन लेखा। ४-२··मुख तेहि महँ। ५-१····काया। ५-२··· मन। ६-२ हिरदै···। ७-२· न जरै सो। ९-१·मींचि। ९-२··सो। १०-१ एक कहत होहिं दोइ। १०-२ हुत·। ११-१ बिच हुत··। ११-२···रहहिं।

[१६] १-१· ना कर। १-१···बड़ कीन्हे। १-२···सब चीन्हे। २-१ जेहि महँ भोग रोग औ सोगू। ३-१ राज साज सुभ असुभ करमा। ३-२ मौन बाक सुर आसुर सरमा। ५-१ चढ़त ऊँच। ६-१···अंब्रित। ६-२··चलत सुठि। ७-२ अमर मूरि सोई पै। ८-१ तहाँ बटपरा नारद। ८-२· कठिन। ९-१···कै पइठै। १०-२ पिय पाखंड···। ११-१··भाँति के। ११-२·बहु।

[१७] १-१·· नाँवि सकहु। १-२··करी। २-२·नाटिका। ३-२··बहु गंदर। ४-१··परे। ४-२·ताकर। ५-२···तर। ७-२····अवासा। ८-१··तालुका। ८-२ कहिय···। ९-२···बरियार। १०-२···हुत। ११-१ झूँठा यह।

[१८] १-२····ताईं। ३-१···कर। ३-२ आपुन···। ४-१···पंखि बसेरी। ४-१· सौजा आपु अहेरी। ५-१···खन फूला। ५-२···भूला। ६-२·· फर। १०-१··· कोउ न। १०-२···कहँ। १०-१·सब जग छाड़ि कै।

[१९] १-१ डा-डराइ मन बिनवहि सोई। १-२ पुनि····। ३-१ जो पै जग छाड़ब··। ३-२···मोर। ५-१·····रहई। ५-२ कीन्ह सवाद जगत सब। ६-१·जो पूँछिहि मैं तोहि। ६-२ तैं मोहिं कहँ दहुँ का गुन। ७ कौन उतर पाउब निस्तारा। बैरी बोउब अपने द्वारा। ८-१··सकहु तौ लेहु कै। ९-२·· किया। १०-१ तब···। १०-२···· जिउ। ११-१ · सो। ११-२··घट छाड़ि कै।

[२०] ३-१··सेवा जिउ। ३-२ ताकहँ ठाकुर··। ४-१··जग सो। ५ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ६-१ बर····। ६-२ जरमा सो जहँ नींद। ७-१···पा·। ७-२··

पिय कंठ न भेंटा। ८-१ आजु निघटि बीती सब। ९-१ जेई गया निघटि होइ। ११-१ देखेन्हि। ११-२ राती।

[२१] १-१ नासति ओ आपु न। १-२ सो बहि मिलि एक होइ गएऊ। २-२ औ जैस। ३-१ जो बहि रस कर लागू। ३-२ तइ रस बिख। ४-१ मेंह रू।

इस छंद की पांचवीं पंक्ति से लेकर छंद २४ की ९ वीं पंक्ति तक का अंश प्रति में छूटा हुआ है।

[२४] १०-२ अँधरन्ह धरा सो दूर कै। ११-१ जेइँ टेका जो ठावँ। ११-२ तिन्ह।
[२५] ३-१ जेइँ हेरा जो जहँवाँ। ३-२ तेहि तहाँ छपावा। ४-२ जेहि चलि दुहूँ जग पाव। ६-२ बिरह के पैगहि धरम कै। ७-१ सुनत सास्तर। ६-२ सब। ८-१ जो पावा। ८-१ पहुँचा। ८-२ सो लूटा बटपार। १०-२ नयन जो देखौं औ सुनौं। ११-१ बरौं। ११-२ बारभा।

[२६] १-१ पुनी। ४-१ बरिया अस खेवक। २-२ उतरा जाइ तरीकत। ५-२ लेहू। ६-१ ढूँढ़ै बहै लेइ गजमोती। ७-१ ओइ अस नाव चढ़ावहिं। ७-२ महँ गहे तीर लेइ आवहिं। ८-२ पहुँचा। १०-२ चला। ११-१ निदान। ११-२ जो।

[२७] १-१ मुहमद। २-२ कलपी नगर कीन्ह अस्थानू। ४-१ लाग। ५-१ गहरी। ५-२ सिध आयस बाँचा। ६-१ जो। ७-१ जो। ८-१ लेइ। ८-१ जा कहं। ९-१ जाप जपत। ९-२ ओइट भा। ११-१ होइ पतंगा दीप।

[२८] १-१ फर मीठ गुरू हुत। २ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ३-१ तन मन भूर सँवारै। ४ जियत होइ मर औगन चारू। तन खरबरी बारै औ डारू। ५ पाँच भूत आतमा मारै। गरब दरब करसी कै जारै। ६-१ तन भाँटी टपकै। ६-२ जिमि। ७-१ आपुहि मेंटि औ डारै। ७-२ मी (हिंदी मूल)। ८-१ अस होइ धरै जो साँचै। ९-१ गुड़ हुत खाँड खाँड हुत बहुरै। ११-२ हेरिए।

[२९] १-१ तप अस सब। १-२ होइ मो सब। २-१ मसि बिंदिका जो पुतरिन्ह। २-२ सोई परम जोति की छाहीं। ४-१ आवा। ४-२ लखावा। ५ मुकुतहि सांकर जबहिं सँचारा। सँकरै मुकुत बहुत बिस्तारा। ६ जहँ-वहि नग जो तिहि कछु केरा। तहँवहि जहँवहि भर सब फेरा। ८-१ हुत। ९-१ बाउ हुतें। ९-२ सहज सुन्न कर। १०-१ महँ पुन्नि। १०-२ इहै सबै तप।

[३०] १-२ सुन्न हुतें सब किछु। २-१ फूल औ पानी। २-२ सुन्न हुतें "३-२ सों टीके सब खंडा।" ४-१ महँ। ५-२ सुन्न सास सब। ६-१ बैठ। ६-२ अस टेका। ७-१ समुद्र महं। ७-२ रहा सब परति।

सातवीं पंक्ति के दोनो अंश परस्पर स्थानांतरित हैं। ८-१ सुन्न माँझ तस निरखहु। ९-१ काठहि···। ११-२° महा अरंभ°।

[३१] १-१ मा—मथनी जो···। २-१···साईं। २-२···धरि जारै। ३ मही महंडा करि तन छोवै। मन खैलनि तेहि घालि बिलोवै। ४ यह पंक्ति नहीं है, किंतु पंक्ति २ और ४ के बीच में निम्नलिखित पंक्ति और हैं, अर्थात दूध हिय निरमल कीजै। बचन गुरू कर जावन दीजै। ५-१ चाप डेढ़ दुइ साँसहिं फेरहु। ५-२··तस हिएँ। ६ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ८-१···सिराएँ। ९-१ महीर पाप धोइ कै। ९-२··बहु। १०-१°देखु। ११-२° तौ (हिंदी मूल)।

[३२] १-१···बास सो कहाँ। १-२ हिया कँवल बहु संपुट जहाँ। ४-१ तहाँ उठै धुनि आउ इंकारा। ५-१···अरूप अभाँती। ६-१···मँझियारा। ७-१·· टेंब तेल सत°। ७-२ स्वाँमा बाती सरवा हिया। ८-१°जम। ८-२ भँवा···। ९-१··जब। ९-२ लेत चलौ तस°।

[३३] १-१··अस पिय के रंगा। १-२ जेहिं लागउ···। २-१ अरध औ ऊरध दुइ मुख°। २-२°° कहा। ३-१···जग। ३-२° सो आपन रूप देखावै। ४ एक सो परगट भा जग कहा। दूसर गुपुत जोति अति महा। ५-१···सुख। ५-२··सिखा। ६-१ पाढ़ित पढ़त लेत जो नाऊँ। ७-१····खीली। ७-२ मो राजा और तासों ढीली। १०-१ कंत पियारा धून। १०-२ देखौं। ११-१ भएउँ परस दुइ ईठ। ११-२··· करत।

[३४] १-१°लखाव सोई लखि पावा। १-२ जेईं तेहिं। २ पिउ सँवरा धनि आपु बिसारा। चित्त लखा मन मारि सो टारा। ३-१··करब अडारसि। ४-२ जागत सपना बराबरि जाना। ५-१··पुनि सोई सहै। ५-२°सबद मधुरी धुनि दहै। ६-१··कहै जस। १०-१·· मुएसिन। १०-२ तौ लहि मरि लौ चीन्हि ओहि। ११-१ जैसे रहै··। ११-२·· होहिं दुइ।

[३५] २-१ जैसहि भेस और छंदहि छंदा। २-२···ताहि नौ नंदा। ३ बाले खेलै तरुने रोवै। लउटि बूढ़ होइ बहुरै ढोवै। ४-२ सो निनार निरमल सुठि हेरा। ५-१ जो···। ५-१····भुलाई। ५-२··राखत दरस लुकाई। ६-१ तूं पुनि गुपुत भाँति। ६-२ औसन भेद···। ७-१°मुवै। ७-२ अंधहि काह चाँद जेउँ°। ८-१··· बुरबुरा। ९-२ एकौं जाहिं बिलाइ। १०-२·· नासिक स्रवन।

[३६] १-१ सा—सूरत। १-२°सों। २-१····डिठियारी। ३-२·· जेईं तोहि अवतारी। ३-१ जो वह करनी°। ३-२°जीउ मरै नहिं। ४-२ सुख भोजन

सब तजहु। ५-१ दूध भात किछु करहु। ५-२ रोटी साग किन्ह्‌ फरहारू। ६-१··घटै पुनि। ७-१ तौ (बिंदी मूल)। ७-२ आनि घटहि घट सुखमना नारी। ८-१···लागहु। ९-१·· अहै रे। ९-२ ताकि···। १०-२ उपजे सब परकार होइ।

[३७] १-१·· खेलवार भेंटै। १-२ बहुरि न खेलब खेल समेटै। ३-१··दुख मंद जो बसी। ३-२····धंसी। ५ यह पंक्ति प्रति में यथा ३ है। ६-१··आछै। -२· होइ बेधि। ७ जौ लहि अंतर तौ लहि टेकै। पावत करते होइ मिलि एकै। ८-१·· हौं। ७-२ औ मो महं सब कोइ। ९-१·है। ९-२· नाहीं। १०-२ बुधि पावसि साहस कहाँ।

[३८] १-१··करु जिउ भरपूरी। १-२ जेहिं पावै रस अंब्रित। ८-२·· तारी। ३-१ सात बरिस जो पुकारै लिहें। ३२····चहै। ४२··महदी कर। ५-२·· सो। ६-२·· सती अति। ७-१ जस सँवरत प्रीतम चलि देखा। ७-२ रूप के सैातुख होइ सो पेखा। ८-१ साजु···। ८-२ देखहु आपुहि आपु। ९ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। १०-१·· लाँब। ११-१ जेइँ रे।

[३९] १ हा-हिय काढ़ि न बरजी नारी। लोहे नाहि पोंछु सुठि भारी। ७-२ जेउँ····। ३-१ आकर जोति करम्‌ो तें माँगी। ४ दुहुँ साँसन्ह हाथी अस धोवै। पाँनि भूल लोहार खट लोवै। ५-१··सो मंदर। ५-२· संहारी। ६-१ मन हतीर हनि। ६-२··मुरारी। ७ ध्यान दिस्टि सों बूझा जानी। सिस्टि निठाई ऊपर आनी। ८-२···जोति। ९-२ अधियर भानु अलोपि। १०-१ जिकर पास अनफास। १०-२ कहत रहै तस जीव औ। ११-१·· तब।

[४०] १-१ खा-खट खेल औ खेलनहारा। १-२·एकै सो जेइं खेल पसारा। २-१ आपुहि चाहसि आपु। ६-२ आपुन दरसन आपुहि। ७-१ जरे अस····। ७-२·· छूटि और न चीन्हा। ८-१ यहि काया··। ८-२· धरम। १०-२ सिरिजा सीस··।

[४१] १ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। २ अहद हुतें अहमद भा दूजा। आपन लाग करै सब पूजा। ३-१ ··तस भा ठाँवहि ठाऊँ। ४-१ ·सबद रहै तस·। ५-१···· मो देखू। ५-२ हौं तोहि देखहुँ तू मोहि देखू। ६ तूँ अमि सूरति जोइ निहारसि। तूँ सेवा जानेसि तन मारेसि। ७-२ ·· रहै दिस्टि महँ। ८,९ अप ता नेम बरन गेंदें को सो खेल। जौ लहि एक न रस मिसै चखौ तौ लौं उन पियहि मेल।

[४२] १-१ अस वह किछु···। १-२ कोइ न···। १-२ मिथनहि सेन आइ औ सामू। ३-१ चाँद कलंकी का पटतर दाजै। ३-२ ·बढ़ै औ गहनै

लीजै। ५-१ ·· चित। ६-१ तहँ कलंक ···। ६-२ ना काहू के ···। ७-१ ··· निरखि। ७-२ ·· बूझि चुप्प कै ·। ९-१ · मतै न हँकारै। ११-२ ·· घद।

[४३] १-१ ना-नारद सँग ··। २-१ परम ····। २-२ ·· साँस सब केरा गुनई। ३-२ गुरु साथी भल खेल ·। ४ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ५-१ ··· काज सब। ५-२ ···· सब माँजैं। ६ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ८ राव राँक जो काल है जो सेवै चित लाइ। ९-२ बात बनाइ। १०-१ ·· खावा। ११-१ घरी परी ··।

[४४] १-१ ··· दीन मन गाँठा। १-२ पोढ़े राछ पेम सों साँठा। २-२·· सत्त। ३-१ खरिक लाइ कोंपा अब केसू। ४-१ ··· ते लै। ५-१ लाइ लाह कै ताढ़ [?]। ५-२ ·· गहि हाथ कुंजी। ६-१ चित न डोल जो गड़ी ·। ६-२ ··· जिय तें। ७-१ सिध मारग वह ··। ७-२ ··· करै सत। ८-१ चला राइ न शरीअत काहू किछु न बसाइ। ९-२ ·· जाइ। १०-२ ··· गहै। ११-२ ·· जानु निजु। १०,११ इस छंद में सोरठा अगले छंद का है।

[४५] १-१ कही ··। २-२ ··· कै। ३-१ ·· वोहि। ३-२ औ ताना पुरुखारथ खेला। ४-२ ··· कहाँ। ५-१ केहि बिधि आपुहि बिच हुत मेंटै। ५-२ ·· हेराएँ। ६-२ · दूसर। ७-१ ताकर बरन रूप सब देखै। ७-२ वह पिरीत बहु ··। ८-२ ·· जा बिन खोइ। ९-२ पहुँचा आगर। १०,११ इस छंद में सोरठा पूर्ववर्ती छंद का है।

[४६] २-१ अैस फिरै ···। ३ इस पंक्ति के दोनों अंश परस्पर स्थानांतरित हैं। ४ गुनवंत सो जो हिरदै ध्याना। मीत औ दारी है। हौं कहना। ५-१···· सुनता। ५-२ ·· जो वोहि बड़ चिंता। ६-१ ··छाडु हिय जोरा। ६-२ ·· कहै जग बौरा। ७ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ८-१ ··· आन तजि। ८-२ · रहै। ८-१ ·· कै भीज। ९-१ ·· जस। ९-२·· आप जस सहस गुन।

[४७] १-१ भा आगर अस आपुहि खाएँ। १-२ ·· मैल पाप के धोएँ। ३ हैां ही गुरू सो हैां ही चेला। हैां ही सब औ हैां ही अकेला। ४-१ हैां ही सो जोगी हैां ही ··। ४-२ हैां ही सो निरमल हैां ही ··। ५-१ हैां ही सो कड़ुवा हैां ही ··। ५-२ हैां ही सो अमिल हैां ही ··। ६-१ हैां ही मांझ सब भा दहुँ ·। ६-२ हैां ही सब मुख खेलैं ·। ७-१ हैां तूं दोउ मिलि एकै भए। ७-२ करत जो दूसर सो मिटि गए। ८-१ ···· हैां ही। ८-२ मोहि ···। ९-१ · मैं। ९-२ अब जो करौं। १०-२ ··· तूँ। ११-१ खंडे। ११-२ ·· पुरयार।

[४८] १-२ ·· जस औ पुनि मोती। २-१ ···· ओहि। २-२ जत किछु

सब ठाईं •। ३-१ जब देखौं •••। ४-२ •• औ। ५-१ •• ठाईं कैसें। ५-२ ऐसे बिचारि अब बूझा कहई। ६-१ • सीं। ६-२ • को ठाउँ हिये नहि भागें। ७-१ सोंध चरंत तेहि तहाँ भावा। ७-२• सराधि निथर नहिं •। ८-१ वह तूँ गोसाईं जग कर। १०-१ जो रे ••। १०-२ ना होइ दुक्ख न सुख कछु।

[४९] १-१ •• अस। २-१ •• ग्यान दुख सुख कहँ सजा। २-२ पेट परार न कै दिन तजा। ३-२ •• होइ किरन परगासू। ४-१ ••• जेत किछु। ४-२ ••• पर देखौं। ५-१ • ऊपर। ५-२ •• न ऊभर भरई। ७-२ •••• होइ निनारा। ७ प्रति में यथा ३ है। ८-१ देखि दुहै। ८-२ सुरुज चंद •। ९-१ •• परिछाहीं। ९-२ भा उजियर। १०-१ ताकर मोनि रूप। १०-२ ••• अहै।

[५०] २१ तहँ नहिं ••••। २-२ कहिं सरग गगन बिधि •। ३-१ कहँ हुत उपजि मेघ सब आवहिं। ३-२ •• कहँ हुत होइ पावहिं। ४-१ समुंद्र समाहीं। ४-२ •• उतरहिं बरसि बिलाहीं। ५-२ •• सोइ। ६-२ •• के हैं अधिकारा। ७-१ •• उहाँ दिन आई। ७-२ पुनि अथवै निसि कहाँ सो जाई। ९-१ • गहन गहै दिन। १०-२ • भेद औ। ११ यह पंक्ति प्रति में नहीं है।

[५१] १-१ ••जब आहि भावना। २-१ • सहज। २-२ रहा आपु होइ बौनिउ। ३-१ पवन कीन्ह अस ••। ३-२ सब कहँ बरतै सबहि नियाना। ४-१ जहाँ डोलावै पौनै डोला। ४-२ ••• सब किछु बोला। ५ यह पंक्ति प्रति में नहीं है। ६-१ • कहँ बुलबुला। ६-२ • हुत। ७-१ ••• सो। ७-२ • बिन तन। ८-२ राखा •••। ९-१ देखु पवन बिनु नाहीं। ८,९ परस्पर स्थानांतरित हैं। १०-२ आपका आप प्रथमें करै। १०,११ परस्पर स्थानांतरित है।

[५२] १-२ आछ्द पवन बिन आगि। २-१ ताकहँ ताजन ••। २-२ •• बिन हुत। ३-१ पवन मेघ होइ जो जग छाई। ३-३ •••• बिलाई। ३ के दोनों अंश परस्पर स्थानांतरित हैं।
इसके अनंतर प्रति खंडित हो गई है।

आखिरी कलाम

[१]

पहिले नावँ दैउ कर लीन्हा । जेइ जिउ दीन्ह बोल मुख कीन्हा।
दीन्हेसि सिरा सँवारे पागा । दीन्हेसि कया जो पहिरै बागा।
दीन्हेसि नयन जोति उजियारा । दीन्हेसि देखै का संसारा।
दीन्हेसि स्रवन बात जेहि सुनै । दीन्हेसि बुधि गियान बहु गुनै।
दीन्हेसि नासिक लीजै बासा । दीन्हेंसि सुमन सुगंध बिरासा।
दीन्हेसि जीभ बैन रस भाखै । दीन्हेसि भुगुति साध तेहि राखै।
दीन्हेसि दसन सुरंग कपोला । दीन्हेसि अधर जो रचै तंबोला।

दीन्हेसि बदन सुरूप रंग दीन्हेसि माथे भाग।
देखि दयाल मुहम्मद सीस नाइ पथ लाग ॥

[२]

दीन्हेसि कंठ बोल जेहि माहाँ । दीन्हेसि भुजाडंड बल बाहाँ।
दीन्हेसि हिया भोग जेहि जामा । दीन्हेसि पाँच भूत आतमा।
दीन्हेसि बदन हीत (सीत?) औ घामू । दीन्हेसि सुक्ख नींद बिसरामू।
दीन्हेसि हाथ चाह अस कीजै । दीन्हेसि कर परलौ पल्लव?) गहि लीजै।
दीन्हेसि रहस कोड़ बहुतेरा । दीन्हेसि हरख हिया औ थोरा।
दीन्हेसि बैठक आसन मारै । दीन्हेसि बूत जो उठै सँभारै।
दीन्हेसि सबै सँपूरन काया । दीन्हेसि दोइ चलने का पाया।

दीन्हेसि नौ नौं नाटका (फाटका?) दीन्हेसि दसवँ दुवार।
सो अस दानि मुहम्मद तिनके हौं बलिहार॥

[३]

मरम नैन कर अँधरै बूझा। तेहि बिय (बिन?) रे सुंसार न सूझा।
मरम स्रवन कर बहिरै जाना। जो न सुनै किछु दीजै साना।
मरम जीभ कै गूँगै पावा। साधहि मरै पै निकर [न] नावाँ।
मरम बाँह कर लूलै चीन्हा। जेहि बिधि हाथन्ह पाँगुर कीन्हा।
मरम कया कै कुस्टी भेंटा। नित चिरकुट जो रहै लपेटा।
मरम बैठ उठ तेहि पै गुना। जो रे मिरिग कस्तूरी पहाँ।
मरम पावँ कै तेहि पै दीठा। जो अपया भुइँ चलै बईठा।

अति सुख दीन्ह बिधातै औ सब सेवक ताहि।
आपन मरम महम्मद अबहूँ समुझ कि नाहिं॥

[४]

भा औतार मोर नौ सदी। तीस बरिख ऊपर कबि बदी।
आवत उधतचार बड़ ठाना। भा भूकंप जगत अकुलाना।
धरती दीन्ह चक्र बिधि भाईं। फिरै अकास रहट कै नाईं।
गिरि पहार मेदिनि तस हाला। जस चाला चलनी भल चाला।
मिरित लोक जेहि रचा हिंडोला। सरग पताल पवन घट (खट?) डोला।
गिरि पहार परबत ढहि गए। सात समुंद्र कहच (कीच?) मिलि भए।
धरती छात फाटि भहरानी। पुनि भइ मया जौं सिस्टि हठानी (दिठानी?)।

जो अस खंभहि पाइ कै सहस जीव (जीभ?) गहिराइँ।
सो अस कीन्ह मुहम्मद तो अस बपुरे काइँ॥

[५]

सूरुज सेवक वाके अहै। आठौ पहर फिरत जो रहै।
आयसु लिहे राति दिन धावै। सरग पताल दुवौ फिरि आवै।
दगधि आग महँ होइ अँगारा। तेहि कै आँच धिकै सुंसारा।
सो अस बपुरै गहनै लीन्हा। औ धरि बाँधि चँडाले दीन्हा।
गा अलोप होइ भा अँधियारा। दीठै दिनहि सरग माँ तारा।

उवतै झाँप्पि लीन्ह घुप चापै। लाग सरप (सरब?) जिउ थर थर काँपै।
जिउ का परै कया (ग्याँन?) सब छूटै। तब भा मोख गहन जौ छूटै।

ताको अता तरासै जो सेवक अस मित।
अबहुँ न डरसि मुहम्मद काह रहसि निहचिंत॥

[६]

ताकरि अस्तुति कीन्हि न जाई। कौनो जीभि मैं करौं बड़ाई।
जग पताल जो सँतै कोई। लेखनी परखि समुँद्र मसि होई।
लागै लिखै सिस्टि मिलि जाई। समुद घटै पै लिखि न सिराई।
साँचा सोइ और सब झूठे। ठाव न कतहूँ ओन के रूठे।
आयसु हूँ इबलीस जौ टारै। नारद होइ नरक महँ पारै।
सौ दुइ कटक कइउ लख घोरा। फरऊँ रौदि नील महँ बोरा।
जौ सदाद बैकुठ सँवारा। पैठत पोरि बीच गहि मारा।

जो ठाकुर अस दारुन सेवक तईं निरदोख।
माया करै मुहम्मद तौ पै होइहि मोख॥

[७]

रतन एक बिधनै अवतारा। नावँ मुहम्मद जग उजियारा।
चारि मीत चहुँ दिसि गजमोती। माँझ दिपै मनि मानिक मोती।
जेहि हित सिरिजा सात समुंदा। सातहु दीप भरे एक बुंदा।
ता पर चौदह भुवन दसारे (?)। बिच बिच खंड बिखंड सँवारे।
धरती औ गिरि मेरु पहारा। सरग चाँद सूरुज औ तारा।
सहस अठारह दुनिया सेरी (?)। आवत जात जातरा फेरी।
जेइ नहिं लीन्ह जनम माँ नाऊँ। तेहि कहँ कीन्ह नरक माँ ठाऊ।

सो अस दैव न राखा जेहि कारन सब कीन्ह।
दहुँ तुम काह मुहम्मद एहि प्रिथिमी चित दीन्ह॥

[८]

बाबर साह छत्रपति राजा। राज पाट उन का बिधि साजा।
मुलुक सुलेमाँ का अस दीन्हा। अदल दून (दुनी?) उम्मर जस कीन्हा।
अली केर जस कीन्हेसि खाँडा। लीन्हेसि जगत समुँद भा डाँडा।

बल हमजा कर जैस सँभारा। जो बरियार उठा तेहि मारा।
पहलवान नाए सब आदी। रहा न कतहुँ बादि का बादी।
बड़ परताप आप तप साधे। धरम के पंथ दई चित बाँधे।
दरब जोरि सब काहूँ दिए। आपुन बिरह (?) आपु जस लिए।

राजा होइ करै तब (तप) छाँड़ि जगत माँ राज।
सब अस कहै मुहम्मद तौं कीन्हा किछु काज ॥

[९]

मानिक एक पाएउँ उजियारा। सैयद असरफ पीर पियारा।
जहाँगीर चिश्ती निरमरा। कुल जग माँ दीपक बिधि धरा।
औ निहंग दरिया जल माहाँ। बूड़त कहँ धरि काढ़त बाहाँ।
समुद माँझ जो बोहित फिरई। लेते नावँ सहूँ होइ तरई।
तिन घर हौं मुरीद सो पीरू। सँवरत बिन गुन लावै तीरू।
कर गहि धरम पंथ देखराएउ। गा भुलाइ तेहि मारग लाएउ।
जो अस पुरुसै मन चित लाए। इच्छा पूजै आस तुलाए।

जो चालिस दिन सेवै बार बुहारै कोइ।
दरसन होइ मुहम्मद पाप जाइ सब धोइ ॥

[१०]

जायस नगर मोर अस्थानू। नगर क नावँ आदि उदयानू।
तहाँ देवस दस पहुने आएउ। भा बैराग बहुत सुख पाएउँ।
सुख भा सोच एक दुख मानौं। ओहि बिनु जिवन मरन कै जानौं।
नैन रूप सों गएउ समाई। रहा पूरि भरि हिरदै छाई।
जहँवै देखौं तहँवै सोई। और न आवै दिस्टि तर कोई।
आपुन देखि देखि मन राखौं। दूसर नाहिं सो कासौं भाखौं।
सबै जगत दरपन कर लेखा। आपुन दरसन आपुहि देखा।

अपने कौतुक कारन मीर पसारिन हाट।
मलिक मुहम्मद भिनहीं होइ निकसिन तेहि बाट ॥

[११]

धूत एक मारत घन गुना। कपट रूप नारद कर जना।

नावँ असाधु साधु कहवावै। तहाँ लगि चलै जौ गारी पावै।
भाव गाँठि अस मुख कर भाँजा। कारिख तेल घालि मुख माँजा।
परत [हि] दीठि छरत मोहि लेखे। दिनहि माँझ अँधियर मुख देखे।
लीन्हें चंग राति दिन रहई। परपँच कीन्ह लोगन माँ चहई।
भाइ बंधु माँ लाई लावै। बाप पूत माँ घटी करावै।
मेहरी मनुस रैनि का आवै। तरपड़ कै पूरुख अन्हवावै।

मन मैलै कै ठग ठगै ठगै न पाएउ काहु।
बरजेउ सबहिं मुहम्मद अस जिनि तुम पतियाहु॥

[१२]

अंग छड़ा औ सूरी भारा। जाइ कहौ अति चंग अधारा।
जौ काहू सौं आनि न छूटै। सुनहु मोर बिधि कैसे छूटै।
उहै नावँ करता करै लेऊ। पढ़े पलीता धूवाँ देऊ।
जौ यह धुवाँ नासिक माँ लागै। मिनती करै औ उठि उठि भागै।
धरि बाईं लट सीस झकोरै। करिया बरग जो हाथ मरोरै।
तबहि सँकोच अधिक वै होवै। छाँड़ौ छाँड़ौ कहि कै रोवै।
धरि बाहीं लै धुवाँ उड़ावै। तासौं डरै जो औस छड़ावै।

है नरकी औ पापी टेढ़ बदन औ आँखि।
चीन्हत उहै मुहम्मद झूठि भरी सब साखि॥

[१३]

नौ सै बरस छतीस जो भए। तब एहि कबिता आखर कहे।
देखौ जगत धुंध कलि माहाँ। उवत धूप धरि आवत छाहाँ।
यह सँसार सपने कर लेखा। माँगत बदन नैन भरि देखा।
लाभ दिए बिनु भोग न पाउब। परै डाँड़ जहाँ [मूर?] गँवाउब।
राति कर सपन जागि पछिताना। ना जानौं कब होइ बिहाना।
अस मन जानि बेसाहौ सोई। मूर न घटै लाभ जेहि होई।
ना जानौ बाढ़त दिन जाई। तिल तिल घटै आइ नियराई।

अस जिन जानेहु ओहट है दिन आवत नियरात।
कहै सो बूझि मुहम्मद फिर फिर कहौं असि बात॥

[१४]

जबहिं अंत कर परलौ आई। धरमी लोग रहै ना पाई।
जबहीं सिद्ध साधु गा तपा। तबहीं चलैं चोर औ जपा।
जाई मया मोह सब केरा। मन्छ रूप कै आई बेरा।
उठिहैं पंडित बेद पुराना। दत्त सत्त दोउ करिहिं पयाना।
धूम बरन सूरुज होइ जाई। किस्न बरन सिस्टिहि दिखाई।
दो अद(?) पुरुब दिसि उइहै जहाँ। पुनि फिरि आइ अथइहै तहाँ।
चढ़ि गदहा निकसै दर जालू। हाथ खंड होइ आए कालू।

जो रे मिलै तेहि मारै फिरि फिरि आइ अकाज।
सबईं मारि मुहम्मद भूँजि अदृतिया राज॥

[१५]

पुनि धरती का आयसु होई। उगिलै दरब लोग सब लेई।
मोर मोर कै उठिहैं भारी। आपु आपु मों करिहैं मारी।
अस न केउ जानै मन माहाँ। जो यह सचा अहै सो काहाँ।
सैंति सैंति लेइ लेइ घर भरहीं। रहस कोड अपने जिउ करहीं।
खनै उतंग खनै बर सौंती। नितहि हुलंब उठै बहु भाँती।
पुनि एक अचरज सचरै आई। नावँ मजारी भँवा बिलाई।
ओहि के सूँघे जियै न कोई। जो न मरै तेहि भक्खै सोई।

सब सुंसार सिराइ औ तेहि में केरी (?)घात।
उनहूँ कहैं मुहम्मद बार न लागै जात॥

[१६]

पुनि मैकाइल आएसु पाए। अनबन भाँति मेघ बरसाए।
पहिले लागै परै अँगारा। धरती सरग होइ उजियारा।
लागी सबै पिरिथिमीं जरै। पाछे लागे पाथर परै।
सौ सौ मन कै एक एक सिला। चलै बिंद (पिंड?) छुटि आवै मिला।
बजर गोट तस छूटै भारी। टूटै रूख बिरिख सब झारी।
परत दमाग (धमाक?) धरति सब हालै। ओदरत उठै सरग लै सालै।
अधाधार बरसै बहु भाँती। लाग रहै चालिस दिन राती।

जिया जंतु सब मरि घटे जित सिरिजा सुंसार।
कोउ न रहै मुहम्मद होइ बीता संघार॥

[१७]

जिबरईल पाउब फरमानू। आइ सिस्टि देखब मैदानू।
जियत न रहा जगत केउ ठाढ़ा। मारा झोरि कचरि सब गाढ़ा।
मरि गंधाइँ साँस नहिं आवै। उठै बिगंध सड़ाइँध आवै।
जाइ देउ से करहु बिनाती। कहब जाइ जस देखब भाँती।
देखहु जाइ सिस्टि बेवहारू। जगत उजाड़ सून सुंसारू।
अस्ट दिसा उजारि सब मारा। कोउ न रहा नावँ लेनिहारा।
मरि माजरि पिरथिमीं पाटी। परे पिछानि न दीखै माटी।

सून पिरथिमीं होवै धरती दहुँ सब लीप।
जेतनी सिस्टि मुहम्मद सबै भाइ जल दीप॥

[१८]

मकाईल पुनि कहब बुलाई। बरसौ मेघ पिरथिमीं जाई।
ओनै मेघ भरि उठिहैं पानी। गरजि गरजि बरसैं अति बानी।
झरी लागि चालिस दिन राती। घरी न निमुसै एकै भाँती।
छूट पानि परलौ कै नाईं। चढ़ा छापि सगरी दुनियाईं।
बूड़हिं परबत मेरु पहारा। जलहल उमड़ि धलै असरारा।
जहँ लगि मरि माजरि जत होई। लेइ बहाइ जाइहि भुइँ धोई।
पुनि घटि नीर भँडारैं आई। जनौं न बरसा तैस सुखाई।

सून पिरथिमीं होइहि बूझै हँसै ठठाइ।
एतनि जो सिस्टि मुहम्मद सो कहँ गएउ हेराइ॥

[१९]

पुनि ईसराफील फरमाए। फूँके सब सुंसार उड़ाए।
दै मुख सूर भरै जो साँसा। डोलै धरती लुपुत अकासा।
भुवन चौदहों गिरि बन डोला। जानौं घालि झुलाएसि हिंडोला।
पहिले एक फूँक जो आई। ऊँच नीच एक सम होइ जाई।
नदी नार सब जैहैं पाटी। अस होइ मिलै जो ठाँरे(?) बाटी।

दूसर फूँक जो मेरु उड़ैहैं। परबत समुँद एक होइ जैहैं।
चाँद सुरुज, तारा घट टूटै। परलहि खंभ सेसहि घट फूटै।

तस रे बजर भयाउब अस भुइँ लेब भयाइ।
पूरुब पछिउँ मुहम्मद एक रूप होइ जाइ॥

[२०]

अजराइल कहँ बेगि बुलाए। जीउ जहाँ लगि सबै लिवाए।
पहिले जिउ जिबरैल कै लेई। लौटि जीउ मेकाइल देई।
पुनि जिउ देई इसराफीलू। तीनिहुन का मारै अजराईलू।
काल फिरिस्तन केर जौ होई। कोइ न जागै निसि होइ सोई।
पूनि पूँछत जम सब जिउ लीन्हा। एको रहा बाच जिउ दीन्हा।
सुनि अजाराइल आगे होइ आउब। उत्तर देब सीस भुइ नाउब।
आयसु होइ करौं अब सोई। की हम की तुम और न कोई।

जो जम आनि जिउ लेत हैं संकर तिनहू कर जिउ लेब।
सो अवतरे मुहम्मद देखु तहूँ जिउ देब॥

[२१]

पुनि फुरमाए आप गोसाईं। तुमहूँ देउ जिवाइहि नाहीं।
सुनि आयसु पाछे का धाए। तिसरी पौरि नाँघि नहि पाए।
परत कीन्ह जिउ निसरन लागे। होई कस्ट घड़ी एक जागे।
प्रान देत सँवरे मन माहाँ। उवत धूप धरि आवत छाहाँ।
जस जिउ देत मोहिं दुख होई। ओसै दुखिया भा सब कोई।
जौ जनतेउँ जिउ अस दुख देता। तौ जिउ काहू केर न लेता।
लौटि काल तिनहूँ कर होवै। आइ नींद निधरक होइ सोवै।

भंजन गढ़न सँवारन जिन खेला सब खेल।
सब का टारि मुहम्मद अब हूँ रहा अकेल॥

[२२]

चालिस बरिख जबहि होइ जैहैं। उठिहि मया पछिले [सब] ऐहैं।
मया मोह कै किरपा आए। आपुहि कहँ आपु फुरमाए।
मैं सुंसार जो सिरिजा एता। मोर नावँ कोऊ नहि लेता।

जेतने परे अब सबहि उठावौं। पुल सिलवात के पंथ रेंगावौं।
पाछे जिए पूछौं सब लेखा। नैन माद (माहँ?) जेता हौं देखा।
जस वाकर सरवन बिन सूना। धरम पाप गुन औगुन गूना।
कै निरमल कौसर अन्हवावौं। पुनि जीवन बैकुंठ पठावौं।

मरन गंजन धन होइ जस जस दुख देखत लोग।
तस सुख होइ मुहम्मद दिन दिन मानैं भोग।

[२३]

पहिले सेवक चारि जियाउब। तिन्ह सब काजै काज पठाउब।
जिबरईल औ मैकाईलू। असराफील औ अजराईलू।
जिबरईल प्रिथिमीं माँ आए। जाइ मुहम्मद का गोहराए।
जिबरईल जग आइ पुकारब। नावँ मुहम्मद लेत हँकारब।
होइहैं जहाँ मुहम्मद नाऊँ। कइउ लाख बोलिहैं एक ठाऊँ।
ठाढ़ि रहै कतहूँ ना पावै। फिरि कै जाइ मारि गोहरावै।
कहै गोसाइँ कहाँ लै पावौं। लाखन बोलैं जौ रे बोलावौं।

सब धरती फिरि आएऊँ जहाँ नावँ सो लेउँ।
लाखन उठैं मुहम्मद केहि कै उत्तर देउँ॥

[२४]

जिब्राइल पुनि आयसु पाए। सूँघै जगत ठाँव सो पाए।
बास सुबास लीन है जाहाँ। नावँ रसूल पुकारसि ताहाँ।
जिबरईल फिरि प्रिथिमीं आए। सूँघत जगत ठावँ सो पाए।
उठहु मुहम्मद होहु बड़ नेगी। देन जुहार बोलाएँ बेगी।
वेगि हँकारे उमत समेता। आवहु तुरँत साथ सब लेता।
एतने वचन जबहिं मुख काढ़े। सुनत रसूल भए उठि ठाढ़े।
जहँ लगि जीउ मोख सब पाए। अपने अपने पिंजरे आए।

कइउ जुगन के सोवत उठे लोग मत जागि।
अस सब कहैं मुहम्मद नैन पलक ना लागि।

[२५]

उठत उमत कहँ आलस लागै। नींद भरी सोवत ना जागै।
पौढ़त वार न हम का भएऊ। अबहीं अवधि आइ कब गहेऊ।

जिबरईल तब कहब पुकारी। अबहूँ नींद ना गई तुम्हारी।
सोवत तुम्हैं कइउ जुग बीते। अैसे तौ तुम हौं नहिं चीते।
कइउ करोरि बरस भुइँ परे। उठहु न बेगि मुहम्मद खरे।
सुनि कै जगत उठी सब झारी। जेतना सिरजा पुरुख औ नारी।
नँगा नाँग उठिहै संसारू। नैना होइहैं सब के तारू।

कोउ न कतहूँ पुनि येरै ? दिस्टि सरग सब केरि।
ऐसे जतन मुहम्मद सिस्टि चलै सब घेरि॥

[२६]

पुनि रसूल जहई होइ आगे। उमत चलै सब पाछे लागे।
अध गियान होइ सब केरा। ऊंच नीच जहँ होइ अभेरा।
सबहीं जियत चहै सुंसारा। नैनन नीर चलै असरारा।
सो दिन सँवरि उमत सब रोवै। ना जानौं आगे कस होवै।
जो न रहै तेहि का यह संगा। मुख सूखै तेहि पर यह दंगा।
जेहि दिन का नित करत डरावा। सोइ दिवस अब आगे आवा।
जौ पै हमसे लेखा लेबा। का हम कहब उतर का देबा।

एत सब सँवरि कै मन माँ चहैं जाइ सो भूलि।
पैगै पैग मुहम्मद चित्त रहै सब फूलि।

[२७]

पुल सिलवात पुनि होइ अभेरा। लेखा लेब अंब (उमत?) सब केरा।
एक दिसि बैठि मुहम्मद रोइहैं। जिबरईल दूसर दिसि होइहैं।
वार पार किछु सूझत नाहीं। दूसर नाहिं को टेकै बाहीं।
तीस सहस्र कोस कै बाटा। अस साँकर जेहि चलै न चाँटा।
बारहु तें पतरा अस झीनी। खड्ग धार से अधिकौ पैनी।
दोउ दिसि नरक कुंड कै भरे। खोज न पाउब तेहि माँ परे।
देखत काँपै लागै जाँघा। सो पँथ कैसे जैहै नाँघा।

तहाँ चलत सब परखब को रे पूर को ऊन।
अबहूँ को जानै मुहम्मद भरे पाप औ पून॥

[२८]

जो धरमी होइहिं संसारा। चमकि बीजु गहब, जौ पारा।
बहुतक जानु तुरंग भल धैहैं। बहुतक जानु पखेरु उड़ैहैं।
बहुतक चाल चलै माँ जैहैं। बहुतक मरि मरि पावँ उठैहैं।
बहुतक जानु पखेरु उड़ैहैं। पवन कि नाईं जिय माँ जैहैं।
बहुतक जानौं रेंगैं चाँटी। बहुतक रहैं दाँत धरि माटी।
बहुतक नरक कुंड माँ पड़िहीं। बहुतक रकत पी माँ पड़िहीं।
जेहि कै जाँघ भरोस न होई। सो पंथी निभरोसी रोई।

परै तराप सो नाँघत को रे वार को पार।
कोउ तरि रहा मुहम्मद कोउ बूड़ा मँझधार॥

[२६]

लौटि हँकारब यह जब भानू। तपै कहैं होइहि फुरमानू।
पूँछब कटक जहाँ ते आवा। को सेवक को बैठे खावा।
जेहि जस आहि जियन मैं दीन्हा। तेहि तस संमर चहौं मैं लीन्हा।
अब लगि राज देस कर भूँजा। अब दिन आइ लिखा कर पूजा।
छः मास कर दिन करौं आजू। आउ क लेउँ औ देखौं साजू।
से चौराहा बैठै आवै। एक एक जनौ का पूँछि पकरावै।
नीर खीर हुँत काढ़ब छानी। करब निनार दूध औ पानी।

धरम पाप फरियाउब गुन औगुन सब दोख।
दुखी न होहु मुहम्मद जोखि लेब धरि जोख॥

[३०]

पुनि कस होइहि दिवस छ मासू। सूरुज आइ तपहिं होइ बाँसू।
कै सउहै नियरे रबि हाँकै। तेहि कै आँच गूद सिर पाकै।
बजरागिनि अस लागै तैसे। [बि] लखैं लोग पियासन बैसे।
उनै अगिनि अस बरसै घामू। भूँजि देह जरि जाए चामू।
जेइ किछु धरम कीन्ह जग माहाँ। तेहि सिर पर किछु आवै छाहाँ।
धरमिहि आनि पियाउब पानी। पापी बपुरहि छाहँ न पानी।
चोरा जपा सो काज न आवै। इहाँ का दीन्ह उहाँ सो पावै।

जो लखपती कहावै लहै न कौड़ी आधि।
चौदह धजा मुहम्मद ठाढ़ करहिं सब बाँधि ॥

[३१]

सवा लाख पैगम्बर जेते। अपने अपने पाए तेते।
एक रसूल न बैठहिं छाहीं। सबही धूप लेहिं सिर माहीं।
वामै उमत दुखी जेहि केरा। सो का मानै सुख अवसेरी।
दुखी उमत तौ पुनि मैं दुखी। तेहि सुख होइ तौ पुनि मैं सुखी।
पुनि करता कै आयसु होई। उमत हँकारु लेखा मोहिं देई।
कहब रसूल कि आयसु पावौं। पहिले सब धरमी लै आवौं।
होइ उतर तिन्ह ही ना चाहौं। पापी घालि नरक महँ पाहौं(?)वाहौं।

पाप पुन्नि केते खरे होइ चहत है पोच।
अस मन जानि मुहम्मद हिरदे मानेउ सोच ॥

[३२]

पुनि जैहैं आदम केरे पासा। पिता तुम्हारि बहुत मोहिं आसा।
उमत मोरि गाढ़े है परी। भा न दान लेखा का धरी।
दुखिया पूत होत जो अहै। सब दुख पै बापै से कहै।
बाप बाप कै जो कछु खाँगै। तुमहिं छाँड़ि कासौं चित बाँधै।
तुम जठेर पुनि सबहीं केरा। अहै संतति मुख तुम्हरै हेरा।
जेठ जठेर जो करिहैं मिनती। ठाकुर जबहीं सुनिहैं मिनती।
जाइ देउ सै बिनवौ रोई। मुख दयाल दाहिन तेहि होई।

कहहु जाइ जस देखै जेहि होवै उदघाट।
बहु दुख दुखी मुहम्मद बिधि संकर तेहि काट ॥

[३३]

सुनौ पूत आपन दुख कहऊँ। हौं अपने दुख बाउर रहऊँ।
होइ बैकुंठ जो आयसु ठेलौं(ठेलेउँ)। दूत के कहे मुख गोहूँ मेलौं (मेलेउँ)।
दुखिया पेट लागि सँग धावा। काढ़ि बिहिस्त से मैल ओढ़ावा।
परलै जाइ मँडल . सुंआरा। नैन न सूझ निसि अँधियारा।
सकल [ज]गत मैं फिरि फिरि रोवा। जीउ जान बाँधि कै खोवा।

भएँ उजियार पिरथिमीं जइहौं। औ गोसाइँ कै अस्तुति कहिहौं।
लौटि मिलै जौ हौवै आई। तो जिउ कहँ धीरजु भा जाई।

तेहि हुते लाजि उठै जिउ मुहँ न सकौं दरसाइ।
सो मुहँ लाइ मुहम्मद बात कहौं का जाइ॥

[३४]

पुनि जैहैं मूसै केर दोहाई। ऐ बंधू मोहिं उपगरु आई।
तुम का बिधिनै आयसु दीन्हा। तुम नेरे होइ बातैं कीन्हा।
उम्मत मोरि बहुत दुख देखा। भा निदान माँगत है लेखा।
अब जौ भाइ मोर तुम अहेऊ। एक बात मोहि कारन कहेऊ।
तुम अस तुहसे बात का कोई। सोई कहेउ बात जेहि होई।
गाढ़े मीत कहौं का काहू। कहौ जाइ जेहिं होइ निबाहू।
तुम सँवारि कै जानौ बाता। मकु सुनि माया करै बिधाता।

मिनती किहेउ मोर हुते सीस नाइ कर जोरि।
है है करैं मुहम्मद उमत दुखी है मोरि॥

[३५]

सुनहु रसूल बात का कहौं। हैं अपने दुख बाउर रहैं।
कै कै देखेउँ बहुत ढिठाई। मुँह कड़ुवाना खात मिठाई।
पहिले मो कहँ आयसु दीन्हा। फरऊँ से मैं झगरा कीन्हा।
रोद नील कै डावसि चाला। फुर भा झूँठ झूँठ [भा] भला।
पुनि देखौ बैकुंठ पठाएउ। एकौ दिसि करै पंथ न पाएउ।
पुनि जो मो कहँ दरसन भएऊ। कोह तूर रावट होइ गएऊ।
भा अनेक मैं फिर फिर जाँपी। हर दावँन कै लीन्हेसि चापी।

निरखि नैन मैं देखौं कतहुँ परै नहिं सूझि।
रहौं लजाइ मुहम्मद बात कहौं का बूझि॥

[३६]

दौरि दौरि सबही पा जैहैं। उतर दिहें सब फिर बहिरैहैं।
ईसै कहिन कि कस नहि कहतेउँ। जौ किछु कहे क उत्तर बैठेउँ (?)।

[३९]

उठिन बीबी तब रिस किहैं। हसन हुसेन दुवौ संग लिहैं।
तैं करता हरता सब जानसि। झूँठै फुरै नीक पहिचानसि।
हसन हुसेन दुवौ मोर बारे। दुनहु यजीद कौने गुन मारे।
पहिले मोर नियाव निबारू। तेहि पाछे जेतना सुंसारू।
समुझें जीउ आगि महँ दहऊँ। देहु दादि तौ चुप कै रहऊँ।
नाहिं त देउँ सराप रिसाई। मारौं आहि अर्स जहिर जाई।

बहु संताप उठे जिया कतहूँ समुझि न जाइ।
बरजहु मोहि मुहम्मद अधिक उठे दुख दाइ॥

[४०]

पुनि रसूल कहँ आयसु होई। फातिमा कहँ समुझावहु सोई।
मारे आहि अर्स जरि जाई। तेहि पाछे आपुहि पछिताई।
जौ नहिं बात क करे बिबादू। जानो मोहि दीन्ह परसादू।
जौ बीबी छाँड़हि यह दोखू। तौ मैं करौं उमत कै मोखू।
नाहिं तौ घालि नरक महँ जारौं। लौटि जियाइ मुए पर मारौं।
अगिनि खंभ देखहु जस आगे। हिरकत छार होइ तेहि लागे।
चहुँ दिसि फेरि सरग लै लावौं। मुँगरिन मारौं लोव(लोह?)चटावौं।

तेहि पाछे धरि सारौं घालि नरक के काँट।
बीबी कहँ समुझावै जौ रे उमत कै चाँट॥

[४१]

पुनि रसूल तलफत तहाँ जैहैं। बीबी आइ बार समुझैहैं।
बीबी कहब घाम कत सहौ। कस ना बैठि छाहँ माँ रहौ।
सब पैगंबर बैठे छाहाँ। तुम कस तपौ बजर अस माहाँ।
कहब रसूल छाहँ का बैठौं। उमत लागि धूपहु नहिं बैठौं।
तेइँ सब बाँधि घाम महँ मेले। का भा मोरे छाहँ अकेले।
तुम्हरे कोह सबहि जो मरै। समुझहु जीउ तबै निस्तरै।
जो मोहिं चहौ निवारहु कोहू। तब बिधि करै उमत पर छोहू।

बहु दुख देखि पिता कर बीबी समुझा जीउ।
जाइ मुहम्मद बिनधा ठाढ़ पाक (पाग) के गीउ॥

[४२]

तब रसूल [के] कहँ भइ माया। जिन चिंता मानौ भइ दाया।
जौं बीबी अबहूँ रिसियाई। सबहि उमत सिर आनि बिसाई।
अब फातिमा का बेगि बोलावौं। देउ दाद सौं उमत छोड़ावौं।
फातिमा आइ कै पार लगावा। धरि यजीद माँ गोवा [आवा ?]।
अंत कहा धरि जान से मारैं। जिउ देइ देइ पुनि लौटि पछारैं।
तस मारब जेहि भुइँ गड़ि जाई। खन खन मारै लौटि जियाई।
बजर अगिनि जारब कै छारा। लौटि धोवै(दहै?)जस धोवै(दहै?)लोहारा।

मारि जारि घिसियावौं धरि दोजख माँ देब।
जेतनी सिस्टि मुहम्मद सबहि पुकारै लेब॥

[४३]

पुनि सब उम्मत लेब बुलाई। हरू गरू लागब बहिराई।
निरखि रहौंती कारब (गारब)छानी। करब निनार दूध औ पानी।
बाप पूत ना पूतै बापू। पाप पुन्नि ना पुन्नै पापू।
आप [हि] आप आइ कै परी। कवाउ न कवाउ क धरहरि करी।
कागज काढ़ि लेब सब लेखा। दुख सुख जो पिरथिमी महँ देखा।
पौन पियाला लेखा माँगब। उतर देत उन पानी खाँगब।
नैन का देखा स्रवन का सुना। कहब करब औगुन औ गुना।

हाथ पाँव मुख काया स्रवन सीस औ आँखि।
पाप न छपै मुहम्मद अते भरैं सब साँखि॥

[४४]

देह का रोवाँ बैरी होइहैं। बजर बिया एहि जीउ के बोइहैं।
पाप पुन्नि निरमल कै धोउब। राखब पुन्नि पाप सब खोउब।
पुनि कौसर पउब अन्हवाए। जहाँ कया निरमल सब पाए।
बुड़की देब देह सुख लागी। पलुहब उठि सोवत अस जागी।
खोरि नहाइ धोइहैं सब दुंदू। होइ निकरहिं पुनिवा कै चंदू।

सब के सरीर सुबास बसाई। चंदन कै अस खानी आई।
झूठै सबहि आप पुनि साँचे। सबहि नबी के पाछे बाँचे।

नबी छाँड़ि सब होई बरह बरिस कै राह।
सब अस जानौ मुहम्मद होइ बरिस कै राह॥

[४५]

पुनि रसूल नेवतब जेवनारा। बहुत भाँति होई परकारा।
ना अस देखा ना अस सुना। जौ सरहौं तौ है दस गुना।
पुनि अनेक बिस्तर जहाँ डासब। बास सुबास कपूर से बासब।
होइ आएसु जौ पैग(बेगि?)बोलाउब। औ सब उमत साथ लेइ आउब।
जिबरईल आगे होइ जइहैं। पग डारै का आयसु होइहैं।
चलब रसूल उमत लै साथा। परग परग पर नावत माथा।
आवै भीतर बेगि बोलाउब। बिस्तर जहाँ तहाँ बैठाउब।

झारि उमत सब बैठे जोरि कै एकै पाँति।
सब के माँझ मुहम्मद जानौ दुलह बराति॥

[४६]

पुनि जेंवन का आवन लागै। सब [के] आगे धरत न खाँगै।
भाँति भाँति के देखब थारा। जानब ना दहुँ कौन प्रकारा।
पुनि फुरमाउब आपु गुसाईं। बहुतै दुख देखौ (देखेउ?)दुनियाईं।
हाथन से जेंवनार मुख डारब। जीभ पसारत दाँत उघारब।
कूँचत खात बहुत दुख पावौ। तहँ ऐसै जेवनार जेंवायौ।
अब जिनि लौटि कस्ट जिउ करौ। सुख संवाद औ इंद्री भरौ।
पाँच भूत आतमा सेराई। बैठि अघाइ औरु ना भाई।

औस करब पहुनाई तब होई संतोख।
दुखी न होव मुहम्मद पोखि लेहु धरि पोख॥

[४७]

हाथन्ह से केउ कौर न लेई। सेइ जाइ मुख पैठै जोई।
दाँत जीभ मुख किछु न डोलाउब। जस जस रुची तस तस खाउब।

जैस अन्न बिनु कूँचे रूचै। तैस सिठाइ जो कोऊ कूँचै।
एक एक परकार जा आए। सत्तर सत्तर स्वाद जो पाए।
जहँ जहँ जोइ के परै जुड़ाई। इंछा पूजै खाइ अघाई।
अन चाखे बाते (?) फिर चाखा। सब अस लेब अपरस रस राखा।
जनम जनम के भूख बुझाई। भोजन करे साथै जाई।

जेंवन अँचवन होइ पुनि पुनि होई खिलवान।
अमृत भरा कटोरा पियौ मुहम्मद पानि॥

[४८]

एक अमृत औ बास कपूरा। तेहि कहँ कहा शराब न थूरा।
लागब भरि भरि देइ कटोरा। पुरुब ग्यौन अस करै महोरा।
ओहि कै मिठाइ भाति एक दाऊँ। जनम न मानब होइ अघ काहूँ।
सचु मतवार रहब होइ सदाँ। रहस [औ] कोड सदा सरबदाँ।
कबहुँ न खोवै जनम खुमारी। जनौ बिहान उठै भरि मारी।
ततखन बासि [बासि] जनु घाला। घरी घरी जस लेब पियाला।
सबहि क भा मन सो मधु पिया। तब औतार भवा औ जिया।

फिरै तँबोल माया से कहब आपुन लेइ खाउ।
भा परसाद मुहम्मद उठि बिहिस्त महँ जाउ॥

[४९]

कहब रसूल बिहिस्त ना जाऊँ। जब लै दरस न तुम्हार न पाऊँ।
उघर न नैन तुमहिं बिनु देखे। सबहि अँबिरथा मोरे लेखे।
तौ लै केउ बैकुंठ न जाई। जौ लै तुम्हरा दरस न पाई।
करु दीदार देखौं मैं तोहीं। तौ पै जीउ जाइ सुख मोहीं।
देखे दरस नैन भरि लेऊँ। सीस नाइ पै भुइँ कहँ देऊँ।
जनम मोर लागा सब यारा। पलुहै जीउ जो गीउ उभारा।
होइ दयाल करु दिस्टि फिरावा। तोहि छाँड़ि मोहि और न भावा।

सीस पाइ भुइँ लावौं जो देखौं तोहि आँखि।
दरसन देखि मुहम्मद हिये भरौं तोरि साँखि॥

[५०]

सुनौ रसूल होत फुरमानू। बोल तुम्हार कीन्ह परमानू।
तहाँ हुतेउँ जहँ हुतेउ न ठाऊँ। पहिले रचेउँ मुहम्मद नाऊँ।
तुम बिनु अबहुँ न परगट कीन्हेउँ। सहस अठारह का जिउ दीन्हेउँ।
चौदह खंड उतर क राखेउँ। नाँद चलाइ भेद बहु भाखेउँ।
चार फिरिस्ते बड़े औतारेउँ। सात खँड बैकुंठ सँवारेउँ।
सवा लाख पैगंबर सिरिजेउँ। कहि करतूति उन्हहि धै बंधेउँ।
औरन्ह का आगे निति लेखा। जेतना सिरजा को ओहि देखा।

तुम तन एता सिरिजा आइ कै अंतर ' हेत।
देखहु दरस मुहम्मद आपनि उमत समेत॥

[५१]

सुनि फुरमान हरख जिउ बाढ़े। एक पावँ से भए उठि टाढ़े।
झारि उमत लागी तब नारी(तारी?)। जेवा सिरिजा पुरुख औ नारी।
लागै सब से दरसन होई। ओहि बिनु देखे रहै न कोई।
एक चमकार होइ उजियारा। छपै बीजु तेहि के चमकारा।
चाँद सुरुज छपिहैं बहु जोती। रतन पदारथ मानिक मोती।
सो मन दिपें जो कीन्ह थिराई। छए सो रंग घात पर आई।
ओहु रूप निरमल होइ जाई। और रूप ओहि रूप समाई।

ना अस कबहूँ देखा न केऊ ओहि भाँति।
दरसन देखि मुहम्मद मोहि परे बहु भाँति।

[५२]

दुइ दिन लहि कोउ सुधि न सँभारे। बिनु सुधि रहे ना नैन उघारे।
तिसरे दिन जिबरैल जो आए। सब मधु माते आनि जगाए।
जेहिं भेदियहि सुदरसन राते। पड़े पड़े लोटैं जस माते।
सब अस्तुति कै करैं बिसेखा। ऐसा रूप हम कतहुँ न देखा।
अब सब गएउ जनम दुख धोई। जो चाहिय हठि पावा सोई।
अब निहचिंत जीउ बिधि कीन्हा। जौ पिय आपन दरसन दीन्हा।
मन कै जेति आस सब पूजी। रहे न कोउ औ आस गति दूजी।

मरन गँजन औ परिहँस दुख दलिद्र सब भाग।
सब सुख देखि मुहम्मद रहस कोइ जिया लाग॥

[४३]

जिबराईल कहँ आयसु होई। अछरिन्ह आइ आगे पथ जोई।
उमत रसूल केर बहिराउब। कै असवार बिहिस्त पहुँचाउब।
सात बिहिस्त बिधिनै औतारा। औ आठएँ सदाद सँवारा।
सो सब देब उमत का बांटी। एक बराबरि सब का आँटी।
एक एक का दीन देवासू। जगत लोक बिरसैं कैलासू।
चालिस चालिस हूरैं सोई। औ संग लागि बियाही जोई।
औ सेवा का अछरिन केरी। एक एक जनि का सौ सौ चेरी।

औसे जतन बियाहैं जस साजै बरियात।
दूलह जतन मुहम्मद बिहिस्त चले बिहँसात॥

[४४]

जिबराईल तात कहँ धाउब। जोलहि आनि उमत पहिनाउब।
पहिरहु दगल सुरँग रग राते। करहु सोहाग जनहु मद माते।
ताज कुलाह सिर मुहमद सोहै। चंदन बदन औ कोकब(कोकिल?)मोहै।
न्हाइ खोरि जस बनी बराता। नबी तंबोल खात मुख राता।
तुम्हरे रुचे उमत सब आनब। औ सँवारि बहु भाँति बखानब।
खड़े गिरत उबमाते अहैं। चढ़ि कै घोड़न का कुदरैं हैं।
जिन भरि जनम बहुत हिय जारा। बैठइ पाएउँ दुइ जन पारा।

जैसे नबी सँवारे तैसे नबी पुनि साज।
दूलह जतन मुहम्मद बिहिस्त करैं सुख राज॥

[४५]

तानब छत्र मुहम्मद माथे। औ पहिरै फूलन्ह बिनु गाँथे।
दूलह जतन होब असवारा। लिए बरात जैहैं संसारा।
रचि रचि अछरिन्ह कीन्ह सिंगारा। बास सुबास उठै महकारा।
आज रसूल बियाहन अहैं। सब दूलह दुलहिनि सो नहैं।
आरति करि सब आगे अहैं। नंद सरोद पुनि सब मिलि गैहैं।

मँदिलन्ह होइहि सेज बिछावन। आजु सबहि के मिलिहैं रावन।
बाजन बाजै बिहिस्त दुवारा। भीतर गीत उठै झनकारा।

बनि बनि बैठीं अछरीं बैठि जोहैं कैलास।
बेगइ आउ मुहम्मद पूजै मन कै आस॥

[५६]

जिबरईल पहिले से जैहैं। जाइ रसूल बिहिस्त नियरैहैं।
खुलिहैं आठौ पँवरि दुवारा। औ पैठैं लागे असवारा।
सकल लोग जब भीतर जैहैं। पाछे होब रसूल सीधरैं (सिधैहैं?)।
मिलि हूरैं नेवछावरि करिहैं। सबके बदन फूल रस झरिहैं।
रहसि रहसि तिन करब किरीरा। अगर कुमकुमा जो भरि सरीरा।
बहुत भाँति कर नंद सरोदू। बास सुबास उठै परमोदू।
अगर कपूर बेना कस्तूरी। मँदिल सुबास रहब भरपूरी।

सोवन आजु जो चाहै साजन मरदन होइ।
दीन सोहाग मुहम्मद सुख बिरसै सब कोइ॥

[५७]

पैठि बिहिस्त जो नौ निधि पैहैं। अपने अपने मंदिल (सीधरैं सिधैं हैं?)।
एक एक मंदिल सात दुवारा। अगर चन्दन के लाग केवारा।
हरे हरे बहु खंड सँवारे। बहु [त] भाँति दइ आपु सँवारे।
सोनै रूपै घालि उँचावा। निरमल कुहुकुहु लाग गिलावा।
हीरा रतन पदारथ जरे। तेहिक जोति दीपक जस बरे।
नदी दूध कै अँतरिख कै बहैं। मानिक मोति परे भुइँ रहैं।
औ परि गा अब छाहं सोहाई। एक एक खंड पहा दुनियाई।

तात न जूड़ न गुनगुन दिवस राति नहिं दुक्ख।
नींद न भूख मुहम्मद सब बिरसैं अति सुक्ख॥

[५८]

देखत अछरिन केरि निकाई। रूप ते मोहि रहत मुरझाई।
लाली करत मुख जोहत बासा। कीन्ह चाहैं किछु भोग बिलासा।
हैं आगे बिनवौं सब रानी। और हम सब चेरिन्ह की रानी।
यहि सब आवौं मोरे निवासा। तुम आगे तो अपनि कैलासा॥

जहाँ अस रूप पाट परधानी। औ सबहिन्ह चेरिन के रानी।
बदन जोति मनि माथे भागू। औ बिधि आगर दीन्ह सोहागू।
साहस करै सिंगार संवारी। रूप सुरूप पदुमिनी नारी।

पाट बैठि बैठीं जो हिये हँसि जारें माँस।
दीन दयाल मुहम्मद मानौं भोग विलास॥

[५६]

सुनि अस रूप बिहसी बहु भाँती। इनहिं चाहि जो हैं रुपवाँती।
सातौं पवँरि नखत मन भेखत (पेखब?)। सातौं आयसु कौतुक देखब।
चले जाब आगे तेहि आसा। जाइ परब भीतर कैलासा।
तखत बैठि सब देखब रानी। जीबहि सब चाहि पाट बरु मानी।
दरसन जोति उठै चमकारा। सकल बिहिस्त होइ उजियारा।
बारह बानी सरि हो सुबरना। तेहि का चाहि रूप अति लोना।
निरमल बदन चंदन कै जोती। सबकै सरीर दिपै जस मोती।

बास सुबास तस छूवै बेधि भँवर कहि जात।
बर सो देखि मुहम्मद हिरदै माँ न समात॥

[६०]

पैग पैग जस जस नियराउब। अधिक सवाद मिलै कर पाउब।
नैन समाइ रहे चुप लागे। सब के आइ लेइहैं होइ आगे।
बिरसहु दुलहिनि जोबनबारी। पाएउ दुलहिनि राजकुमारी।
एहि माँ सो कर गहि कै जैहैं। आधे तखत पर लै बैठैहैं।
सब अछूत तुम का भरि राखे। यहै सवाद जोरे जौ चाखै।
निति पिरीति नित नव नव नेहू। निति उठि चौगुन जोरे सनेहू।
नित्त अनित्त जो बारि बियाहै। बीसौ बीस अधिक ओहि चाहै।

तहाँ न मीचु न नींदु दुख रह न देह माँ रोग।
सदा अनंद मुहम्मद सब सुख माते (मानै ?) भोग॥

— — —

म हृ री बा ई सी

[१]

सुनो बिनति मैं किरति बखानौं महरा जस महराई रे।
गयेउ केवट को नाव चलावै को लागेउ गहराई रे॥
कोइ गुन लाइ पंथ सिर धुनहू चला डोर गुन खींचइ रे।
तीर नीर उथलें भै सोई गहिरें तौ फल पाँचइ रे॥
कोइ तरवार सूति अस कहताँ भाव भीर मन माने रे।
काहू फंद तिरिस्ना देखा परा जाल अरुझाने रे॥
काहू समुंद माँह बुड़कावा ढूँढि सिस्ट लै आनेउँ रे।
कोइ टकटोरि छूँछ होइ बहुरा हाथ छार पछतानेउँ रे॥
कोई औघट हारिगा बहुरत रहा बीच होइ ठाढ़ो रे।
कोइ अवगाह परा गहिरे में सो भल आहि जो काढ़ो रे॥
कोइ लै थाह उठा पानी सों तीर तीर बहि लागें रे।
कोइ सत छोड़ि दिसउ गहिरे पुनि गा हर दिसि चह खाएँ रे॥
कहै मुहम्मद रहो सम्हारे पाव पानि में घाले रे।
टोइ टोइ भुइँ पाँव उठाओ नाहिं तो परिहौ खाले रे॥

[२]

वार भए जो पंथ तिहारे अहै पार जेहि जाना रे।
चढ़ेउ जो नाव पार सो उतरेउ नाहिं तो मन पछिताना रे॥
ऊभि बाँह कै ठाढ़ पुकारै केवट बेगि न पावसि रे।
लहै लोक बहु मूरख आया पै पुनि कहँ चढ़ै बतावसि रे॥
दूरि गौन साँभर जहँ ताईं तू बुड़हा (?) भा डोलै रे।
चेति चलावै सोइ न कोई केवट गरब न बोलै रे॥
जेहि अस बूझ सूझ मारग कै गाँठि सोधि कै आवा रे।
माँगत दान दीन्ह जेहि पहिले तेहि धरि बाँह चढ़ावा रे॥
और अस्तुती पाँव परि बिनवै बिनैती किए न मानै रे।
रंचहु रहा न कीन्ह चिन्हारी अब कैसै पहिचानै रे॥

भाइ बंधु औ मीत सँघाती सो न मिलै जेहि चाहै रे।
दरब हुते मन झुरवै अकेला कोई तेहि निरबाहै रे॥
कहै मुहम्मद पंथ न भूलउ आगें अइस उतारा रे।
सो कै चलहु पार जेहि उतरहु नत बूड़हू मँझधारा रे॥

[३]

चढ़ि कै नाव भरम जेहि माहीं जौ लगि पार न लागै रे।
मारै मंछ जाइ भरि झोंका माँझधार होइ खाँगै रे॥
बहुत पाट भइ भादौं नदिया गुरू बूझि जनि बूझहु रे।
फैलब कहाँ कहाँ होइ लागै यहु मन सोच न सोचहु रे॥
उठहि पवन औ समुँद हिलोरैं पवन बात खट डोलै रे।
देखि वार जिउ छिन खिन कंपै कौन भरोसें बोलै रे॥
कछू औ सूस चहूँ दिसि उठहीं मगरगोह घरियारा रे।
होइ मँझधार डरावन लागै कैसें उतरब पारा रे॥
करिया पोढ़ करहु जिनि डोलै सिअर डाँड़ तेहि लाइहि रे।
केवट हीं गहु लाइ चित्त कहुँ गुन गहि तीर लगाइहि रे॥
ऊँच करार चढ़त दुख होइहि धाइ तीर जनु खाइहि रे।
जेहि खन तीर लै [?] लाइहि दीठि पेट जिउ आइहि रे॥
कहै मुहम्मद धुंध सवाई सुनौ मूढ़ बुधि अइसें रे।
छाड़हु मोह एक चित बाँधहु पार उतारै जइसें रे॥

[४]

धीमे चलहु धीर मन कीन्हें जस बक नाउँ उचारी रे।
धरम करै तीलै सैं काटं को ओहि जाहि न टारी रे॥
जौ लगि राति नींद नहिं सावै दिन नहिं करहि रहतरा रे।
तौ लगि मछरी वार पार नहिं लागै जो कीजै सो पहरा रे॥
मेलि सिस्टि चारहि चित बाँधहु रहौ दिस्टि मन लाएँ रे।
जस दुख देखि रहँट बहु ऊ र तस सुख होइहि बाएँ रे॥
जौ खुटकार बेगि ना लागै हिएँ निवारहु कोहू रे।
गाढ़ डोर ढील कै खींचहु तौ पै पावहु रोहू रे॥
नाहिं तो घोर रूप लै भेंटेउ नदी भई जहाँ सूते रे।
कहुँ कीओ सवार सब नगरी पावहु खेत किमि मूते रे॥

कहै मुहम्मद यह समझौवा समझु मूरुख अब ताईं रे।
चैन नाहीं आए ढिगा वासों तैं बैठो सुस्ताई रे॥

[५]

जेहि अस साध होइ गहि की औ चाहै जो राखा रे।
चढ़हि तुरंगै तौ बौराई लीन्हें हाथ बचाखा (?) रे॥
कौड़िया लोभ मरत मछरी के अमर जाल धरि घाला रे।
बहुत पसार सकति वहिं भँवरी परा जीउ कर लाला रे॥
महरहिं भली खेल यहु चाँचरि जेइ रे खेल अस खेला रे।
मछरी डारि मेलि पाले (पानी?) में देखै चरत अकेला रे॥
लै लौका रे जाल पसारैं रहै खंड खँड ताना रे।
लावै फंद टूट तस मेरवै तिरवारी और छाना रे॥
लै एक चाल मेलि बाने पानी ?) में तस धरि हाथ फिरावै रे।
पढ़िना परा जाइ जल तजि कै सत कै जाइ फँदावै रे॥
चा (?) भेद रूप लाइ भुइँ डाँड़ा सकति हाँक लै आवै रे।
जो पुनि माँछ जाइ कै छूटै सत जिउ जाइ गँवावै रे॥
कहै मुहम्मद काल अहेरी वहि सों काउ न बाँचो रे।
सबहीं तारि रहा थिर अपुना सौंह बोल बहु साँचो रे॥

[६]

जेइ रे टोह मछरी बड़ि पाई सो तीरे लाग छनावै रे।
गुरू घेरि तीनहि लै जो रे हिलि कै कतहुँ खसावै रे॥
गरुवे ताप लाइ भुइँ जो रे [?] संग औ मुकरी रे।
घालि हाथ ढूँढ़हु सैं जेहि के नाथ छहंदह अँगुरी रे॥
वार पार लै लावहि भौंरा जोट बड़े सब गैठे रे।
खिन एक देखि चलै खुटकारी पुनि सब घालि समेटै रे॥
पलना अहै पाल चलि आगे तीर तीर कस टोवसि रे।
उलले रहसि बरिस जिन घर बिनु मंत हाथ भुकि घोरसि रे॥
गहे गहाइ तीर लै लाएसि लाग लोग सब बीनै रे।
जे पावा तेहि तहाँ छपावा बरनि न पावै छीनै रे॥
जे संजुत अगुमन कै राखा. फिरा मंछ लै दहरी रे।
जेहि के हाथ पाँव कछु नाहीं लाग धरै सो सैहरी रे॥

कहै मुहम्मद तहाँ न पारै, जहाँ न लहरि बुडाई रे।
जहाँ मान आपन नहिं देखै लाखन छाँड़ पराई रे॥

[७]

है कापर झाँगर अरुझाना सकहुँ त चलहु छँडाई रे।
एक राह जो गुरू बताई साथ पाँच समुहाई रे॥
बरजत रहहु होइ जनि करकच करहँड कौन झँकारे रे।
... ... *

मनुवहिं गहौ रहिअ मन मारे खीझहु खीझि न बोलिअ रे।
मनुवा मीत मिलाइ न छोड़ै कामों(?) काहुँ न खोलिअ रे॥
भोगहिं भूलि भुगुति नहिं भूलहु जोग जुगुति पुनि साधहु रे।
जो एहि भाँति करहु मतवारे तौ मद सौं चित बाँधहु रे।
नाहिं तौ ठाकुर है अति दारुन करहु चार कोइ चारी रे।
मारहु बाँधि डाँड़ कै लेहू निसरहि सब मतवारी रे॥
जबहिं सोंटिया आइ तुलाइहि सांगि परह पर टूटिहि रे।
भाइ बंधु ठाढ़हिं सब देखैं काहू के कहे न छूटिहि रे॥
लै घिसियाइ चलहिं राउर कहँ उतर देत मुँह मारिहि रे।
कुड़बा लोग कहा नहिं लागै कहै न को उर पारिहि रे॥
कहै मुहम्मद सो मतवारा जो पिउ के मदमाते रे।
ताकर पिया नीक मोहिं लागै नाहीं तो झूठे नाते रे॥

[८]

हुड़ुक झाँझ सब बाजत आवहिं औ घेरा सब नाचै रे।
चढ़ि कै दूलह ब्याहन आवै दुलहिनि बहु रंग राचै रे॥
रहस कोड सब महरी गावहिं सब कर अइस बियाहू रे।
नैहर छाँड़ि चलब अब सोहरें समुझि परै नहिं काहू रे॥
बात सुनहु तुम्ह सखी सहेली सत बोलौं तुम आगे रे।
सँवरि सेज मन पियकै डरपौं रहै खुरुक जिम लागे रे॥
गीत बाद मोहि कछू न भावै हौं तेहि संग सगाई रे।
कंत बाँह धरि पूँछै बैना कहा कहब तेहि ठाईं रे॥

* यह पंक्ति प्रति में नहीं है।

इहाँ खेलि लेहु जो खेलन, उहाँ खेलै कस होई रे।
सास ननँद देइहैं उलहाना लाज रहब मुँह गोई रे॥
देवर जेठ केर सुनतहि सनका निसरि होब तहीं ठाढ़ी रे।
गुनवर ससुर देखि कस बोलब निसि दिन घूँघट काढ़ी रे॥
कहै मुहम्मद सोइ सुहागिनि जो अइसै पिउ रावै रे।
नैहर केर होइ गुनवंती तब ससुरें सुख पावै रे॥

[९]

सखी सहेली सुनहु सोहागिनि सब कोउ अइसि बियाही रे।
नैहर दिवस चारि लै रहन; ससुरें ओर, निबारी रे॥
जनमत दुइ बटवा होइ जाहीं अस चरित्र बिधि खेला रे।
दुइ दुइ लाइ जगत सब जोरा आपुन रहा अकेला रे॥
सरग लाइ धरती सों जोरा चंद सूर दुइ कीन्हे रे।
दिन औ राति भोर औ साँझा सेत स्याम दुइ चीन्हे रे॥
भै इस्तिरी पुरुख दुइ हौं लै ईसर गौरा सानेउ रे।
उहाँ सबद एक सुना स्रवन दुइ जब दुइ मथवा बाजेउ रे॥
चलें लखपती होइ दुइ भारा भारदुख सुख कर लीन्हा रे।
जो नहिं होत बरन दुइ प्रगटे कहा कहिअ तो कीन्हा रे॥
हिंदू तुरुक दोउ पर देखौं जो बारा सो ब्याहा रे।
बूझि बिचारि देखु मन अपने भए जनम कर लाहा रे॥
कहै मुहम्मद दुइ जग तारे लीन्हे पिउ कर आएसु रे।
जेहिं जेहिं पँथ चलावै सजना हठि हठि मारग जाएसु रे॥

[१०]

सुनि रे अयाने होइ हुसियारे गुरू ग्यांन मति लीन्हे रे।
चलि पनिहारी परग सँभारी पानि भरन जब दीन्हे रे॥
होइ सँग साथी घालै माथैं रहसि चातुर भइ नागरि रे।
मारग आवत बाँह डोलावत चित सों टरै न गागरि रे॥
बात सखी सों मन गागरि सों तेहि बिधि चित्त न डोलै रे।
जो जब छूटै गागरि फूटै पानी जाइ पिउ बोलै रे॥
गुपुत रहहु तस लखै न कोई रैनि चोर दिन साहू रे।
करनी के खेत न होइ बरक्कत हसद न दीजै काहू रे॥

मन महँ चहिअहि करै मंत यह करि खिन काहू पूँछै रे।
भरी जो ढारी सकति अधारी भरे बहुत दुक्ख छूँछै रे॥
भई जनावन सुनि पिय रावन बूझहि मतह बिचारी रे।
हिरदै राखहु सब रस चाखहु होहु सोहागिनि नारी रे॥

[११]

देखहु पिय खेवक जेहि सह सेवक बदै न काहू घेरा रे।
तौ पिउ पाइअ जो मन लाइअ रहिये निस दिन सेरा रे॥
जिन जग वाहै सब मुख चाहै भेंटै दै कै निबाहै रे।
जो निस्तारै पार उतारै नत बूड़ै अवगाहे रे॥
कोइ एक टेकै अइस आइकै अपने रँग कर राजा (राचा? रे।
जीउ आहि अस राज रजाएसु तेहि सिंगार सब छाजा रे॥
सब सिंगार पुनि करब करब जनु अधिक भएउ हो आगे रे।
टार सोहागिनि करै दोहागिनि अंग दुक्ख नहिं लागै रे॥
कहै मुहम्मद बेगि करहु सुधि सुनहु न बचन हमारा रे।
पग पग तेरे आवै देरी बेगि करहु सिंगारा रे॥

[१२]

साजहु माँग झारि दुइ पाटी चतुरि न चीर सँवारहु रे।
बेनी गूँथहु ईंगुर लावहु रचि रचि सेंदुर सारहु रे॥
अंजन तैस करहु दुइ नैना खंजन उपमा पूजै रे।
केहरि लंक बनी छुद्रावलि कुँजर सिंघ सो गूँजै रे॥
दुइ भौंहनि सारँग अस्थापहु दुइ कर कँगन कलाई रे।
निहकलंक ससि तिलक सँवारहु चहुँदिसि नखत तराई रे॥
दुइ कानन कुंडल पहिरहु औ लाइ बिज्जु चमकारा रे।
भीतर नाक दिपै गज मोती सोहै सोहिल तारा रे॥
कोकिल कंठ सँपूरन अभरन हिरदै हार बिसाला रे।
दोउ कुच बीच बनी रोमावलि चंप कुसुम कै माला रे॥
दुइ पायन पायल औ चूरा अस कै कीन्ह सिंगारा रे।
काया साजि माँजि कै दरपन देखै सबहि सितारा रे॥
कहै मुहम्मद कौन सुने दुइ दुइ जग से सब जानेउ रे।
दाहिन बावँ बूझि कै होइ रहु तौ आपुहि पहिचानेउ रे॥

[१३]

साजहु साजहु होउ चहूँ दिसि गै बरात निअराई हो।
सुनि पिय केर गहगहे बाजन धिक धिक जीउ चुराई हो॥
खिन खिन असुवा ढुरि ढुरि आवहिं लै चला मँदिर गोसाईं रे।
बिछुरहिं बाप भाइ महतारी समुझि न रहै रोवाई रे॥
लाग बराती भीतर पैठै अब मिलि लेहु सहेली रे।
तुम ठाढ़े सब घूँघट देखहु हौं धनि देब अकेली रे॥
चाहिअ चित्र भोग मत बिसरहु बाउर होइ जिउ जाई रे।
हँसि हँसि कंत बात जो पूँछहि रोइ रोइ उत्तर पाई रे॥
तासों प्रीति पेट भरि करिहो जो ओहि के मन भाई रे।
पिय कर खेल मरन धनिआ कर बोले कछु न बसाई रे॥
जा तिसु नगर ठौर है मुहमद मनुवाँ सो निति जूझै रे।
मारे मरै न मान मनोरथ बाउर कभी न पूजै रे॥

[१४]

निचिंत रहिउँ जानि नहिं पाइउँ आए खटोलिनहारा रे।
ठावँहिं ठावँ रहा सब अस पुनि सुनि पिय केर कहाँरा रे॥
समदि तू लोक को मीत भाइ बंधु तैं [न ?] नियर ठहरावै रे।
अब नैहर तजि भई पराई चला लोग पहुँचावै रे॥
ये ही पर दिन दस परहेली रही पीउ आचारी रे।
अस्थिर ठाउँ तहाँ अब गौना जहाँ जाइ जम बारी रे॥
डाँड़ी फाँदि बेगि तहँ आनी चलहु चलहु सब आखै रे।
लै चढ़ाइ पिउ चला सूख रस घटहि जो कित कोउ राखे रे॥
करवत देइ बहुरि नहिं पारै साँकर होइ खटोला रे।
बोलि न सकै सजन जन गोहने घूँघट जाइ न खोला रे॥
कहै मुहम्मद सुदिन सँवारहु घरी न जो बिसराहू रे।
सो कै चलहु पार जो उतरहु न त पाछें पछिताहू रे॥

[१५]

खेत जाइ आगे भा घेरा जस आगे वहि सूझै रे।
अगुवा कहै करै सो पिछुवा आगू कहै सो पूँछै रे॥

गहि लगि दहिने मुइँ टेकै बूड़ा पाउँ उठावहु रे।
अंधा रे मन के है जागे सो तेहि लाभहि पावहु रे॥
उपर घाम तर भूँभुर होइहिं छाँह न कतहूँ पाई रे।
लगतै झकोला अखिल दुख बाजा भेंट ना पुनि महतारी रे॥
कस अस जानि पसीजहु कछु कस ना छतरी जहँ साईं रे।
धूम बरन धुँधरा सब दीखै सो रे सजन कर गाऊँ रे॥
तहवाँ जात नीक मोहिं लागै जो निबहत तेहि ठाऊँ रे।
त्रिस्ना नगर नाँघत दुख होई पैग पैग बिसँभारी रे॥
कहै मुहम्मद भार न लीजै खिन अपने गरुवाई रे।
चलत बाट फुनि दूभर होई समुझि परै तेहि ठाईं रे॥

[१६]

आइहि सुतार जो सत्त बना है नैहर में लरिकाई रे।
बारि बैसि कै खोट गहे लिहें अब तस करब गोसाईं रे॥
जो समुझहि ना तूँ मन बहुता तब कै गरब तो लाए रे।
कहा न सुनते ओइ फिर दहते कछु न होइ पछिताए रे॥
कहन न ओता रिस का बूझा रिस अरे राँड़ की लहुराई रे।
नैन लरे जो देखन पौदहिं(?) यह कस दोसरि साईं रे॥
भूँजत तेरें उर भा हेरें राखहि सीर (?) गोसाईं रे।
महरी गावत हुडुक बजावत रात करब सब आई रे॥
खिन खिन काँपै औ मुख झाँपै तहाँ न आपन कोई रे।
चहुँ दिसि बूझै कहूँ न सूझै तेहि दुक्ख हौं रोई रे॥
कंत पियारा हो कनहारा हौं धनि निरखन हारी रे।
जो हँसि बैठै सब दुख मेटै तौ पै कुसल हमारी रे॥
कहै मुहम्मद पिउ मद मातेउ कहौ मोर कछु नाहीं रे।
भार जो लादहु सो सत छाँड़हु पुनि पाछें पछिताहीं रे॥

[१७]

सबहीं सेवा दुख मा जीवाँ कासों कहौं को साखी रे।
घरी जस होई लाग तस...*फिरि नहिं धंधा राखी रे॥

---

*प्रति में यह शब्द छूटा हुआ है।

भयेउ नियान तहाँ मति(?)मंडप महँ सकति आनि हिय केरी रे।
पूजा पाती देवस न राती सब मानैं चहुँ फेरी रे॥
कंत निबाहै दुलहिनि चाहै पहिलै तस वहि पासा रे।
संग सहेली रहौं अकेली तौ पूजै मन आसा रे॥
अवधू अथिरे बूड़हू सतरे जौ लहि हो भिनुसारा रे।
पुनि हम आउब आनि उठाउब लै जाउब घर बारा रे॥
अस कहि कोई रात दरोबे (?) देखै बज्र किवारा रे।
मंडप महँ मैं फिरब सकाना नगर आव अँधियारा रे॥
कहै मुहम्मद सँवरहु ओही जो वहि भार बहु खाँचे रे।
मुवसि न जौलहि मरा न तौ लहि जा मरि जिअै सो नाँचै रे।

[१८]

आए जन दोइ देखत हौं जोइ आइ रहे मोरे द्वार रे।
धरि हथिवारन आवहिं मारन पूँछन पिअ के सिवार रे॥
कंत तुम्हारे को कहु नाऊँ बसैं तोर जिउ काहे रे।
का गुन गहती गहि जत दहती अपने नैहर माहे रे॥
कहँ सँग खेली कस दिन पेली हास जो बारी भोरी रे।
कै संजुत अब चलहु बहुत पै चहुँ पिउ लावै खोरी रे॥
को तोर आगु आगु तोर पछुवा को आहै दिसि तोरी रे।
कौन पेम जो कुसल खेम आए अन्हवारा जोरी रे॥
हिय बहु मान केवट पुनि जागै उहाँ चाह सब काहू रे।
जो मोहिं परसै सब सुख बिरसै कहा गौन जिमि व्याहू रे॥
पूछौं हौं अब उत्तर देइत मोख मुकुति नहिं देऊँ रे।
नातर एक कला उन ताहीं मारि मारि जिउ लेऊँ रे॥
कहै मुहम्मद समुझहु मूरुख सो बेदन सो पीरा रे।
सोइ सम्हारहु आपुहिं तारहु गुन गहि लावहु तीरा रे॥

[१६]

अस फिरि घाव अँगइत पावा मूढ़ सँवारहि ठाऊँ रे।
सो सँवरत खिन उठहि अगति मन जेहि खोलै पिय नाऊँ रे॥
पिय मोर महरा गुन मोर गहरा.जिउ मोहि दीन्ह गोसाईं रे।
एक जो कहेउँ और नहिं चीन्हहुँ दीन्ह कस दोस रिसाई रे॥

बैठहु पुरुब कै निअहुर पच्छिम उत्तर दखिन भी सोई रे।
यहि बिधि चिंता रहती निता सदा इहै दुख रोई रे॥
अगुवा खेवक पिउ के सेवक सूध मारग लै आनेउँ रे।
गुरु जो पढ़ाइउँ नाउँ चढ़ाइउ तीर घाट मैं पाइउँ रे।
अस रँग राती तहाँ न जाती सुनै जहाँ कोउ बोलै रे।
औ पग परिया बिनती करिया कबहुँ नाँव नहिं डोलै रे॥
गहै मुहम्मद बूझि करहु सुधि नेहि चित आँखिन्ह बाँधे रे।
सवति न दूसर बाबुल ओसर अस कै पिउ अवरावें रे॥

[२०]

भा भिनुसार अधिकारा होतहिं [*] पाछिल पहरा रे।
दूलह बोलावहु चौक पुरावहु ओ हँसि बोला महरा रे॥
हुडुक तबला झाँझि मँजीरा महुवर बाँसुरि बाजै रे।
सबद सोहावा मेहरिन गावा घर घर महरी साजै रे॥
पूजा पाती दुलहिनि राती दूलह भा असवारा रे।
बाजन बाजे कियेउ सब साजे भा सब तत्त पसारा रे॥
मंगलचारा भा चहकारा चले गरब सब केली रे।
... ... ।+
सुंदरि लै लै महरी दही दही राती सबहीं डोली रे।
महा सत भीनेउ भोला तीनौ (?) जस फागुन कै होली रे॥
कहै मुहम्मद मोइ सो रहहू जो दिन आगे आवै रे।
है एकै नग मुँदरी सब जग दीन्ह सोहाग को पावै रे॥

[२१]

जोग चढ़ाइ काँप तब जोरै जो मुख दीपक बारैं रे।
कहा सो नारी खेलनवारा प्रेम प्रीति उजियारैं रे॥
नाउँ ओइ सारा दुवा सम्हारा पूरा सोहार सो वारी रे।
जस भादौं होइ नदिया भारी पुरुख जिता धनि हारी रे॥
सो धनि बारी है कलवारी सँवरि बेल अस चाखै रे।
जेउँ जेउँ कलियाँ औ रस रलियाँ सेज साजि धनि राखै रे॥

---

*प्रति में यहाँ शब्द छूटा हुआ है।
+ प्रति में यह पंक्ति छूटी हुई है।

कान्ह चले तजि सब गयेउ भागी को बजोगि [करै ?] बासा रे।
गोकुल छाँड़ा छाए मधुबन किए कुब्जा घर बासा रे ॥
कहै मुहम्मद नारि होइ रा[ती ?] कंत दिस्टि जो बहुरै रे।
अधिक बादि(?)कै रहै भक्ख दै आनि निवाजै चेरै रे ॥

२२

दीन्ह बसेरा गाउँ अस पावा भलै भई जस धामै रे।
बेधा भँवर बास रस भूला चहुँ दिसि कँटवा जामै रे ॥
बिधि का चरित देइ नहिं जो गति जस भरि तस न बिदार रे।
तरवर डारि देहि लै बैरै बैरै दीन्ह को भँडार रे ॥
जोग सेवक आपुन कै जानै तेहि धरि भीख मँगावै रे।
कहता पंडित दुक्ख दरद महँ मुरुख राज बड़ जावै रे ॥
चंदन जहाँ नाग तहाँ बदि कै जहाँ फूल तहाँ काँटा रे।
मधु जहवाँ किन माखी तहवाँ गुर जहवाँ तहँ चाँटा रे ॥
करि कुबेर तिरसूल कीन्ह धरि समुँद खार किय पानी रे।
छपद छन्नाख अकेला कीए मेटिका रावत गहि मानी रे (?)॥
कहै मुहम्मद जो रे भलो बड़ धनी गरब धरि चूरा रे।
निहकलंक बस आपु गोसाईं बारह बानी पूरा रे ॥

१—मलिक मुहम्मद जायसी (एक प्राचीन चित्र)

२—जायसी का घर

३—जायसी की समाधि

४—'पदमावत' की प्रति प्र० १ में छंद ११७ का पृष्ठ

५—'पदमावत' की प्रति प्र० २ में वही

६—'पदमावत' की प्रति द्वि० १ में वही (१)

७—'पदमावत' की प्रति द्वि० १ में वही (२)

८—'पदमावत' की प्रति द्वि० २ में वही

९—'पद्मावत' की प्रति द्वि० ३ में वही

१०—'पद्मावत' की प्रति द्वि० ४ में वही

११—'पद्मावत' की प्रति द्वि० ५ में वही

१२—'पदमावत' की प्रति द्वि० ६ में वही

१३—'पदमावत' की प्रति द्वि० ७ में वही

१४—'पदमावत' की प्रति तृ० १ में वही (१)

१५—'पदमावत' की प्रति नं० १ में वही (२)

१६—'पदमावत' की प्रति नं० २ में वही

१७—'पद्मावत' की प्रति तृ० ३ में वही

१८—'पद्मावत' की प्रति च० १ में वही

१६—'पदमावत' की प्रति पं० १ में वही

२१—'पदमावत' की प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध

२३—'पद्मावत' की प्रतियों का प्रक्षेप-संबंध

शुद्धि-पत्र

अ. भूमिका और मूल पाठ

पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१-२०	लकवनी	लक्खनी	२०८-७	होइइ	'होइहि
४७-२०	८ २१२.७-९	२१२.७-९	२०९-५१	जोगिन्ह	जोगिहिं
४७-२६	रकता	रकत	२२०-१६	अगुमनबू[१] झा	अगुमनं बूझा
६२-२८	५२८३	५२८ उ	२३०-१५	राख	राखै
८१-२३	२६८ अ, इ	२६८ अ, आ, इ	२३२-३	नमो नमो	नमो नमो नमो
८३-२८	२६८ अ	२६८ अ, आ, इ	२४३-३	बिछुरन	बिछुरन
८६-४	६४१ अ,	६४१अ,६४४अ,आ,	२४८-६	पहुँ	चहुँ
		इ,ई, उ,ऊ,अं,	२४९-६	लन्ह	लीन्ह
		अः, ६४५ अ, आ,	२४९-१५	कीन्ह	कीन्हि
१०८-१४	प्रतिमा	प्रति	२५२-१०	होइ	होउँ
१०९-२४	पेरवन	पेखन	२६०-१०	जियन	जियत
१११-२३	'गथ'	'गठि'	२६७-४	हथि	हाथ
११२-२९	'ओरिग'	'ओरगि'	२७२-९	रात	राति
११४-११	दृदय	हृदय	२७२-१८	धाइ	धाइ
११४-२२	संस्मरण	संस्करण	२८३-२	गरु	गुरू
१२४-१	टटि	टूटि	२९०-११	ललि	लगि
१४४-१२	हँथौड़ा	हँथौड़ा (हटौरा ?)	२९४-९	होऊँ	होउ
१४७-१५	सत[१६]सत	सत[१६]	२९८-१२	किस्न	किरसुन
१४८-७,१५१-८	नित	निति	३०२-८	का	की
१५२-६	उँजियारी	उजियारा	३०९-५	सूरज	सूरुज
१५४-१०	दिया	दिपा	३१०-१३	कँत	कंत
१६४-३,१७०-५	छँछा	छूँछा	३११-१८	तह	तहाँ
१६८-२	कछु	किछु	३१६-७	सत	सात
१६८-४	साखा	साजा	३१९-८	हुति	हुँति
१७१-१	ददुँ	दहुँ	३२०-१२	जान	जानु
१७१-१६	रजा	राजा	३२५-१०	ाईं	साईं
१८५-१६	धुँधुरवारि	घुँघुरवारि	३६१-४	मेखहु	मेरवहु
१८७-६	दइ	दुइ	३६३-११	करे	करै
१८९-७	ठंख	ढंख	३७०-६	दख	दुख
१८९-१५	दखि	देखि	३७३-६	तुन्ह	तुम्ह
१९२-१०	तेहते	तेहिते	३७४-१४	जीभ	जीभि
१९८-७	का पहँ	का कहँ	३८०-५	परिखि	परखि
१९८-१०	नीवी[१६] बंध	नीवी बंध[१६]	३८४-१	परं	परें
२०८-४	काकर	काकरि	३८५-१२	स्त्री	स्त्री

पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३९०-१०	करि	कर	४९०-१	मरेठा	गरेठा
३९३-४	बँध	बंध	४९८-९	नरिं	नहिं
३९६-७	न सैंता	नहिं सैंता	५१२-१४	एक	एह
३९८-९	सेबा	सेवा	५१७-७	प्रीत	प्रीति
३९९-१४	समँद	समुँद	५२५-१३ ५२६-९	सूरज	सूरुज
४०१-१६	स	सो	५२६-१४	मत सुनि हम	मति सुनि हम
४२६-४	चेतन	चेतनि		आइ	आए
४३०-१	पसेरू	पसेरु	५३९-१	पुरखन्ह	पुरुखन्ह
४३३-८	दीन्ह	दीन्हि	५४०-५	स्वामि सँकेरें	स्यामि सँकरें
४३६-४	सिरी	सिरें	५८८-१४	[४८ इ]	[४१८ इ]
४३८-१२	अधन्ह	अधरन्ह	६५९-२५	घीड	घीउ
४४८-१३	रतनसेन	रतनसेनि	६६१-१	अपुहि	आपुहि
४५१-१४	सुरितानी	सुलतानी	६७१-१०	गढ़े	बढ़े
४७१-२	उवा	उवा	६७२-६	डर	डरें
४७४-२	कहे, गहगहे	कही, गहगही	६७४-८	किया	कया
४७८-१४	हराएँ	पराएँ	७०४-२४	लागा सब यारा	लागे सब धारा
४७९-५, ५३३-१०	जूझ	जूझि	७०७-८	(सीधरैं	सीधरैं (

आ. पादटिप्पणी

पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९-१	द्वि० १,३,७, तृ० १,२,	द्वि० १,७, तृ० १,२,३,	४०६-५	प्र० १ में इसके अनंतर चार,	प्र० १,
१७८-५	८. ०३ गए	८. द्वि०३ गए	४१८-१५	द्वि० ४,५,६,७, तृ० २	द्वि० ४,५,६,७
१९८-११	नीवी	तीवी	४३७-१०	'करना'	'करन'
१९८-१४	(तेहिं) सँग बंध	संग	४७६-९अ	[नहीं है]	*द्वि०१ में इसके अनंतर तीन अतिरिक्त छंद हैं।
२८१-१९	पं० दिनहि	दिनहि			
२९६-१३	द्वि० ६ में एक	द्वि०६, तृ०३ में एक	५१४-५	[५५१]	[५९१]
२९६-१३	तृ० १,३ में दो	तृ० १ में दो	५२५-१	ती छंद हैं।	तीन छंद हैं। (देखिए परिशिष्ट)
२९८-९	द्वि०२में दो तथा द्वि० ३	द्वि० २,३ में दो	५४७-९	जिनमें से	जिनमें से द्वि० ६, ७, तृ० १ में भी
३०२-६	द्वि० २,५,७	द्वि० ४,५,६			
३०२-७	पाँच	पाँच तथा द्वि० २ में छः	५४८-४	द्वि० ६,(तृ० १)	द्वि० ६,७,(तृ०१)
			५५२-९	पूर्वोक्ति	पूर्वोक्त
३०७-७	प्र० ३,५,७	द्वि० ३,५,६, ७	५५३-१	६४६	६५०
४०२-१४	इस	इन			

अनुस्वार और सानुनासिक ध्वनियों के चिह्न प्रायः टूट गए हैं, उन्हें पाठक कृपया स्वतः ठीक कर लेंगे।